Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

66

मेदनीय ज्योतिष-ग्रहयोगानुसार नक्षत्र ग्रह गति योग फलम्

प्रान्तीय (राज्य वार भविष्य मिश्रित ग्रहयुक्ति फलादेश)

असम, अरुणाचल प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह—शनि-मंगल, राहु तथा बुध के कारण इन प्रान्तों में राजकीय व्यवस्था में अशांति रहेगी। विद्रोह ज्यादा होंगे, प्रतिष्ठित नेताओं का अपमान एवं हत्या योग, भ्रष्टाचार का विशेष प्रचलन, प्राकृतिक आपदा का योग भी बनेगा। महिला शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। वित्तीय स्थिति अस्थिर करेगा। भूमि का विवाद तथा मठ विवाद से जनता में रोष व्याप्त होगा। असम में चुनाव जैसा अचानक योग बनेगा। वर्षा से भी हानि होगी।

तमिलनाड़, कर्नाटका, महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, गोआ, दमण द्वीपादि—इन राज्यों में शुक्र ग्रह के प्रभाव से अभिनेताओं की संख्या बढ़ेगी। अपहरण का मामला ज्यादा होगा। प्रेम विवाह तथा मन्दिरों में विवाह योग बनेगा। कोहरा, आंधी, वायु वेग, अग्निकाण्ड तथा बाढ़ादि के प्रकोप से जनता तबाह होगी। मुम्बई का वर्चस्व घटेगा। शिवसेना की प्रक्रिया का प्रभाव विपरीत होगा। राजनेताओं की हत्या तथा पदच्युत जैसी वार्ता बनेगी। धार्मिक आयोजन भी ज्यादा होंगे। महल, खजानों में लूटमार बढ़ेगी। बेरोजगारी बढ़ेगी।

राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-काश्मीर, उत्तरांचल व उत्तर प्रदेश तथा विहार व केरल प्रदेश—इन राज्यों की राजनैतिक प्रक्रिया निर्बल तथा मन-मुटाव व द्वेषता पूर्ण रहेगी। राहु+केतु के प्रभाव से कृषि वर्ग को हानि तथा आन्दोलनों में बढ़ोत्तरी होगी। पांच राज्यों के मुख्य मंत्रियों को मृत्यु तुल्य योग भी बनेगा तथा अकाल जैसा वातावरण बनेगा। यत्र-तत्र वर्षा की असमानता रहेगी। भूस्खलन या भूकंप का प्रभाव भी बढ़ेगा। नौकरशाही का वर्चस्व घटेगा। पशु धन की हानि भी होगी। इन राज्यों में राजनैतिक पार्टियों में विवाद योग बनता जायेगा। हड़तालों का बोलबाला रहेगा। औद्योगिक विकास की योजनाएं बनेंगी।

मेघालय, मिजोरम, भूटान, नेपाल, समुद्रतटीय क्षेत्र, दिल्ली, मध्य प्रदेश, मणिपुर तथा केन्द्र शासित प्रदेश—इन राज्यों में शनि+मंगल+शुक्र तथा गुरु ग्रह (तुला में होने के कारण) सरकारी कार्यों में शिथिलता तथा राजनीति में भी अशोभनीय घटनाओं का बोलबाला रहेगा। प्राकृतिक आपदा का विशेष योग पांच बार बनेगा। चोरी, डकैती, लूटमार व धोखे जन्य वारदातों का वर्चस्व रहेगा। तीन राज्यपालों की असामयिक मृत्यु भी इन राज्यों में होगी। पशु धन न्यून रहेगा। अकाल का वातावरण से जनता में तबाही मचेगी। अग्निकाण्डों में जन-धन की हानि तथा निरापराधियों को अचानक दण्ड की भागीदारी निभानी पड़ेगी। सरकारों में मंत्रिमण्डलीय परिवर्तन तथा विधान सभा भंग जैसे दो योग विशेष बनेंगे।

विश्वस्तरीय घटनाक्रम प्रमुख राष्ट्रों की मिश्रित घटना

अन्टार्टिका, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका महाद्वीप, आयरलैण्ड, अफगानिस्तान, आस्ट्रिया, इंग्लैण्ड, ईराक व ईरान—इन देशों महाद्वीपों में प्राकृतिक वातावरण दूषित होकर बीमारियों का बोल बाला बढ़ेगा। परमाणु बमों का नुकसान स्वयं निर्माणकर्ता को एकाएक होगा। विद्युतीय संकट से देशों में हड़तालें होंगी। शनि ग्रह कर्क का होकर विश्व बाजार में मंहगाई का एक विशेष रिकार्ड अर्जित करायेगा। पेट्रोल, डीजल के भावों की वृद्धि से गुप्त रहस्यों का उजागर होगा। समुद्रतटीय भागों में ज्वार-भाटा तथा आपत्तिकालीन लहरों से अशांति जन्य अनियंत्रित घटना जून २००६ से सितं. २००६ तक बनती है। चुनाव प्रक्रिया में घोटाला का पर्दाफाश होगा। तीन राष्ट्रपतियों का देहावसान योग भी बनता है। ब्रह्माण्ड में इन देशों का वर्चस्व बढ़ेगा। नई क्रान्ति से वैज्ञानिकों का उत्साह बढ़ेगा। विकास की दर बढ़ेगी।

बलूचिस्तान, चीन, तुर्की, श्रीलंका, नेपाल, बंगलादेश, जर्मनी, पाकिस्तान, जापान, ब्रिटेन आदि देशों का भविष्य—इन देशों में बेरोजगारी बढ़ेगी। गृह कलह का योग शनि+मंगल ग्रह के कारण बनेगा। हवाई दुर्घटनाओं का प्रभाव होगा। जो हानि कारक भी रहेगा। संसदों में लड़ाई का वातावरण रहेगा। अगस्त २००६ से मई २००७ तक प्राकृतिक प्रभाव से काफी हानि होगी। भूगर्भ का दूषित प्रभाव भी बढ़ेगा। नये उद्योग धंधों का काफी कार्य होगा। बड़े-बड़े नेताओं का अपहरण शुक्र+शनि के कारण बनेगा। राज घरानों में संकट बढ़ेगा। पारिवारिक जीवन इन देशों के लोगों का अनिष्टदायक रहेगा। आर्थिक नीतियां बनेंगी। परन्तु सफल नहीं होंगी। युद्ध का योग भी जून २००६ से अक्टूबर २००६ तक बनता है। जल संकट के प्रभाव से मानवीय सेवा प्रभावित होगी। अग्निकाण्डों से जनता परेशान होगी। पागलों एवं भिखारियों की संख्या बढ़ेगी। महिला आगे बढ़ेगी, महिला आगे रहेंगी, पुरुष पीछे यानि हार जायेंगे। अतिवृष्टि अगस्त २००६ में बनने का योग बनता है। आठ प्रमुख नेताओं का देहावसान हो चुका है। भुखमरी भी बढ़ेगी।

नाईजीरिया, नागालैण्ड, रूस, उत्तरी पूर्वी ब्रिटिश, रोम, सूडान, यूरोप, तेहरान, एशिया, तासकन्द, मारिशस, ब्रह्मा, हिन्द चीन, हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर आदि पड़ोसी देश—ग्रह स्थिति एवं ध्रुवांक गणनानुसार इन देशों में भ्रष्टाचार का योग बढ़ेगा। पुराने विवादों का रहस्योंजागर होने से कर्मठ मानने वाले नेता भी दण्डनीय योग्य होंगे। स्त्री वर्ग का प्रशासन बढ़ेगा। वर्षा की अधिकता रहेगी। कृषि पैदावार अच्छी होगी। शुक्र-ग्रह एवं गुरु ग्रह के कारण आध्यात्म योग विद्या पर बल बढ़ेगा। कीर्ति प्राप्त शीर्षस्थ चार नेताओं की हत्या या अपहरण जनक वार्ताएं होंगी। ज्वालामुखी या ज्वार भाटा या भूस्खलन तथा भूकम्प के छः योग इस वर्ष में बनेंगे। दिनांक ३०-६-०६ से ३०-१०-०६ तक का समय राजनीति निर्णय से परेशानी युक्त रहेगा। अस्थिरता तथा बलात्कार जन्य काण्डों की अनगिनत संख्या होगी। युद्ध का वातावरण बनेगा। अचानक बीमारी का प्रकोप बढ़ेगा। मंगल के कारण पश्चिमी मुस्लिम देशों में हिंसा की वारदातें बढ़ेंगी।

भारत वर्ष—भारतीय स्वतंत्रता की कुण्डली की स्थिति एवं गोचर ग्रहानुसार यह वर्ष भारत वर्ष के लिए ऐतिहासिक रहेगा। इस वर्ष केतु-चन्द्र-राहु-शनि तथा तुला का गुरु शनि का शुक्र के कारण काफी हलचलें बढ़ेंगी। महावृष्टि के कारण तबाही योग बनेगा। बुध के साथ चन्द्रमा होने के कारण अप्रेल २००६ में भी भूकंप भारत में दक्षिणी पश्चिमी भाग में आयेगा। राश्यानुसार प्रभावी क्षेत्र।

मेष—मैसूर, मद्रास, बड़ौदा, **वृषभ**—सूरत, मुम्बई (बाम्बे पुराना), **मिथुन**—जलगांव व समीपवर्ती क्षेत्र।, **कर्क**—हैदराबाद, परिक्षेत्रीय, **सिंह**—बम्बई, नांदियाड, विन्ध्याचल, **कन्या**—

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मालवा, नागपुर, **तुला**—गुजरात, मारवाड़, राजस्थान, बम्बई व पड़ोसी शहर राज्य, **वृश्चिक**—मुम्बई, दिल्ली, मारवाड़, उड़ीसा, **धनु**—कोल्हापुर, काठियावाड़, महाराष्ट्र, मध्य भारत, **मकर**—इलाहाबाद, बिहार, पटना, दरभंगा, पंजाब, **कुंभ**—झारखंड, छत्तीसगढ़, रायपुर, **मीन**—बंगाल, बनारस, पानीपत, कुरुक्षेत्र एवं तटीय प्रदेश इन स्थानों पर दिनांक २४-३-०६ से २७-६-०६ मध्य काफी परिवर्तनकारी योग बनेंगे। राजनीति में भी सत्ता परिवर्तन का योग राज्यों की स्थिति बिगड़ने का योग बनेगा। इस वर्ष का प्रवेश सिंह लग्न में होने के कारण दक्षिण में सर्प भय, छः माह में धन-धान्य मन्दा, आकाश बादलों से पूर्ण रहेगा। उत्तर में वर्षा अधिक, बाढ़ादि से जन धन की हानि होगी। पैदावार मध्यम होगी। राजाओं में परस्पर अगले पांच महीनों में युद्ध होने का योग (जुलाई २००६ से अक्टू. ०६ तक) सावधान रहना ही ठीक है। कृषि एवं छात्र आन्दोलन बढ़ेंगे। सरकार झुकेगी। तीन बार राष्ट्रीय ध्वज झुकेगा।

घर का भेदी लंका ढाये—वाली उक्ति से लोग अपने कार्य का निष्पादन करेंगे। दिनांक २४-५-०६ से ३०-८-०६ तक राज्यों में संचालित सरकारों का प्रभाव बुरा होगा। केन्द्र तक बात जायेगी। मध्यांतर चुनाव केन्द्रीय सरकार का भी बनता है। **भरोसा**—वाली बात खत्म जैसी उजागर होगी। औद्योगिक प्लान बनेगा उसका प्रतिफल नेष्ट होगा। शनि के कारण केन्द्रीय सरकार का प्रभाव न्यून जैसा प्रतीत होगा। शासन तंत्र की कड़ाई खत्म होगी। दुष्ट और कानून तोड़ने वालों की विजय होगी। काला बाजार में बढ़ोत्तरी। भारत-पाक समझौता नाकाम होगा। राम मन्दिर नहीं बनेगा। काशी में धर्मान्दोलन का उदय होगा। मंत्रियों में छुरा (कटारी) घोंपने की वारदातें बढ़ेंगी तथा केन्द्रीय सरकार का वार्षिक बजट सन् २००६-०७ का चिन्ता कारक होगा। **मंगल**—रसेश होने से दुष्टता का प्रभाव बढ़ेगा। शनि के कारण आतंकवाद का बोलबाला सर्वत्र छायेगा। जापान जैसे देश से भारत की व्यापार संधि का योग बनेगा। राहु-केतु-शनि-हर्षल-नेपच्यून के प्रभाव से जनता में हलचल का दौर चालू होगा। विवाद का कारण युद्ध भी हो सकता है। इस वर्ष अध्यात्म योग साधना का वर्चस्व भारत में बढ़ेगा। डालर के मुकाबले रुपये का सूचकांक गिरेगा। विश्व बाजार में भारत अपनी कीर्ति प्राप्त करेगा। कांग्रेस सरकार का वर्चस्व तो बढ़ेगा, लेकिन भाजपा में अन्तर्कलह का लाभ अन्य पार्टियां प्राप्त कर अपना वर्चस्व बढ़ायेंगी। वाजपेयी का राजनीति क्षेत्र सम्पर्क बढ़ सकता है ऐसा ग्रहयोग कहते हैं। भारत+पाकिस्तान की मित्रता का प्रभाव शून्य रहेगा। वाजपेयी एवं आडवाणी पर अचानक आतंक भी मचने का योग जून २००६ से जुलाई २००६ मध्य बनता है। सोनिया का वर्चस्व दिनों-दिन बढ़ेगा। सानिया टेनिस खिलाड़ी भारतीयता का शान बनेगी तथा कीर्ति प्राप्त करेगी, लेकिन अगस्त ०६ से नवं. ०६ मध्य उसका समय प्रतिकूल होगा। अपहरण काण्ड की शिकार होने का पूर्ण योग है। सावधान रहे। वर्षा अनियमित तथा अस्थिर यत्र-तत्र सर्वत्र बाढ़ तो कहीं सूखा कहीं गीला की संभावनाएं बनेंगी। तीन नई पार्टियों का गठन योग बनता है। पुरानी चार पार्टियों का संयुक्त रूप बनकर आगामी चुनाव लड़ेंगे। बसपा का (उत्तर प्रदेश में) वर्चस्व बढ़ेगा। शासन में भी वर्चस्व रहेगा। औद्योगिक क्रान्ति का पूर्ण लाभ होगा। शासन तंत्र में नारी वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। श्रीमती सोनिया को भी नवम्बर ०६ से फरवरी २००७ तक सावधान रहना चाहिए जिससे वर्चस्व में न्यूनता नहीं आवे।

मंत्री शुक्र फलम्—इस वर्ष नारियल वृक्ष ज्यादा फलेंगे। अखरोट, मेवा, छुआरे की पैदावार अच्छी होगी। वर्ष मध्य रहेगा। व्यापारी वर्ग को लाभ अच्छा होगा। धान्य मख मन्दा रहेगा। वर्षा में असमानता रहेगी।

भृगुसुते ननुमंत्रिपद गते शलभ मूषक रौहिषः।
भवन्ति धान्य समर्घतया मलंजन देषु जलं सरितोधिकम्॥

अर्थात्—भृगु पुत्र शुक्र को मंत्री पद मिलने से जीवन जन्तुओं की वृद्धि तथा चूहों की तादाद बढ़ेगी। चूहों द्वारा प्लेग रोग फैलने का योग भी। धान्य भाव अस्थाई रहेंगे। एकाएक मंहगा तथा अचानक मन्दा होना अर्थात् अवसरानुसार परिवर्तन होता रहेगा। कई नदियां पानी से बाढ़ग्रस्त तो कहीं-सूखी नजर आयेंगी। भ्रष्टाचार, व्यभिचार का योग बढ़ेगा। भौतिक सुख सुविधाओं के नाम से धोखा होगा। स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा। पुरुष नपुंसक की तरह जियेंगे।

शुक्र मंत्री पद पायके करेगा विश्व में चमत्कार।
मानवता के नाम पर बिकेगी कन्या और होगा व्यभिचार॥
शुक्र शुक्रिया करके देगा दगा भी कई बार।
मंत्री पद लोलुप नेता कर देंगे अभद्र व्यवहार॥

विश्व एवं भारत में कीर्ति प्राप्त नेताओं का संक्षिप्त भविष्य दर्शन

श्री महामहिम राष्ट्रपति महोदय श्रीमान् ए.पी.जे. कलाम साहब

आपकी कुण्डली के अनुसार (शपथ कालीन कुण्डली) राहु+केतु तथा मंगल एवं शुक्र ग्रहानुसार दिनांक २४-०५-०६ से २७-१०-०६ तक स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। दिनांक २०-४-०६ से ३०-४-०६ मध्य अचानक यात्रा में भी परेशानी तथा नवम्बर २००६ भी अच्छा नहीं रहेगा। २६-१२-०६ से २०-३-०७ तक कुछ नयी बाधाएं एवं संसदीय कार्यों की गतिविधियों से बेचैन रहेंगे। गुरु ग्रह से कीर्ति में भी झटका लगेगा। इस वर्ष स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। यात्राएं अधिक हानिकारक रहेंगी।

महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीमान् भैरोसिंह जी शेखावत—संवत् २०६३ में नया पद या सम्मान प्राप्ति का योग अगस्त २००६ से अक्टूबर २००६ तक बनता है। स्वयं का स्वास्थ्य मई २००६ में अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक संकट जून २००६ से जुलाई २००६ तक बनेगा। संघ के लिए आशा से आगे आने का योग तथा स्वास्थ्य क्षमता में गिरावट का योग शनि+मंगल+राहु+ केतु से बनता है। नवम्बर २००६ से जनवरी २००७ तक का समय अग्नि परीक्षा का रहेगा। हवाई यात्राओं में भी खतरा का संकेत है। आतंकवाद समझौता में शारीरिक संकट भी आने का योग है। पार्टी गठन में निर्देशन तथा नेतृत्व का भी योग मंगल के कारण बनता है। अशोभनीय घटनाओं का योग बनता है।

डॉ. श्री मनमोहन सिंह प्रधान मंत्री (वर्तमान)—आपके लिए संवत् २०६३ अप्रेल २००६ से अगस्त २००६ तक प्रतिकूल समय रहेगा। स्वास्थ्य में गिरावट तथा विवाद योग बनेगा। पार्टी के संगठन में भी भेद-विभेद होंगे। विदेशी यात्रा में स्वास्थ्य गड़बड़ होगा। सावधान रहे तो ठीक है। वर्ष संकटमय गुजरेगा। राज सत्ता लोलुप योग भी बनता है। छद्म वेशधारियों से बचें। आपका कार्य काल पूर्ण होने का योग नहीं है। हवाई यात्रा योग जून २००६ में संकट प्रद रहेगा। त्याग पत्र देने का योग भी है।

श्रीमती सोनिया गांधी—(राष्टीयाध्यक्ष कॉंग्रेस पार्टी) वि.सं. २०६३ आपको पेचीदा रहेगा। अनावश्यक राजनैतिक मोड़ कार्य प्रणाली में बाधक बनेगा। निर्देशन एवं प्रबंधन जैसा योग अच्छा रहेगा। मई २००६ से अक्टूबर २००६ तक विशेष रूप से सतर्क रहना लाभदायक रहेगा। नई पार्टी का सहयोग भी मिलेगा। अचानक यात्रा योग से शारीरिक हानि का योग बनता है। रक्षा बल का प्रयोग नितान्त आवश्यक है। इस वर्ष ग्रह स्थिति शुभाशुभ मध्यम है। लेकिन प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पार्टी का नेतृत्व यथावत रहेगा। अनावश्यक मामलों में बाधा योग बनेगा। पूर्वी-दक्षिणी-विदेशी यात्रा में भी सावधान रहें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

है। आतंकवाद समझौता में शारीरिक संकट भी आने का योग है। पार्टी गठन में निर्देशन तथा नेतृत्व का भी योग मंगल के कारण बनता है। अशोभनीय घटनाओं का योग ज्यादा है। यथावत रहेगा। अनावश्यक मामला में बाधा योग बनेगा। पूर्वी-दक्षिणी-विदेशी यात्रा में भी सावधान रहें।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीमती राबड़ी देवी—(पूर्व मुख्यमंत्री बिहार) आपको शनि का तथा गुरु ग्रह का लाभ पुनः राज सत्ता का करेंगे। पद त्याग व पद ग्रहण दोनों योग बनेंगे। वर्ष २००६ का जुलाई से नवं. २००६ तक शारीरिक बाधाएं आयेंगी। पार्टी में कुछ तनाव तथा कार्य के प्रति असन्तोष योग बनेगा। न्यायालय जन्य योग भी बनते हैं।

श्रीमान् मुलायम सिंह यादव (मुख्यमंत्री उ.प्र.)—आपको शनि ग्रह के कारण संवत् २०६३ आय या लाभदायक नहीं रहेगा। चुनावोंपरान्त पुनः मुख्यमंत्री का पद प्राप्त नहीं होगा। केन्द्रीय सरकार में पद योग नवम्बर २००६ के बाद तथा सन् २००८ में बनता है। गुप्तचरों से गुप्त संकेत प्राप्त करना लाभदायक होगा। पारिवारिक स्थिति बिगड़ेगी। कुछ नवीन अड़चनें आयेंगी।

सुश्री जयललिता—आपकी कुण्डली के योगानुसार संवत् २०६३ घाटे का हानिप्रद रहेगा। शासन तंत्र में अशांति रहेगी। मृत्यु तुल्य योग या कष्ट बनता है। जुलाई २००६ से सितम्बर २००६ तक विद्रोह, हड़तालें प्राकृतिक आपदा का संकट छायेगा। राजकाज में चिन्तनीय घटक बनेंगे। दिसम्बर २००६ में अचानक हानि भी मंत्रिमण्डल में अविश्वास जन्य योग शनि-मंगल के कारण होगी।

सुश्री मायावती—आपके लिए वि.सं. २०६३ भाग्योदय कारक रहेगा। गुरु ग्रह आध्यात्मिक कार्य भी करायेगा तथा पार्टी का वर्चस्व अच्छा बनेगा। राजयोग मुख्य मंत्रीपद का योग भी बनता है एवं बिगड़ता भी रहेगा। केन्द्रीय सरकार में भी अच्छा वर्चस्व प्राप्त होगा। गुप्तचरों द्वारा हानि होगी। कार्यकर्त्ताओं के विशेष योगदान से लाभ होगा। गांव में वर्चस्व गुरु ग्रह से बढ़ेगा। शुक्र अशांति करेगा।

श्री राहुल गांधी (सांसद)—वर्ष २००६ में राजयोग बनता है। केबिन गुरु ग्रह शुक्र की राशि पर होने से परिवर्तन योग के कारण विवाद का योग भी बनेगा। मध्यावधि चुनाव में पुनः विजय होने का योग भी है, लेकिन राजनीति क्षेत्र में नया मोड़ आकर विवाद जनक मामला बनेगा। अचानक यात्रा में दुर्घटना योग भी अगस्त २००६ से अक्टूबर २००६ तक बनता है। सावधान रहें। यात्राएं कम करें।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्यमंत्री राजस्थान)—वि.सं. २०६३ आपके लिए शारीरिक, बौद्धिक एवं राजनैतिक तीनों में ही कंटक तुल्य रहेगा। राहु-केतु राजा गुरु मंत्री गुरु उप मंत्री शुक्र के कारण पार्टी में भी कुछ विवाद तथा समूह विघटन का योग बनता है। पाँच वर्ष तक मुख्यमंत्री पदासीन रहना ग्रहयोगानुसार नहीं है। गुप्त वर्ग चोट भी पहुँचायेंगे। जून २००६ से अगस्त २००६ तक विशेष सतर्क रहने की आवश्यकता है। नवम्बर २००६ में राष्ट्रीय स्तरीय पार्टी पद प्राप्ति का योग बनेगा। दिनांक १६-५-०६ से २०-६-२००६ तक अशांति योग बनेगा। प्रति पक्ष का विवाद सहन नहीं कर सकेंगी तथा विद्रोह योग भी बनेगा। पाँच वर्ष का शासन भाजपा का असन्तोषजनक व्यक्ति विशेष से रहेगा।

माननीय श्री अशोक जी गहलोत (पूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान)—शनि के कारण अचानक चोट लेकिन राजनैतिक जीवनोदय पुनः होगा। केन्द्रीय पक्ष में सत्ता योग बनेगा। पार्टी के मदभेद से परेशानी रहेगी। स्थानीय निकायों में वर्चस्व बढ़ेगा। अगस्त २००६ से नवम्बर २००६ तक का भविष्य अच्छा तथा विजय दायक रहेगा। पूर्वोत्तर सीमा में भी ख्याति बढ़ेगी। शारीरिक पीड़ा का प्रभाव रहेगा।

माननीय श्रीमान् अटलबिहारी जी बाजपेयी (पूर्व प्रधानमंत्री) वि.सं. २०६३ के ग्रह प्रतिकूल ही रहेंगे। सत्ता योग सन् २०१० तक पुनः नहीं बनेगा। फिर आपका स्वास्थ्य जीर्ण हो जायेगा। अतः पुनः प्रधानमंत्री का योग नहीं बनता है। नवम्बर २००६ विशेषकर अशुभदायक होगा। शनि-गुरु-मंगल की बाधा आ रही है, पार्टी का नेतृत्व नहीं संभला तो पार्टी को ग्रहण लग जायेगा। लम्बी यात्राएं भी हानिकारक रहेंगी। दक्षिण दिशा में धोखा भी होगा।

माननीय श्री लालकृष्ण आडवानी—आपका वर्चस्व शनि-राहु-केतु के कारण न्यून होगा। आतंकवाद के शिकार भी होंगे। मई २००६ से अगस्त २००६ तक शारीरिक कष्ट भी रहेगा। सन् २००८ तक भविष्य प्रतिकूल रहेगा। मान-अपमान का योग बनता रहेगा। ईश्वर आपकी सन् २००६ में रक्षा करें।

माननीय श्री मुरली मनोहर जोशी (पूर्व मानव संशाधन मंत्री केबिनेट)—शनि ग्रह की शाही से साढ़ेसाती चल रही है लेकिन भाजपा का वर्चस्व शनि ग्रह के कारण पदेन लाभ मिलेगा। भाजपा का नेतृत्व भी मिलने का योग है। मध्यावधि चुनाव के बाद प्रधान मंत्री पद का योग सन् २००७ में बनता है। लग्न का शनि पुरानी प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी करायेगा। इनके ग्रह अनुकूल रहेंगे।

ज्योति बसु—आपका राजनैतिक भविष्य दोहन नजर आयेगा। वि.सं. २०६३ में शनि-गुरु-शुक्र के कारण पार्टी के नेतृत्व में भी विवाद बनेगा। प्रधानमंत्री पद प्राप्त नहीं होगा। यात्रा के दौरान अगस्त २००६ से अक्टूबर २००६ तथा जनवरी २००७ के समय संकट कारक रहेगा। सावधान।

श्रीमान् प्रमोद जी महाजन—वि.सं. २०६३ आपके लिए ऐतिहासिक रहेगा। पार्टी संगठन का भार मिलेगा। स्थाई निर्णय पर अटल रहेंगे। दक्षिणी-पूर्वी भारत की यात्रा में सावधान रहें। निकटतम नेता के योग से कार्य में गति बढ़ेगी। जून ०६ से अगस्त ०६ तक नेष्ट समय रहेगा। यात्रा नहीं करें तो ठीक है।

डॉ. प्रवीण जी तोगड़िया—शनि-मंगल-राहु-गुरु के कारण वर्चस्व बढ़कर घटेगा। विजय आपकी होगी। एकाएक मित्र वर्ग भी हट सकते है। हिरासत का मामला जुलाई ०६ से नवम्बर ०६ मध्य बनता है। ईश्वर रक्षा करें।

श्रीमान् एन.चन्द्र बाबू नायडू—आपके लिए अगस्त २००६ से अप्रेल २००७ तक का समय मृत्यु तुल्य बनेगा। पार्टी में छद्मवेशी होगी। **दो नम्बर** का मामले का पर्दा खुलेगा। स्त्री वर्ग के द्वारा नीति युक्त ज्ञान का बोध होगा। इस वर्ष उदासीनता की स्थिति रहेगी। यात्रा में सावधान रहें।

श्रीमान शरद पंवार—साझादारी में पार्टी का वर्चस्व घटेगा। पार्टी में एकाएक बदलाव का अवसर बनेगा। स्थानीय पार्टियों में अध्यक्षीय पद शोभित करते हुए चोट ग्रस्त भी होंगे। नीति गत बातों में प्रगतिशील गठबंधन का लाभ न्यून होगा। अप्रेल ०६ से अगस्त ०६ तक का कार्य अच्छा नहीं रहेगा।

श्रीमान् प्रणव मुखर्जी—वि.सं. २०६३ में भविष्य सामान्य ही रहेगा। ३०-४-०६ से २४-७-०६ तक समय ठीक नहीं रहेगा। लोक मर्यादा अभियोग भी लगेगा। राजनीति भी सामान्य रहेगी। इस वर्ष राजवर्ग में प्राप्ति का योग नहीं बनेगा। सावधान रहें। उत्तर-पूर्व की यात्राएं काफी पेचीदा एवं घटना क्रम युक्त रहेंगी।

श्री पी. चिदंबरम—वि.सं. २०६३ में इनका भाग्योदय योग तथा साझा सरकार का लाभ प्राप्त करेगा। पार्टी विवाद से स्वयं का वर्चस्व घटेगा। वर्तमान पद पर पांच वर्ष तक पदेन नहीं रहेंगे। निकटतम मित्र द्वारा भी धोखा का योग बनेगा। नवीन पार्टी का विलय हेतु आमंत्रण भी मिलेगा। जो हितकर नहीं होगा।

श्री रामविलास पासवान—वि.सं. २०६३ में मंगल-शुक्र-गुरु के कारण पार्टी को झटका पतन की ओर लगेगा। नीतिगत चर्चा का समर्थन नहीं करेंगे। सत्ता पक्ष का आमंत्रण प्राप्त होकर हट जायेगा। घोटालों तथा भ्रष्टाचार की वारदातों से अशांति बढ़ेगी। जलीय यात्रा में हानि का योग बनता है।

एम. करुणानिधि—स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। राजनैतिक योगदान भी घटेगा। इस वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट शनि के कारण बनेगा। दिसं. २००६ से फरवरी २००७ तक नेष्ट है।

स्वर शिरोमणि लता मंगेशकर—वि.सं. २०६३ में गुरु-शुक्र से वर्चस्व बढ़ेगा। मंगल स्वास्थ्य में गिरावट करायेगा। अन्तर्राष्ट्रीय मान-सम्मान अगस्त २००६ से नवम्बर २००६ तक बनता है। इससे पूर्व जून २००६ में आपकी हवाई यात्रा से अशुभ घटना घटने का योग बनेगा। कीर्ति ऐतिहासिक होगी। नया क्षेत्र मिलेगा।

सुश्री उमा भारती (पूर्व मुख्यमंत्री म.प्र.)—वि.सं. २०६३ में शनि के वर्चस्व से सत्ता में आकर **सर्प-नेवला** वाला काम करेंगी। पार्टी पर वर्चस्व छायेगा। अचानक दुर्घटना योग भी घटेगा। सितं. २००६ तथा फरवरी २००७ में सावधान रहें। शनि-मंगल के कारण पुनः सत्ता तथा सेवा का योग बनेगा। पार्टी के शीर्षस्थ नेता आडवाणी, उमा विवाद बढ़ेगा। जो कि ठीक नहीं होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री आर्य भट्ट संस्थान बंगलौर—वि. सं. २०६३ में आणविक एवं वैज्ञानिक संकटों के कारण नया शोध का तत्व मिलेगा। यह संस्था अन्तर्राष्ट्रीय वर्चस्व प्राप्ति में अग्रगामी इस वर्ष होगी।

परवेज मुशर्रफ (राष्ट्रपति पाकिस्तान)—इनकी जन्म कुण्डली के अनुसार वि. सं. २०६३ विश्वस्तरीय सम्मान में पतन के तुल्य होगा। गुप्तचरों व आतंकवादियों के पाँच शिकार होंगे। भारत-पाक मैत्री में पुनः यह खट्टापन लाने का योग बनायेगा। फिर भी सफलता भारत को मिलेगी। राजनैतिक योग प्रभावशाली जून २००६ तक ही रहेगा। फिर जन सेवा में रत दिसं. २००६ तक रहेंगे।

श्रीमान शिवराज पाटिल—ग्रहयोगानुसार वि. सं. २०६३ श्री पाटिल साहब के लिए अग्नि परीक्षण का रहेगा। पार्टी की स्थिति सामान्य रहेगी। कुछ तत्वों द्वारा विरोध भी होगा। शासकीय कार्यों में बाधाएं तथा माह जून-जुलाई २००६ में अशुभ योग बनेगा। सावधान रहना ही उपाय है।

श्री नरोत्तम मिश्र—आपका सं. २०६३ में भविष्य अच्छा रहेगा। नवीन पद लाभ तथा वर्चस्व भी बढ़ेगा। यात्रा में कार दुर्घटना के चार-पांच योग इस वर्ष में बनेंगे। किसी विशेष सभा में मान-सम्मान बढ़ेगा। स्त्री पक्ष का विशेष सहयोग रहेगा।

श्री टोनी ब्लेयर (ब्रिटेन प्रधानमंत्री)—वि. सं. २०६३ में शनि-गुरु के प्रभाव से शारीरिक परेशानियाँ बढ़ेंगी तथा हवाई यात्रा में भी संकट कालीन समय रहेगा। मई २००६ से अगस्त २००६ तक का समय कंटक तुल्य होगा।

श्रीमान् लालू प्रसाद यादव (रेल मंत्री, भारत सरकार)—आपको वि.सं. २०६३ में काफी नुकसान आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में रहेगा। पार्टी के नेतृत्व में कमी भी आयेगी। पांच वर्ष तक रेल मंत्री का पद नहीं रहने का योग है।

श्रीमती प्रियंका बढ़ेरा—वि.सं. २०६३ आपको अच्छा लाभ देगा तथा राजनैतिक लाभ न्यून। लेकिन पार्टी के पक्ष में अच्छी छवि बनाने में योगदान रहेगा। प्रसव पीड़ा के विशेष उपचार की भी आवश्यकता है। राजनैतिक दबाव से कुछ अशुभ कार्य हानिप्रद भी होने का योग है।

श्रीमती शीला दीक्षित (मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार)—वि.सं. २०६३ आपको नये कार्य में मदद करेगा। पांच वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने का योग बनता है। लेकिन पार्टियों में अविश्वास जन्य वार्ताएं बढ़ती जायेंगी। वाहन दुर्घटना के तीन योग बनते हैं। मंत्रिमण्डल का विस्तार भी अप्रेल २००६ से मई २००६ मध्य करने का बनता है। विदेशी यात्रा योग भी है।

शुश्री सानिया (टेनिस खिलाड़ी)—आपका स्वास्थ्य बिगड़ेगा फिर भी खेल में विशेष सफलता मंगल-शुक्र-शनि के कारण प्राप्त होगी। विश्व रिकार्ड में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। भारत का गौरव भी बढ़ाने में योगदान रहेगा। अपहरण से बचना होगा।

जगद्गुरु शंकराचार्य पीठ (भारत में चारों पीठों का भविष्य)—राजा गुरु तथा मंत्री शुक्र होने के कारण आध्यात्मिक कार्य शैली बढ़ेगी तथा सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में अच्छा योगदान होगा। मंत्री शुक्र होने पर छदम योग व्यभिचार तथा गुप्त रहस्यों का प्राकट्य करायेगा। सावधान रहें।

भारतीय राजनैतिक पार्टियों का भविष्य कथन

भारतीय जनता पार्टी (बी.जे.पी)-यह पार्टी धनु राशि से प्रभावित होने से एकता में बिखराव आयेगा। ग्रहचाल विगत सं. २०६२ के तुल्य ही वर्चस्व बिगाड़ेगा। वरिष्ठ नेताओं का प्रभाव न्यून होगा। तू तू मैं मैं के जरिये प्रदेशों में भी इसका प्रभाव घटेगा। परम्परागत रूप में भी इसका भविष्य अप्रेल २००६ से अगस्त २००६ तक का अग्नि परीक्षा का समय रहेगा। अन्तर्कलह का विशेष योग मोदी-आडवानी के ग्रहयोगानुसार बनेगा। आठवां शनि चतुर्थ राहु का होना काफी उलटफेर का परिचायक होगा। तीन प्रदेशों के मुख्य मंत्रियों का पद त्याग का वर्चस्व न्यून होगा। जिसमें राजस्थान व मध्य प्रदेश सम्मिलित हैं। मध्यावधि चुनाव होने पर भी पुनः सत्ता पक्ष में बहुमत प्राप्त नहीं होगा। तीन शीर्षस्थ नेताओं का देहावसान तथा आठ की दुर्घटना योग भी बनता है।

राष्ट्रीय जनता दल-तुला राशि के प्रभाव से ग्रह योग शुभदायक बनते हैं। श्री लालू प्रसाद जी यादव का नेतृत्व में इस पार्टी का वर्चस्व वि. सं. २०६३ में अच्छा नजर आयेगा। आतंकवाद का शिकार मंगल ग्रह के कारण बनता है। बिहार में वर्चस्व न्यून होने का योग है। फिर भी सत्ता पक्ष में अग्रगामी रहेगा। इस पार्टी में **"तीन तिगाड़ा-काम बिगाड़ा"** घटना भी दो बार घटेगी। लेकिन नियंत्रण पुनः हो जायेगा। इनके सितारे अच्छे हैं।

बहुजन समाज पार्टी-वृष राशि के प्रभाव से प्रार्थिनी सुश्री मायावती की पार्टी के अनुसार वि. सं. २०६३ में वर्चस्व बढ़ेगा। इस पार्टी को राज पक्ष में भागीदारी प्रदेश स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय दोनों ही जगह बनती है। सुश्री मायावती को विशेष सुरक्षा की आवश्यकता भी है। शुक्र मंत्री के प्रभाव से बसपा चमकेगी। गुरु मंत्री के प्रभाव से मदभेद बनते नजर आयेंगे। मायावती की कुण्डली में राजभंग योग बनता है। इन्हें अपनों से भी सावधान रहना चाहिए। पूर्वोत्तर भारत में पार्टी का वर्चस्व बढ़ेगा।

आई कॉंग्रेस पार्टी-इस पार्टी को प्रभावित राशियां मेष एवं मिथुन दोनों हैं। दोनों के शनि का प्रभाव साढ़ेसाती एवं ढैय्या वाला योग भी बनता है। पार्टी में परिवर्तन योग एवं समस्याओं का प्रभाव ज्यादा रहेगा। शनि की उतरती साढ़ेसाती मृत्युतुल्य कष्ट भी प्रदान करेगी तथा श्रीमती सोनिया गांधी की कुण्डली के अनुसार संगठनात्मक नेतृत्व फलीभूत होगा। प्रधान मंत्री बनने का आमन्त्रण भी फिर बनेगा। मगर पदासीन होना दुविधा जनक हो सकता है। राहुल गाँधी एवं प्रियंका बढ़ेरा का इस पार्टी में वर्चस्व बढ़ेगा। वर्तमान प्रधानमंत्री श्री सिंह को दुविधाजनक घटना से युक्त अप्रेल २००६ से दिसम्बर २००६ तक परेशानी युक्त रहेगा। संभवतः त्यागपत्र देना या लोकसभा भंग करने जैसा योग बनेगा।

झारखण्ड मुक्ति मोर्चा—इस पार्टी के प्रणेता शिब्बू सोरेन के लिए वि.सं. २०६३ अग्नि परीक्षा वाला होगा तथा पार्टी का वर्चस्व भी सामान्य रहेगा। नजदीक के व्यक्तियों द्वारा ही विद्रोह योग बनेगा। कानूनी उलझनों की बाधाएं घेरे रहेंगी। किसी नेता को बन्दी बनाए जाने की स्थिति भी बन सकती है। पार्टी का वर्चस्व सन् २००७ बाद अच्छा बनेगा। सन् २०१० के बाद पुनः स्तर घट जायेगा। संगठनात्मक भूमिका में पार्टी सहयोग करेगी।

अकाली दल—इस दल का शनि ग्रह के प्रभाव से वर्चस्व बढ़ेगा। विवाद योग भी बनेगा। यत्र तत्र सर्वत्र पार्टी के शीर्षस्थ नेताओं को समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। लोकसभा व राज्य सभा में वर्चस्व बनाये रखेगी। लेकिन आन्तरिक विवाद के कारण काफी परिवर्तन योग भी बनेंगे। पार्टी में भी कुछ अशांति वर्धक योग भी बनेंगे। नेता परिवर्तन योग भी बनता है।

आर. एस. एस. एवं बजरंग दल—मेष तथा वृषभ राशि से प्रभावित हैं। वि.सं. २०६३ के ग्रहयोगानुसार स्थिति अच्छी रहेगी। कई राज्यों में बढ़त होगी। युवा नेता को नेता पद प्राप्ति का योग भी बनेगा। संगठन के शीर्षस्थ नेताओं को कानूनी प्रक्रिया में जाना पड़ सकता है। बन्दी बनाने का योग भी बनेगा। नेतृत्व कर्त्ता का दायित्व बढ़ेगा। प्रदेश स्तरीय संगठन में सुदृढ़ता बढ़ेगी। तनावग्रस्त होने के कारण भाजपा के नेतृत्वकर्त्ता को विशेष ठेस पहुँचेगी। दक्षिण भारत में उपद्रव भी बढ़ेंगे तथा परिवर्तन योग बनेगा।

राजस्थान सरकार—इस सरकार की तुला राशि का गुरु आध्यात्मिक कार्य करायेगा। विधानसभा में काफी हंगामा तथा अशोभनीय घटना घटेगी। मंत्रिमंडल में दो बार परिवर्तन योग भी बनता है। सरकार को कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ेगा। आर्थिक कठिनाईयां भी रहेंगी।

हरियाणा सरकार—मिथुन-धनु राशि से प्रभावित सरकार अच्छी होकर भी एकाएक अशांति द्योतक योग बनेगा। वि.सं. २०६३ विकास की गति की ओर अग्रसर शनि-शुक्र-गुरु के कारण होगा।

दिल्ली सरकार—मीन राशि से प्रभावित दिल्ली सरकार इस वर्ष आदर्श पेश करके ऐतिहासिक कार्य करेगी। मंत्रिमंडल में दो बार परिवर्तन योग बनेगा। जनता सन्तुष्ट रहेगी।

माकपा—सिंह राशि से युक्त शनि साढ़ेसाती से ग्रस्त यह पार्टी अपनी छवि तो निखारेगी लेकिन सत्ता पक्ष तक नहीं पहुँच पायेगी। भागीदारी अदा करके मंत्रिमण्डल की सदस्यता तक पहुँच सकेगी। सन् २००७ के बाद काफी परेशानियां भी आयेंगी। स्थानीय लाभ ज्यादा मिलेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सम्मिलित हैं। मध्यावधि चुनाव होने पर भी पुनः सत्ता पक्ष में बहुमत प्राप्त नहीं होगा। तीन शीर्षस्थ नेताओं का देहावसान तथा आठ की दुर्घटना योग भी बनता है।

सकेगी। सन् २००७ के बाद काफी परेशानियां भी आयेंगी। स्थानीय लाभ ज्यादा मिलेगा।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विक्रम सम्वत् २०६३ शाके १९२८ मध्ये विवाह मुहूर्ताः

यहां दिये गए विवाह मुहूर्त्त "लता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुध पंचकम्। एकर्गलोपग्रहौ च क्रांति साम्यं तथा परम्॥ दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोषाः महाबलाः। एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधैः॥" श्लोक सूत्रगत प्रमुख दश दोष रहित हैं तथा जिन दोषों के परिहार वाक्य मिले उन्हें भी दिया गया है। इस दश दोष शुद्धि को रेखाओं में प्रदर्शित किया गया है। रेखाओं में जहाँ (।) है उस दोष की पूर्ण शुद्धि समझें तथा जहाँ (ऽ) है उसे परिहार सहित दोष जानें। **वैवाहिक नक्षत्र "रोहिण्युत्तर रेवत्यो स्वाति मूलं मृगो मघा। अनुराधाश्च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदः॥"** किन्तु कात्यायनोक्त **"त्रिषुः त्रिषूत्तरादिषु"** (गृह्य सूत्र) के अनुसार चार विशेष विवाह नक्षत्र भी हैं। इस विषय में धर्म सिंधुकार ने भी लिखा है। **"चित्रा श्रवण धनिष्ठाऽश्वनि यजुर्वेदीनाम्"** अतः यजुर्वेदियों के विवाह इन चार नक्षत्रों में भी हो सकते हैं। हम पाठकों की सुविधा हेतु इन चार विशेष विवाह नक्षत्रों के मुहूर्त्त भी अलग से दे रहे हैं।

नोटः- यहां क्रांतिसाम्य (महापात) दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है। लग्नों का समय भा.स्टैं.टा. दिल्ली हेतु है। अतः अन्य नगरों के लिये समय परिवर्तित करके संशोधित कर लें। गुरु-शुक्र का उदयास्त सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लिया गया है। लग्नों के आगे दिया गया समय लग्नारंभ काल है।

—ः विवाहे सूर्य गुरु व चन्द्र बल विचार ः—

सूर्यः-३,६,१०,११वाँ शुभ। १,२,५,७,९ वाँ पूज्य। ४, ८, १२वाँ नेष्ट।
गुरुः-२,५,७,९,११ वाँ शुभ। १,३,६,१०वाँ पूज्य। ४,८,१२वाँ नेष्ट।
चन्द्रः-१,२,३,५,६,७,९,१०,११वाँ शुभ। १२ वाँ ग्राह्य (पूज्य)। ४, ८वाँ नेष्ट।

समय शुद्धि

मीनाऽर्क (मलमास):- वर्षारंभ से वैशाख कृ.१ शुक्रवार दिनांक १४ अप्रेल २००६ ई. तक। चैत्र कृ. १० बुधवार दिनांक १४ मार्च २००७ ई. से वर्ष पर्यंत **(सर्वत्र वर्जित)**

देवशयन (चातुर्मास):- आषाढ़ शु. ११ शुक्रवार दिनांक ७ जुलाई से कार्तिक शु. १० बुधवार दिनांक १ नवंबर २००६ ई. तक। **(द्विगर्त देशों के अतिरिक्त सर्वत्र वर्जित)**

पूर्वास्तं शुक्रः (तारा):- वृद्धत्व, बाल्यत्व सहित आश्विन कृ.१० शनिवार दिनांक १६ दिनांक १६ सितंबर २००६ ई. से पौष कृ. ६ रविवार दिनांक १० दिसंबर २००६ ई. तक। **(सर्वत्र वर्जित)**

पश्चिमास्तं गुरुः (तारा):- वृद्धत्व, बाल्यत्व सहित कार्तिक शु. १४ शनिवार दिनांक ४ नवंबर २००६ ई. से पौष कृ. ४ शुक्रवार दिनांक ८ दिसंबर २००६ ई. तक। **(सर्वत्र वर्जित)**

धनुष्याऽर्क (मलमास)- पौष कृ.११ शनिवार दिनांक १६ दिसंबर से माघ कृ.१० रविवार दिनांक १४ जनवरी सन् २००७ ई. तक। **(सर्वत्र वर्जित)**

होलाष्टकः- फाल्गुन शु.८ शनिवार दिनांक २४ फरवरी २००७ ई. से फाल्गुन शु. १५ शनिवार दिनांक ३ मार्च २००७ ई. तक **(रावी, व्यास, शतलुज के किनारे एवं पंजाब हरि. उ.प्र. राज. हि.प्र. में वर्जित)**

मास	पक्ष	तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लतादि दशदोषा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चंद्र
वैशाख	कृष्ण	५	१८ अप्रैल ०६	मंगल	मूल	रेखा ७, ।।।।।ऽनृऽऽ।।	ल. गोधुली वेलायां	मेष	तुला	धनु
वैशाख	कृष्ण	६	१९ "	बुध	मूल	रेखा ८. ॥॥॥।ऽ।ऽ(दग्धाआव.)	ल. मिथुन दिवा ९।११ बजे। (चं. ७ पूज्य)	मेष	तुला	धनु
वैशाख	कृष्ण	७	२० "	गुरु	उ.षाढ़ा	रे. ७.ऽ गु.शु. ॥॥ऽचौ. ।ऽ॥	ल. गोधुली वेलायां।	मेष	तुला	धनु
वैशाख	कृष्ण	७	२० "	गुरु	उ.षाढ़ा	रे.७ऽगु.शु. ॥॥ऽचौ. ।ऽ॥	ल. वृश्चिक रात्री २०।३४ बजे। (मं.८ दोष)	मेष	तुला	धनु,मकर
वैशाख	कृष्ण	८	२१ "	शुक्र	उ.षाढ़ा	रे. ७.ऽगु.शु॥॥ऽचौ. ।ऽ॥	ल. वृष दिवा ७।७ बजे।	मेष	तुला	मकर
वैशाख	शुक्ल	२	२९ "	शनि	रोहिणी	रे.९ ॥॥।ऽचौ ॥॥	ल. कुंभ रात्री २।२ बजे।	मेष	तुला	वृष
वैशाख	शुक्ल	३	३० अप्रैल	रवि	रोहिणी	रे.९ ॥॥।ऽचौ ॥॥	ल. मिथुन दिवा ८।२७ बजे। (लग्ने मं. दोष) कर्क दिवा १०।४० बजे (लग्ने शनि दोष)	मेष	तुला	वृष

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास	पक्ष	तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लतादि दशदोषा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चंद्र
वैशाख	शुक्ल	३	३० "	रवि	रोहिणी	रे.९ ॥॥॥ऽ॥।	ल. वृश्चिक रात्री १९।५४ से २१।४६ तक। (मं.८ दोष) रिक्ता आवश्यके	मेष	तुला	वृष
वैशाख	शुक्ल	३	३० "	रवि	मृगशिरा	रे.९ ॥॥॥ऽ॥।	ल. वृश्चिक रात्री २१।४६ से। (मं.८दोष)। कुंभ रात्री १।५८ बजे (श.६ दोष) रिक्ता. आवश्यके	मेष	तुला	वृष
ज्येष्ठ	शुक्ल	१	२८ मई	रवि	मृगशिरा	रे.९ ॥ऽबु॥॥॥।	ल. सिंह दिवा ११।१० बजे। (श.१२ पूज्य)	वृष	तुला	वृष
ज्येष्ठ	शुक्ल	६	२ जून	शुक्र	मघा	रे.६ऽमं. ॥॥ऽरो.ऽऽ॥	ल. धूलिमुखे सायंकाले।	वृष	तुला	सिंह
ज्येष्ठ	शुक्ल	६	२ "	शुक्र	मघा	रे.८ऽमं॥॥॥ऽ॥	ल. मेष रात्री २।४० बजे। (गु.७ पूज्य)	वृष	तुला	सिंह
ज्येष्ठ	शुक्ल	७	३ "	शनि	मघा	रे.८ऽमं॥॥॥ऽ॥	ल. मिथुन प्रात: ६।११ बजे।	वृष	तुला	सिंह
ज्येष्ठ	शुक्ल	११	७ "	बुध	स्वाति	रे.८ऽसू.श. ।ऽगु॥॥॥।	ल. मेष रात्री ३।२३ बजे से ३।५७ तक (गु.चं.७ पूज्य)	वृष	तुला	तुला
ज्येष्ठ	शुक्ल	१२	८ "	गुरु	स्वाति	रे.८ऽसू.श. ।ऽगु॥॥॥।	ल. मिथुन प्रात: ५।५२ बजे	वृष	तुला	तुला
ज्येष्ठ	शुक्ल	१२	८ "	गुरु	स्वाति	रे.७ऽश. ।ऽगु. ॥।ऽ॥।	ल. धूलि.सायंकाले।मेष रात्री २।१७ बजे (गु.चं.७ पूज्य)	वृष	तुला	तुला
ज्येष्ठ	शुक्ल	१४	१० "	शनि	अनुराधा	रे.९।॥ ऽशु. ॥॥॥ (पदवेधेन शुक्र वेधाऽभाव:)	ल. कर्क प्रात: ७।५८ बजे (लग्ने मं.श.दोष)। सिंह दिवा१०।१८ से ११।३८ बजे तक (श.१२ पूज्य)रि.आवश्यके	वृष	तुला	वृश्चि.
आषाढ़	कृष्ण	१	१२ "	चन्द्र	मूल	रे. ८॥॥ऽ॥ऽ॥	ल. मिथुन प्रात: ५।३७ बजे(चं.७ पूज्य)	वृष	तुला	धनु
आषाढ़	कृष्ण	१	१२ "	"	"	रे.७॥।ऽबु.ऽ॥ऽ॥ (पदवेधेन बुध वेधाऽभाव:)	ल. सिंह दिवा१०।११ बजे (श.१२ पूज्य)	वृष	तुला	धनु
आषाढ़	शुक्ल	४	२९ "	गुरु	मघा	रे.८॥॥॥ऽऽ॥	ल. मेष रात्री १।५२ बजे से (गु.७ पूज्य) वृष रात्री २।३२ बजे।	मिथुन	तुला	सिंह
आषाढ़	शुक्ल	५	३० "	शुक्र	"	रे.९॥॥॥।ऽ॥	ल. धूलि. सायं.। कुंभ रात्री २१।५९बजे (चं.७पू.)(श.६दोष)	मिथुन	तुला	सिंह
आषाढ़	शुक्ल	१०	६ जुलाई	गुरु	स्वाति	रे.८॥ऽगु॥ऽग्नि॥॥	ल. सिंह दिवा ८।५५ बजे से (श.१२ पूज्य)	मिथुन	तुला	तुला
पौष	कृष्ण	८	१३ दिसंबर	बुध	हस्त	रे.९॥॥॥।ऽ॥	ल. तुला रात्री २।३८ बजे (शु.३ पूज्य) रिक्ता आव.	वृश्चि.	वृश्चि.	कन्या
माघ	कृष्ण	११	१५ जन.०७	चन्द्र	अनुराधा	रे.७।ऽ॥॥ऽऽ॥	ल. मीन दि.१०।२५ बजे (मं.१०पूज्य)रविर्निरंश	मकर	वृश्चि.	वृश्चि.
माघ	शुक्ल	५	२३ "	मंगल	उ.भाद्र.	रे.८॥॥।ऽरोगऽ॥।	ल. मेष दिवा ११।४१ बजे से (गु.८दोष)	मकर	वृश्चि.	मीन
माघ	शुक्ल	५	२३ "	मंगल	"	रे.१०॥॥॥॥॥	ल. धूलि. सायंकाले। वृश्चि.रात्री २।१७ बजे (रा.४ पूज्य)	मकर	वृश्चि.	मीन
माघ	शुक्ल	६	२४ "	बुध	रेवति	रे.९॥॥॥।ऽ॥	ल. मेष दिवा ११।१४ बजे (गु.८दोष)	मकर	वृश्चि.	मीन
फाल्गुन	कृष्ण	४	६ फरवरी	मंगल	हस्त	रे.९॥॥॥।ऽ॥	ल. गोधुली वेलायां (रिक्ता आवश्यके)। तुला रात्री २३।३ बजे। वृश्चिक रात्री १।२२ बजे।	मकर	वृश्चि.	कन्या
फाल्गुन	कृष्ण	५.	७ "	बुध		रे.८॥॥।ऽ[illegible]।ऽ॥	[illegible]५ बजे (चं.७ मं.१० पूज्य)	मकर	वृश्चि.	कन्या

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

							रात्री २३।३ बजे। वृश्चिक रात्री १।२२ बजे।	मकर	वृश्चि.	कन्या
फाल्गुन	कृष्ण	५.	७ ''	बुध	''	रे.८ ॥॥ऽचौ।ऽ॥	ल. मीन प्रात: ८।५५ बजे (चं.७ मं.१० पूज्य)	मकर	वृश्चि.	कन्या

मास	पक्ष	तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लतादि दशदोषा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चंद्र
फाल्गुन	शुक्ल	४	२१ ''	बुध	रेवति	रे.९ ॥॥ऽरो ॥॥	ल. वृष दि. ११।४२ से १२।५४ तक (गु.७ पू.),मिथुन दि. १२।५४ बजे (मं.८ दोष)तिथि क्षय आव.	कुंभ	वृश्चि.	मीन
चैत्र	कृष्ण	१	५ मार्च	चन्द्र	हस्त	रे.८।ऽ।।ऽग्नि॥॥	ल. वृश्चिक रात्री २३।३६ बजे (रा.४ पूज्य)	कुंभ	वृश्चि.	कन्या
चैत्र	कृष्ण	२	६ ''	मंगल	''	रे.९।ऽ॥॥॥	ल. गोधुलीवेलायां	कुंभ	वृश्चि.	कन्या
चैत्र	कृष्ण	६	१० ''	शनि	अनुराधा	रे.८ऽऽ॥॥॥	ल. वृष दिवा १०।४५ बजे से ११।४८ तक (चं.गु.७पूज्य) धूलिमुखे सायंकाले।	कुंभ	वृश्चि.	वृश्चि.
चैत्र	कृष्ण	७	११ ''	रवि	''	रे.७ऽऽ॥ऽरो॥॥	ल.वृष दिवा ९।५० बजे (चं.गु.७पूज्य)	कुंभ	वृश्चि.	वृश्चि.
चैत्र	कृष्ण	८	१२ ''	चन्द्र	मूल	रे.९॥॥॥ऽ॥	ल. धूलि. सायं काले। वृश्चि. रात्री २३।८ बजे से २४।५८ बजे तक् अग्रे मृत्युवाण (रिक्ता आव., रा.४ पूज्य)	कुंभ	वृश्चि.	धनु

कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी विवाह मुहूर्ता: सं.२०६३

मास	पक्ष	तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लतादि दशदोषा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चंद्र
वैशाख	कृष्ण	१	१४ अप्रै.०६	शुक्र	चित्रा	रे.७।ऽ।ऽबु.॥ऽ॥ (पादवेधेन बुध वेधाऽभाव:)	ल. मिथुन दि. ९।३० बजे (ल. भौम दोष) रविर्निरंश	मेष	तुला	तुला
वैशाख	कृष्ण	८	२१ ''	''	श्रवण	रे.७।ऽ॥ऽ॥ऽ॥	ल. धूलिमुखे सायं काले। कुंभ रात्री २।३४ बजे (श.६,के.८दोष) (कुंभे रिक्ता आवश्यके)	मेष	तुला	मकर
वैशाख	कृष्ण	९	२२ ''	शनि	''	रे.७।ऽ॥ऽश.॥ऽ॥	ल. वृष प्रात: ७।३ बजे। रिक्ता आवश्यके	मेष	तुला	मकर
वैशाख	शुक्ल	९	२२ ''	''	धनिष्ठा	रे.८॥॥ऽरो.।ऽ॥	ल. धूलि.सायं।वृश्चि.रात्री २०।२६ बजे (मं.८ दोष)	मेष	तुला	मकर
वैशाख	शुक्ल	१२	१० मई	बुध	चित्रा	रे.१०॥॥॥॥	ल. धूलि. सायं। वृश्चि. रात्री १९।१४ बजे (मं.८ दोष)	मेष	तुला	कन्या
वैशाख	शुक्ल	१३	११ ''	गुरु	''	रे.९॥॥ऽरो.॥॥	ल. मिथुन दिवा ७।४३ बजे (लग्ने भौम दोष)। कर्क दिवा ९।५७ बजे (लग्ने शनि दोष, रिक्ता आव.)	मेष	तुला	तुला
ज्येष्ठ	कृष्ण	८	२० ''	शनि	धनिष्ठा	रे.७ऽशु॥॥ऽनृ।ऽ॥	ल. मिथुन दिवा ७।८ बजे (लग्ने भौम दोष)	वृष	तुला	कुंभ
ज्येष्ठ	कृष्ण	१२	२४ ''	बुध	अश्विनी	रे.१०॥॥॥॥	ल. सिंह दिवा ११।३४ बजे से १३।१८ तक (शु.८ दोष)	वृष	तुला	मेष
ज्येष्ठ	शुक्ल	११	७ जून	बुध	चित्रा	रे.८।ऽ॥ऽनृ॥॥	ल. कुंभ रात्री १२।१ बजे से १२।५५ तक (श.६ दोष)	वृष	तुला	तुला
ज्येष्ठ	शुक्ल	११	७ जून	बुध	चित्रा	रे.९।ऽ॥॥॥	ल. मेष रात्री २।२१ बजे से ३।२३ तक (चं.गु.७ पू.)	वृष	तुला	तुला
आषाढ़	कृष्ण	१०	२० ''	मंगल	अश्विनी	रे.७ऽबु॥॥ऽऽ॥	ल. वृष रात्री ३।७ बजे।	मिथुन	तुला	मेष
आषाढ़	कृष्ण	११	२१ ''	बुध	''	रे.७ऽबु॥॥ऽऽ॥	ल. सिंह दिवा ९।३६ बजे (श.१२पूज्य)	मिथुन	तुला	मेष
आषाढ़	शुक्ल	८	४ जुलाई	मंगल	चित्रा	रे.८॥॥ऽ॥ऽ(दग्धा आवश्यके)	ल. सिंह दिवा ९।३१ बजे से (श.१२ पूज्य)	मिथुन	तुला	कन्या
आषाढ़	शुक्ल	८	४ ''	''	''	रे.१०॥॥॥॥	ल.धूलि. सायं। मेष रात्री १२।३६ बजे (चं.गु.७ पू.)	मिथुन	तुला	कन्या तुला
माघ	शुक्ल	१	२० जन.०७	शनि	श्रवण	रे.९॥ऽबु॥॥॥	ल. मीन दिवा १०।५ बजे(मं.१० पूज्य ति.क्ष.आ.)	मकर	वृश्चि.	मकर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंजाब आदि द्विगर्त देशीय विवाह मुहूर्त्ता: (नक्षत्र चतुष्टयी सहिता:)

मास	पक्ष	तिथि	दिनांक	वार	नक्षत्र	रेखात्मक लतादि दशदोषा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण (स्टै.टा.)	सूर्य	गुरु	चंद्र
आषाढ़	शुक्ल	११	७ जुलाई	शुक्र	अनुराधा	रे.१० ॥॥॥॥॥	ल. रात्री वृष (चं.७ पूज्य)	मिथुन	तुला	वृश्चि.
आषाढ़	शुक्ल	१२	८ "	शनि	"	रे.१० ॥॥॥॥॥	ल. दिवा सिंह(श.१२ पूज्य)	मिथुन	तुला	वृश्चि.
श्रावण	कृष्ण	१	१२ "	बुध	श्रवण	रे.७ ॥॥ऽबु.ऽरोऽ ॥।	ल. रात्री वृष (तिथिक्षय आवश्यके)	मिथुन	तुला	मकर
श्रावण	कृष्ण	१०	२० "	गुरु	रोहिणी	रे.९ ॥॥॥।ऽ ॥	ल.रात्री मेष (गु. ७,शु.३ पूज्य)	कर्क	तुला	वृष
श्रावण	कृष्ण	१२	२२ "	शनि	मृगशिरा	रे.९ ॥॥॥।ऽ ॥	ल. दिवा तुला	कर्क	तुला	मिथुन
श्रावण	शुक्ल	६	३१ "	चन्द्र	चित्रा	रे.९ ॥॥॥।ऽ ॥	ल. रात्री वृष	कर्क	तुला	कन्या
श्रावण	शुक्ल	७	१ अगस्त	मंगल	स्वाति	रे.६ ।ऽऽगु ॥ऽचौ ।ऽ ॥	ल. रात्री मेष (चं.गु.७ पूज्य)(शु.३ पूज्य)	कर्क	तुला	तुला
श्रावण	शुक्ल	९	३ "	गुरु	अनुराधा	रे.९ ॥॥।ऽरो ॥॥(गणितेन क्रांतिसाम्याऽभाव:)	ल. रात्री वृष (चं.७ पूज्य)रिक्ता आवश्यके	कर्क	तुला	वृश्चि.
श्रावण	शुक्ल	१०	४ "	शुक्र	अनुराधा	रे.९ ॥॥।ऽरो ॥॥(गणितेन क्रांतिसाम्याऽभाव:)	ल. दिवा तुला	कर्क	तुला	वृश्चि.
श्रावण	शुक्ल	१०	४ "	"	"	रे.१० ॥॥॥॥॥	ल. गोधुली वेलायां	कर्क	तुला	वृश्चि.
भाद्रपद	कृष्ण	९	१७ "	गुरु	रोहिणी	रे.७ऽशु. ॥॥।ऽऽ ॥	ल. दिवा वृश्चिक (चं.७,मं.१० पूज्य)रिक्ता आवश्यके रविर्निरंश	सिंह	तुला	वृष
भाद्रपद	कृष्ण	९	१७ "	"	"	रे.६ऽशु. ॥॥।ऽऽ ।ऽ(दग्धा आ.)	ल. रात्री मेष (गु.७ पूज्य)	सिंह	तुला	वृष
भाद्रपद	शुक्ल	३	२६ "	शनि	हस्त	रे.९ ।ऽ ॥॥॥	ल. रात्री वृष (शु.३ पूज्य)	सिंह	तुला	कन्या
भाद्रपद	शुक्ल	३	२७ "	रवि	"	रे.९ ।ऽ ॥॥॥	ल. दिवा तुला। वृश्चिक १४।१० तक अग्रे मृत्यु बाण(मं.१० पूज्य) रिक्ता आवश्यके	सिंह	तुला	कन्या
भाद्रपद	शुक्ल	५	२९ "	मंगल	स्वाति	रे.८ ॥ऽगु. ॥ऽग्नि ॥॥	ल. दिवा वृश्चिक (१०मं. पूज्य)	सिंह	तुला	तुला
भाद्रपद	शुक्ल	५	२९ "	"	"	रे.९ ॥ऽगु ॥॥॥।	ल. धूलि. सायं काले। रात्री मेष (चं.गु.७ पूज्य)	सिंह	तुला	तुला
भाद्रपद	शुक्ल	११	४ सिंतबर	चन्द्र	उ.षा.	रे.९ ॥॥।ऽरो ॥॥	ल. धूलिमुखे सायं काले	सिंह	तुला	मकर
भाद्रपद	शुक्ल	११	४ "	"	"	रे.९ऽगु ॥॥॥॥।	ल. रात्री वृष	सिंह	तुला	मकर

शुद्ध गृहारम्भ (नींव रखना) मुहूर्त्ता: सं.२०६३

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय (स्टै. टा.)
१४ अप्रै.	वैशा.कृ. १	चित्रा	शुक्र	ल. वृष ७।३४ बजे। मिथुन ९।३० बजे।
१४ "	वैशा.कृ. १	स्वाति	शुक्र	ल. अभि. १२।१० से १२।३४ बजे तक
७ जून	ज्येष्ठ शु.११	चित्रा	बुध	ल. मिथुन ५।५६ बजे
८ "	" "१२	स्वाति	गुरु	ल. अभि. १२।८ से १२।३२ बजे तक
१० अग.	भाद्र. कृ. १	धनि.	गुरु	ल. अभि. १२।१५ से १२।३९ बजे तक
२९ जन.	माघ शु.११	मृग.	चन्द्र	ल. अभि. १२।२२ से १२।४६ बजे तक
७ फर.	फा. कृ. ५	हस्त	बुध	ल.मीन ८।४५ बजे। वृष ११।४५ बजे।

दोष विवरण सहित अशुद्ध गृहारम्भ मुहूर्त्ता:

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय (स्टै. टा.)
१५ अप्रै.	वैशा. कृ. २	स्वाति	शनि	ल. अभि. (मृत्युबाण)
२० "	वैशा. कृ. ७	उ.षा.	गुरु	ल. कन्या (वृ.च. र.) के.१, सू. ८ दोष
२६ "	वैशा. कृ.१३	रेवति	बुध	ल. वृष (वृष चक्र रहित) भद्रा दोष, तिथिक्षय, रिक्तातिथि
१ मई	वैशा. शु. ४	मृग.	चन्द्र	ल.अभि.(वृष चक्र रहित,भद्रा दोष.रिक्ता)
११ "	वैशा. शु.१३	चित्रा	गुरु	ल. अभिजित, (रिक्ता तिथि)
१२ "	वैशा. शु.१४	स्वा.	शुक्र	ल. वृष (चं.गु.६ दोष, रिक्ता)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ल. मिथुन (वृष चक्र रहित)

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय (स्टै. टा.)
१० जून	ज्येष्ठ शु.१४	अनु.	शनि	ल. अभि. (रिक्ता तिथि)
२१ जुला	श्राव. कृ.११	रोहि.	शुक्र	ल. अभि. (वृष चक्र रहित)
३१ "	श्राव. शु. ६	हस्त	चन्द्र	ल. अभि. (वृष चक्र रहित, दग्धा)
१० अग.	भाद्र. कृ. १	शत.	गुरु	ल. वृश्चिक (गुरु वेध, चं.४ दोष)
१२ "	भाद्र. कृ. ३	उ.भा.	शनि	ल. अभि.(वृ.च. र., रिक्ता व क्षय तिथि)
१७ "	भाद्र. कृ. ९	रोहि.	गुरु	ल. अभि. (वृष चक्र रहित,रिक्ता तिथि)
२६ "	भाद्र. शु. ३	उ.फा.	शनि	ल. अभि. (वृष चक्र रहित,केतु युति)
४ सितं.	भाद्र. शु.११	उ.षा.	चन्द्र	ल. अभि.(भ.दोष)। धनु (रा.४ श.८ दोष)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय (स्टै. टा.)
६ सितं.	भाद्र. शु. १३	धनि.	बुध	ल. कन्या (मं.के.लग्न में रा.७ दोष) धनु (रा.४ श.८ दोष,मृत्युबाण रिक्ता व क्षय तिथि)
१३ दिसं.	पौष कृ. ८	उ.फा.	बुध	ल. मीन (चं.७ दोष, रिक्ता, वृ.च.रहित)
१४ "	पौष कृ. ९	हस्त	गुरु	ल. मीन (चं.७ दो., वृष च.र., मृत्युबाण)
१५ जन.	माघ कृ. ११	अनु.	चन्द्र	ल. मीन (वृष चक्र रहित)
१ फर.	माघ शु. १४	पुष्य	गुरु	ल. मीन (रिक्ता)। अभि.(भद्रा दोष)
९ "	फा. कृ. ७	स्वाति	शुक्र	ल. अभि. (वृष चक्र रहित)
२१ "	फा. शु. ४	रेवति	बुध	ल.मिथुन(वृ.च.रहि.मं.८दोष तिथि क्षय)

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. २०६३

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय
८ मई	वैशा. शु. ११	उ.फा.	चन्द्र	ल. अभि. १२।६ से १२।३० बजे तक
११ "	वैशा. शु. १३	चित्रा	गुरु	ल. मिथुन ७।४३ बजे (के. ४ दोष)
७ जून	ज्येष्ठ शु. ११	चित्रा	बुध	ल. मिथुन ५।५६ बजे (के. ४ दोष)
२४ जन.	माघ शु. ६	उ.भा.	बुध	ल. कुंभ ८।२१ बजे
२४ "	माघ शु. ६	रेवति	बुध	ल. वृष १२।५० से १३।५२ तक अग्रे मृत्युबाण (मं.८, के.४ दोष)
२९ "	माघ शु. ११	मृग.	चन्द्र	ल. मीन ९।३० बजे
१५ फर.	फा. कृ. १३	उ.षा.	गुरु	ल. अभि. १२।२३ से १२।४७ बजे तक

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. २०६३

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय
१४ अप्रै.	वैशा. कृ. १	चित्रा	शुक्र	ल. वृष, मिथुन (कुं.च. रहित)
२० "	वैशा. कृ. ७	उ.षा.	गुरु	ल. सिंह १५।१० बजे बाद (कु.च. र.)
२१ "	वैशा. कृ. ८	उ.षा.	शुक्र	ल. अभिजित (कुंभ चक्र रहित)
२४ "	वैशा. कृ. ११	शत.	चन्द्र	ल. वृष
१८ मई	ज्येष्ठ कृ. ५	उ.षा.	गुरु	ल. अभिजित (कुंभ चक्र रहित)
२० "	ज्येष्ठ कृ. ८	धनि.	शनि	ल. अभिजित (कुंभ चक्र रहित)
८ जून	ज्येष्ठ शु. १२	स्वा.	गुरु	ल. अभिजित
१३ जुला	श्राव. कृ. ३	धनि.	गुरु	ल. अभिजित (कुंभ चक्र रहित)
२१ "	श्राव. कृ. ११	रोहि.	शुक्र	ल. वृश्चिक
२२ "	श्राव. कृ. १२	मृग.	शनि	ल. अभिजित
१२ अक्टू.	का. कृ. ६	मृग.	गुरु	ल. अभिजित (कुंभ चक्र रहित)
२३ "	का. शु. १	स्वा.	चन्द्र	ल. अभिजित (कुंभ चक्र रहित)
२५ "	का. शु. ३	अनु.	बुध	ल. धनु (श.८ दोष)कुंभ १५।५१ बजे तक (श.६ दो.) कुं. च. रहित
३ नवं.	का. शु. १३	उ.भा.	शुक्र	ल. अभिजित
२१ फर.	फा. शु. ४	रेवति	बुध	ल. वृष ११।४२ बजे बाद (के. ४ दो.) मिथुन (मं. ८ दोष) कुंभ चक्र रहित

नोट:- *उपरोक्त मुहूर्त उन लोगों के उपयोगार्थ हैं जिन्हें ट्रांसफर वा किसी आपदा वश अथवा अन्य किसी कारण वश किराये आदि के मकानों का परिवर्तन करना पड़ता है। यहाँ गुरु शुक्रास्त का विचार नहीं किया गया है। कुंभ चक्र शुद्ध तथा रहित दोनों ही प्रकार के मुहूर्त्त दिये गये हैं।*

सर्व देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः सं. २०६३

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय
१४ अप्रै.	वैशा.कृ. १	चित्रा	शुक्र	ल. वृष ७।३४ बजे (रविनिरंश)
२१ "	वैशा.कृ. ८	उ.षा.	शुक्र	ल. वृष ७।७ अभि. १२।८ से १२।३२ तक
२४ "	वैशा.कृ.११	शत.	चन्द्र	ल. वृष ६।५५ बजे
३० "	वैशा.शु. ३	रोहि.	रवि	ल. अभि. १२।६ से १२।३० तक
३ मई	वैशा.शु. ६	पुन.	बुध	ल. वृष ६।१८ बजे
८ "	वैशा.शु.११	उ.फा.	चन्द्र	ल. अभि. १२।६ से २२।३० तक
११ "	वैशा.शु.१३	चित्रा	गुरु	ल. मिथुन ७।४३ बजे
१४ "	ज्येष्ठ कृ. १	अनु.	रवि	ल.अभि.१२।५से १२।२९तक (मासान्त)
१८ "	ज्येष्ठ कृ. ५	उ.षा.	गुरु	ल. अभि. १२।५ से १२।२९ तक
२० "	ज्येष्ठ कृ. ८	धनि.	शनि	ल. अभि १२।६ से १२।३०
२५ "	ज्येष्ठ कृ.१३	अश्वि.	गुरु	ल. मिथुन ६।४८ बजे
२८ "	ज्येष्ठ शु. १	मृग.	रवि	ल. अभि. १२।६ से १२।३० तक
८ जून	ज्येष्ठ शु.१२	स्वा.	गुरु	ल. अभि. १२।८ से १२।३२ तक
६ जुला	आषा.शु.१०	स्वा.	गुरु	ल. अभि. १२।१४ से १२।३८ तक
२० जन.	माघ शु. १	श्रव.	शनि	ल. अभि. १२।२० से १२।४४ तक (तिथि क्षय आवश्यक)
२४ "	माघ शु. ६	उ.भा.	बुध	ल. कुंभ ८।२१ बजे
२८ "	माघ शु.१०	रोहि.	रवि	ल. अभि. १२।२२ से १२।४६ तक
३१ "	माघ शु.१३	पुन	बुध	ल. मीन ९।२२ से १०।३४ बजे तक अग्रे रिक्ता तिथि (चं.४ दोष)
७ फर.	फा. कृ. ५	हस्त	बुध	ल. मीन ८।५५ बजे
९ "	फा. कृ. ७	स्वा.	शुक्र	ल. मिथुन १३।४३ बजे (मृ.८ दोष)
२१ फर.	फा. शु. ४	रेवति	बुध	ल. वृष ११।४२ से १२।५४ बजे तक
५ मार्च	चैत्र कृ. १	उ.फा.	चन्द्र	ल. अभि. १२।२१ से १२।४५ तक

अथ द्विरागमन मुहूर्त्ताः सं. २०६३

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय
१४ अप्रै.	वैशा. कृ. १	चित्रा	शुक्र	ल. मिथुन ९।३० बजे
१९ "	वैशा. कृ. ६	मूल	बुध	ल. मिथुन ९।११ बजे
२१ "	वैशा. कृ. ८	उ.षा.	शुक्र	ल. वृष ७।७
२४ "	वैशा. कृ.११	शत.	चन्द्र	ल. वृष ६।५५ बजे। मिथुन ८।५१ से ९।२१ बजे तक
३ मई	वैशा. शु. ६	पुन.	बुध	ल. वृष ६।१८ बजे। सिंह १२।४७ बजे
११ "	" शु.१३	चित्रा	गुरु	ल. मिथुन ७।४३ बजे
१८ "	ज्येष्ठ कृ. ५	उ.षा.	गुरु	ल. अभि. १२।५ से १२।२९ तक। कन्या १४।७ बजे
२१ फर.	फा. शु. ४	रेवति	बुध	ल. वृष ११।४२ बजे से।
२२ "	फा. शु. ६	अश्वि.	गुरु	ल. मीन ७।५४ बजे।
२८ "	फा. शु.१२	पुन.	बुध	ल. मीन ७।३१ बजे।
१ मार्च	फा. शु.१३	पुष्य	गुरु	ल. मीन ७।२८ बजे। अभि. १२।२२ से १२।४६ तक
५ "	चैत्र कृ. १	उ.फा.	चन्द्र	ल. अभि. १२।२१ से १२।४५ तक।

अथ मुण्डन संस्कार मुहूर्त्ताः सं. २०६३

दिनांक	मास पक्ष ति.	नक्षत्र	वार	लग्न शुद्धि समय
१८ अप्रै.	वैशा. कृ. ५	ज्येष्ठा	मंगल	ल.वृष ७।१९ बजे। मिथुन ९।१५ बजे। (क्षत्रि.)
२४ "	वैशा. कृ.११	शत.	चन्द्र	ल. वृष ६।५५ बजे। (सर्वेषां)
१० मई	वैशा. शु.१२	हस्त	बुध	ल. मिथुन ७।४७ बजे। कर्क १०।१ बजे। (सर्वेषां)
११ "	वैशा. शु.१३	चित्रा	गुरु	ल. मिथुन ७।४३ बजे (सर्वेषां)
१५ "	ज्येष्ठा कृ. २	ज्येष्ठा	चन्द्र	ल. मिथुन ७।२७ बजे। कर्क ९।४१ बजे। (सर्वेषां)
२५ "	ज्येष्ठ कृ.१३	अश्वि.	गुरु	ल. मिथुन ६।४८ बजे। (सर्वेषां)
२८ "	ज्येष्ठ शु. १	मृग.	रवि	ल. अभि. १२।६ से १२।३० बजे तक। (विप्राणां)
७ जून	ज्येष्ठ शु.११	चित्रा	बुध	ल. कर्क ८।१० बजे (सर्वेषां)
२० "	आषा.कृ. १०	रेवति	मंगल	ल. कर्क ७।२० बजे (क्षत्रियाणां)
२१ "	आषा.कृ. ११	अश्वि.	बुध	ल. कर्क ७।१६ बजे (सर्वेषां)
२० जन.	माघ शु. १	श्रव.	शनि	ल. मीन १०।५ बजे (वैश्याणां)
७ फर.	फा. कृ. ५	हस्त	बुध	ल. मीन ८।५५ बजे (सर्वेषां)
१२ "	फा. कृ.१०	ज्येष्ठा	चन्द्र	ल. मीन ८।३५ बजे (सर्वेषां)
२१ "	फा. शु. ४	रेवति	बुध	ल. वृष ११।४२ बजे से१२।५४ बजे तक (सर्वेषां)

शेष पृष्ठ ३० पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०६३ विक्रमी (दिनांक ३० अप्रैल २००६ ई. से १९ मार्च २००७ ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर-कन्या को सूर्य व गुरु बल विचार सहित)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए ''सूर्य की पूजा'' तथा कन्या के लिए ''गुरु की पूजा'' वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उन राशि वाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए ४, ८, १२वें सूर्य व ४, ८वें चन्द्र परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अंतः ४, ८, १२वें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ, अष्टम और बारहवें चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। यहां कात्यायनोक्त चार नक्षत्रों के विवाह मुहूर्तों की तारीखें भी सम्मिलित हैं। अतः स्वप्रथानुसार ग्रहण करें।

वर (लड़का)	वर के लिए पून्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पून्य गुरु
मेषः-अप्रैल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, **मई**-१०, ११, २०, २४, २८, **जून**- २, ३, ७, ८, १२, २०, २१, २९, ३०, **जुलाई**-४,६, **जनवरी**- २०, २३, २४, **फरवरी**- ६, ७, २१, **मार्च**- ५, ६, १२।	१४ अप्रैल से १५ जून तक	**मेषः-अप्रैल**-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, **मई**-१०, ११, २०, २४, २८, **जून**- २, ३, ७, ८, १२, २०, २१, २९, ३०, **जुलाई**- ४, ६, **दिसंबर**- १३, **जनवरी**- २०, २३, २४, **फरवरी**-६, ७, २१, **मार्च**- ५, ६, १२।	२७ अक्टूबर से वर्ष पर्यंत
वृषः-मई-२०, २४, २८, **जून**- ७, ८, १०, २०, २१, **जुलाई**- ४, ६, **दिसंबर**- १३, **जनवरी**- १५, २०, २३, २४, **फरवरी**- ६, ७, २१, **मार्च**- ५, ६, १०, ११।	१५ मई से१६जुलाई १६ नवं.से १६दिसं. १४ जन.से १३ फर.तक	**वृषः-अप्रैल**-१४, २० (२०।५८ बजे बाद), २१, २२, २९, ३०, **मई**- १०, ११, २०, २४, २८, **जून**- ७, ८, १०, २०, २१, **जुलाई**-४, ६, **दिसंबर**- १३, **जनवरी**- १५, २०, २३, २४, **फरवरी**-६, ७, २१, **मार्च**- ५, ६, १०, ११।	वर्षारंभ से २७ अक्टूबर
मिथुनः-अप्रेल- १४, १८, १९, २०(२०।५८ बजे तक), २९, ३०, **जून**-२०, २१, २९, ३०, **जुलाई**- ४, (२२।४८ बजे बाद), ६, **फरवरी**- २१, **मार्च**- १०, ११, १२।	१५ जून से १६ जुला. १३ फर.से १५ मार्च	**मिथुनः- अप्रेल**- १४, १८, १९, २० (२०।५८ बजे तक), २९, ३०, **मई**-२०, २४, २८, **जून**-२, ३, ७, ८, १०, १२, २०, २१, २९, ३० **जुलाई**-४ (२२।४८ बजे बाद), ६, **जनवरी**-१५, २३, २४, **फरवरी**-२१, **मार्च**-१०, ११, १२।	२७ अक्टूबर से वर्ष पर्यंत
कर्कः-अप्रैल-१८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, **मई**-१०, २४, २८, **जून**- २, ३, १०, १२, **दिसंबर**- १३, **जनवरी**-१५, २०, २३, २४, **फरवरी**- ६, ७।	१६ नवं.से १६दिसं. १४ जन.से १३फर. तक	**कर्कः-अप्रैल**-१८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, **मई**- १०, २४, २८, **जून**-२, ३, १०, १२, २०, २१, २९, ३०, **जुलाई**-४ (२२।४८ बजे तक), **दिसंबर**-१३, **जनवरी**-१५, २०, २३, २४, **फर.**-६, ७, २१, **मार्च**-५, ६, १०, ११, १२।	वर्षारंभ से २७ अक्टूबर
सिंहः-अप्रैल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, **मई**- १०, ११, २०, २४, २८, **जून**- २, ३, ७, ८, १२, २०, २१, २९, ३०, **जुलाई**- ४, ६, **जनवरी**- २०, **फरवरी**- ६, ७, **मार्च**- ५, ६, १२।	१४अप्रैल से १५ मई १३फर.से १५ मार्च तक	**सिंहः-अप्रैल**-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, **मई**-१०, ११, २०, २४, २८, **जून**-२, ३, ७, ८, १२, २०, २१, २९, ३०, **जुलाई**-४, ६, **दिसंबर**-१३, **जनवरी**-२०, **फरवरी**-६, ७, **मार्च**-५, ६, १२।	वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वर के लिए पून्य सूर्य कन्या (लड़की) कन्या के लिए पून्य गुरु

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

११, २०, २४, २८, जून- २, ३, ७, ८, १२, २०, २१, २९, ३० जुलाई- ४, ६, जनवरी- २०, फरवरी- ६, ७, मार्च- ५, ६, १२।	१३फर.से १५ मार्च तक	११, २०, २४, २८, जून-२, ३, ७, ८, १२, २०, २१, २९, ३०, जुलाई ४, ६, दिसंबर-१३, जनवरी-२०, फरवरी-६, ७, मार्च-५, ६, १२।	वर्ष पर्यन्त

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	कन्या के लिए पूज्य गुरु
कन्याः-मई-२०, २८, जून-२, ३, ७, ८, १०, २९, ३०, जुलाई- ४, ६, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-६, ७, २१, मार्च-५, ६, १०, ११।	१५ मई से १६ जुलाई १४ जन.से १३ फर. तक	**कन्याः**-अप्रैल-२४, २०,(२० ।५८ बजे बाद), २१, २२, २९, ३०, मई-१०, ११, २०, २८, जून-२, ३, ७, ८, १०, २९, ३०, जुलाई-४, ६, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-६, ७, २१, मार्च-५, ६, १०, ११।	२७ अक्टूबर से वर्ष पर्यत
तुलाः- अप्रेल-१४, १८, १९, २०(२० ।५८ बजे तक), मई-१०, ११, जून-२०, २१, २९, ३०, जुलाई-४, ६, दिसंबर-१३, फरवरी-२१, मार्च-५, ६, १०, ११, १२।	१४ अप्रे. से १५ जून १५ जून से १६ जुलाई, १६ नवं से १६ दिसं १३ फर. से १५ मार्च	**तुलाः**- अप्रेल- १४, १८, १९, २०(२० ।५८ बजे तक), मई-१०, ११, २०, २४, जून-२, ३, ७, ८, १०, १२, २०, २१, २९, ३०, जुलाई-४, ६, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २३, २४, फरवरी-६, ७, २१, मार्च-५, ६, १०, ११, १२।	वर्षारंभ से २७ अक्टूबर
वृश्चिकः-अप्रैल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, मई-१०, ११, २४, २८, जून-२, ३, ७, ८, १०, १२, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-६, ७।	१५ मई से १५ जून १६ नवं.से १६ दिसं. तक	**वृश्चिकः**-अप्रैल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, मई-१०, ११, २४, २८, जून-२, ३, ७, ८, १०, १२, २०, २१, २९, ३०, जुलाई-४, ६, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-६, ७, २१, मार्च-५, ६, १०, ११, १२।	वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त
धनुः-अप्रैल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, मई-१०, ११, २०, २४, २८, जून-२, ३, ७, ८, १०, ११, २०, २१, २९, ३०, जुलाई-४, ६, जनवरी-१५, २०, फरवरी-६, ७ मार्च-५, ६, १०, ११, १२।	१४ अप्रै. से १५ मई १५ जून से १६ जुला. १४ जन. से १३ फर.	**धनुः**-अप्रैल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, मई-१०, ११, २०, २४, २८, जून-२, ३, ७, ८, १०, १२, २०, २१, २९, ३०, जुलाई-४, ६, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, फरवरी-६, ७, मार्च-५, ६, १०, ११, १२।	२७ अक्टूबर से वर्ष पर्यंत
मकरः-मई-२०, २८, जून-७, ८, १०, १२, जुलाई-४, ६, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-६, ७, २१, मार्च-५, ६, १०, ११, १२।	१५ मई से १५ जून १४ जन. से १५ मार्च	**मकरः**-अप्रैल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, मई-१०, ११, २०, २८, जून-७, ८, १०, १२, जुलाई-४, ६, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-६, ७, २१, मार्च-५, ६, १०, ११, १२।	वर्षारंभ से २७ अक्टूबर
कुंभः- अप्रेल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, मई-११, जून-२०, २१, २९, ३०, जुलाई-४ (२२ ।४८ बजे बाद), ६ फरवरी-२१, मार्च-१० ११, १२।	१५ जून से १६ जुला. १३ फर. से १५ मार्च	**कुंभः**- अप्रेल-१४, १८, १९, २०, २१, २२, मई-११, २०, २४, जून-२, ३, ७, ८, १०, १२, जुलाई-४ (२२ ।४८ बजे बाद), ६, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-२१, मार्च-१०, ११, १२।	२७ अक्टूबर से वर्ष पर्यंत
मीनः-अप्रैल-१८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, मई-१०, २०, २४, २८, जून-२, ३, १०, १२, दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-६, ७।	१४ अप्रैल से १५ जून १६ नवं. से १६ दिसं.	**मीनः**-अप्रैल-१८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०, मई-१०, २०, २४, २८, जून-२, ३, १०, १२, २०, २१, २९, ३०, जुलाई-४ (२२ ।४८ बजे तक) दिसंबर-१३, जनवरी-१५, २०, २३, २४, फरवरी-६, ७, २१, मार्च-५, ६, १०, ११, १२।	वर्षारंभ से २७ अक्टूबर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०६३ वि.

सूर्य राशि नक्षत्र चार

वर्षारंभ में सूर्य मीन राशि में है

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
३१	मार्च	मीन	रेवती	१	१७।००
३	अप्रैल		"	२	
७	"		"	३	
१०	"		"	४	
१४	"	मेष	अश्विनी	१	६।२१
१७	"		"	२	
२०	"		"	३	
२४	"		"	४	
२७	"		भरणी	१	२२।१०
१	मई		"	२	
४	"		"	३	
८	"		"	४	
११	"		कृतिका	१	१६।१८
१४	"	वृष	"	२	२७।१२
१८	"		"	३	
२१	"		"	४	
२५	"		रोहिणी	१	१२।३३
२८	"		"	२	
१	जून		"	३	
४	"		"	४	
८	"		मृगशिरा	१	१०।२१
११	"		"	२	
१५	"	मिथुन	"	३	९।४८
१८	"		"	४	
२२	"		आर्द्रा	१	९।२५
२५	"		"	२	
२९	"		"	३	
२	जुलाई		"	४	
६	"		पुनर्वसु	१	८।५५
९	"		"	२	
१३	"		"	३	
१६	"	कर्क	"	४	२०।४०
२०	जुला.		पुष्य	१	८।३१
२३	"		"	२	
२७	"		"	३	
३०	"		"	४	

सूर्य राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
३	अग.	कर्क	आश्लेषा	१	७।२०
६	"		"	२	
१०	"		"	३	
१३	"		"	४	
१६	"	सिंह	मघा	१	२१।६
२०	"		"	२	
२३	"		"	३	
२७	"		"	४	
३०	"		पू.फा.	१	२४।५१
३	सितं.		"	२	
६	"		"	३	
१०	"		"	४	
१३	"		उ.फा.	१	१८।५६
१६	"	कन्या	"	२	२१।२
२०	"		"	३	
२३	"		"	४	
२७	"		हस्त	१	१०।२२
३०	"		"	२	
३	अक्टू.		"	३	
७	"		"	४	
१०	"		चित्रा	१	२३।२६
१४	"		"	२	
१७	"	तुला	"	३	१६।५९
२०	"		"	४	
२४	"		स्वाति	१	९।५३
२७	"		"	२	
३०	"		"	३	
३	नवं.		"	४	
६	"		विशाखा	१	१८।४
९	नवंबर		विशा.	२	
१३	"		"	३	
१६	"	वृश्चिक	"	४	१६।०७
१९	"		अनु.	१	२४।६
२३	"		"	२	
२६	"		"	३	
२९	"		"	४	
२	दिसं.		ज्येष्ठा	१	२८।२२

सूर्य राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
६	दिसं.	वृश्चि.	ज्येष्ठा	२	
९	"		"	३	
१२	"		"	४	
१६	"	धनु	मूल	१	७।२६
१९	"		"	२	
२२	"		"	३	
२५	"		"	४	
२९	"		पू.षा.	१	९।३५
१	जन.		"	२	
४	"		"	३	
७	"		"	४	
११	"		उ.षा.	१	११।३९
१४	"	मकर	"	२	१८।१०
१७	"		"	३	
२१	"		"	४	
२४	"		श्रवण	१	१३।५२
२७	"		"	२	
३०	"		"	३	
३	फर.		"	४	
६	"		धनिष्ठा	१	१७।५
९	"		"	२	
१३	"	कुम्भ	"	३	७।१९
१६	"		"	४	
१९	"		शत.	१	२१।३३
२२	"		"	२	
२६	फर.		शत.	३	
१	मार्च		"	४	
४	"		पू.भा.	१	२७।५३
८	"		"	२	
११	"		"	३	
१४	"	मीन	"	४	२८।१
१८	"		उ.भा.	१	१२।२०

मंगल राशि नक्षत्र चार

वर्षारंभ में मंगल वृष राशि में

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
३	अप्रै.	मिथुन	मृग.	३	१६।४१
९	"		"	४	
१५	अप्रै.	मिथुन	आर्द्रा	१	७।५६
२०	"		"	२	
२६	"		"	३	
२	मई		"	४	
७	"		पुनर्वसु	१	२७।७
१३	"		"	२	
१९	"		"	३	
२४	"	कर्क	"	४	२२।२९
३०	"		पुष्य	१	११।४९
४	जून		"	२	
१०	"		"	३	
१५	"		"	४	
२१	"		आश्ले.	१	१२।३४
२६	"		"	२	
२	जुला.		"	३	
७	"		"	४	
१३	"	सिंह	मघा	१	६।५
१८	"		"	२	
२३	"		"	३	
२९	"		"	४	
३	अग.		पू.फा.	१	१६।१७
८	"		"	२	
१४	अग.		पू.फा.	३	
१९	"		"	४	
२४	"		उ.फा	१	१८।३९
२९	"	कन्या	"	२	२३।५३
३	सितं.		"	३	
९	"		"	४	
१४	"		हस्त	१	१२।२६
१९	"		"	२	
२४	"		"	३	
२९	"		"	४	
४	अक्टू.		चित्रा	१	२१।२
९	"		"	२	
१४	"	तुला	"	३	२१।५१
१९	"		"	४	
२४	"		स्वाति	१	२०।१२

मंगल राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
२९	अक्टू.	तुला	स्वाति	२	
३	नवं.		"	३	
८	"		"	४	
१३	"		विशा.	१	९।४९
१८	"		"	२	
२२	"		"	३	
२७	"	वृश्चिक	"	४	१९।४६
२	दिसं.		अनु.	१	१३।५९
७	"		"	२	
११	"		"	३	
१६	"		"	४	
२१	"		ज्येष्ठा	१	९।१४
२५	"		"	२	
३०	"		"	३	
४	जन.		"	४	
८	"	धनु	मूल	१	२०।१२
१३	"		"	२	
१७	"		"	३	
२२	"		मूल	४	
२६	"		पू.षा.	१	२३।३८
३१	"		"	२	
४	फर.		"	३	
९	"		"	४	
१३	"		उ.षा.	१	२४।३८
१८	"	मकर	"	२	७।१
२२	"		"	३	
२६	"		"	४	
३	मार्च		श्रवण	१	१२।२५
७	"		"	२	
१२	"		"	३	
१६	"		"	४	

बुध राशि नक्षत्र चार

वर्षारंभ में बुध कुंभ राशि में

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
४	अप्रै.	कुंभ	पू.भा.	२	
८	"		"	३	
११	"	मीन	"	४	१७।२६
१४	"		उ.भा.	१	१४।१

बुध राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
१६	अप्रै.	मीन	उ.भा.	२	
१९	"		"	३	
२१	"		"	४	
२३	"		रेवति	१	२९।१२
२६	"		"	२	
२८	"		"	३	
३०	"		"	४	
२	मई	मेष	अश्वि.	१	६।२५
३	"		"	२	
५	"		"	३	
७	"		"	४	
९	"		भरणी	१	८।२६
१०	"		"	२	
१२	"		"	३	
१३	"		भरणी	४	
१५	"		कृति.	१	१८।४९
१७	"	वृष	"	२	७।५२
१८	"		"	३	
२०	"		"	४	
२१	"		रोहि.	१	२१।३८
२३	"		"	२	
२४	"		"	३	
२६	"		"	४	
२७	"		मृग.	१	२७।२३
२९	"		"	२	
३१	"	मिथुन	"	३	११।१८
१	जून		"	४	
३	"		आर्द्रा	१	२५।५
५	"		"	२	
७	"		"	३	
९	"		"	४	
१२	"		पुनर्वसु	१	९।६
१४	"		"	२	
१७	"		"	३	
२०	"	कर्क	"	४	१७।२७
२४	"		पुष्य	१	१३।४१
३०	"		"	२	

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०६३ वि.
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०६३ वि.

बुध राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
९	जुला.	कर्क	वक्री	१	
१५	"		पुनर्वसु	४	२१।५३
२०	"	मिथुन	"	३	२३।४२
५	अग.	कर्क	"मार्गी	४	१७।१०
८	"		पुष्य	१	२८।४८
११	"		"	२	
१३	"		"	३	
१५	"		"	४	
१७	"		अश्ले.	१	२५।५१
१९	"		"	२	
२१	अग.		अश्ले.	३	
२३	"		"	४	
२४	"	सिंह	मघा	१	२४।११
२६	"		"	२	
२८	अग.		मघा	३	
२९	"		"	४	
३१	"		पू.फा.	१	१७।४५
२	सितं.	सिंह	"	२	
३	"		"	३	
५	"		"	४	
७	"		उ.फा.	१	१९।२२
९	"	कन्या	"	२	१५।४६
११	"		"	३	
१३	"		"	४	
१५	"		हस्त	१	१०।३२
१७	"		"	२	
१९	"		"	३	
२१	"		"	४	
२३	"		चित्रा	१	१७।५५
२५	"		"	२	
२७	"	तुला	"	३	२८।३५
३०	"		"	४	
२	अक्टू.		स्वाति	१	२०।५२
५	"		"	२	
७	"		"	३	
१०	"		"	४	
१३	"		विशा.	१	७।४६
१६	"		"	२	

बुध राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
१९	अक्टू.	तुला	विशा.	३	
२४	"	वृश्चि.	"	४	१७।४४
१	नवं.	तुला	"वक्री	३	१८।४३
५	"		"	२	
८	"		"	१	
१०	"		स्वाति	४	२३।२२
१३	"		"	३	
२२	"		"मार्गी	४	
२६	"		विशा.	१	८।३८
२९	"		"	२	
१	दिसं.		"	३	
३	"	वृश्चि.	"	४	३०।४१
६	"		अनु.	१	१४।४८
८	"		"	२	
१०	"		"	३	
१३	"		"	४	
१५	"		ज्येष्ठा	१	१३।१८
१७	"		"	२	
१९	"		"	३	
२१	"		"	४	
२३	"	धनु	मूल	१	२९।२६
२६	"		"	२	
२८	"		"	३	
३०	"		"	४	
१	जन.		पू.षा.	१	१७।१९
३	"		"	२	
५	"		"	३	
७	"		"	४	
९	"		उ.षा.	१	२३।३३
११	"	मकर	"	२	२४।३
१३	"		"	३	
१५	"		"	४	
१७	"		श्रवण	१	२३।९
१९	"		"	२	
२१	"		"	३	
२३	"		"	४	
२५	"		धनि.	१	१८।३७
२७	"		"	२	

बुध राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
२९	जन.	कुंभ	धनि.	३	१८।१३
३१	"		"	४	
२	फर.		शत.	१	२५।७
५	"		"	२	
८	"		"	३	
२०	"		"वक्री	२	
२३	"		"	१	
२६	"		धनि.	४	१७।२१
२	मार्च		"	३	
१४	"		"मार्गी	४	
१९	"		शत.	१	९।६

गुरु राशि नक्षत्र चार

(वर्षारंभ में गुरु वक्र गति से तुला राशि में)

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
६	अप्रै.	तुला	विशा.वक्री	१	१०।३७
४	मई		स्वाति	४	२९।२८
२	जून		"	३	२४।४४
८	अग.		"मार्गी	४	२८।००
४	सितं.		विशा.	१	२२।१०
२४	"		"	२	१७।४६
११	अक्टू.		"	३	२३।३८
२७	"	वृश्चि.	"	४	२२।१९
११	नवं.		अनु.	१	२८।५९
२६	"		"	२	२९।१०
१२	दिसं.		"	३	७।२७
२७	"		"	४	२०।४२
१३	जन.		ज्येष्ठा	१	१०।२
३१	"		"	२	२३।४१
२४	फर.		"	३	१०।३३

शुक्र राशि नक्षत्र चार

(वर्षारंभ में शुक्र मकर राशि में)

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
३१	मार्च	कुंभ	धनि.	३	१०।४१
३	अप्रै.		"	४	
६	"		शत.	१	२०।५०
९	"		शत.	२	
१२	"		"	३	
१५	"		"	४	

शुक्र राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
११	अप्रै.	कुंभ	पू.भा.	१	६।१५
२२	"		"	२	
२५	"		"	३	
२८	"	मीन	"	४	६।४४
१	मई		उ.भा.	१	६।१
३	"		"	२	
६	"		"	३	
९	"		"	४	
१२	"		रेवति	१	२३।४९
१५	"		"	२	
१८	"		"	३	
२१	"		"	४	
२४	"	मेष	अश्वि.	१	१३।१९
२७	"		अश्वि.	२	
३०	"		"	३	
१	जून		"	४	
४	"		भरणी	१	२३।४४
७	"		"	२	
१०	"		"	३	
१३	"		"	४	
१६	"		कृति.	१	७।४९
१८	"	वृष	"	२	२७।३०
२१	"		अ श्ले.	१	१८।०३
२४	"	"	"	२	
२४	"		"	४	
२७	"		रोहिणी	१	१३।४७
३०	"		"	२	
२	जुला.		"	३	
५	"		"	४	
८	"		मृग.	१	१८।०
११	"		मृग	२	
१४	"	मिथुन	"	३	७।२८
१६	"		"	४	
१९	"		आर्द्रा	१	२०।२९
२२	"		"	२	
२५	"		"	३	
२७	"		"	४	
३०	"		पुन.	१	२१।१५

शुक्र राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
२	अग.	मिथुन	पुन.	२	
५	"		"	३	
७	"	कर्क	"	४	२६।४७
१०	"		पुष्य	१	२०।२७
१३	"		"	२	
१६	"		"	३	
१८	"		"	४	
२१	"		आश्ले.	१	१८।२
२४	"		"	२	
२६	"		"	३	
२९	"		"	४	
१	सितं.	सिंह	मघा	१	१४।१०
४	"		"	२	
६	"		"	३	
९	"		मघा	४	
१२	"		पू.फा.	१	९।४
१४	"		"	२	
१७	"		"	३	
२०	"		"	४	
२२	"		उ.फा.	१	२६।४७
२५	"	कन्या	"	२	१९।३
२८	"		"	३	
३०	"		"	४	
३	अक्टू.		हस्त	१	१९।३६
६	"		"	२	
८	"		"	३	
११	"		हस्त	४	
१४	"		चित्रा	१	११।४६
१६	"		"	२	
१९	"	तुला	"	३	१९।३७
२२	"		"	४	
२४	"		स्वाति	१	२७।२१
२७	"		"	२	
३०	"		"	३	
१	नंव.		"	४	
४	"		विशा.	१	१८।३७
७	"		"	२	
९	"		"	३	

शुक्र राशि नक्षत्र चार

ता.	मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
१२	नवं.	वृश्चि.	विशा.	४	१७।५७
१५	"	"	अनु.	१	९।४२
१७	"		"	२	
२०	"		"	३	
२३	"		"	४	
२५	"		ज्येष्ठा	१	२४।३५
२८	"		"	२	
१	दिसं.		"	३	
३	"		"	४	
६	"	धनु	मूल	१	१५।३०
९	"		"	२	
११	"		"	३	
१४	"		"	४	
१६	"		पू.षा.	१	२३।२७
१९	"		"	२	
२२	"		"	३	
२४	"		"	४	
२७	"		उ.षा.	१	२१।२९
३०	"	मकर	"	२	१३।१८
१	जन.		"	३	
४	"		"	४	
७	"	मकर	श्रवण	१	१२।५२
९	"		"	२	
१२	"		"	३	
१५	"		"	४	
१७	"		धनि.	१	२८।४०
२०	"		"	२	
२३	"	कुंभ	"	३	१२।४६
२५	"		"	४	
२८	"		शत.	१	२१।६
३१	"		"	२	
१	फर.		"	३	
५	"		"	४	
८	"		पू.भा.	१	१४।३२
११	"		"	२	
१३	"		"	३	
१६	"	मीन	"	४	१६।२३
१९	"		उ.भा.	१	९।१०
२१	"		"	२	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

 पृष्ठ २५ का शेष

ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०६३ वि.

शुक्र राशि नक्षत्र चार

ता. मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
२४ फर.	मीन	उ.भा.	३	
२७ "		"	४	
१ मार्च		रेवति	१	२१।२७
४ "		"	२	
७ "		"	३	
१० "		"	४	
१२ "	मेष	अश्वि.	१	२७।५२
१५ "		"	२	
१८ "		"	३	

शनि राशि नक्षत्र चार

(वर्षारंभ में शनि कर्क में)

ता. मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
३ जून		पुष्य	४	१०।१२
४ जुला.		अश्ले.	१	२१।२
३१ "		"	२	१७।३
२६ अग.		"	३	२०।२३
२३ सितं.		अश्ले	४	२६।४०
१ नवं	सिंह	मघा	१	७।१७
१० जन.	कर्क	श्ले.वक्री	४	१८।३
२३ फर.		"	३	१६।४८

राहु राशि नक्षत्र चार

(वर्षारंभ में राहु मकर में)

ता. मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
६ अप्रे.		उ.भा.	२	१४।५५
८ जून		"	१	१२।३२
१० अग.		पू.भा.	४	९।४६
१२ अक्टू.	कुंभ	"	३	७।३८
१३ दिसं.		"	२	२८।५९
१४ फर.		"	१	२६।२१

केतु राशि नक्षत्र चार

(वर्षारंभ में केतु कन्या में)

ता. मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
६ अप्रे		उ.फा.	४	१४।५५
८ जून		"	३	१२।३२
१० अग.		"	२	९।४६
१२ अक्टू.	सिंह	"	१	७।३८
१३ दिसं.		पू.फा.	४	२८।५९
१४ फर.		"	३	२६।२१

हर्षल (वरुण) राशि नक्षत्र चार

(वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त हर्षल कुंभ में)

ता. मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
५ मई		पू.भा.	१	२३।४८
४ अग.		शत.वक्री	४	७।५३
२० फर.		पू.भा.मार्गी	१	२८।४७

नेप्च्यून (इन्द्र) राशि नक्षत्र चार

(वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त नेपच्यून मकर में)

ता. मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
२८ सितं.		श्र.वक्री	४	२१।१३
२८ नवं.		धनि मार्गी	१	१७।३०
११ मार्च		"	२	१३।५७

प्लूटो (यम) राशि नक्षत्र चार

(वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त प्लूटो धनु में)

ता. मास	राशि	नक्षत्र	पाद	घं.मि.
८ जन.		मूल	२	१३।१४

मंगल वक्री-मार्गी

मंगल इस वर्ष संवत् २०६३ वि.में वक्रगामी नहीं होगा।

बुध वक्री-मार्गी

व./मा.	तारीख	घं.मि.
वक्री	४ जुला.	२४।२१
मार्गी	२८ "	२९।१९
वक्री	२८ अक्टूबर	२३।५०
मार्गी	१७ नवंबर	२८।५७
वक्री	१४ फरवरी	९।०९
मार्गी	८ मार्च	९।२३

गुरु वक्री-मार्गी

व./मा.	तारीख	घं.मि.
मार्गी	६ जुला.२००६	२२।३६

शुक्र वक्री-मार्गी

शुक्र इस वर्ष संवत् २०६३ वि.में वक्रगामी नहीं होगा

शनि वक्री-मार्गी

व./मा.	तारीख	घं.मि.
मार्गी	६ अप्रैल २००६	११।२६
वक्री	६ दिसंबर	२२।३४

हर्षल (वरुण) वक्री-मार्गी

व./मा.	तारीख	घं.मि.
वक्री	१९ जून	२७।२२
मार्गी	२० नवंबर	३०।४३

नेप्च्यून (इन्द्र) वक्री-मार्गी

व.-मा.	तारीख	घं.मि.
वक्री	२३ मई,०६ ई.	१३।३०
मार्गी	३० अक्टूबर	८।२७

प्लूटो (यम) वक्री-मार्गी

व.-मा.	तारीख	घं.मि.
वक्री	३० मार्च, ०६ई.	७।००
मार्गी	५ सितंबर	१७।२१

मंगल का उदयास्त

उ./अ.	दिशा	तारीख	घं. मि.
अस्त	पश्चिम	३१अग.०६ ई.	२५।४१
उदय	पूर्व	१६ दिसं	१०।४४

बुध का उदयास्त

उ./अ.	दिशा	तारीख	घं. मि.
अस्त	पूर्व	६ मई,०६ ई.	८।४२
उदय	पश्चिम	३० मई	२८।१५
अस्त	पश्चिम	१० जुला.	१८।२०
उदय	पूर्व	२६ जुला.	१७।२९
अस्त	पूर्व	१८ अग.	६।३१
उदय	पश्चिम	१८ सितं.	१९।४९
अस्त	पश्चिम	३ नवं	१३।५८
उदय	पूर्व	१४ "	२१।३३
अस्त	पूर्व	१२ दिसं.	१६।०२
उदय	पश्चिम	२८ जन.,०७ई.	१४।२३
अस्त	पश्चिम	१६ फरवरी	२३।१०
उदय	पूर्व	१ मार्च	९।३८

गुरु का उदयास्त

उ./अ.	दिशा	तारीख	घं. मि.
अस्त	पश्चिम	७ नवं.,०६ ई.	२८।४५
उदय	पूर्व	५ दिसंबर	२६।४२

शुक्र का उदयास्त

उ./अ.	दिशा	तारीख	घं. मि.
अस्त	पूर्व	६ अक्टू.	१४।४०
उदय	पश्चिम	३० नवं.	९।१०

शनि का उदयास्त

उ./अ.	दिशा	तारीख	घं. मि.
अस्त	पूर्व	१९ जुला.	१०।०६
उदय	पश्चिम	२६ अगस्त	२१।४७

अगस्त्य तारा उदयास्त

उ./अ.	तारीख	घं. मि.
अस्त	२६ अप्र.	१५।४५
उदय	२९ अगस्त	१३।२३

अथ उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्ता: सं. २०६३

दिनांक	*मास*	*पक्ष*	*ति.*	*नक्षत्र*	*वार*	*लग्न शुद्धि समय (स्टैं. टा.)*
३० अप्रै.	वैशा.	शु.	३	रोहि.	रवि	ल. अभि. १२।६ से १२।३०बजे तक
७ मई	वैशा.	शु.	१०	पू.फा.	रवि	ल. अभि. १२।६ से १२।३० तक
८ "	वैशा.	शु.	११	पू.फा.	चन्द्र	ल. मिथुन ७।५५ बजे (मं. १ दोष)
१४ "	ज्येष्ठ	कृ.	१	अनु.	रवि	ल. अभि. १२।५ से १२।२९ बजे तक (मासान्त)
१७ "	ज्येष्ठ	कृ.	४	पू.षा.	बुध	ल. मिथुन ९।१८ बजे से ९।३४ बजे तक। कन्या १४।११बजे (मिथुने मं. १ दोष) (कन्यायां के. १ दोष)
२९ "	ज्येष्ठ	शु.	२	आर्द्रा	चन्द्र	ल. अभि. १२।६ से १२।३० बजे तक।
७ जून	ज्येष्ठ	शु.	११	चित्रा	बुध	ल. मिथुन ५।५६ बजे
२८ जन.	माघ	शु.	१०	रोहि.	रवि	ल. अभि. १२।२२ से १२।४६ बजे तक।

अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त्ता: सं. २०६३

१९ अप्रै.	वैशा.	कृ.	६	मूल	बुध	ल. मिथुन (विद्यारंभ)
३० "	वैशा.	शु.	३	रोहि.	रवि	ल. अभिजित (विद्यारंभ)
३ मई	वैशा.	शु.	६	पुन.	बुध	ल. वृष (अक्षरारंभ, विद्यारंभ)
७ "	वैशा.	शु.	१०	पू.फा.	रवि	ल. अभिजित (विद्यारंभ)
१८ "	ज्येष्ठ	कृ.	५	उ.षा.	गुरु	ल. अभिजित (विद्यारंभ)
२८ "	ज्येष्ठ	शु.	१	मृग.	रवि	ल. अभिजित (विद्यारंभ)
२९ "	ज्येष्ठा	शु.	२	आर्द्रा	चन्द्र	ल. अभिजित (अक्षरारंभ)
७ जून	ज्येष्ठ	शु.	११	चित्रा	बुध	ल. मिथुन (विद्यारंभ, अक्षरारंभ)
८ "	ज्येष्ठ	शु.	१२	स्वाति	गुरु	ल. अभिजित (विद्यारंभ, अक्षरारंभ)
१८ "	आषा.	कृ.	७	पू.भा.	रवि	ल. मिथुन (विद्यारंभ)
२४ जन.	माघ	शु.	६	उ.भा.	बुध	ल. कुंभ (विद्यारंभ)
२८ "	माघ	शु.	१०	रोहि.	रवि	ल. अभिजित (विद्यारंभ)
७ फर.	फा.	कृ.	५	हस्त	बुध	ल. मीन (विद्यारंभ, अक्षरारंभ)
९ "	फा.	कृ.	७	स्वाति	शुक्र	ल. मिथुन (विद्यारंभ, अक्षरारंभ)

अथ विपणी (दुकान) करने का मुहूर्त्ता: सं. २०६३

२१ अप्रै.	वैशा.	कृ.	८	उ.षा.	शुक्र	ल. अभिजित १२।८ से १२।३२
३० "	वैशा.	शु.	३	रोहि.	रवि	ल. अभिजित १२।६ से १२।३०
११ मई	वैशा.	शु.	१३	चित्रा	गुरु	ल. मिथुन ७।४३ बजे
१४ "	ज्येष्ठ	कृ.	१	अनु.	रवि	ल. अभि. १२।५ से १२।२९ (मासान्त)
१८ "	ज्येष्ठ	कृ.	५	उ.षा.	गुरु	ल. अभिजित १२।५ से १२।१९ तक
२८ "	ज्येष्ठ	शु.	१	मृग.	रवि	ल. अभिजित १२।६ से १२।३० तक
७ जून	ज्येष्ठ	शु.	११	चित्रा	बुध	ल. मिथुन ५।५६ बजे।
२८ "	आषा.	शु.	३	पुष्य	बुध	ल. कन्या ११।२६ बजे।
२८ जन.	माघ	शु.	१०	रोहि.	रवि	ल. अभि. १२।२२ से १२।४६
२९ "	माघ	शु.	११	मृग.	चन्द्र	ल. अभि. १२।२२ से १२।४६
७ फर.	फा.	कृ.	५	हस्त	बुध	ल. मीन ८।५५ बजे।
१५ "	फा.	कृ.	१३	उ.षा.	गुरु	ल. अभि. १२।२४ से १२।४८
२१ "	फा.	शु.	४	रेवति	बुध	ल. वृष ११।४२ बजे से १२।५४ बजे तक।
२२ "	फा.	शु.	६	अश्वि.	गुरु.	ल. मीन ७।५४ बजे।
५ मार्च	चैत्र	कृ.	१	उ.फा.	चन्द्र	ल. अभि. १२।२१ से १२।४५ तक।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ ग्रहण विवरण विक्रम संवत् २०६३

विक्रम संवत् २०६३ अर्थात् मार्च २००६ ई. से मार्च २००७ ई. की समयावधि में विश्व भू-भाग पर कुल पांच ग्रहण दिखाई देंगे। जिसमें तीन सूर्यग्रहण एवं दो चन्द्र ग्रहण होंगे। जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

१. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण**—ता. २९ मार्च २००६ ई. बुधवार (भारत में देखा जा सकेगा)

२. **खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण**—ता. ७ सितंबर २००६ ई. गुरुवार (भारत में देखा जा सकेगा)

३. **कंकणाकृति सूर्य ग्रहण**—ता. २२ सितंबर २००६ ई. शुक्रवार (यह ग्रहण भारतीय भू-भाग पर दिखाई नहीं देगा। अन्ध महासागर, द. अफ्रीका, अमेरिका, नाईजीरिया, सूडानादि देशों में देखा जा सकेगा)

४. **खग्रास चन्द्र ग्रहण**—ता. ३ मार्च २००७ शनिवार (भारत में देखा जा सकेगा)

५. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण**—ता. १९ मार्च २००७ ई. सोमवार (भारत में देखा जा सकेगा)

॥ भारत में दिखाई देनेवाले सूर्य-चन्द्रग्रहण ॥

१. **खण्डग्रास सूर्य ग्रहण-विक्रम सं. २०६२ चैत्र कृष्ण अमावस्या बुधवार दिनांक २९ मार्च २००६ ई. उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र एवं मीन राशिस्थ चन्द्रमा में होगा। जिसका खग्रास मान १.०५२ है।** अन्यत्र अटलांटिक महासागर, अफ्रीका, यूरोप, उत्तरी एशियादि स्थानों पर खग्रास (सम्पूर्ण ग्रसित रूप में) दिखाई देगा।

ग्रहणारम्भ (स्पर्शकाल) :- सायं ४ बजकर ३३ मिनट (१६।३३ बजे)

खग्रास प्रारंभ (सम्मीलन) :- सायं ४ बजकर ५६ मिनट (१६।५६ बजे)

मध्यकाल :- सायं ५ बजकर १९ मिनट (१७।१९ बजे)

खग्रास पूर्ति (उन्मीलन) :- सायं ५ बजकर ४१ मिनट (१७।४१ बजे)

ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल) :- सायं ६ बजकर २ मिनट (१८।०२ बजे)

ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) :-१ घं. २९ मि. का है तथा खग्रास स्तंभन ४ मि. ७ सै. है।

ग्रहण का वेध (सूतक) :- ता. २९ मार्च २००६ ई. को सूर्योदय से पहले प्रातः ४ बजकर ३३ मिनट से आरंभ होगा।

॥ ग्रहण का राशियों पर प्रभाव ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	मनोद्वेग	दुख	अर्थ लाभ	धन हानि	रोग उपद्रव	हानि	लाभ	सौख्य	मान हानि	रोग	स्त्री पीड़ा	मनोबल वृद्धि

॥ कतिपय स्थानों के स्पर्श मोक्षादि ॥

स्थान	अहमदाबाद	उदयपुर	बीकानेर	अजमेर	कलकत्ता	हिसार	चण्डीगढ़	कानपुर	पटना	भोपाल	सूरत	गुवाहाटी
स्पर्श	१६.४२	१६.३८	१६.२९	१६.३५	१७.०२	१६.३०	१६.२९	१६.४२	१६.४९	१६.४९	१६.५०	१६.५१
मोक्ष	१७.४४	१७.५०	१८.००	१७.५६	१७.४६	१८.०३	१८.०६	१७.५७	१७.५६	१७.४६	१७.३५	१७.३८

मानचित्र (भारत)

मानचित्रानुसार ''अ'' ''ब'' रेखा के नीचे के शहरों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। रेखा ''स'' ''द'' से दायीं ओर के शहरों में ग्रस्तास्त दिखाई देगा।

मानचित्र खण्डग्रास सूर्यग्रहण (२९ मार्च, २००६ बुधवार)

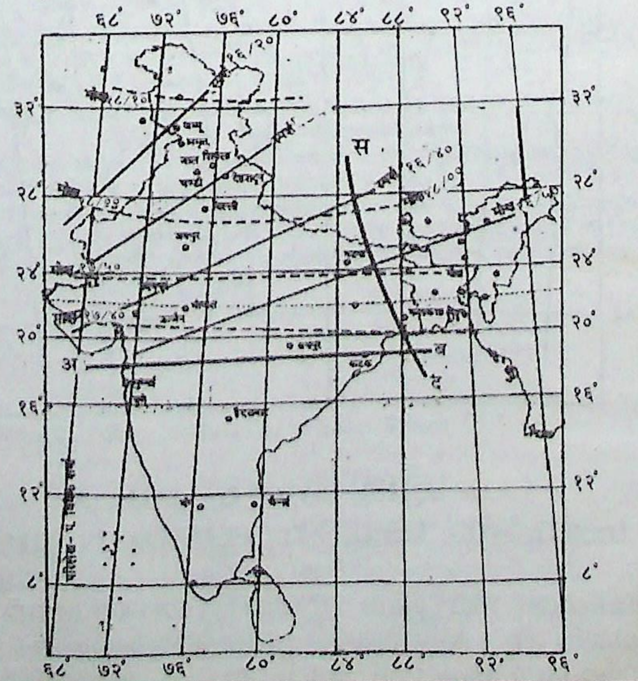

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२. खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण

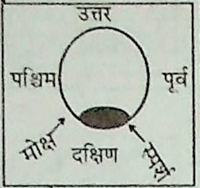

भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा गुरुवार ता. ७ सितम्बर २००६ ई., पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र एवं कुंभ राशिस्थ चन्द्रमा में मध्य रात्रि काल में होगा। जिसका परम ग्रास मान ०.१८९ है। यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बर्मा व चीनादि देशों में दिखाई देगा।

ग्रहणारम्भ (स्पर्शकाल) :- मध्यरात्रि ११ बजकर ३५ मिनट (२३।३५ बजे)

मध्यकाल :- अर्ध रात्र्योपरान्त १२ बजकर २१ मिनट (२४।२१ बजे)

ग्रहण समाप्ति (मोक्षकाल) :- अर्ध रात्र्योपरान्त १ बजकर ०८ मिनट (२५।०८ बजे)

ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) :- १ घंटा ३३ मि. है

ग्रहण का वेध (सूतक) :- ता. ७ सितं. को दोपहर २ बजकर ३५ मि. से प्रारंभ होगा।

॥ ग्रहण का राशियों पर प्रभाव ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	धन अर्जन	भय प्रद	मनो द्वेग	धन लाभ	स्त्री कष्ट	हानि	अप-मान	कार्य लाभ	अर्थ प्रगति	रोग उपद्रव	देह कष्ट	धन लाभ

३. कंकणाकृति सूर्य ग्रहण

आश्विन कृष्ण अमावस्या शुक्रवार ता. २२ सितंबर २००६ ई. को होने वाला सूर्य ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। अतः इसके पर्वादिकाल नहीं माने जायेंगे।

४. खग्रास चन्द्र ग्रहण

फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा शुक्रवार ता. ३ मार्च २००७ ई. को अर्ध रात्री बाद (ता. ४ मार्च शनिवार), पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र एवं सिंह राशिस्थ चन्द्रमा में खग्रास (सम्पूर्ण) ग्रहण होगा। जो पूर्वी भारत में ग्रस्तास्त एवं पश्चिमी भारत में खग्रास मोक्ष सहित दिखाई देगा। खग्रास मान १.०८१ है।

ग्रहणारम्भ (स्पर्शकाल) :- अर्धरात्री बाद ३ बजे (२७।०० बजे)

खग्रास प्रारंभ (सम्मीलन) :- अर्धरात्री बाद ४ बजकर १३ मि. (२८।१३ बजे)

मध्यकाल :- अर्धरात्री बाद ४ बजकर ५१ मि. (२८।५१ बजे)

खग्रास पूर्ति (उन्मीलन) :- अर्धरात्री बाद ५ बजकर २७ मि. (२९।२७ बजे)

ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल) :- अर्धरात्री बाद ६ बजकर ४२ मि. (३०।४२ बजे)

ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) :- ३ घं. ४२ मि. है।

ग्रहण का वेध (सूतक) :- ता. ३ मार्च को सायं काल ६ बजे से आरंभ होगा।

॥ ग्रहण का राशियों पर प्रभाव ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	अप मान	कार्य लाभ	धन अर्जन	रोग उत्पात	देह कष्ट	हानि	अर्थ प्रगति	भय प्रद	मनो-द्वेग	धन लाभ	स्त्री पीड़ा	धन हानि

मानचित्रानुसार रेखा ''अ'' ''ब'' से दायां (पूर्वी) भाग में ग्रसित चन्द्रास्त होने से ग्रस्तास्त चन्द्र दिखाई देगा। उपरोक्तांकित रेखा से बायें (पश्चिमी) भाग में चन्द्रास्त ६.४२ बजे बाद होगा। अतः सम्पूर्ण खग्रास चन्द्रग्रहण देखा जा सकेगा।

मानचित्र खग्रास-ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण
(४ मार्च, २००७ शनिवार)

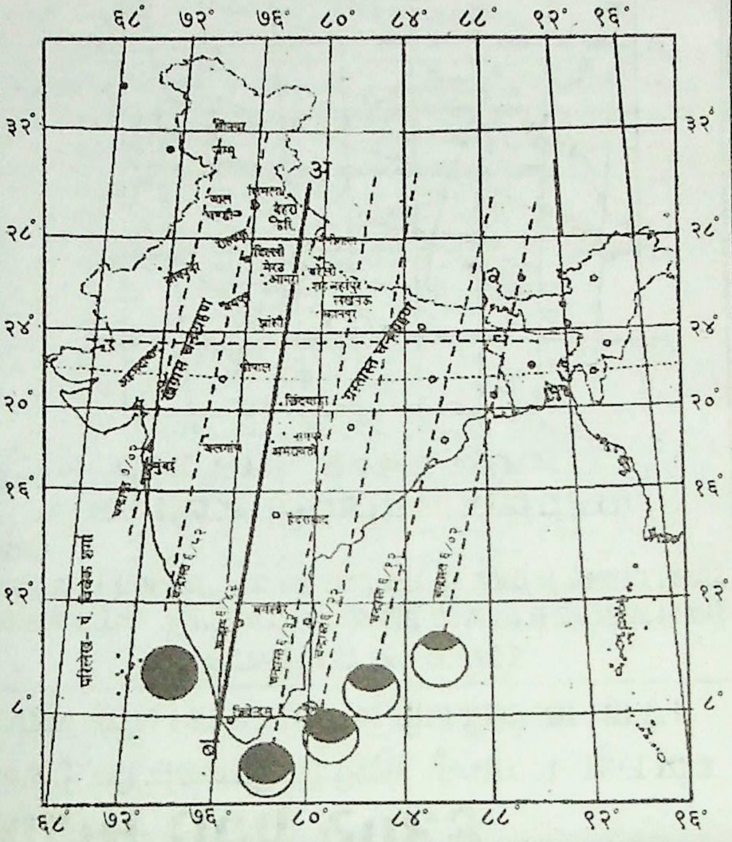

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

५. ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

चैत्रीय नवरात्र आरम्भ

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

५. ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

चैत्र कृष्ण अमावस्या सोमवार ता. १९ मार्च २००७ ई. पूर्वा व उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्रों एवं मीन राशिस्थ चन्द्रमा में होगा। इस ग्रहण का भारत के पूर्वोत्तर भाग में ही आरंभ काल देखा जा सकेगा। शेष भारत भू-भाग पर ग्रसित अवस्था में ही सूर्योदय होगा। खण्डग्रास ग्रहण का परम ग्रास मान ०.२७८ है।

ग्रहणारम्भ (स्पर्शकाल) :- प्रातः ६ बजकर ०८ मि. (६।०८ बजे)

मध्यकाल :- प्रातः ७ बजकर ०४ मि. (७।०४ बजे)

ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल) :- प्रातः ८ बजकर ०१ मि. (८।०१ बजे)

ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) :- १ घं. ५३ मि. है।

ग्रहण का वेध (सूतक) :- ता. १८ मार्च रविवार सायं ६ बजकर ०८ मि. (१८.०६ बजे) से प्रारंभ होगा।

॥ ग्रहण का राशियों पर प्रभाव ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	धन हानि	धन अर्जन	मनो भय	शत्रु वृद्धि	सौख्य	स्त्री पीड़ा	रोग उपद्रव	अप मान	कार्य लाभ	धन प्रगति	हानि	देह कष्ट

मानचित्र में रेखा ''अ'' ''ब'' जो दी गई है उससे दायें भाग (पूर्वी) स्थानों पर ग्रहणारंभ देखा जा सकेगा। तथा रेखा ''अ'' ''ब'' से बायें भाग पश्चिम की तरफ के भागों में ग्रसित अवस्था में ही सूर्योदय होगा।

मानचित्र ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण
(१९ मार्च, २००७ सोमवार)

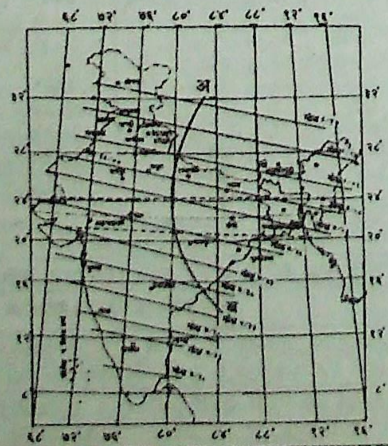

चैत्रीय नवरात्र आरम्भ

वि.सं. २०६४ में प्रतिपदा होने के कारण इस वर्ष चैत्र की सोमवती अमावस्या वाले दिन से ही नवरात्रारम्भ हो जायेंगे। माँ भगवती के उपासक द्विजाचार्य विद्वानों को चाहिए कि वे ग्रहण निवृत्ति घं. ८ मि. १३ बजे के उपरान्त स्नानादि नित्यकर्म संध्यावंदन देवदर्शन आरती पूजनादि के पश्चात् घटस्थापन, श्रीगणेशादि देव पूजन वर्षफल श्रवण के पश्चात् श्रीदुर्गा अर्चन करें तथा ऐसा करने के लिए दूसरों को भी प्रेरित करें। यद्यपि अमावस्या में नवरात्रारंभ करना देवीपुराण के अनुसार श्रेष्ठ नहीं होता है-**अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने।** तथापि जिस वर्ष प्रतिपदा क्षय हो जाय तो अमायुक्ता प्रतिपदा वाले दिन ही नवरात्रा शुरु करने का निर्देश धर्मसिन्धुकार ने किया है-**(प्रतिपदायाः) मुहूर्त्तन्यून व्याप्तौ सूर्योदयास्पर्शे वा दर्शयुतापि गाह्या। परदिनै प्रतिपदोऽत्यन्तासत्वे तु दर्शयुतापि पूर्वेवि ग्राह्या॥** के अनुसार १९ मार्च २००७ सोमवार में ही नवरात्रारम्भ करना शुभ फलदायक रहेगा, सो शुभ के चौघड़िया मुहूर्त्त ९।२८ बजे के बाद करें।

अर्धकुम्भ का सुयोग इलाहाबाद

जिस वर्ष माघ की अमावस्या को वृश्चिक में गुरु और मकर में सूर्य चन्द्रमा होते हैं तो तीर्थराज प्रयाग में अर्धकुम्भ का योग बनता है। जिसमें त्रिवेणी संगम पर स्नान दानादि का भारी महात्य है। पद्मपुराण में संगम पर स्नान का फल कल्प-कल्पान्तरों में होने वाले पापों को क्षय करने वाला लिखा है।

पश्चिमाभिमुखी गङ्गा कालिन्दा सह संगिता। हन्ति कल्पकृतं पापं सा माघ नृप दुर्लभा॥

विष्णु पुराण के अनुसार हजार अश्वमेघ यज्ञ, सौ वाजपेय यज्ञ और लखबार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो फल मिलता है। उसे प्राणी कुम्भ पर्व में स्नान मात्र से प्राप्त कर लेता है।

अश्वमेघ सहस्त्राणो वाजपेय शतानि च। लक्ष प्रदक्षिणाभूमेः कुम्भ स्नाने तत्मंगलम्॥

त्रिवेणी कुम्भो अस्मिन् नरक पातश्च न भवेत्॥

सं. २०६३ में माघी अमावस्या १९ जनवरी २००७ शुक्रवार के दिन वृश्चिक में गुरु तथा मकर में सूर्य चन्द्रमा होने से अर्ध कुम्भ का सुयोग प्रयागराज इलाहाबाद में बनेगा। वैसे भी कोई प्रयाग के प्रभाव (महत्व) की व्याख्या नहीं कर सकता-**को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ, कलुष पुंज कुञ्जर मृगराऊ॥** इसमें अखंख्य श्रद्धालुजन, योगी, तपस्वी, साधु, सन्यासी, पंचदश अखाड़े, वैष्णव, उदासीन एवं निर्मल सम्प्रदाय केसन्त महात्मा त्रिवेणी संगम पर सामान्य तथा शाही स्नानार्थ अवश्य पधारेंगे। दर्शन मेला से माघ व फाल्गुन मास में भारी लाभ होगा।

अर्ध कुम्भ के प्रमुख स्नानों की तारीखें

६ जनवरी	२००७	शनि	संकष्टी चौथ श्री गणेश जयंती
१४ ''	२००७	रवि.	मकर संक्रांति **शाही स्नान१**
१५ ''	२००७	सोम	षट्तिला एकादशी
१९ ''	२००७	शुक्र	मौनी अमावस्या, **शाही स्नान२**
२३ ''	२००७	मंगल	बसंत पंचमी विशेष
२५ ''	२००७	गुरु	रथ सप्तमी
२९ ''	२००७	सोम	जया एकादशी
२ फरवरी	२००७	शुक्र	माघी पूर्णिमा
१३ ''	२००७	मंगल	कुम्भसंक्रांति **शाही स्नान३**
१६ ''	२००७	शुक्र	महाशिवरात्रि **विशेष स्नान**
१७ ''	२००७	शनि	देव-पितर अमावस्या
२७ ''	२००७	मंगल	आमला एकादशी व्रत
३ मार्च	२००७	शनि	होली में खग्रासचन्द्र ग्रहण पर्व

नोट-उपरोक्त स्नान दिनों के अतिरिक्त योगीजन अपनी इच्छानुसार स्नान के लिए समय सुनिश्चित कर सकते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. सं. २०६३ के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर, रवि योग आदि योगों का विवरण।

उपरोक्त शुभ योगों में किए गए सभी शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। जिसका प्रा. व समाप्ति समय अंग्रेजी ता. भा. स्टै. टा. अनुसार दिया गया है।

सर्वार्थ सिद्धि

ता.मास	घं.मि. से	ता. मास	घं. मि. तक
३० मार्च	सू.उ. से	३१ मार्च	१४।३५ तक
३ अप्रे.	'' ''	४ अप्रे.	सू.उ. ''
६ ''	'' ''	७ ''	'' ''
१२ ''	७।१२ ''	१३ ''	'' ''
१५ ''	सू.उ. ''	१५ ''	१३।३१ ''
१७ ''	'' ''	१७ ''	१५।३१ ''
२२ ''	'' ''	२२ ''	१२।५४ ''
२५ ''	७।१५ ''	२५ ''	२९।५ ''
२९ ''	२२।१८ ''	३० ''	सू.उ. ''
१ मई	सू.उ. ''	१ मई	२१।५६ ''
४ ''	सू.उ. ''	४ ''	२६।४८ ''
१० ''	'' ''	१० ''	१७।६ ''
१९ ''	'' ''	१९ ''	१८।२९ ''
२३ ''	'' ''	२३ ''	१२।४८ ''
२५ ''	'' ''	२५ ''	९।५२ ''
२९ ''	'' ''	२९ ''	७।११ ''
१ जून	'' ''	१ जून	११।५ ''
४ ''	११।३८ ''	५ ''	सू.उ. ''
१८ ''	११।४७ ''	१९ ''	'' ''
२० ''	१७।२७ ''	२१ ''	'' ''
२४ ''	सू.उ. ''	२४ ''	१५।११ ''
२ जुला.	'' ''	३ जुला.	सू.उ. ''
७ ''	१४।४४ ''	८ ''	सू.उ. ''
९ ''	१४।२९ ''	१० ''	'' ''
१६ ''	सू.उ. ''	१६ ''	२४।३ ''
१८ ''	'' ''	१८ ''	२१।५५ ''
१९ ''	२१।२४ ''	२० ''	सू.उ. ''
३० ''	सू.उ. ''	३१ ''	'' ''
३ अग.	२३।३८ ''	४ अग.	२४।२२ ''
६ ''	सू.उ. ''	६ ''	२३।२३ ''
१३ ''	'' ''	१३ ''	७।१२ ''
१५ ''	२७।२ ''	१७ ''	सू.उ. ''
२१ ''	६।४६ ''	२२ ''	सू.उ. ''
२२ ''	८।५७ ''	२२ ''	२२।३३ ''
२७ ''	सू.उ. ''	२७ ''	२३।४४ ''
३१ ''	७।१८ ''	१ सितं	८।३८ ''
३ सितं	सू.उ. ''	३ ''	८।५९ ''
१० ''	१४।१० ''	११ ''	सू.उ. ''
१२ ''	१०।२३ ''	१४ ''	'' ''
१७ ''	१२।२७ ''	१८ ''	१४।४४ ''
१९ ''	सू.उ. ''	१९ ''	१७।२६ तक
२७ सितं.	१३।३० से	२८ सितं.	१५।१३ ''
१ अक्टू.	१६।३६ ''	२ अक्टू.	सू.उ. ''
२ ''	१५।४२ ''	३ ''	'' ''
६ ''	२७।५० ''	७ ''	'' ''
८ ''	सू.उ. ''	८ ''	२२।१७ ''
१० ''	'' ''	१० ''	१८।१७ ''
११ ''	'' ''	१२ ''	सू.उ. ''
१३ ''	१७।३३ ''	१४ ''	'' ''
१५ ''	सू.उ. ''	१५ ''	२०।५७ ''
२५ ''	'' ''	२५ ''	२०।४८ ''
२९ ''	'' ''	२९ ''	२२।४७ ''
३० ''	'' ''	३० ''	२२।१ ''
३ नवं.	१४।२८ ''	४ नवं.	सू.उ. ''
५ ''	सू.उ. ''	५ ''	९।१९ ''
६ ''	२८।५० ''	७ ''	सू.उ. ''
८ ''	सू.उ. ''	८ ''	२६।२२ ''
९ ''	२६।१५ ''	१० ''	२६।५७ ''
१८ ''	२१।३१ ''	१९ ''	सू.उ. ''
२५ ''	२८।१४ ''	२६ नवं.	सू.उ. ''
३० ''	२२।४८ ''	२ दिसं.	'' ''
४ दिसं.	१५।१३ ''	५ ''	''
६ ''	सू.उ. ''	६ ''	१२।३६ ''
७ ''	१२।८ ''	८ ''	१२।२२ ''
१३ ''	२३।३५ ''	१४ ''	सू.उ. ''
१६ ''	सू.उ. ''	१७ ''	'' ''
१८ ''	९।३२ ''	१९ ''	'' ''
२३ ''	१०।१४ ''	२४ ''	'' ''
२६ ''	२९।५७ ''	२७ ''	'' ''
२८ ''	सू.उ. ''	२९ ''	२६।३ ''
१ जन.	'' ''	२ जन.	सू.उ. ''
४ ''	'' ''	५ ''	'' ''
१० ''	७।४८ ''	११ ''	''
१३ ''	सू.उ. ''	१३ ''	१७।२९
१५ ''	'' ''	१५ ''	१९।४९
२० ''	'' ''	२० ''	१७।३
२३ ''	११।५१ ''	२४ ''	सू.उ.
२५ ''	सू.उ. ''	२६ ''	७।२६
२७ ''	२९।३६ ''	२८ ''	सू.उ.
२९ ''	सू.उ. ''	२९ ''	२८।५५
१ फर.	सू.उ. ''	१ फर.	३०।४६ ''
७ ''	'' ''	७ ''	१८।५१ ''
१६ फर.	सू.उ. से	१६ फर.	२४।३२ तक
२० ''	'' ''	२० ''	१७।५० ''
३२ ''	'' ''	२२ ''	१३।४१ ''
२४ ''	११।४ ''	२५ ''	सू.उ. ''
२६ ''	सू.उ. ''	२६ ''	१०।२७ ''
१ मार्च	'' ''	१ मार्च	१३।१९ ''
४ ''	२०।४ ''	५ ''	सू.उ. ''
१६ ''	सू.उ. ''	१६ ''	१३।५८ ''

अमृत सिद्धि

ता.मास	घं.मि. से	ता. मास	घं. मि. तक
२९ अप्रे.	२२।१८ से	३० अप्रे.	सू.उ. तक
१ मई	सू.उ. ''	१ मई	२१।५६ ''
४ ''	'' ''	४ ''	२६।४८ ''
२७ ''	१०।५७ ''	२८ ''	सू.उ. ''
२९ ''	सू.उ. ''	२९ ''	७।११ ''
१ जून	सू.उ. ''	१ जून	११।५ ''
२० ''	१७।२७ ''	२१ ''	सू.उ. ''
२४ ''	सू.उ. ''	२४ ''	१५।११ ''
१८ जुला.	'' ''	१८ जुला.	२१।५५ ''
३० ''	२०।५५ ''	३१ ''	सू.उ. ''
२७ अग.	सू.उ. ''	२७ अग.	२३।४४ ''
२७ सितं.	१३।३० ''	२८ सितं.	सू.उ. ''
६ अक्टू.	२७।५० ''	७ अक्टू.	'' ''
२५ ''	सू.उ. ''	२५ ''	२०।४८ ''
३ नवं.	१४।२८ ''	४ नवं.	सू.उ. ''
१ दिसं	सू.उ. ''	१ दिसं.	२०।५७ ''
१ जन.	२२।३३ ''	२ जन.	सू.उ. ''
४ ''	२१।४६ ''	५ ''	'' ''
२७ ''	२९।३६ ''	२८ ''	'' ''
२९ ''	सू.उ. ''	२९ ''	२८।५५ ''
१ फर.	सू.उ. ''	१ फर.	३०।४६ ''
२४ ''	११।४ ''	२५ ''	सू.उ. ''
२६ ''	सू.उ. ''	२६ ''	१०।२७ ''
१ मार्च	सू.उ. ''	१ मार्च	१३।१९ ''

रवि पुष्य

ता.मास	घं.मि. से	ता. मास	घं. मि. तक
१७ सितं.	१२।२७ से	१८ सितं.	सू.उ. तक
१५ अक्टू.	सू.उ. ''	१५ अक्टू.	२०।५७ ''

गुरु पुष्य

ता.मास	घं.मि. से	ता. मास	घं. मि. तक
६ अप्रे.	१६।३१ से	७ अप्रे.	सू.उ. तक
४ मई	सू.उ. ''	४ मई	२६।४८ ''
१ जून	'' ''	१ जून	११।५ ''
१७ सितं.	१२।२७ ''	१८ सितं.	सू.उ. ''
४ जन.	२१।४६ ''	५ जन.	'' ''
१ फर.	सू.उ. से	१ फर.	३०।४६ तक
१ मार्च	'' ''	१ मार्च	१३।१९ ''

द्विपुष्कर

ता.मास	घं.मि. से	ता. मास	घं. मि. तक
४ अप्रे.	सू.उ. से	४ अप्रे.	१२।५४ तक
२८ मई	९।४५ ''	२९ मई	सू.उ. ''
२२ जुला.	सू.उ. ''	२२ जुला.	८।२२ ''
१ अग.	'' ''	१ अग.	१९।५२ ''
२३ सितं.	२९।४५ ''	२४ सितं.	२२।२३ ''
३ अक्टू.	२२।३३ ''	४ अक्टू.	सू.उ. ''
२६ नवं.	२७।४४ ''	२७ नवं.	सू.उ. ''
५ दिसं.	२८।० ''	६ दिसं.	'' ''
२० जन.	१७।३ ''	२० जन.	२९।१२ ''

त्रिपुष्कर

ता.मास	घं.मि. से	ता. मास	घं. मि. तक
१५ अप्रे.	१३।३१ से	१३ अप्रे.	२२।२४ तक
२५ ''	सू.उ. ''	२५ ''	७।१५ ''
२९ ''	'' ''	२९ ''	२०।५९ ''
९ मई	७।२० ''	९ मई	१४।३६ ''
१७ जून	२१।१० ''	१८ जून	८।४४ ''
२७ ''	सू.उ. ''	२७ ''	१७।२६ ''
२ जुला.	६।२५ ''	३ जुला.	सू.उ. ''
१९ अग.	२९।१ ''	२० अग.	१९।२३ ''
४ सितं	१३।७ ''	५ सितं.	६।१९ ''
२४ अक्टू.	सू.उ. ''	२४ अक्टू.	१४।२० ''
२८ ''	२३।२ ''	२९ ''	१५।३१ ''
१७ दिसं.	७।४७ ''	१७ दिसं.	१८।२८ ''
२६	११।११ ''	२६ ''	२९।५७ ''
३० ''	२५।२३ ''	३१ ''	२३।३१ ''
९ जन.	२६।१४ ''	१० जन.	सू.उ. ''
१८ फर.	२२।४१ ''	१९ फर.	'' ''
२७ ''	२३।३६ ''	२८ ''	'' ''

रवियोग

ता.मास	घं.मि. से	ता. मास	घं. मि. तक
१ अप्रे.	१३।५ से	२ अप्रे.	१२।१६ तक
३ ''	१२।१२ ''	४ ''	१२।५४ ''
६ ''	१६।३१ ''	८ ''	२२।११ ''
१० ''	२८।२१ ''	१२ ''	७।१२ ''
१९ ''	१५।४३ ''	२० ''	१५।१० ''
३० ''	२१।४६ ''	१ मई	२१।५६ ''
२ मई	२२।५० ''	३ ''	२४।२९ ''
५ ''	२९।३५ ''	८ ''	११।४३ ''
१० ''	१७।६ ''	१२ ''	२०।३३ ''
१८ ''	१९।३८ ''	१९ ''	१८।२९ ''
३० ''	७।४९ ''	३१ ''	९।८ ''
१ जून	११।५ ''	२ जून	१३।३७ ''
४ ''	१९।३८ ''	६ ''	२५।१६ ''
१० ''	५।३८ ''	११ ''	५।४५ ''
१६ ''	२२।३८ ''	१७ जून	२१।१० ''
२८ ''	१९।१६ ''	२९ ''	२१।३८ ''
३० ''	२४।२७ ''	१ जुला.	२७।३१ ''
४ जुला.	९।३१ से	७ जुला.	१४।४४ तक
९ ''	१४।२९ ''	१० ''	१३।२१ ''
१५ ''	२५।३७ ''	१६ ''	२४।३ ''
२८ ''	७।४७ ''	२९ ''	२०।५१ ''
३० ''	१४।१ ''	३१ ''	१७।६ ''
२ अग.	२२।६ ''	३ अग.	७।२० ''
३ ''	२३।३८ ''	५ ''	२४।१६ ''
७ ''	२१।५० ''	८ ''	१९।४५ ''
१३ ''	२९।१९ ''	१४ ''	२७।५५ ''
२६ ''	२०।३६ ''	२७ ''	२३।४४ ''
२८ ''	२६।४१ ''	२९ ''	२९।१६ ''
३० ''	२४।५९ ''	३१ ''	७।१८ ''
२ सितं.	९।१२ ''	४ सितं	७।५९ ''
५ ''	२८।५ ''	६ ''	२५।२६ ''
१२ ''	१०।२३ ''	१३ ''	९।२४ ''
१३ ''	१८।५६ ''	१४ ''	९।७ ''
२५ ''	८।४० ''	२६ ''	११।१७ ''
२७ ''	१०।२२ ''	२७ ''	१३।३० ''
२८ ''	१५।१३ ''	२९ ''	१६।२१ ''
१ अक्टू.	१६।३६ ''	३ अक्टू.	१४।१ ''
५ ''	९।३३ ''	६ ''	६।४५ ''
१२ ''	१६।५९ ''	१३ ''	१७।३३ ''
२५ ''	२०।४८ ''	२६ ''	२२।१ ''
२७ ''	२२।४६ ''	२८ ''	२३।२ ''
३० ''	२२।१ ''	१ नंव.	१९।० ''
३ नंव.	१४।२८ ''	४ ''	११।५३ ''
१० ''	२६।५७ ''	११ ''	२८।२९ ''
२३ ''	२८।१७ ''	२४ ''	२८।२५ ''
२५ ''	२८।१४ ''	२६ ''	२७।४४ ''
२८ ''	२५।५० ''	३० ''	२२।४८ ''
३ दिसं.	१७।२ ''	४ दिसं.	१५।१३ ''
१० ''	१५।८ ''	११ ''	१७।३३ ''
२३ ''	१०।१४ ''	२४ ''	९।२० ''
२५ ''	८।१८ ''	२५ ''	३१।१० ''
२७ ''	२८।४१ ''	३० ''	२४।४६ ''
१ जन.	२२।३३ ''	२ जन.	२१।५१ ''
८ ''	२८।४८ ''	१० ''	७।४८ ''
२१ ''	१५।२२ ''	२२ ।	१३।३६ ''
२३ ''	११।५१ ''	२४ ''	१०।१३ ''
२४ ''	१३।५२ ''	२५ ''	८।४४ ''
२६ ''	३०।२३ ''	२८ ''	२९।६ ''
३० ''	२९।६ ''	३१ ''	२९।४२ ''
८ फर.	२१।५७ ''	९ फर.	२४।४९ ''
२० ''	१७।५० ''	२१ ''	१५।३७ ''
२२ ''	१३।४१ ''	२३ ''	१२।१ ''
२५ ''	१०।३० ''	२७ ''	१०।५५ ''
१ मार्च	१३।१९ ''	२ मार्च	१५।१२ ''
१० ''	१०।४५ ''	११ ''	१३।१ ''

द्वादश राशियों का मासिक भविष्यफल सं. वि. २०६३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

द्वादश राशियों का मासिक भविष्यफल सं. वि. २०६३

नोट–यह राशिफल गोचर ग्रह एवं नाम राशि के आधार पर लिखा गया है।

मेष-चू, चे, चो; ला, ली, लू, ले, लो, अ

मेष राशि चक्रं

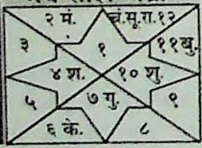

(स्वामी मंगल)

इस वर्ष शनि की ढैय्या-पारिवारिक संकट करेगा।

अप्रैल २००६-ग्रहयोगानुसार व्यापार ठीक रहेगा। धन हानि भी होगी। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। मांगलिक कार्यों का योग बनेगा। अचानक यात्रा व्यय तथा चोरी का योग भी बनेगा। सावधान रहना चाहिए। **मई २००६**—स्थानान्तरण योग, चोट का भय रहेगा। मित्र वर्ग से मदद मिलेगी, शत्रु कुछ शान्त होंगे। स्त्री को कष्ट। कारोबार में मन्दी। ता. १६, २४, २५, २६ अशुभदायक रहेंगी। **जून २००६**—राजकार्य में भय रहेगा। स्वजनों द्वारा भी उपहास होगा। अपमान् व भय बना रहेगा। स्त्री पक्ष से मदद मिलेगी। माह के अन्त में अचानक खर्चा होगा। सन्तान लाभ भी। ता. २०, २१, २२ व २९ अशुभ हैं। **जुलाई २००६**—मन अशान्त रहेगा। पारिवारिक कष्ट का योग बनेगा। आय से व्यय अधिक होगा। सम्पत्ति का विवाद व सम्पत्ति लाभ भी होगा। कारोबार अच्छा बनेगा। कारोबार में लाभ योग बनेगा। मित्र वर्गों के साथ यात्रा का योग भी बनेगा। मांगलिक कार्य योग। ता. १७, १८, १९, २७, २८ अशुभ हैं। **अगस्त २००६**—राजकीय कार्यों में अपयश। नयी योजना का लाभ। स्त्री पक्ष से काफी लाभ होगा। बन्धुओं का सहयोग। कारोबार अच्छा। सन्तान लाभ। रोजगार का लाभ मिलेगा। ता. २, २३, २४ व ३१ अशुभदायक हैं। **सितम्बर २००६**—यात्रा योग, भूमि-भवन क्रय-विक्रय योग, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सन्तान पक्ष से लाभ। सम्बंधी योग से नयी योजनाओं का योग। राजपक्ष में भी लाभ। सत्ता पक्ष में वर्चस्व। ता. १, २, १०, ११, १९, २१ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—उदर विकार, गुप्त चिन्ता, सन्तान पक्ष का भाग्योदय, स्त्री को कष्ट, कारोबार में हानि, कर्जा योग, यात्रा तथा मांगलिक कार्य भी होगा। दिनांक ७, ८, ९, १७, १८, २५, २६, २७ को सावधान रहें। शत्रु भय अचानक बनेगा। **नवम्बर २००६**—शत्रु पक्ष परास्त, सन्तान को रोजगार, स्वयं की पदोन्नति योग, आय व व्यय बराबर, बाजार में यश लाभ। स्त्री द्वारा कुछ ताड़ना। मंगल विवाद योग। दि. ४, ५, १३, १४, २१, २२, २३ अशुभ रहेंगी। सावधान रहें। **दिसम्बर २००६**—वायु विकार, रक्त विकार योग। सन्तान पक्ष से चिन्ता। गुप्त शत्रु पक्ष से कोर्ट कचहरी का मामला। कारोबार अच्छा। यात्रा एवं मांगलिक कार्य होगा। ता. १, २, ३, १०, ११, १२, २०, २८ अशुभ रहेंगी। सावधान। **जनवरी २००७**—नेत्र पीड़ा योग। रिश्तेदारों से ताड़ना। नये कार्य की योजना अनावश्क खर्चा बढ़ेगा। स्त्री पक्ष द्वारा धोखा भी। लम्बी यात्रा से हानि। पुराना विवाद बढ़ेगा। वाहन से भय। ता. २, ६, ७, १५, १६, २५, २६ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—मित्रों से लाभ। नया कार्य होगा। सन्तान लाभ भी तथा सन्तान को रोजगार लाभ। परिवार में बंटवारा योग। भूमि-भवन निर्माण कार्य योग भी है। ता. ४, ११, १३, २१, २२ अशुभ हैं। धार्मिक यात्रा योग है। **मार्च २००७**—इस माह में आय अच्छी होगी। शुभ कार्य में खर्चा होगा। मित्र वर्ग भी सहयोग करेंगे। स्त्री सुख मिलेगा। कार्य में कुछ अनबन भी होगी। अग्नि व वाहन से भय रहेगा। ता. २, ३, ११, १२, २०, २२, २९ अशुभ रहेंगी।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

वृष राशि चक्रं

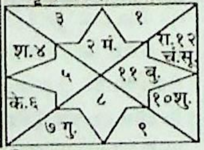

(स्वामी शुक्र)

लग्न में मंगल शुक्र से अनियंत्रित व्यवहार व विवाद चलेगा। गुरु छठा शत्रु पक्ष को बढ़ायेगा। शुक्र भवन भूमि तथा बुध व्यापार-धंधा बढ़ायेगा।

अप्रैल २००६—शत्रु पक्ष कमजोर होगा। मित्र बंधु सुख मिलेगा। सुखद यात्रा योग भी है। सम्पत्ति लाभ का योग बनता है। स्त्री पक्ष से सुख तथा कीर्ति सम्मान मिलेगा। ता. ६, ७, १९, २०, २१ व २४ अशुभ रहेंगी। सावधान रहना चाहिए। **मई २००६**—क्रोधावेश बढ़ेगा। दुर्घटना योग बनेगा। अग्नि का भी भय है। मित्र वर्ग भी समस्या में उलझायेंगे। सन्तान पक्ष का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। पारिवारिक क्लेश बढ़ेगा। ता. ७, ८, ९, १६, १७, १८, २६, २७ अशुभ हैं। **जून २००६**—आर्थिक लाभ। व्यापार धंधा में प्रगति लेकिन मानसिक अशांति रहेगी। कार्यालय परिवर्तन तथा रोजगार की अभिवृद्धि का योग बनता है। स्त्री वर्ग से गुप्त मंत्रणा व लाभ। ता. ४, ५, १३, २३, २४ अशुभ हैं। **जुलाई २००६**—पारिवारिक अशांति, सम्पत्ति विवाद, नयी योजना, स्त्री को कष्ट, कार्यालय स्थानान्तरण, दक्षिणी यात्रा से लाभ। भूमि भवन का लाभ योग। पुराना विवाद में विजय होगी। ता. १, २, ३, १०, ११, १२, १७, १८, २९ अशुभदायक हैं। **अगस्त २००६**—स्वास्थ्य अच्छा, लोगों में कुछ मनमुटाव, राजनैतिक कार्यों में अशांति रहेगी। सन्तान पक्ष को पीड़ा, कारोबार में परिवर्तन का योग भी। पुराना मित्र मण्डल सहयोग देंगे। ता. ६, ७, ८, १७, १८, २५, २६ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**— कर्जा बढ़ेगा, मित्रों से मदद मिलेगी, मांगलिक कार्य होगा। आर्थिक लाभ अच्छा, उद्योग कार्य का लाभ। पत्नी की राय से कुछ कीर्ति प्राप्ति होगी। पशुओं से भय रहेगा। ता. २, ३, ४, १२, १३, १४, २० अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—रोगादि योग, आर्थिक लाभ, अच्छे लोगों से सम्पर्क, राजकीय कार्यों में लाभ व मान सम्मान की प्राप्ति होगी। सन्तान को भी रोजगार प्राप्ति का अवसर मिलेगा। ता. २, ३, ४, १८, १९, २०, २१, २९ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—अर्थ लाभ होकर मांगलिक कार्यों में खर्चा भी होगा, कुछ उलझनें बढ़ेंगी, राजपक्ष में विजय योग, अनबन के कारण कुछ कार्य बाधित होंगे। पुत्र लाभ योग बनता है। ता. ६, ७, ८, २३, २४, २५ अशुभ हैं। **दिसम्बर २००६**—स्वास्थ्य अच्छा, निजी लोगों से अनबन रहेगी, कार्य में सफलता का योग है। राजकीय कार्यों में बाधा आयेगी। अचानक यात्रा योग तथा राजनैतिक लाभ प्राप्ति योग है। ता. ३, ४, ५, १४, २२, ३१ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**— नेत्र पीड़ा योग, अपव्यय योग, बाहर की यात्रा योग है। रिश्तेदारों से अच्छा सहयोग मिलेगा। सन्तान सुख योग। पत्नी को पीड़ा होगी। पशुओं से भय रहेगा। ता. १, ९, १०, १५, १६, १८, २७, २९ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—मन उदास रहेगा। अनावश्यक खर्चा से परेशानी, मांगलिक कार्य भी होगा। कोर्ट कार्य में विजय योग। राजभय योग। नये कार्य का योग बनता है। सन्तान की प्राप्ति योग है। ता. ५, ६, १३, १४, २४ अशुभ हैं। **मार्च २००७**—निजी लोगों से विवाद, आर्थिक लाभ, सम्पत्ति लाभ होगा। अचानक धन प्राप्ति का योग भी है। अर्थ व्यर्थ नहीं होगा। मांगलिक कार्य योग। विवाहादि योग भी है। ता. ४, ५, ६, १३, १४, २३, २६ अशुभ हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिथुन-का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

(स्वामी बुध)

बारहवां मंगल करेगा दंगल, आठवां शुक्र कार्य होंगे। चौथा केतु पारिवारिक भ्रांति। पंचम गुरु सन्तान पक्ष से विवादकताकारी फलप्रद है।

अप्रैल २००६—शत्रु पक्ष कमजोर, विवाद योग, मित्र बंधु, स्त्री पक्ष से भी विवाद-परिवार में अशान्ति। स्त्री पक्ष से राजनैतिक लाभ होगा। कर्जा बढ़ेगा। परिवार में मांगलिक खर्चा भी होगा। ता. २, ४, ७, २२, २३ अशुभ। **मई २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। वृथा विवाद से बचकर रहें। माह के अंत में हानि योग। कष्ट योग भी। भाईयों में विद्रोह। राजकीय भय रहेगा। नया व्यवसाय इस माह में नहीं करें। ता. १, ७, ८, ९, १६, १७, १८, २५, २७ अशुभ हैं। **जून २००६**—निरोग रहेंगे। नया कार्य योग। आर्थिक लाभ भी होगा। शत्रु प्रबल होकर हार मानेंगे। कार्य में परिवर्तन योग ज्यादा है। राजनैतिक लाभ भी मिलेगा। अनावश्यक यात्रा भी होगी। ता. ६, ७, २३, २४ अशुभ रहेंगी। **जुलाई २००६**—कर्जा वृद्धि योग। क्रोधावेश, कोर्ट कचहरी जन्य मामला बनेगा। स्थान परिवर्तन योग बनता है। पशुओं से भय रहेगा। पारिवारिक संकट काफी बढ़ेगा। ता. ३, ४, १२, १३, १४, २२, २३, २४, ३१ अशुभ। **अगस्त २००६**—उदर पीड़ा, अचानक आय योग, शुभ यात्रा योग, स्त्री पक्ष से परेशानी, व्यक्ति विशेष विवाद-चोट योग। वाहन से सावधान। भूमि भवन का योग भी बनता है। ता. १, ९, १०, १८, १९, २०, २७, ३० अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—स्वास्थ्य लाभ अच्छा रहेगा। भाईयों का सुख योग। आय से व्यय अधिक बनेगा। आर्थिक लाभ भी अच्छा रहेगा। मांगलिक कार्य योग। रोजगार प्राप्ति योग भी बनता है। ता. ८, ९, २३, २४, २५ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—क्रोधावेश बढ़ेगा। सन्तान लाभ योग। मित्र वर्ग से मदद मिलेगी। नेत्र पीड़ा योग बनेगा। परिवार में अशांति का वातावरण से मानसिक रोग का योग बनेगा। शान्ति रखें। ता. २, ३, ४, १२, १३, २४, २५ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—आर्थिक लाभ अच्छा रहेगा। परिवार में भी यश कीर्ति। स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। परिवार में भी मांगलिक कार्य की योजना बनेगी। मासान्त में राजपक्ष से हानि योग बनता है। ता. ८, ९, १०, १७, १८, २६, २७ अशुभ हैं। **दिसम्बर २००६**—रक्त पित्त विकार योग। भातृ सुख योग लेकिन मित्रों से अनबन रहेगी। स्त्री पक्ष को कष्ट तथा पारिवारिक विवाद भी। कारोबार अच्छा चलेगा। राजनैतिक लाभ मिलेगा। ता. ६, ७, १४, २३, २४ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**—स्वास्थ्य लाभ अच्छा रहेगा। खर्चा बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से लाभ होगा। व्यवसाय में कुछ खींचतान रहेगी। भूमि-भवन क्रय-विक्रय योग तथा लाभ मिलेगा। ता. २, ३, ४, ११, १२, २०, २३, २४ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—कफ वायु विकार, धन हानि, यात्रा योग, शत्रु प्रवास, भाईयों का सहयोग, मासान्त में अच्छा लाभ होगा। नौकरी योग, विवाह योग तथा पुराना विवाद में विजय। ता. ३, ४, ११, १३, २१, २२ अशुभ हैं। **मार्च २००७**—मानसिक विकार से मुक्ति, मन प्रसन्न रहेगा। अर्थ लाभ, धार्मिक आयोजन का योग भी है। सम्पत्ति लाभ मिलेगा। माह के अन्त में कुछ विशेष लाभ भी होगा। ता. ७, ८, १५, १६, १७, २५, २६ अशुभ। राजनैतिक सम्मान भी मिलेगा।

कर्क-ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

(स्वामी चंद्र)

साढ़साती शनि लग्न में रोग-विवाद कारक है चौथा गुरु परिवार में पाखण्ड बढ़ायेगा। अष्टम बुध व्यापार में हानि रोजगार में अवनति तथा सभाओं में अपमान जन्य योग बनायेगा।

अप्रैल २००६—स्वास्थ्य लाभ अच्छा रहेगा। निजी लोगों से अनबन रहेगी। राजकीय कार्यों में भागदौड़ ज्यादा रहेगी। धार्मिक कार्यों में खर्चा होगा। ता. ३, ६, ७, १०, २४, २५, २६ अशुभ रहेंगी। **मई २००६**—अनायास कलह योग। आय से व्यय अधिक। नौकरी का योग भी बनेगा। एजेन्सी जन्य कार्य भी होगा। यात्रा योग से स्वास्थ्य में हानि भी होगी। सन्तान पक्ष का सहारा मिलेगा। ता. ४, ५, १२, १३, १९, २०, २९ अशुभ हैं। **जून २००६**—कारोबार में तरक्की, खर्चा परन्तु लाभ मान सम्मान प्राप्ति। तंत्र योग से पीड़ित होने का योग है। कुछ पुराने विवाद खुलेंगे। विजय योग बनता है। जल से भय-सावधान रहें। ता. ६, ७, १५, १६, १७, २५, २६ अशुभ हैं। सावधान। **जुलाई २००६**—स्त्री पक्ष से परेशानी। कारोबार में कुछ रुकावट होगी। उदर पीड़ा तथा गिरने का योग। वाहन दुर्घटना का दो बार योग बनता है। पारिवारिक कार्यों का भार बढ़ेगा। ता. ३, ४, ९, १३, १७, १८, २७, २८ अशुभ हैं। **अगस्त २००६**—स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। निरोग रहेंगे। आर्थिक लाभ भी अच्छा होगा। स्त्री पक्ष से चिन्ता, लेकिन सन्तान पक्ष से सहयोग मिलेगा। राजनैतिक क्षेत्र में वर्चस्व बढ़ेगा। ता. २, ३, ११, १३, २१, २२, २३ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—कफ वायु विकार योग। भूमि-भवन विवाद भी। अचानक आर्थिक लाभ। भाईयों का सहयोग मिलेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता। रोजगार लाभ। पदोन्नति योग भी बनता है। ता. ८, ९, १७, १८, २६ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—स्वास्थ्य लाभ रहेगा। धनदायक प्रतिकूलता का नाश होगा, यानि धनागम होगा। सन्तान प्राप्ति, लेकिन चोरी का भय। मासान्त में कारोबार में हानि भी। ता. २, ६, ९, १३, २३, २४, २७, २९ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—स्वास्थ्य में गड़बड़ होगी। रक्त विकार योग बनता है। घरेलू झंझट से मन उदास रहेगा। पदच्युत योग भी बनता है। परिवार में नये सदस्य का आगमन खुशी भी होगी। ता. ३, ७, ९, १९, २०, २४ अशुभ। **दिसम्बर २००६**—भाईयों में अच्छी साख बनेगी। कृषि जन्य कार्यों में हानि। व्यापार कार्य में प्रगति का योग है। ता. ८, ९, १६, १७, १८, २७ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**—भाईयों का सुख योग। स्त्री पक्ष से आर्थिक लाभ मिलेगा। उदर पीड़ा का योग है। खर्चा अधिक। धार्मिक यात्रा का योग भी है। मित्र मण्डल से आर्थिक सम्पन्नता का योग बनेगा। ता. २, ७, ९, १४, २२, २४ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—कर्जा बढ़ने का योग है। कूप, भवन, भूमि प्राप्ति का योग है। स्वास्थ्य में अचानक अशांति बनेगी। भाईयों में अनबन योग। नये स्थान में कार्य योजना योग भी है। ता. १, २, ९, १०, १८, १९, २३ अशुभ है। **मार्च २००७**—रक्त विकार रोग का योग है। व्यवसाय में लाभ होकर हानि भी होगी। अच्छे लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। राजनैतिक लाभ योग भी है। वाहन प्राप्ति, पशु क्रय-विक्रय योग भी है तथा मान-सम्मान भी मिलेगा। ता. १, ९, १०, १८, १९, २७, २९ अशुभ हैं।

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

४, ५, १४, १५, २३, २४, २६ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक लाभ

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

८, २३, २४, ३१ अशुभ रहेंगी। **सितम्बर २००६**— क्रोधावेश बढ़ेगा। धन लाभ होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

भूमि भवन का योग भी बनता है। ता. १, ९, १०, १८, १९, २०, २७, ३० अशुभ हैं। सितम्बर

होगा। ता. ७, ८, १५, १६, १७, २५, २६ अशुभ। राजनैतिक सम्मान भी मिलेगा।

१०, १८, १९, २७, २९ अशुभ हैं।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

(स्वामी सूर्य)

शनि की साढ़ेसाती का योग से खर्चा तथा भूमि भवन प्राप्ति। केतु द्वितीय धन बाधा है। रा.+चं.+सू. अष्टम वाहन से सावधान रहें। मकर शुक्र की राशि पर मांगलिक कार्य करायेगा।

अप्रैल २००६—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। घरेलू झंझट बढ़ेंगे। मित्रों से मदद मिलेगी। पक्षान्त में विशेष आय होगी। वाहन प्राप्ति योग भी है। ता. २, ४, ७, २४, २५, २६ अशुभ हैं। **मई २००६**—वायु विकार बढ़ेगा। आर्थिक हानि का योग बनता है। स्त्री सुख मिलेगा। भाग्य के भरोसे काम अटकेगा। पुरुषार्थ बढ़ेगा। पुराना-विवाद में विजय योग बनेगा। वाहन से सावधान रहें। ता. ५, ६, १५, १६, २४, २५ अशुभ हैं। **जून २००६**—नेत्र विकार एवं रोगादि योग। वृथा व्यय। निजीजनों का असहयोग। नयी योजना बनेगी। सन्तान पक्ष से शुभदायक योग बनेगा। शुभ यात्रा योग। मांगलिक कार्य भी। ता. १, ८, ९, १८, १९, २७, २८ अशुभ रहेंगी। **जुलाई २००६**—रक्त पित्त विकार योग। आर्थिक लाभ होगा। शत्रु कमजोर होंगे। स्त्री सुख अच्छा। कारोबार में भी लाभ होगा। नया कार्य योग बनेगा। भूमि-भवन, क्रय-विक्रय योग भी बनता है। ता. १, ६, ९, १७, १८, २७, २८ अशुभ। **अगस्त २००६**—स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। पारिवारिक कार्यों में लाभ होगा। निजी लोगों से भी अच्छा लाभ मिलेगा। अनावश्यक खर्चा तथा खुशी भी। माता-पिता का आशीर्वाद अच्छा मिलेगा। ता. ४, ५, १४, १५, २३, २४, २६ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक लाभ अच्छा रहेगा। खर्च भी अचानक होगा। दोस्तों से कुछ अनबन होगी। स्त्री पक्ष से चिन्ता रहेगी। नवीन कार्यों से भी लाभ मिलेगा। ता. १, २, १०, ११, १२, १९, २०, २१, २८, २९ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—स्वास्थ्य में कुछ गिरावट। विदेशी कारोबार में लाभ योग। राजनैतिक कार्यों से भी लाभ होगा। अचानक लाभ प्राप्ति भी होगी। यात्रा एवं धार्मिक कार्यों में खर्चा होगा। ता. २, ४, ९, १८, २५, २६ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—मित्रों से विवाद योग। योजनात्मक कार्य में विफलता। मित्र वर्ग मदद करेंगे। राजभय योग बनेगा। सम्पत्ति विवाद बढ़ेगा। सावधान। स्त्री को अचानक रोगादि भय। शुक्र के कारण गुप्त रोग। ता. २, ४, ५, १३, २४ अशुभ। **दिसम्बर २००६**—उदर विकार। आर्थिक लाभ। भ्रातृ सुख योग बनता है। दोस्तों से विवाद योग। शुभ समाचार प्राप्ति का अवसर बनेगा। नवीन सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। मांगलिक कार्य होगा। ता. १, ३, ५, ९, २१, २२ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**—शिरशूल योग बनेगा। भाईयों में विवाद, रोजगार प्राप्ति का अवसर। आय से अधिक व्यय योग बनेगा। शत्रु पक्ष से सावधान। यात्रा का लाभ मिलेगा। ता. ३, ४, ९, १५, १६, २४, २५, २६ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—विवाद से बचें। धन लाभ योग बनता है। व्यापार अच्छा चलेगा। विविध कार्यों में लाभ भी होगा। मित्र व बंधु वर्ग अच्छी मदद भी करेंगे। मांगलिक कार्य भी। ता. ३, ४, ११, १३, २१, २२ अशुभ। **मार्च २००७**—क्रोधावेश बढ़ेगा। आर्थिक लाभ का योग एवं धंधा। घरेलू झंझट बढ़ सकते हैं। परिवार में वृद्धजन का स्वास्थ्य गिरेगा। यात्रा योग भी। वाहन प्राप्ति का योग बनता है। रोजगार बढ़ेगा। ता. २, ३, ४, ११, १२, २०, २१, २२, २९ अशुभ कारक हैं।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

(स्वामी बुध)

ग्रहयोग से केतु लग्न में होना रोगोपद्रव योग करेगा। शनि भूमि भवन का योग बनायेगा। शुक्र विवाह सन्तान तथा मांगलिक कार्य का योग बनायेगा। धार्मिक आयोजन भी अच्छे करायेंगे।

अप्रैल २००६—उदर विकार, अर्थ हानि, बंधु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता। स्त्री सुख अच्छा। कारोबार कमजोर। व्यवसायोन्मुखी योजना से आर्थिक लाभ होगा। मित्र वर्ग मदद करेंगे। ता. २, ९, ११, १९,-२०, २१, २९, ३० अशुभ हैं। **मई २००६**—सन्तान पक्ष से खुशी, भाग्य साथ नहीं देगा। मासान्त में हानि होगी। स्त्री के रोगादि प्रभाव भी होगा। सम्बंध योग बनेगा। नया कार्य योग बनेगा। वाहन से सावधान रहना चाहिए। ता. ४, ५, १२, १३, २२, २३ अशुभ हैं। **जून २००६**—रक्त पित्त होकर परेशानी बढ़ेगी। सन्तान पक्ष से खुशी होगी। भाग्योदय में बाधा योग। मासान्त में हानि होगी। वाहन प्राप्ति योग बनेगा। भूमि-भवन का योग बनेगा। ता. ४, १०, १३, २३, २४ अशुभ। यात्रा योग है। **जुलाई २००६**—आर्थिक हानि का योग। लोगों से प्रेम बढ़ेगा। पशु क्रय-विक्रय से लाभ होगा। शिरशूल योग। ता. २, ३, ११, १२, १४, २०, २१, २९ अशुभ। **अगस्त २००६**—सम्पत्ति विवाद का योग। शत्रु बढ़ेंगे। कारोबार रद्दोबदल का योग भी बनेगा। स्त्री सुख सम्मान बढ़ेगा। मासान्त में आय अच्छी। वाहन सुख सुविधा का योग बनेगा। ता. ६, ७, ८, २३, २४, ३१ अशुभ रहेंगी। **सितम्बर २००६**— क्रोधावेश बढ़ेगा। धन लाभ होगा। बंधु कष्ट, गुप्त चिन्ता, यात्रा योग बनेगा। साझा कार्यक्रम होगा। नया धन्धे का योग बनेगा। मांगलिक खर्चा भी होगा। ता. २, ३, ४, १२, १३, १४, २२, २३ अशुभ। **अक्टूबर २००६**—उत्साह बढ़ेगा। बंधु कष्ट योग बनेगा। मासान्त में विशेष हानि का योग बनता है। पारिवारिक कार्यों में मान-सम्मान प्राप्ति का योग बनेगा। धार्मिक यात्रा होगी। ता. १, २, १०, ११, १८, १९, २० अशुभ। **नवम्बर २००६**—कफ वायु विकार बनेगा। वृथा खर्चा होगा। भाईयों में रोगादि योग से खर्चा बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से लाभ होगा। नवीन सम्पर्क सूत्र बनेगा। पशु क्रय-विक्रय में लाभ। ता. १, २, ५, २०, २२ अशुभ। **दिसम्बर २००६**—उदर विकार बढ़ेगा। धन लाभ होकर हानि भी। कारोबार अच्छा चलेगा। मित्र वर्ग का सहयोग मिलेगा। भूमि-भवन विवाद हल होगा। धार्मिक यात्रा योग। ता. ३, ४, ५, १२, १३, १४, २९, ३१ अशुभ। **जनवरी २००७**—पत्नी को कष्ट। सुखद यात्रा योग भी है। माह के अन्त में छोड़े गये परिवार से विवाद योग बनेगा। मेला में चोरी का योग बनेगा। वाहन से सावधान रहें। ता. ६, ७, ९, १२, १४, २१, २२ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नया कार्य भी होगा। मांगलिक कार्य का योग बनता है। नवीन वस्त्र प्राप्ति का योग भी है। विकास की गति बढ़ेगी। कुछ सज्जन मदद करेंगे। यात्रा भी होगी। ता. १, ७, ९, १०, ११, १६, १७, २० अशुभ। **मार्च २००७**—गैस पीड़ा रोग, नेत्र रोग भी। पशुओं से भय होगा। भूमि भवन का कार्य होगा। उत्साह बढ़ेगा। मासान्त में शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। अचानक यात्रा योग बनेगा। ता. २, ३, ९, १०, १२, १९ अशुभ हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिथुन-क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा

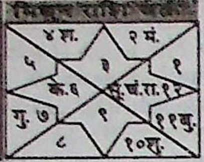

(स्वामी बुध)

बारहवां मंगल करेगा दंगल, आठवां शुक्र कार्य होंगे। चौथा केतु पारिवारिक भ्रांति। पंचम गुरु सन्तान पक्ष से विवादकताकारी फलप्रद है।

अप्रैल २००६—शत्रु पक्ष कमजोर, विवाद योग, मित्र बंधु, स्त्री पक्ष से भी विवाद-परिवार में अशान्ति। स्त्री पक्ष से राजनैतिक लाभ होगा। कर्जा बढ़ेगा। परिवार में मांगलिक खर्चा भी होगा। ता. २, ४, ७, २२, २३ अशुभ। **मई २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। वृथा विवाद से बचकर रहें। माह के अंत में हानि योग। कष्ट योग भी। भाईयों में विद्रोह। राजकीय भय रहेगा। नया व्यवसाय इस माह में नहीं करें। ता. १, ७, ८, ९, १६, १७, १८, २५, २७ अशुभ हैं। **जून २००६**—निरोग रहेंगे। नया कार्य योग। आर्थिक लाभ भी होगा। शत्रु प्रबल होकर हार मानेंगे। कार्य में परिवर्तन योग ज्यादा है। राजनैतिक लाभ भी मिलेगा। अनावश्यक यात्रा भी होगी। ता. ६, ७, २३, २४ अशुभ रहेंगी। **जुलाई २००६**—कर्जा वृद्धि योग। क्रोधावेश, कोर्ट कचहरी जन्य मामला बनेगा। स्थान परिवर्तन योग बनता है। पशुओं से भय रहेगा। पारिवारिक संकट काफी बढ़ेगा। ता. ३, ४, १२, १३, १४, २२, २३, २४, ३१ अशुभ। **अगस्त २००६**—उदर पीड़ा, अचानक आय योग, शुभ यात्रा योग, स्त्री पक्ष से परेशानी, व्यक्ति विशेष विवाद-चोट योग। वाहन से सावधान। भूमि भवन का योग भी बनता है। ता. १, ९, १०, १८, १९, २०, २७, ३० अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—स्वास्थ्य लाभ अच्छा रहेगा। भाईयों का सुख योग। आय से व्यय अधिक बनेगा। आर्थिक लाभ भी अच्छा रहेगा। मांगलिक कार्य योग। रोजगार प्राप्ति योग भी बनता है। ता. ८, ९, २३, २४, २५ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—क्रोधावेश बढ़ेगा। सन्तान लाभ योग। मित्र वर्ग से मदद मिलेगी। नेत्र पीड़ा योग बनेगा। परिवार में अशांति का वातावरण से मानसिक रोग का योग बनेगा। शान्ति रखें। ता. २, ३, ४, १२, १३, २४, २५ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—आर्थिक लाभ अच्छा रहेगा। परिवार में भी यश कीर्ति। स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। परिवार में भी मांगलिक कार्य की योजना बनेगी। मासान्त में राजपक्ष से हानि योग बनता है। ता. ८, ९, १०, १७, १८, २६, २७ अशुभ हैं। **दिसम्बर २००६**—रक्त पित्त विकार योग। भातृ सुख योग लेकिन मित्रों से अनबन रहेगी। स्त्री पक्ष को कष्ट तथा पारिवारिक विवाद भी। कारोबार अच्छा चलेगा। राजनैतिक लाभ मिलेगा। ता. ६, ७, १४, २३, २४ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**—स्वास्थ्य लाभ अच्छा रहेगा। खर्चा बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से लाभ होगा। व्यवसाय में कुछ खींचतान रहेगी। भूमि-भवन क्रय-विक्रय योग तथा लाभ मिलेगा। ता. २, ३, ४, ११, १२, २०, २३, २४ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—कफ वायु विकार, धन हानि, यात्रा योग, शत्रु प्रवास, भाईयों का सहयोग, मासान्त में अच्छा लाभ होगा। नौकरी योग, विवाह योग तथा पुराना विवाद में विजय। ता. ३, ४, ११, १३, २१, २२ अशुभ हैं। **मार्च २००७**—मानसिक विकार से मुक्ति, मन प्रसन्न रहेगा। अर्थ लाभ, धार्मिक आयोजन का योग भी है। सम्पत्ति लाभ मिलेगा। माह के अन्त में कुछ विशेष लाभ भी होगा। ता. ७, ८, १५, १६, १७, २५, २६ अशुभ। राजनैतिक सम्मान भी मिलेगा।

कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

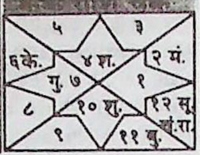

(स्वामी चंद्र)

साढ़साती शनि लग्न में रोग-विवाद कारक है चौथा गुरु परिवार में पाखण्ड बढ़ायेगा। अष्टम बुध व्यापार में हानि रोजगार में अवनति तथा सभाओं में अपमान जन्य योग बनायेगा।

अप्रैल २००६—स्वास्थ्य लाभ अच्छा रहेगा। निजी लोगों से अनबन रहेगी। राजकीय कार्यों में भागदौड़ ज्यादा रहेगी। धार्मिक कार्यो में खर्चा होगा। ता. ३, ६, ७, १०, २४, २५, २६ अशुभ रहेंगी। **मई २००६**—अनायास कलह योग। आय से व्यय अधिक। नौकरी का योग भी बनेगा। एजेन्सी जन्य कार्य भी होगा। यात्रा योग से स्वास्थ्य में हानि भी होगी। सन्तान पक्ष का सहारा मिलेगा। ता. ४, ५, १२, १३, १९, २०, २९ अशुभ हैं। **जून २००६**—कारोबार में तरक्की, खर्चा परन्तु लाभ मान सम्मान प्राप्ति। तंत्र योग से पीड़ित होने का योग है। कुछ पुराने विवाद खुलेंगे। विजय योग बनता है। जल से भय-सावधान रहें। ता. ६, ७, १५, १६, १७, २५, २६ अशुभ हैं। सावधान। **जुलाई २००६**—स्त्री पक्ष से परेशानी। कारोबार में कुछ रुकावट होगी। उदर पीड़ा तथा गिरने का योग। वाहन दुर्घटना का दो बार योग बनता है। पारिवारिक कार्यों का भार बढ़ेगा। ता. ३, ४, ९, १३, १७, १८, २७, २८ अशुभ हैं। **अगस्त २००६**—स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। निरोग रहेंगे। आर्थिक लाभ भी अच्छा होगा। स्त्री पक्ष से चिन्ता, लेकिन सन्तान पक्ष से सहयोग मिलेगा। राजनैतिक क्षेत्र में वर्चस्व बढ़ेगा। ता. २, ३, ११, १३, २१, २२, २३ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—कफ वायु विकार योग। भूमि-भवन विवाद भी। अचानक आर्थिक लाभ। भाईयों का सहयोग मिलेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता। रोजगार लाभ। पदोन्नति योग भी बनता है। ता. ८, ९, १७, १८, २६ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—स्वास्थ्य लाभ रहेगा। धनदायक प्रतिकूलता का नाश होगा, यानि धनागम होगा। सन्तान प्राप्ति, लेकिन चोरी का भय। मासान्त में कारोबार में हानि भी। ता. २, ६, ९, १३, २३, २४, २७, २९ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—स्वास्थ्य में गड़बड़ होगी। रक्त विकार योग बनता है। घरेलू झंझट से मन उदास रहेगा। पदच्युत योग भी बनता है। परिवार में नये सदस्य का आगमन खुशी भी होगी। ता. ३, ७, ९, १९, २०, २४ अशुभ। **दिसम्बर २००६**—भाईयों में अच्छी साख बनेगी। कृषि जन्य कार्यों में हानि। व्यापार कार्य में प्रगति का योग है। ता. ८, ९, १६, १७, १८, २७ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**—भाईयों का सुख योग। स्त्री पक्ष से आर्थिक लाभ मिलेगा। उदर पीड़ा का योग है। खर्चा अधिक। धार्मिक यात्रा का योग भी है। मित्र मण्डल से आर्थिक सम्पन्नता का योग बनेगा। ता. २, ७, ९, १४, २२, २४ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—कर्जा बढ़ने का योग है। कूप, भवन, भूमि प्राप्ति का योग है। स्वास्थ्य में अचानक अशांति बनेगी। भाईयों में अनबन योग। नये स्थान में कार्य योजना योग भी है। ता. १, २, ९, १०, १८, १९, २३ अशुभ हैं। **मार्च २००७**—रक्त विकार रोग का योग है। व्यवसाय में लाभ होकर हानि भी होगी। अच्छे लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। राजनैतिक लाभ योग भी है। वाहन प्राप्ति, पशु क्रय-विक्रय योग भी है तथा मान-सम्मान भी मिलेगा। ता. १, ९, १०, १८, १९, २७, २९ अशुभ हैं।

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

४, ६, १५, २३, २४, २६ अशुभ हैं। सितम्बर २००६—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक लाभ

८, २३, २४, ३१ अशुभ रहेंगी। सितम्बर २००६— क्रोधावेश बढ़ेगा। धन लाभ होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूमि भवन का योग भी बनता है। ता. १, ९, १०, १८, १९, २०, २७, ३० अशुभ हैं। सितम्बर

राजनैतिक सम्मान भी मिलेगा।

रहेंगे। आर्थिक लाभ भी अच्छा होगा। स्त्री पक्ष से चिन्ता, लेकिन सन्तान पक्ष से सहयोग मिलेगा।

भी है तथा मान-सम्मान भी मिलेगा। ता. १, ९, १०, १८, १९, २७, २९ अशुभ हैं।

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

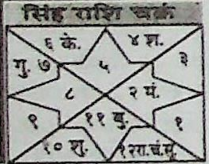

(स्वामी सूर्य)

शनि की साढ़ेसाती का योग से खर्चा तथा भूमि भवन प्राप्ति। केतु द्वितीय धन बाधा है। रा.+चं.+सू. अष्टम वाहन से सावधान रहें। मकर शुक्र की राशि पर मांगलिक कार्य करायेगा।

अप्रैल २००६—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। घरेलू झंझट बढ़ेंगे। मित्रों से मदद मिलेगी। पक्षान्त में विशेष आय होगी। वाहन प्राप्ति योग भी है। ता. २, ४, ७, २४, २५, २६ अशुभ हैं। **मई २००६**—वायु विकार बढ़ेगा। आर्थिक हानि का योग बनता है। स्त्री सुख मिलेगा। भाग्य के भरोसे काम अटकेगा। पुरुषार्थ बढ़ेगा। पुराना-विवाद में विजय योग बनेगा। वाहन से सावधान रहें। ता. ५, ६, १५, १६, २४, २५ अशुभ हैं। **जून २००६**—नेत्र विकार एवं रोगादि योग। वृथा व्यय। निजीजनों का असहयोग। नयी योजना बनेगी। सन्तान पक्ष से शुभदायक योग बनेगा। शुभ यात्रा योग। मांगलिक कार्य भी। ता. १, ८, ९, १८, १९, २७, २८ अशुभ रहेंगी। **जुलाई २००६**—रक्त पित्त विकार योग। आर्थिक लाभ होगा। शत्रु कमजोर होंगे। स्त्री सुख अच्छा। कारोबार में भी लाभ होगा। नया कार्य योग बनेगा। भूमि-भवन, क्रय-विक्रय योग भी बनता है। ता. १, ६, ९, १७, १८, २७, २८ अशुभ। **अगस्त २००६**—स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। पारिवारिक कार्यों में लाभ होगा। निजी लोगों से भी अच्छा लाभ मिलेगा। अनावश्यक खर्चा तथा खुशी भी। माता-पिता का आशीर्वाद अच्छा मिलेगा। ता. ४, ५, १४, १५, २३, २४, २६ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक लाभ अच्छा रहेगा। खर्च भी अचानक होगा। दोस्तों से कुछ अनबन होगी। स्त्री पक्ष से चिन्ता रहेगी। नवीन कार्यों से भी लाभ मिलेगा। ता. १, २, १०, ११, १२, १९, २०, २१, २८, २९ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—स्वास्थ्य में कुछ गिरावट। विदेशी कारोबार में लाभ योग। राजनैतिक कार्यों से भी लाभ होगा। अचानक लाभ प्राप्ति भी होगी। यात्रा एवं धार्मिक कार्यों में खर्चा होगा। ता. २, ४, ९, १८, २५, २६ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—मित्रों से विवाद योग। योजनात्मक कार्य में विफलता। मित्र वर्ग मदद करेंगे। राजभय योग बनेगा। सम्पत्ति विवाद बढ़ेगा। सावधान। स्त्री को अचानक रोगादि भय। शुक्र के कारण गुप्त रोग। ता. २, ४, ५, १३, २४ अशुभ। **दिसम्बर २००६**—उदर विकार। आर्थिक लाभ। भ्रातृ सुख योग बनता है। दोस्तों से विवाद योग। शुभ समाचार प्राप्ति का अवसर बनेगा। नवीन सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। मांगलिक कार्य होगा। ता. १, ३, ५, ९, २१, २२ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**—शिरशूल योग बनेगा। भाईयों में विवाद, रोजगार प्राप्ति का अवसर। आय से अधिक व्यय योग बनेगा। शत्रु पक्ष से सावधान। यात्रा का लाभ मिलेगा। ता. ३, ४, ९, १५, १६, २४, २५, २६ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—विवाद से बचें। धन लाभ योग बनता है। व्यापार अच्छा चलेगा। विविध कार्यों में लाभ भी होगा। मित्र व बंधु वर्ग अच्छी मदद भी करेंगे। मांगलिक कार्य भी। ता. ३, ४, ११, १३, २१, २२ अशुभ। **मार्च २००७**—क्रोधावेश बढ़ेगा। आर्थिक लाभ का योग एवं धंधा। घरेलू झंझट बढ़ सकते हैं। परिवार में वृद्धजन का स्वास्थ्य गिरेगा। यात्रा योग भी। वाहन प्राप्ति का योग बनता है। रोजगार बढ़ेगा। ता. २, ३, ४, ११, १२, २०, २१, २२, २९ अशुभ कारक हैं।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

(स्वामी बुध)

ग्रहयोग से केतु लग्न में होना रोगोपद्रव योग करेगा। शनि भूमि भवन का योग बनायेगा। शुक्र विवाह सन्तान तथा मांगलिक कार्य का योग बनायेगा। धार्मिक आयोजन भी अच्छे करायेंगे।

अप्रैल २००६—उदर विकार, अर्थ हानि, बंधु सुख, सन्तान पक्ष से चिन्ता। स्त्री सुख अच्छा। कारोबार कमजोर। व्यवसायोन्मुखी योजना से आर्थिक लाभ होगा। मित्र वर्ग मदद करेंगे। ता. २, ९, ११, १९, २०, २१, २९, ३० अशुभ हैं। **मई २००६**—सन्तान पक्ष से खुशी, भाग्य साथ नहीं देगा। मासान्त में हानि होगी। स्त्री के रोगादि प्रभाव भी होगा। सम्बंध योग बनेगा। नया कार्य योग बनेगा। वाहन से सावधान रहना चाहिए। ता. ४, ५, १२, १३, २२, २३ अशुभ हैं। **जून २००६**—रक्त पित्त होकर परेशानी बढ़ेगी। सन्तान पक्ष से खुशी होगी। भाग्योदय में बाधा योग। मासान्त में हानि होगी। वाहन प्राप्ति योग बनेगा। भूमि-भवन का योग बनेगा। ता. ४, १०, १३, २३, २४ अशुभ। यात्रा योग है। **जुलाई २००६**—आर्थिक हानि का योग। लोगों से प्रेम बढ़ेगा। पशु क्रय-विक्रय से लाभ होगा। शिरशूल योग। ता. २, ३, ११, १२, १४, २०, २१, २९ अशुभ। **अगस्त २००६**—सम्पत्ति विवाद का योग। शत्रु बढ़ेंगे। कारोबार रद्दोबदल का योग भी बनेगा। स्त्री सुख सम्मान बढ़ेगा। मासान्त में आय अच्छी। वाहन सुख सुविधा का योग बनेगा। ता. ६, ७, ८, २३, २४, ३१ अशुभ रहेंगी। **सितम्बर २००६**— क्रोधावेश बढ़ेगा। धन लाभ होगा। बंधु कष्ट, गुप्त चिन्ता, यात्रा योग बनेगा। साझा कार्यक्रम होगा। नया धन्धे का योग बनेगा। मांगलिक खर्चा भी होगा। ता. २, ३, ४, १२, १३, १४, २२, २३ अशुभ। **अक्टूबर २००६**—उत्साह बढ़ेगा। बंधु कष्ट योग बनेगा। मासान्त में विशेष हानि का योग बनता है। पारिवारिक कार्यों में मान-सम्मान प्राप्ति का योग बनेगा। धार्मिक यात्रा होगी। ता. १, २, १०, ११, १८, १९, २० अशुभ। **नवम्बर २००६**—कफ वायु विकार बनेगा। वृथा खर्चा होगा। भाईयों में रोगादि योग से खर्चा बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से लाभ होगा। नवीन सम्पर्क सूत्र बनेगा। पशु क्रय-विक्रय में लाभ। ता. १, २, ५, २०, २२ अशुभ। **दिसम्बर २००६**—उदर विकार बढ़ेगा। धन लाभ होकर हानि भी। कारोबार अच्छा चलेगा। मित्र वर्ग का सहयोग मिलेगा। भूमि-भवन विवाद हल होगा। धार्मिक यात्रा योग। ता. ३, ४, ५, १२, १३, १४, २९, ३१ अशुभ। **जनवरी २००७**—पत्नी को कष्ट। सुखद यात्रा योग भी है। माह के अन्त में छोड़े गये परिवार से विवाद योग बनेगा। मेला में चोरी का योग बनेगा। वाहन से सावधान रहें। ता. ६, ७, ९, १२, १४, २१, २२ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नया कार्य भी होगा। मांगलिक कार्य का योग बनता है। नवीन वस्त्र प्राप्ति का योग भी है। विकास की गति बढ़ेगी। कुछ सज्जन मदद करेंगे। यात्रा भी होगी। ता. १, ७, ९, १०, ११, १६, १७, २० अशुभ। **मार्च २००७**—गैस पीड़ा रोग, नेत्र रोग भी। पशुओं से भय होगा। भूमि भवन का कार्य होगा। उत्साह बढ़ेगा। मासान्त में शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। अचानक यात्रा योग बनेगा। ता. २, ३, ९, १०, १२, १९ अशुभ हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

तुला राशि चक्रं

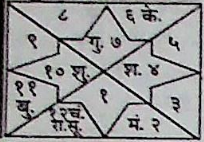

(स्वामी शुक्र)

इस वर्ष भागदौड़ ज्यादा रहेगी। मांगलिक कार्य भी होगा। लग्न का गुरु शुक्र की राशि पर होना शत्रु पक्ष का सामना करायेगा। अष्टम मंगल अग्नि भय। दुर्घटना कारक होगा।

अप्रैल २००६—उदर विकार योग। अर्थ लाभ, शुभ समाचार प्राप्ति। स्थान परिवर्तन योग बनेगा। कारोबार में वृद्धि योग बनता है। पारिवारिक कलह बढ़ेगा। यात्रा योग अच्छा बनेगा। ता. २, ९, ११, १९, २०, २१, २९ अशुभ हैं। **मई २००६**—कफ वायु एवं शिरथूल योग बनेगा। स्त्री पक्ष से परेशानी बढ़ेगी। कार्य कलापों में अभिवृद्धि योग बनेगा। नया कार्य भी। मासान्त में शुभ सूचना प्राप्ति योग है। ता. १०, ११, १९, २० व ३० अशुभ हैं। **जून २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक लाभ बनेगा। कुछ दुर्जन कष्ट देंगे। भाईयों का सुख बढ़ेगा। अचानक धन लाभ या लॉटरी योग भी बनता है। ता. ४, ५, १३, २३ व २४ अशुभ हैं। वाहन से सावधान। **जुलाई २००६**—इस माह में धन लाभ होगा। परिवार में अनबन हो सकती है। व्यक्तिगत सम्मान बढ़ेगा। स्त्री को कष्ट योग। कारोबार में परिवर्तन योग भी बनता है। जीवन में नया मोड़ आयेगा। ता. २, ४, २३, २४ अशुभ। **अगस्त २००६**—समस्याओं का समाधान होगा। कारोबार में तरक्की होगी। जीवन साथी का विशेष योगदान रहेगा। धार्मिक आयोजन भी होंगे। कृषि आय से अच्छा लाभ मिलेगा। ता. २, ३, ११, १३, २१, २२, २९, ३० अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**— स्वास्थ्य लाभ मिलेगा। भाईयों से सुख योग। यात्रा में कष्ट योग। मासान्त में विशेष लाभ होगा। नया कार्य भी होगा। सन्तान लाभ तथा पदोन्नति योग भी है। ता. १, २, १०, ११, २१, २२ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—स्वास्थ्य बिगड़ेगा। मित्र वर्ग का कार्यों में भी विशेष सहयोग मिलेगा। व्यापार जन्य सफल वार्ता, भूमि भवन प्राप्ति योग भी बनता है। अग्नि से सावधान। ता. ८, ९, २३, २५ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—वृथा विवाद से बचें। मन अशान्त रहेगा। कार्य शुभ होगा। भूमि भवन प्राप्ति योग भी है। रोजगार प्राप्ति का योग बनता है। पशुओं से सावधान रहें। कोर्ट में विजय योग बनता है। ता. ३, ४, १९, २०, २३ अशुभ हैं। **दिसम्बर २००६**—स्वास्थ्य लाभ अच्छा। आर्थिक हानि। अच्छे लोगों से सम्पर्क बनेगा। स्त्री पक्ष से चिन्ता बढ़ेगी। सन्तान प्राप्ति योग। अधिकांश यात्रा व्यर्थ जायेगी। ता. ६, ७, १४, १६, १७, २३, २४, २५ अशुभ। **जनवरी २००७**—मन चिन्तित रहेगा। सम्पत्ति विवाद बढ़ेगा। सन्तान पक्ष से अच्छा लाभ। आय से व्यय अधिक। रोजगार के योग। मातृ पक्ष से चिन्ता बढ़ेगी। शत्रु प्रबल भी। ता. २, ७, ९, १९, २२, २३ अशुभ। **फरवरी २००७**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सम्बंध विवाह योग भी, योग्य व्यक्तियों की शादी भी। कृषि चीजों का क्रय करें लाभ होगा। यात्रा में काफी खर्चा का योग बनता है। ता. ३, ७, २४, २७, २८, २९ अशुभ। **मार्च २००७**—लाभप्रद योजना बनेगी। मित्र मदद करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य होगा। भूमि भवन एवं वाहन प्राप्ति का योग भी बनता है। मित्र वर्ग अच्छी मदद करेंगे। ता. २, ४, ९, १३, २०, २२, २७ अशुभ।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

वृश्चिक राशि चक्रं

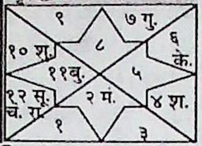

(स्वामी मंगल)

इस वर्ष में बुध शनि की राशि पर परिवार भवन में बैठकर पदोन्नति दिलायेगा। पंचम में चं.+रा.+सू. होना सन्तान पक्ष का भाग्योदय होगा। मंगल मांगलिक कार्यों का तथा स्त्री पक्ष से विशेष सम्पर्क एवं लाभ मिलेगा। गुरु खर्चा अधिक करायेगा।

अप्रैल २००६—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नया कार्य की योजना से साथ होगा। अकस्मात् अच्छी आय भी होगी। कोर्ट के विवाद में विजय योग बनेगा। शारीरिक योग अच्छा रहेगा। परिवार में नया सदस्य आगमन। ता. ३, ६, २४, २६ अशुभ। **मई २००६**—मानसिक अशांति योग बनेगा। कारोबार अच्छा रहेगा। मित्र अच्छी मदद करेंगे। अनावश्यक खर्चा, लेकिन राजनैतिक लाभ भी मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सोचा हुआ कार्य बनेगा। ता. ४, ५, १२, १३, २१, २२, २३ अशुभ रहेंगी। **जून २००६**— रक्त विकार योग। अर्थ लाभ होगा। वृथा कलह न करें। सम्पत्ति विवाद में हानि। गुप्त चिन्ता बढ़ेगी। स्थानान्तरण योग भी है। स्त्री पक्ष का विशेष सहयोग मिलेगा। ता. १, ८, ९, १८, १९, २७ अशुभ हैं। **जुलाई २००६**—स्वास्थ्य लाभ अच्छा रहेगा। जायदाद बढ़ेगी। शत्रु पक्ष प्रबल होंगे। स्त्री पक्ष से भी कुछ अनबन रहेगी। दक्षिणी यात्रा योग भी। राजनैतिक मंच का लाभ प्राप्ति योग है। ता. ३, ७, १०, १६, १७, २९ अशुभ हैं। **अगस्त २००६**—आर्थिक हानि का योग बनता है। वाहन से सावधान रहें। राजनैतिक पक्ष भी प्रबल होगा। ता. २, ८, ११, १२, १५, २१, २२, २५ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति सुधरेगी। कष्ट योग में गिरने का भय। सम्मान प्राप्ति योग भी बनेगा। रिश्तेदारों में अनबन योग। सन्तान को कष्ट योग बनेगा। ता. ८, ९, २३, २४, २५ अशुभ हैं। नया कार्य भी होगा। **अक्टूबर २००६**—मन चिन्तित रहेगा। धन लाभ होगा। भाईयों को कष्ट होगा। कार्य योजना सफल होगी। स्त्री पक्ष से चिन्ता। कारोबार अच्छा चलेगा। स्थान परिवर्तन तथा भूमि भवन का योग है। ता. २, ९, ११, २३, २४ अशुभ। सावधान। **नवम्बर २००६**—आर्थिक हानि का योग। निजी जनों का अच्छा सहयोग। यात्रा में कष्ट योग। कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। अधिक लाभ तथा रोजगार लाभ योग बनता है। वाहन प्राप्ति योग भी है। ता. १, २, ३, ११, १२, १७, १८, २६ अशुभ हैं। **दिसम्बर २००६**—इस माह में सम्पत्ति विवाद तथा कोर्ट-कचहरी की बात बनेगी। मानसिक विकार भी बढ़ेगा। पत्नी को रोग योग भी। मांगलिक कार्य भी होंगे। नया कारोबार का योग। ता. ८, ९, १६, १७, १८, २७ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**—कफ वायु विकार योग बनेगा। आर्थिक लाभ, पदोन्नति योग, भाईयों से सुख, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक होगा। धार्मिक कार्यों में राशि खर्च का योग भी है। ता. २, ४, ७, ९, १४, २३, २४ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—सन्तान पक्ष से चिन्ता। कार्यक्रमों में अचानक परिवर्तन। स्त्री सुख योग। विवाद में विजय। कारोबार बढ़ेगा। मित्र वर्ग सहयोग देंगे। पूर्वी यात्रा का योग बनता है। ता. ७, ८, १६, १७, २६, २७ अशुभ रहेंगी। **मार्च २००७**—उदर पीड़ा योग, अर्थ लाभ योग, बन्धुओं को कष्ट, मित्र वर्ग मदद करेंगे। सन्तान प्राप्ति व संतान सुख मिलेगा। कार्य परिवर्तन पर चिन्तन। राज पक्ष से लाभ होगा। ता. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, २९ अशुभ हैं।

आय से व्यय अधिक तथा मान-सम्मान प्राप्ति

व्यय अधिक होगा। भूमि भवन का लाभ। वाहन

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

धनु राशि चक्रं

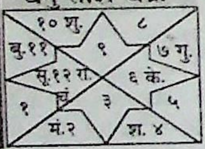

(स्वामी गुरु)

इस वर्ष शनि का ढैया काफी कष्टदायी रहेगा। षष्ठ में मंगल शत्रु विजयी योग भी बनायेगा। लेकिन रक्त चाप योग का कारक भी होगा। सू.+चं.+रा. चौथा पारिवारिक मनमुटाव करेंगे। केतु व्यवसाय में बाधक है। **अप्रैल २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। लाभ होकर अचानक हानि भी। निजी जनों से सम्पर्क बढ़ेगा। स्त्री को कष्ट योग बनता है। पारिवारिक बाधाएं आयेंगी। ता. ३, ६, ७, १०, १७, १८, २७, २८ अशुभ रहेंगी। रोजगार प्राप्ति का योग है। **मई २००६**—रक्त पित्त विकार, सम्पत्ति लाभ, शत्रु बढ़ेंगे, यात्रा में खर्चा योग। विवाद योग-सावधान रहें। स्थानान्तरण योग भी है। आर्थिक लाभ होगा। वाहन प्राप्ति योग। ता. ५, ६, १५, १६, २४, २५, २६ अशुभ हैं। **जून २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बन्धुओं को कष्ट होगा। सन्तान को कष्ट होगा। चोट से बचें, पशुओं से भय रहेगा। अनावश्यक विवाद भी बनेगा। रोजगार प्राप्ति योग है। ता. २, ३, १०, ११, १२, १८, १९, २७ अशुभ हैं। **जुलाई २००६**— वायु विकार बढ़ेगा। नेत्र कष्ट योग। निजी लोगों से मदद बनेगी। सन्तान पक्ष से लाभ। रोजगार प्राप्ति का अच्छा योग बनेगा। नवीन कार्य के प्रति उत्साह बढ़ेगा। ता. ३, ७, ८, ९, १७, १८, २९, ३०, ३१ अशुभ हैं। **अगस्त २००६**— उदर पीड़ा योग, धन लाभ, भूमि लाभ, विदेशी यात्रा योग भी बनेगा। शत्रु पक्ष कमजोर होगा। आय से व्यय अधिक तथा मान-सम्मान प्राप्ति का अवसर बनता है। ता. ४, ५, १४, १५, २३, २४ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—वायु रोग, निजीजनों का सहयोग, नई योजनाओं से लाभ होगा। स्त्री सुख की प्राप्ति होगी। कारोबार में लाभ होगा। मांगलिक कार्य योग बनता है। पदोन्नति का योग भी है। ता. २, ३, ४, १२, १३, १४, २०, २१ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—वायु विकार बढ़ेगा। अर्थ-हानि, चोरी का भय। राजनैतिक लाभ की प्राप्ति। निजीजनों का सहयोग। सन्तान पक्ष को रोगादि भय। कृषक वर्ग को अच्छा लभ। आयु अच्छी होगी। ता. ९, १०, ११, १२, २५, २७, २९ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—सम्पत्ति विवाद का योग है। कफ वायु विकार रोग, शत्रु प्रबल। स्त्री को कष्ट, कार्यान्तरण से लाभ। भूमि भवन प्राप्ति। **दिसम्बर २००६**—आर्थिक लाभ अच्छा होगा। व्यवसाय बढ़ेगा। कुछ नये लोगों से व्यवसायिक सम्पर्क व मित्रता बढ़ेगी। वाहन से सावधान रहें। पशु क्रय का योग। मांगलिक कार्य भी होगा। ता. १, २, ३, १०, ११, १२, २८ अशुभ हैं। **जनवरी २००७**— स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, भाईयों से सुख प्राप्ति, अच्छे लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से लाभ होगा, कारोबार में परिवर्तन योग। भवन निर्माण का योग बनता है। ता. ७, ८, १५, १६, २४, २५, २६ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**— उदर विकार योग, भाइयों में विवाद, मित्र वर्ग से सहयोग प्राप्ति। स्थान परिवर्तन, नया व्यवसाय का योग बनता है। कुछ नवीन स्थानों की यात्रा भी होगी। ता. ३, ४, ११, १३, २१ व २२ अशुभ। सावधान। **मार्च २००७**— स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। निजी लोगों से अनबन भी होगी। विदेशी सम्पर्क बढ़ेगा। पारिवारिक कार्यों में कीर्ति का योग है। नवीन मित्रों से राजनैतिक लाभ होगा। ता. ४, ५, ६, १३, १४, २३, २४ अशुभ रहेंगी। सावधान रहें।

मकर-भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

मकर राशि चक्रं

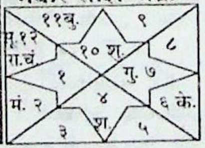

(स्वामी शनि)

लग्न में शुक्र होना मांगलिक कार्य ज्यादा करायेगा तथा प्रेम सम्बंध भी अधिक होंगे। सामाजिक दायित्व बढ़ेगा। शनि सातवां कर्क राशि में पत्नी पक्ष से चिंतित तथा विवाद भी होगा। गुरु व्यवस्था में परिवर्तन करायेगा। मंगल सन्तान लाभ तथा रोजगार लाभ भी देगा। **अप्रैल २००६**—उदर व नेत्र पीड़ा का योग है। अच्छे लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। सन्तान सुख का योग बनता है। मित्र वर्ग अच्छी मदद करेंगे। राजकीय कार्यों में लाभ मिलेगा। अनावश्यक भाग दौड़ बढ़ेगी। राज पक्ष से मान-सम्मान भी मिलेगा। ता. ३, ४, ९, १९, २०, २९ अशुभ हैं। **मई २००६**—आर्थिक लाभ होगा। पारिवारिक कार्यों में सफलता योग है। स्त्री पक्ष से लाभ मिलेगा। माता को कष्ट होगा। पारिवारिक अभिवृद्धि का योग। रोजगार अभिवृद्धि का योग बनता है। ता. १, ७, ८, ९, १६, १७, २६, २८, २९ अशुभ हैं। **जून २००६**—कफ विकार, आर्थिक हानि, वृथा कलह से बचें। यात्रा का योग तथा कष्ट भी बनेगा। स्थान परिवर्तन का योग बनता है। बंधु सुख का योग भी। वाहन से भय है। ता. ४, ५, १३, १५, १६, १७, २५, २६ अशुभ हैं। **जुलाई २००६**—स्वास्थ्य में गड़बड़ योग। आर्थिक लाभ। निजीजनों का सहयोग मिलेगा। नयी योजनाओं का लाभ बनेगा। स्त्री को कष्ट योग बनेगा। पारिवारिक कार्यों में सफलता मिलेगी। ता. ३, ४, १०, १२, २०, २१, २९, ३० अशुभ। **अगस्त २००६**—कफ विकार, धन लाभ, निजीजनों से लाभ, विरोधी कमजोर। आय से व्यय अधिक होगा। भूमि भवन का लाभ। वाहन से सावधान रहें। राजनैतिक लाभ मिलेगा। ता. ६, ७, ८, १७, १८, २५, २६ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—पित्त वायु विकार, अर्थ हानि योग। उत्साह बढ़ेगा। अच्छे लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। असफल योजना की क्रियान्विति। स्त्री पक्ष को शुभ रोजगार प्राप्ति का योग बनेगा। यात्रा योग। ता. २, ३, ४, १३, १४, २१, २२ अशुभ हैं। **अक्टूबर २००६**—स्वास्थ्य में गड़बड़ होगी। निजी लोगों से मदद मिलेगी। मित्र वर्ग से कष्ट रहेगा। पारिवारिक दायित्व बढ़ेगा। कोर्ट कचहरी के मामला में धन खर्चा होगा। यात्रा में कष्ट। ता. १०, ११, १३, २१, २३, २६ अशुभ। **नवम्बर २००६**—आर्थिक लाभ। रोजगार प्राप्ति का अवसर मिलेगा। कारोबार बढ़ेगा। विविध कार्यों की योजना बनेगी। गुरु तुल्यमान बढ़ेगा। सामाजिक दायित्व भी बढ़ेंगे। ता. ८, ९, १०, २३, २४, २५ अशुभ। **दिसम्बर २००६**— स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। मांगलिक कार्य होगा। नया सम्पर्क बढ़ेगा। अर्थ लाभ भी होगा। कारोबार का प्रचार बढ़ेगा। राज पक्ष से भी परिलाभ मिलेगा। यात्रा योग। ता. ३, ४, ५, १२, १४, २६ अशुभ। **जनवरी २००७**—उदर विकार बढ़ेगा। धन लाभ योग बनता है। घरेलू झंझट बढ़ेगा। अशुभ समाचार प्राप्ति योग भी है। मासान्त में लाभ भी। राजकीय सेवा का योग बनेगा। ता. २, ४, ५, १५, १६, २४, २५, २६ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—वृथा व्यय होगा। भाईयों से मदद मिलेगी। सन्तति सुख का योग भी है। शत्रु कमजोर होंगे। कारोबार अच्छा रहेगा। सामाजिक दायित्व बढ़ेगा। सावधान। ता. ५, ६, १३, १४, १५, २१, २२ अशुभ हैं। **मार्च २००७**—मानसिक अशांति रहेगी। सामाजिक आक्षेप भी लगेंगे। नवीन कार्यों की योजना बनेगी। रोजगार प्राप्ति का योग भी है। धार्मिक कार्यों का आयोजन भी होगा। ता. ४, ५, ६, १३, १४, २३, २४ अशुभ हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

कुंभ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

कुंभ राशि चक्रं

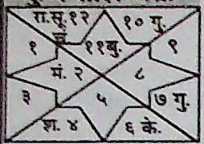

(स्वामी शनि)

लग्न में बुध रोजगार सेवा प्राप्ति का योग करेगा। १२वां शुक्र मांगलिक खर्चा करायेगा। प्रेमापराध भी करायेगा। चौथा मंगल माता को कष्ट तथा पिता को हानिदायक या विवाद युक्त करेगा। शनि शत्रु बढ़ायेगा। केतु वाहन से भय। गुरु चमत्कारिक लाभ देगा। **अप्रैल २००६**—वायु विकार, कर्जा सिर पर चढ़े। निजी लोगों से अनबन होगी। जायदाद सम्बंधी विवाद योग। गुप्त चिन्ता। अपना नया कार्य इस माह में नहीं करें। विवाह योग, सन्तान लाभ। अचानक अर्थ प्राप्ति होगी। मित्र वर्ग मदद करेंगे। ता. २, ४, ९, १८, २४, २६, २७ अशुभ। **मई २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। कारोबार अच्छा चलेगा। चोट का योग। सम्पत्ति विवाद भी। आर्थिक स्थिति कमजोर। दक्षिणी यात्रा योग, पत्नी को रोग योग। पशुओं से सावधान। ता. २, ३, १०, ११, १९, २०, २९, ३० अशुभ हैं। **जून २००६**—उदर विकार, घरेलू झंझट बढ़ेंगे। नयी योजना से लाभ। मासान्त में कारोबार में लाभ होगा। पारिवारिक कार्यों में सफलता। मित्र वर्ग अच्छी मदद करेंगे। अनावश्यक यात्रा होगी। ता. ४, ५, १३, २५, २६ अशुभ। **जुलाई २००६**—अच्छे लोगों से सम्पर्क होगा। स्त्री वर्ग से सुख योग। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक लाभ माह के अन्त में अच्छा होगा। रोजगार प्राप्ति का योग बनता है। मित्र वर्ग मदद करेंगे। ता. ३, ४, ११, १४, २३, २४ अशुभ। **अगस्त २००६**— निजी लोगों से परेशानी, स्त्री पक्ष से मदद मिलेगी। पारिवारिक कार्यों में वर्चस्व बढ़ेगा। पूर्वी देश-प्रदेशों की यात्रा योग। कोर्ट-कचहरी मामला में विजय योग है। ता. १, ९, १०, १८, १९, २०, २८ अशुभ हैं। **सितम्बर २००६**—स्वास्थ्य में गड़बड़, भाईयों से सुख, सम्पत्ति प्राप्ति योग। स्त्री सुख योग। मांगलिक कार्य योग बनेगा। अचानक पश्चिमी यात्रा भी होगी। राजनैतिक लाभ मिलेगा। मित्र वर्ग मदद करेंगे। ता. ५, ६, ७, १५, २३, २४, २५ अशुभ। **अक्टूबर २००६**— स्वास्थ्य अच्छा। भाईयों से सम्पर्क बढ़ेगा। आय-व्यय बराबर। माह के अन्त में आर्थिक लाभ। रोजगार प्राप्ति का योग। जन सम्पर्क बढ़ेगा। विवाद में विजय होगी। ता. १, ३, ४, १८, २७, २९, ३० अशुभ। **नवम्बर २००६**— निजी लोग साथ छोड़ेंगे। अचानक अपने कार्य में परिवर्तन योग तथा समस्याएं बढ़ेंगी। पशुओं से भी भय रहेगा। मित्र वर्ग से आर्थिक लाभ की प्राप्ति होगी। ता. ८, ९, १०, १७, १८, २६, २७, २८ अशुभ। **दिसम्बर २००६**—उदर विकार योग। कारोबार में हानि। यात्रा में कष्ट, सन्तान चिन्ता। मासान्त में कुछ लाभ। मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक दायित्व बढ़ेगा। अशुभ समाचारों की प्राप्ति योग। ता. ७, १४, २३, २५ अशुभ। **जनवरी २००७**—क्रोधावेश बढ़ेगा। आय अच्छी होगी। रिश्तेदारों में विवाद, रचनात्मक काम बढ़ेगा। लेखन कार्य से सम्मान प्राप्ति भी होगी। पशुओं से सावधान रहें। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। ता. १०, ११, १९, २४, २९, ३० अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—मेल मिलाप बढ़ेगा। मांगलिक कार्य होगा। व्यापार में निवेश बढ़ेगा। वाहन प्राप्ति का योग भी है। राजनैतिक दायित्व भी बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से मदद मिलेगी। ता. ७, ८, १६, १७, २६, २७, २८ अशुभ हैं। **मार्च २००७**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। भाइयों से सुखयोग है। सन्तान पक्ष से कष्ट योग बनेगा। कारोबार अच्छा चलेगा। भूमि भवन प्राप्ति योग। मासान्त में अच्छा लाभ होगा। राजकीय सेवा योग तथा आर्थिक व्यय भी होगा। स्त्री को कष्ट। ता. ७, ८, १५, १६, १७, २५, २६ अशुभ हैं।

मीन-दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

मीन राशि चक्रं

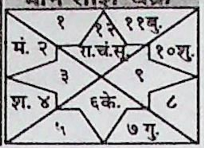

(स्वामी गुरु)

इस वर्ष ग्रहयोगानुसार लग्न में सूर्य, चन्द्र व राहु का होना रोगोपद्रव बढ़ेगा। सप्तम में केतु स्त्री पक्ष से अनबन करेगा। शनि पंचम में सन्तान हानि लेकिन आय अच्छी बढ़ायेगा। शुक्र ग्रह आठवां उदासीन बनायेगा। बुध १२वां धंधा बढ़ेगा। शुक्र ११वां सन्तान लाभ देगा। **अप्रैल २००६**— वायु विकार, धन लाभ, निजी लोगों से मदद मिलेगी। वृथा बिवाद से बचें। कारोबार विस्तार का योग है। वाहन प्राप्ति का योग बनता है। मानसिक संतुलन बनाये रखें। ता. ९, १०, १४, २४, २५, २६ अशुभ। **मई २००६**— स्वास्थ्य में गड़बड़, आर्थिक लाभ होकर एकाएक हानि। निजी जनों द्वारा विवाद योग। सन्तान पक्ष से सुख तथा शुभदायक समाचारों की प्राप्ति होगी। मित्र मदद करेंगे। ता. ४, ५, १२, १३, २२, २४ अशुभ। **जून २००६**—वैभव बढ़ेगा। फिजूल खर्चा कम होगा। मित्र वर्ग मदद करेंगे। शत्रु पक्ष निर्बल होंगे। स्त्री द्वारा रोजगार योजना की प्राप्ति होगी। आय से व्यय अधिक फिर भी मन प्रसन्न रहेगा। दक्षिणी यात्रा या धार्मिक यात्रा का योग है। ता. १, ८, ९, १८, २०, २८ अशुभ। **जुलाई २००६**—मन अशान्त रहेगा। आर्थिक तंगी, भाइयों से मदद योग। राज भय, गुप्त चिन्ता एवं गुप्त साधना योग। कार्य परिवर्तन का योग भी है। पारिवारिक वर्चस्व बढ़ेगा। स्त्री सुख ठीक। ता. ११, १२, १६, २५, २६ अशुभ। **अगस्त २००६**—माह में आर्थिक लाभ होगा। घरेलू झंझट बढ़ सकते हैं। सम्पत्ति विवाद बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से लाभ होगा। कारोबार में भी लाभ है। विदेशी यात्रा योग बनेगा। मित्र सहयोग देंगे। ता. २, ३, ११, १३, २१, २२, ३० अशुभ। **सितम्बर २००६**—सिर व नेत्र रोग योग। धन प्राप्ति होकर खर्चा होगा। निजीजनों से लाभ मिलेगा। सम्पत्ति लाभ का योग भी है। स्त्री पक्ष से चिंता, वाहन एवं भूमि भवन प्राप्ति योग भी बनता है। ता. ८, ९, १७, १८, २६ अशुभ। **अक्टूबर २००६**—रक्त-पित्त विकार, राज भय, सामाजिक विरोध, स्त्री सुख, कार्यान्तिरण एवं निजीजनों का अच्छा योगदान रहेगा। मान-सम्मान प्राप्ति भी होगी। अचानक आर्थिक लाभ का योग भी है। ता. ३, ४, ९, १३, १४, २३, २४ अशुभ हैं। **नवम्बर २००६**—क्रोधावेश बढ़ेगा। उदर विकार योग। धन हानि का योग है। सम्पत्ति लाभ है। मासान्त में आर्थिक लाभ होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। रोजगार प्राप्ति का योग भी है। ता. १, २, ३, ११, १२, १९, २०, २९, ३० अशुभ हैं। **दिसम्बर २००६**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। द्रव्य हानि, भय, मातृ कष्ट, शुभ समाचार प्राप्ति, शत्रु पक्ष, शुभ योग कार्य बनेगा। विवाहादि योग है। कार्य में अभिवृद्धि तथा निवेश योग बनेगा। ता. १, ३, ६, १६, १७, १८, २६ अशुभ। **जनवरी २००७**—कफ वायु विकार, नेत्र रोग पीड़ा, कार्य में असुविधा। स्त्री कष्ट-कारोबार में वृद्धि योग बना है। साझेदारी योग बनेगा। जन सम्पर्क बढ़ेगा। नवीन कार्य का योग है। ता. १, २, ६, १४, २२, २३, २४ अशुभ हैं। **फरवरी २००७**—स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बंधु सुख बढ़ेगा। घरेलू झंझट बनेगा। स्त्री सुख मिलेगा। नया कार्य निवेश बढ़ेगा। सामाजिक मान-सम्मान प्राप्ति होगी। मित्र वर्ग मदद करेगा। ता. १, २, ९, १०, १८, १९, २०, २७ अशुभ। **मार्च २००७**—निजी लोगों से मेल मिलाप बनेगा। पारिवारिक अभिवृद्धि। भाइयों से स्नेह बढ़ेगा। क्रोध बढ़ेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। निजी जन सम्मान देंगे। मित्र वर्ग सहयोग देंगे। ता. १, ९, १०, १८, २७, २८, ३१ अशुभ हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
साढ़े पांच बजे (प्रातः ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पक्ष से मदद मिलेगी। पारिवारिक कार्यों में वर्चस्व बढ़ेगा। पूर्वी देश-प्रदेशों की यात्रा योग। कोर्ट-

तथा आर्थिक व्यय भी होगा। स्त्री को कष्ट। ता. ७, ८, १५, १६, १७, २५, २६ अशुभ हैं।

लाभ होगा। घरेलू झंझट बढ़ सकते हैं। सम्पत्ति विवाद बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से लाभ होगा। कारोबार

निजी जन सम्मान देंगे। मित्र वर्ग सहयोग देंगे। ता. १, ९, १०, १८, २७, २८, ३१ अशुभ हैं।

साढ़े पांच बजे (प्रात: ५ बजकर ३० मिंनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रात: ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम ८ **बजकर** ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का ग्रह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट** के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं- यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अत: ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब आपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्त राल १५ घंटे १५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति=३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अत: १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट** ३-२९-१४-४३ बना। इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अत: उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अत: क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)- (१-४७)=११-१२-५६-३५ अत: **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५ आया।**

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (◆ को ¼) (★ को ½) (● को ¾) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१◆	०।०२★	०।०५	०।०७★	०।१०	०।१२★	०।१५	०।१७★	०।२०	०।२२★	०।२५	०।२७★	०।३०
२	०।०२★	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३●	०।०७★	०।१५	०।२२★	०।३०	०।३७★	०।४५	०।५२★	१।००	१।०७★	१।१५	१।२२★	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६◆	०।१२★	०।२५	०।३७★	०।५०	१।०२★	१।१५	१।२७★	१।४०	१।५२★	२।०५	२।१७★	२।३०
६	०।०७★	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८●	०।१७★	०।३५	०।५२★	१।१०	१।२७★	१।४५	२।०२★	२।२०	२।३७★	२।५५	३।१२★	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११◆	०।२२★	०।४५	१।०७★	१।३०	१।५२★	२।१५	२।३७★	३।००	३।२२★	३।४५	४।७★	४।३०
१०	०।१२★	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३●	०।२७★	०।५५	१।२२★	१।५०	२।१७★	२।४५	३।१२★	३।४०	४।०७★	४।३५	५।०२★	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६◆	०।३२★	१।०५	१।३७★	२।१०	२।४२★	३।१५	३।४७★	४।२०	४।५२★	५।२५	५।५७★	६।३०
१४	०।१७★	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८●	०।३७★	१।१५	१।५२★	२।३०	३।०७★	३।४५	४।२२★	५।००	५।३७★	६।१५	६।५२★	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१◆	०।४२★	१।२५	२।०७★	२।५०	३।३२★	४।१५	४।५७★	५।४०	६।२२★	७।०५	७।४७★	८।३०
१८	०।२२★	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३●	०।४७★	१।३५	२।२२★	३।१०	३।५७★	४।४५	५।३२★	६।२०	७।०७★	७।५५	८।४२★	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६◆	०।५२★	१।४५	२।३७★	३।३०	४।२२★	५।१५	६।०७★	७।००	७।५२★	८।४५	९।३७★	१०।३०
२२	०।२७★	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८●	०।५७★	१।५५	२।५२★	३।५०	४।४७★	५।४५	६।४२★	७।४०	८।३७★	९।३५	१०।३२★	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१◆	१।०२★	२।०५	३।०७★	४।१०	५।१२★	६।१५	७।१७★	८।२०	९।२२★	१०।२५	११।२७★	१२।३०
२६	०।३२★	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३●	१।०७★	२।१५	३।२२★	४।३०	५।३७★	६।४५	७।५२★	९।००	१०।०७★	११।१५	१२।२२★	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६◆	१।१२★	२।२५	३।३७★	४।५०	६।०२★	७।१५	८।२७★	९।४०	१०।५२★	१२।०५	१३।१७★	१४।३०
३०	०।३७★	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	८।४५	१०।००	११।१५	१२।३०	१३।४५	१५।००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८●	१।१७★	२।३५	३।५२★	५।१०	६।२७★	७।४५	९।०२★	१०।२०	११।३७★	१२।५५	१४।१२★	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१◆	१।२२★	२।४५	४।०७★	५।३०	६।५२★	८।१५	९।३७★	११।००	१२।२२★	१३।४५	१५।०७★	१६।३०
३४	०।४२★	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३●	१।२७★	२।५५	४।२२★	५।५०	७।१७★	८।४५	१०।१२★	११।४०	१३।०७★	१४।३५	१६।०२★	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६◆	१।३२★	३।०५	४।३७★	६।१०	७।४२★	९।१५	१०।४७★	१२।२०	१३।५२★	१५।२५	१६।५७★	१८।३०
३८	०।४७★	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८●	१।३७★	३।१५	४।५२★	६।३०	८।०७★	९।४५	११।२२★	१३।००	१४।३७★	१६।१५	१७।५२★	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१◆	१।४२★	३।२५	५।०७★	६।५०	८।३२★	१०।१५	११।५७★	१३।४०	१५।२२★	१७।०५	१८।४७★	२०।३०
४२	०।५२★	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३●	१।४७★	३।३५	५।२२★	७।१०	८।५७★	१०।४५	१२।३२★	१४।२०	१६।०७★	१७।५५	१९।४२★	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६◆	१।५२★	३।४५	५।३७★	७।३०	९।२२★	११।१५	१३।०७★	१५।००	१६।५२★	१८।४५	२०।३७★	२२।३०
४६	०।५७★	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८●	१।५७★	३।५५	५।५२★	७।५०	९।४७★	११।४५	१३।४२★	१५।४०	१७।३७★	१९।३५	२१।३२★	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१◆	२।०२★	४।०५	६।०७★	८।१०	१०।१२★	१२।१५	१४।१७★	१६।२०	१८।२२★	२०।२५	२२।२७★	२४।३०
५०	१।०२★	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३●	२।०७★	४।१५	६।२२★	८।३०	१०।३७★	१२।४५	१४।५२★	१७।००	१९।०७★	२१।१५	२३।२२★	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६◆	२।१२★	४।२५	६।३७★	८।५०	११।०२★	१३।१५	१५।२७★	१७।४०	१९।५२★	२२।०५	२४।१७★	२६।३०
५४	१।०७★	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८●	२।१७★	४।३५	६।५२★	९।१०	११।२७★	१३।४५	१६।०२★	१८।२०	२०।३७★	२२।५५	२५।१२★	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११◆	२।२२★	४।४५	७।०७★	९।३०	११।५२★	१४।१५	१६।३७★	१९।००	२१।२२★	२३।४५	२६।०७★	२८।३०
५८	१।१२★	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३●	२।२७★	४।५५	७।२२★	९।५०	१२।१७★	१४।४५	१७।१२★	१९।४०	२२।०७★	२४।३५	२७।०२★	२९।३०
६०	१।१५	२।३०	५।००	७।३०	१०।००	१२।३०	१५।००	१७।३०	२०।००	२२।३०	२५।००	२७।३०	३०।००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक ग्रह—स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५।३० बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं.टा. से अन्तर +३ घं. ३० मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः ९ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

मार्च सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५६' ।३७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
३०	११ १५ १२ १८	११ २३ ०८ ५५	०१ २७ २८ २१	१० २० ०७ ५२	०६ २३ ५६ ३४	०९ २८ ४५ ३६	०३ १० २८ १४	११ १० २३ ३०	१० १८ २२ ०८	०९ २५ ०६ ५६	०८ ०२ ४८ ३९	३०
३१	११ १६ ११ ३६	०० ०७ ५० ४६	०१ २८ ०२ ११	१० २० ३३ ३९	०६ २३ ५१ ५८	०९ २९ ४६ ४४	०३ १० २७ ३४	११ १० २० २०	१० १८ २५ १७	०९ २५ ०८ ३२	०८ ०२ ४८ ३७	३१
अप्रैल सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५६' ।३७"												
१	११ १७ १० ५२	०० २२ ११ ५२	०१ २८ ३६ ०६	१० २१ ०३ ५५	०६ २३ ४७ १२	१० ०० ४८ १०	०३ १० २७ ०१	११ १० १७ ०९	१० १८ २८ २५	०९ २५ १० ०७	०८ ०२ ४८ ३३	१
२	११ १८ १० ०६	०१ ०६ ०८ ०९	०१ २९ १० ०५	१० २१ ३८ २७	०६ २३ ४२ १८	१० ०१ ४९ ५५	०३ १० २६ ३४	११ १० १३ ५८	१० १८ ३१ ३१	०९ २५ ११ ४१	०८ ०२ ४८ २७	२
३	११ १९ ०९ १८	०१ १९ ३७ ५९	०१ २९ ४४ ०७	१० २२ १७ ०१	०६ २३ ३७ १४	१० ०२ ५१ ५७	०३ १० २६ १४	११ १० १० ४७	१० १८ ३४ ३६	०९ २५ १३ १३	०८ ०२ ४८ १९	३
४	११ २० ०८ २७	०२ ०२ ४२ ०५	०२ ०० १८ १२	१० २२ ५९ २४	०६ २३ ३२ ०२	१० ०३ ५४ १७	०३ १० २६ ००	११ १० ०७ ३६	१० १८ ३७ ४०	०९ २५ १४ ४३	०८ ०२ ४८ ०९	४
५	११ २१ ०७ ३४	०२ १५ २२ ५४	०२ ०० ५२ २१	१० २३ ४५ २३	०६ २३ २६ ४१	१० ०४ ५६ ५२	०३ १० २५ ५३	११ १० ०४ २६	१० १८ ४० ४२	०९ २५ १६ १२	०८ ०२ ४७ ५८	५
६	११ २२ ०६ ३८	०२ २७ ४४ १०	०२ ०१ २६ ३३	१० २४ ३४ ४७	०६ २३ २१ १२	१० ०५ ५९ ४४	०३ १० २५ ५२मा.	११ १० ०१ १५	१० १८ ४३ ४३	०९ २५ १७ ३९	०८ ०२ ४७ ४४	६
७	११ २३ ०५ ४१	०३ ०९ ५० १६	०२ ०२ ०० ४७	१० २५ २७ २६	०६ २३ १५ ३५	१० ०७ ०२ ५१	०३ १० २५ ५८	११ ०९ ५८ ०४	१० १८ ४६ ४३	०९ २५ १९ ०५	०८ ०२ ४७ २९	७
८	११ २४ ०४ ४१	०३ २१ ४५ ५३	०२ ०२ ३५ ०५	१० २६ २३ ०८	०६ २३ ०९ ५०	१० ०८ ०६ १३	०३ १० २६ ११	११ ०९ ५४ ५३	१० १८ ४९ ४१	०९ २५ २० २९	०८ ०२ ४७ १२	८
९	११ २५ ०३ ३८	०४ ०३ ३५ ३२	०२ ०३ ०९ २६	१० २७ २१ ४५	०६ २३ ०३ ५७	१० ०९ ०९ ५०	०३ १० २६ ३१	११ ०९ ५१ ४३	१० १८ ५२ ३८	०९ २५ २२ ५१	०८ ०२ ४६ ५२	९
१०	११ २६ ०२ ३४	०४ १५ २३ २४	०२ ०३ ४३ ५०	१० २८ २३ ०९	०६ २२ ५७ ५७	१० १० १३ ४१	०३ १० २६ ५६	११ ०९ ४८ ३२	१० १८ ५५ ३३	०९ २५ २३ १२	०८ ०२ ४६ ३१	१०
११	११ २७ ०१ २८	०४ २७ १३ १५	०२ ०४ १८ १७	१० २९ २७ १२	०६ २२ ५१ ५०	१० ११ १७ ४६	०३ १० २७ २९	११ ०९ ४५ २१	१० १८ ५८ २६	०९ २५ २४ ३१	०८ ०२ ४६ ०८	११
१२	११ २८ ०० १९	०५ ०९ ०८ १६	०२ ०४ ५२ ४६	११ ०० ३३ ४७	०६ २२ ४५ ३५	१० १२ २२ ०४	०३ १० २८ ०८	११ ०९ ४२ ११	१० १९ ०१ १८	०९ २५ २५ ४९	०८ ०२ ४५ ४४	१२
१३	११ २८ ५९ ०८	०५ २१ ११ ०७	०२ ०५ २७ १८	११ ०१ ४२ ४८	०६ २२ ३९ १४	१० १३ २६ ३६	०३ १० २८ ५३	११ ०९ ३९ ००	१० १९ ०४ ०८	०९ २५ २७ ०४	०८ ०२ ४५ १७	१३
१४	११ २९ ५७ ५५	०६ ०३ २३ ४९	०२ ०६ ०१ ५२	११ ०२ ५४ ०८	०६ २२ ३२ ४६	१० १४ ३१ १९	०३ १० २९ ४५	११ ०९ ३५ ४९	१० १९ ०६ ५६	०९ २५ २८ १८	०८ ०२ ४४ ४९	१४
१५	०० ०० ५६ ४०	०६ १५ ४७ ५५	०२ ०६ ३६ २९	११ ०४ ०७ ४४	०६ २२ २६ १२	१० १५ ३६ १६	०३ १० ३० ४४	११ ०९ ३२ ३९	१० १९ ०९ ४३	०९ २५ २९ ३१	०८ ०२ ४४ १९	१५
१६	०० ०१ ५५ २३	०६ २८ २४ २५	०२ ०७ ११ ०९	११ ०५ २३ २९	०६ २२ १९ ३२	१० १६ ४१ २४	०३ १० ३१ ४८	११ ०९ २९ २८	१० १९ १२ २८	०९ २५ ३० ४१	०८ ०२ ४३ ४७	१६
१७	०० ०२ ५४ ०५	०७ ११ १४ ०६	०२ ०७ ४५ ५१	११ ०६ ४१ २१	०६ २२ १२ ४६	१० १७ ४६ ४४	०३ १० ३३ ००	११ ०९ २६ १७	१० १९ १५ ११	०९ २५ ३१ ५०	०८ ०२ ४३ १३	१७
१८	०० ०३ ५२ ४४	०७ २४ १७ ३३	०२ ०८ २० ३५	११ ०८ ०१ १५	०६ २२ ०५ ५५	१० १८ ५२ १५	०३ १० ३४ १७	११ ०९ २३ ०६	१० १९ १७ ५२	०९ २५ ३२ ५७	०८ ०२ ४२ ३७	१८
१९	०० ०४ ५१ २२	०८ ०७ ३५ १६	०२ ०८ ५५ २२	११ ०९ २३ ०९	०६ २१ ५८ ५८	१० १९ ५७ ५७	०३ १० ३५ ४१	११ ०९ १९ ५५	१० १९ २० ३२	०९ २५ ३४ ०३	०८ ०२ ४२ ००	१९
२०	०० ०५ ४९ ५९	०८ २१ ०७ ४०	०२ ०९ ३० १२	११ १० ४७ ००	०६ २१ ५१ ५७	१० २१ ०३ ४९	०३ १० ३७ १२	११ ०९ १६ ४४	१० १९ २३ १०	०९ २५ ३५ ०६	०८ ०२ ४१ २१	२०
२१	०० ०६ ४८ ३३	०९ ०४ ५४ ५४	०२ १० ०५ ०४	११ १२ १२ ४५	०६ २१ ४४ ५१	१० २२ ०९ ५२	०३ १० ३८ ४८	११ ०९ १३ ३३	१० १९ २५ ४५	०९ २५ ३६ ०८	०८ ०२ ४० ४०	२१
२२	०० ०७ ४७ ०६	०९ १८ ५६ ४२	०२ १० ३९ ५८	११ १३ ४० २३	०६ २१ ३७ ४०	१० २३ १६ ०५	०३ १० ४० ३१	११ ०९ १० २३	१० १९ २८ १९	०९ २५ ३७ ०८	०८ ०२ ३९ ५८	२२
२३	०० ०८ ४५ ३८	१० ०३ १२ १०	०२ ११ १४ ५५	११ १५ ०९ ५१	०६ २१ ३० २५	१० २४ २२ २८	०३ १० ४२ २१	११ ०९ ०७ १२	१० १९ ३० ५१	०९ २५ ३८ ०६	०८ ०२ ३९ १४	२३
२४	०० ०९ ४४ ०८	१० १७ ३९ १९	०२ ११ ४९ ५४	११ १६ ४१ ०९	०६ २१ २३ ०६	१० २५ २९ ००	०३ १० ४४ १६	११ ०९ ०४ ०१	१० १९ ३३ २१	०९ २५ ३९ ०३	०८ ०२ ३८ २८	२४
२५	०० १० ४२ ३६	११ ०२ १४ ५३	०२ १२ २४ ५५	११ १८ १४ १५	०६ २१ १५ ४४	१० २६ ३५ ४०	०३ १० ४६ १८	११ ०९ ०० ५१	१० १९ ३५ ४८	०९ २५ ३९ ५७	०८ ०२ ३७ ४१	२५
२६	०० ११ ४१ ०२	११ १६ ५४ ०९	०२ १२ ५९ ५९	११ १९ ४९ ०९	०६ २१ ०८ १८	१० २७ ४२ २९	०३ १० ४८ २६	११ ०८ ५७ ४०	१० १९ ३८ १४	०९ २५ ४० ५०	०८ ०२ ३६ ५२	२६
२७	०० १२ ३९ २७	०० ०१ ३१ १३	०२ १३ ३५ ०५	११ २१ २५ ५०	०६ २१ ०० ५०	१० २८ ४९ २७	०३ १० ५० ४०	११ ०८ ५४ २९	१० १९ ४० ३८	०९ २५ ४१ ४०	०८ ०२ ३६ ०१	२७
२८	०० १३ ३७ ५०	०० १५ ५९ ३७	०२ १४ १० १४	११ २३ ०४ १७	०६ २० ५३ १९	१० २९ ५६ ३२	०३ १० ५३ ०१	११ ०८ ५१ १८	१० १९ ४२ ५९	०९ २५ ४२ २९	०८ ०२ ३५ ०९	२८
२९	०० १४ ३६ ११	०१ ०० १३ १३	०२ १४ ४५ २५	११ २४ ४४ ३२	०६ २० ४५ ४६	११ ०१ ०३ ४५	०३ १० ५५ २७	११ ०८ ४८ ०८	१० १९ ४५ १८	०९ २५ ४३ १६	०८ ०२ ३४ १५	२९
३०	०० १५ ३४ ३१	०१ १४ ०७ ०४	०२ १५ २० ३८	११ २६ २६ ३३	०६ २० ३८ ११	११ ०२ ११ ०५	०३ १० ५८ ००	११ ०८ ४४ ५७	१० १९ ४७ ३५	०९ २५ ४४ ०१	०८ ०२ ३३ १९	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

... स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५६' ।४१"

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मई सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५६' ४१"

ता. मई	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता. मई
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	
१	०० १६ ३२ ४८	०१ २७ ३८ ०१	०२ १५ ५५ ५३	११ २८ १० २१	०६ २० ३० ३४	११ ०३ १८ ३२	०३ ११ ०० ३८	११ ०८ ४१ ४६	१० १९ ४९ ५०	०९ २५ ४४ ४४	०८ ०२ ३२ २३	१
२	०० १७ ३१ ०३	०२ १० ४५ ०२	०२ १६ ३१ १०	११ २९ ५५ ५७	०६ २० २२ ५६	११ ०४ २६ ०७	०३ ११ ०३ २३	११ ०८ ३८ ३५	१० १९ ५२ ०२	०९ २५ ४५ २५	०८ ०२ ३१ २४	२
३	०० १८ २९ १७	०२ २३ २९ ०९	०२ १७ ०६ २९	०० ०१ ४३ २१	०६ २० १५ १८	११ ०५ ३३ ४८	०३ ११ ०६ १३	११ ०८ ३५ २४	१० १९ ५४ १२	०९ २५ ४६ ०४	०८ ०२ ३० २५	३
४	०० १९ २७ २८	०३ ०५ ५३ ०३	०२ १७ ४१ ४९	०० ०३ ३२ ३२	०६ २० ०७ ३९	११ ०६ ४१ ३५	०३ ११ ०९ ०९	११ ०८ ३२ १३	१० १९ ५६ २०	०९ २५ ४६ ४१	०८ ०२ २९ २३	४
५	०० २० २५ ३८	०३ १८ ०० ४३	०२ १८ १७ १२	०० ०५ २३ ३२	०६ १९ ५९ ५९	११ ०७ ४९ २९	०३ ११ १२ ११	११ ०८ २९ ०२	१० १९ ५८ २६	०९ २५ ४७ १७	०८ ०२ २८ २१	५
६	०० २१ २३ ४५	०३ २९ ५६ ५५	०२ १८ ५२ ३७	०० ०७ १६ २०	०६ १९ ५२ २०	११ ०८ ५७ ३०	०३ ११ १५ १९	११ ०८ २५ ५२	१० २० ०० २९	०९ २५ ४७ ५०	०८ ०२ २७ १७	६
७	०० २२ २१ ५१	०४ ११ ४६ ४४	०२ १९ २८ ०३	०० ०९ १० ५६	०६ १९ ४४ ४१	११ १० ०५ ३६	०३ ११ १८ ३३	११ ०८ २२ ४१	१० २० ०२ ३०	०९ २५ ४८ २२	०८ ०२ २६ ११	७
८	०० २३ १९ ५५	०४ २३ ३५ १६	०२ २० ०३ ३१	०० ११ ०७ १९	०६ १९ ३७ ०३	११ ११ १३ ४९	०३ ११ २१ ५२	११ ०८ १९ ३०	१० २० ०४ २८	०९ २५ ४८ ५१	०८ ०२ २५ ०५	८
९	०० २४ १७ ५७	०५ ०५ २७ २०	०२ २० ३९ ०१	०० १३ ०५ २९	०६ १९ २९ २६	११ १२ २२ ०७	०३ ११ २५ १७	११ ०८ १६ २०	१० २० ०६ २४	०९ २५ ४९ १९	०८ ०२ २३ ५७	९
१०	०० २५ १५ ५७	०५ १७ २७ १३	०२ २१ १४ ३२	०० १५ ०५ २२	०६ १९ २१ ५०	११ १३ ३० ३१	०३ ११ २८ ४७	११ ०८ १३ ०९	१० २० ०८ १७	०९ २५ ४९ ४४	०८ ०२ २२ ४८	१०
११	००.२६ १३ ५५	०५ २९ ३८ ३२	०२ २१ ५० ०५	०० १७ ०६ ५८	०६ १९ १४ १६	११ १४ ३९ ०१	०३ ११ ३२ २३	११ ०८ ०९ ५८	१० २० १० ०८	०९ २५ ५० ०८	०८ ०२ २१ ३७	११
१२	०० २७ ११ ५२	०६ १२ ०३ ५६	०२ २२ २५ ३९	०० १९ १० ११	०६ १९ ०६ ४४	११ १५ ४७ ३६	०३ ११ ३६ ०४	११ ०८ ०६ ४८	१० २० ११ ५७	०९ २५ ५० २९	०८ ०२ २० २५	१२
१३	०० २८ ०९ ४७	०६ २४ ४४ ५९	०२ २३ ०१ १५	०० २१ १४ ५७	०६ १८ ५९ १४	११ १६ ५६ १७	०३ ११ ३९ ५०	११ ०८ ०३ ३७	१० २० १३ ४३	०९ २५ ५० ४९	०८ ०२ १९ १२	१३
१४	०० २९ ०७ ४०	०७ ०७ ४२ ०६	०२ २३ ३६ ५३	०० २३ २१ १०	०६ १८ ५१ ४७	११ १८ ०५ ०४	०३ ११ ४३ ४२	११ ०८ ०० २६	१० २० १५ २६	०९ २५ ५१ ०७	०८ ०२ १७ ५८	१४
१५	०१ ०० ०५ ३२	०७ २० ५४ ३६	०२ २४ १२ ३२	०० २५ २८ ४३	०६ १८ ४४ २२	११ १९ १३ ५५	०३ ११ ४७ ३९	११ ०७ ५७ १५	१० २० १७ ०७	०९ २५ ५१ २२	०८ ०२ १६ ४३	१५
१६	०१ ०१ ०३ २२	०८ ०४ २१ ०२	०२ २४ ४८ १२	०० २७ ३७ २७	०६ १८ ३७ ०१	११ २० २२ ५२	०३ ११ ५१ ४१	११ ०७ ५४ ०४	१० २० १८ ४५	०९ २५ ५१ ३६	०८ ०२ १५ २७	१६
१७	०१ ०२ ०१ ११	०८ १७ ५९ २५	०२ २५ २३ ५४	०० २९ ४७ ११	०६ १८ २९ ४३	११ २१ ३१ ५४	०३ ११ ५५ ४९	११ ०७ ५० ५३	१० २० २० २१	०९ २५ ५१ ४८	०८ ०२ १४ ०९	१७
१८	०१ ०२ ५८ ५९	०९ ०१ ४७ ४०	०२ २५ ५९ ३८	०१ ०१ ५७ ४२	०६ १८ २२ २९	११ २२ ४१ ०१	०३ १२ ०० ०१	११ ०७ ४७ ४२	१० २० २१ ५४	०९ २५ ५१ ५८	०८ ०२ १२ ५१	१८
१९	०१ ०३ ५६ ४६	०९ १५ ४३ ५१	०२ २६ ३५ १४	०१ ०४ ०८ ४८	०६ १८ १५ १९	११ २३ ५० १२	०३ १२ ०४ १९	११ ०७ ४४ ३१	१० २० २३ २४	०९ २५ ५२ ०६	०८ ०२ ११ ३२	१९
२०	०१ ०४ ५४ ३२	०९ २९ ४६ २३	०२ २७ ११ ११	०१ ०६ २० १३	०६ १८ ०८ १३	११ २४ ५९ २९	०३ १२ ०८ ४१	११ ०७ ४१ २१	१० २० २४ ५२	०९ २५ ५२ १२	०८ ०२ १० ११	२०
२१	०१ ०५ ५२ १७	१० १३ ५३ ५९	०२ २७ ४६ ५९	०१ ०८ ३१ ४२	०६ १८ ०१ १२	११ २६ ०८ ५०	०३ १२ १३ ०९	११ ०७ ३८ १०	१० २० २६ १७	०९ २५ ५२ १६	०८ ०२ ०८ ५०	२१
२२	०१ ०६ ५० ००	१० २८ ०५ २७	०२ २८ २२ ४९	०१ १० ४२ ५९	०६ १७ ५४ १५	११ २७ १८ १६	०३ १२ १७ ४१	११ ०७ ३४ ५९	१० २० २७ ३९	०९ २५ ५२ १८	०८ ०२ ०७ २७	२२
२३	०१ ०७ ४७ ४३	११ १२ १९ १९	०२ २८ ५८ ४१	०१ १२ ५३ ४५	०६ १७ ४७ २४	११ २८ २७ ४६	०३ १२ २२ १८	११ ०७ ३१ ४८	१० २० २८ ५९	०९ २५ ५२ १८	०८ ०२ ०६ ०४	२३
२४	०१ ०८ ४५ २४	११ २६ ३३ २६	०२ २९ ३४ ३५	०१ १५ ०३ ४६	०६ १७ ४० ३८	११ २९ ३७ २०	०३ १२ २७ ००	११ ०७ २८ ३८	१० २० ३० १६	०९ २५ ५२ १६	०८ ०२ ०४ ४०	२४
२५	०१ ०९ ४३ ०५	०० १० ४४ ४८	०३ ०० १० ३०	०१ १७ १२ ४४	०६ १७ ३३ ५७	०० ०० ४६ ५८	०३ १२ ३१ ४७	११ ०७ २५ २७	१० २० ३१ ३०	०९ २५ ५२ १२	०८ ०२ ०३ १५	२५
२६	०१ १० ४० ४४	०० २४ ४९ ३५	०३ ०० ४६ २७	०१ १९ २० २४	०६ १७ २७ २३	०० ०१ ५६ ४१	०३ १२ ३६ ३८	११ ०७ २२ १६	१० २० ३२ ४१	०९ २५ ५२ ०६	०८ ०२ ०१ ४९	२६
२७	०१ ११ ३८ २२	०१ ०८ ४३ ३१	०३ ०१ २२ २६	०१ २१ २६ ३२	०६ १७ २० ५५	०० ०३ ०६ २६	०३ १२ ४१ ३४	११ ०७ १९ ०५	१० २० ३३ ५०	०९ २५ ५१ ५८	०८ ०२ ०० २३	२७
२८	०१ १२ ३५ ५९	०१ २२ २२ ३५	०३ ०१ ५८ २६	०१ २३ ३० ५५	०६ १७ १४ ३३	०० ०४ १६ १६	०३ १२ ४६ ३५	११ ०७ १५ ५४	१० २० ३४ ५६	०९ २५ ५१ ४९	०८ ०१ ५८ ५५	२८
२९	०१ १३ ३३ ३५	०२ ०५ ४३ ३५	०३ ०२ ३४ २७	०१ २५ ३३ २२	०६ १७ ०८ १८	०० ०५ २६ ०९	०३ १२ ५१ ४०	११ ०७ १२ ४४	१० २० ३५ ५९	०९ २५ ५१ ३७	०८ ०१ ५७ २७	२९
३०	०१ १४ ३१ १०	०२ १८ ४४ ४३	०३ ०३ १० ३०	०१ २७ ३३ ४३	०६ १७ ०२ १०	०० ०६ ३६ ०५	०३ १२ ५६ ४९	११ ०७ ०९ ३३	१० २० ३६ ५९	०९ २५ ५१ २३	०८ ०१ ५५ ५९	३०
३१	०१ १५ २८ ४३	०३ ०१ २५ ५४	०३ ०३ ४६ ३४	०१ २९ ३१ ४८	०६ १६ ५६ १०	०० ०७ ४६ ०५	०३ १३ ०२ ०३	११ ०७ ०६ २२	१० २० ३७ ५६	०९ २५ ५१ ०८	०८ ०१ ५४ २९	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जून सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
१	०१ १६ २६ १५	०३ १३ ४८ ४१	०३ ०४ २२ ४१	०२ ०१ २७ ३३	०६ १६ ५० १७	०० ०८ ५६ ०८	०३ १३ ०७ २१	११ ०७ ०३ ११	१० २० ३८ ५०	०९ २५ ५० ५०	०८ ०१ ५३ ००	१
२	०१ १७ २३ ४६	०३ २५ ५६ ०६	०३ ०४ ५८ ४८	०२ ०३ २० ४९	०६ १६ ४४ ३१	०० १० ०६ १५	०३ १३ १२ ४४	११ ०७ ०० ००	१० २० ३९ ४२	०९ २५ ५० ३१	०८ ०१ ५१ २९	२
३	०१ १८ २१ १६	०४ ०७ ५२ १८	०३ ०५ ३४ ५७	०२ ०५ ११ ३४	०६ १६ ३८ ५३	०० ११ १६ २४	०३ १३ १८ १०	११ ०६ ५६ ४९	१० २० ४० ३१	०९ २५ ५० १०	०८ ०१ ४९ ५८	३
४	०१ १९ १८ ४४	०४ १९ ४२ १३	०३ ०६ ११ ०७	०२ ०६ ५९ ४३	०६ १६ ३३ २४	०० १२ २६ ३७	०३ १३ २३ ४१	११ ०६ ५३ ३९	१० २० ४१ १६	०९ २५ ४९ ४७	०८ ०१ ४८ २७	४
५	०१ २० १६ ११	०५ ०१ ३१ ११	०३ ०६ ४७ १८	०२ ०८ ४५ १४	०६ १६ २८ ०३	०० १३ ३६ ५३	०३ १३ २९ १५	११ ०६ ५० २८	१० २० ४१ ५९	०९ २५ ४९ २२	०८ ०१ ४६ ५५	५
६	०१ २१ १३ ३७	०५ १३ २४ ३६	०३ ०७ २३ ३१	०२ १० २८ ०५	०६ १६ २२ ५०	०० १४ ४७ १२	०३ १३ ३४ ५४	११ ०६ ४७ १७	१० २० ४२ ३९	०९ २५ ४८ ५५	०८ ०१ ४५ २३	६
७	०१ २२ ११ ०१	०५ २५ २७ ३९	०३ ०७ ५९ ४५	०२ १२ ०८ १२	०६ १६ १७ ४५	०० १५ ५७ ३४	०३ १३ ४० ३६	११ ०६ ४४ ०६	१० २० ४३ १६	०९ २५ ४८ २७	०८ ०१ ४३ ५०	७
८	०१ २३ ०८ २५	०६ ०७ ४४ ५३	०३ ०८ ३६ ००	०२ १३ ४५ ३६	०६ १६ १२ ५०	०० १७ ०७ ५९	०३ १३ ४६ २२	११ ०६ ४० ५६	१० २० ४३ ५१	०९ २५ ४७ ५६	०८ ०१ ४२ १७	८
९	०१ २४ ०५ ४७	०६ २० १९ ५६	०३ ०९ १२ १६	०२ १५ २० १४	०६ १६ ०८ ०३	०० १८ १८ २७	०३ १३ ५२ १२	११ ०६ ३७ ४५	१० २० ४४ २२	०९ २५ ४७ २४	०८ ०१ ४० ४४	९
१०	०१ २५ ०३ ०९	०७ ०३ १५ ०५	०३ ०९ ४८ ३४	०२ १६ ५२ ०५	०६ १६ ०३ २६	०० १९ २८ ५८	०३ १३ ५८ ०६	११ ०६ ३४ ३४	१० २० ४४ ५०	०९ २५ ४६ ५०	०८ ०१ ३९ ११	१०
११	०१ २६ ०० २९	०७ १६ ३० ५४	०३ १० २४ ५३	०२ १८ २१ ०७	०६ १५ ५८ ५७	०० २० ३९ ३२	०३ १४ ०४ ०३	११ ०६ ३१ २३	१० २० ४५ १६	०९ २५ ४६ १४	०८ ०१ ३७ ३७	११
१२	०१ २६ ५७ ४९	०८ ०० ०६ १०	०३ ११ ०१ १३	०२ १९ ४७ २०	०६ १५ ५४ ३८	०० २१ ५० ०९	०३ १४ १० ०४	११ ०६ २८ १२	१० २० ४५ ३९	०९ २५ ४५ ३६	०८ ०१ ३६ ०३	१२
१३	०१ २७ ५५ ०८	०८ १३ ५७ ५६	०३ ११ ३७ ३४	०२ २१ १० ४०	०६ १५ ५० २८	०० २३ ०० ५०	०३ १४ १६ ०८	११ ०६ २५ ०१	१० २० ४५ ५८	०९ २५ ४४ ५७	०८ ०१ ३४ २९	१३
१४	०१ २८ ५२ २७	०८ २८ ०२ ०४	०३ १२ १३ ५७	०२ २२ ३१ ०७	०६ १५ ४६ २८	०० २४ ११ ३३	०३ १४ २२ १६	११ ०६ २१ ५०	१० २० ४६ १५	०९ २५ ४४ १६	०८ ०१ ३२ ५४	१४
१५	०१ २९ ४९ ४४	०९ १२ १३ ५१	०३ १२ ५० २१	०२ २३ ४८ ३८	०६ १५ ४२ ३८	०० २५ २२ २०	०३ १४ २८ २७	११ ०६ १८ ३९	१० २० ४६ २९	०९ २५ ४३ ३३	०८ ०१ ३१ २०	१५
१६	०२ ०० ४७ ०२	०९ २६ २८ ४८	०३ १३ २६ ४६	०२ २५ ०३ १०	०६ १५ ३८ ५७	०० २६ ३३ ०९	०३ १४ ३४ ४१	११ ०६ १५ २९	१० २० ४६ ४०	०९ २५ ४२ ४९	०८ ०१ २९ ४५	१६
१७	०२ ०१ ४४ १९	१० १० ४३ १४	०३ १४ ०३ १३	०२ २६ १४ ४०	०६ १५ ३५ २६	०० २७ ४४ ०२	०३ १४ ४० ५९	११ ०६ १२ १८	१० २० ४६ ४८	०९ २५ ४२ ०३	०८ ०१ २८ ११	१७
१८	०२ ०२ ४१ ३६	१० २४ ५४ ३७	०३ १४ ३९ ४१	०२ २७ २३ ०५	०६ १५ ३२ ०५	०० २८ ५४ ५७	०३ १४ ४७ २०	११ ०६ ०९ ०७	१० २० ४६ ५४	०९ २५ ४१ १५	०८ ०१ २६ ३६	१८
१९	०२ ०३ ३८ ५२	११ ०९ ०१ २५	०३ १५ १६ ११	०२ २८ २८ २०	०६ १५ २८ ५५	०१ ०० ०५ ५६	०३ १४ ५३ ४४	११ ०६ ०५ ५६	१० २० ४६ ५६व.	०९ २५ ४० २५	०८ ०१ २५ ०२	१९
२०	०२ ०४ ३६ ०९	११ २३ ०२ ४७	०३ १५ ५२ ४२	०२ २९ ३० २१	०६ १५ २५ ५४	०१ ०१ १६ ५७	०३ १५ ०० ११	११ ०६ ०२ ४६	१० २० ४६ ५५	०९ २५ ३९ ३४	०८ ०१ २३ २८	२०
२१	०२ ०५ ३३ २५	०० ०६ ५८ ०४	०३ १६ २९ १५	०३ ०० २९ ०४	०६ १५ २३ ०४	०१ ०२ २८ ०१	०३ १५ ०६ ४२	११ ०५ ५९ ३५	१० २० ४६ ५२	०९ २५ ३८ ४२	०८ ०१ २१ ५३	२१
२२	०२ ०६ ३० ४१	०० २० ४६ २०	०३ १७ ०५ ४९	०३ ०१ २४ २२	०६ १५ २० २४	०१ ०३ ३९ ०८	०३ १५ १३ १५	११ ०५ ५६ २४	१० २० ४६ ४५	०९ २५ ३७ ४७	०८ ०१ २० १९	२२
२३	०२ ०७ २७ ५७	०१ ०४ २६ १४	०३ १७ ४२ २४	०३ ०२ १६ ११	०६ १५ १७ ५४	०१ ०४ ५० १८	०३ १५ १९ ५१	११ ०५ ५३ १३	१० २० ४६ ३६	०९ २५ ३६ ५१	०८ ०१ १८ ४५	२३
२४	०२ ०८ २५ १२	०१ १७ ५५ ५१	०३ १८ १९ ०१	०३ ०३ ०४ २४	०६ १५ १५ ३६	०१ ०६ ०१ ३०	०३ १५ २६ ३०	११ ०५ ५० ०२	१० २० ४६ २४	०९ २५ ३५ ५४	०८ ०१ १७ ११	२४
२५	०२ ०९ २२ २७	०२ ०१ १३ ०८	०३ १८ ५५ ४०	०३ ०३ ४८ ५५	०६ १५ १३ २७	०१ ०७ १२ ४५	०३ १५ ३३ १२	११ ०५ ४६ ५१	१० २० ४६ ०९	०९ २५ ३४ ५५	०८ ०१ १५ ३८	२५
२६	०२ १० १९ ४२	०२ १४ १६ ०७	०३ १९ ३२ २०	०३ ०४ २९ ३७	०६ १५ ११ ३०	०१ ०८ २४ ०२	०३ १५ ३९ ५७	११ ०५ ४३ ४०	१० २० ४५ ५१	०९ २५ ३३ ५४	०८ ०१ १४ ०४	२६
२७	०२ ११ १६ ५७	०२ २७ ०३ ३२	०३ २० ०९ ०१	०३ ०५ ०६ २२	०६ १५ ०९ ४३	०१ ०९ ३५ २२	०३ १५ ४६ ४४	११ ०५ ४० २९	१० २० ४५ ३०	०९ २५ ३२ ५२	०८ ०१ १२ ३२	२७
२८	०२ १२ १४ ११	०३ ०९ ३५ ०१	०३ २० ४५ ४४	०३ ०५ ३९ ०४	०६ १५ ०८ ०७	०१ १० ४६ ४५	०३ १५ ५३ ३४	११ ०५ ३७ १९	१० २० ४५ ०६	०९ २५ ३१ ४९	०८ ०१ १० ५९	२८
२९	०२ १३ ११ २५	०३ २१ ५१ ३०	०३ २१ २२ २८	०३ ०६ ०७ ३६	०६ १५ ०६ ४२	०१ ११ ५८ ०९	०३ १६ ०० २७	११ ०५ ३४ ०८	१० २० ४४ ४०	०९ २५ ३० ४४	०८ ०१ ०९ २७	२९
३०	०२ १४ ०८ ३९	०४ ०३ ५५ ०७	०३ २१ ५९ १४	०३ ०६ ३१ ५१	०६ १५ ०५ २८	०१ १३ ०९ ३६	०३ १६ ०७ २१	११ ०५ ३० ५७	१० २० ४४ १०	०९ २५ २९ ३७	०८ ०१ ०७ ५५	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५६' ५२"

२९	०२ १३ ११ २५	०३ २१ ५१ ३०	०३ २१ २२ २८	०३ ०६ ०७ ३६	०६ १५ ०६ ४२	०१ ११ ५८ ०९	०३ १६ ०० २७	११ ०५ ३४ ०८	१० २० ४४ ४०	०९ २५ ३० ४४	०८ ०१ ०९ २७	२९
३०	०२ १४ ०८ ३९	०४ ०३ ५५ ०७	०३ २१ ५९ १४	०३ ०६ ३१ ५१	०६ १५ ०५ २८	०१ १३ ०९ ३६	०३ १६ ०७ २१	११ ०५ ३० ५७	१० २० ४४ १०	०९ २५ २९ ३७	०८ ०१ ०७ ५५	३०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५६' ५२"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुलाई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुलाई
१	०२ १५ ०५ ५२	०४ १५ ४९ ०९	०३ २२ ३६ ०१	०३ ०६ ५१ ४२	०६ १५ ०४ २५	०१ १४ २१ ०६	०३ १६ १४ १९	११ ०५ २७ ४६	१० २० ४३ ३८	०९ २५ २८ ३०	०८ ०१ ०६ २४	१
२	०२ १६ ०३ ०५	०४ २७ ३७ ५०	०३ २३ १२ ४९	०३ ०७ ०७ ०४	०६ १५ ०३ ३२	०१ १५ ३२ ३७	०३ १६ २१ १८	११ ०५ २४ ३६	१० २० ४३ ०३	०९ २५ २७ २१	०८ ०१ ०४ ५३	२
३	०२ १७ ०० १७	०५ ०९ २६ ०४	०३ २३ ४९ ३९	०३ ०७ १७ ५१	०६ १५ ०२ ५१	०१ १६ ४४ १२	०३ १६ २८ २०	११ ०५ २१ २५	१० २० ४२ २५	०९ २५ २६ १०	०८ ०१ ०३ २३	३
४	०२ १७ ५७ ३०	०५ २१ १९ १३	०३ २४ २६ ३०	०३ ०७ २४ ०१व.	०६ १५ ०२ २०	०१ १७ ५५ ४८	०३ १६ ३५ २४	११ ०५ १८ १४	१० २० ४१ ४५	०९ २५ २४ ५८	०८ ०१ ०१ ५४	४
५	०२ १८ ५४ ४१	०६ ०३ २२ ४३	०३ २५ ०३ २२	०३ ०७ २५ ३०	०६ १५ ०२ ००	०१ १९ ०७ २७	०३ १६ ४२ ३०	११ ०५ १५ ०३	१० २० ४१ ०२	०९ २५ २३ ४५	०८ ०१ ०० २५	५
६	०२ १९ ५१ ५३	०६ १५ ४१ ४७	०३ २५ ४० १५	०३ ०७ २२ १८	०६ १५ ०१ ५१मा.	०१ २० १९ ०८	०३ १६ ४९ ३९	११ ०५ ११ ५३	१० २० ४० १६	०९ २५ २२ ३१	०८ ०० ५८ ५६	६
७	०२ २० ४९ ०४	०६ २८ २० ५७	०३ २६ १७ १०	०३ ०७ १४ २८	०६ १५ ०१ ५३	०१ २१ ३० ५१	०३ १६ ५६ ४९	११ ०५ ०८ ४२	१० २० ३९ २७	०९ २५ २१ १६	०८ ०० ५७ २९	७
८	०२ २१ ४६ १६	०७ ११ २३ ३०	०३ २६ ५४ ०६	०३ ०७ ०२ ०४	०६ १५ ०२ ०६	०१ २२ ४२ ३७	०३ १७ ०४ ०१	११ ०५ ०५ ३१	१० २० ३८ ३५	०९ २५ १९ ५९	०८ ०० ५६ ०२	८
९	०२ २२ ४३ २७	०७ २४ ५० ५४	०३ २७ ३१ ०३	०३ ०६ ४५ १३	०६ १५ ०२ २९	०१ २३ ५४ २६	०३ १७ ११ १५	११ ०५ ०२ २०	१० २० ३७ ४१	०९ २५ १८ ४१	०८ ०० ५४ ३५	९
१०	०२ २३ ४० ३८	०८ ०८ ४२ २३	०३ २८ ०८ ०२	०३ ०६ २४ ०७	०६ १५ ०३ ०४	०१ २५ ०६ १७	०३ १७ १८ ३१	११ ०४ ५९ ०९	१० २० ३६ ४५	०९ २५ १७ २२	०८ ०० ५३ १०	१०
११	०२ २४ ३७ ४९	०८ २२ ५४ ४९	०३ २८ ४५ ०२	०३ ०५ ५९ ०२	०६ १५ ०३ ४९	०१ २६ १८ १०	०३ १७ २५ ४८	११ ०४ ५५ ५८	१० २० ३५ ४६	०९ २५ १६ ०२	०८ ०० ५१ ४५	११
१२	०२ २५ ३५ ००	०९ ०७ २२ ५०	०३ २९ २२ ०३	०३ ०५ ३० १८	०६ १५ ०४ ४५	०१ २७ ३० ०६	०३ १७ ३३ ०७	११ ०४ ५२ ४७	१० २० ३४ ४४	०९ २५ १४ ४१	०८ ०० ५० २२	१२
१३	०२ २६ ३२ १२	०९ २१ ५९ ४६	०३ २९ ५९ ०६	०३ ०४ ५८ १६	०६ १५ ०५ ५१	०१ २८ ४२ ०५	०३ १७ ४० २८	११ ०४ ४९ ३६	१० २० ३३ ३९	०९ २५ १३ १९	०८ ०० ४८ ५९	१३
१४	०२ २७ २९ २४	१० ०६ ३८ ३५	०४ ०० ३६ १०	०३ ०४ २३ २७	०६ १५ ०७ ०८	०१ २९ ५४ ०६	०३ १७ ४७ ५१	११ ०४ ४६ २६	१० २० ३२ ३३	०९ २५ ११ ५५	०८ ०० ४७ ३७	१४
१५	०२ २८ २६ ३६	१० २१ १३ ०४	०४ ०१ १३ १६	०३ ०३ ४६ २०	०६ १५ ०८ ३६	०२ ०१ ०६ १०	०३ १७ ५५ १५	११ ०४ ४३ १५	१० २० ३१ २३	०९ २५ १० ३१	०८ ०० ४६ १५	१५
१६	०२ २९ २३ ४९	११ ०५ ३८ ३०	०४ ०१ ५० २३	०३ ०३ ०७ ३१	०६ १५ १० १४	०२ ०२ १८ १७	०३ १८ ०२ ४०	११ ०४ ४० ०४	१० २० ३० ११	०९ २५ ०९ ०६	०८ ०० ४४ ५५	१६
१७	०३ ०० २१ ०३	११ १९ ५२ ००	०४ ०२ २७ ३२	०३ ०२ २७ ३८	०६ १५ १२ ०३	०२ ०३ ३० २६	०३ १८ १० ०७	११ ०४ ३६ ५३	१० २० २८ ५७	०९ २५ ०७ ४०	०८ ०० ४३ ३६	१७
१८	०३ ०१ १८ १७	०० ०३ ५२ १४	०४ ०३ ०४ ४२	०३ ०१ ४७ २२	०६ १५ १४ ०२	०२ ०४ ४२ ३८	०३ १८ १७ ३५	११ ०४ ३३ ४३	१० २० २७ ४०	०९ २५ ०६ १३	०८ ०० ४२ १८	१८
१९	०३ ०२ १५ ३२	०० १७ ३८ ५७	०४ ०३ ४१ ५४	०३ ०१ ०७ २४	०६ १५ १६ १२	०२ ०५ ५४ ५३	०३ १८ २५ ०५	११ ०४ ३० ३२	१० २० २६ २१	०९ २५ ०४ ४५	०८ ०० ४१ ००	१९
२०	०३ ०३ १२ ४८	०१ ०१ १२ २३	०४ ०४ १९ ०७	०३ ०० २८ २६	०६ १५ १८ ३२	०२ ०७ ०७ १०	०३ १८ ३२ ३६	११ ०४ २७ २१	१० २० २४ ५९	०९ २५ ०३ १६	०८ ०० ३९ ४४	२०
२१	०३ ०४ १० ०४	०१ १४ ३२ ५६	०४ ०४ ५६ २३	०२ २९ ५१ ११	०६ १५ २१ ०३	०२ ०८ १९ ३०	०३ १८ ४० ०८	११ ०४ २४ १०	१० २० २३ ३५	०९ २५ ०१ ४७	०८ ०० ३८ २९	२१
२२	०३ ०५ ०७ २२	०१ २७ ४० ५१	०४ ०५ ३३ ३९	०२ २९ १६ २०	०६ १५ २३ ४४	०२ ०९ ३१ ५२	०३ १८ ४७ ४१	११ ०४ २० ५९	१० २० २२ ०८	०९ २५ ०० १६	०८ ०० ३७ १५	२२
२३	०३ ०६ ०४ ४०	०२ १० ३६ १२	०४ ०६ १० ५८	०२ २८ ४४ ३२	०६ १५ २६ ३५	०२ १० ४४ १७	०३ १८ ५५ १५	११ ०४ १७ ४८	१० २० २० ४०	०९ २४ ५८ ४५	०८ ०० ३६ ०३	२३
२४	०३ ०७ ०१ ५८	०२ २३ १८ ५८	०४ ०६ ४८ १८	०२ २८ १६ २१	०६ १५ २९ ३७	०२ ११ ५६ ४४	०३ १९ ०२ ५०	११ ०४ १४ ३७	१० २० १९ ०९	०९ २४ ५७ १३	०८ ०० ३४ ५१	२४
२५	०३ ०७ ५९ १७	०३ ०५ ४९ १२	०४ ०७ २५ ४०	०२ २७ ५२ २२	०६ १५ ३२ ४९	०२ १३ ०९ १४	०३ १९ १० २६	११ ०४ ११ २७	१० २० १७ ३६	०९ २४ ५५ ४१	०८ ०० ३३ ४१	२५
२६	०३ ०८ ५६ ३७	०३ १८ ०७ १४	०४ ०८ ०३ ०३	०२ २७ ३३ ०२	०६ १५ ३६ ११	०२ १४ २१ ४६	०३ १९ १८ ०३	११ ०४ ०८ १६	१० २० १६ ००	०९ २४ ५४ ०८	०८ ०० ३२ ३२	२६
२७	०३ ०९ ५३ ५८	०४ ०० १४ ०६	०४ ०८ ४० २८	०२ २७ १८ ४७	०६ १५ ३९ ४३	०२ १५ ३४ २१	०३ १९ २५ ४१	११ ०४ ०५ ०५	१० २० १४ २३	०९ २४ ५२ ३४	०८ ०० ३१ २४	२७
२८	०३ १० ५१ १९	०४ १२ ११ २६	०४ ०९ १७ ५४	०२ २७ ०९ ५८मा.	०६ १५ ४३ २५	०२ १६ ४६ ५८	०३ १९ ३३ १९	११ ०४ ०१ ५४	१० २० १२ ४३	०९ २४ ५१ ००	०८ ०० ३० १७	२८
२९	०३ ११ ४८ ४१	०४ २४ ०१ ४९	०४ ०९ ५५ २२	०२ २७ ०६ ५१	०६ १५ ४७ १७	०२ १७ ५९ ३७	०३ १९ ४० ५८	११ ०३ ५८ ४४	१० २० ११ ०२	०९ २४ ४९ २५	०८ ०० २९ १२	२९
३०	०३ १२ ४६ ०३	०५ ०५ ४८ ३६	०४ १० ३२ ५२	०२ २७ ०९ ४१	०६ १५ ५१ १९	०२ १९ १२ १८	०३ १९ ४८ ३८	११ ०३ ५५ ३३	१० २० ०९ १८	०९ २४ ४७ ५०	०८ ०० २८ ०८	३०
३१	०३ १३ ४३ २६	०५ १७ ३५ ५१	०४ ११ १० २३	०२ २७ १८ ३१	०६ १५ ५५ ३१	०२ २० २५ ०२	०३ १९ ५६ १८	११ ०३ ५२ २२	१० २० ०७ ३३	०९ २४ ४६ १५	०८ ०० २७ ०६	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अगस्त सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५६' ५७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अग.
१	०३ १४ ४० ५०	०५ २९ २८ १३	०४ ११ ४७ ५६	०२ २७ ३३ ५०	०६ १५ ५९ ५२	०२ २१ ३७ ४८	०३ २० ०३ ५९	११ ०३ ४९ १२	१० २० ०५ ४५	०९ २४ ४४ ३८	०८ ०० २६ ०५	१
२	०३ १५ ३८ १४	०६ ११ ३० ४५	०४ १२ २५ ३०	०२ २७ ५५ २१	०६ १६ ०४ २३	०२ २२ ५० ३७	०३ २० ११ ४०	११ ०३ ४६ ०१	१० २० ०३ ५६	०९ २४ ४३ ०२	०८ ०० २५ ०५	२
३	०३ १६ ३५ ३८	०६ २३ ४८ ३६	०४ १३ ०३ ०६	०२ २८ २३ १३	०६ १६ ०९ ०४	०२ २४ ०३ २७	०३ २० १९ २१	११ ०३ ४२ ५०	१० २० ०२ ०४	०९ २४ ४१ २५	०८ ०० २४ ०७	३
४	०३ १७ ३३ ०३	०७ ०६ २६ ४१	०४ १३ ४० ४३	०२ २८ ५७ २७	०६ १६ १३ ५४	०२ २५ १६ २०	०३ २० २७ ०२	११ ०३ ३९ ३९	१० २० ०० ११	०९ २४ ३९ ४८	०८ ०० २३ १०	४
५	०३ १८ ३० २९	०७ १९ २९ ०४	०४ १४ १८ २२	०२ २९ ३८ ०१	०६ १६ १८ ५३	०२ २६ २९ १५	०३ २० ३४ ४४	११ ०३ ३६ २८	१० १९ ५८ १६	०९ २४ ३८ ११	०८ ०० २२ १५	५
६	०३ १९ २७ ५६	०८ ०२ ५८ २२	०४ १४ ५६ ०२	०३ ०० २४ ५१	०६ १६ २४ ०१	०२ २७ ४२ १३	०३ २० ४२ २६	११ ०३ ३३ १७	१० १९ ५६ २०	०९ २४ ३६ ३३	०८ ०० २१ २१	६
७	०३ २० २५ २३	०८ १६ ५५ ०५	०४ १५ ३३ ४४	०३ ०१ १७ ५२	०६ १६ २९ १९	०२ २८ ५५ १३	०३ २० ५० ०८	११ ०३ ३० ०६	१० १९ ५४ २२	०९ २४ ३४ ५५	०८ ०० २० २९	७
८	०३ २१ २२ ५२	०९ ०१ १७ ०४	०४ १६ ११ २७	०३ ०२ १६ ५७	०६ १६ ३४ ४६	०३ ०० ०८ १५	०३ २० ५७ ५०	११ ०३ २६ ५६	१० १९ ५२ २२	०९ २४ ३३ १७	०८ ०० १९ ३८	८
९	०३ २२ २० २१	०९ १५ ५९ २८	०४ १६ ४९ १२	०३ ०३ २१ ५९	०६ १६ ४० २१	०३ ०१ २१ २०	०३ २१ ०५ ३२	११ ०३ २३ ४५	१० १९ ५० २०	०९ २४ ३१ ३९	०८ ०० १८ ४९	९
१०	०३ २३ १७ ५१	१० ०० ५५ ०२	०४ १७ २६ ५९	०३ ०४ ३२ ४६	०६ १६ ४६ ०६	०३ ०२ ३४ २७	०३ २१ १३ १४	११ ०३ २० ३४	१० १९ ४८ १८	०९ २४ ३० ०१	०८ ०० १८ ०२	१०
११	०३ २४ १५ २२	१० १५ ५५ १७	०४ १८ ०४ ४७	०३ ०५ ४९ ०७	०६ १६ ५१ ५९	०३ ०३ ४७ ३६	०३ २१ २० ५५	११ ०३ १७ २३	१० १९ ४६ १३	०९ २४ २८ २३	०८ ०० १७ १६	११
१२	०३ २५ १२ ५५	११ ०० ५१ ३९	०४ १८ ४२ ३७	०३ ०७ १० ४९	०६ १६ ५८ ०१	०३ ०५ ०० ४९	०३ २१ २८ ३७	११ ०३ १४ १३	१० १९ ४४ ०७	०९ २४ २६ ४५	०८ ०० १६ ३१	१२
१३	०३ २६ १० २९	११ १५ ३६ ४८	०४ १९ २० २९	०३ ०८ ३७ ३६	०६ १७ ०४ १२	०३ ०६ १४ ०३	०३ २१ ३६ १८	११ ०३ ११ ०२	१० १९ ४२ ००	०९ २४ २५ ०७	०८ ०० १५ ४९	१३
१४	०३ २७ ०८ ०४	०० ०० ०५ ३१	०४ १९ ५८ २३	०३ १० ०९ १०	०६ १७ १० ३१	०३ ०७ २७ २१	०३ २१ ४३ ५८	११ ०३ ०७ ५१	१० १९ ३९ ५२	०९ २४ २३ २९	०८ ०० १५ ०८	१४
१५	०३ २८ ०५ ४१	०० १४ १४ ४७	०४ २० ३६ १८	०३ ११ ४५ १३	०६ १७ १६ ५८	०३ ०८ ४० ४०	०३ २१ ५१ ३९	११ ०३ ०४ ४०	१० १९ ३७ ४२	०९ २४ २१ ५०	०८ ०० १४ २८	१५
१६	०३ २९ ०३ १९	०० २८ ०३ ३७	०४ २१ १४ १५	०३ १३ २५ २२	०६ १७ २३ ३४	०३ ०९ ५४ ०३	०३ २१ ५९ १९	११ ०३ ०१ ३०	१० १९ ३५ ३१	०९ २४ २० १३	०८ ०० १३ ५१	१६
१७	०४ ०० ०० ५९	०१ ११ ३२ २७	०४ २१ ५२ १५	०३ १५ ०९ १६	०६ १७ ३० १९	०३ ११ ०७ २८	०३ २२ ०६ ५८	११ ०२ ५८ १९	१० १९ ३३ १८	०९ २४ १८ ३५	०८ ०० १३ १५	१७
१८	०४ ०० ५८ ४१	०१ २४ ४२ ३९	०४ २२ ३० १६	०३ १६ ५६ ३१	०६ १७ ३७ ११	०३ १२ २० ५५	०३ २२ १४ ३७	११ ०२ ५५ ०८	१० १९ ३१ ०५	०९ २४ १६ ५७	०८ ०० १२ ४०	१८
१९	०४ ०१ ५६ २४	०२ ०७ ३६ ०२	०४ २३ ०८ १९	०३ १८ ४६ ४१	०६ १७ ४४ १२	०३ १३ ३४ २५	०३ २२ २२ १६	११ ०२ ५१ ५७	१० १९ २८ ५१	०९ २४ १५ २०	०८ ०० १२ ०८	१९
२०	०४ ०२ ५४ ०८	०२ २० १४ ३३	०४ २३ ४६ २४	०३ २० ३९ २२	०६ १७ ५१ २१	०३ १४ ४७ ५७	०३ २२ २९ ५३	११ ०२ ४८ ४६	१० १९ २६ ३५	०९ २४ १३ ४३	०८ ०० ११ ३७	२०
२१	०४ ०३ ५१ ५५	०३ ०२ ४० ०९	०४ २४ २४ ३१	०३ २२ ३४ ०९	०६ १७ ५८ ३८	०३ १६ ०१ ३२	०३ २२ ३७ ३०	११ ०२ ४५ ३५	१० १९ २४ १९	०९ २४ १२ ०६	०८ ०० ११ ०८	२१
२२	०४ ०४ ४९ ४२	०३ १४ ५४ ३७	०४ २५ ०२ ४०	०३ २४ ३० ३७	०६ १८ ०६ ०२	०३ १७ १५ ०९	०३ २२ ४५ ०६	११ ०२ ४२ २५	१० १९ २२ ०१	०९ २४ १० ३०	०८ ०० १० ४१	२२
२३	०४ ०५ ४७ ३२	०३ २६ ५९ ३४	०४ २५ ४० ५०	०३ २६ २८ २४	०६ १८ १३ ३५	०३ १८ २८ ४८	०३ २२ ५२ ४१	११ ०२ ३९ १४	१० १९ १९ ४३	०९ २४ ०८ ५४	०८ ०० १० १६	२३
२४	०४ ०६ ४५ २२	०४ ०८ ५६ ४२	०४ २६ १९ ०३	०३ २८ २७ ०७	०६ १८ २१ १५	०३ १९ ४२ २९	०३ २३ ०० १६	११ ०२ ३६ ०३	१० १९ १७ २४	०९ २४ ०७ १८	०८ ०० ०९ ५२	२४
२५	०४ ०७ ४३ १५	०४ २० ४७ ५१	०४ २६ ५७ १८	०४ ०० २६ २६	०६ १८ २९ ०३	०३ २० ५६ १३	०३ २३ ०७ ४९	११ ०२ ३२ ५३	१० १९ १५ ०४	०९ २४ ०५ ४३	०८ ०० ०९ ३०	२५
२६	०४ ०८ ४१ ०८	०५ ०२ ३५ १४	०४ २७ ३५ ३४	०४ ०२ २६ ०३	०६ १८ ३६ ५९	०३ २२ ०९ ५९	०३ २३ १५ २१	११ ०२ २९ ४२	१० १९ १२ ४४	०९ २४ ०४ ०९	०८ ०० ०९ १०	२६
२७	०४ ०९ ३९ ०३	०५ १४ २१ २८	०४ २८ १३ ५२	०४ ०४ २५ ४१	०६ १८ ४५ ०२	०३ २३ २३ ४६	०३ २३ २२ ५१	११ ०२ २६ ३१	१० १९ १० २३	०९ २४ ०२ ३५	०८ ०० ०८ ५२	२७
२८	०४ १० ३७ ००	०५ २६ ०९ ३९	०४ २८ ५२ १२	०४ ०६ २५ ०७	०६ १८ ५३ १२	०३ २४ ३७ ३६	०३ २३ ३० २१	११ ०२ २३ २१	१० १९ ०८ ०१	०९ २४ ०१ ०१	०८ ०० ०८ ३६	२८
२९	०४ ११ ३४ ५७	०६ ०८ ०३ २०	०४ २९ ३० ३४	०४ ०८ २४ ०९	०६ १९ ०१ ३०	०३ २५ ५१ २८	०३ २३ ३७ ४९	११ ०२ २० १०	१० १९ ०५ ३९	०९ २३ ५९ २९	०८ ०० ०८ २२	२९
३०	०४ १२ ३२ ५६	०६ २० ०६ ३३	०५ ०० ०८ ५८	०४ १० २२ ३५	०६ १९ ०९ ५५	०३ २७ ०५ २२	०३ २३ ४५ १६	११ ०२ १६ ५९	१० १९ ०३ १६	०९ २३ ५७ ५६	०८ ०० ०८ ०९	३०
३१	०४ १३ ३० ५७	०७ ०२ २३ ३७	०५ ०० ४७ २४	०४ १२ २० १७	०६ १९ १८ २६	०३ २८ १९ १८	०३ २३ ५२ ४१	११ ०२ १३ ४८	१० १९ ०० ५३	०९ २३ ५६ २५	०८ ०० ०७ ५९	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
[illegible] सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५७' ०१"

३०	०४ १२ ३२ ५६	०६ २० ०६ ३३	०५ ०० ०[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ०३ १६	०९ २३ ५७ ५६	०८ ०० ०८ ०९	३०
३१	०४ १३ ३० ५७	०७ ०२ २३ ३७	०५ ०० ४७ २४	०४ १२ २० १७	०६ १९ १८ २६	०३ २८ १९ १८	०३ २३ ५२ ४१	११ ०२ १३ ४८	१० १९ ०० ५३	०९ २३ ५६ २५	०८ ०० ०७ ५९	३१

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सितंबर सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५७' ०१"

ता. सितं.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस (वक्री) रा. अं. क. वि.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क. वि.	प्लूटो (वक्री) रा. अं. क. वि.	ता. सितं.
१	०४ १४ २८ ५८	०७ १४ ५९ ०१	०५ ०१ २५ ५२	०४ १४ १७ १०	०६ १९ २७ ०५	०३ २९ ३३ १५	०३ २४ ०० ०५	११ ०२ १० ३७	१० १८ ५८ ३०	०९ २३ ५४ ५४	०८ ०० ०७ ५०	१
२	०४ १५ २७ ०१	०७ २७ ५६ ५२	०५ ०२ ०४ २१	०४ १६ १३ ०६	०६ १९ ३५ ५१	०४ ०० ४७ १५	०३ २४ ०७ २७	११ ०२ ०७ २७	१० १८ ५६ ०७	०९ २३ ५३ २४	०८ ०० ०७ ४३	२
३	०४ १६ २५ ०६	०८ ११ २० २७	०५ ०२ ४२ ५२	०४ १८ ०८ ०१	०६ १९ ४४ ४३	०४ ०२ ०१ १७	०३ २४ १४ ४७	११ ०२ ०४ १६	१० १८ ५३ ४३	०९ २३ ५१ ५५	०८ ०० ०७ ३८	३
४	०४ १७ २३ १२	०८ २५ ११ ३२	०५ ०३ २१ २५	०४ २० ०१ ५३	०६ १९ ५३ ४२	०४ ०३ १५ २०	०३ २४ २२ ०६	११ ०२ ०१ ०५	१० १८ ५१ १९	०९ २३ ५० २७	०८ ०० ०७ ३५	४
५	०४ १८ २१ १९	०९ ०९ २९ ४३	०५ ०४ ०० ००	०४ २१ ५४ ३८	०६ २० ०२ ४८	०४ ०४ २९ २५	०३ २४ २९ २३	११ ०१ ५७ ५४	१० १८ ४८ ५५	०९ २३ ४८ ५९	०८ ०० ०७ ३४मा.	५
६	०४ १९ १९ २८	०९ २४ ११ ५७	०५ ०४ ३८ ३७	०४ २३ ४६ १४	०६ २० ११ ५९	०४ ०५ ४३ ३३	०३ २४ ३६ ३८	११ ०१ ५४ ४३	१० १८ ४६ ३२	०९ २३ ४७ ३३	०८ ०० ०७ ३५	६
७	०४ २० १७ ३८	१० ०९ १२ २६	०५ ०५ १७ १६	०४ २५ ३६ ४२	०६ २० २१ १८	०४ ०६ ५७ ४२	०३ २४ ४३ ५२	११ ०१ ५१ ३३	१० १८ ४४ ०८	०९ २३ ४६ ०७	०८ ०० ०७ ३८	७
८	०४ २१ १५ ५०	१० २४ २३ ००	०५ ०५ ५५ ५७	०४ २७ २५ ५९	०६ २० ३० ४२	०४ ०८ ११ ५३	०३ २४ ५१ ०३	११ ०१ ४८ २२	१० १८ ४१ ४४	०९ २३ ४४ ४२	०८ ०० ०७ ४२	८
९	०४ २२ १४ ०४	११ ०९ ३४ १५	०५ ०६ ३४ ४०	०४ २९ १४ ०७	०६ २० ४० १३	०४ ०९ २६ ०६	०३ २४ ५८ १२	११ ०१ ४५ ११	१० १८ ३९ २०	०९ २३ ४३ १९	०८ ०० ०७ ४९	९
१०	०४ २३ १२ २०	११ २४ ३६ ४९	०५ ०७ १३ २४	०५ ०१ ०१ ०५	०६ २० ४९ ५०	०४ १० ४० २१	०३ २५ ०५ १९	११ ०१ ४२ ०१	१० १८ ३६ ५७	०९ २३ ४१ ५६	०८ ०० ०७ ५७	१०
११	०४ २४ १० ३८	०० ०९ २२ ५०	०५ ०७ ५२ ११	०५ ०२ ४६ ५८	०६ २० ५९ ३३	०४ ११ ५४ ३८	०३ २५ १२ २५	११ ०१ ३८ ५०	१० १८ ३४ ३४	०९ २३ ४० ३४	०८ ०० ०८ ०८	११
१२	०४ २५ ०८ ५७	०० २३ ४६ ४४	०५ ०८ ३१ ००	०५ ०४ ३१ ३४	०६ २१ ०९ २१	०४ १३ ०८ ५७	०३ २५ १९ २७	११ ०१ ३५ ३९	१० १८ ३२ ११	०९ २३ ३९ १४	०८ ०० ०८ २०	१२
१३	०४ २६ ०७ १९	०१ ०७ ४५ ३६	०५ ०९ ०९ ५२	०५ ०६ १५ ०७	०६ २१ १९ १६	०४ १४ २३ १८	०३ २५ २६ २८	११ ०१ ३२ २८	१० १८ २९ ४८	०९ २३ ३७ ५४	०८ ०० ०८ ३४	१३
१४	०४ २७ ०५ ४३	०१ २१ १८ ५७	०५ ०९ ४८ ४५	०५ ०७ ५७ ३४	०६ २१ २९ १७	०४ १५ ३७ ४१	०३ २५ ३३ २६	११ ०१ २९ १८	१० १८ २७ २६	०९ २३ ३६ ३६	०८ ०० ०८ ५०	१४
१५	०४ २८ ०४ ०९	०२ ०४ २८ ०८	०५ १० २७ ४१	०५ ०९ ३८ ५५	०६ २१ ३९ २३	०४ १६ ५२ ०६	०३ २५ ४० २२	११ ०१ २६ ०७	१० १८ २५ ०५	०९ २३ ३५ १९	०८ ०० ०९ ०८	१५
१६	०४ २९ ०२ ३७	०२ १७ १५ ४४	०५ ११ ०६ ३९	०५ ११ १९ ११	०६ २१ ४९ ३५	०४ १८ ०६ ३२	०३ २५ ४७ १६	११ ०१ २२ ५६	१० १८ २२ ४४	०९ २३ ३४ ०३	०८ ०० ०९ २८	१६
१७	०५ ०० ०१ ०८	०२ २९ ४५ ०५	०५ ११ ४५ ३९	०५ १२ ५८ २६	०६ २१ ५९ ५२	०४ १९ २१ ०१	०३ २५ ५४ ०७	११ ०१ १९ ४५	१० १८ २० २३	०९ २३ ३२ ४८	०८ ०० ०९ ४०	१७
१८	०५ ०० ५९ ४१	०३ ११ ५९ ४३	०५ १२ २४ ४१	०५ १४ ३६ ३३	०६ २२ १० १५	०४ २० ३५ ३१	०३ २६ ०० ५५	११ ०१ १६ ३४	१० १८ १८ ०४	०९ २३ ३१ ३५	०८ ०० १० १४	१८
१९	०५ ०१ ५८ १५	०३ २४ ०३ ०६	०५ १३ ०३ ४६	०५ १६ १३ ४१	०६ २२ २० ४३	०४ २१ ५० ०३	०३ २६ ०७ ४१	११ ०१ १३ २४	१० १८ १५ ४५	०९ २३ ३० २३	०८ ०० १० ४०	१९
२०	०५ ०२ ५६ ५२	०४ ०५ ५८ २५	०५ १३ ४२ ५३	०५ १७ ४९ ४८	०६ २२ ३१ १७	०४ २३ ०४ ३७	०३ २६ १४ २४	११ ०१ १० १३	१० १८ १३ २७	०९ २३ २९ १२	०८ ०० ११ ०८	२०
२१	०५ ०३ ५५ ३१	०४ १७ ४८ २९	०५ १४ २२ ०२	०५ १९ २४ ५५	०६ २२ ४१ ५६	०४ २४ १९ १२	०३ २६ २१ ०४	११ ०१ ०७ ०२	१० १८ ११ ०९	०९ २३ २८ ०३	०८ ०० ११ ३७	२१
२२	०५ ०४ ५४ १२	०४ २९ ३५ ५१	०५ १५ ०१ १३	०५ २० ५९ ०३	०६ २२ ५२ ४०	०४ २५ ३३ ४९	०३ २६ २७ ४१	११ ०१ ०३ ५२	१० १८ ०८ ५३	०९ २३ २६ ५५	०८ ०० १२ ०९	२२
२३	०५ ०५ ५२ ५५	०५ ११ २२ ५३	०५ १५ ४० २७	०५ २२ ३२ ११	०६ २३ ०३ २९	०४ २६ ४८ २७	०३ २६ ३४ १५	११ ०१ ०० ४१	१० १८ ०६ ३८	०९ २३ २५ ४८	०८ ०० १२ ४३	२३
२४	०५ ०६ ५१ ४०	०५ २३ ११ ४९	०५ १६ १९ ४३	०५ २४ ०४ २२	०६ २३ १४ २३	०४ २८ ०३ ०७	०३ २६ ४० ४६	११ ०० ५७ ३०	१० १८ ०४ २३	०९ २३ २४ ४३	०८ ०० १३ १८	२४
२५	०५ ०७ ५० २६	०६ ०५ ०४ ५९	०५ १६ ५९ ०१	०५ २५ ३५ ३४	०६ २३ २५ २२	०४ २९ १७ ४८	०३ २६ ४७ १४	११ ०० ५४ २०	१० १८ ०२ १०	०९ २३ २३ ४०	०८ ०० १३ ५५	२५
२६	०५ ०८ ४९ १५	०६ १७ ०४ ४४	०५ १७ ३८ २१	०५ २७ ०५ ४८	०६ २३ ३६ २६	०५ ०० ३२ ३१	०३ २६ ५३ ३९	११ ०० ५१ ०९	१० १७ ५९ ५८	०९ २३ २२ ३७	०८ ०० १४ ३५	२६
२७	०५ ०९ ४८ ०५	०६ २९ १३ ४३	०५ १८ १७ ४३	०५ २८ ३५ ०५	०६ २३ ४७ ३४	०५ ०१ ४७ १६	०३ २७ ०० ००	११ ०० ४७ ५८	१० १७ ५७ ४७	०९ २३ २१ ३७	०८ ०० १५ १६	२७
२८	०५ १० ४६ ५७	०७ ११ ३४ ५२	०५ १८ ५७ ०८	०६ ०० ०३ २३	०६ २३ ५८ ४७	०५ ०३ ०१ ५९	०३ २७ ०६ १८	११ ०० ४४ ४७	१० १७ ५५ ३८	०९ २३ २० ३८	०८ ०० १५ ५९	२८
२९	०५ ११ ४५ ५१	०७ २४ ११ २०	०५ १९ ३६ ३४	०६ ०१ ३० ४२	०६ २४ १० ०४	०५ ०४ १६ ४५	०३ २७ १२ ३३	११ ०० ४१ ३६	१० १७ ५३ २९	०९ २३ १९ ४०	०८ ०० १६ ४४	२९
३०	०५ १२ ४४ ४७	०८ ०७ ०६ २३	०५ २० १६ ०३	०६ ०२ ५७ ०१	०६ २४ २१ २६	०५ ०५ ३१ ३३	०३ २७ १८ ४४	११ ०० ३८ २६	१० १७ ५१ २३	०९ २३ १८ ४४	०८ ०० १७ ३०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्टूबर सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५७' ।०५"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
१	०५ १३ ४३ ४४	०८ २० २२ ५७	०५ २० ५५ ३४	०६ ०४ २२ २०	०६ २४ ३२ ५२	०५ ०६ ४६ २१	०३ २७ २४ ५२	११ ०० ३५ १५	१० १७ ४९ १७	०९ २३ १७ ५०	०८ ०० १८ १९	१
२	०५ १४ ४२ ४३	०९ ०४ ०३ १८	०५ २१ ३५ ०७	०६ ०५ ४६ ३७	०६ २४ ४४ २३	०५ ०८ ०१ १०	०३ २७ ३० ५६	११ ०० ३२ ०४	१० १७ ४७ १३	०९ २३ १६ ५८	०८ ०० १९ ०९	२
३	०५ १५ ४१ ४४	०९ १८ ०८ २५	०५ २२ १४ ४३	०६ ०७ ०९ ५१	०६ २४ ५५ ५७	०५ ०९ १६ ०१	०३ २७ ३६ ५७	११ ०० २८ ५३	१० १७ ४५ ११	०९ २३ १६ ०७	०८ ०० २० ०२	३
४	०५ १६ ४० ४७	१० ०२ ३७ २७	०५ २२ ५४ २०	०६ ०८ ३२ ००	०६ २५ ०७ ३५	०५ १० ३० ५२	०३ २७ ४२ ५३	११ ०० २५ ४३	१० १७ ४३ १०	०९ २३ १५ १७	०८ ०० २० ५६	४
५	०५ १७ ३९ ५१	१० १७ २७ ०८	०५ २३ ३४ ००	०६ ०९ ५३ ०२	०६ २५ १९ १८	०५ ११ ४५ ४५	०३ २७ ४८ ४६	११ ०० २२ ३२	१० १७ ४१ ११	०९ २३ १४ ३०	०८ ०० २१ ५२	५
६	०५ १८ ३८ ५७	११ ०२ ३१ ३४	०५ २४ १३ ४२	०६ ११ १२ ५४	०६ २५ ३१ ०४	०५ १३ ०० ३८	०३ २७ ५४ ३५	११ ०० १९ २१	१० १७ ३९ १४	०९ २३ १३ ४४	०८ ०० २२ ४९	६
७	०५ १९ ३८ ०६	११ १७ ४२ ३७	०५ २४ ५३ २६	०६ १२ ३१ ३२	०६ २५ ४२ ५४	०५ १४ १५ ३३	०३ २८ ०० २१	११ ०० १६ ११	१० १७ ३७ १८	०९ २३ १३ ००	०८ ०० २३ ४९	७
८	०५ २० ३७ १६	०० ०२ ५० ४९	०५ २५ ३३ १३	०६ १३ ४८ ५४	०६ २५ ५४ ४८	०५ १५ ३० २८	०३ २८ ०६ ०२	११ ०० १३ ००	१० १७ ३५ २४	०९ २३ १२ १८	०८ ०० २४ ५०	८
९	०५ २१ ३६ २८	०० १७ ४६ ४९	०५ २६ १३ ०२	०६ १५ ०४ ५४	०६ २६ ०६ ४५	०५ १६ ४५ २५	०३ २८ ११ ३९	११ ०० ०९ ४९	१० १७ ३३ ३२	०९ २३ ११ ३७	०८ ०० २५ ५३	९
१०	०५ २२ ३५ ४३	०१ ०२ २२ ४२	०५ २६ ५२ ५३	०६ १६ १९ २८	०६ २६ १८ ४६	०५ १८ ०० २३	०३ २८ १७ १२	११ ०० ०६ ३८	१० १७ ३१ ४२	०९ २३ १० ५८	०८ ०० २६ ५८	१०
११	०५ २३ ३५ ००	०१ १६ ३३ ०६	०५ २७ ३२ ४७	०६ १७ ३२ ३०	०६ २६ ३० ५०	०५ १९ १५ २२	०३ २८ २२ ४१	११ ०० ०३ २७	१० १७ २९ ५३	०९ २३ १० २१	०८ ०० २८ ०४	११
१२	०५ २४ ३४ १९	०२ ०० १५ ३३	०५ २८ १२ ४३	०६ १८ ४३ ५३	०६ २६ ४२ ५८	०५ २० ३० २२	०३ २८ २८ ०६	११ ०० ०० १७	१० १७ २८ ०७	०९ २३ ०९ ४६	०८ ०० २९ १३	१२
१३	०५ २५ ३३ ४०	०२ १३ ३० १५	०५ २८ ५२ ४२	०६ १९ ५३ ३१	०६ २६ ५५ १०	०५ २१ ४५ २३	०३ २८ ३३ २६	१० २९ ५७ ०६	१० १७ २६ २३	०९ २३ ०९ १३	०८ ०० ३० २३	१३
१४	०५ २६ ३३ ०४	०२ २६ १९ ३२	०५ २९ ३२ ४३	०६ २१ ०१ १३	०६ २७ ०७ २४	०५ २३ ०० २५	०३ २८ ३८ ४२	१० २९ ५३ ५५	१० १७ २४ ४०	०९ २३ ०८ ४१	०८ ०० ३१ ३४	१४
१५	०५ २७ ३२ ३०	०३ ०८ ४७ ११	०६ ०० १२ ४७	०६ २२ ०६ ५२	०६ २७ १९ ४२	०५ २४ १५ २८	०३ २८ ४३ ५४	१० २९ ५० ४४	१० १७ २३ ००	०९ २३ ०८ १२	०८ ०० ३२ ४८	१५
१६	०५ २८ ३१ ५८	०३ २० ५७ ४३	०६ ०० ५२ ५३	०६ २३ १० १५	०६ २७ ३२ ०३	०५ २५ ३० ३२	०३ २८ ४९ ०१	१० २९ ४७ ३३	१० १७ २१ २२	०९ २३ ०७ ४४	०८ ०० ३४ ०३	१६
१७	०५ २९ ३१ २९	०४ ०२ ५५ ५२	०६ ०१ ३३ ०२	०६ २४ ११ ०९	०६ २७ ४४ २७	०५ २६ ४५ ३७	०३ २८ ५४ ०३	१० २९ ४४ २३	१० १७ १९ ४७	०९ २३ ०७ १८	०८ ०० ३५ १९	१७
१८	०६ ०० ३१ ०२	०४ १४ ४६ १३	०६ ०२ १३ १३	०६ २५ ०९ २२	०६ २७ ५६ ५४	०५ २८ ०० ४३	०३ २८ ५९ ०१	१० २९ ४१ १२	१० १७ १८ १३	०९ २३ ०६ ५५	०८ ०० ३६ ३८	१८
१९	०६ ०१ ३० ३७	०४ २६ ३२ ५५	०६ ०२ ५३ २७	०६ २६ ०४ ३६	०६ २८ ०९ २४	०५ २९ १५ ४९	०३ २९ ०३ ५५	१० २९ ३८ ०१	१० १७ १६ ४२	०९ २३ ०६ ३३	०८ ०० ३७ ५८	१९
२०	०६ ०२ ३० १५	०५ ०८ १९ ३८	०६ ०३ ३३ ४४	०६ २६ ५६ ३३	०६ २८ २१ ५७	०६ ०० ३० ५७	०३ २९ ०८ ४३	१० २९ ३४ ५१	१० १७ १५ १३	०९ २३ ०६ १३	०८ ०० ३९ १९	२०
२१	०६ ०३ २९ ५४	०५ २० ०९ २२	०६ ०४ १४ ०२	०६ २७ ४४ ५२	०६ २८ ३४ ३३	०६ ०१ ४६ ०५	०३ २९ १३ २६	१० २९ ३१ ४०	१० १७ १३ ४६	०९ २३ ०५ ५५	०८ ०० ४० ४३	२१
२२	०६ ०४ २९ ३६	०६ ०२ ०४ ३६	०६ ०४ ५४ २४	०६ २८ २९ १३	०६ २८ ४७ ११	०६ ०३ ०१ १४	०३ २९ १८ ०५	१० २९ २८ २९	१० १७ १२ २२	०९ २३ ०५ ३९	०८ ०० ४२ ०७	२२
२३	०६ ०५ २९ १९	०६ १४ ०७ १६	०६ ०५ ३४ ४८	०६ २९ ०९ ०८	०६ २८ ५९ ५२	०६ ०४ १६ २४	०३ २९ २२ ३८	१० २९ २५ १९	१० १७ ११ ००	०९ २३ ०५ २५	०८ ०० ४३ ३४	२३
२४	०६ ०६ २९ ०५	०६ २६ १८ ५१	०६ ०६ १५ १४	०६ २९ ४४ १०	०६ २९ १२ ३५	०६ ०५ ३१ ३४	०३ २९ २७ ०७	१० २९ २२ ०८	१० १७ ०९ ४१	०९ २३ ०५ १३	०८ ०० ४५ ०१	२४
२५	०६ ०७ २८ ५२	०७ ०८ ४० ३५	०६ ०६ ५५ ४३	०७ ०० १३ ५०	०६ २९ २५ २१	०६ ०६ ४६ ४५	०३ २९ ३१ ३०	१० २९ १८ ५७	१० १७ ०८ २४	०९ २३ ०५ ०३	०८ ०० ४६ ३१	२५
२६	०६ ०८ २८ ४१	०७ २१ १३ ४३	०६ ०७ ३६ १४	०७ ०० ३७ ३४	०६ २९ ३८ ०९	०६ ०८ ०१ ५६	०३ २९ ३५ ४८	१० २९ १५ ४६	१० १७ ०७ १०	०९ २३ ०४ ५५	०८ ०० ४८ ०२	२६
२७	०६ ०९ २८ ३२	०८ ०३ ५९ ३२	०६ ०८ १६ ४७	०७ ०० ५४ ४९	०६ २९ ५० ५९	०६ ०९ १७ ०७	०३ २९ ४० ०१	१० २९ १२ ३५	१० १७ ०५ ५९	०९ २३ ०४ ४९	०८ ०० ४९ ३४	२७
२८	०६ १० २८ २५	०८ १६ ५९ ३५	०६ ०८ ५७ २३	०७ ०१ ०४ ५७व.	०७ ०० ०३ ५१	०६ १० ३२ १९	०३ २९ ४४ ०८	१० २९ ०९ २४	१० १७ ०४ ५०	०९ २३ ०४ ४५	०८ ०० ५१ ०८	२८
२९	०६ ११ २८ १९	०९ ०० १५ २९	०६ ०९ ३८ ०२	०७ ०१ ०७ २३	०७ ०० १६ ४५	०६ ११ ४७ ३२	०३ २९ ४८ १०	१० २९ ०६ १४	१० १७ ०३ ४३	०९ २३ ०४ ४३	०८ ०० ५२ ४३	२९
३०	०६ १२ २८ १५	०९ १३ ४८ ५२	०६ १० १८ ४२	०७ ०१ ०१ ३२	०७ ०० २९ ४२	०६ १३ ०२ ४५	०३ २९ ५२ ०७	१० २९ ०३ ०३	१० १७ ०२ ४०	०९ २३ ०४ ४३मा.	०८ ०० ५४ २०	३०
३१	०६ १३ २८ १२	०९ २७ ४० ५७	०६ १० ५९ २६	०७ ०० ४६ ५२	०७ ०० ४२ ४०	०६ १४ १७ ५८	०३ २९ ५५ ५८	१० २८ ५९ ५२	१० १७ ०१ ३९	०९ २३ ०४ ४५	०८ ०० ५५ ५८	३१

आर्यभट्ट पंचाङ्गम्

नवम्बर सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५७' ।०९"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

३०	०६ १२ २८ १५	०९ १३ ४८ ५२	०६ १० [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] १७ ०२ ४०	०९ २३ ०४ ४३मा.	०८ ०० ५४ २०	३०
३१	०६ १३ २८ १२	०९ २७ ४० ५७	०६ १० ५९ २६	०७ ०० ४६ ५२	०७ ०० ४२ ४०	०६ १४ १७ ५८	०३ २९ ५५ ५८	१० २८ ५९ ५२	१० १७ ०१ ३९	०९ २३ ०४ ४५	०८ ०० ५५ ५८	३१

नवम्बर सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५७' ०९"

ता. नवं.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस (वक्री) रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. नवं.
१	०६ १४ २८ १२	१० ११ ५२ ११	०६ ११ ४० ११	०७ ०० २२ ५९	०७ ०० ५५ ४०	०६ १५ ३३ ११	०३ २९ ५९ ४३	१० २८ ५६ ४१	१० १७ ०० ४१	०९ २३ ०४ ५०	०८ ०० ५७ ३७	१
२	०६ १५ २८ १२	१० २६ २१ ३३	०६ १२ २० ५९	०६ २९ ४९ ३७	०७ ०१ ०८ ४२	०६ १६ ४८ २५	०४ ०० ०३ २३	१० २८ ५३ ३१	१० १६ ५९ ४५	०९ २३ ०४ ५६	०८ ०० ५९ १८	२
३	०६ १६ २८ १५	११ ११ ०६ ०२	०६ १३ ०१ ४९	०६ २९ ०६ ४५	०७ ०१ २१ ४५	०६ १८ ०३ ३८	०४ ०० ०६ ५८	१० २८ ५० २०	१० १६ ५८ ५३	०९ २३ ०५ ०४	०८ ०१ ०१ ००	३
४	०६ १७ २८ १९	११ २६ ०० १८	०६ १३ ४२ ४२	०६ २८ १४ ४१	०७ ०१ ३४ ५०	०६ १९ १८ ५२	०४ ०० १० २६	१० २८ ४७ ०९	१० १६ ५८ ०३	०९ २३ ०५ १४	०८ ०१ ०२ ४३	४
५	०६ १८ २८ २४	०० १० ५६ ५६	०६ १४ २३ ३८	०६ २७ १४ ०५	०७ ०१ ४७ ५६	०६ २० ३४ ०७	०४ ०० १३ ४९	१० २८ ४३ ५८	१० १६ ५७ १६	०९ २३ ०५ २७	०८ ०१ ०४ २७	५
६	०६ १९ २८ ३२	०० २५ ४७ २३	०६ १५ ०४ ३५	०६ २६ ०६ ०३	०७ ०२ ०१ ०४	०६ २१ ४९ २१	०४ ०० १७ ०६	१० २८ ४० ४८	१० १६ ५६ ३२	०९ २३ ०५ ४१	०८ ०१ ०६ १३	६
७	०६ २० २८ ४१	०१ १० २३ १३	०६ १५ ४५ ३६	०६ २४ ५२ ०७	०७ ०२ १४ १३	०६ २३ ०४ ३७	०४ ०० २० १८	१० २८ ३७ ३७	१० १६ ५५ ५०	०९ २३ ०५ ५८	०८ ०१ ०८ ००	७
८	०६ २१ २८ ५२	०१ २४ ३७ २८	०६ १६ २६ ३९	०६ २३ ३४ १६	०७ ०२ २७ २४	०६ २४ १९ ५२	०४ ०० २३ २३	१० २८ ३४ २६	१० १६ ५५ १२	०९ २३ ०६ १६	०८ ०१ ०९ ४८	८
९	०६ २२ २९ ०६	०२ ०८ २५ ४२	०६ १७ ०७ ४५	०६ २२ १४ ५०	०७ ०२ ४० ३५	०६ २५ ३५ ०८	०४ ०० २६ २२	१० २८ ३१ १५	१० १६ ५४ ३६	०९ २३ ०६ ३६	०८ ०१ ११ ३८	९
१०	०६ २३ २९ २१	०२ २१ ४६ १८	०६ १७ ४८ ५३	०६ २० ५६ १८	०७ ०२ ५३ ४८	०६ २६ ५० २४	०४ ०० २९ १६	१० २८ २८ ०४	१० १६ ५४ ०४	०९ २३ ०६ ५९	०८ ०१ १३ २८	१०
११	०६ २४ २९ ३८	०३ ०४ ४० १७	०६ १८ ३० ०४	०६ १९ ४१ १६	०७ ०३ ०७ ०२	०६ २८ ०५ ४१	०४ ०० ३२ ०३	१० २८ २४ ५३	१० १६ ५३ ३४	०९ २३ ०७ २४	०८ ०१ १५ २०	११
१२	०६ २५ २९ ५७	०३ १७ १० ४८	०६ १९ ११ १८	०६ १८ ३२ ०७	०७ ०३ २० १७	०६ २९ २० ५८	०४ ०० ३४ ४५	१० २८ २१ ४२	१० १६ ५३ ०७	०९ २३ ०७ ५०	०८ ०१ १७ १३	१२
१३	०६ २६ ३० १८	०३ २९ २२ १८	०६ १९ ५२ ३५	०६ १७ ३० ५९	०७ ०३ ३३ ३३	०७ ०० ३६ १५	०४ ०० ३७ २०	१० २८ १८ ३२	१० १६ ५२ ४३	०९ २३ ०८ १९	०८ ०१ १९ ०७	१३
१४	०६ २७ ३० ४१	०४ ११ २० ०२	०६ २० ३३ ५४	०६ १६ ३९ ३०	०७ ०३ ४६ ५०	०७ ०१ ५१ ३३	०४ ०० ३९ ४९	१० २८ १५ २१	१० १६ ५२ २३	०९ २३ ०८ ५०	०८ ०१ २१ ०२	१४
१५	०६ २८ ३१ ०६	०४ २३ ०९ २६	०६ २१ १५ १६	०६ १५ ५८ ५१	०७ ०४ ०० ०८	०७ ०३ ०६ ५१	०४ ०० ४२ १२	१० २८ १२ १०	१० १६ ५२ ०५	०९ २३ ०९ २२	०८ ०१ २२ ५८	१५
१६	०६ २९ ३१ ३३	०५ ०४ ५५ ४६	०६ २१ ५६ ४१	०६ १५ २९ ४३	०७ ०४ १३ २६	०७ ०४ २२ १०	०४ ०० ४४ २८	१० २८ ०९ ००	१० १६ ५१ ५०	०९ २३ ०९ ५७	०८ ०१ २४ ५५	१६
१७	०७ ०० ३२ ०२	०५ १६ ४३ ५१	०६ २२ ३८ ०८	०६ १५ १२१८मा.	०७ ०४ २६ ४५	०७ ०५ ३७ २९	०४ ०० ४६ ३८	१० २८ ०५ ४९	१० १६ ५१ ३९	०९ २३ १० ३४	०८ ०१ २६ ५३	१७
१८	०७ ०१ ३२ ३२	०५ २८ ३७ ४५	०६ २३ १९ ३८	०६ १५ ०६ २७	०७ ०४ ४० ०५	०७ ०६ ५२ ४८	०४ ०० ४८ ४२	१० २८ ०२ ३८	१० १६ ५१ ३०	०९ २३ ११ १३	०८ ०१ २८ ५१	१८
१९	०७ ०२ ३३ ०४	०६ १० ४० ४६	०६ २४ ०१ १०	०६ १५ ११ ४१	०७ ०४ ५३ २५	०७ ०८ ०८ ०७	०४ ०० ५० ३९	१० २७ ५९ २७	१० १६ ५१ २४	०९ २३ ११ ५४	०८ ०१ ३० ५१	१९
२०	०७ ०३ ३३ ३८	०६ २२ ५५ ०९	०६ २४ ४२ ४६	०६ १५ २७ १९	०७ ०५ ०६ ४५	०७ ०९ २३ २७	०४ ०० ५२ ३०	१० २७ ५६ १७	१० १६ ५१ २२	०९ २३ १२ ३६	०८ ०१ ३२ ५२	२०
२१	०७ ०४ ३४ १३	०७ ०५ २२ १०	०६ २५ २४ २३	०६ १५ ५२ ३२	०७ ०५ २० ०६	०७ १० ३८ ४६	०४ ०० ५४ १४	१० २७ ५३ ०६	१० १६ ५१ २२मा.	०९ २३ १३ २१	०८ ०१ ३४ ५३	२१
२२	०७ ०५ ३४ ५०	०७ १८ ०२ ११	०६ २६ ०६ ०४	०६ १६ २६ २८	०७ ०५ ३३ २७	०७ ११ ५४ ०६	०४ ०० ५५ ५१	१० २७ ४९ ५५	१० १६ ५१ २६	०९ २३ १४ ०८	०८ ०१ ३६ ५६	२२
२३	०७ ०६ ३५ २८	०८ ०० ५४ ५३	०६ २६ ४७ ४७	०६ १७ ०८ १३	०७ ०५ ४६ ४८	०७ १३ ०९ २६	०४ ०० ५७ २२	१० २७ ४६ ४४	१० १६ ५१ ३३	०९ २३ १४ ५७	०८ ०१ ३८ ५९	२३
२४	०७ ०७ ३६ ०८	०८ १३ ५९ ३५	०६ २७ २९ ३२	०६ १७ ५६ ५४	०७ ०६ ०० ०९	०७ १४ २४ ४६	०४ ०० ५८ ४७	१० २७ ४३ ३३	१० १६ ५१ ४३	०९ २३ १५ ४७	०८ ०१ ४१ ०३	२४
२५	०७ ०८ ३६ ४९	०८ २७ १५ ३४	०६ २८ ११ २०	०६ १८ ५१ ४१	०७ ०६ १३ ३०	०७ १५ ४० ०६	०४ ०१ ०० ०५	१० २७ ४० २२	१० १६ ५१ ५६	०९ २३ १६ ४०	०८ ०१ ४३ ०८	२५
२६	०७ ०९ ३७ ३१	०९ १० ४२ २३	०६ २८ ५३ ११	०६ १९ ५१ ४९	०७ ०६ २६ ५०	०७ १६ ५५ २६	०४ ०१ ०१ १६	१० २७ ३७ ११	१० १६ ५२ १२	०९ २३ १७ ३५	०८ ०१ ४५ १३	२६
२७	०७ १० ३८ १४	०९ २४ १९ ५६	०६ २९ ३५ ०४	०६ २० ५६ ३६	०७ ०६ ४० ११	०७ १८ १० ४६	०४ ०१ ०२ २०	१० २७ ३४ ००	१० १६ ५२ ३१	०९ २३ १८ ३१	०८ ०१ ४७ २०	२७
२८	०७ ११ ३८ ५८	१० ०८ ०८ २८	०७ ०० १७ ००	०६ २२ ०५ २३	०७ ०६ ५३ ३१	०७ १९ २६ ०६	०४ ०१ ०३ १८	१० २७ ३० ५०	१० १६ ५२ ५३	०९ २३ १९ ३०	०८ ०१ ४९ २६	२८
२९	०७ १२ ३९ ४३	१० २२ ०८ १७	०७ ०० ५८ ५८	०६ २३ १७ ३८	०७ ०७ ०६ ५१	०७ २० ४१ २६	०४ ०१ ०४ ०९	१० २७ २७ ३९	१० १६ ५३ १८	०९ २३ २० ३०	०८ ०१ ५१ ३४	२९
३०	०७ १३ ४० २९	११ ०६ १९ २०	०७ ०१ ४० ५८	०६ २४ ३२ ५२	०७ ०७ २० १०	०७ २१ ५६ ४५	०४ ०१ ०४ ५४	१० २७ २४ २८	१० १६ ५३ ४७	०९ २३ २१ ३२	०८ ०१ ५३ ४२	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिसंबर सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५७' १४"

ता. दिसं.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. दिसं.
१	०७ १४ ४१ १५	११ २० ४० ३०	०७ ०२ २३ ०१	०६ २५ ५० ३८	०७ ०७ ३३ २९	०७ २३ १२ ०४	०४ ०१ ०५ ३१	१० २७ २१ १७	१० १६ ५४ १८	०९ २३ २२ ३६	०८ ०१ ५५ ५०	१
२	०७ १५ ४२ ०३	०० ०५ ०९ ११	०७ ०३ ०५ ०७	०६ २७ १० ३६	०७ ०७ ४६ ४७	०७ २४ २७ २३	०४ ०१ ०६ ०२	१० २७ १८ ०७	१० १६ ५४ ५३	०९ २३ २३ ४२	०८ ०१ ५७ ५९	२
३	०७ १६ ४२ ५२	०० १९ ४० ५९	०७ ०३ ४७ १५	०६ २८ ३२ २५	०७ ०८ ०० ०४	०७ २५ ४२ ४२	०४ ०१ ०६ २७	१० २७ १४ ५६	१० १६ ५५ ३०	०९ २३ २४ ५०	०८ ०२ ०० ०९	३
४	०७ १७ ४३ ४२	०१ ०४ १० ००	०७ ०४ २९ २६	०६ २९ ५५ ४९	०७ ०८ १३ २१	०७ २६ ५८ ०१	०४ ०१ ०६ ४४	१० २७ ११ ४५	१० १६ ५६ ११	०९ २३ २६ ००	०८ ०२ ०२ १९	४
५	०७ १८ ४४ ३२	०१ १८ २९ ३२	०७ ०५ ११ ३९	०७ ०१ २० ३४	०७ ०८ २६ ३६	०७ २८ १३ २०	०४ ०१ ०६ ५५	१० २७ ०८ ३४	१० १६ ५६ ५४	०९ २३ २७ ११	०८ ०२ ०४ ३०	५
६	०७ १९ ४५ २४	०२ ०२ ३३ १५	०७ ०५ ५३ ५५	०७ ०२ ४६ २८	०७ ०८ ३९ ५१	०७ २९ २८ ३८	०४ ०१ ०६ ५९व	१० २७ ०५ २३	१० १६ ५७ ४१	०९ २३ २८ २४	०८ ०२ ०६ ४१	६
७	०७ २० ४६ १७	०२ १६ १६ ०९	०७ ०६ ३६ १४	०७ ०४ १३ २१	०७ ०८ ५३ ०५	०८ ०० ४३ ५७	०४ ०१ ०६ ५७	१० २७ ०२ १२	१० १६ ५८ ३१	०९ २३ २९ ३९	०८ ०२ ०८ ५२	७
८	०७ २१ ४७ ११	०२ २९ ३५ २३	०७ ०७ १८ ३५	०७ ०५ ४१ ०४	०७ ०९ ०६ १७	०८ ०१ ५९ १६	०४ ०१ ०६ ४८	१० २६ ५९ ०१	१० १६ ५९ २४	०९ २३ ३० ५६	०८ ०२ ११ ०४	८
९	०७ २२ ४८ ०७	०३ १२ ३० २७	०७ ०८ ०१ ००	०७ ०७ ०९ ३०	०७ ०९ १९ २९	०८ ०३ १४ ३४	०४ ०१ ०६ ३२	१० २६ ५५ ५०	१० १७ ०० १९	०९ २३ ३२ १४	०८ ०२ १३ १६	९
१०	०७ २३ ४९ ०३	०३ २५ ०३ ०४	०७ ०८ ४३ २६	०७ ०८ ३८ ३३	०७ ०९ ३२ ३९	०८ ०४ २९ ५३	०४ ०१ ०६ ०९	१० २६ ५२ ४०	१० १७ ०१ १८	०९ २३ ३३ ३४	०८ ०२ १५ २८	१०
११	०७ २४ ५० ०१	०४ ०७ १६ ४२	०७ ०९ २५ ५६	०७ १० ०८ ०७	०७ ०९ ४५ ४८	०८ ०५ ४५ ११	०४ ०१ ०५ ३९	१० २६ ४९ २९	१० १७ ०२ २०	०९ २३ ३४ ५६	०८ ०२ १७ ४१	११
१२	०७ २५ ५१ ००	०४ १९ १६ ०५	०७ १० ०८ २८	०७ ११ ३८ ०८	०७ ०९ ५८ ५६	०८ ०७ ०० ३०	०४ ०१ ०५ ०३	१० २६ ४६ १८	१० १७ ०३ २५	०९ २३ ३६ २०	०८ ०२ १९ ५४	१२
१३	०७ २६ ५१ ५९	०५ ०१ ०६ ३५	०७ १० ५१ ०३	०७ १३ ०८ ३२	०७ १० १२ ०२	०८ ०८ १५ ४८	०४ ०१ ०४ २१	१० २६ ४३ ०७	१० १७ ०४ ३२	०९ २३ ३७ ४५	०८ ०२ २२ ०७	१३
१४	०७ २७ ५३ ००	०५ १२ ५३ ५०	०७ ११ ३३ ४१	०७ १४ ३९ १८	०७ १० २५ ०७	०८ ०९ ३१ ०७	०४ ०१ ०३ ३१	१० २६ ३९ ५७	१० १७ ०५ ४३	०९ २३ ३९ १२	०८ ०२ २४ २०	१४
१५	०७ २८ ५४ ०२	०५ २४ ४३ २४	०७ १२ १६ २२	०७ १६ १० २१	०७ १० ३८ १०	०८ १० ४६ २५	०४ ०१ ०२ ३५	१० २६ ३६ ४६	१० १७ ०६ ५७	०९ २३ ४० ४१	०८ ०२ २६ ३४	१५
१६	०७ २९ ५५ ०५	०६ ०६ ४० २३	०७ १२ ५९ ०५	०७ १७ ४१ ४१	०७ १० ५१ ११	०८ १२ ०१ ४४	०४ ०१ ०१ ३२	१० २६ ३३ ३५	१० १७ ०८ १३	०९ २३ ४२ ११	०८ ०२ २८ ४७	१६
१७	०८ ०० ५६ ०९	०६ १८ ४९ ०६	०७ १३ ४१ ५०	०७ १९ १३ १५	०७ ११ ०४ ११	०८ १३ १७ ०२	०४ ०१ ०० २३	१० २६ ३० २४	१० १७ ०९ ३२	०९ २३ ४३ ४२	०८ ०२ ३१ ०१	१७
१८	०८ ०१ ५७ १४	०७ ०१ १२ ५१	०७ १४ २४ ३९	०७ २० ४५ ०३	०७ ११ १७ ०८	०८ १४ ३२ २०	०४ ०० ५९ ०७	१० २६ २७ १३	१० १७ १० ५५	०९ २३ ४५ १६	०८ ०२ ३३ १५	१८
१९	०८ ०२ ५८ १९	०७ १३ ५३ ३५	०७ १५ ०७ ३०	०७ २२ १७ ०४	०७ ११ ३० ०३	०८ १५ ४७ ३८	०४ ०० ५७ ४४	१० २६ २४ ०३	१० १७ १२ २०	०९ २३ ४६ ५०	०८ ०२ ३५ २८	१९
२०	०८ ०३ ५९ २५	०७ २६ ५१ ४८	०७ १५ ५० २३	०७ २३ ४९ १८	०७ ११ ४२ ५७	०८ १७ ०२ ५६	०४ ०० ५६ १५	१० २६ २० ५२	१० १७ १३ ४८	०९ २३ ४८ २७	०८ ०२ ३७ ४२	२०
२१	०८ ०५ ०० ३२	०८ १० ०६ ३४	०७ १६ ३३ २०	०७ २५ २१ ४४	०७ ११ ५५ ४८	०८ १८ १८ १४	०४ ०० ५४ ३९	१० २६ १७ ४१	१० १७ १५ १९	०९ २३ ५० ०५	०८ ०२ ३९ ५६	२१
२२	०८ ०६ ०१ ४०	०८ २३ ३५ ४६	०७ १७ १६ १८	०७ २६ ५४ २२	०७ १२ ०८ ३७	०८ १९ ३३ ३१	०४ ०० ५२ ५७	१० २६ १४ ३०	१० १७ १६ ५३	०९ २३ ५१ ४४	०८ ०२ ४२ ०९	२२
२३	०८ ०७ ०२ ४७	०९ ०७ १६ ३३	०७ १७ ५९ २०	०७ २८ २७ १२	०७ १२ २१ २३	०८ २० ४८ ४९	०४ ०० ५१ ०९	१० २६ ११ १९	१० १७ १८ २९	०९ २३ ५३ २५	०८ ०२ ४४ २३	२३
२४	०८ ०८ ०३ ५५	०९ २१ ०५ ५७	०७ १८ ४२ २३	०८ ०० ०० १५	०७ १२ ३४ ०७	०८ २२ ०४ ०५	०४ ०० ४९ १४	१० २६ ०८ ०८	१० १७ २० ०८	०९ २३ ५५ ०७	०८ ०२ ४६ ३६	२४
२५	०८ ०९ ०५ ०३	१० ०५ ०१ २१	०७ १९ २५ ३०	०८ ०१ ३३ ३०	०७ १२ ४६ ४९	०८ २३ १९ २२	०४ ०० ४७ १३	१० २६ ०४ ५७	१० १७ २१ ५०	०९ २३ ५६ ५०	०८ ०२ ४८ ५०	२५
२६	०८ १० ०६ १२	१० १९ ०० ५१	०७ २० ०८ ३८	०८ ०३ ०६ ५९	०७ १२ ५९ २७	०८ २४ ३४ ३७	०४ ०० ४५ ०६	१० २६ ०१ ४७	१० १७ २३ ३५	०९ २३ ५८ ३५	०८ ०२ ५१ ०३	२६
२७	०८ ११ ०७ २०	११ ०३ ०३ १६	०७ २० ५१ ४९	०८ ०४ ४० ४२	०७ १३ १२ ०३	०८ २५ ४९ ५३	०४ ०० ४२ ५३	१० २५ ५८ ३६	१० १७ २५ २२	०९ २४ ०० २२	०८ ०२ ५३ १५	२७
२८	०८ १२ ०८ २८	११ १७ ०७ ५४	०७ २१ ३५ ०२	०८ ०६ १४ ३९	०७ १३ २४ ३६	०८ २७ ०५ ०७	०४ ०० ४० ३३	१० २५ ५५ २५	१० १७ २७ १२	०९ २४ ०२ ०९	०८ ०२ ५५ २८	२८
२९	०८ १३ ०९ ३६	०० ०१ १४ ०८	०७ २२ १८ १८	०८ ०७ ४८ ५१	०७ १३ ३७ ०६	०८ २८ २० २१	०४ ०० ३८ ०८	१० २५ ५२ १४	१० १७ २९ ०५	०९ २४ ०३ ५८	०८ ०२ ५७ ४०	२९
३०	०८ १४ १० ४५	०० १५ २० ४८	०७ २३ ०१ ३६	०८ ०९ २३ १९	०७ १३ ४९ ३३	०८ २९ ३५ ३४	०४ ०० ३५ ३७	१० २५ ४९ ०३	१० १७ ३१ ००	०९ २४ ०५ ४८	०८ ०२ ५९ ५२	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जनवरी सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५७' २०"

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जनवरी सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५७' २०"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जनवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जनवरी
१	०८ १६ १३ ००	०१ १३ २६ ३४	०७ २४ २८ २०	०८ १२ ३३ ०६	०७ १४ १४ १८	०९ ०२ ०५ ५९	०४ ०० ३० १८	१० २५ ४२ ४२	१० १७ ३४ ५९	०९ २४ ०९ ३२	०८ ०३ ०४ १४	१
२	०८ १७ १४ ०८	०१ २७ १९ ०३	०७ २५ ११ ४६	०८ १४ ०८ २८	०७ १४ २६ ३६	०९ ०३ २१ १०	०४ ०० २७ २९	१० २५ ३९ ३१	१० १७ ३७ ०१	०९ २४ ११ २६	०८ ०३ ०६ २५	२
३	०८ १८ १५ १६	०२ १० ५९ २७	०७ २५ ५५ १४	०८ १५ ४४ १०	०७ १४ ३८ ५०	०९ ०४ ३६ २१	०४ ०० २४ ३६	१० २५ ३६ २०	१० १७ ३९ ०७	०९ २४ १३ २१	०८ ०३ ०८ ३५	३
४	०८ १९ १६ २४	०२ २४ २४ १४	०७ २६ ३८ ४५	०८ १७ २० १२	०७ १४ ५१ ००	०९ ०५ ५१ ३०	०४ ०० २१ ३६	१० २५ ३३ ०९	१० १७ ४१ १४	०९ २४ १५ १७	०८ ०३ १० ४५	४
५	०८ २० १७ ३२	०३ ०७ ३० ५६	०७ २७ २२ १८	०८ १८ ५६ ३६	०७ १५ ०३ ०८	०९ ०७ ०६ ४०	०४ ०० १८ ३२	१० २५ २९ ५८	१० १७ ४३ २५	०९ २४ १७ १४	०८ ०३ १२ ५४	५
६	०८ २१ १८ ४०	०३ २० १८ ३१	०७ २८ ०५ ५४	०८ २० ३३ २३	०७ १५ १५ ११	०९ ०८ २१ ४८	०४ ०० १५ २२	१० २५ २६ ४७	१० १७ ४५ ३७	०९ २४ १९ १२	०८ ०३ १५ ०३	६
७	०८ २२ १९ ४८	०४ ०२ ४७ ३४	०७ २८ ४९ ३२	०८ २२ १० ३३	०७ १५ २७ ११	०९ ०९ ३६ ५६	०४ ०० १२ ०७	१० २५ २३ ३६	१० १७ ४७ ५२	०९ २४ २१ ११	०८ ०३ १७ ११	७
८	०८ २३ २० ५६	०४ १५ ०० १४	०७ २९ ३३ १३	०८ २३ ४८ ०७	०७ १५ ३९ ०८	०९ १० ५२ ०४	०४ ०० ०८ ४७	१० २५ २० २६	१० १७ ५० १०	०९ २४ २३ १२	०८ ०३ १९ १९	८
९	०८ २४ २२ ०४	०४ २७ ०० ०१	०८ ०० १६ ५६	०८ २५ २६ ०५	०७ १५ ५१ ००	०९ १२ ०७ १०	०४ ०० ०५ २२	१० २५ १७ १५	१० १७ ५२ २९	०९ २४ २५ १३	०८ ०३ २१ २६	९
१०	०८ २५ २३ १३	०५ ०८ ५१ २१	०८ ०१ ०० ४२	०८ २७ ०४ २९	०७ १६ ०२ ४८	०९ १३ २२ १६	०४ ०० ०१ ५२	१० २५ १४ ०४	१० १७ ५४ ५१	०९ २४ २७ १५	०८ ०३ २३ ३२	१०
११	०८ २६ २४ २१	०५ २० ३९ २०	०८ ०१ ४४ ३१	०८ २८ ४३ १८	०७ १६ १४ ३३	०९ १४ ३७ २१	०३ २९ ५८ १७	१० २५ १० ५३	१० १७ ५७ १५	०९ २४ २९ १८	०८ ०३ २५ ३८	११
१२	०८ २७ २५ २९	०६ ०२ २९ २२	०८ ०२ २८ २२	०९ ०० २२ ३३	०७ १६ २६ १३	०९ १५ ५२ २६	०३ २९ ५४ ३७	१० २५ ०७ ४३	१० १७ ५९ ४२	०९ २४ ३१ २२	०८ ०३ २७ ४३	१२
१३	०८ २८ २६ ३७	०६ १४ २६ ५५	०८ ०३ १२ १६	०९ ०२ ०२ १५	०७ १६ ३७ ४९	०९ १७ ०७ ३०	०३ २९ ५० ५३	१० २५ ०४ ३२	१० १८ ०२ १०	०९ २४ ३३ २७	०८ ०३ २९ ४७	१३
१४	०८ २९ २७ ४५	०६ २६ ३७ ०२	०८ ०३ ५६ १२	०९ ०३ ४२ २२	०७ १६ ४९ २०	०९ १८ २२ ३३	०३ २९ ४७ ०४	१० २५ ०१ २१	१० १८ ०४ ४१	०९ २४ ३५ ३३	०८ ०३ ३१ ५०	१४
१५	०९ ०० २८ ५३	०७ ०९ ०४ ०७	०८ ०४ ४० १०	०९ ०५ २२ ५५	०७ १७ ०० ४७	०९ १९ ३७ ३५	०३ २९ ४३ ११	१० २४ ५८ १०	१० १८ ०७ १३	०९ २४ ३७ ३९	०८ ०३ ३३ ५३	१५
१६	०९ ०१ ३० ०१	०७ २१ ५१ २४	०८ ०५ २४ ११	०९ ०७ ०३ ५३	०७ १७ १२ १०	०९ २० ५२ ३६	०३ २९ ३९ १४	१० २४ ५४ ५९	१० १८ ०९ ४८	०९ २४ ३९ ४७	०८ ०३ ३५ ५५	१६
१७	०९ ०२ ३१ ०८	०८ ०५ ०० ३४	०८ ०६ ०८ १५	०९ ०८ ४५ १४	०७ १७ २३ २८	०९ २२ ०७ ३७	०३ २९ ३५ १३	१० २४ ५१ ४८	१० १८ १२ २५	०९ २४ ४१ ५५	०८ ०३ ३७ ५५	१७
१८	०९ ०३ ३२ १५	०८ १८ ३१ २५	०८ ०६ ५२ २०	०९ १० २६ ५७	०७ १७ ३४ ४१	०९ २३ २२ ३७	०३ २९ ३१ ०८	१० २४ ४८ ३७	१० १८ १५ ०४	०९ २४ ४४ ०४	०८ ०३ ३९ ५५	१८
१९	०९ ०४ ३३ २२	०९ ०२ २१ ५२	०८ ०७ ३६ २८	०९ १२ ०८ ५९	०७ १७ ४५ ४९	०९ २४ ३७ ३६	०३ २९ २६ ५९	१० २४ ४५ २७	१० १८ १७ ४५	०९ २४ ४६ १३	०८ ०३ ४१ ५५	१९
२०	०९ ०५ ३४ २८	०९ १६ २८ ०६	०८ ०८ २० ३९	०९ १३ ५१ १८	०७ १७ ५६ ५३	०९ २५ ५२ ३३	०३ २९ २२ ४७	१० २४ ४२ १६	१० १८ २० २७	०९ २४ ४८ २४	०८ ०३ ४३ ५३	२०
२१	०९ ०६ ३५ ३३	१० ०० ४५ १२	०८ ०९ ०४ ५१	०९ १५ ३३ ४१	०७ १८ ०७ ५१	०९ २७ ०७ ३०	०३ २९ १८ ३०	१० २४ ३९ ०५	१० १८ २३ १२	०९ २४ ५० ३५	०८ ०३ ४५ ५०	२१
२२	०९ ०७ ३६ ३८	१० १५ ०७ ५०	०८ ०९ ४९ ०६	०९ १७ १६ २९	०७ १८ १८ ४४	०९ २८ २२ २५	०३ २९ १४ ११	१० २४ ३५ ५४	१० १८ २५ ५९	०९ २४ ५२ ४६	०८ ०३ ४७ ४६	२२
२३	०९ ०८ ३७ ४२	१० २९ ३१ ०८	०८ १० ३३ २३	०९ १८ ५९ ११	०७ १८ २९ ३१	०९ २९ ३७ १९	०३ २९ ०९ ४८	१० २४ ३२ ४४	१० १८ २८ ४७	०९ २४ ५४ ५८	०८ ०३ ४९ ४१	२३
२४	०९ ०९ ३८ ४४	११ १३ ५१ ०८	०८ ११ १७ ४२	०९ २० ४१ ४८	०७ १८ ४० १३	१० ०० ५२ १२	०३ २९ ०५ २३	१० २४ २९ ३३	१० १८ ३१ ३७	०९ २४ ५७ ११	०८ ०३ ५१ ३५	२४
२५	०९ १० ३९ ४६	११ २८ ०५ ०५	०८ १२ ०२ ०३	०९ २२ २४ १३	०७ १८ ५० ५०	१० ०२ ०७ ०३	०३ २९ ०० ५४	१० २४ २६ २२	१० १८ ३४ २९	०९ २४ ५९ २४	०८ ०३ ५३ २८	२५
२६	०९ ११ ४० ४७	०० १२ ११ १३	०८ १२ ४६ २७	०९ २४ ०६ १५	०७ १९ ०१ २१	१० ०३ २१ ५२	०३ २८ ५६ २३	१० २४ २३ ११	१० १८ ३७ २२	०९ २५ ०१ ३७	०८ ०३ ५५ २०	२६
२७	०९ १२ ४१ ४६	०० २६ ०८ २६	०८ १३ ३० ५२	०९ २५ ४७ ४२	०७ १९ ११ ४६	१० ०४ ३६ ४१	०३ २८ ५१ ४९	१० २४ २० ००	१० १८ ४० १७	०९ २५ ०३ ५१	०८ ०३ ५७ १०	२७
२८	०९ १३ ४२ ४४	०१ ०९ ५५ ५९	०८ १४ १५ १९	०९ २७ २८ १९	०७ १९ २२ ०६	१० ०५ ५१ २७	०३ २८ ४७ १३	१० २४ १६ ५०	१० १८ ४३ १४	०९ २५ ०६ ०५	०८ ०३ ५९ ००	२८
२९	०९ १४ ४३ ४२	०१ २३ ३३ ०५	०८ १४ ५९ ४९	०९ २९ ०७ ५१	०७ १९ ३२ १९	१० ०७ ०६ १२	०३ २८ ४२ ३४	१० २४ १३ ३९	१० १८ ४६ १२	०९ २५ ०८ २०	०८ ०४ ०० ४८	२९
३०	०९ १५ ४४ ३८	०२ ०६ ५८ ५२	०८ १५ ४४ २१	१० ०० ४५ ५७	०७ १९ ४२ २७	१० ०८ २० ५५	०३ २८ ३७ ५४	१० २४ १० २८	१० १८ ४९ ११	०९ २५ १० ३५	०८ ०४ ०२ ३५	३०
३१	०९ १६ ४५ ३२	०२ २० १२ २३	०८ १६ २८ ५५	१० ०२ २२ १५	०७ १९ ५२ २९	१० ०९ ३५ ३६	०३ २८ ३३ १२	१० २४ ०७ १७	१० १८ ५२ १३	०९ २५ १२ ५०	०८ ०४ ०४ २१	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फरवरी सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५७' ।२६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फरवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फरवरी
१	०९ १७ ४६ २६	०३ ०३ १२ ४१	०८ १७ १३ ३१	१० ०३ ५६ २०	०७ २० ०२ २४	१० १० ५० १५	०३ २८ २८ २७	१० २४ ०४ ०६	१० १८ ५५ १५	०९ २५ १५ ०६	०८ ०४ ०६ ०६	१
२	०९ १८ ४७ १९	०३ १५ ५९ ०६	०८ १७ ५८ ०९	१० ०५ २७ ४३	०७ २० १२ १४	१० १२ ०४ ५३	०३ २८ २३ ४२	१० २४ ०० ५५	१० १८ ५८ १९	०९ २५ १७ २२	०८ ०४ ०७ ४९	२
३	०९ १९ ४८ १०	०३ २८ ३१ २९	०८ १८ ४२ ४९	१० ०६ ५५ ५१	०७ २० २१ ५७	१० १३ १९ २९	०३ २८ १८ ५४	१० २३ ५७ ४४	१० १९ ०१ २५	०९ २५ १९ ३८	०८ ०४ ०९ ३१	३
४	०९ २० ४९ ०१	०४ १० ५० २४	०८ १९ २७ ३२	१० ०८ २० ०९	०७ २० ३१ ३३	१० १४ ३४ ०३	०३ २८ १४ ०६	१० २३ ५४ ३४	१० १९ ०४ ३१	०९ २५ २१ ५४	०८ ०४ ११ १२	४
५	०९ २१ ४९ ५१	०४ २२ ५७ १९	०८ २० १२ १७	१० ०९ ३९ ५७	०७ २० ४१ ०४	१० १५ ४८ ३५	०३ २८ ०९ १६	१० २३ ५१ २३	१० १९ ०७ ३९	०९ २५ २४ ११	०८ ०४ १२ ५१	५
६	०९ २२ ५० ३९	०५ ०४ ५४ ३३	०८ २० ५७ ०४	१० १० ५४ ३३	०७ २० ५० २७	१० १७ ०३ ०६	०३ २८ ०४ २५	१० २३ ४८ १२	१० १९ १० ४८	०९ २५ २६ २७	०८ ०४ १४ २९	६
७	०९ २३ ५१ २७	०५ १६ ४५ १८	०८ २१ ४१ ५३	१० १२ ०३ १२	०७ २० ५९ ४४	१० १८ १७ ३४	०३ २७ ५९ ३४	१० २३ ४५ ०२	१० १९ १३ ५९	०९ २५ २८ ४४	०८ ०४ १६ ०६	७
८	०९ २४ ५२ १३	०५ २८ ३३ २८	०८ २२ २६ ४४	१० १३ ०५ ०९	०७ २१ ०८ ५४	१० १९ ३२ ०१	०३ २७ ५४ ४२	१० २३ ४१ ५१	१० १९ १७ १०	०९ २५ ३१ ०१	०८ ०४ १७ ४१	८
९	०९ २५ ५२ ५९	०६ १० २३ ३०	०८ २३ ११ ३७	१० १३ ५९ ३८	०७ २१ १७ ५७	१० २० ४६ २६	०३ २७ ४९ ४९	१० २३ ३८ ४०	१० १९ २० २३	०९ २५ ३३ १७	०८ ०४ १९ १४	९
१०	०९ २६ ५३ ४३	०६ २२ २० १५	०८ २३ ५६ ३३	१० १४ ४५ ५३	०७ २१ २६ ५३	१० २२ ०० ४९	०३ २७ ४४ ५६	१० २३ ३५ ३०	१० १९ २३ ३६	०९ २५ ३५ ३४	०८ ०४ २० ४६	१०
११	०९ २७ ५४ २६	०७ ०४ २८ ४१	०८ २४ ४१ ३०	१० १५ २३ १३	०७ २१ ३५ ४१	१० २३ १५ १०	०३ २७ ४० ०२	१० २३ ३२ १९	१० १९ २६ ५१	०९ २५ ३७ ५१	०८ ०४ २२ १७	११
१२	०९ २८ ५५ ०९	०७ १६ ५३ ३९	०८ २५ २६ ३०	१० १५ ५१ ०१	०७ २१ ४४ २३	१० २४ २९ २८	०३ २७ ३५ ०९	१० २३ २९ ०८	१० १९ ३० ०७	०९ २५ ४० ०७	०८ ०४ २३ ४६	१२
१३	०९ २९ ५५ ५०	०७ २९ ३९ २१	०८ २६ ११ ३१	१० १६ ०८ ४५	०७ २१ ५२ ५७	१० २५ ४३ ४५	०३ २७ ३० १६	१० २३ २५ ५७	१० १९ ३३ २४	०९ २५ ४२ २४	०८ ०४ २५ १४	१३
१४	१० ०० ५६ ३०	०८ १२ ४८ ५३	०८ २६ ५६ ३५	१० १६ १६ ०५व.	०७ २२ ०१ २४	१० २६ ५८ ००	०३ २७ २५ २३	१० २३ २२ ४६	१० १९ ३६ ४१	०९ २५ ४४ ४०	०८ ०४ २६ ४०	१४
१५	१० ०१ ५७ ०९	०८ २६ २३ ४७	०८ २७ ४१ ४०	१० १६ १२ ५१	०७ २२ ०९ ४३	१० २८ १२ १३	०३ २७ २० ३१	१० २३ १९ ३५	१० १९ ४० ००	०९ २५ ४६ ५७	०८ ०४ २८ ०४	१५
१६	१० ०२ ५७ ४७	०९ १० २३ ३०	०८ २८ २६ ४८	१० १५ ५९ ०५	०७ २२ १७ ५४	१० २९ २६ २३	०३ २७ १५ ४०	१० २३ १६ २४	१० १९ ४३ १९	०९ २५ ४९ १३	०८ ०४ २९ २७	१६
१७	१० ०३ ५८ २३	०९ २४ ४५ ०७	०८ २९ ११ ५७	१० १५ ३५ ०६	०७ २२ २५ ५७	११ ०० ४० ३१	०३ २७ १० ४९	१० २३ १३ १४	१० १९ ४६ ३९	०९ २५ ५१ २९	०८ ०४ ३० ४९	१७
१८	१० ०४ ५८ ५८	१० ०९ २३ ३३	०८ २९ ५७ ०८	१० १५ ०१ २८	०७ २२ ३३ ५३	११ ०१ ५४ ३७	०३ २७ ०५ ५९	१० २३ १० ०३	१० १९ ५० ००	०९ २५ ५३ ४४	०८ ०४ ३२ ०८	१८
१९	१० ०५ ५९ ३२	१० २४ ११ ५९	०९ ०० ४२ २०	१० १४ १९ ०२	०७ २२ ४१ ४०	११ ०३ ०८ ४१	०३ २७ ०१ ११	१० २३ ०६ ५२	१० १९ ५३ २१	०९ २५ ५६ ००	०८ ०४ ३३ २६	१९
२०	१० ०७ ०० ०३	११ ०९ ०२ ५१	०९ ०१ २७ ३४	१० १३ २८ ५४	०७ २२ ४९ १९	११ ०४ २२ ४१	०३ २६ ५६ २४	१० २३ ०३ ४२	१० १९ ५६ ४३	०९ २५ ५८ १५	०८ ०४ ३४ ४३	२०
२१	१० ०८ ०० ३३	११ २३ ४८ ५३	०९ ०२ १२ ५०	१० १२ ३२ २५	०७ २२ ५६ ५०	११ ०५ ३६ ४०	०३ २६ ५१ ३८	१० २३ ०० ३१	१० २० ०० ०६	०९ २६ ०० २९	०८ ०४ ३५ ५७	२१
२२	१० ०९ ०१ ०२	०० ०८ २४ ०३	०९ ०२ ५८ ०८	१० ११ ३१ ०८	०७ २३ ०४ १३	११ ०६ ५० ३५	०३ २६ ४६ ५४	१० २२ ५७ २०	१० २० ०३ २९	०९ २६ ०२ ४३	०८ ०४ ३७ १०	२२
२३	१० १० ०१ २८	०० २२ ४४ ०१	०९ ०३ ४३ २६	१० १० २६ ३९	०७ २३ ११ २७	११ ०८ ०४ २८	०३ २६ ४२ १२	१० २२ ५४ ०९	१० २० ०६ ५३	०९ २६ ०४ ५७	०८ ०४ ३८ २१	२३
२४	१० ११ ०१ ५२	०१ ०६ ४६ १८	०९ ०४ २८ ४७	१० ०९ २० ४२	०७ २३ १८ ३२	११ ०९ १८ १७	०३ २६ ३७ ३२	१० २२ ५० ५९	१० २० १० १७	०९ २६ ०७ १०	०८ ०४ ३९ ३१	२४
२५	१० १२ ०२ १५	०१ २० ३० ०२	०९ ०५ १४ ०९	१० ०८ १४ ५५	०७ २३ २५ २९	११ १० ३२ ०४	०३ २६ ३२ ५५	१० २२ ४७ ४८	१० २० १३ ४१	०९ २६ ०९ २३	०८ ०४ ४० ३८	२५
२६	१० १३ ०२ ३५	०२ ०३ ५५ ३०	०९ ०५ ५९ ३२	१० ०७ १० ५३	०७ २३ ३२ १८	११ ११ ४५ ४७	०३ २६ २८ २०	१० २२ ४४ ३७	१० २० १७ ०६	०९ २६ ११ ३६	०८ ०४ ४१ ४४	२६
२७	१० १४ ०२ ५३	०२ १७ ०३ ४८	०९ ०६ ४४ ५७	१० ०६ ०९ ५८	०७ २३ ३८ ५७	११ १२ ५९ २८	०३ २६ २३ ४७	१० २२ ४१ २६	१० २० २० ३२	०९ २६ १३ ४७	०८ ०४ ४२ ४८	२७
२८	१० १५ ०३ १०	०२ २९ ५६ २५	०९ ०७ ३० २३	१० ०५ १३ २१	०७ २३ ४५ २७	११ १४ १३ ०५	०३ २६ १९ १७	१० २२ ३८ १५	१० २० २३ ५७	०९ २६ १५ ५९	०८ ०४ ४३ ५१	२८

मार्च सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड [illegible] स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५७' ।३०"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi, Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२७	१० १४ ०२ ५३	०२ १७ ०३ ४८	०९ ०६ ४४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] २० ३२	०९ २६ १३ ४७	०८ ०४ ४२ ४८	२७
२८	१० १५ ०३ १०	०२ २९ ५६ २५	०९ ०७ ३० २३	१० ०५ १३ २१	०७ २३ ४५ २७	११ १४ १३ ०५	०३ २६ १९ १७	१० २२ ३८ १५	१० २० २३ ५७	०९ २६ १५ ५९	०८ ०४ ४३ ५१	२८

मार्च सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५७' ।३०"

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. मार्च
१	१० १६ ०३ २४	०३ १२ ३५ ०१	०९ ०८ १५ ५१	१० ०४ २२ ०२	०७ २३ ५१ ४९	११ १५ २६ ३९	०३ २६ १४ ४९	१० २२ ३५ ०४	१० २० २७ २३	०९ २६ १८ ०९	०८ ०४ ४४ ५१	१
२	१० १७ ०३ ३७	०३ २५ ०१ १२	०९ ०९ ०१ २१	१० ०३ ३६ ४३	०७ २३ ५८ ०२	११ १६ ४० ०९	०३ २६ १० २५	१० २२ ३१ ५४	१० २० ३० ४९	०९ २६ २० १९	०८ ०४ ४५ ५०	२
३	१० १८ ०३ ४८	०४ ०७ १६ ३३	०९ ०९ ४६ ५२	१० ०२ ५७ ५५	०७ २४ ०४ ०५	११ १७ ५३ ३७	०३ २६ ०६ ०३	१० २२ २८ ४३	१० २० ३४ १५	०९ २६ २२ २९	०८ ०४ ४६ ४७	३
४	१० १९ ०३ ५७	०४ १९ २२ ३७	०९ १० ३२ २४	१० ०२ २५ ५८	०७ २४ ०९ ५९	११ १९ ०७ ०१	०३ २६ ०१ ४५	१० २२ २५ ३२	१० २० ३७ ४१	०९ २६ २४ ३७	०८ ०४ ४७ ४२	४
५	१० २० ०४ ०४	०५ ०१ २१ ०७	०९ ११ १७ ५८	१० ०२ ०० ५८	०७ २४ १५ ४४	११ २० २० २१	०३ २५ ५७ ३०	१० २२ २२ २२	१० २० ४१ ०७	०९ २६ २६ ४५	०८ ०४ ४८ ३५	५
६	१० २१ ०४ ०९	०५ १३ १३ ५९	०९ १२ ०३ ३४	१० ०१ ४२ ५६	०७ २४ २१ १९	११ २१ ३३ ३८	०३ २५ ५३ १९	१० २२ १९ ११	१० २० ४४ ३४	०९ २६ २८ ५३	०८ ०४ ४९ २६	६
७	१० २२ ०४ १३	०५ २५ ०३ ३०	०९ १२ ४९ ११	१० ०१ ३१ ४६	०७ २४ २६ ४५	११ २२ ४६ ५२	०३ २५ ४९ ११	१० २२ १६ ००	१० २० ४८ ००	०९ २६ ३० ५९	०८ ०४ ५० १६	७
८	१० २३ ०४ १५	०६ ०६ ५२ २०	०९ १३ ३४ ४९	१० ०१ २७ १५मा.	०७ २४ ३२ ०२	११ २४ ०० ०२	०३ २५ ४५ ०७	१० २२ १२ ५०	१० २० ५१ २६	०९ २६ ३३ ०५	०८ ०४ ५१ ०३	८
९	१० २४ ०४ १५	०६ १८ ४३ ३७	०९ १४ २० २९	१० ०१ २९ ०८	०७ २४ ३७ ०८	११ २५ १३ ०८	०३ २५ ४१ ०७	१० २२ ०९ ३९	१० २० ५४ ५२	०९ २६ ३५ १०	०८ ०४ ५१ ४९	९
१०	१० २५ ०४ १३	०७ ०० ४१ ००	०९ १५ ०६ १०	१० ०१ ३७ ०८	०७ २४ ४२ ०५	११ २६ २६ ११	०३ २५ ३७ १०	१० २२ ०६ २८	१० २० ५८ १८	०९ २६ ३७ १३	०८ ०४ ५२ ३३	१०
११	१० २६ ०४ १०	०७ १२ ४८ ३१	०९ १५ ५१ ५२	१० ०१ ५० ५५	०७ २४ ४६ ५२	११ २७ ३९ १०	०३ २५ ३३ १८	१० २२ ०३ १७	१० २१ ०१ ४४	०९ २६ ३९ १७	०८ ०४ ५३ १५	११
१२	१० २७ ०४ ०५	०७ २५ १० २७	०९ १६ ३७ ३६	१० ०२ १० ११	०७ २४ ५१ २९	११ २८ ५२ ०६	०३ २५ २९ ३०	१० २२ ०० ०६	१० २१ ०५ १०	०९ २६ ४१ १९	०८ ०४ ५३ ५५	१२
१३	१० २८ ०३ ५९	०८ ०७ ५१ ०४	०९ १७ २३ २१	१० ०२ ३४ ३५	०७ २४ ५५ ५५	०० ०० ०४ ५८	०३ २५ २५ ४६	१० २१ ५६ ५६	१० २१ ०८ ३५	०९ २६ ४३ २०	०८ ०४ ५४ ३३	१३
१४	१० २९ ०३ ५१	०८ २० ५४ १४	०९ १८ ०९ ०८	१० ०३ ०३ ४९	०७ २५ ०० १२	०० ०१ १७ ४७	०३ २५ २२ ०७	१० २१ ५३ ४५	१० २१ १२ ००	०९ २६ ४५ २०	०८ ०४ ५५ ०९	१४
१५	११ ०० ०३ ४१	०९ ०४ २२ ५१	०९ १८ ५४ ५५	१० ०३ ३७ ३५	०७ २५ ०४ १८	०० ०२ ३० ३१	०३ २५ १८ ३२	१० २१ ५० ३४	१० २१ १५ २५	०९ २६ ४७ २०	०८ ०४ ५५ ४३	१५
१६	११ ०१ ०३ ३०	०९ १८ १८ २१	०९ १९ ४० ४४	१० ०४ १५ ३५	०७ २५ ०८ १४	०० ०३ ४३ १२	०३ २५ १५ ०२	१० २१ ४७ २३	१० २१ १८ ४९	०९ २६ ४९ १८	०८ ०४ ५६ १६	१६
१७	११ ०२ ०३ १६	१० ०२ ४० ०१	०९ २० २६ ३४	१० ०४ ५७ ३२	०७ २५ १२ ००	०० ०४ ५५ ४९	०३ २५ ११ ३७	१० २१ ४४ १३	१० २१ २२ १३	०९ २६ ५१ १५	०८ ०४ ५६ ४६	१७
१८	११ ०३ ०३ ०१	१० १७ २४ २८	०९ २१ १२ २४	१० ०५ ४३ १२	०७ २५ १५ ३५	०० ०६ ०८ २२	०३ २५ ०८ १६	१० २१ ४१ ०२	१० २१ २५ ३७	०९ २६ ५३ १२	०८ ०४ ५७ १४	१८
१९	११ ०४ ०२ ४४	११ ०२ २५ ३६	०९ २१ ५८ १६	१० ०६ ३२ २१	०७ २५ १८ ५९	०० ०७ २० ५१	०३ २५ ०५ ०१	१० २१ ३७ ५१	१० २१ २९ ००	०९ २६ ५५ ०७	०८ ०४ ५७ ४१	१९
२०	११ ०५ ०२ २५	११ १७ ३५ ०२	०९ २२ ४४ ०८	१० ०७ २४ ४५	०७ २५ २२ १३	०० ०८ ३३ १६	०३ २५ ०१ ५०	१० २१ ३४ ४१	१० २१ ३२ २२	०९ २६ ५७ ०१	०८ ०४ ५८ ०५	२०
२१	११ ०६ ०२ ०४	०० ०२ ४३ १४	०९ २३ ३० ०१	१० ०८ २० १२	०७ २५ २५ १६	०० ०९ ४५ ३७	०३ २४ ५८ ४५	१० २१ ३१ ३०	१० २१ ३५ ४४	०९ २६ ५८ ५३	०८ ०४ ५८ २७	२१
२२	११ ०७ ०१ ४१	०० १७ ४१ ००	०९ २४ १५ ५५	१० ०९ १८ ३२	०७ २५ २८ ०८	०० १० ५७ ५३	०३ २४ ५५ ४५	१० २१ २८ १९	१० २१ ३९ ०५	०९ २७ ०० ४५	०८ ०४ ५८ ४८	२२
२३	११ ०८ ०१ १५	०१ ०२ २० ४५	०९ २५ ०१ ४९	१० १० १९ ३५	०७ २५ ३० ४९	०० १२ १० ०५	०३ २४ ५२ ५१	१० २१ २५ ०८	१० २१ ४२ २५	०९ २७ ०२ ३५	०८ ०४ ५९ ०६	२३
२४	११ ०९ ०० ४८	०१ १६ ३७ २४	०९ २५ ४७ ४४	१० ११ २३ १२	०७ २५ ३३ २०	०० १३ २२ १२	०३ २४ ५० ०२	१० २१ २१ ५८	१० २१ ४५ ४४	०९ २७ ०४ २४	०८ ०४ ५९ २३	२४
२५	११ १० ०० १८	०२ ०० २८ ३८	०९ २६ ३३ ४०	१० १२ २९ १६	०७ २५ ३५ ३९	०० १४ ३४ १५	०३ २४ ४७ १८	१० २१ १८ ४७	१० २१ ४९ ०३	०९ २७ ०६ १२	०८ ०४ ५९ ३७	२५
२६	११ १० ५९ ४५	०२ १३ ५४ ३४	०९ २७ १९ ३६	१० १३ ३७ ३७	०७ २५ ३७ ४८	०० १५ ४६ १२	०३ २४ ४४ ४१	१० २१ १५ ३६	१० २१ ५२ २१	०९ २७ ०७ ५९	०८ ०४ ५९ ५०	२६
२७	११ ११ ५९ ११	०२ २६ ५७ ०७	०९ २८ ०५ ३३	१० १४ ४८ ११	०७ २५ ३९ ४५	०० १६ ५८ ०५	०३ २४ ४२ ०८	१० २१ १२ २५	१० २१ ५५ ३८	०९ २७ ०९ ४४	०८ ०५ ०० ००	२७
२८	११ १२ ५८ ३४	०३ ०९ ३९ २०	०९ २८ ५१ ३०	१० १६ ०० ५२	०७ २५ ४१ ३२	०० १८ ०९ ५२	०३ २४ ३९ ४२	१० २१ ०९ १४	१० २१ ५८ ५५	०९ २७ ११ २८	०८ ०५ ०० ०९	२८
२९	११ १३ ५७ ५४	०३ २२ ०४ ४५	०९ २९ ३७ २८	१० १७ १५ ३४	०७ २५ ४३ ०७	०० १९ २१ ३४	०३ २४ ३७ २२	१० २१ ०६ ०३	१० २२ ०२ १०	०९ २७ १३ ११	०८ ०५ ०० १६	२९
३०	११ १४ ५७ १३	०४ ०४ १७ ००	१० ०० २३ २६	१० १८ ३२ १२	०७ २५ ४४ ३२	०० २० ३३ ११	०३ २४ ३५ ०७	१० २१ ०२ ५३	१० २२ ०५ २४	०९ २७ १४ ५२	०८ ०५ ०० २१	३०
३१	११ १५ ५६ २९	०४ १६ १९ २६	१० ०१ ०९ २५	१० १९ ५० ४३	०७ २५ ४५ ४५	०० २१ ४४ ४३	०३ २४ ३२ ५८	१० २० ५९ ४२	१० २२ ०८ ३८	०९ २७ १६ ३२	०८ ०५ ०० २३	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥ १॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥ २॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र **"ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च"** मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहुत धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्रीराम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाटादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वाँ महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४३२०० वर्ष है। इसमें ५१०२ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५३वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों को २१ बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,०० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी। बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग— भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०५८ में कलियुग ५१०२ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,८९८ वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियाँ अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

सम्वत् २०६३ वि. ... दशाधिकारी फलम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए ... जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण

... नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सम्वत् २०६३ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि दशाधिकारी फलम्

श्री गणेशाम्बिकागुरुभ्यो नमः

वागीशाद्या सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे। यं नत्वा कृतकृत्यास्युः तन्नमामि विनायकम्॥
तिथवारं नक्षत्रं योगं करण मेव च। पंचांगं श्रृणुते नित्य गंगा स्नान फलंलभेत्॥
तिथि आयुकरि प्रोक्ता नक्षत्रं पाप नाशनम्। वारं शत्रून् विनाशाय योगो वृद्धि शतानि च॥
करणं कारोतु कल्याणं चन्द्रो लक्ष्मी दिने दिने। यशसो वर्द्धते नित्यं दिवाकरो भूमण्डले॥

अथ श्री मन्नृपति चक्र चूड़ामणि वीर विक्रमादित्य राज्यात् शुभ संवत् २०६३ तथा च श्री मन्नृपति शालिवाहन राज्यात् शुभ शाकः१९२८ वर्षेऽस्मिन् कल्पतोगताब्दाः१,९७,२९,४९,१०७। सृष्टितो गताब्दाः १,९५,५८,८५,१०७। तत्र कृत युग प्रमाणं १७,२८,०००। त्रेता युग प्रमाणं १२,९६,०००। द्वापर युग प्रमाणं ८,६४,०००। कलियुग प्रमाणं ४,३२,००० वर्षाणि, तन्मध्ये भुक्त कलिः ५१०७। भोग्य कलिः ४,२६,८९३। श्री कृष्ण जन्मतो गताब्दाः ५२४२। श्री बौद्धावतार संवत् २६२९-३०। श्री महावीर निर्वाण जैन संवत् २५३२-३३। ईस्वी सन् २००६-७। हिजरी सन् १४२७-२८। भारतीय गणराज्य सम्वत् ५७-५८ प्रवर्त्तते।

अथाऽस्मिन् वर्षे राजा गुरुः। मंत्री शुक्रः। सस्येशो रविः। धान्येशो शनिः। मेघेशो गुरुः। रसेशो भौमः। नीरसेशो रविः। फलेशो बुधः। धनेशः शनिः। दुर्गेशो बुधः। एतेदशाधिकारिणः। तत्र बार्हस्पत्य मानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये विष्णु विंशतिकायां १३"विकारी" नाम सम्वत्सरः प्रवर्तते। तस्य मेषाऽर्क समये भुक्त मासादि१०।२७।४४।३८। भोग्य मासादि १।२।१५।२२। ज्येष्ठ कृष्ण ३ भौम वासरे दिनांक १६ मई दिवा ११।४० वादनोपरांत "शार्वरी" नाम सम्वत्सरः प्रवर्तते। पितृ दैवतं युगम्। वर्षनाम "वैशाखः"। चतुर्मेघानां मध्ये "पुष्करः"। रोहिणी निवासः "पर्वते"। समय निवासो "कुम्भकार" गृहे। समय वाहन "चातकः"। स्तंभाः २ जल तृणयोः। सोमवत्याऽमावस्या २। सोमवति पंचमी १। अंगारकी चतुर्थी १। सूर्य सप्तमी १। रविदशमी ३। बुधाष्टमी २। समय विश्वा १०। समय मुहूर्त्तानि ३९०। समय दिनानि ३५५। तिथि क्षयः १४। तिथि वृद्धिः ९। अष्टोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा ८७। खपति विश्वा ११४। विंशोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा १२३। खपति विश्वा ८७। वर्षा विश्वा ९। धान्यम् ५। तृणम्१५। शीतम् १५। तेजः११। वायु १३। वृद्धि १५। क्षयः १५। विग्रह ११। तयोरैक्यम् १०९। सत्यम् अर्ध। धर्मम् द्यांढ़ा। पाप १८। शनिः दृष्टिः दक्षिणस्याम्। भारते दृश्य ग्रहणानि सूर्यस्य १, चन्द्रस्य २। दैवज्ञं शुभाऽशुभ चिन्तनीयम्।

अखिलेश्वर, काल के कर्ता, अभियन्ता, लोकनायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के दशाधिकारी राजा मन्त्री आदि का प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है किन्तु राजा का प्रभाव सर्वाधिक वसुन्धरा के स्वर्ग व भारत के ताज कश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। इसी प्रकार मन्त्री का प्रभाव पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान (पूर्वोत्तर मध्य) के विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण का गोवा में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग के साथ-साथ कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धनेशे व दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान फलीभूत होता है।

अथ विकारी नाम संवत्सर फलम्

विकार्यब्देऽखिला लोकाः सरोगा वृष्टि पीड़िताः।
पूर्व सस्य फलं स्वल्पं बहुलं चापरं फलम्॥

जिस वर्ष विकारी नामक संवत्सर हो तो प्रजा नाना प्रकार के रोगों से एवं कहीं अतिवृष्टि व कहीं अनावृष्टि से पीड़ित रहती है। ग्रीष्म धान्य की ऊपज कम ही होती है परन्तु शीत धान्य की ऊपज श्रेष्ठ होती है।

अथ राजा गुरुः तस्य फलम्

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्चधेनवः।
यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवं सर्व जनेषु वर्तते॥

वर्ष के राजा गुरु का फल-राजा गुरु हों तो पृथ्वी पर मेघ पर्याप्त जल की वर्षा करते हैं, कामधेनु की भांति गौवें बहुदुग्ध दात्री होती हैं। अग्निहोत्रादि करने वाले विप्रों की खूब सेवा पूजा होती है और प्रजा में सर्वत्र मांगलिक कार्य आदि से महोत्सव जैसा वातावरण रहता है।

अथ मंत्री भृगुः तस्य फलम्

भृगुसुते ननु मंत्रिपदं गते शलभ मूषक रावथ माहिषैः।
भवति धान्य समर्घतया भयं जन पदेषु जलं सरितोधिकम्॥

मन्त्री- शुक्र का फल- मंत्री पद शुक्र को मिलने से कृषि में टिड्डी, चूहे, कातरा आदि से नुकसान होता है। वर्षा श्रेष्ठ व धान्यादि में मन्दी का रुख रहता है। कहीं-कहीं वर्षा की अधिकता व नदियों में बाढ़ आदि से प्रजा में भय बढ़ता है।

अथ सस्येशो रविः तस्य फलम्

सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्व धान्यं समर्घं बहवोऽपि चौराः।
युद्धं नृपाणां जलदां जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहुभूरुहाश्च॥

सस्येश रवि का फल—सूर्य सस्याधिपति हों तो ग्रीष्मधान्य में मन्दी रहती है। वर्षा की न्यूनता से नदी, सरोवर कूपादि जल श्रोतों में जल की कमी रहती है। धान्य की उपज कम व व्यर्थ घास आदि की उपज अधिक होती है। चौरों की वृद्धि होती है। और विश्व में कहीं दो देशों में टकराव या आपसी व्यवहार कटुता पूर्ण होता है।

अथ धान्येशो शनिः तस्य फलम्

निर्धनाः क्षितिभुजो रणादराः सस्य मल्प मति रोगिणो जनाः।
नैव वर्षति जलं सुरेश्वर स्याद्यदान्नत्य कणपः शनैश्चर॥

धान्येश शनि का फल—धान्येश शनि हों तो शासक वर्ग लाचार सा होकर रह जाता है। प्रजा अल्प बुद्धि व अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रसित रहती है। वर्षा की न्यूनता रहने से धान्यादि उत्पादन कम होता है और अकाल की आशंका बढ़ती है।

अथ मेघेशो गुरुः तस्य फलम्

गुरु रवि प्रिय वृष्टिकरः सदाऽखिल विलासवती धरणी तदा।
श्रुति विचार परा नरपालकाः रस समृद्धि युताऽखिल मानवाः॥

मेघेश गुरु का फल—मेघेश गुरु हों तो पर्याप्त व समयानुसार वर्षा होकर प्रजा में भौतिक सुखों की वृद्धि होकर सर्वत्र मंगल मय वातावरण होता है। शासक वर्ग भी न्याय प्रिय एवं धर्मपरायण होता है। लोग गोरस व गोधन आदि से समृद्ध होते हैं।

अथ रसेशो भौमः तस्य फलम्

यदि धरातनयो रसपोभवेन्न रस राशियुता जनता शुभा।
नरपतिर्विषमो जनतापदो न जलदो बहुवृष्टिकरोभुवि॥

रसेश मंगल का फल—रस पति यदि मंगल हों तो प्रजा रसहीन, खिन्न व उदासीन प्रवृत्ति की हो जाती है वर्षा की भी न्यूनता रहती है तथा शासक वर्ग भी प्रजा से प्रतिकूल व्यवहार रखता है।

अथ नीरसेशो रविः तस्य फलम्

नीरसाधिपतौ सूर्ये त्रपु चन्दनयोरपि।
रत्न माणिक्य मुक्ता देरर्घ वृद्धिः प्रजायते॥

नीरसेश सूर्य का फल—नीरसेश सूर्य देव हों तो तांबा, चंदन व मुक्ता, वैदूर्य आदि रत्नों की महंगाई रहती है।

अथ फलशो बुधः तस्य फलम्

यदि बुधे फलपे फलमुत्तमं जलधरा जलराशि मुचस्तदा।
बहुतृणं कुसुमं कमलैर्युतं जनपद जन सौख्य मुदान्विताः॥

फलेश बुध का फल—बुध यदि फलेश हों तो पृथ्वी पर बादल पर्याप्त व समयानुसार वर्षा करते हैं। नाना प्रकार के फलों की पैदावार अच्छी होती है। पशुओं के लिए घास आदि का तथा कमल आदि पुष्पों की उत्पत्ति अच्छी होती है और प्रजा अनेक प्रकार के सुखों से परिपूर्ण व आनन्दित रहती है।

अथ धनेशो शनिः तस्य फलम्

द्रविणपे रविजे विरलं धनं गदरता धरणी पतयः सदा।
अधनिका वणिजः कृषिजीविनो द्विजवराः परिपीड़ित मानसा॥

धनेश शनि का फल—वित्तमंत्री शनि देव हों तो शासक वर्ग धन का सदुपयोग न कर के दुरुपयोग करते हैं एवं अपनी झोली भरी रखते हैं जिससे अर्थ व्यवस्था बिगड़ जाती है। परिणामतः कम पूंजी वाले व्यापारी एवं किसान वर्ग अर्थ पीड़ित हो जाते हैं। साधु संत ब्राह्मणों का अनादर होता है।

अथ दुर्गेशो बुधः तस्य फलम्

विषय साम्य सुखं शशिजे प्रभौ भवति राशिगते तु विशेषतः।
शशि सुते यदि कोटक पालके पथिषु द्रव्य युजां न भयं क्वचित॥

दुर्गेश बुध का फल—दुर्ग अधिपति बुध हों तो प्रजा में भौतिक सुखों की समानता रहती है विशेषकर तब जब बुध स्वराशिगत हों। पथिकों को द्रव्यादि की हानि का कोई भय नहीं होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विशेष

इस वि. सं. २०६३ में दशाधिकारियों में स्थूल गणितागत एवं सूक्ष्म वेध सिद्ध गणितानुसार पंचांगीय भ्रांतियां होने का प्रायशः अन्देशा है। अतः स्पष्ट है कि हमारे पंचांग में दिये गये दशाधिकारी सूक्ष्म गणनानुसार सर्व विदित एवं मान्य है- जैसे मंत्री शुक्र, धान्येश शनि ही होगा। -प्रकाशक

अथ अष्टोत्तरी मतेन आय-व्यय चक्रम्
(विन्ध्य से दक्षिण वासियों के लिये)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	११	५	८	२	५	८	५	११	१४	२	२	१४
व्यय	५	१४	११	११	५	११	१४	५	११	८	८	११

अथ विंशोत्तरी मतेन आय-व्यय चक्रम्
(विन्ध्य से उत्तर वासियों के लिये)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

सायन संक्रांति

वृष	गुरु	अप्रै.	२०
मिथुन	रवि	मई	२१
कर्क	बुध	जून	२१
सिंह	शनि	जुला	२२
कन्या	बुध	अग.	२३
तुला	शनि	सितं	२३
वृश्चिक	सोम	अक्टू	२३
धनु	बुध	नवं.	२२
मकर	गुरु	दिसं.	२१
कुंभ	शनि	जन.०७	२०
मीन	रवि	फर.	१८

षड्ऋतु, गोल एवं अयन

तारीख	ऋतु	गोल	अयन
२० अप्रै.	ग्रीष्म	-	-
२१ जून	वर्षा	-	दक्षिणायन
२३ अग.	शरद	-	-
२३ सितं.	-	दक्षिण	-
२३ अक्टू.	हेमन्त	-	-
२१ दिसं.	शिशिर	-	उत्तरायन
२८ फर.	वसन्त	-	-

वर्षनाम वैशाख: तत्फलम्

अर्घं विविध भावेन जायते द्रविण प्रदम्। नीरुजा निर्भया लोका वैशाखे जन पूजिताः॥

वर्ष नाम वैशाख का फल—वैशाख नामक वर्ष में सभी प्रकार के धान्यादि की पैदावार उत्तम होकर प्रजा में आनंद का वातावरण रहता है। साधु संत एवं बुजुर्ग व्यक्तियों को सम्मान मिलता हैं। और जनता निरोग एवं निर्भय रहती है।

चतुर्मेघानां मध्ये "पुष्कर" नाम मेघः तत्फलम् "पुष्करे मंद वृष्टिः"

अतः जिस वर्ष पुष्कर नामक मेघ होता है उस वर्ष वर्षा की न्यूनता ही रहती है।

रोहिणी निवासः पर्वते तत्फलम् "पर्वते बिन्दु मात्रं च"

इस शास्त्र वचनानुसार वर्षा वृन्दा-बान्दी के रूप में ही होगी अर्थात् वर्षा की न्यूनता ही रहेगी।

समय निवास कुम्भकार गृहे तत्फलम् "कुम्भकार गृहेवासो तद्वर्षे मध्यमं फलम्"

समय का निवास कुम्हार के घर होने से वर्ष में वर्षा की न्यूनता ही रहेगी। कहीं तो होगी और कहीं नहीं भी होगी।

समय वाहन चातक—वर्ष में कृषक वर्ग वर्षा का इन्तजार करेंगे परन्तु वर्षा की न्यूनता ही रहेगी।

स्तम्भाः २ जल तृणयोः—वर्ष में जल एवं तृण ये दो ही स्तंभ हैं जिनका फल है कि वर्षा होगी परन्तु असमय की वर्षा घास आदि तो पैदा करेगी परन्तु धान्य की पैदावार नहीं होगी जहां कहीं होगी तो रोग ग्रस्त होकर वा टिड्डी, कातरा और चूहे आदि के कारण नष्ट हो जायेगी

समय विश्वा १०—विश्वा का गणना अनुसार वर्ष मध्य फल दायक होगा अर्थात् उन्नति व अवनति समान होगी।

उत्पत्ति खपति-विश्वा मत से उत्पत्ति विश्वा १२३ एवं खपति विश्वा ८७ होना शुभ फलप्रद है।

शनि साढ़े साती / ढैया विचार

दिनांक २६-५-२००५ से शनि कर्क राशि में संचरण वर्ष पर्यन्त (वि.सं.२०६३में) रहेगा। इसका प्रभाव विश्व में जलीय भूगर्भीय प्रभावों से युक्त रहेगा। अचानक प्राकृतिक आपदा, भगदड़, विवाद, भ्रष्टाचार, भूमि-भवन के लेन-देनों, औद्योगिक लेन-देनों में धोखाधड़ी का मामला रहेगा। दिनांक २२-११-२००५ को शनि वक्री होकर विश्व में हलचल मचायेगा। दिनांक ५-४-२००६ को मार्गी होकर काफी आश्चर्यजनक घटनाएं करेगा। राश्यानुसार शनि का विश्वस्तरीय भविष्य योग इस प्रकार रहेगा।

मेष-पुनः चतुर्थ ढैया वक्री होकर शनि अशांति प्रदान करेगा। पत्नी-संतान को कष्ट, पारिवारिक बाधाएं, शारीरिक कष्ट योग कभी-कभी मतिभ्रम भी होगा। विश्वासी जनों से धोखा योग है। स्वभाव गर्म करेगा। पुराना रहस्योद्घाटन भी होगा।

वृषभ-पुनः तृतीय शुभदायक रहेगा। कुटुम्ब परिवार में मांगलिक व भौतिक कार्यों का घटक रहेगा। भौतिक सुख-सुविधा रहेगी। अक्टूबर ३०, २००६ के बाद कष्ट जन्य योग बनेगा। सावधान!

मिथुन-पुनः द्वितीयस्थ शनि ढैया शुभदायक रहेगा। साढ़े साती में इस वर्ष के ढाई वर्ष रोजगारोन्मुख धनदायक रहेगा। शुभ है।

कर्क-साढ़े साती स्वर्णपाद कार्यों में सावधान रहें। पारिवारिक कार्यों में अभिवृद्धि होगी। पुत्र की ओर से क्लेश योग बनेगा। मानसिक अशांति का कारक शनि हो सकता है। सावधान!

सिंह-प्रारंभिक साढ़े साती शनि अशुभ है। कारोबार में भी बाधक रहेगा। चोरी, डकैती का मामला भी बनता है। एकाएक बीमारी का प्रभाव बढ़ेगा। कठिनता से कार्यों में शुभ योग बनते हैं। दिनांक ५-११-२००६ से २०-२-२००७ तक शुभ है।

कन्या-पारिवारिक विकास के साथ कार्योन्मुख बनेगा तथा नया कार्य भी करायेगा। रोजगार का अवसर देगा। सफलता के योग अच्छे हैं। लेकिन वाहन दुर्घटना से बचना होगा।

तुला-दसवां शनि शुभदायक रहेगा। भूमि-भवन का धंधा चलेगा या भवन बनेगा। रोजगार प्राप्ति का योग भी बनता है। आत्म संतोष भी होगा। परिवार में भी मान-सम्मान बढ़ेगा। लेकिन माता पिता के सुख में कमी आयेगी। शेष सभी समय अनुकूल रहेगा। आय बढ़ेगी।

वृश्चिक-आपकी राशि में ९ वां शनि सामान्य किन्तु अचानक भाग्योदय करेगा। स्वजनों के द्वारा अचानक उलझनों का सामना करना पड़ेगा। शारीरिक दुर्बलता का प्रभाव बनेगा। चोट का भय भी रहेगा। वाद-विवादजन्य मामला बनेगा। अक्टूबर २००६ में शनि शुभदायक रहेगा।

धनु-आपका आठवां शनि ढैया का चक्कर रहेगा। रोजगार में समस्या का योग बनता है। वैधानिक तनाव रहेगा। पराक्रम भी बढ़ेगा। पुरुषार्थ बढ़ेगा। उदर विकार तथा मानसिक परेशानी भी होगी। शत्रुपक्ष प्रबल होगा। पश्चिम व पूर्वी राष्ट्रों में अराजकता बढ़ेगी।

मकर-सातवां शनि पत्नी को रोगकारक रहेगा। उधार की राशि का भय तथा ससुराल से भी विवाद योग बनता है। यात्राएं होने का योग भी बनता है। शत्रुपक्ष प्रबल होकर भी हार मानेंगे। अक्टूबर २००६ से शनि अशुभ हो जायेगा। शनि का दान करना चाहिए।

कुंभ-छठा शनि शुभकारक रहेगा। सोने के पाये पर होने से खर्च बढ़ायेगा। नौकरी, व्यापार में नवीनता आयेगी। पुराना विवाद का हल होगा। नैत्र विकार तथा चोट का योग भी बनेगा। संतान को भी अचानक रोगोत्पत्ति, परन्तु शत्रुपक्ष परास्त होंगे। भ्रमण ज्यादा होगा।

मीन-पांचवां शनि मिश्रित फलदायी रहेगा। आय अच्छी होगी तो खर्चा भी अच्छा ही होगा। अस्वस्थता का योग भी बनेगा। संतान लाभ भी मिलेगा। व्यापार, धंधे में उतार-चढ़ाव आयेंगे। भक्ति योग भी बनेगा। पूर्वोत्तर दिशा में प्राकृतिक आपदा का योग बनेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

उत्पत्ति खपति–विश्वा मत से उत्पत्ति विश्वा ... विश्वा ८७ होना शुभ फलप्रद है। कन्या– पारिवारिक विवाद के साथ कार्यों में ... भी करायेगा। रोजगार का अवसर देगा। सफलता के योग अच्छे हैं। लेकिन ... खर्चा भी अच्छा ही होगा। अस्वस्थता का योग भी बनेगा। संतान लाभ भी मिलेगा। व्यापार, धंधे में उतार-चढ़ाव आयेंगे। भक्ति योग भी बनेगा। पूर्वोत्तर दिशा में प्राकृतिक आपदा का योग बनेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष-१

श्री सं. २०६३ शाके १९२८ | दिन मान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ३० मार्च से १३ अप्रैल सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २३ चैत्र तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसंत-ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र	मु	अं	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्र उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
९	गु	१	१५	४२	१२	३२	रे	२५	५२	१६	३६	ऐं	२९	४१	१८	८	ब	१५	४२	१२	३२	३०	५३	६	१५	१८	३६	१७	२९	30	मे.१६।३६	११	१५	१२	१८	१९/२८	७	१५	२०	५८	चन्द्रदर्शन मु.३० साम्यार्घ, **पंचक** १६।३६ तक, **नव संवत्सरारंभ**, A
१०	शु	२	८	३३	९	३४	अ	२०	५१	१४	३५	वै	२१	१३	१४	४३	कौ	८	३३	९	३९	३०	५७	६	१४	१८	३७	१८	१	31	मेष	११	१६	११	३६	१६	७	५५	२२	६	रवि उल अव्वल मु. मास ३ प्रा., सिंधारा, चेटीचंड, झूलेलाल B
११	श	३	२	४०	७	१७	भ	१७	११	१३	५	वि	१३	५१	११	४५	ग	२	४०	७	१७	३१	१	६	१३	१८	३८	१९	२	1	वृ.१८।४९	११	१७	१०	५२	१४	८	३८	२३	१२	भः १८।२५ से २९।३३ तक, **गणगौरी पूजा**, मन्वादि ३, मनोरथ ३, C
०	श	४	५८	२०	२९	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	**चतुर्थी तिथि क्षयः**
१२	र	५	५५	५३	२८	३३	कृ	१५	१०	१२	१६	प्री	७	५०	९	२०	ब	२६	५३	१६	५७	३१	५	६	१२	१८	३८	२०	३	2	वृष	११	१८	१०	६	१२	९	२७	२४	०	**श्री पंचमी**, कल्पादि ५, हय ५, **नाग पंचमी व्रत**, श्री राम जन्मोत्सव प्रा., डोलोत्सव
१३	चं	६	५५	२७	२८	२१	रो	१५	२	१२	१२	आ	३	१९	७	३०	कौ	२५	२६	१६	२१	३१	१०	६	११	१८	३९	२१	४	3	मि.२४।२७	११	१९	९	१८	९	१०	२१	२४	१४	**स्कंद षष्ठी व्रत, मिथुने भौमः** १६।४१
१४	मं	७	५६	५९	२८	५७	मृ	१६	५२	१२	५४	सौ	०/५८	२७/५८	६/२९	१९/४५	ग	२६	०	१६	३४	३१	१४	६	१०	१८	३९	२२	५	4	मिथुन	११	२०	८	२७	७	११	१८	२५	१०	भ. २८।५७ से, आयंविल ओली प्रा. जैन
१५	बु	८	६०	०	-	-	आ	२०	३६	१४	२३	अति	५९	०	२९	४५	वि	२८	२९	१७	३२	३१	१८	६	९	१८	४०	२३	६	5	मिथुन	११	२१	७	३४	४	१२	१६	२५	५९	भ. १७।३२ तक, **श्री दुर्गाष्टमी**, भवान्युत्पत्ति, दुर्गा पूजा
१६	गु	८	०	२५	६	१७	पुन	२६	०	१६	३१	सु	६०	०	-	-	ब	०	२५	६	१७	३१	२२	६	७	१८	४०	२४	७	6	क.९।५६	११	२२	६	३८	३	१३	१४	२६	४१	**श्री रामनवमी**, नवरात्र पूर्ति, तारा ज., विशा. १ में वक्री गुरु १०।३७, D
१७	शु	९	५	१९	८	१४	पु	३२	४२	१९	११	सु	०	१५	६	१२	कौ	५	१९	८	१४	३१	२६	६	६	१८	४१	२५	८	7	कर्क	११	२३	५	४१	०	१४	१०	२७	१७	D शतभिषा में शुक्र २०।५०, उ.भा.२ में राहु व. उ. फा. ४ में केतु E
१८	श	१०	११	१७	१०	३६	श्ले	४०	१३	२२	११	धृ	२	१८	७	०	ग	११	१७	१०	३६	३१	३१	६	५	१८	४१	२६	९	8	सिं.२२।११	११	२४	४	४१	[illegible]	१५	४	२७	४८	भ. २३।५४ से, E १४।५५, **मार्गी शनिः** ११।२६
१९	र	११	१७	४८	१३	११	म	४८	४	२५	१८	शू	४	४९	८	०	वि	१७	४८	१३	११	३१	३५	६	४	१८	४२	२७	१०	9	सिंह	११	२५	३	३८	५६	१५	५७	२८	१७	भ. १३।११ तक, **कामदा एका. व्रत सबका**, लक्ष्मीकांत दोलोत्सव
२०	चं	१२	२४	२२	१५	४८	पू.फा	५५	४६	२८	२१	गं	७	२७	९	२	बा	२४	२२	१५	४८	३१	३९	६	३	१८	४३	२८	११	10	सिंह	११	२६	२	३४	५४	१६	४९	२८	४४	**हरि दमनोत्सव, सोम प्रदोष व्रत**
२१	मं	१३	३०	३४	१८	१५	उ.फा	६०	०	-	-	वृ	९	५३	९	५९	तै	३०	३४	१८	१५	३१	४३	६	२	१८	४३	२९	१२	11	कं.११।६	११	२७	१	२८	५१	१७	४२	२९	१०	अनंग १३, **श्री महावीर ज. जैन, मीने बुधः** १७।२६, **ईद ए मिलाद (मु.)**
२२	बु	१४	३६	१	२०	२५	उ.फा	२	५९	७	१२	ध्रु	११	५१	१०	४५	ग	३	२५	७	२३	३१	४७	६	१	१८	४४	३०	१३	12	कन्या	११	२८	०	१९	४९	१८	३६	२९	३६	भ. २०।२५ से, **दमनक चतुर्दशी**
२३	गु	१५	४०	३०	२२	१२	ह	९	१९	९	४३	व्या	१३	८	११	१५	वि	८	२५	९	२२	३१	५१	६	०	१८	४४	३१	१४	13	तु.२२।५०	११	२८	५९	८	४७	१९	३२	६	५	भ. ९।२२ तक, **सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रतं, पुण्यं**, मन्वादि १५, चैत्री F

A नवरात्र प्रा., घटस्थापन, वर्ष फल श्रवण, ध्वजा रोहण पूजनम्, कल्पादि प्रतिपदा, गुड़ी पड़वा, गौतम ज., आर्य समाज स्थापना दिवस, हेडगेवार ज., **वक्री प्लूटो** ७।०० **B** जयंती (सिंधी सम्प्रदाय), **मत्स्य जयंती, कुंभे शुक्रः** १०।४१, रेवति में सूर्य १७।०० **C** आंदोलन ३ (बिहार), सौभाग्य तृतीया व्रत, **विनायक ४ व्रत, अप्रैल मास ४ ता. ३० प्रा.,** मूर्ख दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस **F** पूर्णिमा, **श्री हनुमान जयंती** मेला सालासर (राज.), आयंबिल ओलीपूर्ति जैन, **वैशाख स्नान प्रा.**

चैत्र शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ५ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	२	१०	६	१०	३	११	५	१०	९	८
२१	१५	०	२३	२३	४	१०	१०	१०	१८	२५	२
७	२२	५२	४५	२६	५६	२५	४	४	४०	१६	४७
३४	५४	२१	२३	४१	५२	५३	२६	२६	४२	१२	५८
५९	[illegible]	३४	४९	५	६२	०	३	३	३	१	०
४	१६	१२	२८	२९	५२	१	११	११	१	२७	१४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

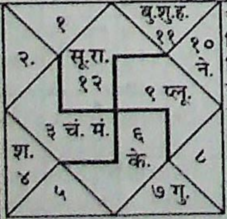

[पक्ष फलम्]

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार। रेवती नक्षत्रे। चन्द्र दर्शन ३० मु. शुभ योग॥ श्री विष्णु के १३वां विकारी नाम संवत्सरे सिंह लग्ने गणित ग्रहादि योगानुसार वि.सं.२०६३ शाके १९२८ की शुभ बेला में हार्दिक बधाई तथा अभिवादन॥ **संवत्सर के दशाधिकारी में वर्ष का राजा गुरु ॥ मंत्री शुक्र॥** मध्यमोत्तम फलदायी योग बनेगा। मेषेश गुरु के कारण वर्षा अच्छी होगी। ६ सौम्य ग्रह ४ क्रूर ग्रह को पद परिषद में होने से बाढ़मय वातावरण धान्य में महंगाई, ६ माह तक मंहगाई का प्रभाव रहेगा। पश्चिम में धातु की वस्तु एवं फल महंगे होंगे। **''जेहि पखवारे तिथि घटे वाही में बढ़ जाय। सभी वस्तु में तेजी रहे मिले न बाजरा माय॥'' किसी शुक्ल पक्ष में तीज चौथ घट जाय बढ़** जाय। ग्राहक मांगे मूंग घी विक्रेता नट जाय॥ इसी पक्ष में मेष संक्रांति चैत्र शुक्ल पक्ष १५ पूर्णिमा गुरुवार को रात्रि चौथे प्रहर में ३० मुहूर्ती बैठी पुण्य काल दिनांक १४-४-०६ को शुभ योग बनता है। इस बेला पर किया गया दानादि का फल श्रेष्ठ बताया है। सूर्य राहु बुध-युक्ति मीन लग्न में होय। राजनेता में विद्रोह हो रहस्य प्रकट हो जाय॥ **चन्द्र केतु सप्तम भाव कन्या राशि में होय। भ्रष्टाचार की लहर में अच्छे अच्छे मिल जाय॥** उत्तर में महावृष्टि का योग पूर्व दिशा में आधी उपज का योग बनता है। मध्य प्रदेश में राज विग्रह का योग बनता है। **माह में पांच गुरुवार व पांच बुधवार होना है शुभदायी। मान धान्य अच्छा रहे कमी न खलके भाई॥'' ग्रहादि योग सूर्य बुध राहु च मीने राशि लग्ने जलं वर्षाधिक भविस्यति॥''** पूर्णिमा में चौथे प्रहर रात्रि सूर्योदय अश्विनी नक्षत्र में होने से तेज व तूफान बढ़ेंगे। वर्षा की असमानता बनेगी। प्राकृतिक आपदा योग भी बनता है। **व्यापार (तेजी-मन्दी)** मीने बुध एवं मिथुने भौम के कारण जल का अभाव तथा पानी भी तेज़ बिकेगा। ग्वार, ज्वार, गेहूं, जूट, बारदाना, अलसी, सरसों में तेजी का योग बनता है। चमड़ा, कपड़ा, सूत, तिलहन में मंदी तथा शेयर्स बाजार में उछाल का वातावरण रहेगा। **शकुन विचार- चैत्र सुदी प्रतिपदा रेवती नक्षत्र योग वायु संग वर्षा बढ़े ऐसा है संयोग॥ सुदी अष्टमी गुरुवार संक्रांति मेष गुरुवार हो। राजा प्रजा में समझौतामय शासन स्वीकार हो।। चैत्र की वर्षा आगे होवे हानि। कृषि तो पनपे नहीं रोवे पानी-पानी॥** सप्तमी को सूर्य के दक्षिण में चन्द्र निकले तो तृण भी महंगा होगा। अग्नि भय भी बढ़ेगा।

ता. १३ अप्रैल ❖ चैत्र शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

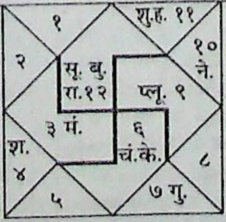

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	२	११	६	१०	३	११	५	१०	९	८
२८	२१	५	१	२२	१३	१०	९	९	१९	२५	२
५९	११	२७	४२	३९	२६	२८	३९	३९	४	२७	४५
८	७	१८	४८	१४	३६	५३	०	०	८	४	१७
५८	७१	३४	७१	६	६४	०	३	३	२	१	०
४७	४२	३४	२०	२८	४३	५२	११	११	४८	१४	२८
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख कृष्ण पक्ष-२

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. १४ से २७ अप्रैल सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २४ चैत्र से ७ वैशाख तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२४	शु	१	४३	५३	२३	३२	चि	१४	४०	११	५०	ह	१३	३७	११	२५	बा	१२	२२	१०	५५	३१	५५	५	५९	१८	४५	१	१५	14	तुला	११	२९	५७	५५	५८ ५५	२०	३१	६	३६	डॉ. अम्बेडकर ज., सौर वैशाख प्रा., अश्विनी मेष में सूर्य ६।२१, A
२५	श	२	४६	६	२४	२४	स्वा	१८	५४	१३	३१	व	१३	१४	११	१५	तै	१५	१०	१२	२	३१	५९	५	५८	१८	४५	२	१६	15	तुला	०	०	५६	४०	४३	२१	३३	७	१२	आर्द्रा में मंगल ७।५६
२६	र	३	४७	८	२४	४८	वि	२२	०	१४	४५	सि	११	५७	१०	४३	व	१६	४७	१२	४०	३२	४	५	५६	१८	४६	३	१७	16	वृश्चि.८।२९	०	१	५५	२३	४२	२२	३५	७	५५	भ.१२।४० से २४।४८ तक, अनसूया ज., ईद-ए-मौलाद, (मु.), ईष्टर सन्डे
२७	चं	४	४७	१	२४	४४	अनु	२३	५८	१५	३१	व्य	९	४५	९	४९	ब	१७	१५	१२	४९	३२	८	५	५५	१८	४७	४	१८	17	वृश्चिक	०	२	५४	५	३९	२३	३७	८	४४	कृष्ण चतुर्थी व्रत, व्यतिपात पुण्यम्
२८	मं	५	४५	४५	२४	१२	ज्ये	२४	४९	१५	५०	वरि	६	३८	८	३४	कौ	१६	३३	१२	३२	३२	१२	५	५४	१८	४७	५	१९	18	ध.१५।५०	०	३	५२	४४	३८	२४	०	९	४१	गुरु तेग बहादुर जयंती (प्रा. मत से)
२९	बु	६	४३	२२	२३	१४	मू	२४	३३	१५	४३	परि	२ / ५७	५९ / ४४	६ / २८	५७ / ५९	ग	१४	४३	११	४७	३२	१६	५	५३	१८	४८	६	२०	19	धनु	०	४	५१	२२	३७	२४	३४	१०	४५	भ. २३।१४ से, पू. भा. में शुक्र ६।१५
३०	गु	७	३९	५६	२१	५१	पूषा	२३	१४	१५	१०	सिद्ध	५२	१	२६	४१	वि	११	४८	१०	३६	३२	२०	५	५२	१८	४८	७	२१	20	म.२०।५८	०	५	४९	५९	३४	२५	२५	११	५२	भ. १०।३६ तक, शीतला पूजन, गुरु अर्जुन देव ज. (प्रा. मत से), B
मई १	शु	८	३५	२९	२०	३	उषा	२०	५५	१४	१३	सा	४५	३१	२४	४	बा	७	५१	९	०	३२	२४	५	५१	१८	४९	८	२२	21	मकर	०	६	४८	३३	३३	२६	१०	१३	०	कालाष्टमी, राष्ट्रीय वैशाख प्रा.
२	श	९	३०	८	१७	५४	श्र	१७	३९	१२	५४	शुभ	३८	१८	२१	१०	तै	२	५६	७	१	३२	२७	५	५०	१८	४९	९	२३	22	कुं.२४।७	०	७	४७	६	३२	२६	५०	१४	८	भ. २८।४० से, पंचक २४।७ से,
३	र	१०	२४	०	१५	२५	ध	१३	३५	११	१५	शु	३०	२७	१८	०	वि	२४	०	१५	२५	३२	३१	५	४९	१८	५०	१०	२४	23	कुंभ	०	८	४५	३८	३०	२७	२६	१५	१४	भ. १५।२५ तक, मुनि सुव्रतनाथ जन्म-तप जैन, रेवति में बुध २९।१२, C
४	चं	११	१७	१३	१२	४२	श	८	५०	९	२१	ब्र	२२	६	१४	३९	बा	१७	१३	१२	४२	३२	३५	५	४८	१८	५१	११	२५	24	मी.२५।४७	०	९	४४	८	२८	२८	०	१६	२०	वरूथिनी एकादशी व्रत सबका, श्री वल्लभाचार्य जयंती
५	मं	१२	१०	२	९	४९	पूभा	२ / ५८	३९ / २५	७ / २९	२५ / ५	ऐं	१३	२६	११	१०	तै	१०	२	९	४९	३२	३९	५	४८	१८	५१	१२	२६	25	मीन	०	१०	४२	३६	२६	२८	३४	१७	२७	भौम प्रदोष व्रत
६	बु	१३	२	४२	६	५२	रे	५२	५९	२६	५८	वै	४ / ५५	३९ / ५८	७ / २८	३८ / १०	व	२	४२	६	५२	३२	४३	५	४७	१८	५२	१३	२७	26	मे.२६।५८	०	११	४१	२	२५	२९	८	१८	३४	भ. ६।५२ से १७।२५ तक, पंचक २६।५८ तक, मासशिवरात्री व्रत, D
०	बु	१४	५५	२८	२७	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षयः D अगस्त्य अस्त १५।४५
७	गु	३०	४८	४५	२५	१६	अ	४८	११	२५	२	प्री.	४७	४३	२४	५१	च	२२	३	१४	३५	३२	४७	५	४६	१८	५२	१४	२८	27	मेष	०	१२	३९	२७	२३	५	४६	१९	४३	देवपितृकार्याऽमावस्या, श्री शुकदेव जयंती, मेला पिंजौर (हरि.), E

E भरणी में सूर्य २२।१०

A संक्रान्ति मु. ३० बैठी, पुण्य काल १२।४५ तक, वैशाखी उत्सव (पं. हरि. हिमा.), विशु (केरला), वैशाख बिहु (असम), उ. भा. में बुध १४।१, गुड फ्राईडे

B बूढ़ा बासौड़ा (ठंडा (बासी) भोजन करना चाहिए), सायन सूर्य वृष में १०।५८, ग्रीष्म ऋतु प्रा. C बाबू कुंवर सिंह ज. (बिहार)

वैशाख कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २१ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	९	२	११	६	१०	३	११	५	१०	९	८
६	४	१०	१२	२१	२२	१०	९	९	१९	२५	२
४८	५४	५	१२	४४	९	३८	१३	१३	२५	३६	४०
३३	५४	४	४५	५१	५२	४८	३३	३३	४५	८	४०
५८	[illegible]	३४	८७	७	६६	९	३	३	२	१	०
३३	४८	५४	३८	११	१३	४३	११	११	३४	०	४२
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
अश्वि.३	उ.षा.३	आर्द्रा.२	उ.भा.३	विशा.१	पू.भा.१	पुष्य ३	उ.भा.२	उ.फा.४	शत.४	धनि.१	मूल १

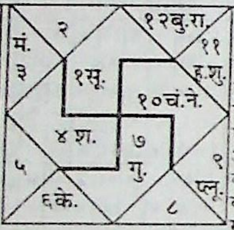

[पक्ष फलम्]

भारतीय संस्कृति में बैशाख को पवित्र पुण्यदायी माह माना गया है। इस पक्ष शुक्र की चित्रा उ.भा. में बुध के कारण पुराने विवादों का रहस्य शासक वर्ग में प्रकट होगा। गुरुवारी अमावस्या के कारण सुभिक्ष योग बनता है। प्रजा स्वस्थ रहे लेकिन **"बैशाखी अमावस्या अश्विनी नक्षत्र युक्त होय। तो प्रजा चिन्तन करे वस्तु एकाएक महंगी होय॥"** जातिवाद एवं भाषावाद का विद्रोह भी बढ़ेगा। **बृहस्पति वक्री चले शनि चले अतिचार। राज सुख धन धान्य युक्त सुखी रहे संसार॥** धन धान्य की वृद्धि का योग बनता है। **यस्मिन संवत्सरे राहुः मीन राशौ प्रजायते। वर्ष में केतु दुर्भिक्ष रौरवं परि कीर्तितम्॥ अतः राहु उत्पात भी मचा सकता है। मीने बुध युक्ति राहुम् दृष्टि दुष्ट भावेय। भ्रष्टाचार-व्यापार-बलात्कार दुर्भिक्ष भवेत॥ राजीनामा योग सर्वत्र न सफलम। कलेश भय विवाद योग प्रचारकम्॥** पंजाब, कश्मीर, बंगाल में जुआरी का प्रभाव बढ़ेगा। श्रृंगार की वस्तुएं महंगी होंगी। व्यापारी, वैद्य, डॉक्टर आदि भी नौका से जीविका चलाने की बात करेंगे यानि व्यवसाय परिवर्तन योग ज्यादा है। जल तत्व व संशक वस्तुएं महंगी होंगी। शिक्षक, पत्रकार, साहित्यिक कलाविदों में भी अशांति बढ़ेगी। धर्माचार्यों के लिये भी संकट के बादल छायेंगे। पशुपालक आन्दोलन करेंगे। केन्द्रीय सरकार में छल कपट का वातावरण बढ़ेगा। पास में पांच शुक्र का फल शुभदायक है। लेकिन पांच शनि **"शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देशस्य भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥"** पांच शनि का फल अशुभ योग करता है। अमेरिकादि देशों में पापाचार बढेंगे। धरा अकुलायेगी। कई सम्भागों में तहस नहस की घटना घटेंगी। राजनीति में भेद रहस्यों का उजागर व विद्रोह का योग बनता है। **व्यापार (तेजी-मंदी)**-इस पक्ष में बाजार भाव सभी वस्तुओं के अनिश्चित रहेंगे। चं+सू के योग से चना, गन्ना, सरसों, सतावर, बारदाना, तिलहन दलहनों में एक तरफा तेजी का विशेष योग भी है। शकुन विचार-**बैशाखी पड़वा प्रथम दिन बादल निकसै भानु। उत्तम संवत् की यही है सुभिक्ष की पहचान॥** आठें बैशाख वदी बादल बिजली गाज होय। संवत्सर अच्छा मानिये प्रजा में मंगल होय॥ चतुर्दशी का क्षय होना राजपक्ष में भी क्षय होने का शकुन बनता है। उत्तरी ध्रुव में आपदा योग भी बनेगा।

ता. २७ अप्रैल ❖ वैशाख कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

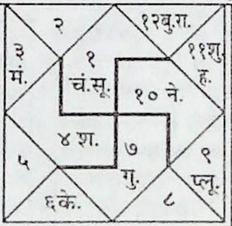

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	२	११	६	१०	३	११	५	१०	९	८
१२	१	१३	२१	२१	२८	१०	८	८	१९	२५	२
३९	३१	३५	२५	०	४९	५०	५४	५४	४०	४१	३६
२७	१३	५	५०	५०	२७	४०	२९	२९	३८	४०	१
५८	८६८	३५	९८	७	६७	२	३	३	२	०	०
२३	२४	९	२७	३१	०५	२१	११	११	२१	४९	५२
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
अश्वि.४	अश्वि.१	आर्द्रा.३	रेवती.२	विशा.१	पू.भा.३	पुष्य.३	उ.भा.२	उ.फा.४	शत.४	धनि.१	मूल.१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
श्री सं. २०६३ | दिन | स्टैं.टा. | दिनांक | चन्द्र राशि | दै. रवि स्पष्ट | चन्द्रोदयास्त | ता. २८ अप्रैल से १३ मई सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बैशाखी पड़वा प्रथम दिन बादल निकसै भानु। उत्तम संवत [illegible] मंगल होय॥ चतुर्दशी का क्षय होना राजपक्ष में भी क्षय होने का शकुन बनता है। उत्तरी ध्रुव में आपदा योग भी बनेगा।

वैशाख शुक्ल पक्ष-३

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. २८ अप्रैल से १३ मई सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २३ वैशाख तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	
८	शु	१	४२	५८	२२	५३	भ	४४	१३	२३	२६	आ	४०	८	२१	४८	कि	५५	४१	१२	१	३२	५०	५	४५	१८	५३	१५	२९	28	वृ.२९।६	०	१३	३७	५०	५८/२१	६	२८	२०	५१	देवदामोदर पुण्यं, गुरु अंगददेव जी ज.(प्रा. मत से), मीने शुक्रः ६।४४
९	श	२	३८	६	२०	५९	कृ	४१	३५	२२	१८	सौ	३३	३०	१९	८	बा	१०	२०	९	५२	३२	५४	५	४४	१८	५४	१६	३०	29	वृष	०	१४	३६	११	२०	७	१५	२१	५७	चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ, श्री शिवाजी ज. E पुनर्वसु में मंगल २७।७
१०	र	३	३४	५२	१९	४०	रो	४०	७	२१	४६	शो	२८	३	१६	५६	तै	६	१८	८	१४	३२	५८	५	४३	१८	५४	१७	ज/१	30	वृष	०	१५	३४	३१	१७	८	८	२२	५८	रवि उस्सानी मु. मा. ४ प्रा., अक्षय तृतीया, श्री परशुराम जयंती, A
११	चं	४	३३	२२	१९	३	मृ	४०	३३	२१	५६	अति	२३	५९	१५	१८	व	३	५४	७	१६	३३	१	५	४२	१८	५५	१८	२	मई	मि.९।४५	०	१६	३२	४८	१५	९	५	२३	५१	भ. ७।१६ से १९।३ तक, विनायक ४ व्रत, मई मास ५ ता. ३१ प्रा.B
१२	मं	५	३३	४७	१९	१२	आ	४३	५२	२२	५०	सु	२१	२६	१४	१६	ब	३	२१	७	२	३३	५	५	४१	१८	५५	१९	३	2	मिथुन	०	१७	३१	३	१४	१०	५	२४	०	श्री आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य जयं., श्री रामानुजाचार्य जयं.. (द. भा.).C
१३	बु	६	३०	६	२०	७	पुन	४७	२	२४	२९	धृ	२०	२३	१३	५०	कौ	४	४४	७	३४	३३	९	५	४१	१८	५६	२०	४	3	क.१८।१	०	१८	२९	१७	११	११	४	२४	३६	श्री रामानुजाचार्य जयंती (उ. भा.), चन्दन षष्ठी (बिहार)
१४	गु	७	४०	९	२१	४४	पु	५२	५९	२६	४८	शू	२०	४३	१३	५७	ग	७	५७	८	५१	३३	१२	५	४०	१८	५७	२१	५	4	कर्क	०	१९	२७	२८	१०	१२	१	२५	१५	भ. २१।४४ से, श्री गंगा सप्तमी (गंगोत्पत्ति दिवस), गंगा पूजनम्, D
१५	शु	८	४५	३४	२३	५३	श्ले	५९	५०	२९	३५	गं	२२	१२	१४	३२	वि	१२	४४	१०	४५	३३	१६	५	३९	१८	५७	२२	६	5	सिं.२९।३५	०	२०	२५	३८	७	१२	५६	२५	४९	भ.१०।४५ तक, श्री दुर्गाष्टमी, बगलामुखी ज., पू.भा.१ में हर्षल २३।४८
१६	श	९	५१	४८	२६	२१	म	६०	०	-	-	वृ	२४	२९	१५	२६	बा	१८	३८	१३	५	३३	१९	५	३८	१८	५८	२३	७	6	सिंह	०	२१	२३	४५	६	१३	४९	२६	१८	सीता नवमी, श्री जानकी जयंती, पूर्वास्तं बुधः ८।४२
१७	र	१०	५८	१५	२८	५५	म	७	३२	८	३८	धु	२७	७	१६	२८	तै	२५	३	१५	३९	३३	२२	५	३७	१८	५८	२४	८	7	सिंह	०	२२	२१	५१	४	१४	४२	२६	४५	महावीर स्वामी केवल ज्ञान दि. जैन, श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर ज., E
१८	चं	११	६०	०	-	-	पूफा	१५	१६	११	४३	व्या	२९	४०	१७	२९	व	३१	२३	१८	१०	३३	२६	५	३७	१८	५९	२५	९	8	क.१८।२८	०	२३	१९	५५	२	१५	३४	२७	१२	भ. १८।१० से, मोहिनी एका. व्रत स्मार्त, श्री हित हरिवंशमहाप्रभु ज.
१९	मं	११	४	२१	७	२०	उफा	२२	३१	१४	३६	ह	३१	४५	१८	१८	वि	४	२१	७	२०	३३	२९	५	३६	१९	०	२६	१०	9	कन्या	०	२४	१७	५७	०	१६	२७	२७	३८	भ. ७।२० तक, मोहिनी एकादशी व्रत वैष्णव, भरणी में बुध ८।२६
२०	बु	१२	९	३१	९	२४	ह	२८	४८	१७	६	व	३३	१	१८	४८	बा	९	३१	९	२४	३३	३२	५	३५	१९	०	२७	११	10	कन्या	०	२५	१५	५७	५७/५८	१७	२३	२८	६	रुकमणी द्वादशी, प्रदोष व्रत, फातिहा यजदहुम (मु.)
२१	गु	१३	१३	२७	१०	५८	चि	३३	४९	१९	६	सि	३३	१७	१८	५३	तै	१३	२७	१०	५८	३३	३५	५	३४	१९	१	२८	१२	11	तु.६।१०	०	२६	१३	५५	५७	१८	२१	२८	३६	नृसिंह चतुर्दशी, अशोक त्रिरात्री व्रतारंभ, कृतिका में सूर्य १६।१८
२२	शु	१४	१५	५९	११	५७	स्वा	३७	२७	२०	३३	व्य	३२	२६	१८	३२	व	१५	५९	११	५७	३३	३९	५	३४	१९	१	२९	१३	12	तुला	०	२७	११	५२	५५	१९	२३	२९	११	भ. ११।५७ से २४।१० तक छिन्नमस्ता ज., गुरु अमरदास ज., F
२३	श	१५	१७	३	१२	२३	वि	३९	४२	२१	२६	वरि	३०	२८	१७	४५	ब	१७	३	१२	२३	३३	४२	५	३३	१९	२	३०	१४	13	वृश्चि.१५।२६	०	२८	९	४७	५३	२०	२६	५	५२	वैशाखी पूर्णिमा पुण्यं, पीपल पूजन, यमाय जल कुंभ दान G

A मातंगी जयंती, त्रेता युगादि ३, कल्यादि ३, श्री बाँके बिहारी जी के चरण दर्शन (वृन्दावन) B विश्व मजदूर दिवस, उ. भा. में शुक्र ६।१ C श्री सूरदास जयंती, अश्विन्यां मेषे बुधः ६।२५
D स्वाति ४ में बक्री गुरु २९।२८ F व्यतिपात पुण्यं, पूर्णिमा व्रतम्, कूर्म जयंती, सत्यव्रत, रेवती में शुक्र २३।४९ G अशोक त्रिरात्री व्रत पूर्ति, वैशाख स्नान पूर्ति, बुद्ध पूर्णिमा

वैशाख शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ५ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	३	२	०	६	११	३	११	५	१०	९	८
२०	१८	१८	५	१९	७	११	८	८	१९	२५	२
२५	०	१७	२३	५९	४९	१२	२९	२९	५८	४७	२८
३८	४३	१२	३२	५९	२९	११	२	२	२६	१७	२१
५८	[illegible]	३५	११२	७	६८	३	३	३	२	०	१
७	१२	२५	४८	३९	१	८	११	११	३	३३	८
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

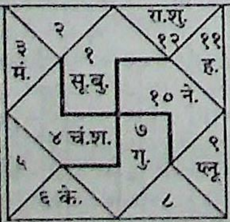

[पक्ष फलम्]

इस पक्ष में शुक्ल तृतीया को रोहिणी होना सुभिक्ष का योग करता है। शुक्ल पंचमी को मंगल होना उपद्रव का घटक बनता है। शुक्ल नवमी को मघा होना पृथ्वी पर विशेष संकट का योग बनेगा। कष्टदायी विशेष योग बनेगा। चतुर्दशी को शुक्रवार होना अभीत्पति का योग अच्छा बनता है। पूर्णिमा विशाखा शनिवार युक्त होना दुर्भिक्ष का योग बनता है। आर्द्रा में मंगल होने से वृष्टि का योग भी अच्छा बनता है। व्यापारी वर्ग इस पक्ष में अच्छा लाभ कमायेंगे। पशु पालकों के लिए यह पक्ष रोगोपद्रव कारक होगा। "पौष माघ बैशाख या सावन या आषाढ़। भयकारी बुध का उदय, अस्त होय सुख बाढ़॥" "राहु युक्ति यदा द्वादश भाव भवेत। तदा स्त्री लिङ्गना अशुभ योगादि जायते॥" स्त्री पक्ष के लिए यह पक्ष अशुभ फलदायी होगा। बुध सूर्य संयोग से बुधादित्य योग संयोग। चक्र समय का शुभ चले बने वियोग संयोग॥ 'कृष्ण पक्ष तिथि घटे, शुक्ल पक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥' लोकतंत्र में न्यूनता, नीति न्याय अवरोध। राज काज में आपक्ष, मंत्री सचिव विरोध॥

ता. १३ मई ❖ वैशाख शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

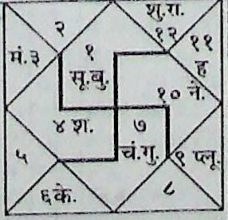

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	६	२	०	६	११	३	११	५	१०	९	८
२८	२४	२३	२१	१८	१६	११	८	८	२०	२५	२
९	४४	१	१४	५९	५६	३९	३	३	१३	५०	१९
४७	५९	१५	५७	१४	१७	५०	३७	३७	४३	४९	१२
५७	[illegible]	३५	[illegible]	७	६८	३	३	३	१	०	१
५३	७	३८	१३	२७	४७	५२	११	११	४३	१८	१४
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शुक्ल नवमी मघा युति विशाखा पूनम लक्ष। सुख शांति में न्यूनता, लेखक शकुन सुदक्ष॥ व्यापार (तेजी-मंदी)-इस पक्ष में फल, फल सब्जि, रसकश, नाज, मेवा, घी, तिल तैल, शक्कर, चावल, पनीर, कलपुर्जे, स्टेशनरी, शृंगार तथा साज सज्जा सामग्री के भावों में तेजी होगी। आकाश लक्षण (मौसम)-प्रतिकूल नाड़ी वेध से जहाँ-तहाँ बादल चाल। आंधी तूफान बूंदा-बांदी यत्र-तत्र कुचाल॥ दक्षिण में प्रचण्ड गर्मी जल भाव से हाय-हाय मचने का योग बनता है। अग्नि काण्ड का भय भी रहेगा। पशुधन को पीड़ा भी। शकुन विचार- बैशाख सुदी पंचमी चाले पूरन चाल। संग्रह करो अनाज का आगे योग अकाल॥ शुक्ल पक्ष बैशाख में तिथि दशमी को देख, बादल हो तो सावन में बरसे नहीं विशेष॥ बैशाखी पूनम तथा जेठ बदी दिन आठ। जो चाले पुरवा पवन तो है वर्षा का ठाट॥ किसी राज नेता का देह त्याग योग भी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. १४ से २७ मई सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २४ वैशाख से ६ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

ता. मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२४	र	१	१६	४६	१२	१५	अनु	४०	४०	२१	४९	प	२७	२८	१६	३२	कौ	१६	४६	१२	१५	३३	४५	५	३३	१९	३	१	१५	14	वृश्चिक	०	२९	७	४०	५७/५७	२१	२९	६	४०	ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा. जैन, सौर ज्येष्ठारंभ, वृष में सूर्य २७।१२ A
२५	चं	२	१५	१७	११	३९	ज्ये	४०	३२	२१	४५	शि	२३	३२	१४	५७	ग	१५	१७	११	३९	३३	४८	५	३२	१९	३	२	१६	15	ध.२१।४५	१	०	५	३२	५०	२२	२९	७	३६	भ.२३।९ से, श्री नारद ज., वीणादि वाद्य यंत्र दानम्, कृतिका में बुध१८।४९
२६	मं	३	१२	४७	१०	३८	मू	३९	२९	२१	१९	सिद्ध	१८	४८	१३	३	वि	१२	४७	१०	३८	३३	५१	५	३१	१९	४	३	१७	16	धनु	१	१	३	२२	४९	२३	२३	८	३८	भ. १०।३८ तक कृष्ण चतुर्थी व्रतम्, माँ आनंदमयी जयंती
२७	बु	४	९	२८	९	१८	पूषा	३७	४१	२०	३५	सा	१३	२६	१०	५३	बा	९	२८	९	१८	३३	५४	५	३१	१९	४	४	१८	17	म.२६।२२	१	२	१	११	४८	२४	०	९	४५	वृषे बुधः ७।५२
२८	गु	५	५	२८	७	४२	उषा	३५	१९	१९	३८	शुभ	७	३२	८	३१	तै	५	२८	७	४२	३३	५६	५	३०	१९	५	५	१९	18	मकर	१	२	५८	५९	४७	२४	१०	१०	५२	A संक्रांति मु. १५ बैठी, पुण्यकाल अग्रिम दिन
२९	शु	६	०	५८	५	५३	श्र	३२	२९	१८	२९	शु	१/५७	१३/३३	५/२७	५९/१९	व	०	५८	५	५३	३३	५९	५	३०	१९	६	६	२०	19	मकर	१	३	५६	४६	४६	२४	५१	११	५९	भ. ५।५३ से १६।५४ तक
०	शु	७	५६	१	२७	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथि क्षयः
३०	श	८	५०	४६	२५	४८	ध	२९	१७	१७	१२	ऐं	४७	३७	२४	३२	बा	२३	२७	१४	५२	३४	२	५	२९	१९	६	७	२१	20	कुं.५।५२	१	४	५४	३२	४५	२५	२७	१३	४	पंचक ५।५२ से, कालाष्टमी, श्री दादूदयाल पुण्य दिवस
३१	र	९	४५	१६	२३	३५	श	२५	४८	१५	४८	वै	४०	२९	२१	४१	तै	१८	३	१२	४२	३४	५	५	२९	१९	७	८	२२	21	कुंभ	१	५	५२	१७	४३	२६	०	१४	८	सायन मिथुन में सूर्य १०।४, रोहिणी में बुध २१।३८
१	चं	१०	३९	३४	२१	१८	पूभा	२२	७	१४	१९	वि	३३	१२	१४	४५	व	१२	२७	१०	२७	३४	७	५	२८	१९	७	९	२३	22	मी.८।४२	१	६	५०	०	४३	२६	३३	१५	१२	भ. १०।२७ से २१।१८ तक, राष्ट्रीय ज्येष्ठ प्रा.
२	मं	११	३३	४९	१९	०	उभा	१८	२०	१२	४८	प्री	२५	५१	१५	४८	ब	६	४२	८	९	३४	१०	५	२८	१९	८	१०	२४	23	मीन	१	७	४७	४३	४१	२७	५	१६	१७	अपरा एकादशी व्रत सबका, वक्री नेपच्यून १३।३०
३	बु	१२	२८	९	१६	४३	रे	१४	३४	११	१७	आ	१८	३२	१२	५३	कौ	०	५८	५	५१	३४	१२	५	२८	१९	९	११	२५	24	मे.११।१७	१	८	४५	२४	४१	२७	४१	१७	२३	पंचक ११।१७ तक, प्रदोष व्रत, मधुसूदन द्वादशी, श्री अनन्तनाथB
४	गु	१३	२२	४५	१४	३३	अ	११	२	९	५२	सौ	११	२६	१०	२	व	२२	४५	१४	३३	३४	१४	५	२७	१९	९	१२	२६	25	मेष	१	९	४३	५	३९	२८	२०	१८	३१	भ. १४।३३ से २५।३५ तक, मास शिवरात्री व्रत, वटसावित्री C
५	शु	१४	१७	५२	१२	३६	भ	७	५८	८	३८	शो	४/५८	४२/३४	७/२८	२०/५२	श	१७	५२	१२	३६	३४	१७	५	२७	१९	१०	१३	२७	26	वृ.१४।२२	१	१०	४०	४४	३८	२९	४	१९	३८	पितृकार्याऽमावस्या, वट सावित्री व्रत पूजा (अमा. पक्ष)
६	श	३०	१३	४७	१०	५७	कृ	५	३८	७	४२	सु	५३	१५	२६	४५	ना	१३	४७	१०	५७	३४	१९	५	२७	१९	१०	१४	२८	27	वृष	१	११	३८	२२	३७	५	५५	२०	४२	देवकार्याऽमावस्या, भावुका ३०, शनैश्चरी अमा., शनि जयं., D

D मृगशिरा में बुध २७।२३, पं. जवाहर लाल नेहरू पुण्य दिवस

B जन्म तप जैन, **कर्के भौमः** २२।२९, **अश्विन्यां मेषे शुक्रः** १३।१९ C **व्रतारंभ** (अमा.पक्ष), रोहिणी में सूर्य १२।३३

ज्येष्ठ कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २० मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	९	२	१	६	११	३	११	५	१०	९	८
४	२९	२७	६	१८	२४	१२	७	७	२०	२५	२
५४	४६	११	२०	८	५९	८	४१	४१	२४	५२	१०
३२	२३	११	[illegible]	३	२९	४१	२१	२१	५२	१२	११
५७	[illegible]	३५	[illegible]	७	६१	४	३	३	१	०	१
४५	३६	४८	२९	१	२१	२८	११	११	२५	४	२१
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
कृत्ति. ३	धनि. २	पुन. ३	कृत्ति. ३	स्वाति ४	रेवती ३	पुष्य. ३	उ.भा. २	उ.फा. ४	पू.भा. १	धनि. १	मूल. १

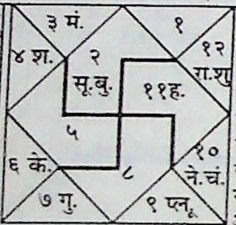

[पक्ष फलम्]

पक्षारंभ में ही वृषभ संक्रांति रविवासरी रात्रि तृतीय प्रहर में प्रवेश होना अनुसूचित जाति-जनजाति हेतु शुभ फलदायी रहेगी। बेरोजगारों के लिए अशुभदायी बनेगी। शुक्रोदय पूर्व में मांगलिक कार्य में सहायक होगा। हस्ती वाहन संक्रांति धूल भरी आंधियों की कारक बनेगी। ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी का क्षय होना तथा शनिश्चरी अमावस्या दुर्भिक्ष जन्य घटनाओं का योग करता है। व्यापारी वर्ग के लिए सप्तमी का क्षय होना वस्तु तेजी के योग से शुभदायक मानी जायेगी। "रविचार जब रोहिणी तपना ही सुख सार। मेघ गाज से मानिये विग्रह मय संसार॥" ऋतु चक्र से आपदा चिन्तन विविध प्रकार। नेता पद भ्रष्ट मय सज्जनों करो विचार॥ चतुर जीव लोभी बने देख समय को शेष। निश्चय समझो ग्रह योग से संकट बने विशेष॥ सुभिक्ष के लक्षणों से आशाएं बढ़ेंगी। कपास, जौ, तिल, उड़द, सूत महंगे होंगे। वृहस्पति और शुक्र सप्तमस्थ अनावृष्टि कारण बनेगा। ब्राह्मण जाति में द्वेष कलेश बढ़ेंगे। अश्व पालकः पीड़ितोऽसि। यानि पशु पालक विशेष दुखी होंगे। मेरठ, पटना, बनारस, गांधी नगर, लखनऊ, दिल्ली, कश्मीर व चैन्नई में दंगा-फसाद का योग है। "मेषे यदा शुक्रो आतंकवाद वर्धतः। गुरौ तुलाश्च नारी शील भंगम् सर्वत्र॥" अमावस्या को विग्रह योग सूर्य, चन्द, बुध, वृषे, ग्रीष्म प्रकोप में वृद्धि तथा आंधी तूफान से परेशनियां बढ़ेंगी। **व्यापार (तेजी-मंदी)**- अलसी, गुड़, चीनी के भावों में तेजी, सोना, चांदी, सूत, कपड़ा, सरसों, तेल में सामान्य तेजी का योग बनता है। गुरु का वक्री होना शेयर्स बाजार में मन्दी का झटका लगेगा। **आकाश लक्षण**-गर्मी बहुत तेज रहेगी। यत्र-तत्र बूंदा-बांदी से हानि-लाभ दोनों योग बनेंगे। आंधी तूफान से अग्नि जन्य घटनाएं घटेंगी। अंगारकाय योग से मानवीयता में श्रद्धा घटेगी। **शकुन विचार- जेठ अमावस पूर्णिमा बादल हो आकाश। भयकारी वायु चले हो वर्षा का नाश॥ चित्रा, स्वाति, विशाखा में वर्षा का यदि संग। धान्य, किराना तेज हों, श्रावण वर्षा तंग॥ सर्वतपे जब रोहिणी अरु आंधी तूफान। समय अच्छा ही जानिये कृपा करो भगवान॥**

ता. २७ मई ❖ ज्येष्ठ कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

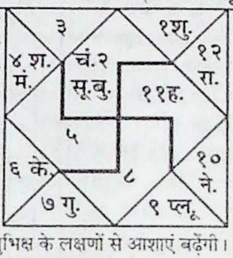

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	३	१	६	०	३	११	५	१०	९	८
११	८	१	२१	१७	३	१२	७	७	२०	२५	२
३८	४३	२२	२६	२०	६	४१	१९	१९	३३	५१	०
२२	३१	२६	३२	५५	२६	३४	५	५	५०	५८	२३
५७	८११	३६	१२४	६	६१	५	३	३	१	०	१
३७	४	०	२३	२२	५०	१	११	११	६	९	२८
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
रोहि. १	कृत्ति. ४	पुन. ४	रोहि. ४	स्वाति ४	अश्वि. १	पुष्य. ३	उ.भा. २	उ.फा. ४	पू.भा. १	धनि. १	मूल. १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लाभ दोनों योग बनेंगे। आंधी तूफान से अग्नि जन्य घटनाएं [illegible] Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS [illegible]। भयकारी वायु चले हो वर्षा का नाश॥ चित्रा, स्वाति, विशाखा में वर्षा का यदि संग। धान्य, किराना तेज हों, श्रावण वर्षा तंग॥ सर्वतपे जब रोहिणी अरु आंधी तूफान। समय अच्छा ही जानिये कृपा करो भगवान॥

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. २८ मई से ११ जून सन् २००६ ई., रा. मिति ७ से २१ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
७	र	१	१०	४७	९	४५	रो	४	२२	७	११	धृ	४८	५९	२५	२	ब	१०	४७	९	४५	३४	२१	५	२६	१९	११	१५	२९	28	मि.१९।७	१	१२	३५	५९	[illegible]	६	५१	२१	३९	चन्द्रदर्शन मु.३० साम्यार्घ, करवीरव्रत, गंगा दशाश्वमेध घाटे स्नानारंभ
८	चं	२	९	९	९	६	मृ	४	२२	७	११	शू	४५	५६	२३	४९	कौ	९	९	९	६	३४	२३	५	२६	१९	११	१६	जमा. १	29	मिथुन	१	१३	३३	३५	३५	७	५१	२२	२९	जमादि उल अव्वल मु. मा. ५ प्रा., रम्भा तृतीया व्रतम्
९	मं	३	९	७	९	५	आ	५	५९	७	४९	गं	४४	१४	२३	७	ग	९	७	९	५	३४	२५	५	२६	१९	१२	१७	२	30	क.२६।४४	१	१४	३१	१०	३३	८	५१	२३	११	भ. २१।२५ से, महाराणा प्रताप जयंती, मेला हल्दी घाटी (राज.), A
१०	बु	४	१०	४८	९	४५	पुन	९	१५	९	८	वृ	४३	५२	२२	५८	वि	१०	४८	९	४५	३४	२७	५	२५	१९	१२	१८	३	31	कर्क	१	१५	२८	४३	३२	९	५०	२३	४७	भ. ९।४५ तक, गुरु अर्जुन देव बलिदान दिवस (प्रा. मत से), B
११	गु	५	१४	१०	११	५	पु	१४	१०	११	५	ध्रु	४४	४४	२३	१९	बा	१४	१०	११	५	३४	२९	५	२५	१९	१३	१९	४	जून 1	कर्क	१	१६	२६	१५	३१	१०	४७	२४	०	श्रुति पंचमी जैन, जून मा. ६ ता. ३० प्रा. B मिथुने बुधः ११।१८
१२	शु	६	१९	०	१३	१	श्ले	२०	३०	१३	३७	व्या	४६	३६	२४	४	तै	१९	०	१३	१	३४	३१	५	२५	१९	१३	२०	५	2	सिं.१३।३७	१	१७	२३	४६	३०	११	४१	२४	१८	अरण्य ६, जामित्र ६, विंध्यवासिनी पूजन, स्वाति ३ में वक्री गुरु २४।४४
१३	श	७	२४	५३	१५	२२	म	२७	४९	१६	३२	ह	४९	५	२५	३	व	२४	५३	१५	२२	३४	३२	५	२५	१९	१४	२१	६	3	सिंह	१	१८	२१	१६	२८	१२	३३	२४	४६	भ. १५।२२ से २८।३८ तक, आर्द्रा में बुध २५।५, पुष्य ४ में शनि १०।१२
१४	र	८	३१	१२	१७	५४	पूफा	३५	३२	१९	३८	व	५१	४४	२६	६	ब	३१	१२	१७	५४	३४	३४	५	२५	१९	१४	२२	७	4	कं.२६।२४	१	१९	१८	४४	२७	१३	२५	२५	१३	श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती ज., मेला क्षीरभवानी (का.), भरणी में शुक्र २३।४४
१५	चं	९	३७	१९	२०	२०	उफा	४३	१	२२	३७	सि	५४	५	२७	३	बा	४	२०	७	९	३४	३५	५	२५	१९	१५	२३	८	5	कन्या	१	२०	१६	११	२६	१४	१७	२५	३९	महेश नवमी (माहेश्वरीणां उत्पत्ति), विश्व पर्यावरण दिवस
१६	मं	१०	४२	३६	२२	२७	ह	४९	३९	२५	१६	व्य	५५	४०	२७	४१	तै	१०	६	९	२७	३४	३७	५	२४	१९	१५	२४	९	6	कन्या	१	२१	१३	३७	२४	१५	११	२६	५	गंगा दशहरा (गंगावतरण), दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ति, मेला हरिद्वार C
१७	बु	११	४६	३२	२४	१	चि	५४	५७	२७	२३	वरि	५६	१०	२७	५२	व	१४	४५	११	१९	३४	३८	५	२४	१९	१६	२५	१०	7	तु.१४।२४	१	२२	११	१	२४	१६	८	२६	३५	भ. ११।१९ से २४।१ तक, निर्जला ११ व्रत सबका, मेला बरहे (भटि.)
१८	गु	१२	४८	४८	२४	५६	स्वा	५८	३७	२८	५१	प	५५	२१	२७	३३	ब	१७	५३	१२	३४	३४	३९	५	२४	१९	१६	२६	११	8	तुला	१	२३	८	२५	२२	१७	८	२७	७	चंपक द्वादशी, मृगशिरा में सूर्य १०।२१, उ.भा.१ में राहु व उ.फा. D
१९	शु	१३	४९	१९	२५	८	वि	६०	०	-	-	शि	५३	९	२६	४०	कौ	१९	१७	१३	७	३४	४१	५	२४	१९	१७	२७	१२	9	वृ.२३।३०	१	२४	५	४७	२२	१८	१२	२७	४६	प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रा. (पू. पक्ष) D ३ में केतु १२।३२
२०	श	१४	४८	७	२४	३९	वि	०	३३	५	३८	सिद्ध	४९	३७	२५	१५	ग	१८	५५	१२	५८	३४	४२	५	२४	१९	१७	२८	१३	10	वृश्चिक	१	२५	३	९	२०	१९	१६	२८	३२	भ.२४।३९ से,
२१	र	१५	४५	२६	२३	३५	अनु	० ५९	५२ ४४	५ २०	४० १८	सा	४४	५३	२३	२१	वि	१६	५७	१२	११	३४	४३	५	२४	१९	१७	२९	१४	11	ध.२९।१८	१	२६	०	२९	२०	२०	१९	५	२६	भ. १२।११ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, ज्येष्ठी पूर्णिमा, E

A विनायक ४ व्रत, पुष्य में मंगल ११।४९, पश्चिमोदयं बुधः २८।१५ C रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, व्यतिपात पुण्यम् E मन्वादि १५, वट सावित्री व्रत पूजा (पू.पक्ष), ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ति, कबीर जयंती

ज्येष्ठ शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ४ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	४	३	२	६	०	३	११	५	१०	९	८
१९	१९	६	६	१६	१२	१३	६	६	२०	२५	१
१८	४२	११	५९	३३	२६	२३	५३	५३	४१	४९	४८
४४	१३	७	४३	२४	३७	४१	३९	३९	१६	४७	२७
५७	[illegible]	३६	१८	५	७०	५	३	३	०	०	१
२७	५८	११	३१	२१	१६	३४	११	११	४३	२५	३२
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

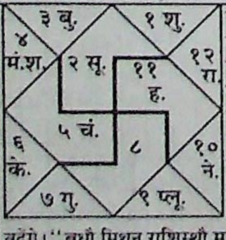

[पक्ष फलम्]

ज्येष्ठ मास में पांच रविवार हैं जो कि अमंगल दायक है। इससे कहीं युद्ध हो राज विग्रह जैसा वातावरण बनेगा। समसप्तक शनि-भौम हो अथवा एक ही संग। प्रजा कष्ट हो अन्न से जन विग्रह का रंग॥ आगे पीछे बहु ग्रह रवि केतु आगार। राजनीति सह द्वन्द से होवे बहुत बिगार॥ घिनौनी राजनीति के प्रभाव से जनता दुःखी होगी। तथा कर्मचारी अधिकारी वर्ग भी शोषित होंगे। अनेकानेक उपद्रवों का आतंक बढ़ेगा। पश्चिमोत्तर देशों में महामारी जैसा दृश्य दिखाई देगा। अग्निदाह योग शनि-मंगल के कारण होंगे। चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती होना कुछ राहत का वातावरण बनायेगा, लेकिन किराना बाजार तेज होगा। कृषि जन्य उपकरणों के भाव भी बढ़ेंगे। "**बुधौ मिथुन राशिस्थौ महर्घ च चतुष्पदाय। तदा वायु विर्जयानी यान्मेघश्च प्रचुरो भवेत॥**" अर्थात महंगाई में विशेष वृद्धि तथा वायु वर्षा के योग से वर्षा कहीं तो अधिक कहीं सूखा का घटक बनेगा। पशुओं में भी रोग बढ़ेगा। पिता-पुत्रों में विवाद जन्य व्यवहार रहेगा। कोई विशिष्ट व्यक्ति काल ग्रस्त होगा। सुदी तीज को आर्द्रा में वर्षा हो तो दुर्भिक्ष करेगी। ज्येष्ठ की पूर्णिमा को ज्येष्ठा क्षय होना महंगाई का कारक बनेगा। कृतिका में बुध होने से शिक्षक, उपदेश प्रचारक यानि ज्ञान प्रदान करने वाले दुःखी होंगे। ज्वर पीड़ा तथा उपद्रवों के कारण प्रशासन भी विफल रहेगा। पक्ष में काफी परिवर्तन होंगे। **व्यापार (तेजी-मंदी)**- उड़द, सरसों, जीरा, भांग-गांजा, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, ग्वार, मूंग, मोठ आदि तेज रहेंगे। औषधि तथा शेयर्स बाजार विशेष तेज होंगे। कपड़ा, बारदाना, कृषि जन्य सामग्री खाद-बीज भी महंगे रहेंगे। कागज उद्योग में भी अचानक तेजी आयेगी। आकाश लक्षण-वायु वेग का प्रभाव रहेगा। भीषण गर्मी से आन्ध्र प्रदेश में विशेष रोगोपद्रव योग। दक्षिणी भारत में मानसून सक्रियता का समय रहेगा। आंधी तूफान के प्रभाव से हानि ज्यादा। **शकुन विचार-वृष राधि का रवि करे, सुख सम्पदा सुकाल। दूध, दही, घी में रहे महंगाई की चाल। धान्य भाव अचानक चढ़े, एकाएक गिर जाए। ऐसी ग्रह चाल से विपदा अचानक छाय॥**

ता. ११ जून ❖ ज्येष्ठ शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

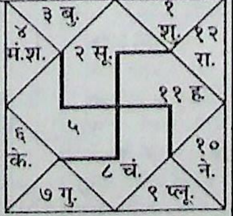

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	७	३	२	६	०	३	११	५	१०	९	८
२६	१६	१०	१८	१५	२०	१४	६	६	२०	२५	१
०	३०	२४	२१	५८	३९	४	३१	३१	४५	४६	३७
२९	५४	५३	७	५७	३२	३	२३	२३	१६	१४	३७
५७	[illegible]	३६	८६	४	७०	६	३	३	०	०	१
२०	१६	२०	१३	१९	३७	१	११	११	२३	३८	३४
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. १२ से २५ जून सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २२ ज्येष्ठ से ४ आषाढ़ तक। रवि उत्तरायने-दक्षिणायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म- वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
२२	चं	१	४१	३१	२२	१	मू.	५७	२८	२८	२३	शुभ	३९	९	२१	४	बा	१३	३७	१०	५१	३४	४४	५	२४	१९	१८	३०	१५	12	धनु	१	२६	५७	४९	२३/२२	२१	१७	६	२७	गुरु हर गोविन्द सिंह जयंती (प्रा. मत से), पुनर्वसु में बुध ९।६
२३	मं	२	३६	४१	२०	५	पूषा	५४	२३	२७	९	शु	३२	३९	१८	२८	तै	९	१२	९	५	३४	४४	५	२४	१९	१८	३१	१६	13	धनु	१	२७	५५	८	१९	२२	७	७	३५	A संक्रांति मु. ३० बैठी, पुण्य काल १६।१२ तक
२४	बु	३	३१	१५	१७	५४	उषा	५०	४६	२५	४३	ब	२५	३९	१५	४०	व	४	१	७	१	३४	४५	५	२४	१९	१८	३२	१७	14	म.८।४९	१	२८	५२	२७	१७	२२	५१	८	४४	भ. ७।१ से १७।५४ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
२५	गु	४	२५	२९	१५	३६	श्र	४६	५६	२४	११	ऐं	१८	२१	१२	४५	बा	२५	२९	१५	३६	३४	४६	५	२४	१९	१९	१	१८	15	मकर	१	२९	४९	४४	१८	२३	२९	९	५२	सौर आषाढ़ प्रा., मेला भुन्तर (हि.प्र.), मिथुन में सूर्य ९।४८, A
२६	शु	५	१९	३७	१३	१५	धनि	४३	५	२२	३८	वै	१०	५७	९	४७	तै	१९	३७	१३	१५	३४	४६	५	२४	१९	१९	२	१९	16	कुं.११।२४	२	०	४७	२	१७	२४	०	१०	५८	पंचक ११।२४ से, कृतिका में शुक्र ७।४९
२७	श	६	१३	५१	१०	५७	शत	३९	२२	२१	१०	वि	३/५६	३६/२५	८/२७	५२/५९	व	१३	५१	१०	५७	३४	४७	५	२५	१९	१९	३	२०	17	कुंभ	२	१	४४	१९	१७	२४	३	१२	२	भ. १०।५७ से २१।५१ तक
२८	र	७	८	१८	८	४४	पूभा	३५	५६	१९	४७	आयु	४९	२९	२५	१२	ब	८	१८	८	४४	३४	४७	५	२५	१९	२०	४	२१	18	मी.१४।७	२	२	४१	३६	१६	२४	३५	१३	५	कालाष्टमी, वृषे शुक्र: २७।३०
२९	चं	८	३	२	६	३८	उभा	३२	४८	१८	३२	सौ	४२	४८	२२	३२	कौ	३	२	६	३८	३४	४७	५	२५	१९	२०	५	२२	19	मीन	२	३	३८	५२	१७	२५	७	१४	८	वक्री हर्षल २७।२२
०	चं	९	५८	८	२८	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथि क्षय:
३०	मं	१०	५३	३७	२६	५२	रे	३०	३	१७	२७	शो	३६	२७	२०	०	व	२५	४९	१५	४५	३४	४८	५	२५	१९	२०	६	२३	20	मे.१७।२७	२	४	३६	९	१६	२५	४१	१५	१३	भ. १५।४६ से २६।५२ तक, पंचक १७।२७ तक, कर्के बुध: १७।२७
३१	बु	११	४९	३४	२५	१५	अ	२७	४४	१६	३१	अति	३०	२६	१७	३६	ब	२१	३२	१४	२	३४	४८	५	२५	१९	२०	७	२४	21	मेष	२	५	३३	२५	१६	२६	१७	१६	१८	योगिनी एकादशी व्रत सबका, गोपद्म व्रतोद्यापन, सायन कर्क में B
१	गु	१२	४६	४	२३	५१	भ	२५	५६	१५	४८	सु	२४	५२	१५	२२	कौ	१७	४४	१२	३१	३४	४८	५	२५	१९	२१	८	२५	22	वृ.२१।३९	२	६	३०	४१	१६	२६	५९	१७	२४	राष्ट्रीय आषाढ़ प्रा., आर्द्रा में सूर्य ९।२५
२	शु	१३	४३	१५	२२	४४	कृ	२४	४५	१५	२०	धृ	१९	४८	१३	२१	ग	१४	३३	११	१५	३४	४७	५	२६	१९	२१	९	२६	23	वृष	२	७	२७	५७	१५	२७	४६	१८	२८	भ. २२।४४ से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री व्रत
३	श	१४	४१	१९	२१	५८	रो	२४	२३	१५	११	शू	१५	२२	११	३५	वि	१२	१०	१०	१८	३४	४७	५	२६	१९	२१	१०	२७	24	मि.२७।१६	२	८	२५	१२	१५	२८	३९	१९	२८	भ. १०।१८ तक, पुष्य में बुध १३।४१
४	र	३०	४०	२७	२१	३७	मृ	२५	०	१५	२६	गं	११	४४	१०	८	च	१०	४४	९	४४	३४	४७	५	२६	१९	२१	११	२८	25	मिथुन	२	९	२२	२७	१५	५	३७	२०	२१	देवपितृकार्याऽमावस्या
																																									Bसूर्य १७।५८,रवि दक्षिणायन प्रा., वर्षा ऋतु प्रा., आश्लेषा में मंगल १२।३४

आषाढ़ कृ. ८ चन्द्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १९ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	११	३	२	६	१	३	११	५	१०	९	८
३	९	१५	२८	१५	०	१४	६	६	२०	२५	१
३८	१	१६	२८	२८	५	५३	५	५	४६	४०	२५
५२	२५	११	२०	५५	५६	४४	५६	५६	५६	२५	२
५७	८२	३६	६२	३	७१	६	३	३	०	०	१
१७	२२	३१	१	१	१	२७	११	११	१	५१	३४
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	२	४	३	३	२	४	१	३	१	१	१
मृग.	उ.भा.	पुष्य	पू.फा.	स्वाति	कृति.	पुष्य	उ.भा.	उ.फा.	पू.भा.	धनि.	मूल

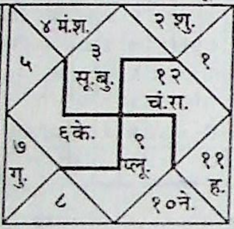

[पक्ष फलम्]

"सोमस्य पंचवारा स्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन-धान्य समृद्धि सुखं भवति सर्वदा॥" लेकिन-"पंचवार भौमक तदा राजा प्रजा भय कष्ट। युद्धादि योग कंटक संकट सर्वत्र जायते॥" यानि पांच सोम शुभदायक हैं, लेकिन पांच मंगल अमंगलकारी बने हुए हैं। इस पक्ष में आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी गुरुवार को मिथुन संक्रांति का प्रवेश प्रथम प्रहर में होना शुभ कारक है। बिगड़ते कार्य सुधरेंगे। मिथुन संक्रांति कुभावावस्था बैठी ३० मुहूर्ती मंहगाई में छलांग लगायेगी। शुक्रोदय के कारण सफेद वस्तुएं तेज होंगी। कोंकण दमन द्वीप में अशुभ घटना का योग बनता है। आषाढ़ बदी नवमी का क्षय होना-केन्द्रीय सरकार में संकट का कहर बढ़ेगा। तथा बीमारी का प्रभाव यत्र-तत्र सर्वत्र बढ़ेगा। कर्क का शनि बुध मंगल गुप्त रहस्यों को उजागर करेगा तथा पुराने विवाद को उखाड़ेगा (उगलेगा)। तिब्बत, हिमालय, कश्मीर का प्रशासनिक ढांचा बिगड़ेगा। नारी शोषण व पीड़ा का बवंडर बढ़ेगा। डकैती तथा लूटमार व्यवसाय बनने जैसी वारदातें बढ़ेंगी। वायुयान का अपहरण तथा दुर्घटना योग भी आश्चर्यजनक स्थिति बनायेगा। आतंकवाद की स्थिति बढ़ेगी। किसी राज गुरु या विशिष्ट आश्रम में भी शौवनात्मक घटनाओं का खुलासा आएगा। **व्यापार (तेजी-मंदी)**-कपास, सूत मन्दा, पीली वस्तुओं के भाव में जोरदार तेजी का योग बनता है। सरसों, उड़द के भाव सम हों तथा आगामी वर्ष में कमी उत्पन्न यानि उत्पादन न्यून बनता है। ग्वार, ज्वार, पाट, बारदाना, मूंग, मोठ, अरहर, तिल, जौ, तिलहन, धनियां के भाव तेज हों। **आकाश लक्षण**-पूर्वोत्तर-उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड, आसाम, केरल, छत्तीसगढ़ में वर्षा योग बनता है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात में हवाएं चलेंगी। कहीं-कहीं गरज व वर्षा भी होगी। आंधी तूफान का भय रहेगा। उमस ज्यादा वर्षा कम रहेगी। **शकुन विचार**-आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को चमके बिजली और मेघ गाज। **आगे दो मास तक वर्षा को तड़पे मत बेचों अनाज॥ बुध मंगल शनि युक्ति से होसी भ्रष्टाचार। अनजाने भी मिलकर कर लेसी व्यापार॥**

ता. २५ जून ❖ आषाढ़ कृ. ३० रवि प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

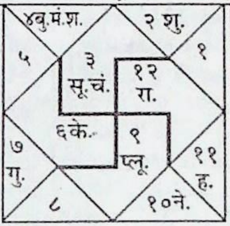

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	२	३	३	६	१	३	११	५	१०	९	८
९	१	१८	३	१५	७	१५	५	५	२०	२५	१
२२	१३	५५	४८	१३	१२	३३	४६	४६	४६	३४	१५
२७	८	४०	५५	२७	४५	१२	५१	५१	९	५५	३८
५७	८२	३६	४०	१	७१	६	३	३	०	१	१
१५	५९	४०	४२	५७	१७	४५	११	११	१८	१	३४
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
१	३	१	१	३	४	४	१	३	१	१	१
आर्द्रा	मृग.	श्लेषा	पुष्य	स्वाति	कृति.	पुष्य	उ.भा.	उ.फा.	पू.भा.	धनि.	मूल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

आगामी वर्ष में कमी उत्पन्न यानि उत्पादन न्यून बनता है। ग्वार, ज्वार, पाट, बारदाना, मूंग, मोठ, अरहर, तिल, जौ, तिलहन, धनियां के भाव तेज हों। आकाश लक्षण-पूर्वोत्तर-उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड, आसाम, केरल, छत्तीसगढ़ में वर्षा योग बनता है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात में हवाएं [illegible] वर्षा भी होगी। आंधी तूफान का भय रहेगा। [illegible] शकुन विचार-आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को चमके बिजली और मेघ गाज। आगे दो मास तक वर्षा की तड़पे मत बेचों अनाज॥ बुध मंगल शनि युक्ति से होसी भ्रष्टाचार। अनजाने भी मिलकर कर लेसी व्यापार॥

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. २६ जून से ११ जुलाई सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से २० आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्य उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः ५ घं. ३० मि.) रा.	अं	क	वि		चन्द्र उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
५	चं	१	४०	४९	२१	४६	आ	२६	४१	१६	१०	वृ	९	१	९	३	किं	१०	२८	९	३८	३४	४६	५	२७	१९	२१	१२	२९	26	मिथुन	२	१०	१९	४२	[illegible]	६	३८	२१	६	A (उड़ीसा), मनोरथ द्वितीया (बंगाल), रोहिणी में शुक्र १३।४७
६	मं	२	४२	३६	२२	२९	पुन	२९	५९	१७	२६	ध्रु	७	२२	८	२४	बा	११	३२	१०	४	३४	४६	५	२७	१९	२१	१३	३०	27	क.११।८	२	११	१६	५७	१४	७	३८	२१	४५	चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ, श्री जगदीश रथयात्रा जगन्नाथ पुरी A
७	बु	३	४५	५०	२३	४७	पु	३४	३३	१९	१६	व्या	६	५१	८	११	तै	१४	२	११	४	३४	४५	५	२७	१९	२१	१४	१	28	कर्क	२	१२	१४	११	१४	८	३६	२२	१८	जमादि उस्सानी मु.मा. ६ प्रा.
८	गु	४	५०	२५	२५	३८	श्ले	४०	२७	२१	३८	ह	७	२६	८	२६	व	१७	५८	१२	३९	३४	४५	५	२७	१९	२१	१५	२	29	सिं.२१।३८	२	१३	११	२५	१४	९	३२	२२	४७	भ. १२।३९ से २५।३८ तक, विनायक ४ व्रत
९	शु	५	५६	५	२७	५४	म	४७	२७	२४	२७	व	९	१	९	४	ब	२३	८	१४	४३	३४	४४	५	२८	१९	२१	१६	३	30	सिंह	२	१४	८	३९	१३	१०	२५	२३	१४	B आश्लेषा १ में शनि २१।२, वक्री बुध २४।२१
१०	श	६	६०	०	-	-	पूफा	५५	७	२७	३१	सि	११	२०	१०	०	कौ	२९	११	१७	९	३४	४३	५	२८	१९	२१	१७	४	1	सिंह	२	१५	५	५२	१३	११	१६	२३	४०	कुमार षष्ठी व्रत, जुलाई मा. ७ ता. ३१ प्रा.
११	र	६	२	२२	६	२५	उफा	६०	०	-	-	व्य	१४	२	११	५	तै	२	२२	६	२५	३४	४२	५	२९	१९	२१	१८	५	2	कं.१०।१८	२	१६	३	५	१२	१२	८	२४	०	विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजनम्, व्यतिपात पुण्यं
१२	चं	७	८	४०	८	५७	उफा	२	५१	६	३७	वरि	१६	३९	१२	९	व	८	४०	८	५७	३४	४१	५	२९	१९	२१	१९	६	3	कन्या	२	१७	०	१७	१३	१३	०	२४	६	भ. ८।५७ से २२।६ तक
१३	मं	८	१४	२१	११	१४	ह	१०	४	९	३१	प	१८	४५	१२	५९	ब	१४	२१	११	१४	३४	४०	५	२९	१९	२१	२०	७	4	तु.२२।४८	२	१७	५७	३०	११	१३	५५	२४	३३	खरसी पूजा (त्रिपुरा), अष्टान्हिक पर्व प्रा. जैन, श्री दुर्गाष्टमी, B
१४	बु	९	१८	४८	१३	१	चि	१६	७	११	५६	शि	१९	५२	१३	२७	कौ	१८	४८	१३	१	३४	३९	५	३०	१९	२१	२१	८	5	तुला	२	१८	५४	४१	१२	१४	५३	२५	४	भड्डली नवमी, शूद्रादि ९, कन्दर्प ९, मेला शरीफ भवानी (कश्मीर)
१५	गु	१०	२१	३३	१४	८	स्वा	२०	३२	१३	४३	सिद्धि	१९	४०	१३	२२	ग	२१	३३	१४	८	३४	३८	५	३०	१९	२१	२२	९	6	तुला	२	१९	५१	५३	११	१५	५५	२५	३९	भ. २६।१८ से, आशा दशमी व्रत, मन्वादि १०, गिरिजा पूजनम्, C
१६	शु	११	२२	२२	१४	२७	वि	२३	४	१४	४४	सा	१७	५६	१२	४१	वि	२२	२२	१४	२७	३४	३६	५	३१	१९	२१	२३	१०	7	वृश्चि.८।३३	२	२०	४९	४	१२	१६	५९	२६	२१	भ. १४।२७ तक, देवशयनी एका. व्रत सबका, हरिवासर १४।४४ D
१७	श	१२	२१	१०	१३	५९	अनु	२३	३८	१४	५८	शुभ	१४	३८	११	२२	बा	२१	१०	१३	५९	३४	३५	५	३१	१९	२१	२४	११	8	वृश्चिक	२	२१	४६	१६	११	१८	३	२७	१२	शनि प्रदोष व्रत, मृगशिरा में शुक्र १८।००
१८	र	१३	१८	७	१२	४६	ज्ये	२२	२३	१४	२९	शु	९	४८	९	२७	तै	१८	७	१२	४६	३४	३३	५	३१	१९	२१	२५	१२	9	ध.१४।२९	२	२२	४३	२७	११	१९	४	२८	११	D से २२।४९ तक, चातुर्मास व्रत नियमादि प्रा.
१९	चं	१४	१३	२८	१०	५५	मू	१९	३३	१३	२१	ब्र	० ५६	३८ २४	६ २८	५९ ६	व	१३	२८	१०	५५	३४	३२	५	३२	१९	२१	२६	१३	10	धनु	२	२३	४०	३८	११	१९	५९	२९	१७	भ. १०।५५ से २१।४५ तक, चौमासी १४ जैन, वायु परीक्षा, E
२०	मं	१५	७	३३	८	३४	पूषा	१५	३०	११	४४	वै	४८	२१	२४	५३	ब	७	३३	८	३४	३४	३०	५	३२	१९	२०	२७	१४	11	म.१७।१७	२	२४	३७	४९	११	२०	४६	६	२८	आषाढ़ी पूर्णिमा पुण्यं, मन्वादि १५, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजन, F

C श्री जगदीश रथ पुनर्यात्रा (उड़ीसा), पुनर्वसु में सूर्य ८।५५, मार्गी गुरुः २२।३६ E सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत, कोकिला व्रतम्, चातुर्मास प्रा. जैन, पश्चिमास्तं बुधः १८।२०

F सन्यासियों का चातुर्मास नियमादि प्रा., विश्व जनसंख्या दिवस, मेला नैमिषारण्य, अष्टान्हिक पर्व पूर्ति जैन

आषाढ़ शु. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ४ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	३	३	६	१	३	११	५	१०	९	८
१७	२१	२४	७	१५	१७	१६	५	५	२०	२५	१
५७	१९	२६	२४	२	५५	३५	१८	१८	४१	२४	१
३०	१३	३०	१	२०	४८	२४	१४	१४	४५	५८	५४
५७	[illegible]	३६	१	०	७१	७	३	३	०	१	१
११	३०	५२	२९	२०	३९	६	११	११	४३	१३	२९
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

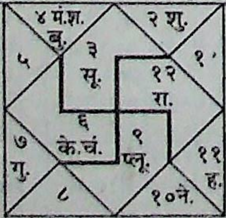

[पक्ष फलम्]

इस पक्ष में चन्द्र दर्शन भौम का होना लाल वस्तु की तेजी का तथा यत्र तत्र विवाद बढ़ेगा। "**भौमवासरे चन्द्रदर्शन तीस मुहूर्ती वर्तते। भूमि रक्त वर्णा कृषक विवाद प्रजायते॥ शनिवार को षष्ठी होना गेहूं के भाव मन्दे हों॥ शनि षष्ठी पूर्णतया गौधूम गति मंदं भविष्यन्ति॥**" कृष्ण चतुर्दशी को रोहिणी के कारण राजयुद्ध यानि विश्व में सत्ता पक्षों का व्यक्तिगत विवाद बढ़ेगा। पार्टियों में भी खिन्नता बढ़ेगी। विश्वास में न्यूनता आएगी। अमावस्या रविवार के योग से मृगशिरा सुभिक्ष कारक प्रजा में कुछ शांति जैसा वातावरण बनेगा। मानसून की सक्रियता का योग दिनांक २७ जून ०६ से बनेगा। शुक्ल पंचमी शुक्रवारी होने से तूफान वेग ज्यादा चलेगा। कच्ची बस्तियों में तबाही मचेगी। शुक्ल चतुर्दशी सोमवार की होने से धान्य और तृणादि (घास) में कमी हो तथा मंहगाई का वर्चस्व बढ़ेगा। पूर्णिमा मंगलवार की होने से और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के योग से पूर्णिमा भी पन्द्रह घड़ी से न्यून होने के कारण महंगाई बढ़ेगी। वायु और बादल के संयोग से फलों का नाश या न्यूनाधिकता बनेगी। आश्लेषा में मंगल के कारण वर्षा अधिक और धान्य का नाश होगा। दुर्भिक्ष योग बनता है। तथा साँप ज्यादा पैदा होंगे। शस्त्र निपात (युद्ध जैसा माहोल) क्षुधा (भुखमरी) तथा रोगादि भय बना रहेगा। **सोम शुक्रे, सुर गुरे जो पौढ़े सुरराय। अन्न जौ बहुला नीपजै पृथ्वी में सुखराय॥** रोग बाधाएं बढ़ेगी। पशु धन हानि। **व्यापार (तेजी-मंदी)**- कपास-बिनौला, चाँदी, सोना, सूत, सण, मूंगफली, धागा, मिर्च तेज होंगे। सुदी ४ से ८ तक बाजार एक तरफ चलेगा। व्यापारी स्टॉक का ध्यान रखें। राई का भाव आकाश छूएगा। विश्व व्यापार में पेट्रोल का दाम घटने का योग, लेकिन शेयर्स बाजार अस्थिर घाटा वाला रहेगा। **आकाश लक्षण**- उत्तरी भारत में बाढ़ का योग भी बनेगा। अनेक स्थानों पर वर्षा से राहत महसूस होगी। बिजली गिरना तथा धन हानि का योग बनेगा। नदियों का जल बढ़े तथा बांध टूटने का योग है। **शकुन विचार**-टिटहरी पक्षी यदि अपने अण्डे ऊँची भूमि पर धरे तो वर्षा बहुत हो, नीची भूमि पर धरे तो वर्षा बहुत कम हो, यदि अण्डे नदी, तालाब, जल के किनारे धरे तो बिल्कुल वर्षा नहीं होवे। यदि आषाढ़ शुक्ल पंचमी के दिन पश्चिम की पवन चले इन्द्रधनुष देखे तो धान्य संग्रह से कार्तिक में अच्छा लाभ हो।

ता. ११ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

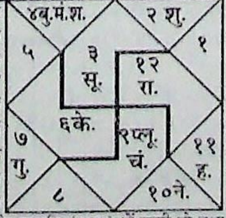

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	८	३	३	६	१	३	११	५	१०	९	८
२४	२२	२८	५	१५	२६	१७	४	४	२०	२५	०
३७	५४	४५	५९	३	१८	२५	५५	५५	३५	१६	५१
४९	४९	२	२	४९	१०	४८	५८	५८	४६	२	४५
५७	८६८	३७	२८	०	७१	७	३	३	१	१	१
११	१	१	४४	५६	५६	१९	११	११	२	२१	२३
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण कृष्ण पक्ष-८

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. १२ से २५ जुलाई सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २१ आषाढ़ से ३ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
२१	बु	१	०	४४	५	५१	उषा	१०	३६	९	४७	वि	३९	४८	२१	२८	कौ	०	४४	५	५१	३४	२८	५	३३	१९	२०	२८	१५	12	मकर	२	२५	३५	०	[illegible]/१२	२१	२७	७	३९	अशून्य शयन व्रतारंभ (बंगाल) B श्रावण सोमवार व्रत
०	बु	२	५३	२७	२६	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथि क्षयः A संक्रांति मु. ४५ बैठी पुण्य काल १४।१६ से
२२	गु	३	४६	०	२३	५७	श्र	५/५९	२३/५४	७/२९	४०/३१	प्री	३१	३	१७	५९	व	१९	४३	१३	२६	३४	२६	५	३३	१९	२०	२९	१६	13	कुं.१८।३५	२	२६	३२	१२	१२	२२	४	८	४८	भ. १३।२६ से २३।५७ तक, पंचक १८।३५ से, माघायां सिंहे भौमः ६।५
२३	शु	४	३८	४३	२१	३	श	५४	४५	२७	२८	आयु	२२	२३	१४	३१	ब	१२	१८	१०	२९	३४	२४	५	३४	१९	२०	३०	१७	14	कुंभ	२	२७	२९	२४	१२	२२	३८	९	५४	कृष्ण चतुर्थी व्रत, मिथुने शुक्रः ७।२८
२४	श	५	३१	५२	१८	१९	पूभा	५०	६	२५	३७	सौ	१४	०	११	११	कौ	५	१३	७	४०	३४	२२	५	३४	१९	१९	३१	१८	15	मी.२०।३	२	२८	२६	३६	१३	२३	१०	१०	५९	नागपंचमी (मरुस्थले), पुनर्वसु में वक्री बुध २१।५३
२५	र	६	२५	४०	१५	५१	उभा	४६	१०	२४	३	शो	६/५८	७/५२	८/२९	२/७	व	२५	४०	१५	५१	३४	२०	५	३५	१९	१९	श्राव. १	१९	16	मीन	२	२९	२३	४९	१४	२३	४३	१२	३	भ. १५।५१ से २६।४६ तक, सौर श्रावणारंभ, कर्क में सूर्य २०।४०A
२६	चं	७	२०	१४	१३	४१	रे	४३	२	२२	४८	सु	५२	१५	२६	३०	ब	२०	१४	१३	४१	३४	१८	५	३५	१९	१९	२	२०	17	मे.२२।४८	३	०	२१	३	१४	२४	०	१३	७	पंचक २२।४८ तक, शीतला सप्तमी (उड़ीसा), कालाष्टमी, B
२७	मं	८	१५	४१	११	५२	अ	४०	४८	२१	५५	धृ	४६	२४	२४	९	कौ	१५	४१	११	५२	३४	१६	५	३६	१९	१८	३	२१	18	मेष	३	१	१८	१७	१५	२४	१८	१४	११	मन्वादि ८ D लोकमान्य बा. गंगाधर तिलक जयंती
२८	बु	९	१२	२	१०	२५	भ	३९	२८	२१	२४	शू	४१	१७	२२	७	ग	१२	२	१०	२५	३४	१३	५	३६	१९	१८	४	२२	19	वृ.२७।२०	३	२	१५	३२	१६	२४	५७	१५	१६	भ. २१।५३ से, मंगला गौरी पूजन, केर पूजा (त्रिपुरा), गुरु C
२९	गु	१०	९	२०	९	२१	कृ	३९	५	२१	१५	गं	३६	५६	२०	२३	वि	९	२०	९	२१	३४	११	५	३७	१९	१७	५	२३	20	वृष	३	३	१२	४८	१६	२५	४२	१६	२०	भ. ९।२१ तक, मिथुने वक्री बुधः २३।४२, पुष्य में सूर्य ८।३१
३०	शु	११	७	३४	८	३९	रो	३९	३९	२१	२९	वृ	३३	२१	१८	५८	बा	७	३४	८	३९	३४	९	५	३८	१९	१७	६	२४	21	वृष	३	४	१०	४	१८	२६	३२	१७	२०	कामदा एकादशी व्रत सबका
३१	श	१२	६	४८	८	२२	मृ	४१	१३	२२	८	धु	३०	३५	१७	५२	तै	६	४८	८	२२	३४	६	५	३८	१९	१७	७	२५	22	मि.९।४५	३	५	७	२२	१८	२७	२८	१८	१५	शनि प्रदोष व्रत, सायन सिंह में सूर्य २८।५०
श्राव. १	र	१३	७	४	८	२९	आ	४३	५०	२३	११	व्या	२८	३९	१७	६	व	७	४	८	२९	३४	३	५	३९	१९	१६	८	२६	23	मिथुन	३	६	४	४०	१८	२८	२७	१९	२	भ. ८।२९ से २०।४६ तक, मास शिवरात्री व्रत, राष्ट्रीय श्रावण प्रा.,D
२	चं	१४	८	२६	९	२	पुन	४७	३३	२४	४०	ह	२७	३५	१६	४१	श	८	२६	९	२	३४	१	५	३९	१९	१६	९	२७	24	क.१८।१५	३	७	१	५८	१९	२९	२७	१९	४३	पितृकार्याऽमावस्या, श्रावण सोमवार व्रत
३	मं	३०	१०	५७	१०	३	पु	५२	२४	२६	३७	व	२७	२६	१६	३८	ना	१०	५७	१०	३	३३	५८	५	४०	१९	१५	१०	२८	25	कर्क	३	७	५९	१७	२०	६	२६	२०	१७	देवकार्याऽमावस्या, भौमवती अमा., हरियाली ३०, चितलगी ३०E

C हरकिशन जी जयंती (प्रा.म.से), आर्द्रा में शुक्र २०।२९, पूर्वास्तं शनिः १०।६ E (उड़ीसा), मन्वादि ३०, सरस माधुरी जयंती, लक्ष्मी पोल यात्रा (पुष्कर जी)

श्रावण कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १८ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	०	४	३	६	२	३	११	५	१०	९	८
१	३	३	१	१५	४	१८	४	४	२०	२५	०
१८	५२	४	४७	१४	४२	१७	३३	३३	२७	६	४२
१७	१४	४२	२२	२	३८	३५	४३	४३	४०	१३	१८
५७	८३६	३७	३९	२	७२	७	३	३	१	१	१
१५	४३	१२	५८	१०	१५	३०	११	११	१९	२८	१८
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पुन. ४	आश्वि. २	मघा १	पुन. ४	स्वाति ३	मृग. ४	श्लेषा १	उ.भा. ३	उ.फा. ३	पू.भा. १	धनि. १	मूल १

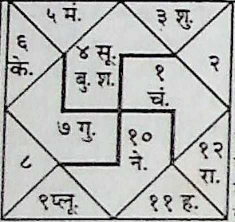

[पक्ष फलम्]

पक्षारम्भ बुधवार से होना व्यापारियों के लिए शुभदायक है। द्वितीया तिथि का क्षय (घटना) कृषि वर्ग के लिए अशुभदायक है। इसी पक्ष में दिनांक १६ जुलाई ०६ रविवार को कर्क संक्रांति का होना नील कचुंकी वृद्धावस्था (बैंठी) मु. ४५ धान्य भाव समर्घ योग। उत्तरे राहु पश्चिम मूल। शुक्रोदय पूर्व दिशा प्रातः ८-१३ से ८-१३ रात्रि तक पुण्य दान पर्व योग शुभ है। सफेद वस्तु का भाव मन्दा होगा। **शनि-सूर्य के योग से तन रोगी आपार। देखो निज स्वभाव में चलेगी तकरार॥ शुक्र-बुध की युक्ति बिगड़े शासन तंत्र। बिन बुलाये बिकना पड़े यह लोकतंत्र॥** युद्ध या राज विग्रह का कारण भी बनेगा। पीछे सूर आगे मंगल कारक वायु वर्षा खण्डन। गुरु सौख्य भाव शत्रु क्षेत्रे अपकीर्ति कारक रहेगा। अनावृष्टि हो. उड़द, मूंग, तिल के भाव तेज हों। कर्क का शनि अस्त होने से सभी यात्रीगण दुखी होंगे। प्राकृतिक आपदा का विशेष भय पश्चिमी देशों में रहेगा। शत्रु मित्र बनकर शत्रुता प्रस्तुत करेगा। **जंगल में मंगल। मंगल में हो दंगल॥** श्रावण कृष्णा द्वितीया का क्षय होना राज विग्रह (आपदा) का भय बनने का कारक बनेगा। मंगल वर्षा में कमी विशेष घटक पश्चिमी राजस्थान में बनेगा। हरियाणा में पशुधन हानि होगी। **व्यापार (तेजी-मंदी)**- बिनोला, राई, रायड़ा, सरसों में तेजी। गुड़, शक्कर, तेल में मन्दी का योग बनेगा। सूरजमुखी-अरण्डी, औषधियों के भाव चना-मक्का सहित तेज रहेगा। मशीनरी में मन्दापन आएगा। लाल रंग, मिर्ची-मसाला तथा बदाम में भी तेजी रहेगी। तृण काष्ठ भी तेज होगा। जीरा सम रहेगा। **आकाश लक्षण**-पंजाब, हरियाणा, कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरी राजस्थान में अच्छी वर्षा का योग है। मध्य राजस्थान पूर्वी राजस्थान में कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा योग। दिल्ली-बिहार में अतिवृष्टि होगी। **शकुन विचार**- श्रावण में यदि कृतिका नक्षत्र में वर्षा हो तो आगे चौमासे में अच्छी वर्षा होगी। श्रावणी कृष्ण एकादशी को रोहिणी होने से सुभिक्ष का योग करता है। अमावस्या को मंगलवार और पुष्य से अरिष्टकारी योग बनता है। केन्द्रिय सरकार में उपद्रव बढ़ेगा। उत्तरांचल में भी गड़बड़ होगी।

ता. २५ जुलाई ❖ श्रावण कृ. ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

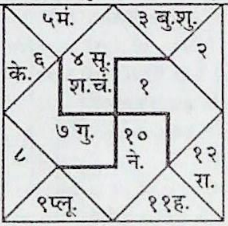

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	३	४	२	६	२	३	११	५	१०	९	८
७	५	७	२७	१५	१३	१९	४	४	२०	२४	०
५९	४९	२५	५२	३२	९	१०	११	११	१७	५५	३३
१७	१२	४०	२२	४९	१४	२६	२७	२७	३६	४१	४१
५७	७३८	३७	१९	३	७२	७	३	३	१	१	१
२०	३	२३	२०	२२	३२	३७	११	११	३६	३३	९
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
पुष्य १	पुष्य १	मघा. ३	पुन. ३	स्वाति ३	आर्द्रा १	श्लेषा १	उ.भा. १	उ.फा. ३	पू.भा. १	धनि. १	मूल १

आर्यभट्ट पंचांगम् 26 July to 9 Aug.-2006 65

ता. २६ जुलाई से ९ अगस्त सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ४ से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

योग। दिल्ली-बिहार में अतिवृष्टि होगी। शकुन विचार- श्रावण में यदि ... में अच्छी वर्षा होगी। श्रावणी कृष्ण एकादशी को रोहिणी होने से सुभिक्ष का योग करता है। अमावस्या को मंगलवार और पुष्य से अरिष्टकारी योग बनता है। केन्द्रिय सरकार में उपद्रव बढ़ेगा। उत्तरांचल में भी गड़बड़ होगी।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण शुक्ल पक्ष-९

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. २६ जुलाई से ९ अगस्त सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ४ से १८ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः ५ घं. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्र उदय घं	मि	चन्द्र अस्त घं	मि	संदर्भ
४	बु	१	१४	३८	११	३२	श्ले	५८	२१	२९	१	सि	२८	१०	१६	५६	ब	१४	३८	११	३२	३३	५५	५	४०	१९	१५	११	२९	26	सिं.२९।१	३	८	५६	३७	५७/२१	७	२३	२०	४८	चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घता, नक्तव्रतारंभ, सोमेश्वर पूजन, A
५	गु	२	१९	२५	१३	२७	म.	६०	०	-	-	व्य	२९	४५	१७	३५	कौ	१९	२५	१३	२७	३३	५३	५	४१	१९	१४	१२	र. १	27	सिंह	३	९	५३	५८	२१	८	१७	२१	१६	रज्जब मु.मा. ७ प्रा., सिंधारा, व्यतिपात पुण्यम्, उर्स मेला प्रा. (अजमेर)
६	शु	३	२५	९	१५	४५	म.	५	१४	७	४३	वरि	३२	०	१८	२९	ग	२५	९	१५	४५	३३	५०	५	४१	१९	१३	१३	२	28	सिंह	३	१०	५१	१९	२२	९	१०	२१	४२	भ. २९।२ से, मधुश्रवा (छोटी) तीज, हरियाली तीज, मार्गी बुधः२९।१९
७	श	४	३१	३०	१८	१८	पूफा	१२	५१	१०	५१	प	३४	४२	१९	३५	वि	३१	३०	१८	१८	३३	४७	५	४२	१९	१३	१४	३	29	कं.१७।३८	३	११	४८	४१	२२	१०	१	२२	८	भ. १८।१८ तक, विनायक ४ व्रत, वरद ४ Aपूर्वोदयं बुधः १७।२९
८	र	५	३८	१	२०	५५	उफा	२०	४६	१४	१	शि	३७	३०	२०	४३	ब	४	४६	७	३७	३३	४४	५	४३	१९	१२	१५	४	30	कन्या	३	१२	४६	३	२३	१०	५३	२२	३४	नागपंचमी (देशाचार), भित्ति चित्रित नाग पूजन, जीवंतिका पूजन, B
९	चं	६	४४	१०	२३	२३	ह	२८	२८	१७	६	सिद्ध	४०	२	२१	४४	कौ	११	१०	१०	११	३३	४१	५	४३	१९	११	१६	५	31	कन्या	३	१३	४३	२६	२४	११	४६	२३	३	वर्ण श्रृयाल षष्ठी, अश्वत्थ मारुति ६, कल्की जयंती, C
१०	मं	७	४९	२०	२५	२८	चि	३५	२२	१९	५२	सा	४१	५०	२२	२८	ग	१६	५४	१२	२९	३३	३८	५	४४	१९	११	१७	६	अग. 1	तु.६।३३	३	१४	४०	५०	२४	१२	४२	२३	३६	भ. २५।२८ से, शीतला ७ (सिन्ध), गोस्वामी तुलसीदास जयंती, D
११	बु	८	५३	१	२६	५७	स्वा	४०	५५	२२	६	शुभ	४२	३३	२२	४५	वि	२१	२३	१४	१७	३३	३४	५	४४	१९	१०	१८	७	2	तुला	३	१५	३८	१४	२४	१३	४०	२४	०	भ. १४।१७ तक, श्री दुर्गाष्टमी, मेला नयनादेवी व चिंतपूर्णी (हि.प्र.)
१२	गु	९	५४	५०	२७	४१	वि	४४	४३	२३	३८	शु	४१	५०	२२	२९	बा	२४	१०	१५	२५	३३	३१	५	४५	१९	९	१९	८	3	वृश्चि.१७।२०	३	१६	३५	३८	२५	१४	४२	२४	१३	आश्लेषा में सूर्य ७।२०, पू.फा. में मंगल १६।१७
१३	शु	१०	५४	३४	२७	३५	अनु	४६	३०	२४	२२	ब्र	३९	३१	२१	३४	तै	२४	५७	१५	४४	३३	२८	५	४५	१९	९	२०	९	4	वृश्चिक	३	१७	३३	३	२६	१५	४५	२४	५९	शतभिषा ४ में वक्री हर्षल ७।५३
१४	श	११	५२	१२	२६	३९	ज्ये	४६	१४	२४	१६	ऐं	३५	३१	१९	५८	व	२३	३८	१५	१३	३३	२५	५	४६	१९	८	२१	१०	5	ध.२४।१६	३	१८	३०	२९	२७	१६	४७	२५	५३	भ. १५।१३ से २६।३९ तक, पवित्रा एका. व्रत सबका, कर्के बुधः १७।१०
१५	र	१२	४७	५५	२४	५६	मू.	४४	१	२३	२३	वै	२९	५४	१७	४४	ब	२०	१६	१३	५३	३३	२१	५	४६	१९	७	२२	११	6	धनु	३	१९	२७	५६	२७	१७	४५	२६	५५	F कर्के शुक्रः २६।४७
१६	चं	१३	४१	५८	२२	३४	पूषा	४०	७	२१	५०	वि	२२	५२	१४	५६	कौ	१५	७	११	५०	३३	१८	५	४७	१९	६	२३	१२	7	म.२७।२१	३	२०	२५	२३	२९	१८	३६	२८	४	सोम प्रदोष व्रत., श्रावण सोमवार व्रत, श्री रविन्द्रनाथ टैगोर पुण्य दिवस,F
१७	मं	१४	३४	४३	१९	४१	उषा	३४	५४	१९	४५	प्री	१४	३८	११	३९	ग	८	२८	९	११	३३	१५	५	४८	१९	५	२४	१३	8	मकर	३	२१	२२	५२	२९	१९	२०	२९	१६	भ. १९।४१ से, हयग्रीव जयंती, पूर्णिमा व्रतम्, सत्यव्रत, हजरत G
१८	बु	१५	२६	३४	१६	२६	श्र	२८	४७	१७	१९	आ	५५/५५	५०/५२	८/२८	०/०	वि	०	४३	६	५	३३	११	५	४८	१९	५	२५	१४	9	कुं.२८।१	३	२२	२०	२१	३०	२०	०	६	२८	भ.६।५ तक, पंचक २८।१ से, पूर्णिमा पुण्यं, श्रावणी पूर्णिमा, H

B अमरनाथ यात्रा, पुनर्वसु में शुक्र २१।१५ C श्रावण सोमवार व्रत, आश्लेषा २ में शनि १७।३ D पार्श्वनाथ मोक्ष जैन, अगस्त मास ८ ता. ३१ प्रा., लोकमान्य बा. गंगाधर तिलक पुण्य दिवस

G अली जन्म (मु.), पुष्य में बुध २८।४८, स्वाति ४ में गुरु २८।० H उपाकर्म (ऋग्यजुर्वेदीनाम), रक्षाबन्धन भद्रोत्तरं, अमरनाथ दर्शन (काश्मीर), श्री गायत्री जयंती, भा. क्रांति दिवस

श्रावण शु. ८बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	४	२	६	२	३	११	५	१०	९	८
१५	११	१२	२७	१६	२२	२०	३	३	२०	२४	०
३८	३०	२५	५५	४	५०	११	४६	४६	३	४३	२५
१४	४५	३०	२१	२३	३७	४०	१	१	५६	२	५
५७	[illegible]	३७	२७	४	७२	७	३	३	१	१	०
२४	५१	३६	५२	४१	५०	४१	११	११	५२	३७	५८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

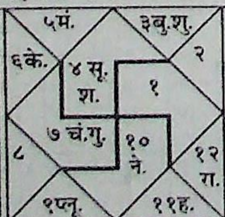

[पक्ष फलम्]

इस माह में पांच बुधवार होने से सुभिक्ष का योग बनता है। कहीं-कहीं युद्ध के बादल मण्डरायेंगे। राज विग्रह का योग बनता है। सूर्य बहुत तपेगा रोग अधिक बढ़ेगा। कृष्ण प्रतिपदा बुधवार को होना अशुभ फलदायी है। **श्रावण बदी एकादशी रोहिणी नक्षत्र जान। मंगसिर दु:ख भक्ष का सब लक्षण अनुमान॥ श्रावण पहले पक्ष में कोई तिथि घट जाये। काहू-काहू देश में लरिका (बच्चा) बेचे जाएं।** ऐसी स्थिति भी यत्र तत्र बनेगी। तथा सुभिक्ष कारक योग बनता है। आर्द्रा में शुक्र के कारण कौसल तथा कलिंग देश में विनाश का योग बनेगा। **बुधस्य पंचवाराः स्यु यत्र मासे निरन्तरम। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥** के अनुसार कृषि में अच्छी पैदावार की आशा बनेगी। प्रजा में सौहार्दपूर्ण वातावरण की भावना बनेगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शान्ति की चर्चा यत्र तत्र प्रदर्शित होने का योग बनता है। श्रावण शुक्ल १५ पूर्णिमा को उदित वेला में सूर्य, बुध, शुक्र व शनि चारों ग्रहों की युक्ति से यथा एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेनवा॥ पृथ्वी पर रक्त विकार जन्य घटनाएं बढ़ेंगी। तथा सेना का प्रदर्शन भी शुभदायक नहीं होगा। भूस्खलन एवं अग्निदाह का वातावरण बनेगा। **व्यापार (तेजी-मंदी)**- प्रतिपदा में चन्द्र दर्शन १५ मुहुर्तों के कारण चालू मार्केट भावों में मंदी का योग है। माणिक्य, सोना, गुड़, खाण्ड, चना, भूसा, हल्दी, सरसों, मुनक्का, औषधि, शर्बत, पीतल, लाल, पीला रंग, रंगीन छींटदार वस्त्र तथा बारदाना में तेजी आयेगी। शेयर्स बाजार दो तरफा चलेगा। **आकाश लक्षण**- ग्रह राशि नक्षत्र, नाड़ी मण्डल परिवर्तन के कारण कहीं वर्षा अधिक हो तो कहीं नहीं के बराबर। पूर्वी प्रदेशों में बाढ़ादि का योग। प्रलय दायक घटना का भी योग यत्र तत्र है। प्राकृतिक आपदा से जन जीवन त्राहि-त्राहि भी करेंगे। राहत कार्यों की आवश्यकता पड़ेगी। **शकुन विचार- श्रावण सुदी एकादशी गर्जे मेघ अधरात। तुम जावो प्रिय मालवा में जासूं गुजरात। श्रावण कृष्ण एकादशी बादल उगे सूद। तो रव सींचे भड्डलो घर घर बाजे तूर॥**

ता. ९ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

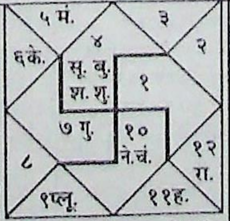

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	९	४	३	६	३	३	११	५	१०	९	८
२२	१५	१६	३	१६	१	२१	३	३	१९	२४	०
२०	५९	४९	२१	४०	२१	५	२३	२३	५०	३१	१८
२१	२८	१२	५९	२१	२०	३२	४५	४५	२०	३९	४९
५७	[illegible]	३७	७०	५	७३	७	३	३	२	१	०
३०	३४	४७	४७	४५	७	४२	११	११	२	३८	४७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१०

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. १० से २३ अगस्त सन् २००६ ई., रा. मिति १९ श्रावण से १ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घं	दिनमान मि	सूर्योदयास्त उदय घं	उदय मि	अस्त घं	अस्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रात: ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	
१९	गु	१	१७	५४	१२	५८	ध	२२	१०	१४	४१	शो	४५	५७	२४	११	कौ	१७	५४	१२	५८	३३	८	५	४९	१९	४	२६	१५	10	कुंभ	३	२३	१७	५१	५७/६१	२०	३६	७	३८	अशून्य शयन व्रत पूर्ति (बंगाल), पुष्य में शुक्र २०।२७, पू.भा. ४ में A
२०	शु	२	९	९	९	२९	श	१५	२८	१२	१	अ	३६	८	२०	१६	ग	९	९	९	२९	३३	४	५	४९	१९	३	२७	१६	11	मी.२८।५	३	२४	१५	२२	३३	२१	१०	८	४५	भ. १९।४८ से सिंधारा, कज्जली (बड़ी) तीज, सातुड़ी तीज
२१	श	३	०	४०	६	६	पूभा	९	७	९	२९	सु	२६	४२	१६	३१	वि	०	४०	६	६	३३	१	५	५०	१९	२	२८	१७	12	मीन	३	२५	१२	५५	३४	२१	४३	९	५२	भ.६।६ तक, कृष्णा चतुर्थी व्रत, संकष्ट चतुर्थी, बहुला चतुर्थी
०	श	४	५२	५०	२६	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथि क्षयः
२२	र	५	४५	५२	२४	११	उभा	७ / ५८	२५ / ४२	७ / २९	१२ / १९	धृ	१७	५५	१३	०	कौ	१९	१३	१३	३२	३२	५७	५	५०	१९	१	२९	१८	13	मे.२९।१९	३	२६	१०	२९	३५	२२	१९	१०	५८	पंचक २९।१९ तक, रक्षा पंचमी (उड़ीसा), चन्द्र षष्ठी, ऊभी ६ व्रत
२३	चं	६	४०	३	२१	५२	अ	५५	१०	२७	५५	शू	९	५८	९	५०	ग	१२	४८	१०	५८	३२	५३	५	५१	१९	०	३०	१९	14	मेष	३	२७	८	४	३७	२२	५७	१२	४	भ. २१।५२ से, हल ६, ललही ६, पुत्रार्थी व्रत, माधव देव तिथि (असम)
२४	मं	७	३५	३१	२०	४	भर	५२	५६	२७	२	गं	३ / ५७	१ / ११	७ / २८	४ / ५८	वि	७	३६	८	५४	३२	५०	५	५१	१८	५९	३१	२०	15	मेष	३	२८	५	४१	३८	२३	४०	१३	१०	भ. ८।५४ तक, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त, आद्य काली जयं.C
२५	बु	८	३२	२३	१८	४९	कृ	५२	६	२६	४२	ध्रु	५२	२८	२६	५१	बा	३	४६	७	२२	३२	४६	५	५२	१८	५८	भाद्र १	२१	16	वृ.८।५४	३	२९	३	१९	४०	२४	०	१४	१५	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव, मन्वादि ८, संत ज्ञानेश्वर जयंती, D
२६	गु	९	३०	४०	१८	९	रो	५२	४०	२६	५७	व्या	४८	५४	२५	२६	तै	१	२०	६	२५	३२	४२	५	५२	१८	५७	२	२२	17	वृष	४	०	०	५९	४२	२४	२९	१५	१६	गोगा नवमी, नंदोत्सव (गोकुल), आश्लेषा में बुध २५।५१
२७	शु	१०	३०	२२	१८	२	मृ	५४	३६	२७	४३	ह	४६	२५	२४	२७	व	०	२०	६	१	३२	३८	५	५३	१८	५६	३	२३	18	मि.१५।१६	४	०	५८	४१	४३	२५	२२	१६	११	भ. ६।१ से १८।२ तक, पूर्वास्तं बुध: ६।३१
२८	श	११	३१	२४	१८	२७	आ	५७	४८	२९	१	व	४४	५९	२३	५३	ब	०	४३	६	११	३२	३५	५	५४	१८	५५	४	२४	19	मिथुन	४	१	५६	२४	४४	२६	२०	१७	०	अजा एकादशी व्रतम् सबका A राहु व उ.फा.२ में केतु ९।४६
२९	र	१२	३३	४२	१९	२३	पुन	६०	०	-	-	सि	४४	३०	२३	४२	कौ	२	२३	६	५२	३२	३१	५	५४	१८	५४	५	२५	20	क.२४।१७	४	२	५४	८	४७	२७	२०	१७	४२	वत्स द्वादशी, गोवत्स पूजन
३०	चं	१३	३७	७	२०	४६	पुन	२	९	६	४६	व्य	४४	५२	२३	५२	ग	५	१६	८	१	३२	२७	५	५५	१८	५३	६	२६	21	कर्क	४	३	५१	५५	४७	२८	१९	१८	१८	भ. २०।४६ से, सोम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री व्रत, व्यतिपात पुण्यम्, E
३१	मं	१४	४१	३४	२२	३३	पु	७	३४	८	५७	वरि	४६	१	२४	१९	वि	९	१३	९	३६	३२	२३	५	५५	१८	५२	७	२७	22	कर्क	४	४	४९	४२	५०	२९	१६	१८	५०	भ. ९।३६ तक, अघोरा चतुर्दशी, कैलाश यात्रा, शब ए मिराज (मु.)
भाद्र १	बु	३०	४६	५४	२४	४१	श्ले	१३	५५	११	३०	प	४७	४९	२५	३	च	१४	८	११	३५	३२	१९	५	५६	१८	५१	८	२८	23	सिं.११।३०	४	५	४७	३२	५०	६	११	१९	१९	देवपितृकार्याऽमा., कुशोत्पाटिनी अमा. (ॐ हुँ फट् स्वाहा, मंत्र से), F

C मेला द्रोण दनकौर (उ.प्र.), भारतीय स्वतन्त्रता दिवस ६०वाँ वर्ष D सौर भाद्रपद प्रा., मघा सिंह में सूर्य २९।६, संक्रांति मु. ४५ बैठी, पुण्यकाल अग्रिम दिन, कालाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत (वंश वृद्धि निमित्त)
E पर्यूषण पर्वारंभ जैन, आश्लेषा में शुक्र १८।३, कलियुगादि १३ F पिठोरी ३०, मन्वादि ३०, मेला राणी सती झुंझनू (राज.), लोहर्गल स्नान (राज.), मेला सुथरे शाह (दिल्ली), सायन कन्या में सूर्य ११।५५, राष्ट्रीय भाद्रपद प्रा., शरद ऋतु प्रा.

भाद्रपद कृ. ८ बुध प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १६ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	०	४	३	६	३	३	११	५	१०	९	८
२९	२८	२१	१३	१७	९	२१	३	३	१९	२४	०
३	३	१४	२५	२३	५४	५९	१	१	३५	२०	१३
१९	३७	१५	२२	३४	३	१९	३०	३०	३१	१३	५१
५७	७८	३८	१०३	६	७३	७	३	३	२	१	०
४०	५०	०	५४	४५	२५	३९	११	११	१३	३८	३६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
आश्लेषा ४	कृति. १	पू.फा. ३	पुष्य ४	स्वाति ४	पुष्य २	आश्लेषा २	पू.भा. ४	उ.फा. २	शत. ४	धनि. १	मूल १

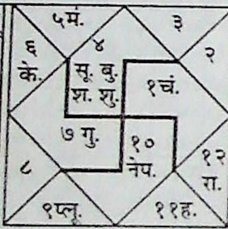

[पक्ष फलम्]

पक्षारंभ गुरुवार से होना शुभ है। इस माह में पांच गुरुवार हैं। अत: "यत्र मासे पञ्चवारा जायन्ते च वृहस्पते। विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्धं च: जायते॥" के अनुसार भारत से बाहर पश्चिमी देशों में राज विग्रह, आन्तरिक कलह, राजनैतिक पार्टियों में परिवर्तन (उठापटक) और बढ़ेगा। दो या दो से अधिक राज मुकुटों का देहावसान का योग है। "एक राशौ यदा यान्ति चत्वार: पंच खेचरा:। प्लावयन्ति मही सर्वारुधिरेण जलेन वा॥ के अनुसार इस पक्ष में कर्क राशि जलचर में (सूर्य, बुध, शनि, शुक्र) चार ग्रहों की युक्ति से कहीं-कहीं काफी उत्पात, अग्निकाण्ड, जलाधिक्य से भारी नुक्सान होगा। असंख्य प्राणियों को काल कलवित होना पड़ेगा। विदेशी आतंकवादियों द्वारा शान्ति प्रिय देशों में युद्ध का षड़यन्त्र रचा जायेगा। भारत की राजनीति में नया मोड़ का संकेत बनता है। राष्ट्रनायक (राष्ट्रपति) के लिए समय प्रतिकूल रहेगा। राजा-प्रजा में परस्पर वैमनस्य भाव बनेंगे। औद्योगिक क्रान्ति का षड़यन्त्र, हड़तालें या बन्द आदि का अशुभ अशोभनीय प्रयास जनता के लिए कष्टदायी होगा। रेलयान-वायुयान की दुर्घटनाओं का योग ग्रह युक्ति से अचानक दक्षिणी क्षेत्र में घटना घटेगी। **व्यापार (तेजी-मंदी)-कृष्ण पक्ष की तिथि घटै शुक्ल पक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥** के अनुसार चावल, चीनी, गुड़, रसकस, शर्बत, आचार, मुरब्बा, वस्त्र, सोना, ताम्बा, चांदी व शेयर्स बाजार में तेजी रहेगी। तृण (घास) विशेष महंगा रहेगा। **आकाश लक्षण**- दहना, नाड़ी तथा वायु के प्रभाव से मौसम खराब रहेगा। असंख्य कीटों की उत्पत्ति से रोगादि बढ़ेंगे। कभी आकाश स्वच्छ तो कभी बादलों से घिरा रहेगा। कृषि जन्य कार्यों में हानि का वातावरण बनेगा। समतल प्रदेशों में वायु तेज बहेगी। पूर्वी देशों चीन, मंगोलिया, थाईलैण्ड, आस्ट्रेलिया, जापान, तिब्बत आदि प्राकृतिक आपदा से ग्रस्त होंगे एवं हानि होगी। **शकुन विचार**-भादो बदी एकादशी ना जो छिटके मेह। चार मास बरसे सही कहे भड्डरी देख॥ भादों जे हि पछियो व्यारि। ते दिन माघ में पड़े तुषारि॥ भादों बदी द्वितीया को चन्द्रमा रात भर मेघों से ढका रहे तो अगले वर्ष वर्षा अच्छी खाद्यान्न मन्दे होंगे।

ता. २३ अगस्त ❖ भाद्रपद कृ. ३० बुध प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

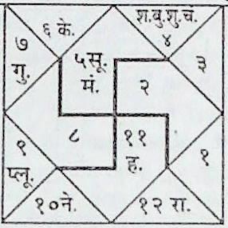

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	३	४	३	६	३	३	११	५	१०	९	८
५	२६	२५	२६	१८	१८	२२	२	२	१९	२४	०
४७	५९	४०	२८	१३	२८	५२	३९	३९	१९	८	१०
३२	३४	५०	२४	३५	४८	४१	१४	१४	४३	५४	१६
५७	७१७	३८	११८	७	७३	७	३	३	२	१	०
५०	८	१३	४३	४०	४१	३५	११	११	१९	३६	२४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
मघा	आश्लेषा	पू.फा.	आश्लेषा	स्वाति	आश्लेषा	आश्लेषा	पू.भा.	उ.फा.	शत.	धनि.	मूल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

श्री सं. २०६३ | दिन | स्टैं.टा. | दिनांक | चन्द्र राशि | दै. रवि स्पष्ट | | चन्द्रोदयास्त | ता. २४ अगस्त से ७ सितंबर सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २ से

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चांदी व शेयर बाजार में तेजी रहेगी। तृण (घास) विशेष महंगी रहेगी। आकाश लक्षण- दहना, नाड़ी तथा वायु के प्रभाव से मौसम खराब रहेगा। असंख्य कीटों की उत्पत्ति से रोगादि बढ़ेंगे। कभी आकाश स्वच्छ तो कभी बादलों से घिरा रहेगा। कृषि जन्य कार्यों में हानि का वातावरण बनेगा। समतल [illegible] पूर्वी देश चीन, मंगोलिया, थाइलैण्ड, आस्ट्रेलिया, जापान, तिब्बत आदि प्राकृतिक आपदा से ग्रस्त होंगे एवं हानि होगी। **शकुन विचार-भादो बदी एकादशी ना जो छिटके मेह। चार मास बरसे मही कहे भड्डरी देख॥ भादों जे हि पछियो व्यारि। ते दिन माघ में पड़े तुषारि॥** भादों बदी द्वितीया को चन्द्रमा रात भर मेघों से ढका रहे तो अगले वर्ष वर्षा अच्छी खाद्यान्न मन्दे होंगे।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११

श्री सं. २०६३ शाके १९२८ | दिनमान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. २४ अगस्त से ७ सितंबर सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २ से १६ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

रा.मि.	वार	ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२	गु	१	५२	५६	२७	७	म	२१	१	१४	२१	शि	५०	८	२६	०	किं	१९	५०	१३	५२	३२	१५	५	५६	१८	५०	९	२९	24	सिंह	४	६	४५	२२	५६/५७	७	४	१९	४५	नक्तव्रत पूर्ति, कल्पसूत्र पाठ जैन, मघायां सिंहे बुधः२४।११, उ.फा.में A
३	शु	२	५९	२४	२९	४३	पूफा	२८	४०	१७	२५	सिद्ध	५२	४९	२७	४	बा	२६	७	१६	२४	३२	११	५	५७	१८	४९	१०	३०	25	कं.२४।१२	४	७	४३	१५	५३	७	५६	२०	११	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, तेलाधर तप जैन, बाबा रामदेव मेला प्रा.B
४	श	३	६०	०	-	-	उफा	३६	३६	२०	३६	सा	५५	३६	२८	१२	तै	३२	४२	१९	२	३२	७	५	५७	१८	४८	११	मध्या १	26	कन्या	४	८	४१	८	५५	८	४७	२०	३७	साबान मु. मा. ८ प्रा., वाराह ज., मन्वादि ३, श्लेषा ३ में शनि २०।२३,C
५	र	३	६	०	८	२२	ह	४४	२७	२३	४४	शुभ	५८	१५	२९	१६	ग	५	५९	८	२२	३२	३	५	५८	१८	४७	१२	२	27	कन्या	४	९	३९	३	५७	९	४०	२१	५	भ. २१।३८ से, हरि तालिका ३, गौरीतृतीया व्रत, श्रीगणेश जन्म D
६	चं	४	१२	२०	१०	५४	चि	५१	४८	२६	४१	शु	६०	०	-	-	वि	१२	२०	१०	५४	३१	५९	५	५८	१८	४६	१३	३	28	तु.१३।१५	४	१०	३७	०	५७	१०	३४	२१	३५	भ.१०।५४ तक, पर्युषणपर्व पूर्ति जैन, संवत्सरी (च.पक्ष जैन), ऋषि पंचमी
७	मं	५	१७	५८	१३	१०	स्वा	५८	१२	२९	१६	शु	०	२४	६	८	बा	१७	५८	१३	१०	३१	५५	५	५९	१८	४५	१४	४	29	तुला	४	११	३४	५७	५९	११	३१	२२	१०	ललिता ६ व्रत (गुज.), जैन संवत्सरी (पंच.पक्ष), क्षमावणीपर्व जैन, E
८	बु	६	२२	२८	१४	५८	वि	६०	०	-	-	ब्र	१	४७	६	४२	तै	२२	२८	१४	५८	३१	५१	५	५९	१८	४४	१५	५	30	वृश्चि.२४।५१	४	१२	३२	५६	५८/१	१२	३०	२२	५१	सूर्यषष्ठी, ललिता ६, बलदेव ६, श्री बलराम ज., मेला ब्रजमंडल F
९	गु	७	२५	२३	१६	९	वि	३	१४	७	१८	ऐं	२	४	६	५०	व	२५	२३	१६	९	३१	४७	६	०	१८	४३	१६	६	31	वृश्चिक	४	१३	३०	५७	१	१३	३१	२३	४०	भ.१६।९ से २८।२२ तक, मुक्ता भरण सप्तमी, संतान ७, राधाष्टमी,G
१०	शु	८	२६	२८	१६	३५	अनु	६	३५	८	३८	वै	० ५८	५९ २३	६ २०	२४ २२	ब	२६	२८	१६	३५	३१	४३	६	०	१८	४२	१७	७	सितं 1	वृश्चिक	४	१४	२८	५८	३	१४	३२	२४	०	श्री दुर्गाष्टमी, महालक्ष्मी व्रत प्रा., दधीची ज., स्वा. हरिदास ज., H
११	श	९	२५	३२	१६	१३	ज्ये	७	५९	९	१२	प्री	५४	९	२७	४०	कौ	२५	३२	१६	१३	३१	३९	६	१	१८	४०	१८	८	2	ध.९।१२	४	१५	२७	१	५	१५	३०	२४	३७	श्री चन्द नवमी, अदुःख ९ (उदासीन सम्प्रदाय), भागवत जयंती
१२	र	१०	२२	३४	१५	३	मू	७	२४	८	५९	आ	४८	१९	२५	२१	ग	२२	३४	१५	३	३१	३५	६	१	१८	३९	१९	९	3	धनु	४	१६	२५	६	६	१६	२३	२५	४१	भ. २६।५ से, दशावतार दशमी, बाबा रामदेव मेला पूर्ति (राज.)
१३	चं	११	१७	४४	१३	७	पूषा	४	५४	७	५९	सौ	४१	२	२२	२७	वि	१७	४४	१३	७	३१	३१	६	२	१८	३८	२०	१०	4	म.१३।३८	४	१७	२३	१२	७	१७	१०	२६	५१	भ. १३।७ तक, पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत सबका, मेला J
१४	मं	१२	११	१५	१०	३२	उषा	० ५५	४२ ६	६ २८	५९ ५	शो	३२	३०	१९	२	बा	११	१५	१०	३२	३१	२७	६	२	१८	३७	२१	११	5	मकर	४	१८	२१	१९	९	१७	५१	२८	२	वामन जयंती, श्रवण द्वादशी, भुवनेश्वरी ज., हरिवासराऽभावः, K
१५	बु	१३	३	२७	७	२६	ध	४८	२९	२५	२६	अ	२३	०	१५	१५	तै	३	२७	७	२६	३१	२३	६	३	१८	३६	२२	१२	6	कुं.१४।४८	४	१९	१९	२८	१०	१८	२९	२९	१२	भ. २७।५६ से, पंचक१४।४८ से, अनन्त१४ व्रत, मेलासोढल व छपार(पं.)
०	बु	१४	५४	४४	२७	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षयः L पूर्णिमा, महालयारम्भ, पूर्णिमा श्राद्ध, उ.फा में बुध१९।२२
१६	गु	१५	४५	२६	२४	१४	श	४१	१६	२२	३४	सु	१२	४९	११	११	वि	२०	७	१४	६	३१	१९	६	३	१८	३५	२३	१३	7	कुंभ	४	२०	१७	३८	१२	१९	४	६	२२	भ.१४।६ तक सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रतं, पुण्यं च गोत्रिरात्री व्रत पूर्ति, प्रोष्ठपदीL

A मंगल १८।३९ B रुणीचा (राज.) C पश्चिमोदयं शनि २१।४७ D चतुर्थी व्रत, कलंकी ४, पत्थर ४, विनायक ४ (चन्द्र दर्शन निषेध), गणेश जन्मोत्सव (महाराष्ट्र), उपाकर्म (सामवेदीनाम) E आगस्त्य उदय १३।२३, कन्यायां भौमः २३।५३ F पू.फा. में सूर्य २४।५९ G श्री राधा ज., मेला बरसाना, पू.फा में बुध १७।४५, पश्चिमास्तं भौमः २५।४१ H सितंबर मा. ९ ता. ३० प्रा., मघायां सिंहे शुक्रः १४।१० J चारभुजानाथ गढ़भोर (राज.), विशा. १ में गुरु २२।१० K भौम प्रदोष व्रत, शिक्षक दिवस, डॉ. राधा कृष्णन जयंती, गोत्रिरात्री व्रतारंभ, मेला अंबाला व पटियाला (पं), मार्गी प्लूटो १७।२१

भाद्रपद शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १ सितं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	५	४	६	३	३	११	५	१०	९	८
१८	१४	१	१४	१९	२९	२४	२	२	१८	२३	०
२८	५९	२५	१७	२७	३३	०	१०	१०	५८	५८	७
५८	१	५२	१०	५	१५	५	३७	३७	३०	५४	५०
५८	[illegible]	३८	११५	८	७४	७	३	३	२	१	०
३	५१	२९	५६	४६	०	२२	११	११	२३	३०	७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

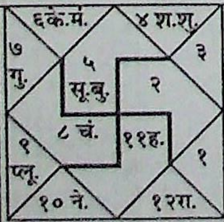

[पक्ष फलम्]

इस माह में दिनांक १६ अगस्त ०६ अष्टमी भाद्र बदी बुधवार को सिंह संक्रांति का प्रवेश चौथे प्रहर में २८।४२ घं.मि. पर सुती ४५ मुहूर्ती का होना एवं मघा में सूर्य का प्रवेश बुधाष्टमी का होना शुभदायक नहीं है। रोगोपद्रव तथा असामाजिक तत्वों का वर्चस्व आतंकरूप में छाया रहेगा। केन्द्र में एक नवीन राजनैतिक पार्टी के गठन का योग बनता है। शुक्र पुष्य नक्षत्र में होने से महावृष्टि तथा विद्याधरों के लिए युद्ध जन्य वातावरण बनेगा। कर्क राशि का बुध अस्त्र, आश्लेषा का शुक्र, कर्कस्य शनि का उदय, उत्तराफाल्गुनी का मंगल और मघा राशि का बुध ये सब अनावृष्टि कारक रहेंगे। लोगों को सर्पों से पीड़ा उठानी पड़ेगी। चौपायों में पीड़ा, घोड़ों का मूल्य बढ़ेगा। धन धान्य में हानि, क्षेत्र के बंटवारे को लेकर पड़ौसी देश से मन मुटाव बनेगा। अन्न अच्छा पैदा होगा। क्षुधा-शस्त्र-चोर और रोगों की वृद्धि होगी। **सिंह राशौ बुधः स्याच्चेत सर्वधान्य महर्घता। सुवर्ण देव दारुश्च महर्घ प्रभवेत्तदा॥** साथ ही प्राकृतिक तथा औद्योगिक क्रान्ति का वातावरण तीव्र बनेगा। अस्थिरता ज्यादा बढ़ने का योग बनेगा। रोग भी बढ़ेगा। **व्यापार (तेजी-मंदी)**-बाजार में विश्व स्तरीय तेजी का योग बनेगा। कनाड़ा, तुर्की, अफगानिस्तान, बर्मा, लक्षद्वीप, हिन्दचीन आदि में प्राकृतिक आपदा से व्यापारी वर्ग चिंतित रहेगा। पशुओं का भाव गिरेगा। हींग, मसाला, चीनी, चाय, ज्वार, बाजरा, मोठ के भाव अचानक तेज होंगे। मशीनरी सामान मन्दा होगा। **आकाश लक्षण-** मध्य भारत बादलों से घिरा रहेगा। जर्मनी, जापान एवं रूस में प्राकृतिक ताण्डव होगा। चक्राकार वायु चौतरफा अति तीव्र गति से बहेगी। खड़ी फसलों में हानि किसानों को हानि करेगी। आकाश में तीन-तारे टूटने का योग तथा तीन ही पदासीन वरिष्ठ प्रशासनिक मंत्रियों का देहावसान का योग बनेगा। खड़ी फसल कहीं धूप से तो कहीं जल से तो कहीं वायु से तबाह होना योग बनता है। **शकुन विचार-भादों सुदी पंचमी स्वाती संजीनी होय। दोनों शुभ योग मिले मंगल बरती लोय॥ भादों मासे ऊजरी, लखो मूल विचार। तो भाये यों भड्डली साख भली निरधार॥ चन्द्र ग्रहण गुरुवार नक्षत्र शतभिषा योग। चिन्ता कर करे स्वामी सब कोई करे वियोग। शुक्र चन्द्र दर्शन तीज पूफा. उफा. में कीजिए। धान्य संग्रह करो आगे छ माह में लाभ लीजिए।**

ता. ७ सितंबर ❖ भाद्रपद शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

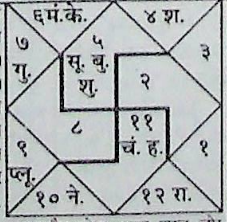

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१०	५	४	६	४	३	११	५	१०	९	८
२०	९	५	२५	२०	६	२४	१	१	१८	२३	०
१७	१२	१७	३६	२१	५७	४३	५१	५१	४४	४६	७
३८	२६	१६	४२	१८	४२	५२	३३	३३	८	७	३८
५८	[illegible]	३८	१०१	९	७४	७	३	३	२	१	०
१२	३४	४१	१७	२४	११	११	११	११	२४	२५	४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन कृष्ण पक्ष-१२

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. ८ से २२ सितं. सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति १७ से ३१ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद ऋतु।

रा.मि.	वा	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	उदय मि	अस्त घं	अस्त मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१७	शु	१	३६	०	२०	२८	पू.भा	३३	५२	१९	३६	धृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	१०	४२	१०	२१	३१	१४	६	४	१८	३४	२४	१४	8	मी.१४।२१	४	२१	१५	५०	[illegible]	१९	३९	७	३१	प्रतिपदा श्राद्ध, विश्व साक्षरता दिवस A कृष्ण चतुर्थी व्रत
१८	श	२	२६	५०	१६	४८	उ.भा	२६	४३	१६	४५	गं	४१	३६	२२	४३	तै	१	२१	६	३७	३१	१०	६	४	१८	३२	२५	१५	9	मीन	४	२२	१४	४	१६	२०	१५	८	३९	भ. २७।७ से, द्वितीया श्राद्ध, शब-ए-बारात (मु.), कन्यायां बुधः १५।४६
१९	र	३	१८	२०	१३	२५	रे	२०	१४	१४	१०	वृ	३२	३	१८	५४	वि	१८	२०	१३	२५	३१	६	६	५	१८	३१	२६	१६	10	मे.१४।१०	४	२३	१२	२०	१८	२०	५३	९	४८	भ.१३।२५ तक, पंचक १४।१० तक, तृतीया श्राद्ध, चतुर्थी श्राद्ध, A
२०	चं	४	१०	५१	१०	२६	अ	१४	४७	१२	०	धु	२३	२५	१५	२७	बा	१०	५१	१०	२६	३१	२	६	५	१८	३०	२७	१७	11	मेष	४	२४	१०	३८	१९	२१	३६	१०	५७	पंचमी श्राद्ध, दशरथ ललिता व्रत
२१	मं	५	४	४३	७	५९	भ	१०	४२	१०	२३	व्या	१५	५६	१२	२८	तै	४	४३	७	५९	३०	५८	६	६	१८	२९	२८	१८	12	वृ.१६।४	४	२५	८	५७	२२	२२	२४	१२	४	षष्ठी श्राद्ध, पू.फा. में शुक्र ९।४
२२	बु	६	०	१०	६	१०	कृ	८	१३	९	२४	ह	९	४७	१०	१	व	०	१०	६	१०	३०	५४	६	६	१८	२८	२९	१९	13	वृष	४	२६	७	१९	२४	२३	१७	१३	९	भ. ६।१० से १७।३७ तक, सप्तमी श्राद्ध, उ.फा. में सूर्य १८।५६
०	बु	७	५७	२४	२९	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथि क्षयः C व्यतिपात पुण्य, भा. इन्जिनियर्स डे
२३	गु	८	५६	२७	२८	४१	रो	७	३०	९	७	व	५	४	८	८	बा	२६	४१	१६	४७	३०	४९	६	७	१८	२६	३०	२०	14	मि.२१।१५	४	२७	५	४३	२६	२४	०	१४	७	कालाष्टमी, जीवित्पुत्रिकाष्टमी व्रत, महालक्ष्मी व्रत पूर्ति, अष्टमी B
२४	शु	९	५७	१८	२९	२	मृ	८	३६	९	३३	सि	२/५९	४८/५८	६/२०	५०/६	तै	२६	३९	१६	४७	३०	४५	६	७	१८	२५	३१	२१	15	मिथुन	४	२८	४	९	२८	२४	१४	१४	५९	मातृ नवमी, सौभाग्यवती स्त्रीणां श्राद्ध, नवमी श्राद्ध, हस्त में बुध १०।३२,C
२५	श	१०	५९	४९	३०	३	आ	११	२५	१०	४२	वरि	५९	२३	२९	५३	व	२८	२१	१७	२८	३०	४१	६	८	१८	२४	आ/१	२२	16	क.२९।५८	४	२९	२	३७	३१	२५	१४	१५	४३	भ. १७।२८ से ३०।३ तक, दशमी श्राद्ध, गुरु नानकदेव शहीद दि.D
२६	र	११	६०	०	-	-	पुन	१५	४८	१२	२७	प	५९	५४	३०	६	ब	३१	३७	१८	४७	३०	३७	६	८	१८	२३	२	२३	17	कर्क	५	०	१	८	३३	२६	१३	१६	२०	इन्दिरा एकादशी व्रत स्मार्त, एकादशी श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजा
२७	चं	११	३	४४	७	३८	पु	२१	२९	१४	४४	शि	६०	०	-	-	बा	३	४४	७	३८	३०	३२	६	९	१८	२२	३	२४	18	कर्क	५	०	५९	४१	३४	२७	१०	१६	५३	इन्दिरा एका. व्रत वैष्णव, द्वादशी श्राद्ध, सन्यासी श्राद्ध, पश्चिमोदयं E
२८	मं	१२	८	४९	९	४१	श्ले	२८	११	१७	२६	शि	१	१६	६	४०	तै	८	४९	९	४१	३०	२८	६	९	१८	२०	४	२५	19	सिं.१७।२६	५	१	५८	१५	३७	२८	६	१७	२२	भौम प्रद्रोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध
२९	बु	१३	१४	४३	१२	३	म	३५	३४	२०	२३	सिद्ध	३	१९	७	३०	व	१४	४३	१२	३	३०	२४	६	१०	१८	१९	५	२६	20	सिंह	५	२	५६	५२	३९	२८	५९	१७	४९	भ. १२।३ से २५।२० तक, मास शिवरात्री व्रत, मघा त्रयोदशी श्राद्ध
३०	गु	१४	२१	८	१४	३७	पू.फा	४३	२१	२३	३०	सा	५	४६	८	२८	श	२१	८	१४	३७	३०	२०	६	१०	१८	१८	६	२७	21	सिंह	५	३	५५	३१	४१	२९	५१	१८	१५	चतुर्दशी श्राद्ध, विषाग्नि-शस्त्रादि हतानां श्राद्ध, कात्यायनी ज.
३१	शु	३०	२७	४५	१७	१७	उ.फा	५१	१३	२६	४०	शुभ	८	२५	९	३३	ना	२७	४५	१७	१७	३०	१५	६	११	१८	१७	७	२८	22	कं.६।१८	५	४	५४	१२	४३	६	४३	१८	४१	देवपितृकार्यांऽमावस्या, सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध, पितृ विसर्जन F

B श्राद्ध, भा. हिन्दी दिवस, हस्त में मंगल १२।२६ D. (प्रा. मत से), सौर आश्विनारंभ, कन्या में सूर्य २१।२, संक्रांति मु. ४५ बैठी, पुण्य काल अग्रिम दिन E बुधः १९।४९ F उ.फा. में शुक्र २६।४७

आश्विन कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १४ सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	५	५	६	४	३	११	५	१०	९	८
२७	२१	९	७	२१	१५	२५	१	१	१८	२३	०
५	१८	४८	५७	२९	३७	३३	२९	२९	२७	३६	८
४३	५७	४५	३४	१७	४१	२६	१८	१८	२६	३६	५०
५८	७९१	३८	[illegible]	१०	७४	६	३	३	२	१	०
२६	११	५६	२१	६	२५	५६	११	११	२१	१७	१८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
उ.फा. १	रोहि. ४	उ.फा. ४	उ.फा. ४	विशा. १	पू.फा. १	आश्लेषा ३	पू.भा. ४	उ.फा. २	शत. ४	धनि. १	मूल १

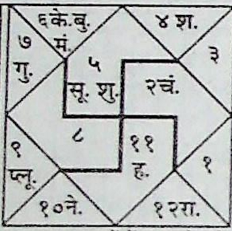

[पक्ष फलम्]

पक्षारंभ शुक्रवार ग्रहण करि दिन योग के अनुसार मांगलिक कार्य ज्यादा होंगे। उत्पीड़न बढ़ेगा। बलात्कार एवं अपहरण काण्डों का जाल बिछाना कोई बड़ी बात नहीं है। तथा **"जेहि पखवारे तिथि घटे वाही में बढ़ जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके महंगाई हट जाय॥"** अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में मन्दी का योग बनेगा। मास में पांच शुक्रवार होना शुभदायी है। **"शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम। प्रजावृद्धिः सुभिक्षः च सुखः तत्र प्रवर्तते॥"** इस योग के अनुसार विभिन्न सम्प्रदायों, राजा-प्रजा में परस्पर सौहार्दपूर्ण मैत्री भावना पनपेगी। लेकिन राहु मीन राशि का अष्टम सप्तम भाव में होने से सफलता में कंटक योग यानि विफलता नजर आयेगी। केन्द्रिय तथा राज्य सरकारों में म-बु-के की युक्ति के कारण आर्थिक भार ज्यादा होने से ऋणादि व्यवस्था करने का योग तथा यत्र तत्र हड़ताल व असामाजिक तत्वों का वर्चस्व बढ़ेगा। शुक्रादित्य योग से यौवन शोषण की घटनाएं बढ़ेंगी। प्रेम विवाह का योग कोर्ट कचहरी में ही होने का योग है। सेन्य बल न्यून होगा। उत्तरी सीमा में भारत को अचानक आपदा का सामना करना पड़ेगा। काल कलवित योगाधिक्य अष्टम राहु करेगा। शनि विद्युत एवं तिलहन उद्योग को हानि पहुंचायेगा। व्यापार (तेजी-मंदी)-सर्वधान्य मन्दा योग। दलहन के भाव अचानक गिरेंगे। सोना-चांदी, इमारती लकड़ी, देवदारु, केसर, बादाम, पिस्ता, चना, गेहूं, चावलों में तेजी रहेगी। एक तरफा बाजार ज्यादा चलेगा। कपड़ा, बिनोला, सूत सस्ता। किराना-पापड़, मूंग मन्दे। फल-सब्जी मंदी। मिश्री-अदरख तेजी योग। आकाश लक्षण-बंगला देश, असम, चैन्नई, उत्तरी भारत, में कहीं बादल, गाज, बूंदा-बांदी के साथ तापमान कुछ गिरेगा। दिनांक १६ सितं.०६ को शनिवारी कन्या संक्रांति चतुर्थ प्रहर व्यापिनी होन से दक्षिण ध्रुवीय तटों में पूर्वोत्तर भारत में विद्रोह बढ़ेगा। राजनैतिक अशांति बढ़ेगी। हत्या जैसा योग भी है। शकुन विचार- अश्विनी भरणी कृतिका में जो कुण्डल होय। अन्न स्टॉक करे तो लाभ लहैं सब कोय॥ तर्पण अर्पण साधना पितृ पक्ष के माय। सभी सुखी रहिये समृद्धि मय सब होय॥ महालय श्राद्ध पक्ष पूजा भाव विचार। नित नित पूजा पूर्वज की होवे गतिचार॥ तृष्ण जीव की पितृ पक्ष में जानिये। इसलिए श्राद्ध जरूर कीजिए।

ता. २२ सितंबर ❖ आश्विन कृ. ३० शुक्र. प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

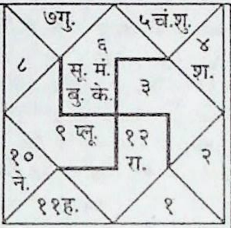

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	४	५	५	६	४	३	११	५	१०	९	८
४	२९	१५	२०	२२	२५	२६	१	१	१८	२३	०
५४	३५	१	५९	५२	३३	२७	३	३	८	२६	१२
१२	५१	१३	३	४०	४९	४१	५२	५२	५३	५५	९
५८	७७७	३९	९३	१०	७४	६	३	३	२	१	०
४३	२	१४	८	४९	३८	३४	११	११	१५	७	३४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
उ.फा. ३	उ.फा. १	हस्त २	हस्त ४	विशा. १	पू.फा. ४	आश्लेषा ३	पू.भा. ४	उ.फा. २	शत. ४	धनि. १	मूल १

आर्यभट्ट पंचांगम् 23 Sept. to 7 Oct.-2006 69

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

श्री सं. २०६३ दिन स्टैं.टा. दिनांक चन्द्र राशि दै. रवि स्पष्ट चन्द्रोदयास्त ता. २३ सितं. से ७ अक्टूबर सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति १ से

शनिवारी कन्या संक्रांति चतुर्थ प्रहर व्यापिनी होन से दक्षिण ध्रुवीय तटों में पूर्वोत्तर भारत में विद्रोह बढ़ेगा। राजनैतिक अशांति बढ़ेगी। हत्या जैसा योग भी है। शकुन विचार- अश्विनी भरणी कृतिका में जो कुण्डल होय। अन्न स्टॉक करे तो लाभ लहैं सब कोय॥ तर्पण अर्पण साधना पितृ पक्ष के माय। सभी सुखी गृहस्थ समृद्धि मय सब होय॥ महालय श्राद्ध पक्ष पूजा भाव विचार। नित नित पूजा पूर्वज की होवे गतिचार॥ तृष्णा जीव की पितृ पक्ष में जानिये। इसलिए श्राद्ध अवश्य कीजिए।
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

आश्विन शुक्ल पक्ष-१३

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. २३ सितं. से ७ अक्टूबर सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १५ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१	श	१	३४	१७	१९	५४	ह	५८	५५	२९	०५	शु	११	४	१०	३७	कि	१	२	६	३६
२	र	२	४०	२७	२२	२३	चि	६०	०	-	-	ब्र	१३	३०	११	३६	बा	७	२५	९	१०
३	चं	३	४५	५९	२४	३६	चि	६	२९	८	४०	ऐं	१५	३२	१२	२५	तै	१३	१८	११	३१
४	मं	४	५०	३५	२६	२७	स्वा	१२	४०	११	१७	वै	१६	५८	१३	०	व	१८	२४	१३	३४
५	बु	५	५४	०	२७	४९	वि	१८	१२	१३	३०	वि	१७	३६	१३	१६	ब	२२	२७	१५	१२
६	गु	६	५५	५९	२८	३७	अनु	२२	२९	१५	१३	प्री	१७	१४	१३	७	कौ	२५	११	१६	१८
७	शु	७	५६	२१	२८	४६	ज्ये	२५	१७	१६	२१	आयु	१५	४२	१२	३१	ग	२६	२२	१६	४७
८	श	८	५४	५८	२८	१४	मू	२६	२६	१६	४९	सौ	१२	५१	११	२३	वि	२५	५२	१६	३५
९	र	९	५१	५०	२६	५९	पूषा	२५	५२	१६	३६	शो	८	३७	९	४२	बा	२३	३६	१५	४२
१०	चं	१०	४७	०	२५	४	उषा	२३	३५	१५	४२	अति	२/५६	५९/२	७/२८	२८/४१	तै	११	३६	१४	६
११	मं	११	४०	४१	२२	३३	श्र	१९	४३	१४	९	धृ	४७	५२	२५	२५	व	१४	०	११	५२
१२	बु	१२	३३	५	१९	३१	ध	१४	२८	१२	४	शू	३८	४१	२१	४५	ब	७	१	९	५
१३	गु	१३	२४	३३	१६	७	शत	८	१०	९	३३	गं	२८	४४	१७	४७	तै	२४	३३	१६	७
१४	शु	१४	१५	२५	१२	२८	पूभा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृ	१८	१९	१३	३८	व	१५	२५	१२	२८
१५	श	१५	६	५	८	४४	रे	४६	३६	२४	५७	ध्रु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	६	५	८	४४

रा.मि.	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
१	३०	११	६	११	१८	१५	८	२९	23	कन्या	५	५	५२	५५	५५	७	३५	१९	८
२	३०	७	६	१२	१८	१४	९	३०	24	तु.१९।१४	५	६	५१	४०	४६	८	२९	१९	३७
३	३०	३	६	१२	१८	१३	१०	रम१	25	तुला	५	७	५०	२६	४९	९	२४	२०	११
४	२९	५८	६	१३	१८	१२	११	२	26	तुला	५	८	४९	१५	५०	१०	२३	२०	४९
५	२९	५४	६	१३	१८	११	१२	३	27	वृश्चि.६।५९	५	९	४८	५	५२	११	२३	२१	३४
६	२९	५०	६	१४	१८	१०	१३	४	28	वृश्चिक	५	१०	४६	५७	५४	१२	२३	२२	२७
७	२९	४६	६	१४	१८	८	१४	५	29	ध. १६।२१	५	११	४५	५१	५६	१३	२०	२३	२६
८	२९	४१	६	१५	१८	७	१५	६	30	धनु	५	१२	४४	४७	५७	१४	१३	२४	०
९	२९	३७	६	१५	१८	६	१६	७	अक्टू 1	म.२२।२६	५	१३	४३	४४	५९	१५	१	२४	३२
१०	२९	३३	६	१६	१८	५	१७	८	2	मकर	५	१४	४२	४३	५९/१	१५	४३	२५	४०
११	२९	२९	६	१६	१८	४	१८	९	3	कुं.२५।११	५	१५	४१	४४	३	१६	२१	२६	४८
१२	२९	२४	६	१७	१८	३	१९	१०	4	कुंभ	५	१६	४०	४७	४	१६	५६	२७	५७
१३	२९	२०	६	१७	१८	१	२०	११	5	मी.२५।२८	५	१७	३९	५१	६	१७	३१	२९	५
१४	२९	१६	६	१८	१८	०	२१	१२	6	मीन	५	१८	३८	५७	९	१८	६	३०	१४
१५	२९	१२	६	१८	१७	५९	२२	१३	7	मे.२४।५७	५	१९	३८	६	१०	१८	४४	७	२३

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

१. मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा. घटस्थापन, अग्रसेन जयं., A
२. चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ, विशाखा २ में गुरु १७।४६
३. रमजान मु. मा. ९ प्रा., रोजा प्रा. (मु.), कन्यायां शुक्रः १९।३
४. भ. १३।३४ से २६।२७ तक, विनायक ४ व्रत B हस्त में सूर्य १०।२२
५. उपांग ललिता ५ व्रत, विश्व पर्यटक दिवस, तुलायां बुधः२८।३५, B
६. श्रवण ४ में वक्री नेपच्यून २१।१३ F भरतमिलाप, हस्त में शुक्र १९।३६
७. भ. २८।४६ से, सरस्वती आवाहन, जैन आयंबिल ओली प्रा.
८. भ. १६।३५ तक, सरस्वती पूजन, श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, C
९. महानवमी, दुर्गानवमी, नवरात्र पूर्ति, सरस्वत्यै बलिदानम्, D
१०. विजयदशमी (रावण दाह), सरस्वती विसर्जन (श्रवण प्रथम चरणे),E
११. भ.११।५२ से २२।३३ तक, पंचक २५।११ से,पापांकुशा एका. व्रत सबका,F
१२. प्रदोष व्रत, चित्रा में मंगल २१।२ **पूर्वास्तं शुक्रः ६ अक्टू.**
१३. D अस्त्रशस्त्रादि पूजा, मन्वादि ९,अक्टू. मा. १० ता. ३१ प्रा.
१४. भ.१२।२८ से २२।३६ तक,सत्य व्रत,शरत्पूर्णिमाव्रत,कोजागर व्रत,G
१५. पंचक २४।५७ तक,आश्विन पूर्णिमा पुण्यम्,महर्षि वाल्मीकि ज., G मेला शाकम्भरी देवी (उ.प्र.), रासपूर्णिमा (वृन्दावन), पूर्वास्तं शुक्रः१४।४०

A सायन तुला में सूर्य ९।३६, रवि दक्षिण गोल प्रा., राष्ट्रीय आश्विन प्रा., चित्रा में बुध १७।५५, आश्लेषा ४ में शनि २६।४० C भद्रकाल्यावतार, मेला तारादेवी ज्वालामुखी (हि.प्र.), बैंक अर्धवार्षिक लेखाबन्दी
E अपराजिता व शमी पूजन, स्वाति में बुध २०।५२, श्री माधवाचार्य ज., महात्मागांधी व लाल बहादुर शास्त्री ज. H कार्तिक स्नान प्रारंभ, जैन आयंबिल ओलीपूर्ति

आश्विन शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	५	६	६	५	३	११	५	१०	९	८
१२	७	२०	२	२४	५	२७	०	०	१७	२३	०
४४	६	१६	५७	२१	३१	१८	३८	३८	५१	१८	१७
४७	२३	३	१	२६	३३	४४	२६	२६	२३	४४	३०
५८	[illegible]	३९	८५	११	७४	६	३	३	२	०	०
५७	३४	३१	१९	२६	४८	८	११	११	६	५४	४९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

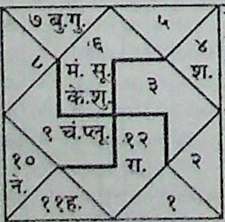

[पक्ष फलम्]

शनिवार को पक्षारंभ से कार्य में उन्नति न्यून योग। नवरात्रा शनिवार का होना भी मानवता का विनाश कारक योग बनता है। इसी पक्ष में केतु-मंगल शुक्र-सूर्य चारों ग्रहों की युति प्रातः कालीन लग्न में होने से कन्या लग्न में होना अनिष्ट योग करते हैं। ''एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च खेचरा। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥'' इस योग से विश्व में अशांति का ताण्डव नृत्य करेगा। शास्त्रीय मर्यादाओं का उल्लंघन होना। ''चन्द्र दर्शन रविवारः दुःखी करे सब परिवार।'' बुधोदय के कारण व्यापारी वर्ग हानि की ओर से चिंतित रहेंगे। राजनैतिक विवाद की लहरें चलेंगी। अनेकानेक जीवों की उत्पत्ति से रोग योग विशेष बनेगा। प्रान्तीय एवं केन्द्रिय सरकार दोनों में विपदा आयेगी। पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र शुक्र के भेदन से अतिवृष्टि तथा शबर पुलिन्द जन दुःखी होंगे। नृप मान्य अच्छे होंगे। गणिका, शिल्पी और विप्र वर्ग वैद्य (डॉक्टर) कौरव और चित्रकार पीड़ित होंगे। मेघों की गर्जना के साथ वर्षा हो। आस्ट्रेलिया, तुर्की, फिलीस्तीन, दुबई, दमन द्वीप, कोचीन, कोरिया में दैवी प्राकृतिक प्रकोप का ताण्डव मचेगा। कनाड़ा का राजनैतिक भविष्य अंधकार मय होगा। चीन में अन्तःकलह होगा। व्यापार (तेजी-मंदी)- गेहूं चावल तेज। उड़द, मूंग एंव मोठ, बाजरा, ज्वार मन्दा। चना भी तेज। मूंगफली मन्दी। अलसी, सरसों, गुड़, चांदी आदि में अचानक मन्दी आकर तेजी आयेगी। चन्द्र दर्शनानुसार कपड़ा बाजार में विशेष तेजी तथा मन्दी के झटका से व्यापारी परेशान होंगे। शुक्र का अस्त होना भी सफेद वस्तु को महंगा करने का कारण बनेगा। जूट बाजार अच्छा चमकेगा। आकाश लक्षण- देश में ऋतु परिवर्तन के साथ शीत ऋतु का आरंभ होगा। छिट-पुट वर्षा का योग है। उल्कापात का या बम विस्फोट का योग छःसात बनते हैं। शीतोष्ण के कारण रोगादि बढ़ेगा। यातायात एवं दुर्घटनाओं का अंबार लगेगा। केन्द्रिय नेता का भी सड़क दुर्घटना में मृत्यु भय बनता है। शकुन विचार- सातें आठे सुदी में बरसै आश्विन मास। बड़े शांति सुख सम्पदा विग्रह होय विनाश॥ बादल वर्षा बिजली, विजया दशमी देख। मूंग, उड़द, तिल, तेल में तेजी है विशेष॥ आश्विन पूनम को अगर बादल बिजली गाज। नफा मिलेगा चैत में संग्रह करो अनाज।

ता. ७ अक्टू. ❖ आश्विन शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

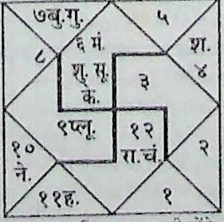

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	५	६	६	५	३	११	५	१०	९	८
१९	१७	२४	१२	२५	१४	२८	०	०	१७	२३	०
३८	४२	५३	३१	४२	१५	०	१६	१६	३७	१३	२३
६	३७	२६	३२	५४	३३	२१	११	११	१८	०	४९
५९	१०८	३९	७७	११	७४	५	३	३	१	०	१
१०	१२	४७	२२	५४	५५	४१	११	११	५४	४२	१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१४

श्री सं. २०६३ शाके १९२८ | दिनमान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ८ से २२ अक्टू. सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति १६ से ३० आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्य उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्र उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
०	श	१	५६	५९	२१	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथि क्षयः B संक्रांति मु. ३० बैठी, पुण्यकाल १०।३५ से
१६	र	२	४८	३०	२५	४३	अ	३९	५५	२२	१७	ह	४७	३३	२५	२०	तै	२२	३७	१५	२२	२९	८	६	१९	१७	५८	२३	१४	8	मेष	५	२०	३७	१६	५९/१२	१९	२६	८	३४	गुरु रामदास जयंती (प्रा. मत से), भारतीय वायुसेना दिवस
१७	चं	३	४१	३	२२	४५	भ	३४	१२	२०	१	व	३८	३३	२१	४५	व	१४	३६	१२	१०	२९	३	६	२०	१७	५७	२४	१५	9	वृ.२५।३१	५	२१	३६	२८	१५	२०	१४	९	४५	भ. १२।१० से २२।४५ तक E गोक्रीड़ा, जमात-उल-विदा (मु.)
१८	मं	४	३५	१	२०	२१	कृ	२९	५३	१८	१७	सि	३०	४१	१८	३७	ब	७	४९	९	२८	२८	५९	६	२०	१७	५६	२५	१६	10	वृष	५	२२	३५	४३	१७	२१	७	१०	५४	कृष्ण चतुर्थी व्रत, करवा चौथ, कर्क ४, दशरथ ४, चित्रा में सूर्य २३।२६
१९	बु	५	३०	४५	१८	३९	रो	२७	१५	१७	१५	व्य	२४	१४	१६	२	कौ	२	३८	७	२४	२८	५५	६	२१	१७	५५	२६	१७	11	मि.२९।१	५	२३	३५	०	१९	२२	५	११	५७	व्यतिपात पुण्यम्, विशाखा ३ में गुरु २३।३८
२०	गु	६	२८	२८	१७	४४	मृ	२६	३५	१६	५९	वरि	१९	२१	१४	६	व	२८	२८	१७	४४	२८	५१	६	२१	१७	५४	२७	१८	12	मिथुन	५	२४	३४	१९	२१	२३	५	१२	५३	भ. १७।४४ से २९।४३ तक, पू.भा. ३ कुंभे राहुः उफा १ सिंहे केतुः ७।३८
२१	शु	७	२८	२६	१७	४१	आ	२७	५७	१७	३३	प	१६	७	१२	४९	ब	२८	१६	१७	४१	२८	४७	६	२२	१७	५३	२८	१९	13	मिथुन	५	२५	३३	४०	२४	२४	०	१३	४१	विशाखा में बुध ७।४६ D श्री महावीर निर्वाण दि.जैन, शब-ए-कद्र (मु.)
२२	श	८	३०	८	१८	२६	पुन	३१	१८	१८	५४	शि	१४	२९	१२	१०	कौ	३०	८	१८	२६	२८	४३	६	२३	१७	५२	२९	२०	14	क.१२।२९	५	२६	३३	४	२६	२४	६	१४	२१	कालाष्टमी, अहोइ अष्टमी, कालिका पूजन (पंजाब), राधा कुण्ड A
२३	र	९	३३	५१	१९	५५	पु	३६	२६	२०	५७	सिद्ध	१४	१९	१२	७	तै	१	४६	७	६	२८	३८	६	२३	१७	५१	३०	२१	15	कर्क	५	२७	३२	३०	२८	२५	५	१४	५५	सहादत-ए-हजरत अली (मु.)
२४	चं	१०	३९	१	२२	०	श्ले	४२	५६	२३	३४	सा	१५	२२	१२	३३	ब	६	१६	८	५४	२८	३४	६	२४	१७	४९	३१	२२	16	सिं.२३।३४	५	२८	३१	५८	३१	२६	१	१५	२५	भ. ८।५४ से २२।० तक, विश्व खाद्य दिवस
२५	मं	११	४५	१२	२४	२९	म	५०	२२	२६	३३	शुभ	१७	१८	१३	१९	ब	१२	०	११	१३	२८	३०	६	२४	१७	४८	१	२३	17	सिंह	५	२९	३१	२९	३३	२६	५४	१५	५३	रमा एका. व्रत सबका, सौर कार्तिकारंभ, तुला में सूर्य १६।५९ B
२६	बु	१२	५१	५४	२७	११	पूफा	५८	१५	२९	४३	शु	१९	४५	१४	१९	कौ	१८	३१	१३	४९	२८	२६	६	२५	१७	४७	२	२४	18	सिंह	६	०	३१	२	३५	२७	४६	१६	१९	गोवत्स द्वादशी, गोवत्स पूजन
२७	गु	१३	५८	३८	२९	५३	उफा	६०	०	-	-	ब्र	२२	२४	१५	२३	ग	२५	१७	१६	३२	२८	२२	६	२६	१७	४६	३	२५	19	कं.१२।३१	६	१	३०	३७	३८	२८	३८	१६	४४	भ.२९।५३ से, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, धनतेरस, धन्वन्तरी ज., C
२८	शु	१४	६०	०	-	-	उफा	६	६	८	५३	ऐं	२४	५५	१६	२४	वि	३१	५३	१९	१२	२८	१८	६	२६	१७	४५	४	२६	20	कन्या	६	२	३०	१५	३९	२९	३०	१७	११	भ. १९।१२ तक, मास शिवरात्री, नरक हारिणी, रूप चतुर्दशी, दीपदानं
२९	श	१४	५	०	८	२७	ह	१३	३७	११	५४	वै	२७	५	१७	१७	श	५	०	८	२७	२८	१४	६	२७	१७	४४	५	२७	21	तु.२५।१९	६	३	२९	५४	४२	३०	२३	१७	४०	पितृकार्याऽमावस्या, दीपावली, महालक्ष्मी पूजन, कमला ज., D
३०	र	३०	१०	४६	१०	४६	चि	२०	३०	१४	३९	वि	२८	४३	१७	५७	ना	१०	४६	१०	४६	२८	१०	६	२८	१७	४४	६	२८	22	तुला	६	४	२९	३६	४३	७	१९	१८	१२	देवकार्याऽमावस्या, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, बलिपूजा, द्यूत क्रीड़ा, E

A स्नान (गोवर्धन), तुलायां भौमः २१।५१, चित्रा में शुक्र ११।४६ C यम प्रीत्यर्थ दीप दान, श्री पद्म प्रभु जन्म-तप जैन, तुलायां शुक्रः १९।३७

कार्तिक कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १४ अक्टू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	५	६	६	५	३	१०	४	१०	९	८
२६	२६	२९	२१	२७	२३	२८	२९	२९	१७	२३	०
३३	१९	३२	१	७	०	३८	५३	५३	२४	८	३१
४	३२	४३	१३	१४	२५	४२	५५	५५	४०	४१	३४
५९	[illegible]	४०	६५	१२	७५	५	३	३	१	०	१
२६	३९	४	३९	१८	३	१२	११	११	४०	२९	१४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
चित्रा १	पुन. २	चित्रा २	विशा. १	विशा. ३	हस्त ४	आश्लेषा ४	पू.भा. ३	उ.फा. १	शत. ४	श्रवण ४	मूल १

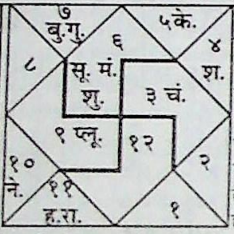

[पक्ष फलम्]

कार्तिक बदी प्रतिपदा का क्षय वार शनिवार। भूमि पर भय आपदा बने अचानक द्वार॥ जेहि पखवारे तिथि घटे वाही में बढ़ जाय। तेजी से मन्दी बने, रहे दुःखी व्यापार॥ इस पक्ष में तुला संक्रांति कार्तिक कृष्ण एकादशी मंगलवारी होना और भी अनिष्टकारी बनेगी। कुमारावस्था बैठी ३० मुहूर्ती धान्य भाव सम (मन्दा न तेज) करेगी, लेकिन अग्नि जन्य घटनाओं से जन-धन-तन तीनों हानियाँ होंगी। शुक्रास्त पूर्व में होना मांगलिक कार्यों में बाधा तथा दूध, दही, घी, चूना, चांदी, चीनी, का भाव तेज होगा। इस पक्ष में कुआ बनाने वाले को पीड़ा होगी। तथा सुन्दर वृष्टि हो। शनि सिंह में भ्रमण दिनांक २९ अक्टू. ०६ को प्रातः ७।३५ प्रातः पर मघा में प्रवेश करने से हाथी, घोड़े, बैल व चौपाया पशुओं में रोगोपद्रव बढ़ेगा। वृश्चिक का वृहस्पति दिनांक २७ अक्टू. ०६ को विशाखा ४ में होने से कार्तिक वर्ष होता है। इसमें सोम नाम मेघ बरसता है। खण्ड वर्षा का योग तथा अमेरिका, कनाड़ा, जापान, जर्मनी, इंग्लैण्ड तथा पाकिस्तान आदि देशों में खण्डन-विखण्डन योग नेपाल में उपद्रव बढ़ता है। मुस्लिम देशों में अराजकता बढ़ेगी। भूकंपन का योग तथा तूफान का भय भी दक्षिणी देशों में होगा। **व्यापार (तेजी-मंदी)**- कत्था, बीड़ी, सिगरेट तेज। दालवाना, किराना, शेयर्स, नारियल, खाद बीज, सीमेन्ट चूना, पत्थर, टिम्बर आदि करीब सभी वस्तुओं में तेजी रहेगी। वर्षा से हानि भी होगी। **आकाश लक्षण**- महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, असम, मणीपुर, शिलांग, चेरापूंजी में वर्षा से हिमपात भी होगा। उल्कापात व पुच्छल तारा का चित्रण (दर्शन) योग भी बनेगा। विशाखापटनम, गुलबर्ग, पुणे, चीन आदि देश प्रदेशों में प्राकृतिक आपदा का योग बनता है। कहीं-कहीं आंधी तूफान से खड़ी फसलों तथा खलिहानों में अन्न का नाश होने से कृषक वर्ग को विशेष हानि का योग भी है। **शकुन विचार**- कार्तिक बदी सुदी एकादशी जो नभ बादल होय। तो आगे आषाढ़ में उत्तम जल बरसाय॥ कार्तिक मंगसिर पूर्णिमा मेघ रहे आकाश। गल्ला भी संग्रह करो लाभ पांचवे मास॥ पड़वा पांचे चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मन्दी करे तेजी जब हो छीन॥

ता.२२ अक्टूबर ❖ कार्तिक कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

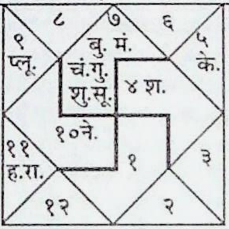

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	६	६	६	६	६	३	१०	४	१०	९	८
४	२	४	२८	२८	३	२९	२९	२९	१७	२३	०
२९	४	५४	२९	४७	१	१८	२८	२८	१२	५	४२
३६	३६	२४	१३	११	१४	५	२९	२९	२२	३९	७
५९	[illegible]	४०	३९	१२	७५	४	३	३	१	०	१
४३	४०	२४	५५	४१	१०	३३	११	११	२२	१४	२७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
चित्रा ४	चित्रा ३	चित्रा ४	विशा. ३	विशा. ३	चित्रा ३	आश्लेषा ४	पू.भा. ३	उ.फा. १	शत. ४	श्रवण ४	मूल १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, असम, मणीपुर, शिलांग, चेरापूंजी में वर्षा से हिमपात भी होगा। उल्कापात व पुच्छल तारा का चित्रण (दर्शन) योग भी बनेगा। विशाखापटनम, गुलबर्ग, पुणे, चीन आदि देश प्रदेशों में प्राकृतिक आपदा का योग बनता है। कहीं-कहीं आंधी तूफान से खड़ी फसलों तथा खलिहानों में अन्न का नाश होने से कृषक वर्ग को विशेष हानि का योग भी है। शकुन विचार- कार्तिक बदी सुदी एकादशी जो नभ बादल होय। तो आगे आषाढ़ में उत्तम जल बरसाय॥ कार्तिक मंगसिर पूर्णिमा मेघ रहे आकाश। गल्ला भी संग्रह करो लाभ पांचवे मास॥ पड़वा पांचे चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मन्दी करे तेजी जब हो छीन॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. २३ अक्टू. से ५ नवंबर सन् २००६ ई.,राष्ट्रीय मिति १ से १४ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
१	चं	१	१५	४१	१२	४५	स्वा	२६	३३	१४	५	प्री	२१	४१	१८	२१	ब	१५	४१	१२	४५	२८	६	६	२८	१७	४३	७	२९	23	तुला	६	५	२९	१९	[illegible]	८	१६	१८	४९
२	मं	२	१९	३९	१४	२०	वि	३१	४०	१९	९	आयु	२९	५५	१८	२७	कौ	१९	३९	१४	२०	२८	२	६	२९	१७	४२	८	मार्ग १	24	वृश्चि.१२।४०	६	६	२९	५	४७	९	१६	१९	३२
३	बु	३	२२	३४	१५	३१	अनु	३५	४६	२०	४८	सौ	२९	२०	१८	१३	ग	२२	३४	१५	३१	२७	५८	६	३०	१७	४१	९	२	25	वृश्चिक	६	७	२८	५२	४९	१०	१६	२०	२३
४	गु	४	२४	२२	१६	१५	ज्ये	३८	४७	२२	१	शो	२७	५३	१७	३९	वि	२४	२२	१६	१५	२७	५४	६	३०	१७	४०	१०	३	26	ध.२२।१	६	८	२८	४१	५१	११	१४	२१	१९
५	शु	५	२५	०	१६	३१	मूल	४०	३८	२२	४६	अति	२५	३१	१६	४३	बा	२५	०	१६	३१	२७	५०	६	३१	१७	३९	११	४	27	धनु	६	९	२८	३२	५३	१२	८	२२	२२
६	श	६	२४	२३	१६	१७	पूषा	४१	१६	२३	२	सु	२२	११	१५	२४	तै	२४	२३	१६	१७	२७	४६	६	३२	१७	३८	१२	५	28	म.२९।१	६	१०	२८	२५	५४	१२	५६	२३	२७
७	र	७	२२	२८	१५	३१	उषा	४०	३६	२२	४७	धृ	१७	४९	१३	४०	व	२२	२८	१५	३१	२७	४३	६	३२	१७	३७	१३	६	29	मकर	६	११	२८	१९	५६	१३	३८	२४	०
८	चं	८	१९	१४	१४	१४	श्रव	३८	३९	२२	१	शू	२२	२५	११	३१	ब	१९	१४	१४	१४	२७	३९	६	३३	१७	३६	१४	७	30	मकर	६	१२	२८	१५	५७	१४	१६	२४	३३
९	मं	९	१४	४२	१२	२६	धनि	३५	२६	२०	४४	गं	५/५४	५८/३७	८/२९	५७/५९	कौ	१४	४२	१२	२६	२७	३५	६	३४	१७	३६	१५	८	31	कुं.९।२६	६	१३	२८	१२	६०/०	१४	५१	२५	३९
१०	बु	१०	८	५७	१०	९	शत	३१	४	१९	०	धु	५०	१३	२६	३९	ग	८	५७	१०	९	२७	३१	६	३४	१७	३५	१६	९	नवं 1	कुंभ	६	१४	२८	१२	०	१५	२५	२६	४५
११	गु	११	२	५	७	२७	पूभा	२५	४४	१६	५३	व्या	४१	८	२३	२	वि	२	९	७	२७	२७	२८	६	३५	१७	३४	१७	१०	2	मी.११।२६	६	१५	२८	१२	३	१५	५९	२७	५१
०	गु	१२	५४	३१	२८	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	शु	१३	४६	१९	२५	८	उभा	१९	४०	१४	२८	ह	३१	३२	१९	१३	कौ	२०	२७	१४	४७	२७	२४	६	३६	१७	३३	१८	११	3	मीन	६	१६	२८	१५	४	१६	३५	२८	५८
१३	श	१४	३७	५५	२१	४७	रे	१३	१२	११	५३	व	२१	४१	१५	१७	ग	१२	६	११	२७	२७	२०	६	३७	१७	३३	१९	१२	4	मे.११।५३	६	१७	२८	१९	५	१७	१५	३०	८
१४	र	१५	२९	४१	१८	३०	अ	६	४४	९	१९	सि	११	५२	११	२२	वि	३	४४	८	७	२७	१७	६	३७	१७	३२	२०	१३	5	मेष	६	१८	२८	२४	८	१८	०	७	१९

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, रा. कार्तिक प्रा., सायन वृश्चिक में सूर्य १८।५९, A
सव्वाल मु.मा. १० प्रा., यम द्वितीया, भैया दूज, यमुना स्नान, गोसंवर्धन सप्ताह प्रा., B
भ.२७।५३ से J कार्तिक स्नान पूर्ति,अष्टान्हिका पर्व पूर्ति जैन,मेला पुष्कर (राज.)K
भ. १६।१५ तक, विनायक ४ व्रत, सूर्य षष्ठी व्रतारंभ (बिहार) A हेमन्त ऋतु प्रा.
सौभाग्य पंचमी, पांडव ५, ज्ञान ५ जैन, गुरुगोविन्द सिंह बलिदान दिवस C
सूर्य षष्ठी, छट पूजा (बिहार), सूर्य षष्ठी व्रत पूर्ति, डाला छट, वक्री बुध: २३।५०
भ. १५।३१ से २६।५३ तक, कल्पादि ७, सहस्रार्जुन ज., अष्टान्हिका पर्व प्रा. जैन
श्री दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, गौपूजा गौशालादि निर्माण, यव धान्यादि दान, गोसंवर्धनD
पंचक ९।२६ से, अक्षय नवमी, कृष्माण्ड ९, आँवला ९, कृत युगादि ९, E
भ.२०।४८ से, भीष्म पंचकारंभ, देव प्रबोधिनी एका. व्रत स्मा.,तुलसी विवाह,F
भ. ७।२७ तक, देव प्रबोधिनी एका. व्रत वैष्णव, मन्वादि १२, कालीदास जयंती
द्वादशी तिथि क्षय: G दिवस, विशाखा में शुक्र १८।३७, गुरु वृद्धत्वारंभ २८।४५
प्रदोष व्रत, पश्चिमास्तं बुध: १३।५८, मेला वीर वैरागी नकोदर (पंजाब)
भ.२१।४७ से, पंचक ११।५३ तक, वैकुण्ठ १४ व्रत, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा G
भ.८।७ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, कार्तिकी पूर्णिमा, मन्वादि १५,H
H गुरु नानक देव ज., निंबार्काचार्य ज., देव दीपोत्सव, भीष्म पंचक पूर्ति, J

B विश्वकर्मा व चित्रगुप्त पूजन, ईद-उल-फित्र बकरीद (मु.), वृश्चिक बुध: १७।४८, स्वाति में सूर्य ९।५३, स्वाति में मंगल २०।१२, स्वाति में शुक्र २७।२१ C (प्रा.म.से), विशा. ४ वृश्चिके गुरु २२।१९ D सप्ताह पूर्ति, मार्गी नेपच्यून ८।२७ E जगद्धातृ पूजन, जुगल जोड़ी प्रक्रिमा (वृन्दावन), सरदार पटेल ज., श्री मति गांधी पुण्य दि. F चातुर्मास व्रत नियमादि पूर्ति, मघा१ सिंहे शनि: ७।१७, मेला पुष्कर (राज.), पुण्डर पुर यात्रा (महाराष्ट्र), नवंबर मा. ११ ता. ३० प्रा. वक्री तुलायां बुध: १८।४३ K व रेणुका तीर्थ गढ़गंगा, रथयात्रा व चातुर्मास व्रत पूर्ति जैन

कार्तिक शु. ८ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	६	७	७	६	३	१०	४	१०	९	८
१२	१३	१०	१	०	१३	२९	२९	२९	१७	२३	०
२८	४८	१८	१	२९	२	५२	३	३	२	४	५४
१५	५२	४२	३२	४२	४५	७	३	३	४०	४३	२०
५९	[illegible]	४०	१४	१२	७५	३	३	३	१	०	१
५७	५	४४	४०	५८	१३	५१	११	११	१	२	३८
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
-	-	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
स्वाति ३	श्रवण ३	स्वाति ३	विशा. ४	विशा. ४	स्वाति ३	आश्ले. ४	पू.भा. ३	उ.फा. १	शत. ४	श्रवण ४	ज्ये. १

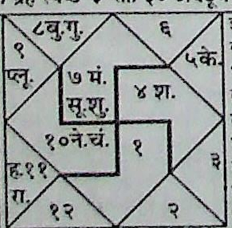

[पक्ष फलम्]

इस माह में पांच रविवार हैं जो कि अशुभ फलदायक है। धान्यादि लाल वर्ण वाली सभी वस्तुओं के भाव तेज होंगें। प्रजा में विग्रह होने का योग भी बना है। कहीं-कहीं हिंसा का ताण्डव मचा रहेगा। अग्नि काण्ड एवं दुर्घटनाओं का छाया रहेगा। "यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यान्मतं तत्र महद्भयम्॥ अकाल का ताण्डव तथा राजपक्ष में अशान्ति तथा सत्ताधीन प्रसिद्ध व्यक्ति का देहावसान होगा।" एक जगह गुरु शुक्र हो बने युद्ध आसार। अनावृष्टि अति वृष्टि से दुःख पावे संसार ॥ इस योग से युद्ध की आशंका बढ़ती है। बुधौ वृश्चिक राशिस्थो घृत तैल महर्घता। सुभिक्ष तत्र धन्याना लोकानां च शुभ भवेत॥ के अनुसार घी, तेल महंगे, रुई, चांदी तेज तथा नशीले पदार्थों में मन्दी का योग बनेगा। व्यापारी वर्ग चिंतित रहेंगे। अमावस्या चित्रा होने से दुर्भिक्ष (महर्घ-महंगाई) तथा रविवारीय अमावस्या होने से राजाओं में युद्ध कराने का योग बनाती है। पूर्णिमा को कृतिका का अभाव होने से मंहगाई का वर्चस्व बढ़ेगा। धातु बाजार-सण, सरसों में एकाएक मन्दी के कारण काफी व्यापार दिवालिया भी हो सकेंगे। कुंभ का राहु के कारण आतंकवाद गुप्तचर रूप में बढ़ेंगे। राजनैतिक पार्टियों के सिद्धान्त क्षीण होंगे। इंग्लैण्ड, अफ्रीका, अमेरिका, जर्मनी, जापान तथा अफगानिस्तान में जन आन्दोलन का योग बनता है। व्यापार (तेजी-मंदी)- ग्रहों में बुध राहु व शुक्र ग्रह चाल से शक्कर, तेल, तिलहन, दलहन, जौ, चावल, उड़द, पापड़, शीशा, रबड़, पशु आहार, इलायची, जायफल, सोंठ, लौंग, दालचीनी, काजू, बादाम, किसमिस, दवाईयां, श्रृंगार सामग्री में तेजी रहेगी। सीमेन्ट, चूना, पत्थर मन्दे। लकड़ी का भाव सम रहेगा। आकाश लक्षण-हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल, उत्तरांचल, उ.प्र., बिहार, पश्चिमी बंगाल, पण्डिचेरी, चेरापूंजी, कन्या कुमारी आदि में भारी वर्षा का योग बनता है। कहीं कहीं हिमपात का योग भी है। कार्तिक शुक्ल द्वादशी का क्षय। जिससे बढ़ेगा घर-घर में भय। पीतल के व्यापारी भय भीत रहेंगे। शकुन विचार- भौमवार चन्द्रदर्शन महीतले भार अपार। भगवान शरण में बैठकर जीवन लगाओ पार॥ कार्तिक वदी द्वितीया तृतीया को वर्षा हो तो आगे वर्षा योग शुभ सुखधार॥ चतुर्थ ग्रह शुभ राशि तुला युक्ति पाई। आगे समय भारी है दुःख दाई॥

ता. ५ नवं. ❖ कार्तिक शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

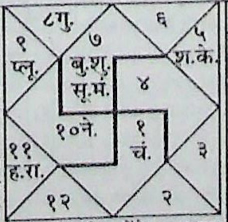

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	०	६	६	७	६	४	१०	४	१०	९	८
१८	१०	१४	२७	१	२०	०	२८	२८	१६	२३	१
२८	५६	२३	१४	४७	३४	१३	४३	४३	५७	५	४
२४	५६	३८	५	५६	७	४९	५८	५८	१६	२७	२७
६०	८१०	४०	६८	१३	७५	३	३	३	०	०	१
८	२७	५७	२	८	१४	१७	११	११	४४	१४	४६
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
स्वाति ४	अश्वि. ४	स्वाति ३	विशा. ३	विशा. ४	विशा. १	मघा १	पू.भा. ३	उ.फा. १	शत. ४	श्रवण ४	ज्ये. १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. ६ स २० नवंबर सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति १५ से २९ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

पश्चिमास्तं गुरोः ७ नवं.

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं	मि.	
१५	चं	१	२२	४	१५	२८	भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	२२	४	१५	२८	२७	१३	६	३८	१७	३१	२१	१४	6	वृ.१२।२१	६	१९	२८	३२	[illegible]	१८	५२	८	३०	व्यतिपात पुण्यम्, विशखा में सूर्य १८।४
१६	मं	२	१५	२७	१२	५०	रो	५१	३४	२७	१६	प	४६	१	२५	३	ग	१५	२७	१२	५०	२७	१०	६	३९	१७	३१	२२	१५	7	वृष	६	२०	२८	४१	११	१९	४९	९	३८	भ. २३।४८ से, पश्चिमास्तं गुरोः २८।४५
१७	बु	३	१०	२७	१०	४६	मृ	४९	१६	२६	२२	शि	३९	३७	२२	३१	वि	१०	१७	१०	४६	२७	६	६	४०	१७	३०	२३	१६	8	मि.१४।४४	६	२१	२८	५२	१४	२०	५१	१०	४०	भ. १०।४६ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
१८	गु	४	६	५३	९	२६	आ	४८	५६	२६	१५	सि	३४	४६	२०	३५	बा	६	५३	९	२६	२७	३	६	४०	१७	२९	२४	१७	9	मिथुन	६	२२	२९	६	१५	२१	५४	११	३३	उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो मु. (दिल्ली) B पूर्वोदय बुधः २१।३३
१९	शु	५	५	३२	८	५४	पुन	५०	४०	२६	५७	सा	३१	३४	१९	१९	तै	५	३२	८	५४	२६	५९	६	४१	१७	२९	२५	१८	10	क.२०।४२	६	२३	२९	२१	१७	२२	५५	१२	१७	स्वाति में वक्री बुध २३।२२ A शुक्रः १७।५७, प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)
२०	श	६	६	२१	९	१४	पु	५४	२७	२८	२९	शुभ	३०	२	१८	४३	व	६	२१	९	१४	२६	५६	६	४२	१७	२८	२६	१९	11	कर्क	६	२४	२९	३८	१९	२३	५३	१२	५४	भ. ९।१४ से २१।५० तक, अनुराधा १ में गुरु २८।५९
२१	र	७	९	१६	१०	२५	श्ले	६०	०	-	-	शु	३०	१	१८	४३	ब	९	१६	१०	२५	२६	५३	६	४३	१७	२८	२७	२०	12	कर्क	६	२५	२९	५७	२१	२४	०	१३	२६	श्री काल भैरवाष्टमी, भैरव जी दर्शन पूजन, कालाष्टमी, वृश्चिके A
२२	चं	८	१३	५८	१२	१९	श्ले	०	२	६	४४	ब्र	३१	१५	१९	१४	कौ	१३	५८	१२	१९	२६	४९	६	४३	१७	२७	२८	२१	13	सि.६।४४	६	२६	३०	१८	२३	२४	४८	१३	५५	विशाखा में मंगल ९।४९
२३	मं	९	१९	५९	१४	४४	म	६	५८	९	३१	ऐं	३३	२१	२०	५	ग	१९	५९	१४	४४	२६	४६	६	४४	१७	२७	२९	२२	14	सिंह	६	२७	३०	४१	२५	२५	४०	१४	२१	भ. २८।५ से, पं. जवाहर लाल नेहरू जन्म दि., बालमेला दिल्ली,B
२४	बु	१०	२६	४३	१७	२६	पूफा	१४	४२	१२	३८	वै	३५	५२	२१	६	वि	२६	४३	१७	२६	२६	४३	६	४५	१७	२६	३०	२३	15	कं.१९।२६	६	२८	३१	६	२७	२६	३२	१४	४७	भ.१७।२६ तक, महावीर स्वामी दीक्षा दि. जैन, अनुराधा में शुक्र ९।४२
२५	गु	११	३३	३२	२०	११	उफा	२२	३६	१५	४८	वि	३८	२३	२२	७	ब	०	८	६	४९	२६	४०	६	४६	१७	२६	मार्ग १	२४	16	कन्या	६	२९	३१	३३	२९	२७	२३	१५	१३	उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, वैतरणी व्रत, सौर मार्गशीर्षारंभ, C
२६	शु	१२	३९	५१	२२	४३	ह	३०	८	१८	५०	प्री	४०	३०	२२	५८	कौ	६	४६	९	२९	२६	३७	६	४७	१७	२५	२	२५	17	कन्या	७	०	३२	२	३०	२८	१६	१५	४१	संत ज्ञानेश्वर पुण्य दि.,लाला लाजपतराय पुण्य दि.,मार्गी बुध २८।५७
२७	श	१३	४५	१५	२४	५४	चि	३६	५०	२१	३१	आयु	४१	५५	२३	३४	ग	१२	४०	११	५१	२६	३४	६	४७	१७	२५	३	२६	18	तु.८।२३	७	१	३२	३२	३२	२९	११	१६	१२	भ. २४।५४ से, शनि प्रदोष व्रत
२८	र	१४	४९	३१	२६	३७	स्वा	४२	२८	२३	४७	सौ	४२	३०	२३	४८	वि	१७	३१	१३	४९	२६	३१	६	४८	१७	२५	४	२७	19	तुला	७	२	३३	४	३४	३०	८	१६	४८	भ. १३।४९ तक, मास शिवरात्री व्रत, मेला पुरमण्डल देविका स्नान D
२९	चं	३०	५२	३२	२७	५०	वि	४६	५५	२५	३५	शो	४२	७	२३	४०	च	२१	१०	१५	१७	२६	२८	६	४९	१७	२४	५	२८	20	वृश्चि.१९।११	७	३	३३	३८	३५	७	८	१७	३०	देवपितृ कार्या सोमावत्याऽमावस्या, मार्गी हर्षल ३०।४३
																																									C वृश्चिक में सूर्य १६।४७, संक्रांति मु. ३० बैठी, पुण्य काल १०।२३ से

D (कश्मीर) श्री बाला जी जयंती, श्री मति गांधी जन्म दिवस, अनुराधा में सूर्य २४।६

मार्ग. कृ. ८ चंद्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १३ नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	३	६	६	७	७	४	१०	४	१०	९	८
२६	२९	१९	१७	३	०	०	२८	२८	१६	२३	१
३०	२२	५२	३०	३३	३६	३७	१८	१८	५२	८	१९
१८	१८	३५	५९	३३	१५	२०	३२	३२	४३	१९	७
६०	[illegible]	४१	५१	१३	७५	२	३	३	०	०	१
२३	४४	१९	२९	१७	१८	२९	११	११	२०	३१	५५
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	अ	अ	अ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
विशा. ३	श्लेषा ४	स्वाति ४	स्वाति ४	अनु. १	विशा. ४	मघा १	पू.भा. ३	उ.फा. १	शत. ४	श्रवण ४	मूल १

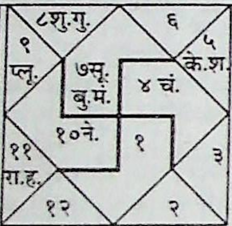

[पक्ष फलम्]

इस मास में पक्षारंभ में ही गुरु ग्रह अस्त होना नेत्र पीड़ा का रोग बढ़ायेगा। पांच सोमवार होने से धान्य सस्ता होगा। "**सोमस्य पंच वाराश्च यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धिश्च सुखी भवति मेदिनी॥**" अर्थात सुख का संचार होगा। धान्य में वृद्धि होगी। आर्थिक समृद्धि का योग बनेगा। तथा सरकार द्वारा सुनियोजित कार्य भी यथावत सम्पन्न होगा। वर्षा समयानुकूल होने का योग तथा किराना बाजार में अचानक उछाल (तेजी) का योग बनता है। इसी पक्ष में बदी एकादशी गुरुवार को वृश्चिक संक्रांति अपराह्न बेला में १६ बजकर १३ मि. पर प्रवेश वारात् ३, नक्षत्रात् ४ वार नाम नंदा गणकानाम् सुखदा कुमारावस्था बैठी मु.३० के कारण धान के भाव ठीक। गुरुवार को प्रवेश होने से पीली वस्तुओं के भाव बढेंगे। मंगल क्षेत्र में सूर्य का प्रवेश होने से पश्चिमी+उत्तरी दिशाओं में संकट का बादल छायेगा। वरिष्ठ नागरिक पद त्याग या देह त्याग का योग बनता है। यत्र तत्र भुखमरी बेरोजगारी से हड़तालें आदि का योग बनता है। भूकंप-ज्वालामुखी तथा जलाभाव का योग आगामी चार माह में बनेगा। बदी अष्टमी को बुधोदय के कारण शेयर्स बाजार में जोरदार तेजी का योग बनेगा। **व्यापार (तेजी-मंदी)**- टिम्बर, पत्थर, सीमेन्ट, मशीनरी सभी प्रकार की ग्रह निर्माण सामग्री महंगी होगी। किराना-चीनी, गुड़ सामान्य मन्दा योग बनता है। मिर्च मसाला पशु आहार में सामान्य मंदी गेहूं, जौ भी मन्दा। चावल, ग्वार, ज्वार में सामान्य तेजी। वस्त्रोद्योग में अच्छी तेजी का योग है। **आकाश लक्षण**- दिल्ली, हिमाचल, पश्चिमी, बंगाल में तूफान योग, कहीं मौसम सूखा तो कहीं मौसम गीला। उच्च शिखरों में हिमपात का योग बनेगा। दक्षिण भारत में धरा कम्पन योग रवि आश्लेषा को बनता है। **कालाष्टमी आश्लेषा जब आये। तो भूकंपन योग बन जाये।** शीत लहर बढ़ेगी। **शकुन विचार**- मार्गशीर्ष कृष्णा २,५,७,९,११,१३,३० को बादल, वर्षा, आंधी तूफान हो तो तीन माह बाद सभी वस्तुओं में अच्छी तेजी आयेगी। **मंगसिर में बुध का उदय अथवा भृगु सुत अस्त। तृण चारा कमती मिले बेचो पशु समस्त॥** यानि चारे का अभाव व तेजी होगी।

ता.२० नवंबर ❖ मार्ग. कृ. ३० चंद्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

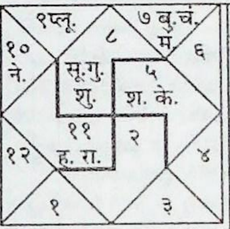

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	६	६	६	७	७	४	१०	४	१०	९	८
३	२२	२४	१५	५	९	०	२७	२७	१६	२३	१
३३	५५	४२	२७	६	२३	५२	५६	५६	५१	१२	३२
३८	९	४६	१९	४५	२७	३०	१७	१७	२२	३६	५२
६०	[illegible]	४१	२५	१३	७५	१	३	३	०	०	२
३५	१	३७	१३	२१	१९	४४	११	११	१	४५	१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
-	-	अ	उ	अ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
अनु. १	विशा. १	विशा. ३	स्वाति ३	अनु. १	अनु. १	मघा १	पू.भा. ३	उ.फा. १	शत. ४	श्रवण ४	मूल १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंदी गेहूं, जौ भी मन्दा। चावल, ग्वार, ज्वार में सामान्य तेजी ... कहीं मौसम सूखा तो कहीं मौसम गीला। उच्च शिखरों में हिमपात का योग बनेगा। दक्षिण भारत में धरा कम्पन योग रवि आश्लेषा को बनता है। कालाष्टमी आश्लेषा जब आये। तो भूकंपन योग बन जाये। शीत लहर बढ़ेगी। शकुन विचार- मार्गशीर्ष कृष्णा २,५,७,९,११,१३,३० को बादल, वर्षा, आंधी तूफान हो तो तीन माह बाद सभी वस्तुओं में अच्छी तेजी आयेगी। मंगसिर में बुध का उदय अथवा भृगु सुत अस्त। तृण चारा कमती मिले बेचो पशु समस्त॥ यानि चारे का अभाव व तेजी होगी।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१७

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. २१ नव. से ४ दिसं. सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ३० कार्तिक से १३ मार्ग. तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
३०	मं	१	५४	१९	२८	३४	अनु	५०	११	२६	५४	अ	४०	४९	२३	९	किं	२३	३३	१६	१५	२६	२५	६	५०	१७	२४	६	२९	21	वृश्चिक	७	४	३४	१३	३७	८	९	१८	१८	A श्री बाँकेबिहारी जी प्रादुर्भवोत्सव (वृन्दा.), ज्येष्ठा में शुक्र २४।३५
मार्ग. १	बु	२	५४	५९	२८	५०	ज्ये	५२	२१	२७	४७	सु	३८	३८	२२	१८	बा	२४	४६	१६	४५	२६	२३	६	५१	१७	२४	७	३०	22	ध.२७।४७	७	५	३४	५०	३८	९	८	१९	१४	चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घता, सायन धनु में सूर्य १६।३४, रा. मार्ग. प्रा.
२	गु	३	५४	३९	२८	४३	मूल	५३	३३	२८	१७	धृ	३५	३८	२१	७	तै	२४	५५	१६	५०	२६	२०	६	५१	१७	२३	८	जि१	23	धनु	७	६	३५	२८	४०	१०	४	२०	१६	जिल्काद मु.मा. ११ प्रा., सत्य श्री सांई बाबा अवतरण
३	शु	४	५३	२४	२८	१४	पूषा	५३	५१	२८	२५	शू	३१	५४	१९	३८	व	२४	७	१६	३१	२६	१७	६	५२	१७	२३	९	२	24	धनु	७	७	३६	८	४१	१०	५४	२१	२०	भ. १६।३१ से २८।१४ तक, विनायक ४ व्रत, संत घासीदास जयंती
४	श	५	५१	२०	२७	२५	उषा	५३	२१	२८	१४	गं	२७	३१	१७	५३	ब	२२	२७	१५	५२	२६	१५	६	५३	१७	२३	१०	३	25	म.१०।२४	७	८	३६	४९	४२	११	३८	२२	२६	गुरु तेगबहादुर बलि. दि., नागपंचमी (द.भा), श्री राम विवाहोत्सव, A
५	र	६	४८	२८	२६	१७	श्रव	५२	५	२७	४४	वृ	२२	२९	१५	५८	कौ	१९	५९	१४	५३	२६	१३	६	५४	१७	२३	११	४	26	मकर	७	९	३७	३१	४३	१२	१७	२३	३१	चम्पा षष्ठी व्रत (महा.), गुहा (स्कंद) षष्ठी, मूलक रूपिणी ६ B
६	चं	७	४४	५०	२४	५१	ध	५०	३	२६	५६	ध्रु	१६	५१	१३	३९	ग	१६	४४	१३	३६	२६	१०	६	५५	१७	२३	१२	५	27	कुं.१५।२२	७	१०	३८	१४	४४	१२	५२	२४	०	भ. २४।५१ से, पंचक १५।२२ से, मित्र सप्तमी, नरसी मेहता ज., C
७	मं	८	४०	२६	२३	६	श	४७	१६	२५	५०	व्या	१०	३६	११	१०	वि	१२	४२	१२	०	२६	८	६	५५	१७	२३	१३	६	28	कुंभ	७	११	३८	५८	४५	१३	२४	२४	३४	भ. १२।० तक, श्री दुर्गाष्टमी, धनिष्ठा १ में नेपच्यून १७।३०
८	बु	९	३५	१८	२१	३	पूभा	४३	४६	२४	२७	ह	७/५५	४४/२२	८/२५	२५/२८	बा	७	५६	१०	७	२६	६	६	५६	१७	२३	१४	७	29	मी.१८।४९	७	१२	३९	४३	४६	१३	५७	२५	३८	महानंदा नवमी, कल्पादि ९
९	गु	१०	२९	३०	१८	४५	उभा	३९	३८	२२	४८	सि	४८	२५	२६	१९	तै	२	२८	७	५६	२६	४	६	५७	१७	२२	१५	८	30	मीन	७	१३	४०	२९	४६	१४	३०	२६	४२	भ.२९।३० से, पश्चिमोदयं शुक्रः ९।१०
१०	शु	११	२३	९	१६	१४	रे	३४	५९	२०	५७	व्य	४०	५	२३	०	वि	२३	९	१६	१४	२६	२	६	५८	१७	२२	१६	९	दिसं 1	मे.२०।५७	७	१४	४१	१५	४८	१५	७	२७	४८	भ.१६।१४ तक, पंचक २०।५७ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत सबका, D
११	श	१२	१६	२८	१३	३४	अ	३०	२	१८	५९	वरि	३१	३३	१९	३६	बा	१६	२८	१३	३४	२६	०	६	५९	१७	२२	१७	१०	2	मेष	७	१५	४२	३	४९	१५	४९	२८	५७	अखण्ड द्वादशी, व्यंजन द्वादशी, शनि प्रदोष व्रत, ज्येष्ठ में सूर्य E
१२	र	१३	९	४३	१०	५२	भ	२५	६	१७	२	प	२३	१	१६	१२	तै	९	४३	१०	५२	२५	५८	६	५९	१७	२२	१८	११	3	वृ.२२।३३	७	१६	४२	५२	५०	१६	३७	३०	७	गुरुग्रन्थ साहिब वार्षिकोत्सव, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस, F
१३	चं	१४	३	१३	८	१७	कृ	२०	३१	१५	१३	शि	१४	४५	१२	५४	व	३	१३	८	१७	२५	५६	७	०	१७	२२	१९	१२	4	वृष	७	१७	४३	४२	५०	१७	३२	७	१७	भ. ८।१७ से १९।७ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत-पुण्यं च, श्री दत्तात्रेय ज., H
०	चं	१५	५७	२१	२९	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथि क्षयः

पश्चिमोदयं शुक्रः ३० नवं.

H षोडशी त्रिपुर सुन्दरी जयं., अन्नपूर्णा ज., भारतीय नौसेना दिवस

B (बंगाल), श्री राम कलेवा, विशाखा में बुध ८।३८, अनुराधा २ में गुरु २९।१० C वृश्चिके भौमः ११।४६ D श्री गीता ज., मौनी ११ जैन, दिसंबर मास १२ ता. ३१ प्रा., विश्व एड्स दिवस, व्यतिपात पुण्यम्

E २८।२२, अनुराधा में मंगल १३।५९ F विकलांग दिवस, वृश्चिके बुधः ३०।४१, पिशाचमोचन श्राद्ध

मार्ग. शु. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१०	७	६	७	७	४	१०	४	१०	९	८
११	८	०	२२	६	१९	१	२७	२७	१६	२३	१
३८	८	१७	५	५३	२६	३	३०	३०	५२	१९	४९
५८	२८	०	२३	३१	६	१८	५०	५०	५३	३०	२६
६०	[illegible]	४१	७२	१३	७५	०	३	३	०	१	२
४५	४९	५८	१५	२१	२०	५१	११	११	२५	०	८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	अ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

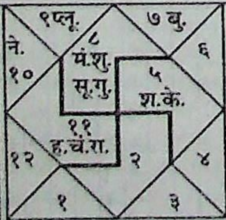

[पक्ष फलम्]

ग्रह योग एवं नक्षत्र संचार अंशादि योगानुसार इस माह में, पक्ष में भूकंप तथा युद्ध का योग पश्चिमी देशों में बनता है। क्षत्रियों में (सेनाओं में) परस्पर विरोध हो। शुक्रोदय के कारण बहुत वर्षा हो, धान्य कम होने से दुर्भिक्ष योग बनता है। वृश्चिक में वृहस्पति के उदय होने से दुर्भिक्ष योग तथा विदेशों में धान्य का आयात निर्यात का व्यापार बढ़ेगा। अनुराधा में गुरु उदय होने से मांगलिक कार्य यज्ञादि में जनता हिस्सा ज्यादा लेगी। मन्दी व तेजी के साथ धान्य कहीं ज्यादा पैदा होगा तो कहीं अकाल ही रहेगा। "एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥" के अनुसार समय विश्व में अशुभ रहेगा। राज विग्रह के काफी अवसर बनेंगे। भूटान में विशेष परिवर्तन का योग गुरु ग्रह के कारण बनेगा। "वृश्चिक गत जब सूर्य हो ऊन वस्त्र समभाव। लाल द्रव्य मन्दे मिले तो खरीद कर लाव॥ छटे महिने लाल हो बेचो जब हो तेज। तेज वस्तु लेना नहीं रखना यही परहेज॥ कृष्ण चतुर्दशी स्वाती होने से वर्षा का अभाव। सोमवारी अमावस्या होना सुभिक्ष करे बचाव॥ विशाखा अमावस्या दुर्भिक्ष योग। ज्योतिष का आधार छल कपट मय संयोग॥" पूर्णिमा को मृगशिरा का अभाव महंगाई को बढ़ावा मिलेगा। पीड़ादायक पक्ष है। व्यापार (तेजी-मंदी)- ग्रहयोगानुसार खाण्ड (शक्कर), गुड़ में तेजी। रुई, चांदी, सूत, तिल, तेल में मंदा, सोना, अरहर, सरसों, चिरायता में तेजी। लाल रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी यथा लाल मिर्च, चाय, ईंट भट्टा, लाल सिंगोड़ा आदि में तेजी रहेगी। घास, तृण, ग्वार, जीरा, मूंग, मोठ के भाव सम रहेंगे। आकाश लक्षण-पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात, मैदानी भागों में ओलावृष्टि, शीतलहर से जन जीवन प्रभावित होगा। उत्तर भारत में तेज सर्दी का अहसास होगा। कशमीर में भूस्खलन का योग बनेगा। शकुन विचार- 1.यदि मंगसिर सुदी अष्टमी को वर्षा हो शुभचार। श्रावण में अच्छी वर्षा होवे मंगलाचार॥ 2. मंगसिर बदी त्रयोदशी के दिन गिरे बर्फ की कहर। बढ़े धान्य धन सम्पदा मंगलमय हो प्रहर॥ मंगसिर पूनम निर्मला अथवा ग्रहण मयंक। लाभ मिले आगे करो, संग्रह अनाज निशंक॥ मंगसिर नौमी रेवती बुधवारी दुर्भिक्ष। गुरुवारी पंचमी पांचों मास सुभिक्ष॥ मावठ मंगसिर मास हो शुक्ल पक्ष शुभ। श्रावण भी अच्छा बरसै अन्न भाव सब सम॥

ता. ४ दिसं. ❖ मार्ग. शु. १४ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

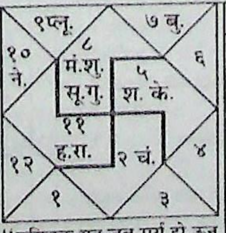

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१	७	६	७	७	४	१०	४	१०	९	८
१७	४	४	२९	८	२६	१	२७	२७	१६	२३	२
४३	१०	२९	५५	१३	५८	६	११	११	५६	२६	२
४२	०	२६	४९	२१	१	४४	४५	४५	११	०	१९
६०	[illegible]	४२	८४	१३	७५	०	३	३	०	१	२
५०	३२	१३	४५	१५	१९	११	११	११	४३	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	अ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष कृष्ण पक्ष-१८

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. ५ से २० दिसं. सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २९ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि
१४	म	१	५२	२९	२८	०	रो	१६	४०	१३	४१	सिद्ध	७	३	९	५०	बा	२४	४५	१६	५५
१५	बु	२	४८	५९	२६	३६	मृ	१३	५७	१२	३६	सा	०/५४	१४/३४	७/२८	७/५९	तै	२०	३१	१५	१४
१६	गु	३	४७	१३	२५	५५	आ	१२	४३	१२	८	शु	५०	१५	२७	८	व	१७	५१	१४	११
१७	शु	४	४७	२३	२६	०	पुन	१३	१६	१२	२२	ब	४७	२६	२६	१	ब	१७	२	१३	५२
१८	श	५	४९	३४	२६	५३	पु	१५	४५	१३	२२	ऐं	४६	१०	२५	३२	कौ	१८	१२	१४	२१
१९	र	६	५३	३८	२८	३२	श्ले	२०	८	१५	८	वै	४६	२०	२५	३७	ग	२१	२२	१५	३७
२०	चं	७	५९	२३	३०	४६	म	२६	१०	१७	३३	वि	४७	४१	२६	९	वि	२६	१५	१७	३५
२१	मं	८	६०	०	-	-	पूफा	३३	२३	२०	२७	प्री	४९	४८	२७	१	बा	३२	२४	२०	३
२२	बु	८	५	४४	९	२४	उफा	४१	११	२३	३५	आयु	५२	१५	२८	०	कौ	५	४४	९	२४
२३	गु	९	१२	३३	१२	८	ह	४८	५२	२६	४०	सौ	५४	३१	२८	५६	ग	१२	३३	१२	८
२४	शु	१०	१८	५६	१४	४२	चि	५५	५१	२९	२८	शो	५६	१२	२९	३६	वि	१८	५६	१४	४२
२५	श	११	२४	१९	१६	५२	स्वा	६०	०	-	-	अति	५६	५६	२९	५५	बा	२४	१९	१६	५२
२६	र	१२	२८	१७	१८	२८	स्वा	१	३६	७	४७	सु	५६	३२	२९	४६	तै	२८	१७	१८	२८
२७	चं	१३	३०	४१	१९	२६	वि	५	५६	९	३२	धृ	५४	५५	२९	८	व	३०	४१	१९	२६
२८	मं	१४	३१	३१	१९	४६	अनु	८	४३	१०	३९	शू	५२	८	२८	१	वि	१	१७	७	४१
२९	बु	३०	३०	५४	१९	३२	ज्ये	१०	४	११	१२	गं	४८	१७	२६	२९	च	१	२२	७	४३

रा.मि.	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.	विवरण
१४	२५	५४	७	१	१७	२३	२०	१३	5	मि.२५।५	७	१८	४४	३२	६०/५२	१८	३२	८	२२	पूर्वोदयं गुरोः २६।४२
१५	२५	५३	७	२	१७	२३	२१	१४	6	मिथुन	७	१९	४५	२४	५३	१९	३६	९	११	मूले धनुषी शुक्रः १५।३०, अनुराधा में बुध १४।४८, वक्री शनिः २२।३४
१६	२५	५१	७	२	१७	२३	२२	१५	7	क.३०।१४	७	२०	४६	१७	५४	२०	३९	१०	८	भ. १४।११ से २५।५५ तक, भारतीय झण्डा दिवस
१७	२५	५०	७	३	१७	२३	२३	१६	8	कर्क	७	२१	४७	११	५६	२१	४०	१०	४९	कृष्ण चतुर्थी व्रत, गुरु बाल्यत्व पूर्ण २६।४२
१८	२५	४८	७	४	१७	२३	२४	१७	9	कर्क	७	२२	४८	७	५६	२२	३७	११	२४	
१९	२५	४७	७	४	१७	२३	२५	१८	10	सिं.१५।८	७	२३	४९	३	५८	२३	३१	११	५५	भ.२८।३२ से. मानवाधिकार दिवस — **पूर्वोदयं गुरोः ५ दिसं.**
२०	२५	४६	७	५	१७	२४	२६	१९	11	सिंह	७	२४	५०	१	५९	२४	०	१२	२२	भ. १७।३५ तक
२१	२५	४५	७	६	१७	२४	२७	२०	12	कं.२७।१३	७	२५	५१	०	५९	२४	२४	१२	४८	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, अनुराधा ३ में गुरु ७।२७, पूर्वास्तं बुधः१६।२
२२	२५	४४	७	६	१७	२४	२८	२१	13	कन्या	७	२६	५१	५९	६१/१	२५	१५	१३	१४	पू.भा.२ में राहु व.पू.फा ४ में केतु २८।५९
२३	२५	४३	७	७	१७	२४	२९	२२	14	कन्या	७	२७	५३	०	२	२६	७	१३	४१	भ. २५।२५ से,
२४	२५	४३	७	८	१७	२५	३०	२३	15	तु.१६।१७	७	२८	५४	२	३	२७	०	१४	११	भ.१४।४२ तक,सरदार पटेल पुण्य दिवस,ज्येष्ठा में बुध १३।१८
२५	२५	४२	७	८	१७	२५	पौष १	२४	16	तुला	७	२९	५५	५	४	२७	५७	१४	४५	सफला एका. व्रत सबका, पार्श्वनाथ जन्म व श्री चन्द्रप्रभु जन्म-तप D
२६	२५	४१	७	९	१७	२५	२	२५	17	वृश्चि.२७।२	८	०	५६	९	५	२८	५६	१५	२४	स्वरूप द्वादशी व्रत
२७	२५	४१	७	९	१७	२६	३	२६	18	वृश्चिक	८	१	५७	१४	५	२९	५७	१६	१०	भ. १९।२६ से, सोम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री व्रत
२८	२५	४१	७	१०	१७	२६	४	२७	19	वृश्चिक	८	२	५८	१९	६	३०	५८	१७	५	भ. ७।४१ तक
२९	२५	४०	७	११	१७	२७	५	२८	20	ध.११।१२	८	३	५९	२५	७	७	५६	१८	६	देवपितृकार्याऽमावस्या, वकुला अमावस्या (उड़ीसा)

D जैन, सौर पौष मासारंभ, मूल धनु में सूर्य ७।२६, संक्रांति मु. १५ बैठी, पुण्यकाल १३।५० तक, मलमासारंभ, पू.षा. में शुक्र ३०।२७, पूर्वोदयं भौमः १०।४४

पौष कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १२ दिसं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	४	७	७	७	८	४	१०	४	१०	९	८
२५	१९	१०	११	९	७	१	२६	२६	१७	२३	२
५१	१६	८	३८	५८	०	५	४६	४६	३	३६	१९
०	५	२८	८	५६	३०	३	१८	१८	२५	२०	५४
६०	७९०	४२	९०	१३	७५	०	३	३	१	१	२
५९	३०	३५	२४	६	१८	४२	११	११	७	२५	१३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
ज्येष्ठा ३	पू.फा. २	अनु. ३	अनु. ३	अनु. २	मूल ३	मघा १	पू.भा. ३	उ.फा. १	धनि. ४	धनि. १	मूल १

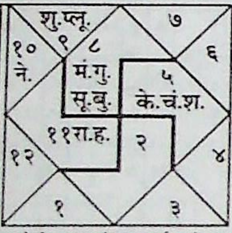

[पक्ष फलम्]

ग्रह गति एंव नक्षत्र योगानुसार अग्नि भय बढ़ेगा। चोरों का भी आतंक रहेगा। प्रधान वैद्य (डॉक्टर) पीड़ित होंगे। अनावृष्टि का योग। वृश्चिक का मंगल सन्देहात्मक चिन्ता भी करायेगा। राजनीति में परिवर्तन चुनाव जैसा वातावरण बनेगा। नया रोगोत्पन्न से जन-धन दोनों ही पीड़ित होंगे। शुक्र मूल में, शनि वक्री, भौमोदय पूर्व, पूर्व में बुधास्त ऐसे योगों के कारण अति दुःखदायी घटनाएं विश्व में घटेंगी जो ऐतिहासिक होंगी। पौष कृष्ण १० दशमी शुक्रवार को धनु संक्रांति का प्रभाव चौथे प्रहर व्यापिनी सौख्यदायी होगी। कुमारी अवस्था में १५ मुहूर्ती संक्रांति महंगाई की कारक होगी। शुक्रोदय पश्चिम में होने से श्रृंगार जन्य सामग्री में तेजी आयेगी। गुरु, मंगल, सूर्य एवं बुध चार ग्रहों की युक्ति अशुभ फलदायी है। **जबहि बुध वृहस्पति मिल बैठे इक गेह। तब तक ही संसार में बरसे ना ही मेह॥** तथा शीत लहर का प्रभाव चलता रहेगा। **चार पांच ग्रहों का बने एक राशि पर योग। वर्षा अथवा युद्ध से दुःख पावे सब लोग॥** कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष में घट जाय। होय दुर्भिक्ष अकाल दुःख महंगाई बढ़ जाय। **एक राशि पर होय जब बुध शुक्र सूर। वर्षा की कमी करे, तेजी हो भरपूर॥** विश्व व्यापार में अभी सूचकांक तेजी का होगा। ईशान तथा वायव्य कोण में उपद्रव बढ़ेगा। जर्मनी, जापान, और झंझीरा में प्राकृतिक आपदा बढ़ेगी। **व्यापार (तेजी मन्दी)**- सरसों, मैथी, चना, चावल, जौ, उड़द, मक्का, ज्वार, ग्वार, काकड़ा, पशु आहार, तेलवाना, खाण्ड (शक्कर), टिम्बर, पत्थर, केमिकल, किराना, मिर्च मसाला, जीरा, नारियल में तेजी का रुख रहेगा। उड़द, बिनौला, कपास, सूत, सोना, चांदी मन्दी की ओर बढ़ेंगे। शेष सम भाव। **आकाश लक्षण**- अल्मोड़ा, सोनाल, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, बंगाल, चेरापूंजी, भरतपुर, गोआ, गुजरात में प्राकृतिक प्रकोप की घटना का योग बनता है। तथा विचित्र आकाशमण्डलीय साक्ष्य घटना देखकर खगोल का आनंद प्राप्त कर सकेंगे। शीत लहर से काफी जन मृत्यु को प्यारे होंगे। **शकुन विचार**- पौष कृष्ण २,५,७,९,११,१३,३० को बादल बिजली अंधड़ तूफान हो तो दो माह बाद तिलहन, शक्कर, चीनी, सोना, चांदी महंगे। फल

ता. २० दिसं. ❖ पौष कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

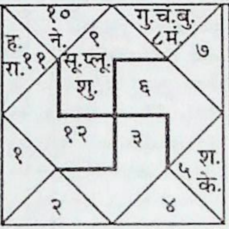

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	७	७	७	७	८	४	१०	४	१०	९	८
३	२६	१५	२३	११	१७	०	२६	२६	१७	२३	२
५९	५१	५०	४९	४२	२	५६	२०	२०	१३	४८	३७
२५	४८	२३	१८	५७	५६	१५	५२	५२	४८	२७	४२
६१	७१४	४२	९२	१२	७५	१	३	३	१	१	२
७	४६	५७	२६	५१	१८	३६	११	११	३१	३८	१४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
मूल १	ज्येष्ठा ४	अनु. ४	ज्येष्ठा ३	अनु. ३	पू.षा. १	मघा १	पू.भा. १	उ.फा. ४	धनि. ४	धनि. १	मूल १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

आर्यभट्ट पंचांगम् … श्री सं. २०६३ … दिन … स्टैं.टा. … दिनांक … चन्द्र राशि … रवि स्पष्ट … चन्द्रोदयास्त … ता.२१ दिसं. २००६ ई. से ३ जन. सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ३० मार्ग. से १३

चना, चावल, जौ, उड़द, मक्का, ज्वार, ग्वार, काकड़ा, पशु आहार, तेलवाला, खाण्ड (शक्कर), टिम्बर, पत्थर, केमिकल, किराना, मिर्च मसाला, जीरा, नारियल में तेजी का रुख रहेगा। उड़द, बिनौला, कपास, सूत, सोना, चांदी मन्दी की ओर बढ़ेंगे। शेष सम भाव। आकाश लक्षण- अल्मोड़ा, सौनाल, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, बंगाल, चरापूंजी, भरतपुर, गोआ, गुजरात में प्राकृतिक प्रकोप की घटना का योग बनता है। तथा विचित्र आकाशमण्डलीय साक्ष्य घटना देखकर खगोल का आनंद प्राप्त कर सकेंगे। शीत लहर से काफी जन मृत्यु को प्यारे होंगे। शकुन विचार- पौष कृष्ण २,५,७,९,११,१३,३० को बादल बिजली अंधड़ तूफान हो तो दो माह बाद तिलहन, शक्कर, चीनी, सोना, चांदी महंगे। फल

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

पौष शुक्ल पक्ष-१९

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता.२१ दिसं. २००६ ई. से ३ जन. सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ३० मार्ग. से १३ पौष तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वा	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
३०	गु	१	२९	५	१८	४९	मू	१०	१०	११	१५	वृ	४३	३३	२४	३६	किं	०	७	७	१४
पौष १	शु	२	२६	१९	१७	४३	पूषा	९	१५	१०	५४	धु	३८	७	२२	२६	कौ	२६	१९	१७	४३
२	श	३	२२	५०	१६	२०	उषा	७	३४	१०	१४	व्या	३२	९	२०	४	ग	२२	५०	१६	२०
३	र	४	१८	५०	१३	४५	श्र	५	२०	९	२०	ह	२५	४९	१७	३२	वि	१८	५०	१४	४५
४	चं	५	१४	३०	१३	१	ध	२ / ५९	४३ / ५२	८ / ३२	१८ / १०	व	१९	१३	१४	५४	बा	१४	३०	१३	१
५	मं	६	९	५५	११	११	पूभा	५६	५०	२९	५७	सि	१२	२६	१२	१२	तै	९	५५	११	११
६	बु	७	५	९	९	१८	उभा	५३	३८	२८	४१	व्य	५ / ५८	३० / २९	९ / ३०	२५ / ३८	व	५	९	९	१८
७	गु	८	०	१६	७	२०	रे	५०	२१	२७	२३	प	५१	२२	२७	४७	ब	०	१६	७	२०
०	गु	९	५५	१७	२९	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	शु	१०	५०	१६	२७	२१	अ	४७	२	२६	३	शि	४४	१४	२४	५६	तै	२२	४६	१६	२१
९	श	११	४५	१९	२५	२३	भ	४३	४७	२४	४६	सिद्ध	३७	९	२२	६	व	१७	४६	१४	२१
१०	र	१२	४०	३९	२३	३१	कृ	४०	४७	२३	३४	सा	३०	१४	१९	२१	ब	१२	५६	१२	२६
११	चं	१३	३६	२६	२१	५०	रो	३८	१५	२२	३३	शुभ	२३	४१	१६	४४	कौ	८	२८	१०	३८
१२	मं	१४	३२	५९	२०	२७	मृ	३६	२७	२१	५१	शु	१७	३९	१४	१९	ग	४	३६	९	६
१३	बु	१५	३०	३३	१९	२९	आ	३५	४२	२१	३३	ब्र	१२	२३	१२	१३	वि	१	३७	७	५५

रा.मि.	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
३०	२५	४०	७	११	१७	२७	६	२९	21	धनु	८	५	०	३२	८	८	५०	१९	११	सायन मकर में सूर्य २९।५४, ने रवि उत्तरायण प्रा., शिशिर ऋतु प्रा., A
पौष १	२५	४०	७	१२	१७	२८	७	३०	22	म.१६।४५	८	६	१	४०	७	९	३६	२०	१८	चन्द्रदर्शन मु.४५ समर्घता, राष्ट्रीय पौष प्रा. A ज्येष्ठा में मंगल ९।१४
२	२५	४०	७	१२	१७	२८	८	पौष १	23	मकर	८	७	२	४७	८	१०	१७	२१	२४	भ.२७।३३ से, जिल्हेज मु.मा. १२ प्रा., स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान B
३	२५	४१	७	१३	१७	२९	९	२	24	कुं.२०।५०	८	८	३	५५	८	१०	५४	२२	२९	भ. १४।४५ तक, पंचक २०।५० से, विनायक ४ व्रत
४	२५	४१	७	१३	१७	२९	१०	३	25	कुंभ	८	९	५	३	९	११	२७	२३	३२	क्रिसमस डे (बड़ा दिन), ईसा ज., पं. मदनमोहन मालवीय जन्म दि.
५	२५	४१	७	१३	१७	३०	११	४	26	मी.२४।१६	८	१०	६	१२	८	११	५९	२४	०	मेला जोड़ फतेहगढ़ साहेब (पंजाब) D पू.षा. में सूर्य ९।३५
६	२५	४२	७	१४	१७	३१	१२	५	27	मीन	८	११	७	२०	८	१२	३२	२४	३५	भ. ९।१८ से, २०।१९ तक, गुरुगोविन्द सिंह ज. (प्रा.मत से), C
७	२५	४२	७	१४	१७	३१	१३	६	28	मे.२७।२३	८	१२	८	२८	८	१३	६	२५	३९	पंचक २७।२३ तक
०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथि क्षयः
८	२५	४३	७	१५	१७	३२	१४	७	29	मेष	८	१३	९	३६	९	१३	४४	२६	४५	शाम्ब दशमी (उड़ीसा), श्री जिनानन्द सागर पुण्य दि. जैन, D
९	२५	४४	७	१५	१७	३२	१५	८	30	वृ.३०।२७	८	१४	१०	४५	८	१४	२८	२७	५२	भ.१४।२१ से २५।२३ तक, पवित्रा (पुत्रदा) एकादशी व्रत सबका, E
१०	२५	४५	७	१५	१७	३३	१६	९	31	वृष	८	१५	११	५३	७	१५	१९	२९	०	हज्ज (मु.), न्यू इयर इवनिंग डे (ईस्वी नववर्ष की पूर्व संध्या का पर्व)
११	२५	४६	७	१५	१७	३४	१७	१०	जन 1	वृष	८	१६	१३	०	८	१६	१६	३०	६	सोम प्रदोष व्रत, जनवरी मास १ ता. ३१ सन् २००७ ई. प्रा., ईद F
१२	२५	४७	७	१६	१७	३४	१८	११	2	मि.१०।९	८	१७	१४	८	८	१७	१९	३१	६	भ. २०।२७ से, F उल जुहा बकरीद (मु.). पू.षा. में बुध १७।१९
१३	२५	४८	७	१६	१७	३५	१९	१२	3	मिथुन	८	१८	१५	१६	८	१८	२२	७	५८	भ. ७।५५ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, शाकंभरी जयंती, G
																				G माघस्नानारंभ, गंगा सागर यात्रा, पौषी पूर्णिमा

B दिवस, यतीन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य दिवस व त्रिस्तुति जैन, मूले धनुषी बुधः २९।२६, किसान दि. C श्री दुर्गाष्टमी, श्री राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य जैन, व्यतिपात पुण्यम्, अनुराधा ४ में गुरु २०।४२, उ.षा. में शुक्र २१।२९
E मन्वादि ११, वैकुण्ठ ११ (द.भा.), मकरे शुक्रः १३।१८

पौष शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ दिसंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	११	७	८	७	८	४	१०	४	१०	९	८
१२	१७	२१	६	१३	२७	०	२५	२५	१७	२४	२
८	७	३५	१४	२४	५	४०	५५	५५	२७	२	५५
२८	५४	२	३९	३६	७	३३	२५	२५	१२	९	२८
६१	८०८	४३	९४	१२	७५	२	३	३	१	१	२
८	१४	१६	१२	३०	१४	२५	११	११	५३	४९	१२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	२	३	३	४	४	२	३	४	४	२	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

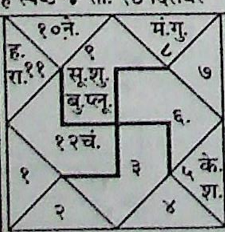

[पक्ष फलम्]

इस माह में पांच मंगलवार होना किसी बड़े व्यक्ति का देहावसान यानि शासन कर्त्ता का अभाव होगा। "यत्र मासे मही सूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत॥ वार मंगल पांच आवें ऐसा करो विचार। अग्नि वायु से आपदा जन धन क्षति अपार॥" छत्र भंग के योग में देहावसान मंत्री योग। भगवान ही करे रक्षा बोले सब लोग॥ इन योगों से राजनैतिक उथल पुथल भी होने का योग बनता है। मध्यावधि चुनाव का अवसर-भारत, फ्रांस, ब्रिटेन, तमिलनाडु, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश आदि में प्रभावित होता है। पांच बुधवार होने से रसवाली वस्तुओं का अभाव हो। सोना, चांदी का भाव तेज हो। "बुधस्य पंचावाराःस्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥" के अनुसार पृथ्वी पर सुभिक्ष होगा। खाद्य सामग्री वनौषधियां, फल, सब्जियों की पैदावार अधिक होगी। कल कारखानों में उत्पादन बढ़ेगा। चालू मार्किट का सन्तुलन बना रहेगा। मैत्री भाव वातावरण के साथ ईराक- ईरान विवाद बढ़ने का योग बनता है। मंगल के योग से राष्ट्रीय ध्वज झुकने का योग बनता है। सत्तारूढ़ (शासन कर्त्ता) को पदच्युत योग भी बनता है। अशांति जन्य योग बनेगा। व्यापार (तेजी मंदी)- सभी वस्तुओं में मन्दी एकाएक आयेगी। फिर तेजी के झटके से कइयों को हानि तो कइयों को लाभ होगा। चावल, स्टेशनरी, दवाईयां, कत्था, पान, सुपारी, लोहा, शृंगार प्रसाधन, डीजल, पेट्रोल में तेजी आयेगी। कृष्णा प्रतिपदा रोहिणी होने से धान्य के भावों में तेजी आयेगी। राजनैतिक घटनाओं में अशोभनीय एवं शोकाकुल वातावरण रहेगा। कीटाणु धान्य क्षय करेंगे। आकाश लक्षण- शीत लहर का प्रकोप यत्र-तत्र प्रभावी रहेगा। पर्वतीय भागों में हिमपात, मैदानी भागों में बादल-चाल, कहीं ओलावृष्टि, घना कोहरा, कहीं शीत लहर के साथ अल्प वर्षा योग भी है। पूर्वोत्तर अन्य देशों में प्राकृतिक आपदा के योग से अति वृष्टि या बम विस्फोट की घटना घटेगी। शकुन विचार- पौष सुदी चौदस को बिजली चमके तो आगे आषाढ़ में अच्छी वर्षा हो। दशमी बदी पौष बरसे तो भाद्रपद मास सजल सरसे॥ पौष शुक्ला पंचम पूनम को बादल गाज। दो माह बाद तेज सोना, चांदी ये है ज्योतिष का आधार॥

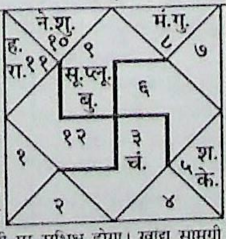

ता. ३ जन. ❖ पौष शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	२	७	८	७	९	४	१०	४	१०	९	८
१८	१०	२५	१५	१४	४	०	२५	२५	१७	२४	३
१५	५९	५५	४४	३८	३६	२४	३६	३६	३९	१३	८
१६	२७	१४	१०	५०	२१	३६	२०	२०	७	२१	३५
६१	८०१	४३	९६	१२	७५	३	३	३	२	१	२
८	४७	३१	२	१०	९	०	११	११	७	५६	१०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
३	३	३	२	४	३	२	३	४	४	२	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ कृष्ण पक्ष-२०

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. ४ से १९ जन. सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २९ पौष तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	विवरण
१४	गु	१	[illegible]	२६	११	३	पुन	३६	१४	२१	४६	ऐं	८	५	१०	३०	कौ	२९	२६	११	३	२५	४९	७	१६	१७	३६	२०	१३	4	क.१५।३९	८	१९	१६	२४	८	१९	२५	८	४३	काशी दशाश्वमेध घाटे स्नानारंभ
१५	शु	२	२९	५३	११	१३	पु	३८	१७	२२	३५	वै	४	५६	९	२५	ग	२९	५३	११	१३	२५	५१	७	१६	१७	३७	२१	१४	5	कर्क	८	२०	१७	३२	८	२०	२४	९	२०	D आदिनाथ निर्वाण काल्याणंक जैन, श्रवण में बुध २३।९, धनिष्ठा F
१६	श	३	३२	०	२०	४	श्ले	४१	५८	२४	४	वि	३	२	८	२९	व	०	४३	७	३४	२५	५२	७	१६	१७	३७	२२	१५	6	सिं.२४।४	८	२१	१८	४०	८	२१	२०	९	५३	भ. ७।३४ से २०।४ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकष्ट ४, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
१७	र	४	३५	४८	२१	३६	म	४७	१४	२६	१०	प्री	२	२६	८	२५	ब	३	४२	८	४५	२५	५४	७	१७	१७	३८	२३	१६	7	सिंह	८	२२	१९	४८	८	२२	१४	१०	२१	श्रवण में शुक्र १२।५२ A श्लेषा ४ कर्के वक्री शनिः१८।३
१८	चं	५	४१	३	२३	४२	पूफा	५३	४९	२८	४८	आयु	३	२	८	२९	कौ	८	१६	१०	३५	२५	५५	७	१७	१७	३९	२४	१७	8	सिंह	८	२३	२०	५६	८	२३	६	१०	४८	मूले धनुषी भौमः २०।१२, मूल २ में प्लूटो १३।१४
१९	मं	६	४७	२२	२६	१४	उफा	६०	०	-	-	सौ	४	३६	९	७	ग	१४	७	१२	५५	२५	५७	७	१७	१७	४०	२५	१८	9	कं.११।३२	८	२४	२२	४	९	२३	५७	११	१४	भ. २६।१४ से, उ.षा. में बुध २३।३३ F में शुक्र २८।४०
२०	बु	७	५४	८	२८	५६	उफा	१	११	७	४८	शो	६	४९	१०	०	वि	२०	४७	१५	३४	२५	५९	७	१७	१७	४०	२६	१९	10	कन्या	८	२५	२३	१३	८	२४	०	११	४१	भ. १५।३४ तक, स्वामी विवेकानन्द ज., श्री रामानन्दाचार्य ज., A
२१	गु	८	६०	०	-	-	ह	९	६	१०	५५	अति	९	१३	१०	५८	बा	२७	२९	१८	१६	२६	१	७	१७	१७	४१	२७	२०	11	तु.२४।२७	८	२६	२४	२१	८	२४	५०	१२	९	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, मकरे बुधः २४।३, उ.षा. में सूर्य B
२२	शु	८	०	४१	७	३३	चि	१६	३३	१३	५४	सु	११	२१	११	४९	कौ	०	४१	७	३३	२६	३	७	१७	१७	४२	२८	२१	12	तुला	८	२७	२५	२९	८	२५	४४	१२	४१	B ११।३९, श्री लालबहादुर शास्त्री पुण्य दि.
२३	श	९	६	२१	९	४९	स्वा	२३	१	१७	२९	धृ	१२	४६	१२	२३	ग	६	२१	९	४९	२६	५	७	१७	१७	४३	२९	२२	13	तुला	८	२८	२६	३७	८	२६	४१	१३	१७	भ.२२।४० से, लोहड़ी उत्सव (पं. हरि. हिमा.), ज्येष्ठा १ में गुरु १०।२
२४	र	१०	१०	३७	११	३१	वि	२८	३	१८	३०	शू	१३	५	१२	३१	वि	१०	३७	११	३१	२६	७	७	१७	१७	४४	माघ १	२३	14	वृश्चि.१२।४	८	२९	२७	४५	८	२७	४१	१४	०	भ. ११।३१ तक, सौर माघ प्रा., मकर में सूर्य १८।१०, संक्रांति C
२५	चं	११	१३	७	१२	३१	अनु	३१	२१	१९	४९	गं	१२	५	१२	७	बा	१३	७	१२	३१	२६	९	७	१७	१७	४४	२	२४	15	वृश्चिक	९	०	२८	५३	८	२८	४२	१४	५१	षट्तिला एकादशी व्रत सबका, भारतीय थल सेना दिवस
२६	मं	१२	१३	४५	१२	४६	ज्ये	३२	५१	२०	२५	वृ	९	३९	११	८	तै	१३	४५	१२	४६	२६	१२	७	१७	१७	४५	३	२५	16	ध.२०।२५	९	१	३०	१	७	२९	४२	१५	४९	भौम प्रदोष व्रत, श्री शीतलनाथ जन्म-तप जैन G हरिद्वार व प्रयाग
२७	बु	१३	१२	३४	१२	१८	मूल	३२	३९	२०	२०	ध्रु	५	४८	९	३६	व	१२	३४	१२	१८	२६	१४	७	१६	१७	४६	४	२६	17	धनु	९	२	३१	८	७	३०	३९	१६	५४	भ.१२।१८ से २३।४५ तक, मेरु त्रयोदशी जैन, मास शिवरात्री व्रत, D
२८	गु	१४	९	४७	११	११	पूषा	३०	५९	१९	४०	व्या	० / ५८	४१ / २९	७ / २९	३३ / ४	श	९	४७	११	११	२६	१७	७	१६	१७	४७	५	२७	18	म.२५।२५	९	३	३२	१५	७	७	२९	१८	२	पितृकार्याऽमावस्या, रटन्ति कालिका पूजन, ऋषभदेव मोक्ष जैन
२९	शु	३०	५	४१	९	३२	उषा	२८	८	१८	३१	व	४७	२७	२६	१५	ना	५	४१	९	३२	२६	१९	७	१६	१७	४८	६	२८	19	मकर	९	४	३३	२२	६	८	१४	१९	११	देवकार्याऽमावस्या, मौनी अमा., द्वापर युगादि ३०, विशाल मेला G

C मु. ४५ बैंठी, पुण्य काल ११।४६ से, मकर संक्रांति, माघ बिहु (असम), पोंगल पर्व (केरला), मलमास पूर्ति

माघ कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ जन.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	८	८	७	९	३	१०	४	१०	९	८
२६	२०	१	२८	१६	१४	२९	२५	२५	१७	२४	३
२४	३९	४४	४३	१४	३७	५८	१०	१०	५७	२९	२५
२१	२०	३१	१८	३३	२१	१७	५३	५३	१५	१८	३८
६१	[illegible]	४३	९९	११	७५	३	३	३	२	२	२
८	२	५१	१५	४०	५	४०	११	११	२७	४	५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

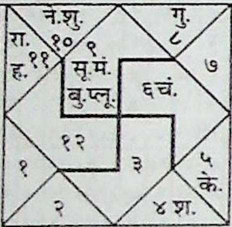

[पक्ष फलम्]

इस माह में पांच गुरुवार व पांच शुक्रवार आने से निम्नांकित योग बनता है। ''यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रह पश्चिमे देशे पीड़ा युद्धं च जायते॥'' के अनुसार देश के पश्चिमी देशों में जनता को कष्ट पीड़ा का योग बनेगा। संघर्ष मय वातावरण रहेगा। तथा ''शुक्रस्य पंचवाराश्च यत्र मासे निरन्तरम। प्रजा वृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥ यानि पांच शुक्रवार होने से जनसंख्या में वृद्धि, सर्वत्र सुकाल, सुख चैन का योग बनता है। परन्तु दैत्यगुरु, संग देव गुरु सम रूप संचार। ऐसा शुभाशुभ योग है देखो तेल की धार॥'' अर्थात् शुभाशुभ योग जो घटेंगे प्राकृतिक रूप से ग्राह्य करने होंगे। माघ कृष्ण दशमी रविवार दिनांक १४ जनवरी ०७ को मकर संक्रांति प्रवेश से जो कि वारात् ३ नक्षत्रात् २ वारनाम घोरा शूद्रान सुखदा बाल्यावस्था (बैठी) मु. ४५ प्रभाव से धान्य समभाव तथा शांति बनेगी। लेकिन रवि को संक्रमण सविता का मकर राशि प्रवेश। दुर्घटना अधिक घटे ज्योतिष का सन्देश॥ ग्रहयोगानुसार कर्ण पीड़ा रोग का प्रभाव बढ़ेगा। अन्न की उत्पत्ति अच्छी हो लेकिन कीटों की वृद्धि से फसलों में रोगादि बढ़ेगा। राज विग्रह के योग से यत्र तत्र अशुभ घटनाएं घटेंगी। **व्यापार (तेजी मन्दी)**- रसीले पदार्थ, तरल पदार्थ महंगे रहेंगे। किसमिस, चौपाये पशु, सोना, चांदी मन्दे। शेयर बाजार अनिश्चितता की ओर बढ़ेगा। गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, बारदाना, अलसी, गुड़ तथा किराना सामग्री तेज रहेगी। सुपारी, लौंग, इलायची के भावों में घटबढ़ चलेगी। शेष सम। **आकाश लक्षण**- इस माह में वर्षा का गर्भाधान योग है। ता. ७ को श्रवण में शुक्र चमक दमक तथा कोहरा जैसा योग करेगा। मौसम परिवर्तन जैसा वातावरण बनेगा। मकर के शुक्र योग से कोहरा, शीत लहर, ओला वृष्टि आदि योग बनेगा। बाल-वृद्धों को कष्टदायी योग भी है। हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, उत्तर प्रदेश, नेपाल, उत्तरांचल, भूटान, तिब्बत में हिमपात योग भी बनेगा। शकुन विचार- माघ अंधेरी सप्तमी मेह बिज्जु दमकन्त। आगे वर्ष श्रेष्ठ हो प्रजा जन हर्षन्त॥ माघ जो सातें बिजली आवें बादल होय। तो आषाढ़

ता. १९ जन. ❖ माघ कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

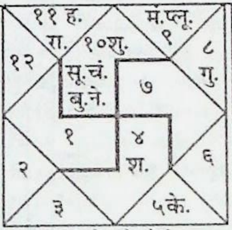

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	९	८	९	७	९	३	१०	४	१०	९	८
४	२	७	१२	१७	२४	२९	२४	२४	१८	२४	३
३३	२१	३६	८	४५	३७	२६	४५	४५	१७	४६	४१
२२	५२	२८	५९	४९	३६	५९	२७	२७	४५	१३	५५
६१	[illegible]	४४	[illegible]	११	७४	४	३	३	२	२	१
६	१४	११	११	४	५७	१२	११	११	४२	११	५८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आर्यभट्ट पंचांगम्

माघ शुक्ल पक्ष-२९ श्री सं. २०६३

ता. २० जन. से २ फर. सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ३० पौष से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अच्छी हो लेकिन कीटों की वृद्धि से फसलों में रोगादि बढ़ेगी। राज विग्रह के योग से यत्र तत्र अशुभ घटनाएं घटेंगी। व्यापार (तेजी मन्दी)- रसोल पदार्थ, [illegible]
अनिश्चितता की ओर बढ़ेगा। गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द [illegible] सम। आकाश लक्षण- इस माह में वर्षा का गर्भाधान योग है।
ता. ७ को श्रवण में शुक्र चमक दमक तथा कोहरा जैसा योग करेगा। मौसम परिवर्तन जैसा वातावरण बनेगा। मकर के शुक्र योग से कोहरा, शीत लहर, ओला वृष्टि आदि योग बनेगा। बाल-वृद्धों को कष्टदायी योग भी है। हिमाचल प्रदेश,
कश्मीर, उत्तर प्रदेश, नेपाल, उत्तरांचल, भूटान, तिब्बत में हिमपात योग भी बनेगा। शकुन विचार- माघ अंधेरी सप्तमी मेह बिज्जु दमकन्त। आगे वर्ष श्रेष्ठ हो प्रजा जन हर्षन्त॥ माघ जो सातें बिजली आवें बादल होय। तो आषाढ़

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ शुक्ल पक्ष-२१

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. २० जन. से २ फर. सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ३० पौष से १३ माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान मि	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः ५ घं. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
३०	श	१	०	[illegible]	७	३०	श्र	२४	२७	१७	३	सि	३१	५०	२३	१२	ब	०	३५	७	३०	२६	२२	७	१६	१७	४१	७	२९	20	कुं.२८।१३	९	५	३४	२८	६९/५	८	५३	२०	१८
०	श	२	५४	५०	२९	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
माघ १	र	३	४८	०५	२६	३६	ध	२०	१५	१५	२२	व्य	३१	५३	२०	१	तै	२१	५०	१५	५९	२६	२५	७	१६	१७	४९	८	मुहर्रम १	21	कुंभ	९	६	३५	३३	५	९	२८	२१	२४
२	चं	४	४२	३६	२४	१८	श	१५	५१	१३	३६	वरि	२३	४८	१६	४७	व	१५	४१	१३	३२	२६	२७	७	१५	१७	५०	९	२	22	मी.३०।१७	९	७	३६	३८	४	१०	१	२२	२८
३	मं	५	३६	३६	२१	५३	पूभा	११	३१	११	५१	परि	१५	४८	१३	३४	ब	९	३५	११	५	२६	३०	७	१५	१७	५१	१०	३	23	मीन	९	८	३७	४२	२	१०	३४	२३	३३
४	बु	६	३०	५६	१९	३७	उभा	७	२५	१०	१३	शि	८	०	१०	२७	कौ	३	४३	८	४४	२६	३३	७	१५	१७	५२	११	४	24	मीन	९	९	३८	४४	२	११	८	२४	०
५	गु	७	२५	४२	१७	३१	रे	३	४३	८	४४	सिद्ध	०/५७	३२/२८	७/२८	२७/३७	व	२५	४२	१७	३१	२६	३६	७	१४	१७	५३	१२	५	25	मे.८।४४	९	१०	३९	४६	१	११	४५	२४	३८
६	शु	८	२१	२	१५	३९	अ	०/५४	३१/५४	७/३०	२५/२७	शुभ	४६	५२	२५	५९	ब	२१	२	१५	३९	२६	३९	७	१४	१७	५४	१३	६	26	मेष	९	११	४०	४७	५०/५९	१२	२६	२५	४४
७	श	९	१६	५८	१४	१	कृ	५५	५६	२१	३६	शु	४०	४७	२२	३२	कौ	१६	५८	१४	१	२६	४२	७	१३	१७	५४	१४	७	27	वृ.१२।१०	९	१२	४१	४६	५८	१३	१४	२६	५१
८	र	१०	१३	३५	१२	३९	रो	५४	४१	२१	६	ब्र	३५	१६	२१	२०	ग	१३	३५	१२	३९	२६	४५	७	१३	१७	५५	१५	८	28	वृष	९	१३	४२	४४	५८	१४	८	२७	५७
९	चं	११	१०	५८	११	३६	मृ	५४	१५	२४	५५	ऐं	३०	२३	१९	२२	वि	१०	५८	११	३६	२६	४९	७	१३	१७	५६	१६	९	29	मि.१६।५८	९	१४	४३	४२	५६	१५	७	२८	५७
१०	मं	१२	९	१२	१०	५३	आ	५४	४५	२१	६	वै	२६	१३	१७	४१	बा	९	१२	१०	५३	२६	५२	७	१२	१७	५७	१७	१०	30	मिथुन	९	१५	४४	३८	५४	१६	९	२९	५१
११	बु	१३	८	२५	१०	३४	पुन	५६	१७	२१	४२	वि	२२	५०	१६	२०	तै	८	२५	१०	३४	२६	५५	७	१२	१७	५८	१८	११	31	क.२३।३१	९	१६	४५	३२	५४	१७	११	३०	३८
१२	गु	१४	८	४४	१०	४१	पु	५८	५८	३०	४६	प्री	२०	१९	१५	१९	व	८	४४	१०	४१	२६	५९	७	११	१७	५९	१९	१२	फर 1	कर्क	९	१७	४६	२६	५३	१८	१२	७	१७
१३	शु	१५	१०	१६	११	१७	श्ले	६०	०	-	-	आयु	१८	४५	१४	४१	ब	१०	१६	११	१७	२७	२	७	११	१७	५९	२०	१३	2	कर्क	९	१८	४७	१९	५१	१९	९	७	५१

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ, पंचक २८।१३ से. श्री वल्लभाचार्य ज. A
द्वितीया तिथि क्षयः B व्यतिपात पुण्यम, राष्ट्रीय माघ मासारंभ
मुहर्रम मु. मा. १ प्रा., हिजरी सन् १४२८ प्रा., गौरी तृतीया व्रत, B
भ. १३।३२ से २४।१८ तक, विनायक ४ व्रत, वरद ४, कुन्द ४, तिल चौथ
वसन्त (श्री) पंचमी, सरस्वती पूजन, रतिकामोत्सव, तक्षकपूजा, C
शीतला षष्ठी (बंगाल), श्रवण में सूर्य १३।५२, दारिद्र हरण ६
भ. १७।३१ से २८।३५ तक, पंचक ८।४४ तक, रथ सप्तमी, D
श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, भारतीय गणतंत्र दिवस ५८ वाँ वर्ष, E
A (द.भा.), सायन कुम्भ में सूर्य १६।३३, बाबा लाल दयाल जयंती
भ. २४।८ से, लाला लाजपतराय जयंती, शतभिषा में शुक्र २१।६, F
भ. ११।३६ तक, जया एकादशी व्रत सबका, भीष्म द्वादशी, भीष्म G
भौम प्रदोष व्रत, महात्मागांधी पुण्य दिवस, वेणेश्वर मेला प्रा. H
कल्पादि १३, गुरु हरिराय ज. (प्रा. मत से), मेला पंचखण्ड पीठ J
भ. १०।४१ से २२।५९ तक, श्री राम चरण स्नेही ज., सत्यव्रत, K
माघी पूर्णिमा पुण्यं, माघ स्नान पूर्ति, संत रविदास ज., श्री ललिता ज., L
L शतभिषा में बुध २५।७, दशाश्वमेध घाटे स्नान पूर्ति (काशी)

C नेताजी सुभाष बोस ज., कुंभे शुक्रः १२।४६ D आरोग्य ७, अचल ७, मन्वादि ७, चन्द्रभागा ७, धनिष्ठा में बुध १८।३७ E पू.षा. में मंगल २३।३८ F पश्चिमोदयं बुधः १४।२३ G तर्पण, कुंभे बुधः १८।१३
H (बाँसवाड़ा), मुहर्रम ताजिया (मु.) J विराट नगर (राज.), डेजर्ट उत्सव प्रा. ३ दिन का जैसलमेर, ज्येष्ठा २ में गुरु २३।४१ K पूर्णिमा व्रत, श्री जीनेन्द्र रथयात्रा जैन, मेला मस्तुआणा (पंजाब), फरवरी मा. २ ता. २८ प्रा.

माघ शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २६ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	०	८	९	७	१०	३	१०	४	१०	९	८
११	१२	१२	२४	११	३	२८	२४	२४	१८	२५	३
४०	११	४६	६	१	२१	५६	२३	२३	३७	१	५५
४७	१३	२७	२५	२१	५२	२३	११	११	२२	३७	२०
६०	[illegible]	४४	१०१	१०	७४	४	३	३	२	२	१
५९	१३	२५	२७	२५	४९	३४	११	११	५५	१४	५०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

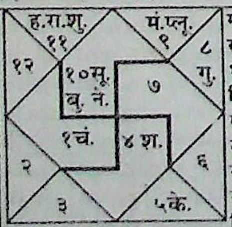

[पक्ष फलम्]

माघ शुक्ल शनिश्चरी चन्द्र दर्शन होय। नक्षत्र धनिष्ठा कुंभ नयी सूचना देय॥ माघ शुक्ल द्वितीया क्षय मोहरम मुस्लिम प्रारंभ। हिजरी १४२८ की प्रथम तिथि आरंभ॥ ग्रह गति इस पक्ष में धनु भौम विराजै। सूर्य बुध युक्ति से बुद्धिमान भी भाजै॥ अर्थात् विद्वानों का मान घटेगा। मूर्ख मण्डल महिमा मण्डित होगा। राज विग्रह योग में सन्देह व भ्रम पैदा होने से जीवन चक्र बदलने का योग बड़े बड़े राजनेताओं का बनेगा। मकर संक्रांति खर्पर योग से युक्त है। तथा रविवार होने से आंतकवाद का प्रभाव बढ़ेगा। शनि भौम षडाष्टक से रिपु वृद्धि हो जाय। शस्त्रों से लड़े नहीं ऐसा विद्रोह हो जाय॥

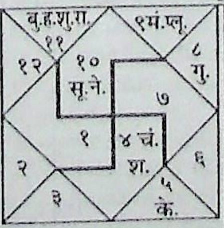

ता. २ फर. ❖ माघ शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	३	८	१०	७	१०	३	१०	४	१०	९	८
१८	१५	१७	५	२०	१२	२८	२४	२४	१८	२५	४
४७	५९	५८	२७	१२	४	२३	०	०	५८	१७	७
११	६	९	४३	१४	५३	४२	५५	५५	१९	२२	४९
६०	७२	४४	८८	९	७४	४	३	३	३	२	१
५९	२३	४०	८	४३	३६	४८	११	११	६	१६	४२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-		
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनाव पूर्ण रहेगी। समृद्ध देश छोटे-छोटे शान्ति प्रिय देशों पर प्रभुत्व जमाने के अधिकार की चेष्टा करेंगे। शुक्रोदय पश्चिमे होने से व्यापारिक क्षेत्र में हलचल मचेगी। किसी प्रभावी राष्ट्र नेता द्वारा पार्टी परिवर्तन अथवा नयी पार्टी का गठन का योग तथा दक्षिणी भारत में राष्ट्रपति द्वारा हस्तक्षेप करने का मामला भी शुक्र के कारण बनेगा। भारत सरकार को आस्तीन में छिपे सांप की तरह सावधान रहना चाहिए। छुट पुट वर्षा भी। व्यापार (तेजी मंदी)- चांदी, मोती, मूंग, मोठ, जीरा, मसूर, रसकस, बारदाना तथा सौंफ में तेजी। मक्का, गेहूं, जौ, सरसों में गिरावट का योग बनेगा। चन्द्र दर्शन के कारण तिलहन तथा तेलादि के भाव बढ़ेंगे। अरण्डी का तेल, गिलोय का सत बहुत तेज होगा। वस्त्र, सूत, कपास के भाव सम। आकाश लक्षण- माघ सुदी चौदस को ओला वर्षा से हानि का योग। राजस्थान, पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली क्षेत्रों में शीतोष्ण वातावरण के साथ वर्षा योग भी बनता है। दक्षिणी प्रान्तों में तूफान व तेज हवाओं के प्रकोप से जन धन हानि। मछुवारों को सावधान रहना चाहिए। शकुन विचार- द्वितीया तृतीया माघ बदी शुक्र शनैश्चरवार। तो पृथ्वी पर युद्ध से वहे रक्त की धार॥ माघ उजियारी तीज को बादल बिज्जु देख। तो गेहूं संग्रह करो महंगो होशी रेख॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. ३ से १७ फरवरी सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २८ माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.	वार	तिथि			स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		सूर्योदयास्त स्टैं.टा. उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घ. ३० मि.				गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
मि.		ति	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	प्र.	मु.	अं.	रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	
१४	श	१	१३	६	१२	२४	श्ले	२	५५	८	२०	सौ	१८	११	१४	२६	कौ	१३	६	१२	२४	२७	५	७	१०	१८	०	२१	१४	3	सिं.८।२०	९	१९	४८	१०	[illegible]	२०	४	८	२१	A संक्रांति मु.१५ बैठी पुण्य काल १३।३३ तक, उ.षा. में मंगल२४।३८
१५	र	२	१७	१३	१४	२	म	८	५	१०	२३	शो	१८	३५	१४	३५	ग	१७	१३	१४	२	२७	९	७	९	१८	१	२२	१५	4	सिंह	९	२०	४९	१	५०	२०	५७	८	४९	भ. २७।६ से, B पू.फा.३ में केतु २६।२१, वक्री बुध: ९।९
१६	चं	३	२२	३०	१६	९	पू.फा	१४	२३	१२	५४	अति	१९	५२	१५	५	वि	२२	३०	१६	९	२७	१२	७	९	१८	२	२३	१६	5	कं.१९।३५	९	२१	४९	५१	४८	२१	४९	९	१५	भ. १६।९ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
१७	मं	४	२८	४२	१८	३७	उफा	२१	३६	१५	४६	सु	२१	५०	१५	५२	बा	२८	४२	१८	३७	२७	१६	७	८	१८	३	२४	१७	6	कन्या	९	२२	५०	३९	४८	२२	४१	९	४१	श्री पद्मप्रभु मोक्ष जैन, धनिष्ठा में सूर्य १७।५
१८	बु	५	३५	२४	२१	१७	ह	२९	२०	१८	५१	धृ	२४	१२	१६	४८	कौ	२	२	७	५६	२७	२०	७	७	१८	३	२५	१८	7	कन्या	९	२३	५१	२७	४६	२३	३४	१०	८	C पूजनार्चन, श्री वैद्यनाथ जयंती, व्यतिपात पुण्यम्, मीने शुक्रः D
१९	गु	६	४२	४	२३	५६	चि	३७	४	२१	५७	शू	२६	३८	१७	४६	ग	८	४८	१०	३८	२७	२३	७	७	१८	४	२६	१९	8	तु.८।२५	९	२४	५२	१३	४६	२४	०	१०	३८	भ. २३।५६ से, पू.भा. में शुक्र १४।३२
२०	शु	७	४८	६	२६	२१	स्वा	४४	१६	२४	४९	गं	२८	४२	१८	३५	वि	१५	१३	१३	११	२७	२७	७	६	१८	५	२७	२०	9	तुला	९	२५	५२	५९	४४	२४	२९	११	१२	भ. १३।११ तक D१६।२३, पश्चिमास्तं बुधः २३।१०
२१	श	८	५२	५७	२८	१६	वि	५०	२२	२७	१४	वृ	३०	०	१९	५	बा	२०	४४	१५	२३	२७	३१	७	५	१८	६	२८	२१	10	वृश्चि.२०।४२	९	२६	५३	४३	४३	२५	२७	११	५१	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
२२	र	९	५६	१०	२९	३२	अनु	५४	५५	२९	३	ध्रु	३०	११	१९	९	तै	२४	४८	१७	०	२७	३५	७	५	१८	६	२९	२२	11	वृश्चिक	९	२७	५४	२६	४३	२६	२७	१२	३८	समर्थ गुरु रामदास जयंती
२३	चं	१०	५७	२७	३०	२	ज्ये	५७	३८	३०	७	व्या	२८	५९	१८	३९	व	२७	४	१७	५३	२७	३८	७	४	१८	७	३०	२३	12	ध.३०।७	९	२८	५५	९	४१	२७	२६	१३	३२	भ. १७।५३ से ३०।२ तक, महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती
२४	मं	११	५६	४३	२९	४४	मूल	५८	२४	३०	२५	ह	२६	१५	१७	३३	ब	२७	२१	१७	५९	२७	४२	७	३	१८	८	फा १	२४	13	धनु	९	२९	५५	५०	४०	२८	२४	१४	३३	विजया एकादशी व्रत स्मार्त, सौर फाल्गुनारंभ, कुंभ में सूर्य ७।९, A
२५	बु	१२	५४	२	२८	३९	पूषा	५७	१७	२९	५७	व	२१	५८	१५	५०	कौ	२५	३७	१७	१७	२७	४६	७	२	१८	९	२	२५	14	धनु	१०	०	५६	३०	३९	२९	१७	१५	४०	विजया एकादशी व्रत वैष्णव, वेलेन्टाइन डे, पू.भा.१ में राहु व B
२६	गु	१३	४९	३९	२६	५३	उषा	५४	२२	२८	४९	सि	१६	१४	१३	३१	ग	२२	४	१५	५१	२७	५०	७	१	१८	९	३	२६	15	म.११।४४	१०	१	५७	९	३८	३०	४	१६	४९	भ. २६।५३ से, प्रदोष व्रत
२७	शु	१४	४३	४९	२४	३२	श्र	५०	१८	२७	८	व्य	९	१२	१०	४१	वि	१६	५५	१३	४६	२७	५४	७	१	१८	१०	४	२७	16	मकर	१०	२	५७	४७	३६	३०	४६	१७	५८	भ. १३।४६ तक, श्री महाशिवरात्री व्रत, ज्योतिर्लिंगानां अभिषेक पूर्वकC
२८	श	३०	३६	५५	२१	४६	ध	४५	६	२५	२	वरि	१/५२	७/१३	७/२७	२७/५३	च	१०	३०	११	१२	२७	५८	७	०	१८	११	५	२८	17	कुं.१४।८	१०	३	५८	२३	३५	७	२४	१९	६	देवपितृकार्याशनैश्चरी अमावस्या, पंचक १४।८ से, शिवखप्पर पूजन

फाल्गुन कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १० फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	६	८	१०	७	१०	३	१०	४	१०	९	८
२६	२२	२३	१४	२१	२२	२७	२३	२३	१९	२५	४
५३	२०	५६	४५	२६	०	४४	३५	३५	२३	३५	२०
४३	१७	३३	५३	५३	४९	५६	३०	३०	३६	३४	४६
६०	७९८	४४	३७	८	७४	४	३	३	३	२	१
४३	२६	५७	२०	४८	२१	५४	११	११	१५	१७	३१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
धनि. ३	विशा. १	पू.षा. ४	शत. ३	ज्येष्ठा २	पू.भा. १	आश्लेषा ४	पू.भा. २	पू.फा. ४	शत. ४	धनि. २	मूल २

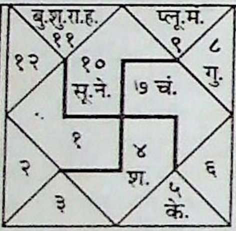

[पक्ष फलम्]

इस माह में पांच शनिवार का योग बना है जिसका फल निम्नांकित है- **"शनिवारा यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भङ्गश्च बह्निदाहो महर्घता॥"** अर्थात् पांच शनिवारों के अनुसार पाताल में शेष नाग कम्पित होकर भूमि में भूकंप आदि का योग करता है। ईशान कोण की सरकारें गिरने का योग तथा आपात् काल या प्राकृतिक आपदा का भय रहेगा। **"कुंभ राशि में त्रि ग्रह युक्ति करे अति वृष्टि पार। तो ग्रह का फल फसल में देखो कर व्यवहार॥"** बुधास्त पश्चिम में होने से सोने के भाव चढ़ेंगे तथा राज काज में धन की न्यूनता लगेगी। सूर्य शनि का सम सप्तक युद्धादि का योग करता है। प्रजा में बेरोजगारी बढ़ती है। बलात्कारी की सीमा करनी भी कठिन होगा। उत्तरी भारत के प्रान्तों की सरकारों को खतरा रहेगा। सरकारें भंग जैसा वातावरण बनेगा। फाल्गुन बदी १० दशमी सोमवार को शुभ कुंभ संक्रांति रात्रि चौथे प्रहर में प्रवेश करेगी जो चण्डालों को सुख देने वाली होगी। बाल्यावस्था (बैठी) मु.३० धान्य भाव सम कारक रहेगी। शुक्रोदय पश्चिम में जन-जन में प्रेम प्रसंग का कारक बनेगा। **व्यापार (तेजी मंदी)**- अलसी, रूई, चांदी में मंदा। घी, तेल, गुड़, शक्कर एवं अनाजों में तेजी का योग बनेगा। पक्षान्त में सोना चांदी में मंदी तथा शेयर्स बाजार को झटका लगेगा। हींग, लौकी, फल फूल मंदा योग। कपड़ा तेल सरसों में मंदी। जीरा में अच्छी तेजी का योग है। **आकाश लक्षण**-बदी ३ से वायु का योग बनता है। भूटान, सिक्किम, बंगला देश में अति वृष्टि का योग बनेगा। उत्तरी भारत में मौसम सुहावना रहेगा। राजस्थान, हरियाणा तथा गुजरात में आंधी व तेज वायु से परेशानी बढ़ेगी। खलिहानों में बूंदा-बांदी से नुक्सान होगा। **शकुन विचार-सूर्य दिन भृगुनाथ का एक राशि पर साथ। पकड़ा देती है फसल महंगाई का हाथ॥ फाल्गुन बदी तीज दिन बादल होय न बीज। बरसे सावन भादव साधों खेलो तीज॥** अच्छी

ता. १७ फरवरी ❖ फाल्गुन कृ. ३०शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

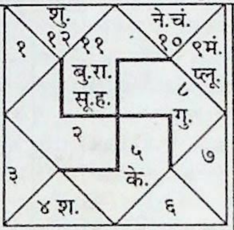

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	९	८	१०	७	११	३	१०	४	१०	९	८
३	२४	२९	१५	२२	०	२७	२३	२३	१९	२५	४
५८	४५	११	३५	२५	४०	१०	१३	१३	४६	५१	३०
२३	७	५७	६	५७	३१	४९	१४	१४	३९	२९	४९
६०	८०८	४५	३४	७	७४	४	३	३	३	२	१
३५	२६	११	३८	५६	६	५०	११	११	२१	१५	१९
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
धनि. ४	धनि. २	उ.षा. १	शत. ३	ज्येष्ठा २	पू.भा. ४	आश्लेषा ४	पू.भा. २	पू.फा. ३	शत. ४	धनि. २	मूल २

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३ श्री सं. २०६३ ... ता. १८ फर. से ३ मार्च सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २९ माघ से १२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

...र्पपीडिते जगद्धतप्रायमबर्तत क्षणात् ॥ ४६ ॥
...काशीतिसाहस्र्यां संहितायां तृतीये ब्रह्मखण्डे
...दे चातुर्मास्यमाहात्म्ये हरशापोनाम
षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

सप्तविंशोऽध्यायः

वृषस्तुतिवर्णनम्

गालव उवाच

...लिङ्गे योजनायामविस्तृते ।
...गणास्तत्रजग्मुः सहस्रशः ॥ १ ॥
...त्र महेश्वरम् । नासौ दृष्टिपथे तेषां बभूव भयविह्वलः
...सुसञ्चितम् । पृथिवींसकलांव्याप्यस्थितंदृष्टशिरेद्विजाः
... जलैः प्लुतम् । ब्राह्मणाःसंशयगतादह्यमाना वसुन्धरा
...तां नर्मदां नदीम् । तज्जलंनर्मदारूपंतल्लिङ्गममरकण्टकम्
...कापहम् । भूतग्रहाश्च सर्वेऽपि यास्यन्ति विलयंध्रुवम्
... पीत्वा सन्तर्प्य च पितृंस्तथा ।
...ति मनुष्यो भुवि दुर्लभान् ॥ ७ ॥
...ष्यन्ति ये नरा । तेषां रुद्रमयो देहो भविष्यतिनसंशयः
...पूजा महाफला । चातुर्मास्ये रुद्रजपं हरपूजा शिवे रतिः
...र्भवेदना । ये करिष्यन्ति मधुना सेचनं लिङ्गमस्तके
...न्तिविलयं ध्रुवम् । दीपदानंकृतंयेनचातुर्मास्येशिवाग्रतः
...क्रिया शिवलोकभाक् । चन्दनागुरुधूपैश्चसुश्वेतकुसुमैरपि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२

श्री सं. २०६३ शाके १९२८ | दिन मान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र राशि प्रवेश | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ३ से १७ फरवरी सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २८ माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वार	तिथि	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र	घ
१४	श	१	१३	६	१२	२४	श्ले	२
१५	र	२	१७	१३	१४	२	म	८
१६	चं	३	२२	३०	१६	९	पू.फा	१४
१७	मं	४	२८	४२	१८	३७	उ.फा	२१
१८	बु	५	३५	२४	२१	१७	ह	२९
१९	गु	६	४२	४	२३	५६	चि	३७
२०	शु	७	४८	६	२६	२१	स्वा	४४
२१	श	८	५२	५७	२८	१६	वि	५०
२२	र	९	५६	२०	२९	३२	अनु	५४
२३	चं	१०	५७	२७	३०	२	ज्ये	५७
२४	मं	११	५६	४३	२९	४४	मूल	५८
२५	बु	१२	५४	२	२८	३९	पूषा	५७
२६	गु	१३	४९	३९	२६	५३	उषा	५४
२७	शु	१४	४३	४९	२४	३२	श्र	५०
२८	श	३०	३६	५५	२१	४६	ध	४५

५४८ * स्कन्दपुराणम् [illegible]

नर्मदाजललिङ्गं ये ह्यर्चयिष्यन्तितेशिवाः । शिल[illegible]
तत्सम्भूतं महालिङ्गं जलधारणसंयुतम् । पूजयित्व[illegible]
चातुर्मास्ये ये मनुजा नर्मदामरकण्टके । तीर्थस्नात्वा[illegible]

ब्रह्मोवाच

इत्युक्त्वा ते द्विजास्तत्र स्थाप्य लिङ्गं य[illegible]
अमरकण्टकतीर्थे च नर्मदां च महानदीम् ॥ [illegible]
पुनश्चिन्ता पराजाताविश्वस्यक्षोभकारणे । पद्मासन [illegible]
चिन्तयामासुरव्यग्रंहृदयस्थंमहेश्वरम् । ततो देवा महे[illegible]
ब्राह्मणानां स्तुतिं चक्रुर्विनयानतकन्धराः । [illegible]
नमोऽस्तु वो द्विजातिभ्यो ब्रह्मविद्भ्यो मह[illegible]
भूसुरेभ्यो गुरुभ्यश्चविमुक्तेभ्यश्च बन्धनात् । यूयं गुणत्र[illegible]
गुणत्रयमयैर्भावैः सततं प्राणबुद्बुदाः । येषांवाक्यजले[illegible]
प्रयान्ति पापपुञ्जाश्च भस्मसाद्यान्ति पापिना[illegible]
शस्त्रं लोहमयं येषां वागेव तत्समन्विताः ॥ [illegible]
पापैः परा विभूतानांतेषांलोकोत्तरंबलम् । क्षमयापृथि[illegible]
पातनेऽनेकशक्तीनां समर्था यूयमेव हि । स्वर्गादीनां त[illegible]
सत्कर्मकारकाश्चैव सत्कर्मनिरताः सदा । सत्कर्मफलद[illegible]
सावित्रीमन्त्रनिरता ये भवन्तोघनाशनाः । आत्मानं यज[illegible]
वह्नयश्चतथाविप्रास्तर्पिताःकार्यसाधकाः । चातुर्मास्येवि[illegible]
कोपिताः सर्वदेहस्य नाशनाय भवन्तिहि । तावन्नवज्रमि[illegible]
दण्डो यमस्य तावन्नो यावच्छापो द्विजोद्भवः [illegible]
अग्निना ज्वाल्यते दृश्यं शापोऽदृष्टानपि स्वयम्[illegible]
हन्ति जातानजातांश्चतस्माद्विप्रंनकोपयेत् । विप्रकोपाग्नि[illegible]
शस्त्रक्षतोऽपि नरकान्मुच्यते नात्र संशयः । देवानामपिस[illegible]

फाल्गुन कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. [illegible]

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह		
९	६	८	१०	७	१०	३	१०	४	१०		
२६	२२	२३	१४	२२	२२	२७	२३	२३	११	२५	४
५३	२०	५६	४५	२६	०	४४	३५	३५	२३	३५	२०
४३	१७	३३	५३	५३	४९	५६	३०	३०	३६	३४	४६
६०	७८	४४	३७	८	७४	४	३	३	३	२	१
४३	२६	५७	२०	४८	२१	५४	११	११	१५	१७	३१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-

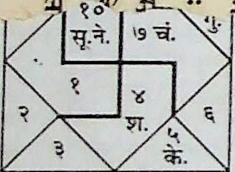

[illegible] बद्दिदाहो महर्घता ॥" अर्थात् पांच शनिवारों के अनुसार पाताल में शेष नाग कम्पित होकर भूमि में भूकंप आदि का योग करता है। ईशान कोण की सरकारें गिरने का योग तथा आपात् काल या प्राकृतिक आपदा का भय रहेगा। "कुंभ राशि में त्रि ग्रह युक्ति करे अति वृष्टि पार। तो ग्रह का फल फसल में देखो कर व्यवहार॥" बुधास्त पश्चिम में होने से सोने के भाव चढ़ेंगे तथा राज काज में धन की न्यूनता लगेगी। सूर्य शनि का सम सप्तक युद्धादि का योग करता है। प्रजा में बेरोजगारी बढ़ती है।

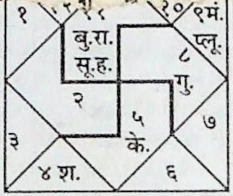

[illegible]	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू		
१०	९	८	१०	७	११	३	१०	४	१०	९	८
३	२४	२९	१५	२२	०	२७	२३	२३	१९	२५	४
५८	४५	११	३५	२५	४०	१०	१३	१३	४६	५१	३०
२३	७	५७	६	५७	३१	४९	१४	१४	३९	२९	४९
६०	७८	४५	३४	७	७४	४	३	३	३	२	१
३५	२६	११	३८	५६	६	५०	११	११	२१	१५	१९
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-

बलात्कारी की सीमा कम्नी भी कठिन होगा। उत्तरी भारत के प्रान्तों की सरकारों को खतरा रहेगा। सरकारें भंग जैसा वातावरण बनेगा। फाल्गुन बदी १० दशमी सोमवार को शुभ कुंभ संक्रांति रात्रि चौथे प्रहर में प्रवेश करेगी जो चण्डालों को सुख देने वाली होगी। बाल्यावस्था (बैठी) मु.३० धान्य भाव सम कारक रहेगी। शुक्रोदय पश्चिम में जन-जन में प्रेम प्रसंग का कारक बनेगा। व्यापार (तेजी मंदी)- अलसी, रूई, चांदी में मंदा। घी, तेल, गुड़, शक्कर एवं अनाजों में तेजी का योग बनेगा। पक्षान्त में सोना चांदी में मंदी तथा शेयर्स बाजार को झटका लगेगा। हींग, लौकी, फल फूल मंदा योग। कपड़ा तेल सरसों में मंदी। जीरा में अच्छी तेजी का योग है। **आकाश लक्षण**-बदी ३ से वायु का योग बनता है। भूटान, सिक्किम, बंगला देश में अति वृष्टि का योग बनेगा। उत्तरी भारत में मौसम सुहावना रहेगा। राजस्थान, हरियाणा तथा गुजरात में आंधी व तेज वायु से परेशानी बढ़ेगी। खलिहानों में बूंदा-बांदी से नुकसान होगा। **शकुन विचार**-सूर्य दिन भृगुनाथ का एक राशि पर साथ। पकड़ा देती है फसल महंगाई का हाथ॥ फाल्गुन बदी तीज दिन बादल होय न बीज। बरसे सावन भादव साथों खेलो तीज॥ अच्छी

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३ श्री सं. २०६३ | दिन | स्टैं.टा. | दिनांक | ता. १८ फर. से ३ मार्च सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २९ माघ से १२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

में मंदा। घी, तेल, गुड़, शक्कर एवं अनाजों में तेजी का योग बनेगा। पक्षान्त में सोना चांदी में मंदी तथा शेयर्स बाजार को झटका लगेगा। हींग, लौकी, फल फूल मंदा योग। कपड़ा तेल सरसों में मंदा। जीरा में अच्छी तेजी का योग है। आकाश लक्षण-बदी ३ से वायु का योग बनता है। भूटान, सिक्किम, बंगला देश में अति वृष्टि का योग बनेगा। उत्तरी भारत में मौसम सुहावना रहेगा। राजस्थान, हरियाणा तथा गुजरात में आंधी व तेज वायु से परेशानी बढ़ेगी। खलिहानों में बूंदा-बांदी से नुक्सान होगा। शकुन विचार-सूर्य दिन भृगुनाथ का एक राशि पर साथ। पकड़ा देती है फसल महंगाई का हाथ॥ फाल्गुन बदी तीज दिन बादल होय न बीज। बरसे सावन भादव साधों खेलो तीज॥ अच्छी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. १८ फर. से ३ मार्च सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २९ माघ से १२ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, वसन्त ऋतु।

रा.मि.	वार	तिथि ति	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्र उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.
२९	र	१	२९	२०	१८	४३	श	३९	१६	२२	४१	शि	४२	५३	२४	८	किं	३	१२	८	१६	२८	२	६	५९	१८	१२	६	२९	18	कुंभ	१०	४	५८	५८	[illegible]	७	५९	२०	१४
३०	चं	२	२१	२४	१५	३२	पूभा	३३	११	२०	१४	सिद्ध	३३	२२	२०	१९	कौ	२१	२४	१५	३२	२८	६	६	५८	१८	१२	७	सफर १	19	मी.१४।५१	१०	५	५९	३२	३१	८	३३	२१	२०
फा १	मं	३	१३	३१	१२	२२	उभा	२७	१२	१७	५०	सा	२३	५७	१६	३२	ग	१३	३१	१२	२२	२८	१०	६	५७	१८	१३	८	२	20	मीन	१०	७	०	३	३०	९	७	२२	२८
२	बु	४	६	१	९	२०	रे	२१	४१	१५	३७	शुभ	१४	५३	१२	५३	वि	६	१	९	२०	२८	१४	६	५६	१८	१४	९	३	21	मे.१५।३७	१०	८	०	३३	२९	९	४४	२३	३६
०	बु	५	५९	८	३०	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	गु	६	५३	१२	२८	१२	अ	१६	५५	१३	४१	शु	६ ५८	२४ ३९	९ ३०	२९ २७	कौ	२६	३	१७	२०	२८	१८	६	५५	१८	१५	१०	४	22	मेष	१०	९	१	२	२६	१०	२५	२४	०
४	शु	७	४८	२२	२६	१५	भ	१३	७	१२	९	ऐं	५१	५१	२७	३९	ग	२०	३९	१५	१०	२८	२२	६	५४	१८	१५	११	५	23	वृ.१७।५०	१०	१०	१	२८	२४	११	११	२४	४४
५	श	८	४४	४६	२४	४८	कृ	१०	२८	११	४	वै	४६	२	२५	१८	वि	१६	२५	१३	२८	२८	२६	६	५३	१८	१६	१२	६	24	वृष	१०	११	१	५२	२३	१२	३	२५	५०
६	र	९	४२	२९	२३	५२	रो	९	४	१०	३०	वि	४१	१६	२३	२३	बा	१३	२९	१२	१६	२८	३१	६	५२	१८	१७	१३	७	25	मि.२२।२४	१०	१२	२	१५	२०	१३	०	२६	५२
७	चं	१०	४१	३३	२३	२८	मृ	८	५९	१०	२७	प्री	३७	३३	२१	५३	तै	११	५२	११	३६	२८	३५	६	५१	१८	१७	१४	८	26	मिथुन	१०	१३	२	३५	१८	१४	१	२७	४८
८	मं	११	४१	५५	२३	३६	आ	१०	११	१०	५५	आयु	३४	५३	२०	४७	व	११	३५	११	२९	२८	३९	६	५०	१८	१८	१५	९	27	क.२९।३६	१०	१४	२	५३	१७	१५	३	२८	३६
९	बु	१२	४३	३३	२४	१४	पुन	१२	३९	११	५३	सौ	३३	११	२०	६	ब	१२	३६	११	५२	२८	४३	६	४९	१८	१९	१६	१०	28	कर्क	१०	१५	३	१०	१४	१६	३	२९	१७
१०	गु	१३	४६	२१	२५	२१	पु	१६	१७	१३	१९	शो	३२	२४	१९	४६	कौ	१४	५०	१२	४४	२८	४७	६	४८	१८	१९	१७	११	मार्च 1	कर्क	१०	१६	३	२४	१३	१७	१	२९	५२
११	शु	१४	५०	१५	२६	५३	श्ले	२१	१	१५	१२	अति	३२	२७	१९	४६	ग	१८	१२	१४	४	२८	५१	६	४७	१८	२०	१८	१२	2	सिं.१५।१२	१०	१७	३	३७	११	१७	५६	३०	२३
१२	श	१५	५५	६	२८	४९	म	२६	४३	१७	२८	सु	३३	१७	२०	५	वि	२२	३५	१५	४८	२८	५६	६	४६	१८	२१	१९	१३	3	सिंह	१०	१८	३	४८	९	१८	५०	६	५१

(दिनमान; स्टैं.टा. सूर्योदयास्त; दिनांक प्र. मु. अं.; चन्द्र राशि प्रवेश; दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.; चन्द्रोदयास्त दिल्ली)

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घता, सायन मीन में सूर्य ३०।४१, वसन्त A
सफर मु. मा. २ प्रा., फुलरिया दूज, श्री राम कृष्ण परमहंस ज., B
भ. २२।५१ से, पं. लेखराम वीर तृतीया, विनायक ४ व्रत, राष्ट्रीय C
भ. ९।२० तक, पंचक १५।३७ तक, संत चतुर्थी (उड़ीसा), महर्षि याज्ञवल्क ज.
पंचमी तिथि क्षयः B शतभिषा में सूर्य २१।३३, उ.भा. में शुक्र ९।१०
गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल) A ऋतु प्रा., मकरे भौमः ७।१
भ. २६।१५ से, आश्लेषा ३ में वक्री शनि १६।४८
भ. १३।२८ तक, श्री दुर्गाष्टमी, होलाष्टक प्रा., श्री दादूदयाल ज., D
C फाल्गुन प्रा., पू.भा. १ में हर्षल २८।४७
धनिष्ठा में वक्री बुध १७।२९ F पुण्य दिवस
भ. ११।२९ से २३।३६ तक, आमलकी एका. व्रत सबका, मेला E
गोविन्द द्वादशी, श्याम जी मेला २ दिन का पूर्ति, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद F
प्रदोष व्रत, मार्च मा. ३ ता. ३१ प्रा., रेवति में शुक्र २९।२७, G
भ. २६।५३ से, D अष्टान्हिक व्रतारंभ जैन, ज्येष्ठा ३ में गुरु १०।३३
भ. १५।४८ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, होलिका दहन, होलाष्टक पूर्ति, H
H अष्टान्हिका व्रत पूर्ति जैन, श्री चैतन्य महाप्रभु ज., मन्वादि १५, श्रवण में मंगल १२।२५

E श्यामजी २ दिन का प्रा. खाटू (राज.), श्री राम चरण स्नेही फूलडोल मेला शाहपुरा (मेवाड़) G पूर्वोदयं बुधः ९।३८

फाल्गुन शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता.२४ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	९	१०	७	११	३	१०	४	१०	९	८
११	६	४	९	२३	९	२६	२२	२२	२०	२६	४
१	४६	२८	२०	१८	१८	३७	५०	५०	१०	७	३९
५२	१८	४७	४२	३२	१७	३२	५९	५९	१७	१०	३१
६०	[illegible]	४५	६५	६	७३	४	३	३	३	२	१
२३	४४	२२	४७	५७	४७	३७	११	११	२४	१३	७
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

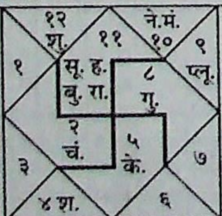

[पक्ष फलम्]

ग्रह योग एवं नक्षत्र संयोगानुसार प्रतिपदा को रवि होना रोद्र रूप में आतंकवाद बढ़ेगा। चन्द्र दर्शन ३० मुहूर्ती सोमवार को होना शुभ तथा शांति का प्रतीक बनेगा। इस माह में "फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को कृतिका नक्षत्र। भादव मास के दिवस वर्षा हो सर्वत्र॥" का योग मध्याह्न बाद बनता है। **शनिवारा यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता॥** पांच शनिवारों के अनुसार समय अशुभ फलदायी है। पृथ्वी का कंपन तपन से हानि का विशेष योग है। राजनीति पटल में कुछ लोगों का पतन भी होगा। पांच शनि के कारण महंगाई भी बढ़ेगी। धान्य कुछ मंदा होगा। मंगसिर से फाल्गुन तक तिथियां क्षय होने से लोगों का स्वास्थ्य में गड़बड़ ज्यादा होगी। राज विग्रह और छत्र भंग योग बनेगा। क्षय तिथियों का प्रभाव तथा ग्रहादि उदयास्त से समय अनुकूल-प्रतिकूल सम रहेगा। शनिवारी अमावस्या अंधियारा योग घोटालों का पर्दाफाश करायेगी। शुक्ल अष्टमी उदय कृतिका सुभिक्ष योग कारक रहेगी। शुक्ल एकादशी आर्द्रा होने से अवर्षण हो यानि विपदा योग्य घटना घटेगी। पूर्णिमा मघा युक्त और उ.फा. का अभाव होने से भावों में घटाबढ़ी तथा पूर्वोत्तर देशों प्रदेशों में प्राकृतिक आपदा का योग बनेगा। **व्यापार (तेजी मंदी)** - पीले रंग की वस्तुओं के भाव तेज होंगे। पीपल, सोना, कपूर, चना, मिठाईयां तेजी होगी। रेशम, कपूर, किराना, में मंदी का योग बनता है। काँच, सौन्दर्य सामग्री तेजी में रहेंगी। ग्वार, ज्वार, मूंग, मोठ, गेहूं, जौ, तिल, सरसों, रायरा, राई के भावों में घटबढ़ योग रहेगा। **आकाश लक्षण**- हल्के बादल छाये रहने का योग है। ग्रीष्म का प्रभाव जमेगा। दक्षिण पूर्वी प्रान्तों में कहीं कहीं अशुभ घटना के साथ हानि योग बनेगा। चन्द्रग्रहण के कारण खगोलीय घटना भी देखने योग्य दिनांक ३ मार्च ०७ को होलिका पर्व की भांति चन्द्रग्रहण भी भूमण्डल में अशोभनीय घटनाएँ होगी। **शकुन विचार- होली झार की करो विचार। शुभ अशुभ यहां फलचार॥ पश्चिम वायु वहे अति मंदा समय उपजे जल वसुंधरा॥ पूरब दिशा को बहे बंध नाश। सवया निपजे भू पर घास। उपजै तान झार होरी की होई। निर्णय करा समय कैसो होई॥ जो शशि उगे सोम शनि एक अचम्बो जिय जोस। छत्र पड़े दिन तीस में, अन्न जूं महंगो होय॥**

ता. ३ मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

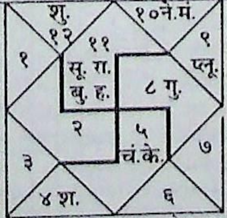

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	४	९	१०	७	११	३	१०	४	१०	९	८
१८	७	९	२	२४	१७	२६	२२	२२	२०	२६	४
३	१६	४६	५७	४	५३	६	२८	२८	३४	२२	४६
४८	३३	५२	५५	५	३७	३	४३	४३	१५	२९	४७
६०	७२६	४५	३१	५	७३	४	३	३	३	२	०
९	४	३२	५७	५४	२४	१८	११	११	२६	८	५५
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र कृष्ण पक्ष-२४

श्री सं. २०६३ शाके १९२८

ता. ४ से १९ मार्च सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २८ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र राशि प्रवेश भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
१३	र	१	६०	०	-	-	पू.फा	३३	१६	२०	४	धृ	३४	४६	२०	३९	बा	२७	५२	१७	५४	२९	०	६	४५	१८	२१	२०	१४	4	कं.२६।४६	१०	१९	३	५७	६०/०७	१९	४२	७	१७	वसन्त प्रतिपदा, वसन्तोत्सव, छारेंडी, धूलिवन्दन, होला मेला, A
१४	चं	१	०	४९	७	४	उ.फा	४०	३०	२२	५६	शू	३६	४६	२१	२६	कौ	०	४९	७	४	२९	४	६	४४	१८	२२	२१	१५	5	कन्या	१०	२०	४	४	५	२०	३४	७	४४	B बासौड़ा (ठंडा बासी भोजन करना चाहिए), धनिष्ठा २ में नेपच्यून १३।५७
१५	मं	२	७	६	९	३३	ह	४८	९	२५	५९	गं	३९	७	२२	२२	ग	७	६	९	३३	२९	८	६	४३	१८	२२	२२	१६	6	कन्या	१०	२१	४	९	४	२१	२६	८	१०	भ. २२।५२ से, सन्त तुकाराम जयंती
१६	बु	३	१३	४२	१२	११	चि	५५	५५	२९	४	वृ	४१	३६	२३	२०	वि	१३	४२	१२	११	२९	१३	६	४२	१८	२३	२३	१७	7	तु.१५।३१	१०	२२	४	१३	२	२२	२१	८	३९	भ. १२।११ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ व्रत (राज.), कल्पादि ३
१७	गु	४	२०	१६	१४	४७	स्वा	६०	०	-	-	ध्रु	४३	५७	२४	१६	बा	२०	१६	१४	४७	२९	१७	६	४१	१८	२४	२४	१८	8	तुला	१०	२३	४	१५	०	२३	१७	९	११	विश्व महिला दिवस, मार्गी बुधः ९।२३
१८	शु	५	२६	२५	१७	१४	स्वा	३	२८	८	३	व्या	४५	५२	२५	०	तै	२६	२५	१७	१४	२९	२१	६	४०	१८	२४	२५	१९	9	वृश्चि.२८।७	१०	२४	४	१५	५९/५८	२४	०	९	४७	रंग पंचमी, चेहल्लुम (मु.)
१९	श	६	३१	४२	१९	१९	वि	१०	१७	१०	४५	ह	४७	१	२५	२७	व	३१	४२	१९	१९	२९	२५	६	३९	१८	२५	२६	२०	10	वृश्चिक	१०	२५	४	१३	५७	२४	१५	१०	३०	भ. १९।१९ से, एकनाथ षष्ठी
२०	र	७	३५	३९	२०	५३	अनु	१६	०	१३	१	व	४७	८	२५	२९	वि	३	५३	८	११	२९	३०	६	३८	१८	२५	२७	२१	11	वृश्चिक	१०	२६	४	१०	५५	२५	१४	११	१९	भ. ८।११ तक, शीतला पूजन, मेला शीतला माता कुराली (पं.), B
२१	चं	८	३७	५७	२१	४७	ज्ये	२०	१३	१४	४२	सि	४५	५६	२४	५९	बा	७	३	९	२६	२९	३४	६	३६	१८	२६	२८	२२	12	ध.१४।४२	१०	२७	४	५	५४	२६	११	१२	१६	कालाष्टमी, शीतलाष्टमी, अश्विन्यां मेषे शुक्रः२७।५२, ऋषभदेव ज. C
२२	मं	९	३८	२१	२१	५६	मूल	२२	३९	१५	३९	व्य	४३	१६	२३	५४	तै	८	२६	९	५८	२९	३८	६	३५	१८	२७	२९	२३	13	धनु	१०	२८	३	५९	५२	२७	४	१३	१८	C मेला केशरिया मेवाड़, वर्षी तपारंभ जैन, अष्टका श्राद्ध
२३	बु	१०	३६	४६	२१	१७	पू.षा	२३	१०	१५	५०	वरि	३९	२	२२	११	व	७	५०	९	४२	२९	४३	६	३४	१८	२७	चैत्र १	२४	14	म.२१।४६	१०	२९	३	५१	५०	२७	५३	१४	२५	भ. ९।४२ से २१।१७ तक, दशामाता व्रत, सौर चैत्रमासारंभ, D
२४	गु	११	३३	१४	१९	५१	उ.षा	२१	४६	१५	१५	प	३३	१६	१९	५२	ब	५	१६	८	३९	२९	४७	६	३३	१८	२८	२	२५	15	मकर	११	०	३	४१	४९	२८	३६	१५	३३	पापमोचनी एका. व्रत सबका, मेला कैला देवी १५ दिन का प्रा. (करौली)
२५	शु	१२	२७	५६	१७	४२	श्र	१८	३५	१३	५८	शि	२६	५	१६	५८	कौ	०	४९	६	५२	२९	५१	६	३२	१८	२८	३	२६	16	कुं.२५।४	११	१	३	३०	४६	२९	१५	१६	४२	पंचक २५।४ से, प्रदोष व्रत
२६	श	१३	२१	८	१४	५८	ध	१३	५०	१२	३	सिद्ध	१७	४०	१३	३५	व	२१	८	१४	५८	२९	५६	६	३१	१८	२९	४	२७	17	कुंभ	११	२	३	१६	४५	२९	५१	१७	५०	भ. १४।५८ से २५।२२ तक, मास शिवरात्री व्रत, महावारुणी पर्व E
२७	र	१४	१३	१०	११	४५	श	७	५३	९	३९	सा	८/५८	१७/१०	९/२९	४८/४६	श	१३	१०	११	४५	३०	०	६	३०	१८	३०	५	२८	18	मी.२५।३७	११	३	३	१	४३	३०	२६	१८	५८	पितृकार्याऽमावस्या, मेला पृथूदक पिहोवा (हरि.), सहादते इमाम हसन, F
२८	चं	३०	४	२५	८	१४	पू.भा	१/५३	७/५३	६/२८	५५/२	शु	४७	४५	२५	३५	ना	४	२५	८	१४	३०	४	६	२८	१८	३०	६	२९	19	मीन	११	४	२	४४	४१	७	१	२०	७	देवकार्यासोमवती अमावस्या, चाँद्र संवत्सर पूर्ति, अग्रे प्रतिपदा G

A आनंद पुर साहिब (पंजाब), गणगौरी पूजनारंभ (राज.), पू.भा. में सूर्य २७।५३ D मीन में सूर्य २८।१, संक्रांति मु. ४५ बैठी पुण्य काल अग्रिम दिन E १२।३ से १४।५८, रंगतेरस F आखरी चाहर शम्बा (मु.), उ.भा. में सूर्य १२।२० G क्षय कारणात्, नव संवत्सरारंभ, नवरात्रारंभ, घट स्थापन ८।१४ के बाद **वर्ष फल श्रवण**, ध्वजा रोहण पूजनं, कल्पादि १, गुड़ी पड़वा, गौतम ज., आर्य समाज स्थापना दि., हेडगेवार ज., शत. में बुध ९।६

चैत्र कृ. ८ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १२ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	९	१०	७	११	३	१०	४	१०	९	८
२७	२५	१६	२	२४	२८	२५	२२	२२	२१	२६	४
४	१०	३७	१०	५१	५२	२९	०	०	५	४१	५३
५	२७	३६	११	२९	६	३०	६	६	१०	१९	५५
५९	८०	४५	२४	४	७२	३	३	३	३	२	०
५४	३७	४५	२४	२६	५२	४४	११	११	२५	१	३८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.भा. ३	ज्येष्ठा ३	श्रवण २	धनि. ३	ज्येष्ठा ३	रेवति ४	आश्लेषा ३	पू.भा. १	पू.फा. ३	पू.भा. १	धनि. २	मूल २

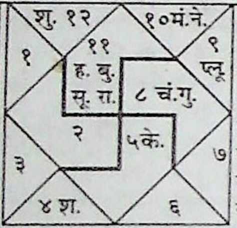

[पक्ष फलम्]

ग्रह योगानुसार प्रतिपदा रविवार का योग अशांति कारक बनता है। तिथी वृद्धि प्रतिपदा द्वितीय उ.फा. नक्षत्र युक्त होना कीटाणु अभिवृद्धि का कारक है। सूर्य ग्रहण का दान आज शुभ है। राजनैतिक गतिविधियों में अशोभनीय घटनाओं का योग बनेगा। पक्ष में रंग में भंग मुहावरा लागू होगा। बुध सूर्य और राहु की युक्ति कुंभ लग्न में होना काफी खतरनाक वातावरण बन सकता है। चन्द्र ग्रहण के पन्द्र दिन बाद सूर्य ग्रहण होने से प्रजा में अनीति, पुरुषों में द्वेष तथा अपहरण, विमान दुर्घटना के योग बनेंगे। ईश शाण का वातावरण बनेगा। उच्च पदीय नेताओं के लिए माह श्रेष्ठ नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनाव पूर्ण रहेगी। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी विवाद का समाधान नहीं होगा। राजनैतिक दल परस्पर विद्रोह रूप में प्रस्तुत होंगे। लूट-पाट, दंगा-फंसाद का योग, हड़तालें तथा नाका बंदी का योग बनता है। सामाजिक एवं धार्मिक दंगो का योग। असम, नेपाल, भूटान, तिब्बत, विशाखापट्टनम, कोंकण आदि में कुछ संघ, दलों द्वारा अविश्वास जन्य कार्य का वातावरण बनेगा। जन मानस अशान्त रहेगा। **व्यापार (तेजी मंदी)**- खनिज पदार्थ महंगे होंगे। सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, लोहा भी तेज होगा। शेयर्स बाजार में अच्छी तेजी रहेगी। हल्दी, किराना, साबूदाना, ईख में कुछ मन्दी आयेगी। सीमेन्ट, टिम्बर, लौंग, इलायची, केशर, किशमिश में जोरदार तेजी का योग बनता है। सब्जी महंगी रहेगी। आकाश लक्षण-अन्तरिक्ष में ग्रह नाड़ी वेध के कारण यत्र-तत्र बादल चाल कहीं हल्की वर्षा, कहीं पर ओला वृष्टि का प्रभाव रहेगा। ईशान प्रदेशों में आंधी तूफान बवण्डरों का प्रभाव रहेगा। **शकुन विचार-चैत्र बदी जो पंचमी शुक्रवार संयोग। प्रजा वृद्धि योग में गणना करो भोग॥** इस माह में सूर्य ग्रहण का प्रभाव राजनैतिक उत्पात करायेगा। तथा चैत्र कृष्ण १० बुध मीनेऽर्क मीन में सूर्य का प्रवेश

ता. १९ मार्च ❖ चैत्र कृ. ३० चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

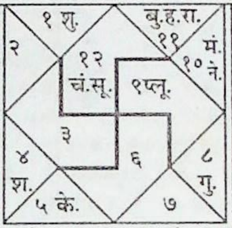

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	११	९	१०	७	०	३	१०	४	१०	९	८
४	२	२१	६	२५	७	२५	२१	२१	२१	२६	४
२	२५	५८	३२	१८	२०	५	३७	३७	२९	५५	५७
४४	३६	१६	२१	५९	५१	१	५१	५१	०	७	४१
५९	१०१	४५	५२	३	७२	३	३	३	३	१	०
४१	२६	५२	२४	१४	२५	११	११	११	२२	५४	२४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
-	-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
उ.भा. १	पू.भा. ४	श्रवण ४	धनि. ४	ज्येष्ठा ३	अश्वि. ३	आश्लेषा ३	पू.भा. १	पू.फा. ३	पू.भा. १	धनि. २	मूल २

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

किशमिश में जोरदार तेजी का योग बनता है। सब्जी महंगी रहेगी। ... वृष्टि का प्रभाव रहेगा। ईशान प्रदेशों में आंधी तूफान बवण्डरों का प्रभाव रहेगा। शकुन विचार-चैत्र बदी जो पंचमी शुक्रवार संयोग। प्रजा वृद्धि योग में गणना करो भोग॥ इस माह में सूर्य ग्रहण का प्रभाव राजनैतिक उत्पात करायेगा। तथा चैत्र कृष्ण १० बुध मीनेऽर्क मीन में सूर्य का प्रवेश ... भाव चढ़े आकाश में बिन मानिये भाव। बधवारी संक्रांति वस्त्र क्रय विक्रय कराय।

ज्योतिष शास्त्र में भौगोलिक महत्व

एक सामान्य अध्ययन

ज्योतिष शास्त्र में खगोल ज्ञान के साथ भौगोलिक जानकारी परमावश्यक है। ग्रहों का देशान्तरीय भेद से उदयास्त, ग्रहणादि का स्थानीय दृश्य काल एवं उसका मान तथा पृथ्वी पर दिखाई देने वाली खगोलीय चमत्कृति का सूक्ष्म समय काल जानने के लिये अक्षांश रेखांशादि भेदिक परिवर्तन समय हेतु भौगोलिक ज्ञान का विशेष महत्व होता है। उत्तर दक्षिण गोलार्द्ध, भूमध्य रेखा, कर्क मकर वृत, अक्षांश व रेखांशादि की जानकारी आवश्यक है जिसका सामान्य परिचय दिया जा रहा है।

अक्षांश व उसका अभिप्राय:- पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा "भू मध्य रेखा" कहलाती है। यहां पर अक्षांश (0) शून्य होता है। इसके उत्तर विभाग को "उत्तर गोल" व दक्षिणी विभाग को "दक्षिण गोल" कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर विभाग (उत्तर गोल) में ९० एवं दक्षिण विभाग (दक्षिण गोल) में भी ९० अक्षांश होते हैं।

यह "श्री आर्य भट्ट पंचांगम्" दिल्ली के स्थानीय समय काल हेतु आधारित किया गया है। भौगोलिक स्थित्यानुसार दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर है। भू मध्य रेखा से उत्तर गोल में दिल्ली नगर २८ व २९ अक्षांश के बीच में है। प्रत्येक अक्षांश को ६० भाग में विभाजित किया गया है जिसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर स्थित है।

एक अक्षांश की दूरी ७५ मील होती है। पृथ्वी पर किसी भी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अण्डाकार वस्तु को लंबाई में अर्थात् उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान से काटेंगे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित भाग पर आयेगा। इसलिए पृथ्वी के इसी मध्य भाग को भू मध्य रेखा कहा जाता है। भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर है इससे दक्षिण में ९० अक्षांश है जो दक्षिणी अक्षांश होते हैं। और इसी प्रकार भू मध्य रेखा (0) शून्य से उत्तर में ९० अक्षांश उत्तरी अक्षांश कहे जाते हैं।

उदाहरणार्थ आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा अथवा घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है और घूमते हुए एक अण्डाकार गोल परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसा करते हुए वह अपने केन्द्र स्थान की ओर थोड़ा झुका हुआ रहता है। इसी तरह पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर घूमती है और उसी बदले झुकाव के कारण ही सूर्य "उत्तरायण" तथा "दक्षिणायन" होता प्रतीत होता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया गया है परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में आधार हीन अधर में ही घूमती है।

ता. २१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात प्रथम राशि में प्रवेश करता है उस समय पृथ्वी का भू मध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है जहां रवि की क्रांति शून्य होती है। पृथ्वी पर उस समय दिन रात बराबर होते हैं। इस दिन के बाद से सूर्य उत्तर गोल में चलता है और रवि की उत्तर क्रांति प्रति दिन बढ़ती है। ता. २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है अर्थात् सायन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और रवि क्रांति अपनी चरम सीमा २३अंश हो जाती है। आकाशी क्रांति पथ के साथ पृथ्वी का क्रांति पथ २३.५ अंश का कोण होता है। उस समय दिन का मान अधिक व रात्री का मान न्यून होता है। विश्व का मानचित्र देखें कि भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर भारत से दक्षिण में लम्बी दूरी पर दूर समुन्द्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब इस रेखा पर आता है तो भारत का मध्य भाग सूर्य के सीधे प्रभाव में होने से वहां पर अधिकतम गर्मी की ऋतु का पूर्ण आभास होता है। ता. २१ जून को सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन हो जाता है। इसे ही "दक्षिणायन" कहते हैं। जो ता. २१ सितम्बर तक दक्षिणावृति से पुन: भू मध्य रेखा (0) शून्य अक्षांश पर पहुंच जाता है तथा उसकी उत्तर क्रांति भी क्रमश: कम होकर शून्य हो जाती है और दिन रात बराबर होते हैं। इसके बाद सूर्य दक्षिणावृत्ति से ही चलता है परन्तु ता. २१ सितम्बर तक तो सूर्य पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में ही होता है तत्पश्चात दक्षिण गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से लम्बी दूरी पर होने से यहां शरद ऋतु का आरंभ हो जाता है।

सूर्य निरन्तर दक्षिणायन रहकर दक्षिणी गोलार्द्ध में अग्रसर होता है। जो ता. २१ दिसम्बर को मकर रेखा पर पहुंच जाता है तथा सूर्य की दक्षिण क्रांति अपनी चरम सीमा पर होती है। ता. २१-२२ दिसम्बर को दिन का मान छोटा व रात्री का मान बड़ा होता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) भारत से बहुत दूर हिन्द महासागर के उपर से दक्षिणी अमेरिका के मध्य भाग, दक्षिणी अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है तो उस समय इन सभी देशो में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूरी होने के कारण यहां मौसम अत्यधिक ठण्डा होता है। ता. २१ दिसम्बर के बाद से सूर्य उत्तर की ओर चलनारंभ होता है। इसे ही "उत्तरायण" कहते हैं।

(**नोट:-** सूर्य आकाश में स्थिर है परंतु पृथ्वी की गति में क्रांति के परिवर्तन होने पर वह इस प्रकार परिवर्तन करता प्रतीत होता है तो प्रचलित बोल चाल तथा लिखने की भाषा में सूर्य चल रहा है यही कहा जाता है।)

ता. २१-२२ दिसंबर से सूर्य उत्तरावृत्ति से पुन: ता. २१ मार्च को दक्षिणी गोलार्द्ध की यात्रा करते हुए भू मध्य रेखा (शून्य अक्षांश) पर आता है। इस दिन रवि की दक्षिण क्रांति भी शून्य होती है। इस दिन सूर्य उत्तरावृत्ति से उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है।

अत: सूर्य की स्थिति ता. २१ मार्च से २१ सितंबर तक उत्तर गोल में और ता. २१ सितम्बर से ता. २१ मार्च तक दक्षिण गोल में होती है। ता. २१ दिसंबर से ता. २१ जून तक सूर्य उत्तरायण एवं ता. २१ जून से ता. २१ दिसंबर तक दक्षिणायन होता है।

सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहां के पूर्व पश्चिम क्षितिज पर सूर्योदय-सूर्यास्त देखकर अथवा ऊपर आकाश में सूर्य भ्रमण पर ध्यान देकर या घर में आने वाली धूप की किरणों के बदलते कोण देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायन होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रति दिन जो अंतर आता है उसे चरांतर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रांति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरांतर सारणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए है। और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरांतर सारणी पृष्ठ संख्या ९६ तथा रवि क्रांति सारणी इस पंचांग के पृष्ठ संख्या ९५ पर दी हुई है।

रेखांश व उसकी उपयोगिता- जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अक्षांशों में विभाजित किया गया है। उसी प्रकार इसको पूर्व-पश्चिम ३६० रेखांशों में विभाजित किया गया है। जिस प्रकार उत्तर व दक्षिण का विभाजन करने के लिए भू मध्य रेखा को (0) शून्य अक्षांश माना गया है। उसी प्रकार पूर्व व पश्चिम का विभाजन करने के लिए मध्यमान होना आवश्यक है और इसके लिए कोई भी रेखा को (0) शून्य रेखांश माना जा सकता है। पहले कभी भारत के उज्जैन नगर को शून्य रेखांश के लिए सम्मान प्राप्त था परन्तु वर्तमान में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला के कारण लंदन के पास ग्रीनविच को यह महत्व दिया गया है। ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे (0) शून्य रेखांश मान कर पूर्व के रेखांशों के पूर्व रेखांश व पश्चिम के रेखांशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है।

पृथ्वी की परिधि भू मध्य रेखा पर २९४०० मील है। अत: भू मध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी ७० मील होती है। पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात ३६० रेखांश २४ घण्टे में सूर्य के सामने से गुजरते हैं। तदनुसार एक रेखांश अंतर चार मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। उदाहरणार्थ माना कि दिल्ली में सूर्योदय ६।३० बजे हुआ है और दिल्ली का रेखांश ७७।१३ पूर्व है तो ७८।१३ पूर्व रेखांश पर स्थित नगर का सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा अथवा पूर्व रेखांश ७६।१३ हो तो ४ मिनट दिल्ली के बाद होगा। इसी प्रकार प्रति रेखांश में ४ मिनट कम अथवा अधिक रेखांशानुसार होगा। यदि रेखांश कम होंगे तो सूर्योदय बाद में तथा रेखांश अधिक होने पर पहले होगा।

प्राचीन काल में प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण धूप घड़ियों ,जल घड़ियों अथवा शंकु छायादि उपकरणों की सहायता से मध्यान्ह और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाइम (मानक समय) रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टे आगे था और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितंबर १९१७ से लागू कर दिया गया परंतु बंगाल प्रांत और आस-पास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रांतों ने सितंबर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाइम को व्यवहार में लाना आरंभ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितंबर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में (जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे) समय १ घण्टा बढ़ा दिया गया था अर्थात ग्रीनविच समय से ६.३० घण्टा आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५.३० घण्टा आगे है और ८२।३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो काम-काज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से संपादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है। उसका समय उतने ही अंतर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अंतर होता है। अतः १५ रेखांश पर १ घण्टे का अंतर हुआ। जो ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टे के अंतर पर निर्धारित है। हौलेण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, वेल्जियम, हंगरी, यूगोस्लाविया, डेनमार्क, स्विट्जरलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से १ घण्टा आगे है। मिस्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराईल, सूडान, वल्गेरिया आदि देशों का समय २ घण्टे आगे है। ये देश २ घण्टे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, ईथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घण्टे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४.३० घण्टे तथा पाकिस्तान ५ घण्टे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घण्टे तथा वर्मा ६.३० घण्टे आगे है। थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घण्टे के क्षेत्र में हैं। चीन, हॉगकोंग, फिलिपिन्स ८ घण्टे तथा कोरिया व जापान ९ घण्टे के अंतर पर है। आस्ट्रेलिया १० घण्टे और न्यूजीलैण्ड १२ घण्टे के अंतर पर है। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है। उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंगलैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयॉर्क, वाशिंगटन, टोरंटो, ओटावा, वॉस्टन आदि नगर ५ घण्टे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घण्टे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लॉसएन्जिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घण्टे कम है। किसी भी एटलस में दुनियां का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमाएं लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घण्टे के समय क्षेत्र में रखा गया है। और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगला देश को ६ घण्टे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५.३० घण्टा समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि १ रेखांश पर ४ मिनट का अंतर आता है तो ५.३० घण्टे का अंतर ८२।३० रेखांश पर ही आता है। भारत में ८२।३० रेखांश इलाहाबाद, अयोध्या के आस-पास उत्तर से दक्षिण काकीनाड़ा, मच्छलीपटनम् आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है परंतु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है। तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश "अक्षांशादि सारणी" से ज्ञात कर लिए जाते हैं तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है। जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है (कुछ आचार्य ७७।१२, कुछ ७७।१४ भी मानते हैं) यह रेखांश ८२।३० से ५।१७ कम हैं। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से २१ मिनट ८ सैकेण्ड दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से कम होगा। यदि किसी [illegible] ८५।१३ है जो ८२।३० से २।४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय १० मिनट ५२ सैकेण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारणी इस पंचांग में पृष्ठ ९७ पर दी गई है। इसमें मुख्य-मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अंतर तथा दिल्ली के समय से देशांतर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांश आदि सारणी में यह नाम नहीं हैं। मानचित्र में यह धौलपुर और ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर हैं अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है यह स्थान मानचित्र में धौलपुर व ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सेन्टीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नाप कर उनके अक्षांश रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ है वह इस प्रकार है।

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्रायः १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रातः के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रातः पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश "अक्षांशादि सारणी" से ज्ञात कर लिए जाते हैं तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल ... (कुछ आचार्य ७७।१२, कुछ ७७।१४ भी मानते हैं) यह रेखांश ८२।३० से ५।१७ कम हैं। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से २१ मिनट ८ सैकेण्ड दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से कम होगा। यदि किसी

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरी गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अत: तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन एवं उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्नका समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक केअक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है।

	घं.मि.
सारिणी से प्राप्त १५ जु. को वृश्चि. समाप्त	१७।१४
देशान्तर ऋण लेने से धन किया (१३।४८ मि. आधे से अधिक होने से १४ लिये)	+०।१४
मध्यम लग्न समाप्त	=१७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने १७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति	= १७।२८
दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान +-	—०।१७
अत: नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल	१७।११

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सै. एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान कोगुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारंभ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

अ/लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	-१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

सन्\राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२००० फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००० फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४ फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८फप	-१	-१	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	-१
२००९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२ फप	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२ फप	-१	०	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	-१

दैनिक लग्नों के समाप्तिकाल तालिका में वार्षिक संस्कार

पंचांग में दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल की तालिका प्रति मासिक दी गई है। उनमें पृथ्वी की अयनगति वश प्रति वर्ष परिवर्तन होता है। इसलिए लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल जानने के लिए वार्षिक संस्कार देकर शुद्ध करें लें। अत: वार्षिक लग्नों में संस्कारार्थ तालिका दी जा रही है।

जिन वर्षों में तिथ्याधिक वर्ष हो अर्थात् २९ दिनों का फरवरी मास होता है। (यह प्रति चार से आता है।) इन वर्षों की तालिका में दो बार पंक्तियां दी गई। जिसके सन् के आगे फ.प. लगाया गया है। इसका अभिप्राय है कि १ जनवरी से २८ फरवरी तक इस पंक्ति के संस्कारों को काम में लें तथा उसी सन् को लिखकर आगे फ.बा. लगाया गया है। इन संस्कारों का उपयोग १ मार्च से ३१ दिसम्बर तक करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८ १५	८ ५३ १७	१० २८ १५	१२ २३ ३७	१४ ३८ ०८	१६ ५८ २७	१९ १५ ४६	२१ ३२ ०३	२३ ५१ ३१	२ १४ ०५	४ १८ १५	६ ०० ४३
२	७ २४ १९	८ ४९ १४	१० २४ २०	१२ १९ ४१	१४ ३४ १२	१६ ५४ ३१	१९ ११ ५०	२१ २८ ०७	२३ ४७ ३५	२ १० ०९	४ १४ १९	५ ५६ ४७
३	७ २० २३	८ ४५ १८	१० २० २४	१२ १५ ४५	१४ ३० १६	१६ ५० ३६	१९ ०७ ५५	२१ २४ १२	२३ ४३ ४०	२ ०६ १३	४ १० २३	५ ५२ ५२
४	७ १६ २७	८ ४१ २३	१० १६ २८	१२ ११ ४९	१४ २६ २०	१६ ४६ ४०	१९ ०३ ५९	२१ २० १६	२३ ३९ ४४	२ ०२ १७	४ ०६ २७	५ ४८ ५६
५	७ १२ ३२	८ ३७ २७	१० १२ ३२	१२ ०७ ५४	१४ २२ २४	१६ ४२ ४४	१९ ०० ०३	२१ १६ २०	२३ ३५ ४८	१ ५८ २१	४ ०२ ३१	५ ४५ ००
६	७ ०८ ३६	८ ३३ ३१	१० ०८ ३६	१२ ०३ ५८	१४ १८ २८	१६ ३८ ४८	१८ ५६ ०७	२१ १२ २४	२३ ३१ ५२	१ ५४ २५	३ ५८ ३६	५ ४१ ०४
७	७ ०४ ४०	८ २९ ३५	१० ०४ ४०	१२ ०० ०२	१४ १४ ३२	१६ ३४ ५२	१८ ५२ ११	२१ ०८ २८	२३ २७ ५६	१ ५० २९	३ ५४ ४०	५ ३७ ०८
८	७ ०० ४४	८ २५ ३९	१० ०० ४४	११ ५६ ०६	१४ १० ३६	१६ ३० ५६	१८ ४८ १५	२१ ०४ ३२	२३ २४ ००	१ ४६ ३४	३ ५० ४४	५ ३३ १२
९	६ ५६ ४८	८ २१ ४३	९ ५६ ४८	११ ५२ १०	१४ ०६ ४०	१६ २७ ००	१८ ४४ १९	२१ ०० ३६	२३ २० ०४	१ ४२ ३८	३ ४६ ४८	५ २९ १६
१०	६ ५२ ५२	८ १७ ४७	९ ५२ ५२	११ ४८ १४	१४ ०२ ४४	१६ २३ ०४	१८ ४० २३	२० ५६ ४०	२३ १६ ०८	१ ३८ ४२	३ ४२ ५२	५ २५ २०
११	६ ४८ ५६	८ १३ ५१	९ ४८ ५६	११ ४४ १८	१३ ५८ ४९	१६ १९ ०८	१८ ३६ २७	२० ५२ ४४	२३ १२ १२	१ ३४ ४६	३ ३८ ५६	५ २१ २४
१२	६ ४५ ००	८ ०९ ५५	९ ४५ ०१	११ ४० २२	१३ ५४ ५३	१६ १५ १२	१८ ३२ ३१	२० ४८ ४८	२३ ०८ १६	१ ३० ५०	३ ३५ ००	५ १७ २८
१३	६ ४१ ०४	८ ०५ ५९	९ ४१ ०५	११ ३६ २६	१३ ५० ५७	१६ ११ १७	१८ २८ ३६	२० ४४ ५३	२३ ०४ २१	१ २६ ५४	३ ३१ ०४	५ १३ ३२
१४	६ ३७ ०८	८ ०२ ०४	९ ३७ ०९	११ ३२ ३०	१३ ४७ ०१	१६ ०७ २१	१८ २४ ४०	२० ४० ५७	२३ ०० २५	१ २२ ५८	३ २७ ०८	५ ०९ ३७
१५	६ ३३ १२	७ ५८ ०८	९ ३३ १३	११ २८ ३४	१३ ४३ ०५	१६ ०३ २५	१८ २० ४४	२० ३७ ०१	२२ ५६ २९	१ १९ ०२	३ २३ १२	५ ०५ ४१
१६	६ २९ १७	७ ५४ १२	९ २९ १७	११ २४ ३९	१३ ३९ ०९	१५ ५९ २९	१८ १६ ४८	२० ३३ ०५	२२ ५२ ३३	१ १५ ०६	३ १९ १७	५ ०१ ४५
१७	६ २५ २१	७ ५० १६	९ २५ २१	११ २० ४३	१३ ३५ १३	१५ ५५ ३३	१८ १२ ५२	२० २९ ०९	२२ ४८ ३७	१ ११ १०	३ १५ २१	४ ५७ ४९
१८	६ २१ २५	७ ४६ २०	९ २१ २५	११ १६ ४७	१३ ३१ १७	१५ ५१ ३७	१८ ०८ ५६	२० २५ १३	२२ ४४ ४१	१ ०७ १५	३ ११ २५	४ ५३ ५३
१९	६ १७ २९	७ ४२ २४	९ १७ २९	११ १२ ५१	१३ २७ २१	१५ ४७ ४१	१८ ०५ ००	२० २१ १७	२२ ४० ४५	१ ०३ १९	३ ०७ २९	४ ४९ ५७
२०	६ १३ ३३	७ ३८ २८	९ १३ ३३	११ ०८ ५५	१३ २३ २५	१५ ४३ ४५	१८ ०१ ०४	२० १७ २१	२२ ३६ ४९	० ५९ २३	३ ०३ ३३	४ ४६ ०१
२१	६ ०९ ३७	७ ३४ ३२	९ ०९ ३७	११ ०४ ५९	१३ १९ ३०	१५ ३९ ४९	१७ ५७ ०८	२० १३ २५	२२ ३२ ५३	० ५५ २७	२ ५९ ३७	४ ४२ ०५
२२	६ ०५ ४१	७ ३० ३६	९ ०५ ४२	११ ०१ ०३	१३ १५ ३४	१५ ३५ ५३	१७ ५३ १२	२० ०९ २९	२२ २८ ५७	० ५१ ३१	२ ५५ ४१	४ ३८ ०९
२३	६ ०१ ४५	७ २६ ४०	९ ०१ ४६	१० ५७ ०७	१३ ११ ३८	१५ ३१ ५८	१७ ४९ १७	२० ०५ ३४	२२ २५ ०२	० ४७ ३५	२ ५१ ४५	४ ३४ १३
२४	५ ५७ ४९	७ २२ ४४	८ ५७ ५०	१० ५३ ११	१३ ०७ ४२	१५ २८ ०२	१७ ४५ २१	२० ०१ ३८	२२ २१ ०६	० ४३ ३९	२ ४७ ४९	४ ३० १८
२५	५ ५३ ५३	७ १८ ४९	८ ५३ ५४	१० ४९ १६	१३ ०३ ४६	१५ २४ ०६	१७ ४१ २५	१९ ५७ ४२	२२ १७ १०	० ३९ ४३	२ ४३ ५३	४ २६ २२
२६	५ ४९ ५७	७ १४ ५३	८ ४९ ५८	१० ४५ २०	१२ ५९ ५०	१५ २० १०	१७ ३७ २९	१९ ५३ ४६	२२ १३ १४	० ३५ ४७	२ ३९ ५७	४ २२ २६
२७	५ ४६ ०२	७ १० ५७	८ ४६ ०२	१० ४१ २४	१२ ५५ ५४	१५ १६ १४	१७ ३३ ३३	१९ ४९ ५०	२२ ०९ १८	० ३१ ५१	२ ३६ ०२	४ १८ ३०
२८	५ ४२ ०६	७ ०७ ०१	८ ४२ ०६	१० ३७ २८	१२ ५१ ५८	१५ १२ १८	१७ २९ ३७	१९ ४५ ५४	२२ ०५ २२	० २७ ५५	२ ३२ ०६	४ १४ ३४
२९	५ ३८ १०	७ ०३ ०५	८ ३८ १०	१० ३३ ३२	१२ ४८ ०२	१५ ०८ २२	१७ २५ ४१	१९ ४१ ५८	२२ ०१ २६	० २० ०४	२ २८ १०	४ १० ३८
३०	५ ३४ १४	६ ५९ ०९	८ ३४ १४	१० २९ ३६	१२ ४४ ०६	१५ ०४ २६	१७ २१ ४५	१९ ३८ ०२	२१ ५७ ३०	० १६ ०८	२ २४ १४	४ ०६ ४२
३१	५ ३० १८	६ ५५ १३	८ ३० १८	१० २५ ४०	१२ ४० १०	१५ ०० ३०	१७ १७ ४९	१९ ३४ ०६	२१ ५३ ३४	० १२ १२	२ २० १८	४ ०२ ४६

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५१ १७	८ २६ २३	१० २१ ४४	१२ ३६ १५	१४ ५६ ३४	१७ १३ ५३	१९ ३० १०	२१ ४९ ३८	० ०८ १६	२ १६ २२	३ ५८ ५०	५ २६ २२
२	६ ४७ २१	८ २२ २७	१० १७ ४८	१२ ३२ १९	१४ ५२ ३९	१७ ०९ ५८	१९ २६ १५	२१ ४५ ४३	० ०४ २०	२ १२ २६	३ ५४ ५४	५ २२ २६
३	६ ४३ २५	८ १८ ३१	१० १३ ५२	१२ २८ २३	१४ ४८ ४३	१७ ०६ ०२	१९ २२ १९	२१ ४१ ४७	० ०० २४	२ ०८ ३०	३ ५० ५९	५ १८ ३०
४	६ ३९ ३०	८ १४ ३५	१० ०९ ५७	१२ २४ २७	१४ ४४ ४७	१७ ०२ ०६	१९ १८ २३	२१ ३७ ५१	२३ ५६ २८	२ ०४ ३४	३ ४७ ०३	५ १४ ३४
५	६ ३५ ३४	८ १० ३९	१० ०६ ०१	१२ २० ३१	१४ ४० ५१	१६ ५८ १०	१९ १४ २७	२१ ३३ ५५	२३ ५२ ३२	२ ०० ३८	३ ४३ ०७	५ १० ३८
६	६ ३१ ३८	८ ०६ ४३	१० ०२ ०५	१२ १६ ३५	१४ ३६ ५५	१६ ५४ १४	१९ १० ३१	२१ २९ ५९	२३ ४८ ३६	१ ५६ ४३	३ ३९ ११	५ ०६ ४३
७	६ २७ ४२	८ ०२ ४७	९ ५८ ०९	१२ १२ ३९	१४ ३२ ५९	१६ ५० १८	१९ ०६ ३५	२१ २६ ०३	२३ ४४ ४१	१ ५२ ४७	३ ३५ १५	५ ०२ ४७
८	६ २३ ४६	७ ५८ ५१	९ ५४ १३	१२ ०८ ४३	१४ २९ ०३	१६ ४६ २२	१९ ०२ ३९	२१ २२ ०७	२३ ४० ४५	१ ४८ ५१	३ ३१ १९	४ ५८ ५१
९	६ १९ ५०	७ ५४ ५५	९ ५० १७	१२ ०४ ४७	१४ २५ ०७	१६ ४२ २६	१८ ५८ ४३	२१ १८ ११	२३ ३६ ४९	१ ४४ ५५	३ २७ २३	४ ५४ ५५
१०	६ १५ ५४	७ ५० ५९	९ ४६ २१	१२ ०० ५२	१४ २१ ११	१६ ३८ ३०	१८ ५४ ४७	२१ १४ १५	२३ ३२ ५३	१ ४० ५९	३ २३ २७	४ ५० ५९
११	६ ११ ५८	७ ४७ ०३	९ ४२ २५	११ ५६ ५६	१४ १७ १५	१६ ३४ ३४	१८ ५० ५१	२१ १० १९	२३ २८ ५७	१ ३७ ०३	३ १९ ३१	४ ४७ ०३
१२	६ ०८ ०२	७ ४३ ०८	९ ३८ २९	११ ५३ ००	१४ १३ २०	१६ ३० ३९	१८ ४६ ५६	२१ ०६ २४	२३ २५ ०१	१ ३३ ०७	३ १५ ३५	४ ४३ ०७
१३	६ ०४ ०६	७ ३९ १२	९ ३४ ३३	११ ४९ ०४	१४ ०९ २४	१६ २६ ४३	१८ ४३ ००	२१ ०२ २८	२३ २१ ०५	१ २९ ११	३ ११ ३९	४ ३९ ११
१४	६ ०० ११	७ ३५ १६	९ ३० ३८	११ ४५ ०८	१४ ०५ २८	१६ २२ ४७	१८ ३९ ०४	२० ५८ ३२	२३ १७ ०९	१ २५ १५	३ ०७ ४४	४ ३५ १५
१५	५ ५६ १५	७ ३१ २०	९ २६ ४२	११ ४१ १२	१४ ०१ ३२	१६ १८ ५१	१८ ३५ ०८	२० ५४ ३६	२३ १३ १३	१ २१ १९	३ ०३ ४८	४ ३१ १९
१६	५ ५२ १९	७ २७ २४	९ २२ ४६	११ ३७ १६	१३ ५७ ३६	१६ १४ ५५	१८ ३१ १२	२० ५० ४०	२३ ०९ १७	१ १७ २४	२ ५९ ५२	४ २७ २४
१७	५ ४८ २३	७ २३ २८	९ १८ ५०	११ ३३ २०	१३ ५३ ४०	१६ १० ५९	१८ २७ १६	२० ४६ ४४	२३ ०५ २२	१ १३ २८	२ ५५ ५६	४ २३ २८
१८	५ ४४ २७	७ १९ ३२	९ १४ ५४	११ २९ २४	१३ ४९ ४४	१६ ०७ ०३	१८ २३ २०	२० ४२ ४८	२३ ०१ २६	१ ०९ ३२	२ ५२ ००	४ १९ ३२
१९	५ ४० ३१	७ १५ ३६	९ १० ५८	११ २५ २८	१३ ४५ ४८	१६ ०३ ०७	१८ १९ २४	२० ३८ ५२	२२ ५७ ३०	१ ०५ ३६	२ ४८ ०४	४ १५ ३६
२०	५ ३६ ३५	७ ११ ४०	९ ०७ ०२	११ २१ ३३	१३ ४१ ५२	१५ ५९ ११	१८ १५ २८	२० ३४ ५६	२२ ५३ ३४	१ ०१ ४०	२ ४४ ०८	४ ११ ४०
२१	५ ३२ ३९	७ ०७ ४४	९ ०३ ०६	११ १७ ३७	१३ ३७ ५६	१५ ५५ १५	१८ ११ ३२	२० ३१ ००	२२ ४९ ३८	० ५७ ४४	२ ४० १२	४ ०७ ४४
२२	५ २८ ४३	७ ०३ ४९	८ ५९ १०	११ १३ ४१	१३ ३४ ०१	१५ ५१ २०	१८ ०७ ३७	२० २७ ०४	२२ ४५ ४२	० ५३ ४८	२ ३६ १६	४ ०३ ४८
२३	५ २४ ४७	६ ५९ ५३	८ ५५ १४	११ ०९ ४५	१३ ३० ०५	१५ ४७ २४	१८ ०३ ४१	२० २३ ०९	२२ ४१ ४६	० ४९ ५२	२ ३२ २०	३ ५९ ५२
२४	५ २० ५१	६ ५५ ५७	८ ५१ १८	११ ०५ ४९	१३ २६ ०९	१५ ४३ २८	१७ ५९ ४५	२० १९ १३	२२ ३७ ५०	० ४५ ५६	२ २८ २५	३ ५५ ५६
२५	५ १६ ५६	६ ५२ ०१	८ ४७ २३	११ ०१ ५३	१३ २२ १३	१५ ३९ ३२	१७ ५५ ४९	२० १५ १७	२२ ३३ ५४	० ४२ ००	२ २४ २९	३ ५२ ००
२६	५ १३ ००	६ ४८ ०५	८ ४३ २७	१० ५७ ५७	१३ १८ १७	१५ ३५ ३६	१७ ५१ ५३	२० ११ २१	२२ २९ ५८	० ३८ ०५	२ २० ३३	३ ४८ ०४
२७	५ ०९ ०४	६ ४४ ०९	८ ३९ ३१	१० ५४ ०१	१३ १४ २१	१५ ३१ ४०	१७ ४७ ५७	२० ०७ २५	२२ २६ ०३	० ३४ ०९	२ १६ ३७	३ ४४ ०९
२८	५ ०५ ०८	६ ४० १३	८ ३५ ३५	१० ५० ०५	१३ १० २५	१५ २७ ४४	१७ ४४ ०१	२० ०३ २९	२२ २२ ०७	० ३० १३	२ १२ ४१	३ ४० १३
२९	५ ०१ १२	६ ३६ १७	८ ३१ ३९	१० ४६ ०९	१३ ०६ २९	१५ २३ ४८	१७ ४० ०५	१९ ५९ ३३	२२ १८ ११	० २६ १७	२ ०८ ४५	३ ३६ १७
३०	४ ५७ १६	६ ३२ २१	८ २७ ४३	१० ४२ १४	१३ ०२ ३३	१५ १९ ५२	१७ ३६ ०९	१९ ५५ ३७	२२ १४ १५	० २२ २१	२ ०४ ४९	३ ३२ २१

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 85

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. ... काल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २८ २५	८ २३ ४७	१० ३८ १८	१२ ५८ ३८	१५ १५ ५७	१७ ३२ १३	१९ ५१ ४१	२२ १० १९	० १४ २९	२ ०० ५३	३ २८ २५	४ ५३ २०
२	६ २४ ३०	८ १९ ५१	१० ३४ २२	१२ ५४ ४२	१५ ११ ०१	१७ २८ १८	१९ ४७ ४६	२२ ०६ २३	० १० ३३	१ ५६ ५७	३ २४ २९	४ ४९ २४
३	६ २० ३४	८ १५ ५५	१० ३० २६	१२ ५० ४६	१५ ०८ ०५	१७ २४ २२	१९ ४३ ५०	२२ ०२ २७	० ०६ ३७	१ ५३ ०१	३ २० ३३	४ ४५ २८
४	६ १६ ३८	८ १२ ००	१० २६ ३०	१२ ४६ ५०	१५ ०४ ०९	१७ २० २६	१९ ३९ ५४	२१ ५८ ३१	० ०२ ४१	१ ४९ ०६	३ १६ ३७	४ ४१ ३२
५	६ १२ ४२	८ ०८ ०४	१० २२ ३४	१२ ४२ ५४	१५ ०० १३	१७ १६ ३०	१९ ३५ ५८	२१ ५४ ३५	२३ ५८ ४६	१ ४५ १०	३ १२ ४१	४ ३७ ३७
६	६ ०८ ४६	८ ०४ ०८	१० १८ ३८	१२ ३८ ५८	१४ ५६ १७	१७ १२ ३४	१९ ३२ ०२	२१ ५० ३९	२३ ५४ ५०	१ ४१ १४	३ ०८ ४५	४ ३३ ४१
७	६ ०४ ५०	८ ०० १२	१० १४ ४२	१२ ३५ ०२	१४ ५२ २१	१७ ०८ ३८	१९ २८ ०६	२१ ४६ ४४	२३ ५० ५४	१ ३७ १८	३ ०४ ५०	४ २९ ४५
८	६ ०० ५४	७ ५६ १६	१० १० ४६	१२ ३१ ०६	१४ ४८ २५	१७ ०४ ४२	१९ २४ १०	२१ ४२ ४८	२३ ४६ ५८	१ ३३ २२	३ ०० ५४	४ २५ ४९
९	५ ५६ ५८	७ ५२ २०	१० ०६ ५०	१२ २७ १०	१४ ४४ २९	१७ ०० ४६	१९ २० १४	२१ ३८ ५२	२३ ४३ ०२	१ २९ २६	२ ५६ ५८	४ २१ ५३
१०	५ ५३ ०२	७ ४८ २४	१० ०२ ५५	१२ २३ १४	१४ ४० ३३	१६ ५६ ५०	१९ १६ १८	२१ ३४ ५६	२३ ३९ ०६	१ २५ ३०	२ ५३ ०२	४ १७ ५७
११	५ ४९ ०६	७ ४४ २८	९ ५८ ५९	१२ १९ १९	१४ ३६ ३८	१६ ५२ ५४	१९ १२ २२	२१ ३१ ००	२३ ३५ १०	१ २१ ३४	२ ४९ ०६	४ १४ ०१
१२	५ ४५ ११	७ ४० ३२	९ ५५ ०३	१२ १५ २७	१४ ३२ ४२	१६ ४८ ५९	१९ ०८ २७	२१ २७ ०४	२३ ३१ १४	१ १७ ३८	२ ४५ १०	४ १० ०५
१३	५ ४१ १५	७ ३६ ३६	९ ५१ ०७	१२ ११ २७	१४ २८ ४६	१६ ४५ ०३	१९ ०४ ३१	२१ २३ ०८	२३ २७ १८	१ १३ ४२	२ ४१ १४	४ ०६ ०९
१४	५ ३७ १९	७ ३२ ४१	९ ४७ ११	१२ ०७ ३१	१४ २४ ५०	१६ ४१ ०७	१९ ०० ३५	२१ १९ १२	२३ २३ २२	१ ०९ ४७	२ ३७ १८	४ ०२ १३
१५	५ ३३ २३	७ २८ ४५	९ ४३ १५	१२ ०३ ३५	१४ २० ५४	१६ ३७ ११	१८ ५६ ३९	२१ १५ १६	२३ १९ २७	१ ०५ ५१	२ ३३ २२	३ ५८ १८
१६	५ २९ २७	७ २४ ४९	९ ३९ १९	११ ५९ ३९	१४ १६ ५८	१६ ३३ १५	१८ ५२ ४३	२१ ११ २०	२३ १५ ३१	१ ०१ ५५	२ २९ २६	३ ५४ २२
१७	५ २५ ३१	७ २० ५३	९ ३५ २३	११ ५५ ४३	१४ १३ ०२	१६ २९ १९	१८ ४८ ४७	२१ ०७ २५	२३ ११ ३५	० ५७ ५९	२ २५ ३१	३ ५० २६
१८	५ २१ ३५	७ १६ ५७	९ ३१ २७	११ ५१ ४७	१४ ०९ ०६	१६ २५ २३	१८ ४४ ५१	२१ ०३ २९	२३ ०७ ३९	० ५४ ०३	२ २१ ३५	३ ४६ ३०
१९	५ १७ ३९	७ १३ ०१	९ २७ ३२	११ ४७ ५१	१४ ०५ १०	१६ २१ २७	१८ ४० ५५	२० ५९ ३३	२३ ०३ ४३	० ५० ०७	२ १७ ३९	३ ४२ ३४
२०	५ १३ ४३	७ ०९ ०५	९ २३ ३६	११ ४३ ५५	१४ ०१ १४	१६ १७ ३१	१८ ३६ ५९	२० ५५ ३७	२२ ५९ ४७	० ४६ ११	२ १३ ४३	३ ३८ ३८
२१	५ ०९ ४७	७ ०५ ०९	९ १९ ४०	११ ४० ००	१३ ५७ १९	१६ १३ ३५	१८ ३३ ०३	२० ५१ ४१	२२ ५५ ५१	० ४२ १५	२ ०९ ४७	३ ३४ ४२
२२	५ ०५ ५२	७ ०१ १३	९ १५ ४४	११ ३६ ०४	१३ ५३ २३	१६ ०९ ४०	१८ २९ ०८	२० ४७ ४५	२२ ५१ ५५	० ३८ १९	२ ०५ ५१	३ ३० ४६
२३	५ ०१ ५६	६ ५७ १७	९ ११ ४८	११ ३२ ०८	१३ ४९ २७	१६ ०५ ४४	१८ २५ १२	२० ४३ ४९	२२ ४७ ५९	० ३४ २३	२ ०१ ५५	३ २६ ५०
२४	४ ५८ ००	६ ५३ २२	९ ०७ ५२	११ २८ १२	१३ ४५ ३१	१६ ०१ ४८	१८ २१ १६	२० ३९ ५३	२२ ४४ ०३	० ३० २७	१ ५७ ५९	३ २२ ५४
२५	४ ५४ ०४	६ ४९ २६	९ ०३ ५६	११ २४ १६	१३ ४१ ३५	१५ ५७ ५२	१८ १७ २०	२० ३५ ५७	२२ ४० ०८	० २६ ३२	१ ५४ ०३	३ १८ ५९
२६	४ ५० ०८	६ ४५ ३०	९ ०० ००	११ २० २०	१३ ३७ ३९	१५ ५३ ५६	१८ १३ २४	२० ३२ ०२	२२ ३६ १२	० २२ ३६	१ ५० ०७	३ १५ ०३
२७	४ ४६ १२	६ ४१ ३४	८ ५६ ०४	११ १६ २४	१३ ३३ ४३	१५ ५० ००	१८ ०९ २८	२० २८ ०६	२२ ३२ १६	० १४ ४४	१ ४६ १२	३ ११ ०७
२८	४ ४२ १६	६ ३७ ३८	८ ५२ ०८	११ १२ २८	१३ २९ ४७	१५ ४६ ०४	१८ ०५ ३२	२० २४ १०	२२ २८ २०	० १० ४८	१ ४२ १६	३ ०७ ११
२९	४ ३८ २०	६ ३३ ४२	८ ४८ १२	११ ०८ ३२	१३ २५ ५१	१५ ४२ ०८	१८ ०१ ३६	२० २० १४	२२ २४ २४	० ०६ ५२	१ ३८ २०	३ ०३ १५
३०	४ ३४ २४	६ २९ ४६	८ ४४ १७	११ ०४ ३७	१३ २१ ५५	१५ ३८ १२	१७ ५७ ४०	२० १६ १८	२२ २० २८	० ०२ ५६	१ ३४ २४	२ ५९ १९
३१	४ ३० २८	६ २५ ५०	८ ४० २१	११ ०० ४१	१३ १८ ००	१५ ३४ १७	१७ ५३ ४५	२० १२ २२	२२ १६ ३२	२३ ५९ ००	१ ३० २८	२ ५५ २३

जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ २१ ५४	८ ३६ २५	१० ५६ ४५	१३ १४ ०४	१५ ३० २१	१७ ४९ ४९	२० ०८ २६	२२ १२ ३६	२३ ५५ ०४	१ २६ ३२	२ ५१ २७	४ २६ ३३
२	६ १७ ५८	८ ३२ २९	१० ५२ ४९	१३ १० ०८	१५ २६ २५	१७ ४५ ५३	२० ०४ ३०	२२ ०८ ४०	२३ ५१ ०८	१ २२ ३६	२ ४७ ३१	४ २२ ३७
३	६ १४ ०३	८ २८ ३३	१० ४८ ५३	१३ ०६ १२	१५ २२ २९	१७ ४१ ५७	२० ०० ३४	२२ ०४ ४४	२३ ४७ १३	१ १८ ४०	२ ४३ ३५	४ १८ ४१
४	६ १० ०७	८ २४ ३७	१० ४४ ५७	१३ ०२ १६	१५ १८ ३३	१७ ३८ ०१	१९ ५६ ३८	२२ ०० ४९	२३ ४३ १७	१ १४ ४४	२ ३९ ४०	४ १४ ४५
५	६ ०६ ११	८ २० ४१	१० ४१ ०१	१२ ५८ २०	१५ १४ ३७	१७ ३४ ०५	१९ ५२ ४३	२१ ५६ ५३	२३ ३९ २१	१ १० ४८	२ ३५ ४४	४ १० ४९
६	६ ०२ १५	८ १६ ४५	१० ३७ ०५	१२ ५४ २४	१५ १० ४१	१७ ३० ०९	१९ ४८ ४७	२१ ५२ ५७	२३ ३५ २५	१ ०६ ५३	२ ३१ ४८	४ ०६ ५३
७	५ ५८ १९	८ १२ ४९	१० ३३ ०९	१२ ५० २८	१५ ०६ ४५	१७ २६ १३	१९ ४४ ५१	२१ ४९ ०१	२३ ३१ २९	१ ०२ ५७	२ २७ ५२	४ ०२ ५७
८	५ ५४ २३	८ ०८ ५४	१० २९ १३	१२ ४६ ३२	१५ ०२ ४९	१७ २२ १७	१९ ४० ५५	२१ ४५ ०५	२३ २७ ३३	० ५९ ०१	२ २३ ५६	३ ५९ ०१
९	५ ५० २७	८ ०४ ५८	१० २५ १८	१२ ४२ ३७	१४ ५८ ५४	१७ १८ २१	१९ ३६ ५९	२१ ४१ ०९	२३ २३ ३७	० ५५ ०५	२ २० ००	३ ५५ ०५
१०	५ ४६ ३१	८ ०१ ०२	१० २१ २२	१२ ३८ ४१	१४ ५४ ५८	१७ १४ २६	१९ ३३ ०३	२१ ३७ १३	२३ १९ ४१	० ५१ ०९	२ १६ ०४	३ ५१ ०९
११	५ ४२ ३५	७ ५७ ०६	१० १७ २६	१२ ३४ ४५	१४ ५१ ०२	१७ १० ३०	१९ २९ ०७	२१ ३३ १७	२३ १५ ४५	० ४७ १३	२ १२ ०८	३ ४७ १४
१२	५ ३८ ४०	७ ५३ १०	१० १३ ३०	१२ ३० ४९	१४ ४७ ०६	१७ ०६ ३४	१९ २५ ११	२१ २९ २१	२३ ११ ४९	० ४३ १७	२ ०८ १२	३ ४३ १८
१३	५ ३४ ४४	७ ४९ १४	१० ०९ ३४	१२ २६ ५३	१४ ४३ १०	१७ ०२ ३८	१९ २१ १५	२१ २५ २६	२३ ०७ ५४	० ३९ २१	२ ०४ १६	३ ३९ २२
१४	५ ३० ४८	७ ४५ १८	१० ०५ ३८	१२ २२ ५७	१४ ३९ १४	१६ ५८ ४२	१९ १७ २०	२१ २१ ३०	२३ ०३ ५८	० ३५ २५	२ ०० २१	३ ३५ २६
१५	५ २६ ५२	७ ४१ २२	१० ०१ ४२	१२ १९ ०१	१४ ३५ १८	१६ ५४ ४६	१९ १३ २४	२१ १७ ३४	२३ ०० ०२	० ३१ २९	१ ५६ २५	३ ३१ ३०
१६	५ २२ ५६	७ ३७ २६	९ ५७ ४६	१२ १५ ०५	१४ ३१ २२	१६ ५० ५०	१९ ०९ २८	२१ १३ ३८	२२ ५६ ०६	० २७ ३४	१ ५२ २९	३ २७ ३४
१७	५ १९ ००	७ ३३ ३१	९ ५३ ५०	१२ ११ ०९	१४ २७ २६	१६ ४६ ५४	१९ ०५ ३२	२१ ०९ ४२	२२ ५२ १०	० २३ ३८	१ ४८ ३३	३ २३ ३८
१८	५ १५ ०४	७ २९ ३५	९ ४९ ५४	१२ ०७ १३	१४ २३ ३०	१६ ४२ ५८	१९ ०१ ३६	२१ ०५ ४६	२२ ४८ १४	० १५ ४६	१ ४४ ३७	३ १९ ४२
१९	५ ११ ०८	७ २५ ३९	९ ४५ ५९	१२ ०३ १८	१४ १९ ३५	१६ ३९ ०२	१८ ५७ ४०	२१ ०१ ५०	२२ ४४ १८	० ११ ४०	१ ४० ४१	३ १५ ४६
२०	५ ०७ १२	७ २१ ४३	९ ४२ ०३	११ ५९ २२	१४ १५ ३९	१६ ३५ ०७	१८ ५३ ४४	२० ५७ ५४	२२ ४० २२	० ०७ ५४	१ ३६ ४५	३ ११ ५१
२१	५ ०३ १६	७ १७ ४७	९ ३८ ०७	११ ५५ २६	१४ ११ ४३	१६ ३१ ११	१८ ४९ ४८	२० ५३ ५८	२२ ३६ २६	० ०३ ५८	१ ३२ ४९	३ ०७ ५५
२२	४ ५९ २१	७ १३ ५१	९ ३४ ११	११ ५१ ३०	१४ ०७ ४७	१६ २७ १५	१८ ४५ ५२	२० ५० ०२	२२ ३२ ३१	० ०० ०२	१ २८ ५३	३ ०३ ५९
२३	४ ५५ २५	७ ०९ ५५	९ ३० १५	११ ४७ ३४	१४ ०३ ५१	१६ २३ १९	१८ ४१ ५६	२० ४६ ०७	२२ २८ ३५	२३ ५६ ०६	१ २४ ५७	३ ०० ०३
२४	४ ५१ २९	७ ०५ ५९	९ २६ १९	११ ४३ ३८	१३ ५९ ५५	१६ १९ २३	१८ ३८ ०१	२० ४२ ११	२२ २४ ३९	२३ ५२ १०	१ २१ ०२	२ ५६ ०७
२५	४ ४७ ३३	७ ०२ ०३	९ २२ २३	११ ३९ ४२	१३ ५५ ५९	१६ १५ २७	१८ ३४ ०५	२० ३८ १५	२२ २० ४३	२३ ४८ १५	१ १७ ०६	२ ५२ ११
२६	४ ४३ ३७	६ ५८ ०८	९ १८ २७	११ ३५ ४६	१३ ५२ ०३	१६ ११ ३१	१८ ३० ०९	२० ३४ १९	२२ १६ ४७	२३ ४४ १९	१ १३ १०	२ ४८ १५
२७	४ ३९ ४१	६ ५४ १२	९ १४ ३१	११ ३१ ५०	१३ ४८ ०७	१६ ०७ ३५	१८ २६ १३	२० ३० २३	२२ १२ ५१	२३ ४० २३	१ ०९ १४	२ ४४ १९
२८	४ ३५ ४५	६ ५० १६	९ १० ३६	११ २७ ५५	१३ ४४ १२	१६ ०३ ३९	१८ २२ १७	२० २६ २७	२२ ०८ ५५	२३ ३६ २७	१ ०५ १८	२ ४० २३
२९	४ ३१ ४९	६ ४६ २०	९ ०६ ४०	११ २३ ५९	१३ ४० १६	१५ ५९ ४४	१८ १८ २१	२० २२ ३१	२२ ०४ ५९	२३ ३२ ३१	१ ०१ २२	२ ३६ २७
३०	४ २७ ५३	६ ४२ २४	९ ०२ ४४	११ २० ०३	१३ ३६ २०	१५ ५५ ४८	१८ १४ २५	२० १८ ३५	२२ ०१ ०३	२३ २८ ३५	० ५७ २६	२ ३२ ३२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
D/Fin2005\Anand\Aryabhatt2006\Lagan2006-7.pmd 86

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३८ २८	८ ५८ ४८	११ १६ ०७	१३ ३२ २४	१५ ५१ ५२	१८ १० २१	२० १४ ३९	२१ ५७ ०७	२३ २४ ३९	० ५३ ३०	२ २८ ३६	४ २३ ५७
२	६ ३४ ३२	८ ५४ ५२	११ १२ ११	१३ २८ २८	१५ ४७ ५६	१८ ०६ ३३	२० १० ४३	२१ ५३ ११	२३ २० ४३	० ४९ ३४	२ २४ ४०	४ २० ०२
३	६ ३० ३६	८ ५० ५६	११ ०८ १५	१३ २४ ३२	१५ ४४ ००	१८ ०२ ३८	२० ०६ ४८	२१ ४९ १६	२३ १६ ४७	० ४५ ३८	२ २० ४४	४ १६ ०६
४	६ २६ ४०	८ ४७ ००	११ ०४ १९	१३ २० ३६	१५ ४० ०४	१७ ५८ ४२	२० ०२ ५२	२१ ४५ २०	२३ १२ ५१	० ४१ ४३	२ १६ ४८	४ १२ १०
५	६ २२ ४४	८ ४३ ०४	११ ०० २३	१३ १६ ४०	१५ ३६ ०८	१७ ५४ ४६	१९ ५८ ५६	२१ ४१ २४	२३ ०८ ५६	० ३७ ४७	२ १२ ५२	४ ०८ १४
६	६ १८ ४९	८ ३९ ०८	१० ५६ २७	१३ १२ ४४	१५ ३२ १२	१७ ५० ५०	१९ ५५ ००	२१ ३७ २८	२३ ०५ ००	० ३३ ५१	२ ०८ ५६	४ ०४ १८
७	६ १४ ५३	८ ३५ १२	१० ५२ ३१	१३ ०८ ४८	१५ २८ १६	१७ ४६ ५४	१९ ५१ ०४	२१ ३३ ३२	२३ ०१ ०४	० २९ ५५	२ ०५ ००	४ ०० २२
८	६ १० ५७	८ ३१ १७	१० ४८ ३६	१३ ०४ ५३	१५ २४ २१	१७ ४२ ५८	१९ ४७ ०८	२१ २९ ३६	२२ ५७ ०८	० २५ ५९	२ ०१ ०४	३ ५६ २६
९	६ ०७ ०१	८ २७ २१	१० ४४ ४०	१३ ०० ५७	१५ २० २५	१७ ३९ ०२	१९ ४३ १२	२१ २५ ४०	२२ ५३ १२	० २२ ०३	१ ५७ ०८	३ ५२ ३०
१०	६ ०३ ०५	८ २३ २५	१० ४० ४४	१२ ५७ ०१	१५ १६ २९	१७ ३५ ०६	१९ ३९ १६	२१ २१ ४४	२२ ४९ १६	० १४ ११	१ ५३ १३	३ ४८ ३४
११	५ ५९ ०९	८ १९ २९	१० ३६ ४८	१२ ५३ ०५	१५ १२ ३३	१७ ३१ १०	१९ ३५ २०	२१ १७ ४८	२२ ४५ २०	० १० १५	१ ४९ १७	३ ४४ ३९
१२	५ ५५ १३	८ १५ ३३	१० ३२ ५२	१२ ४९ ०९	१५ ०८ ३७	१७ २७ १४	१९ ३१ २४	२१ १३ ५२	२२ ४१ २४	० ०६ १९	१ ४५ २१	३ ४० ४३
१३	५ ५१ १७	८ ११ ३७	१० २८ ५६	१२ ४५ १३	१५ ०४ ४१	१७ २३ १९	१९ २७ २९	२१ ०९ ५७	२२ ३७ २८	० ०२ २४	१ ४१ २५	३ ३६ ४७
१४	५ ४७ २१	८ ०७ ४१	१० २५ ००	१२ ४१ १७	१५ ०० ४५	१७ १९ २३	१९ २३ ३३	२१ ०६ ०१	२२ ३३ ३२	२३ ५८ २८	१ ३७ २९	३ ३२ ५१
१५	५ ४३ २६	८ ०३ ४५	१० २१ ०४	१२ ३७ २१	१४ ५६ ४९	१७ १५ २७	१९ १९ ३७	२१ ०२ ०५	२२ २९ ३६	२३ ५४ ३२	१ ३३ ३३	३ २८ ५५
१६	५ ३९ ३०	७ ५९ ४९	१० १७ ०८	१२ ३३ २५	१४ ५२ ५३	१७ ११ ३१	१९ १५ ४१	२० ५८ ०९	२२ २५ ४१	२३ ५० ३६	१ २९ ३७	३ २४ ५९
१७	५ ३५ ३४	७ ५५ ५४	१० १३ १२	१२ २९ २९	१४ ४८ ५७	१७ ०७ ३५	१९ ११ ४५	२० ५४ १३	२२ २१ ४५	२३ ४६ ४०	१ २५ ४१	३ २१ ०३
१८	५ ३१ ३८	७ ५१ ५८	१० ०९ १७	१२ २५ ३४	१४ ४५ ०२	१७ ०३ ३९	१९ ०७ ४९	२० ५० १७	२२ १७ ४९	२३ ४२ ४४	१ २१ ४५	३ १७ ०७
१९	५ २७ ४२	७ ४८ ०२	१० ०५ २१	१२ २१ ३८	१४ ४१ ०६	१६ ५९ ४३	१९ ०३ ५३	२० ४६ २१	२२ १३ ५३	२३ ३८ ४८	१ १७ ४९	३ १३ ११
२०	५ २३ ४६	७ ४४ ०६	१० ०१ २५	१२ १७ ४२	१४ ३७ १०	१६ ५५ ४७	१८ ५९ ५७	२० ४२ २५	२२ ०९ ५७	२३ ३४ ५२	१ १३ ५४	३ ०९ १५
२१	५ १९ ५०	७ ४० १०	९ ५७ २९	१२ १३ ४६	१४ ३३ १४	१६ ५१ ५१	१८ ५६ ०१	२० ३८ २९	२२ ०६ ०१	२३ ३० ५६	१ ०९ ५८	३ ०५ २०
२२	५ १५ ५४	७ ३६ १४	९ ५३ ३३	१२ ०९ ५०	१४ २९ १८	१६ ४७ ५५	१८ ५२ ०६	२० ३४ ३४	२२ ०२ ०५	२३ २७ ००	१ ०६ ०२	३ ०१ २४
२३	५ ११ ५८	७ ३२ १८	९ ४९ ३७	१२ ०५ ५४	१४ २५ २२	१६ ४४ ००	१८ ४८ १०	२० ३० ३८	२१ ५८ ०९	२३ २३ ०५	१ ०२ ०६	२ ५७ २८
२४	५ ०८ ०२	७ २८ २२	९ ४५ ४१	१२ ०१ ५८	१४ २१ २६	१६ ४० ०४	१८ ४४ १४	२० २६ ४२	२१ ५४ १३	२३ १९ ०९	० ५८ १०	२ ५३ ३२
२५	५ ०४ ०७	७ २४ २६	९ ४१ ४५	११ ५८ ०२	१४ १७ ३०	१६ ३६ ०८	१८ ४० १८	२० २२ ४६	२१ ५० १७	२३ १५ १३	० ५४ १४	२ ४९ ३६
२६	५ ०० ११	७ २० ३०	९ ३७ ४९	११ ५४ ०६	१४ १३ ३४	१६ ३२ १२	१८ ३६ २२	२० १८ ५०	२१ ४६ २२	२३ ११ १७	० ५० १८	२ ४५ ४०
२७	४ ५६ १५	७ १६ ३५	९ ३३ ५४	११ ५० ११	१४ ०९ ३९	१६ २८ १६	१८ ३२ २६	२० १४ ५४	२१ ४२ २६	२३ ०७ २१	० ४६ २२	२ ४१ ४४
२८	४ ५२ १९	७ १२ ३९	९ २९ ५८	११ ४६ १५	१४ ०५ ४३	१६ २४ २०	१८ २८ ३०	२० १० ५८	२१ ३८ ३०	२३ ०३ २५	० ४२ २६	२ ३७ ४८
२९	४ ४८ २३	७ ०८ ४३	९ २६ ०२	११ ४२ १९	१४ ०१ ४७	१६ २० २४	१८ २४ ३४	२० ०७ ०२	२१ ३४ ३४	२२ ५९ २९	० ३८ ३०	२ ३३ ५२
३०	४ ४४ २७	७ ०४ ४७	९ २२ ०६	११ ३८ २३	१३ ५७ ५१	१६ १६ २८	१८ २० ३८	२० ०३ ०६	२१ ३० ३८	२२ ५५ ३३	० ३४ ३५	२ २९ ५७
३१	४ ४० ३१	७ ०० ५१	९ १८ १०	११ ३४ २७	१३ ५३ ५५	१६ १२ ३२	१८ १६ ४२	१९ ५९ १०	२१ २६ ४२	२२ ५१ ३७	० ३० ३९	२ २६ ०१

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५६ ५५	९ १४ १४	११ ३० ३१	१३ ४९ ५९	१६ ०८ ३७	१८ १२ ४६	१९ ५५ १४	२१ २२ ४६	२२ ४७ ४१	० २६ ४३	२ २२ ०५	४ ३६ ३५
२	६ ५२ ५९	९ १० १८	११ २६ ३५	१३ ४६ ०३	१६ ०४ ४१	१८ ०८ ५१	१९ ५१ १९	२१ १८ ५०	२२ ४३ ४६	० २२ ४७	२ १८ ०९	४ ३२ ३९
३	६ ४९ ०३	९ ०६ २२	११ २२ ३९	१३ ४२ ०७	१६ ०० ४५	१८ ०४ ५५	१९ ४७ २३	२१ १४ ५४	२२ ३९ ५०	०-१४ ५५	२ १४ १३	४ २८ ४३
४	६ ४५ ०७	९ ०२ २६	११ १८ ४३	१३ ३८ ११	१५ ५६ ४९	१८ ०० ५९	१९ ४३ २७	२१ १० ५८	२२ ३५ ५४	० १० ५९	२ १० १७	४ २४ ४८
५	६ ४१ ११	८ ५८ ३०	११ १४ ४७	१३ ३४ १५	१५ ५२ ५३	१७ ५७ ०३	१९ ३९ ३१	२१ ०७ ०३	२२ ३१ ५८	० ०७ ०३	२ ०६ २१	४ २० ५२
६	६ ३७ १६	८ ५४ ३५	११ १० ५२	१३ ३० २०	१५ ४८ ५७	१७ ५३ ०७	१९ ३५ ३५	२१ ०३ ०७	२२ २८ ०२	० ०३ ०७	२ ०२ २५	४ १६ ५६
७	६ ३३ २०	८ ५० ३९	११ ०६ ५६	१३ २६ २४	१५ ४५ ०१	१७ ४९ ११	१९ ३१ ३९	२० ५९ ११	२२ २४ ०६	२३ ५९ ११	१ ५८ २९	४ १३ ००
८	६ २९ २४	८ ४६ ४३	११ ०३ ००	१३ २२ २८	१५ ४१ ०५	१७ ४५ १५	१९ २७ ४३	२० ५५ १५	२२ २० १०	२३ ५५ १६	१ ५४ ३३	४ ०९ ०४
९	६ २५ २८	८ ४२ ४७	१० ५९ ०४	१३ १८ ३२	१५ ३७ ०९	१७ ४१ १९	१९ २३ ४७	२० ५१ १९	२२ १६ १४	२३ ५१ २०	१ ५० ३७	४ ०५ ०८
१०	६ २१ ३२	८ ३८ ५१	१० ५५ ०८	१३ १४ ३६	१५ ३३ १३	१७ ३७ २३	१९ १९ ५१	२० ४७ २३	२२ १२ १८	२३ ४७ २४	१ ४६ ४२	४ ०१ १२
११	६ १७ ३६	८ ३४ ५५	१० ५१ १२	१३ १० ४०	१५ २९ १७	१७ ३३ २७	१९ १५ ५५	२० ४३ २७	२२ ०८ २२	२३ ४३ २८	१ ४२ ४६	३ ५७ १६
१२	६ १३ ४०	८ ३० ५९	१० ४७ १६	१३ ०६ ४४	१५ २५ २२	१७ २९ ३२	१९ १२ ००	२० ३९ ३१	२२ ०४ २६	२३ ३९ ३२	१ ३८ ५०	३ ५३ २०
१३	६ ०९ ४४	८ २७ ०३	१० ४३ २०	१३ ०२ ४८	१५ २१ २६	१७ २५ ३६	१९ ०८ ०४	२० ३५ ३५	२२ ०० ३१	२३ ३५ ३६	१ ३४ ५४	३ ४९ २४
१४	६ ०५ ४८	८ २३ ०७	१० ३९ २४	१२ ५८ ५२	१५ १७ ३०	१७ २१ ४०	१९ ०४ ०८	२० ३१ ३९	२१ ५६ ३५	२३ ३१ ४०	१ ३० ५८	३ ४५ २९
१५	६ ०१ ५३	८ १९ ११	१० ३५ २८	१२ ५४ ५६	१५ १३ ३४	१७ १७ ४४	१९ ०० १२	२० २७ ४४	२१ ५२ ३९	२३ २७ ४४	१ २७ ०२	३ ४१ ३३
१६	५ ५७ ५७	८ १५ १६	१० ३१ ३३	१२ ५१ ०१	१५ ०९ ३८	१७ १३ ४८	१८ ५६ १६	२० २३ ४८	२१ ४८ ४३	२३ २३ ४८	१ २३ ०६	३ ३७ ३७
१७	५ ५४ ०१	८ ११ २०	१० २७ ३७	१२ ४७ ०५	१५ ०५ ४२	१७ ०९ ५२	१८ ५२ २०	२० १९ ५२	२१ ४४ ४७	२३ १९ ५२	१ १९ १०	३ ३३ ४१
१८	५ ५० ०५	८ ०७ २४	१० २३ ४१	१२ ४३ ०९	१५ ०१ ४६	१७ ०५ ५६	१८ ४८ २४	२० १५ ५६	२१ ४० ५१	२३ १५ ५७	१ १५ १४	३ २९ ४५
१९	५ ४६ ०९	८ ०३ २८	१० १९ ४५	१२ ३९ १३	१४ ५७ ५०	१७ ०२ ००	१८ ४४ २८	२० १२ ००	२१ ३६ ५५	२३ १२ ०१	१ ११ १९	३ २५ ४९
२०	५ ४२ १३	७ ५९ ३२	१० १५ ४९	१२ ३५ १७	१४ ५३ ५४	१६ ५८ ०४	१८ ४० ३२	२० ०८ ०४	२१ ३२ ५९	२३ ०८ ०५	१ ०७ २३	३ २१ ५३
२१	५ ३८ १७	७ ५५ ३६	१० ११ ५३	१२ ३१ २१	१४ ४९ ५९	१६ ५४ ०८	१८ ३६ ३६	२० ०४ ०८	२१ २९ ०३	२३ ०४ ०९	१ ०३ २७	३ १७ ५७
२२	५ ३४ २१	७ ५१ ४०	१० ०७ ५७	१२ २७ २५	१४ ४६ ०३	१६ ५० १३	१८ ३२ ४१	२० ०० १२	२१ २५ ०७	२३ ०० १३	० ५९ ३१	३ १४ ०१
२३	५ ३० २५	७ ४७ ४४	१० ०४ ०१	१२ २३ २९	१४ ४२ ०७	१६ ४६ १७	१८ २८ ४५	१९ ५६ १६	२१ २१ १२	२२ ५६ १७	० ५५ ३५	३ १० ०६
२४	५ २६ २९	७ ४३ ४८	१० ०० ०५	१२ १९ ३३	१४ ३८ ११	१६ ४२ २१	१८ २४ ४९	१९ ५२ २०	२१ १७ १६	२२ ५२ २१	० ५१ ३९	३ ०६ १०
२५	५ २२ ३४	७ ३९ ५२	९ ५६ ०९	१२ १५ ३७	१४ ३४ १५	१६ ३८ २५	१८ २० ५३	१९ ४८ २४	२१ १३ २०	२२ ४८ २५	० ४७ ४३	३ ०२ १४
२६	५ १८ ३८	७ ३५ ५७	९ ५२ १४	१२ ११ ४२	१४ ३० १९	१६ ३४ २९	१८ १६ ५७	१९ ४४ २९	२१ ०९ २४	२२ ४४ २९	० ४३ ४७	२ ५८ १८
२७	५ १४ ४२	७ ३२ ०१	९ ४८ १८	१२ ०७ ४६	१४ २६ २३	१६ ३० ३३	१८ १३ ०१	१९ ४० ३३	२१ ०५ २८	२२ ४० ३३	० ३९ ५१	२ ५४ २२
२८	५ १० ४६	७ २८ ०५	९ ४४ २२	१२ ०३ ५०	१४ २२ २७	१६ २६ ३७	१८ ०९ ०५	१९ ३६ ३७	२१ ०१ ३२	२२ ३६ ३७	० ३५ ५५	२ ५० २६
२९	५ ०६ ५०	७ २४ ०९	९ ४० २६	११ ५९ ५४	१४ १८ ३१	१६ २२ ४१	१८ ०५ ०९	१९ ३२ ४१	२० ५७ ३६	२२ ३२ ४२	० ३२ ००	२ ४६ ३०
३०	५ ०२ ५४	७ २० १३	९ ३६ ३०	११ ५५ ५८	१४ १४ ३५	१६ १८ ४५	१८ ०१ १३	१९ २८ ४५	२० ५३ ४०	२२ २८ ४६	० २८ ०४	२ ४२ ३४
३१	४ ५८ ५८	७ १६ १७	९ ३२ ३४	११ ५२ ०२	१४ १० ४०	१६ १४ ५०	१७ ५७ १७	१९ २४ ४९	२० ४९ ४४	२२ २४ ५०	० २४ ०८	२ ३८ ३८

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड | अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२९	४ ४८ २३	७ ०८ ४३	९ २६ ०२	११ ४२ ११	१४ ०१ ४३	१६ २० २४	१८ २४ ३४	२० ०७ ०२	२२ ३४ ३४	२३ ५९ २१	० ३८ ३०	२ ३३ ५२
३०	४ ४४ २७	७ ०४ ४३	९ २२ ०६	११ ३८ २३	१३ ५७ ५१	१६ १६ २८	१८ २० ३८	२० ०३ ०६	२२ ३० ३८	२३ ५५ ३३	० ३४ ३४	२ २९ ५७
३१	४ ४० ३१	७ ०० ५१	९ १८ १०	११ ३४ २७	१३ ५३ ५५	१६ १२ ३२	१८ १६ ४२	१९ ५९ १०	२२ २६ ४२	२३ ५१ ३७	० ३० ३९	२ २६ ०१

२९	५ ०६ ५०	७ २४ ०९	९ ४० २६	११ ५९ ५४	१४ १८ ३१	१६ २२ ४२	१८ ०५ ०९	१९ ३२ ४२	२० ५७ ३६	२२ ३२ ४२	० ३२ ००	२ ४६ ३०
३०	५ ०२ ५४	७ २० १३	९ ३६ ३०	११ ५५ ५८	१४ १४ ३५	१६ १८ ४५	१८ ०१ १३	१९ २८ ४५	२० ५३ ४०	२२ २८ ४६	० २८ ०४	२ ४२ ३४
३१	४ ५८ ५८	७ १६ १७	९ ३२ ३४	११ ५२ ०२	१४ १० ४०	१६ १४ ५०	१७ ५७ १७	१९ २४ ४९	२० ४९ ४४	२२ २४ ५०	० २४ ०८	२ ३८ ३८

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२ २१	९ २८ ३८	११ ४८ ०६	१४ ०६ ४४	१६ १० ५४	१७ ५३ २२	१९ २० ५३	२० ४५ ४८	२२ २० ५४	० १६ १६	२ ३४ ४२	४ ५५ ०२
२	७ ०८ २५	९ २४ ४२	११ ४४ १०	१४ ०२ ४८	१६ ०६ ५८	१७ ४९ २६	१९ १६ ५७	२० ४१ ५३	२२ १६ ५८	० १२ २०	२ ३० ४७	४ ५१ ०६
३	७ ०४ २९	९ २० ४६	११ ४० १४	१३ ५८ ५२	१६ ०३ ०२	१७ ४५ ३०	१९ १३ ०१	२० ३७ ५७	२२ १३ ०२	० ०८ २४	२ २६ ५१	४ ४७ १०
४	७ ०० ३३	९ १६ ५०	११ ३६ १८	१३ ५४ ५६	१५ ५९ ०६	१७ ४१ ३४	१९ ०९ ०५	२० ३४ ०१	२२ ०९ ०६	० ०४ २८	२ २२ ५५	४ ४३ १५
५	६ ५६ ३८	९ १२ ५५	११ ३२ २३	१३ ५१ ००	१५ ५५ १०	१७ ३७ ३८	१९ ०५ १०	२० ३० ०५	२२ ०५ १०	० ०० ३२	२ १८ ५९	४ ३९ १९
६	६ ५२ ४२	९ ०८ ५९	११ २८ २७	१३ ४७ ०४	१५ ५१ १४	१७ ३३ ४२	१९ ०१ १४	२० २६ ०९	२२ ०१ १४	२३ ५६ ३६	२ १५ ०३	४ ३५ २३
७	६ ४८ ४६	९ ०५ ०३	११ २४ ३१	१३ ४३ ०८	१५ ४७ १८	१७ २९ ४६	१८ ५७ १८	२० २२ १३	२१ ५७ १८	२३ ५२ ४०	२ ११ ०७	४ ३१ २७
८	६ ४४ ५०	९ ०१ ०७	११ २० ३५	१३ ३९ १२	१५ ४३ २२	१७ २५ ५०	१८ ५३ २२	२० १८ १७	२१ ५३ २२	२३ ४८ ४५	२ ०७ ११	४ २७ ३१
९	६ ४० ५४	८ ५७ ११	११ १६ ३९	१३ ३५ १६	१५ ३९ २६	१७ २१ ५४	१८ ४९ २६	२० १४ २१	२१ ४९ २७	२३ ४४ ४९	२ ०३ १५	४ २३ ३५
१०	६ ३६ ५८	८ ५३ १५	११ १२ ४३	१३ ३१ २१	१५ ३५ ३०	१७ १७ ५८	१८ ४५ ३०	२० १० २५	२१ ४५ ३१	२३ ४० ५३	१ ५९ १९	४ १९ ३९
११	६ ३३ ०२	८ ४९ १९	११ ०८ ४७	१३ २७ २५	१५ ३१ ३५	१७ १४ ०२	१८ ४१ ३४	२० ०६ २९	२१ ४१ ३५	२३ ३६ ५७	१ ५५ २३	४ १५ ४३
१२	६ २९ ०६	८ ४५ २३	११ ०४ ५१	१३ २३ २९	१५ २७ ३९	१७ १० ०७	१८ ३७ ३८	२० ०२ ३३	२१ ३७ ३९	२३ ३३ ०१	१ ५१ २८	४ ११ ४७
१३	६ २५ १०	८ ४१ २७	११ ०० ५५	१३ १९ ३३	१५ २३ ४३	१७ ०६ ११	१८ ३३ ४२	१९ ५८ ३८	२१ ३३ ४३	२३ २९ ०५	१ ४७ ३२	४ ०७ ५१
१४	६ २१ १४	८ ३७ ३१	१० ५६ ५९	१३ १५ ३७	१५ १९ ४७	१७ ०२ १५	१८ २९ ४६	१९ ५४ ४२	२१ २९ ४७	२३ २५ ०९	१ ४३ ३६	४ ०३ ५६
१५	६ १७ १९	८ ३३ ३६	१० ५३ ०४	१३ ११ ४२	१५ १५ ५१	१६ ५८ १९	१८ २५ ५१	१९ ५० ४६	२१ २५ ५१	२३ २१ १३	१ ३९ ४०	३ ६० ००
१६	६ १३ २३	८ २९ ४०	१० ४९ ०८	१३ ०७ ४५	१५ ११ ५५	१६ ५४ २३	१८ २१ ५५	१९ ४६ ५०	२१ २१ ५५	२३ १७ १७	१ ३५ ४४	३ ५६ ०४
१७	६ ०९ २७	८ २५ ४४	१० ४५ १२	१३ ०३ ४९	१५ ०७ ५९	१६ ५० २७	१८ १७ ५९	१९ ४२ ५४	२१ १७ ५९	२३ १३ २१	१ ३१ ४८	३ ५२ ०८
१८	६ ०५ ३१	८ २१ ४८	१० ४१ १६	१२ ५९ ५३	१५ ०४ ०३	१६ ४६ ३१	१८ १४ ०३	१९ ३८ ५८	२१ १४ ०४	२३ ०९ २६	१ २७ ५२	३ ४८ १२
१९	६ ०१ ३५	८ १७ ५२	१० ३७ २०	१२ ५५ ५७	१५ ०० ०७	१६ ४२ ३५	१८ १० ०७	१९ ३५ ०२	२१ १० ०८	२३ ०५ ३०	१ २३ ५६	३ ४४ १६
२०	५ ५७ ३९	८ १३ ५६	१० ३३ २४	१२ ५२ ०१	१४ ५६ ११	१६ ३८ ३९	१८ ०६ ११	१९ ३१ ०६	२१ ०६ १२	२३ ०१ ३४	१ २० ००	३ ४० २०
२१	५ ५३ ४३	८ १० ००	१० २९ २८	१२ ४८ ०६	१४ ५२ १६	१६ ३४ ४३	१८ ०२ १५	१९ २७ १०	२१ ०२ १६	२२ ५७ ३८	१ १६ ०४	३ ३६ २४
२२	५ ४९ ४७	८ ०६ ०४	१० २५ ३२	१२ ४४ १०	१४ ४८ २०	१६ ३० ४८	१७ ५८ १९	१९ २३ १४	२० ५८ २०	२२ ५३ ४२	१ १२ ०८	३ ३२ २८
२३	५ ४५ ५१	८ ०२ ०८	१० २१ ३६	१२ ४० १४	१४ ४४ २४	१६ २६ ५२	१७ ५४ २३	१९ १९ १९	२० ५४ २४	२२ ४९ ४६	१ ०८ १३	३ २८ ३२
२४	५ ४१ ५५	७ ५८ १२	१० १७ ४०	१२ ३६ १८	१४ ४० २८	१६ २२ ५६	१७ ५० २७	१९ १५ २३	२० ५० २८	२२ ४५ ५०	१ ०४ १७	३ २४ ३७
२५	५ ३८ ००	७ ५४ १७	१० १३ ४५	१२ ३२ २२	१४ ३६ ३२	१६ १९ ००	१७ ४६ ३१	१९ ११ २७	२० ४६ ३२	२२ ४१ ५४	१ ०० २१	३ २० ४१
२६	५ ३४ ०४	७ ५० २१	१० ०९ ४९	१२ २८ २६	१४ ३२ ३६	१६ १५ ०४	१७ ४२ ३६	१९ ०७ ३१	२० ४२ ३६	२२ ३७ ५८	० ५६ २५	३ १६ ४५
२७	५ ३० ०८	७ ४६ २५	१० ०५ ५३	१२ २४ ३०	१४ २८ ४०	१६ ११ ०८	१७ ३८ ४०	१९ ०३ ३५	२० ३८ ४०	२२ ३४ ०२	० ५२ २९	३ १२ ४९
२८	५ २६ १२	७ ४२ २९	१० ०१ ५७	१२ २० ३४	१४ २४ ४४	१६ ०७ १२	१७ ३४ ४४	१८ ५९ ३९	२० ३४ ४५	२२ ३० ०७	० ४८ ३३	३ ०८ ५३
२९	५ २२ १६	७ ३८ ३३	९ ५८ ०१	१२ १६ ३८	१४ २० ४८	१६ ०३ १६	१७ ३० ४८	१८ ५५ ४३	२० ३० ४९	२२ २६ ११	० ४४ ३७	३ ०४ ५७
३०	५ १८ २०	७ ३४ ३७	९ ५४ ०५	१२ १२ ४३	१४ १६ ५२	१५ ५९ २०	१७ २६ ५२	१८ ५१ ४७	२० २६ ५३	२२ २२ १५	० ४० ४१	३ ०१ ०१

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३० ४१	९ ५० ०९	१२ ०८ ४७	१४ १२ ५७	१५ ५५ २४	१७ २२ ५६	१८ ४७ ५१	२० २२ ५७	२२ १८ १९	० ३६ ४५	२ ५७ ०५	५ १४ २४
२	७ २६ ४५	९ ४६ १३	१२ ०४ ५१	१४ ०९ ०१	१५ ५१ २८	१७ १९ ००	१८ ४३ ५५	२० १९ ०१	२२ १४ २३	० ३२ ४९	२ ५३ ०९	५ १० २८
३	७ २२ ४९	९ ४२ १७	१२ ०० ५५	१४ ०५ ०५	१५ ४७ ३३	१७ १५ ०४	१८ ३९ ५९	२० १५ ०५	२२ १० २७	० २८ ५४	२ ४९ १३	५ ०६ ३२
४	७ १८ ५३	९ ३८ २१	११ ५६ ५९	१४ ०१ ०९	१५ ४३ ३७	१७ ११ ०८	१८ ३६ ०४	२० ११ ०९	२२ ०६ ३१	० २४ ५८	२ ४५ १७	५ ०२ ३६
५	७ १४ ५८	९ ३४ २६	११ ५३ ०३	१३ ५७ १३	१५ ३९ ४१	१७ ०७ १२	१८ ३२ ०८	२० ०७ १३	२२ ०२ ३५	० १७ ०६	२ ४१ २२	४ ५८ ४१
६	७ ११ ०२	९ ३० ३०	११ ४९ ०७	१३ ५३ १७	१५ ३५ ४५	१७ ०३ १७	१८ २८ १२	२० ०३ १७	२१ ५८ ३९	० १३ १०	२ ३७ २६	४ ५४ ४५
७	७ ०७ ०६	९ २६ ३४	११ ४५ ११	१३ ४९ २१	१५ ३१ ४९	१६ ५९ २१	१८ २४ १६	१९ ५९ २१	२१ ५४ ४३	० ०९ १४	२ ३३ ३०	४ ५० ४९
८	७ ०३ १०	९ २२ ३८	११ ४१ १५	१३ ४५ २५	१५ २७ ५३	१६ ५५ २५	१८ २० २०	१९ ५५ २५	२१ ५० ४८	० ०५ १८	२ २९ ३४	४ ४६ ५३
९	६ ५९ १४	९ १८ ४२	११ ३७ १९	१३ ४१ २९	१५ २३ ५७	१६ ५१ २९	१८ १६ २४	१९ ५१ ३०	२१ ४६ ५२	० ०१ २२	२ २५ ३८	४ ४२ ५७
१०	६ ५५ १८	९ १४ ४६	११ ३३ २४	१३ ३७ ३३	१५ २० ०१	१६ ४७ ३३	१८ १२ २८	१९ ४७ ३४	२१ ४२ ५६	२३ ५७ २६	२ २१ ४२	४ ३९ ०१
११	६ ५१ २२	९ १० ५०	११ २९ २८	१३ ३३ ३७	१५ १६ ०५	१६ ४३ ३७	१८ ०८ ३२	१९ ४३ ३८	२१ ३९ ००	२३ ५३ ३०	२ १७ ४६	४ ३५ ०५
१२	६ ४७ २६	९ ०६ ५४	११ २५ ३२	१३ २९ ४२	१५ १२ ०९	१६ ३९ ४१	१८ ०४ ३६	१९ ३९ ४२	२१ ३५ ०४	२३ ४९ ३५	२ १३ ५०	४ ३१ ०९
१३	६ ४३ ३०	९ ०२ ५८	११ २१ ३६	१३ २५ ४६	१५ ०८ १४	१६ ३५ ४५	१८ ०० ४०	१९ ३५ ४६	२१ ३१ ०८	२३ ४५ ३९	२ ०९ ५४	४ २७ १३
१४	६ ३९ ३४	८ ५९ ०२	११ १७ ४०	१३ २१ ५०	१५ ०४ १८	१६ ३१ ४९	१७ ५६ ४५	१९ ३१ ५०	२१ २७ १२	२३ ४१ ४३	२ ०५ ५९	४ २३ १७
१५	६ ३५ ३९	८ ५५ ०७	११ १३ ४४	१३ १७ ५४	१५ ०० २२	१६ २७ ५३	१७ ५२ ४९	१९ २७ ५४	२१ २३ १६	२३ ३७ ४७	२ ०२ ०३	४ १९ २२
१६	६ ३१ ४३	८ ५१ ११	११ ०९ ४८	१३ १३ ५८	१४ ५६ २६	१६ २३ ५७	१७ ४८ ५३	१९ २३ ५८	२१ १९ २०	२३ ३३ ५१	१ ५८ ०७	४ १५ २६
१७	६ २७ ४७	८ ४७ १५	११ ०५ ५२	१३ १० ०२	१४ ५२ ३०	१६ २० ०२	१७ ४४ ५७	१९ २० ०२	२१ १५ २४	२३ २९ ५५	१ ५४ ११	४ ११ ३०
१८	६ २३ ५१	८ ४३ १९	११ ०१ ५६	१३ ०६ ०६	१४ ४८ ३४	१६ १६ ०६	१७ ४१ ०१	१९ १६ ०६	२१ ११ २९	२३ २५ ५९	१ ५० १५	४ ०७ ३४
१९	६ १९ ५५	८ ३९ २३	१० ५८ ००	१३ ०२ १०	१४ ४४ ३८	१६ १२ १०	१७ ३७ ०५	१९ १२ ११	२१ ०७ ३३	२३ २२ ०३	१ ४६ १९	४ ०३ ३८
२०	६ १५ ५९	८ ३५ २७	१० ५४ ०४	१२ ५८ १४	१४ ४० ४२	१६ ०८ १४	१७ ३३ ०९	१९ ०८ १५	२१ ०३ ३७	२३ १८ ०७	१ ४२ २३	३ ५९ ४२
२१	६ १२ ०३	८ ३१ ३१	१० ५० ०९	१२ ५४ १८	१४ ३६ ४६	१६ ०४ १८	१७ २९ १३	१९ ०४ १९	२० ५९ ४२	२३ १४ ११	१ ३८ २७	३ ५५ ४६
२२	६ ०८ ०७	८ २७ ३५	१० ४६ १३	१२ ५० २३	१४ ३२ ५०	१६ ०० २२	१७ २५ १७	१९ ०० २३	२० ५५ ४५	२३ १० १६	१ ३४ ३१	३ ५१ ५०
२३	६ ०४ ११	८ २३ ३९	१० ४२ १७	१२ ४६ २७	१४ २८ ५५	१५ ५६ २६	१७ २१ २१	१८ ५६ २७	२० ५१ ४९	२३ ०६ २०	१ ३० ३५	३ ४७ ५४
२४	६ ०० १५	८ १९ ४३	१० ३८ २१	१२ ४२ ३१	१४ २४ ५९	१५ ५२ ३०	१७ १७ २६	१८ ५२ ३१	२० ४७ ५३	२३ ०२ २४	१ २६ ४०	३ ४३ ५८
२५	५ ५६ २०	८ १५ ४८	१० ३४ २५	१२ ३८ ३५	१४ २१ ०३	१५ ४८ ३४	१७ १३ ३०	१८ ४८ ३५	२० ४३ ५७	२२ ५८ २८	१ २२ ४४	३ ४० ०३
२६	५ ५२ २४	८ ११ ५२	१० ३० २९	१२ ३४ ३९	१४ १७ ०७	१५ ४४ ३८	१७ ०९ ३४	१८ ४४ ३९	२० ४० ०१	२२ ५४ ३२	१ १८ ४८	३ ३६ ०७
२७	५ ४८ २८	८ ०७ ५६	१० २६ ३३	१२ ३० ४३	१४ १३ ११	१५ ४० ४३	१७ ०५ ३८	१८ ४० ४३	२० ३६ ०५	२२ ५० ३६	१ १४ ५२	३ ३२ ११
२८	५ ४४ ३२	८ ०४ ००	१० २२ ३७	१२ २६ ४७	१४ ०९ १५	१५ ३६ ४७	१७ ०१ ४२	१८ ३६ ४७	२० ३२ १०	२२ ४६ ४०	१ १० ५६	३ २८ १५
२९	५ ४० ३६	८ ०० ०४	१० १८ ४१	१२ २२ ५१	१४ ०५ १९	१५ ३२ ५१	१६ ५७ ४६	१८ ३२ ५२	२० २८ १४	२२ ४२ ४४	१ ०७ ००	३ २४ १९
३०	५ ३६ ४०	७ ५६ ०८	१० १४ ४५	१२ १८ ५५	१४ ०१ २३	१५ २८ ५५	१६ ५३ ५०	१८ २८ ५६	२० २४ १८	२२ ३८ ४८	१ ०३ ०४	३ २० २३
३१	५ ३२ ४४	७ ५२ १२	१० १० ५०	१२ १४ ५९	१३ ५७ २७	१५ २४ ५९	१६ ४९ ५४	१८ २५ ००	२० २० २२	२२ ३४ ५२	० ५९ ०८	३ १६ २७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४८ १६	१० ०६ ५४	१२ ११ ०४	१३ ५३ ३१	१५ २१ ०३	१६ ४५ ५८	१८ २१ ०४	२० १६ २६	२२ ३० ५७	० ५५ १२	३ १२ ३१	५ २८ ४८
२	७ ४४ २०	१० ०२ ५८	१२ ०७ ०८	१३ ४९ ३५	१५ १७ ०७	१६ ४२ ०२	१८ १७ ०८	२० १२ ३०	२२ २७ ०१	० ५१ १६	३ ०८ ३५	५ २४ ५२
३	७ ४० २४	९ ५९ ०२	१२ ०३ १२	१३ ४५ ४०	१५ १३ ११	१६ ३८ ०६	१८ १३ १२	२० ०८ ३४	२२ २३ ०५	० ४७ २१	३ ०४ ३९	५ २० ५६
४	७ ३६ २९	९ ५५ ०६	११ ५९ १६	१३ ४१ ४४	१५ ०९ १५	१६ ३४ ११	१८ ०९ १६	२० ०४ ३८	२२ १९ ०९	० ४३ २५	३ ०० ४४	५ १७ ०१
५	७ ३२ ३३	९ ५१ १०	११ ५५ २०	१३ ३७ ४८	१५ ०५ १९	१६ ३० १५	१८ ०५ २०	२० ०० ४२	२२ १५ १३	० ३९ २९	२ ५६ ४८	५ १३ ०५
६	७ २८ ३७	९ ४७ १४	११ ५१ २४	१३ ३३ ५२	१५ ०१ २४	१६ २६ १९	१८ ०१ २४	१९ ५६ ४६	२२ ११ १७	० ३५ ३३	२ ५२ ५२	५ ०९ ०९
७	७ २४ ४१	९ ४३ १८	११ ४७ २८	१३ २९ ५६	१४ ५७ २८	१६ २२ २३	१७ ५७ २८	१९ ५२ ५१	२२ ०७ २१	० ३१ ३७	२ ४८ ५६	५ ०५ १३
८	७ २० ४५	९ ३९ २२	११ ४३ ३२	१३ २६ ००	१४ ५३ ३२	१६ १८ २७	१७ ५३ ३३	१९ ४८ ५५	२२ ०३ २५	० २७ ४१	२ ४५ ००	५ ०१ १७
९	७ १६ ४९	९ ३५ २७	११ ३९ ३६	१३ २२ ०४	१४ ४९ ३६	१६ १४ ३१	१७ ४९ ३७	१९ ४४ ५९	२१ ५९ २९	० २३ ४५	२ ४१ ०४	४ ५७ २१
१०	७ १२ ५३	९ ३१ ३१	११ ३५ ४०	१३ १८ ०८	१४ ४५ ४०	१६ १० ३५	१७ ४५ ४१	१९ ४१ ०३	२१ ५५ ३४	० १५ ५३	२ ३७ ०८	४ ५३ २५
११	७ ०८ ५७	९ २७ ३५	११ ३१ ४५	१३ १४ १२	१४ ४१ ४४	१६ ०६ ३९	१७ ४१ ४५	१९ ३७ ०७	२१ ५१ ३८	० ११ ५७	२ ३३ १२	४ ४९ २९
१२	७ ०५ ०१	९ २३ ३९	११ २७ ४९	१३ १० १६	१४ ३७ ४८	१६ ०२ ४३	१७ ३७ ४९	१९ ३३ ११	२१ ४७ ४२	० ०८ ०२	२ २९ १६	४ ४५ ३३
१३	७ ०१ ०५	९ १९ ४३	११ २३ ५३	१३ ०६ २१	१४ ३३ ५२	१५ ५८ ४७	१७ ३३ ५३	१९ २९ १५	२१ ४३ ४६	० ०४ ०६	२ २५ २०	४ ४१ ३७
१४	६ ५७ १०	९ १५ ४७	११ १९ ५७	१३ ०२ २५	१४ २९ ५६	१५ ५४ ५२	१७ २९ ५७	१९ २५ १९	२१ ३९ ५०	० ०० १०	२ २१ २५	४ ३७ ४२
१५	६ ५३ १४	९ ११ ५१	११ १६ ०१	१२ ५८ २९	१४ २६ ००	१५ ५० ५६	१७ २६ ०१	१९ २१ २३	२१ ३५ ५४	२३ ५६ १४	२ १७ २९	४ ३३ ४६
१६	६ ४९ १८	९ ०७ ५५	११ १२ ०५	१२ ५४ ३३	१४ २२ ०५	१५ ४७ ००	१७ २२ ०५	१९ १७ २७	२१ ३१ ५८	२३ ५२ १८	२ १३ ३३	४ २९ ५०
१७	६ ४५ २२	९ ०३ ५९	११ ०८ ०९	१२ ५० ३७	१४ १८ ०९	१५ ४३ ०४	१७ १८ ०९	१९ १३ ३२	२१ २८ ०२	२३ ४८ २२	२ ०९ ३७	४ २५ ५४
१८	६ ४१ २६	९ ०० ०३	११ ०४ १३	१२ ४६ ४१	१४ १४ १३	१५ ३९ ०८	१७ १४ १४	१९ ०९ ३६	२१ २४ ०६	२३ ४४ २६	२ ०५ ४१	४ २१ ५८
१९	६ ३७ ३०	८ ५६ ०८	११ ०० १७	१२ ४२ ४५	१४ १० १७	१५ ३५ १२	१७ १० १८	१९ ०५ ४०	२१ २० १०	२३ ४० ३०	२ ०१ ४५	४ १८ ०२
२०	६ ३३ ३४	८ ५२ १२	१० ५६ २१	१२ ३८ ४९	१४ ०६ २१	१५ ३१ १६	१७ ०६ २२	१९ ०१ ४४	२१ १६ १४	२३ ३६ ३४	१ ५७ ४९	४ १४ ०६
२१	६ २९ ३८	८ ४८ १६	१० ५२ २६	१२ ३४ ५३	१४ ०२ २५	१५ २७ २०	१७ ०२ २६	१८ ५७ ४८	२१ १२ १९	२३ ३२ ३९	१ ५३ ५३	४ १० १०
२२	६ २५ ४२	८ ४४ २०	१० ४८ ३०	१२ ३० ५७	१३ ५८ २९	१५ २३ २४	१६ ५८ ३०	१८ ५३ ५२	२१ ०८ २३	२३ २८ ४३	१ ४९ ५७	४ ०६ १४
२३	६ २१ ४७	८ ४० २४	१० ४४ ३४	१२ २७ ०२	१३ ५४ ३३	१५ १९ २८	१६ ५४ ३४	१८ ४९ ५६	२१ ०४ २७	२३ २४ ४७	१ ४६ ०२	४ ०२ १९
२४	६ १७ ५१	८ ३६ २८	१० ४० ३८	१२ २३ ०६	१३ ५० ३७	१५ १५ ३३	१६ ५० ३८	१८ ४६ ००	२१ ०० ३१	२३ २० ५१	१ ४२ ०६	३ ५८ २३
२५	६ १३ ५५	८ ३२ ३२	१० ३६ ४२	१२ १९ १०	१३ ४६ ४१	१५ ११ ३७	१६ ४६ ४२	१८ ४२ ०४	२० ५६ ३५	२३ १६ ५५	१ ३८ १०	३ ५४ २७
२६	६ ०९ ५९	८ २८ ३६	१० ३२ ४६	१२ १५ १४	१३ ४२ ४५	१५ ०७ ४१	१६ ४२ ४६	१८ ३८ ०८	२० ५२ ३९	२३ १२ ५९	१ ३४ १४	३ ५० ३१
२७	६ ०६ ०३	८ २४ ४०	१० २८ ५०	१२ ११ १८	१३ ३८ ५०	१५ ०३ ४५	१६ ३८ ५०	१८ ३४ १३	२० ४८ ४३	२३ ०९ ०३	१ ३० १८	३ ४६ ३५
२८	६ ०२ ०७	८ २० ४४	१० २४ ५४	१२ ०७ २२	१३ ३४ ५४	१४ ५९ ४९	१६ ३४ ५४	१८ ३० १७	२० ४४ ४७	२३ ०५ ०७	१ २६ २२	३ ४२ ३९
२९	५ ५८ ११	८ १६ ४९	१० २० ५८	१२ ०३ २६	१३ ३० ५८	१४ ५५ ५३	१६ ३० ५९	१८ २६ २१	२० ४० ५१	२३ ०१ ११	१ २२ २६	३ ३८ ४३
३०	५ ५४ १५	८ १२ ५३	१० १७ ०२	११ ५९ ३०	१३ २७ ०२	१४ ५१ ५७	१६ २७ ०३	१८ २२ २५	२० ३६ ५६	२२ ५७ १५	१ १८ ३०	३ ३४ ४७

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०८ ५७	१० १३ ०७	११ ५५ ३४	१३ २३ ०६	१४ ४८ ०१	१६ २३ ०७	१८ १८ २९	२० ३३ ००	२२ ५३ २०	१ १४ ३४	३ ३० ५१	५ ५० ११
२	८ ०५ ०१	१० ०९ ११	११ ५१ ३८	१३ १९ १०	१४ ४४ ०५	१६ १९ ११	१८ १४ ३३	२० २९ ०४	२२ ४९ २४	१ १० ३८	३ २६ ५५	५ ४६ २३
३	८ ०१ ०५	१० ०५ १५	११ ४७ ४३	१३ १५ १४	१४ ४० ०९	१६ १५ १५	१८ १० ३७	२० २५ ०८	२२ ४५ २८	१ ०६ ४३	३ २३ ००	५ ४२ २८
४	७ ५७ ०९	१० ०१ १९	११ ४३ ४७	१३ ११ १८	१४ ३६ १४	१६ ११ १९	१८ ०६ ४१	२० २१ १२	२२ ४१ ३२	१ ०२ ४७	३ १९ ०४	५ ३८ ३२
५	७ ५३ १३	९ ५७ २३	११ ३९ ५१	१३ ०७ २२	१४ ३२ १८	१६ ०७ २३	१८ ०२ ४५	२० १७ १६	२२ ३७ ३६	० ५८ ५१	३ १५ ०८	५ ३४ ३६
६	७ ४९ १७	९ ५३ २७	११ ३५ ५५	१३ ०३ २६	१४ २८ २२	१६ ०३ २७	१७ ५८ ५०	२० १३ २०	२२ ३३ ४०	० ५४ ५५	३ ११ १२	५ ३० ४०
७	७ ४५ २१	९ ४९ ३१	११ ३१ ५९	१२ ५९ ३१	१४ २४ २६	१५ ५९ ३१	१७ ५४ ५४	२० ०९ २४	२२ २९ ४४	० ५० ५९	३ ०७ १६	५ २६ ४४
८	७ ४१ २६	९ ४५ ३५	११ २८ ०३	१२ ५५ ३५	१४ २० ३०	१५ ५५ ३६	१७ ५० ५८	२० ०५ २८	२२ २५ ४८	० ४७ ०३	३ ०३ २०	५ २२ ४८
९	७ ३७ ३०	९ ४१ ३९	११ २४ ०७	१२ ५१ ३९	१४ १६ ३४	१५ ५१ ४०	१७ ४७ ०२	२० ०१ ३३	२२ २१ ५२	० ४३ ०७	२ ५९ २४	५ १८ ५२
१०	७ ३३ ३४	९ ३७ ४४	११ २० ११	१२ ४७ ४३	१४ १२ ३८	१५ ४७ ४४	१७ ४३ ०६	१९ ५७ ३७	२२ १७ ५६	० ३९ ११	२ ५५ २८	५ १४ ५६
११	७ २९ ३८	९ ३३ ४८	११ १६ १५	१२ ४३ ४७	१४ ०८ ४२	१५ ४३ ४८	१७ ३९ १०	१९ ५३ ४१	२२ १४ ०१	० ३५ १५	२ ५१ ३२	५ ११ ००
१२	७ २५ ४२	९ २९ ५२	११ १२ १९	१२ ३९ ५१	१४ ०४ ४६	१५ ३९ ५२	१७ ३५ १४	१९ ४९ ४५	२२ १० ०५	० ३१ २०	२ ४७ ३७	५ ०७ ०५
१३	७ २१ ४६	९ २५ ५६	११ ०८ २४	१२ ३५ ५५	१४ ०० ५०	१५ ३५ ५६	१७ ३१ १८	१९ ४५ ४९	२२ ०६ ०९	० २७ २४	२ ४३ ४१	५ ०३ ०९
१४	७ १७ ५०	९ २२ ००	११ ०४ २८	१२ ३१ ५९	१३ ५६ ५५	१५ ३२ ००	१७ २७ २२	१९ ४१ ५३	२२ ०२ १३	० २३ २८	२ ३९ ४५	४ ५९ १३
१५	७ १३ ५४	९ १८ ०४	११ ०० ३२	१२ २८ ०३	१३ ५२ ५९	१५ २८ ०४	१७ २३ २६	१९ ३७ ५७	२१ ५८ १७	० १५ ३६	२ ३५ ४९	४ ५५ १७
१६	७ ०९ ५८	९ १४ ०८	१० ५६ ३६	१२ २४ ०८	१३ ४९ ०३	१५ २४ ०८	१७ १९ ३१	१९ ३४ ०१	२१ ५४ २१	० ११ ४०	२ ३१ ५३	४ ५१ २१
१७	७ ०६ ०२	९ १० १२	१० ५२ ४०	१२ २० १२	१३ ४५ ०७	१५ २० १२	१७ १५ ३५	१९ ३० ०५	२१ ५० २५	० ०७ ४४	२ २७ ५७	४ ४७ २५
१८	७ ०२ ०७	९ ०६ १६	१० ४८ ४४	१२ १६ १६	१३ ४१ ११	१५ १६ १७	१७ ११ ३९	१९ २६ १०	२१ ४६ २९	० ०३ ४८	२ २४ ०१	४ ४३ २९
१९	६ ५८ ११	९ ०२ २०	१० ४४ ४८	१२ १२ २०	१३ ३७ १५	१५ १२ २१	१७ ०७ ४३	१९ २२ १४	२१ ४२ ३३	२३ ५९ ५२	२ २० ०५	४ ३९ ३३
२०	६ ५४ १५	८ ५८ २४	१० ४० ५२	१२ ०८ २४	१३ ३३ १९	१५ ०८ २५	१७ ०३ ४७	१९ १८ १८	२१ ३८ ३८	२३ ५५ ५६	२ १६ ०९	४ ३५ ३७
२१	६ ५० १९	८ ५४ २९	१० ३६ ५६	१२ ०४ २८	१३ २९ २३	१५ ०४ २९	१६ ५९ ५१	१९ १४ २२	२१ ३४ ४२	२३ ५२ ०१	२ १२ १३	४ ३१ ४२
२२	६ ४६ २३	८ ५० ३३	१० ३३ ०१	१२ ०० ३२	१३ २५ २७	१५ ०० ३३	१६ ५५ ५५	१९ १० २६	२१ ३० ४६	२३ ४८ ०५	२ ०८ १८	४ २७ ४६
२३	६ ४२ २७	८ ४६ ३७	१० २९ ०५	११ ५६ ३६	१३ २१ ३१	१४ ५६ ३७	१६ ५१ ५९	१९ ०६ ३०	२१ २६ ५०	२३ ४४ ०९	२ ०४ २२	४ २३ ५०
२४	६ ३८ ३१	८ ४२ ४१	१० २५ ०९	११ ५२ ४०	१३ १७ ३६	१४ ५२ ४१	१६ ४८ ०३	१९ ०२ ३४	२१ २२ ५४	२३ ४० १३	२ ०० २६	४ १९ ५४
२५	६ ३४ ३५	८ ३८ ४५	१० २१ १३	११ ४८ ४४	१३ १३ ४०	१४ ४८ ४५	१६ ४४ ०८	१८ ५८ ३८	२१ १८ ५८	२३ ३६ १७	१ ५६ ३०	४ १५ ५८
२६	६ ३० ३९	८ ३४ ४९	१० १७ १७	११ ४४ ४८	१३ ०९ ४४	१४ ४४ ४९	१६ ४० १२	१८ ५४ ४२	२१ १५ ०२	२३ ३२ २१	१ ५२ ३४	४ १२ ०२
२७	६ २६ ४४	८ ३० ५३	१० १३ २१	११ ४० ५३	१३ ०५ ४८	१४ ४० ५३	१६ ३६ १६	१८ ५० ४६	२१ ११ ०६	२३ २८ २५	१ ४८ ३८	४ ०८ ०६
२८	६ २२ ४८	८ २६ ५७	१० ०९ २५	११ ३६ ५७	१३ ०१ ५२	१४ ३६ ५८	१६ ३२ २०	१८ ४६ ५१	२१ ०७ १०	२३ २४ २९	१ ४४ ४२	४ ०४ १०
२९	६ १८ ५२	८ २३ ०१	१० ०५ २९	११ ३३ ०१	१२ ५७ ५६	१४ ३३ ०२	१६ २८ २४	१८ ४२ ५५	२१ ०३ १४	२३ २० ३३	१ ४० ४६	४ ०० १४
३०	६ १४ ५६	८ १९ ०६	१० ०१ ३३	११ २९ ०५	१२ ५४ ००	१४ २९ ०६	१६ २४ २८	१८ ३८ ५९	२० ५९ १९	२३ १६ ३८	१ ३६ ५०	३ ५६ १८
३१	६ ११ ००	८ १५ १०	९ ५७ ३७	११ २५ ०९	१२ ५० ०४	१४ २५ १०	१६ २० ३२	१८ ३४ ०३	२० ५५ २३	२३ १२ ४२	१ ३२ ५४	३ ५२ २३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ १० १३	९ ५२ ४१	११ २० १३	१२ ४५ ०८	१४ २० १४	१६ १५ ३५	१८ ३० ०५	२० ५० २५	२३ ०७ ४४	१ २७ ५७	३ ४७ २५	६ ०६ ०३
२	८ ०६ १७	९ ४८ ४६	११ १६ १७	१२ ४१ १३	१४ १६ १८	१६ ११ ३९	१८ २६ १०	२० ४६ २९	२३ ०३ ४८	१ २४ ०१	३ ४३ २९	६ ०२ ०७
३	८ ०२ २१	९ ४४ ५०	११ १२ २२	१२ ३७ १७	१४ १२ २२	१६ ०७ ४३	१८ २२ १४	२० ४२ ३४	२२ ५९ ५३	१ २० ०५	३ ३९ ३३	५ ५८ ११
४	७ ५८ २५	९ ४० ५४	११ ०८ २६	१२ ३३ २१	१४ ०८ २६	१६ ०३ ४७	१८ १८ १८	२० ३८ ३८	२२ ५५ ५७	१ १६ १०	३ ३५ ३७	५ ५४ १५
५	७ ५४ ३०	९ ३६ ५८	११ ०४ ३०	१२ २९ २५	१४ ०४ ३०	१५ ५९ ५२	१८ १४ २२	२० ३४ ४२	२२ ५२ ०१	१ १२ १४	३ ३१ ४२	५ ५० १९
६	७ ५० ३४	९ ३३ ०२	११ ०० ३४	१२ २५ २९	१४ ०० ३४	१५ ५५ ५६	१८ १० २६	२० ३० ४६	२२ ४८ ०५	१ ०८ १८	३ २७ ४६	५ ४६ २३
७	७ ४६ ३८	९ २९ ०६	१० ५६ ३८	१२ २१ ३३	१३ ५६ ३८	१५ ५२ ००	१८ ०६ ३०	२० २६ ५०	२२ ४४ ०९	१ ०४ २२	३ २३ ५०	५ ४२ २७
८	७ ४२ ४२	९ २५ १०	१० ५२ ४२	१२ १७ ३७	१३ ५२ ४२	१५ ४८ ०४	१८ ०२ ३४	२० २२ ५४	२२ ४० १३	१ ०० २६	३ १९ ५४	५ ३८ ३२
९	७ ३८ ४६	९ २१ १४	१० ४८ ४६	१२ १३ ४१	१३ ४८ ४६	१५ ४४ ०८	१७ ५८ ३८	२० १८ ५८	२२ ३६ १७	० ५६ ३०	३ १५ ५८	५ ३४ ३६
१०	७ ३४ ५०	९ १७ १८	१० ४४ ५०	१२ ०९ ४५	१३ ४४ ५१	१५ ४० १२	१७ ५४ ४२	२० १५ ०२	२२ ३२ २१	० ५२ ३४	३ १२ ०२	५ ३० ४०
११	७ ३० ५४	९ १३ २३	१० ४० ५४	१२ ०५ ५०	१३ ४० ५५	१५ ३६ १६	१७ ५० ४७	२० ११ ०६	२२ २८ २५	० ४८ ३८	३ ०८ ०६	५ २६ ४४
१२	७ २६ ५८	९ ०९ २७	१० ३६ ५८	१२ ०१ ५४	१३ ३६ ५९	१५ ३२ २०	१७ ४६ ५१	२० ०७ १०	२२ २४ ३०	० ४४ ४२	३ ०४ १०	५ २२ ४८
१३	७ २३ ०२	९ ०५ ३१	१० ३३ ०२	११ ५७ ५८	१३ ३३ ०३	१५ २८ २४	१७ ४२ ५५	२० ०३ १५	२२ २० ३४	० ४० ४७	३ ०० १४	५ १८ ५२
१४	७ १९ ०६	९ ०१ ३५	१० २९ ०७	११ ५४ ०२	१३ २९ ०७	१५ २४ २९	१७ ३८ ५९	१९ ५९ १९	२२ १६ ३८	० ३६ ५१	२ ५६ १९	५ १४ ५६
१५	७ १५ ११	८ ५७ ३९	१० २५ ११	११ ५० ०६	१३ २५ ११	१५ २० ३३	१७ ३५ ०३	१९ ५५ २३	२२ १२ ४२	० ३२ ५५	२ ५२ २३	५ ११ ००
१६	७ ११ १५	८ ५३ ४३	१० २१ १५	११ ४६ १०	१३ २१ १५	१५ १६ ३७	१७ ३१ ०७	१९ ५१ २७	२२ ०८ ४६	० २८ ५९	२ ४८ २७	५ ०७ ०४
१७	७ ०७ १९	८ ४९ ४७	१० १७ १९	११ ४२ १४	१३ १७ १९	१५ १२ ४१	१७ २७ ११	१९ ४७ ३१	२२ ०४ ५०	० २१ ०७	२ ४४ ३१	५ ०३ ०८
१८	७ ०३ २३	८ ४५ ५१	१० १३ २३	११ ३८ १८	१३ १३ २३	१५ ०८ ४५	१७ २३ १५	१९ ४३ ३५	२२ ०० ५४	० १७ ११	२ ४० ३५	४ ५९ १२
१९	६ ५९ २७	८ ४१ ५५	१० ०९ २७	११ ३४ २२	१३ ०९ २७	१५ ०४ ४९	१७ १९ १९	१९ ३९ ३९	२१ ५६ ५८	० १३ १५	२ ३६ ३९	४ ५५ १७
२०	६ ५५ ३१	८ ३७ ५९	१० ०५ ३१	११ ३० २६	१३ ०५ ३१	१५ ०० ५३	१७ १५ २४	१९ ३५ ४३	२१ ५३ ०२	० ०९ १९	२ ३२ ४३	४ ५१ २१
२१	६ ५१ ३५	८ ३४ ०३	१० ०१ ३५	११ २६ ३०	१३ ०१ ३६	१४ ५६ ५७	१७ ११ २८	१९ ३१ ४७	२१ ४९ ०६	० ०५ २३	२ २८ ४७	४ ४७ २५
२२	६ ४७ ३९	८ ३० ०८	९ ५७ ३९	११ २२ ३५	१२ ५७ ४०	१४ ५३ ०१	१७ ०७ ३२	१९ २७ ५२	२१ ४५ ११	० ०१ २८	२ २४ ५१	४ ४३ २९
२३	६ ४३ ४३	८ २६ १२	९ ५३ ४४	११ १८ ३९	१२ ५३ ४४	१४ ४९ ०५	१७ ०३ ३६	१९ २३ ५६	२१ ४१ १५	२३ ५७ ३२	२ २० ५५	४ ३९ ३३
२४	६ ३९ ४७	८ २२ १६	९ ४९ ४८	११ १४ ४३	१२ ४९ ४८	१४ ४५ १०	१६ ५९ ४०	१९ २० ००	२१ ३७ १९	२३ ५३ ३६	२ १७ ००	४ ३५ ३७
२५	६ ३५ ५२	८ १८ २०	९ ४५ ५२	११ १० ४७	१२ ४५ ५२	१४ ४१ १४	१६ ५५ ४४	१९ १६ ०४	२१ ३३ २३	२३ ४९ ४०	२ १३ ०४	४ ३१ ४१
२६	६ ३१ ५६	८ १४ २४	९ ४१ ५६	११ ०६ ५१	१२ ४१ ५६	१४ ३७ १८	१६ ५१ ४८	१९ १२ ०८	२१ २९ २७	२३ ४५ ४४	२ ०९ ०८	४ २७ ४५
२७	६ २८ ००	८ १० २८	९ ३८ ००	११ ०२ ५५	१२ ३८ ००	१४ ३३ २२	१६ ४७ ५२	१९ ०८ १२	२१ २५ ३१	२३ ४१ ४८	२ ०५ १२	४ २३ ४९
२८	६ २४ ०४	८ ०६ ३२	९ ३४ ०४	१० ५८ ५९	१२ ३४ ०४	१४ २९ २६	१६ ४३ ५६	१९ ०४ १६	२१ २१ ३५	२३ ३७ ५२	२ ०१ १६	४ १९ ५४
२९	६ २० ०८	८ ०२ ३६	९ ३० ०८	१० ५५ ०३	१२ ३० ०८	१४ २५ ३०	१६ ४० ००	१९ ०० २०	२१ १७ ३९	२३ ३३ ५६	१ ५७ २०	४ १५ ५८
३०	६ १६ १२	७ ५८ ४०	९ २६ १२	१० ५१ ०७	१२ २६ १३	१४ २१ ३४	१६ ३६ ०५	१८ ५६ २४	२१ १३ ४३	२३ ३० ००	१ ५३ २४	४ १२ ०२
३१	६ १२ १६	७ ५४ ४४	९ २२ १६	१० ४७ ११	१२ २२ १७	१४ १७ ३८	१६ ३२ ०९	१८ ५२ २८	२१ ०९ ४७	२३ २६ ०४	१ ४९ २८	४ ०८ ०६

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट-सेकेण्ड

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५० ४९	९ १८ २०	१० ४३ १६	१२ १८ २१	१४ १३ ४२	१६ २८ १३	१८ ४८ ३३	२१ ०५ ५२	२३ २२ ०९	१ ४५ ३२	४ ०४ १०	६ ०८ २०
२	७ ४६ ५३	९ १४ २४	१० ३९ २०	१२ १४ २५	१४ ०९ ४६	१६ २४ १७	१८ ४४ ३७	२१ ०१ ५६	२३ १८ १३	१ ४१ ३६	४ ०० १४	६ ०४ २४
३	७ ४२ ५७	९ १० २९	१० ३५ २४	१२ १० २९	१४ ०५ ५१	१६ २० २१	१८ ४० ४१	२० ५८ ००	२३ १४ १७	१ ३७ ४१	३ ५६ १८	६ ०० २८
४	७ ३९ ०१	९ ०६ ३३	१० ३१ २८	१२ ०६ ३३	१४ ०१ ५५	१६ १६ २५	१८ ३६ ४५	२० ५४ ०४	२३ १० २१	१ ३३ ४५	३ ५२ २२	५ ५६ ३३
५	७ ३५ ०५	९ ०२ ३७	१० २७ ३२	१२ ०२ ३७	१३ ५७ ५९	१६ १२ २९	१८ ३२ ४९	२० ५० ०८	२३ ०६ २५	१ २९ ४९	३ ४८ २६	५ ५२ ३७
६	७ ३१ ०९	८ ५८ ४१	१० २३ ३६	११ ५८ ४१	१३ ५४ ०३	१६ ०८ ३३	१८ २८ ५३	२० ४६ १२	२३ ०२ २९	१ २५ ५३	३ ४४ ३१	५ ४८ ४१
७	७ २७ १३	८ ५४ ४५	१० १९ ४०	११ ५४ ४५	१३ ५० ०७	१६ ०४ ३७	१८ २४ ५७	२० ४२ १६	२२ ५८ ३३	१ २१ ५७	३ ४० ३५	५ ४४ ४५
८	७ २३ १७	८ ५० ४९	१० १५ ४४	११ ५० ४९	१३ ४६ ११	१६ ०० ४१	१८ २१ ०१	२० ३८ २०	२२ ५४ ३७	१ १८ ०१	३ ३६ ३९	५ ४० ४९
९	७ १९ २१	८ ४६ ५३	१० ११ ४८	११ ४६ ५४	१३ ४२ १५	१५ ५६ ४६	१८ १७ ०५	२० ३४ २४	२२ ५० ४१	१ १४ ०५	३ ३२ ४३	५ ३६ ५३
१०	७ १५ २५	८ ४२ ५७	१० ०७ ५२	११ ४२ ५८	१३ ३८ १९	१५ ५२ ५०	१८ १३ ०९	२० ३० २९	२२ ४६ ४५	१ १० ०९	३ २८ ४७	५ ३२ ५७
११	७ ११ ३०	८ ३९ ०१	१० ०३ ५७	११ ३९ ०२	१३ ३४ २३	१५ ४८ ५४	१८ ०९ १४	२० २६ ३३	२२ ४२ ५०	१ ०६ १३	३ २४ ५१	५ २९ ०१
१२	७ ०७ ३४	८ ३५ ०५	१० ०० ०१	११ ३५ ०६	१३ ३० २७	१५ ४४ ५८	१८ ०५ १८	२० २२ ३७	२२ ३८ ५४	१ ०२ १८	३ २० ५५	५ २५ ०५
१३	७ ०३ ३८	८ ३१ १०	९ ५६ ०५	११ ३१ १०	१३ २६ ३२	१५ ४१ ०२	१८ ०१ २२	२० १८ ४१	२२ ३४ ५८	० ५८ २२	३ १६ ५९	५ २१ ०९
१४	६ ५९ ४२	८ २७ १४	९ ५२ ०९	११ २७ १४	१३ २२ ३६	१५ ३७ ०६	१७ ५७ २६	२० १४ ४५	२२ ३१ ०२	० ५४ २६	३ १३ ०३	५ १७ १४
१५	६ ५५ ४६	८ २३ १८	९ ४८ १३	११ २३ १८	१३ १८ ४०	१५ ३३ १०	१७ ५३ ३०	२० १० ४९	२२ २७ ०६	० ५० ३०	३ ०९ ०७	५ १३ १८
१६	६ ५१ ५०	८ १९ २२	९ ४४ १७	११ १९ २२	१३ १४ ४४	१५ २९ १४	१७ ४९ ३४	२० ०६ ५३	२२ २३ १०	० ४६ ३४	३ ०५ १२	५ ०९ २२
१७	६ ४७ ५४	८ १५ २६	९ ४० २१	११ १५ २६	१३ १० ४८	१५ २५ १८	१७ ४५ ३८	२० ०२ ५७	२२ १९ १४	० ४२ ३८	३ ०१ १६	५ ०५ २६
१८	६ ४३ ५८	८ ११ ३०	९ ३६ २५	११ ११ ३०	१३ ०६ ५२	१५ २१ २२	१७ ४१ ४२	१९ ५९ ०१	२२ १५ १८	० ३८ ४२	२ ५७ २०	५ ०१ ३०
१९	६ ४० ०२	८ ०७ ३४	९ ३२ २९	११ ०७ ३४	१३ ०२ ५६	१५ १७ २७	१७ ३७ ४६	१९ ५५ ०५	२२ ११ २२	० ३४ ४६	२ ५३ २४	४ ५७ ३४
२०	६ ३६ ०६	८ ०३ ३८	९ २८ ३३	११ ०३ ३९	१२ ५९ ००	१५ १३ ३१	१७ ३३ ५१	१९ ५१ १०	२२ ०७ २६	० ३० ५०	२ ४९ २८	४ ५३ ३८
२१	६ ३२ ११	७ ५९ ४२	९ २४ ३८	१० ५९ ४३	१२ ५५ ०४	१५ ०९ ३५	१७ २९ ५५	१९ ४७ १४	२२ ०३ ३१	० २६ ५४	२ ४५ ३२	४ ४९ ४२
२२	६ २८ १५	७ ५५ ४६	९ २० ४२	१० ५५ ४७	१२ ५१ ०८	१५ ०५ ३९	१७ २५ ५९	१९ ४३ १८	२१ ५९ ३५	० १९ ०३	२ ४१ ३६	४ ४५ ४६
२३	६ २४ १९	७ ५१ ५१	९ १६ ४६	१० ५१ ५१	१२ ४७ १३	१५ ०१ ४३	१७ २२ ०३	१९ ३९ २२	२१ ५५ ३९	० १५ ०७	२ ३७ ४०	४ ४१ ५०
२४	६ २० २३	७ ४७ ५५	९ १२ ५०	१० ४७ ५५	१२ ४३ १७	१४ ५७ ४७	१७ १८ ०७	१९ ३५ २६	२१ ५१ ४३	० ११ ११	२ ३३ ४४	४ ३७ ५५
२५	६ १६ २७	७ ४३ ५९	९ ०८ ५४	१० ४३ ५९	१२ ३९ २१	१४ ५३ ५१	१७ १४ ११	१९ ३१ ३०	२१ ४७ ४७	० ०७ १५	२ २९ ४८	४ ३३ ५९
२६	६ १२ ३१	७ ४० ०३	९ ०४ ५८	१० ४० ०३	१२ ३५ २५	१४ ४९ ५५	१७ १० १५	१९ २७ ३४	२१ ४३ ५१	० ०३ १९	२ २५ ५२	४ ३० ०३
२७	६ ०८ ३५	७ ३६ ०७	९ ०१ ०२	१० ३६ ०७	१२ ३१ २९	१४ ४५ ५९	१७ ०६ १९	१९ २३ ३८	२१ ३९ ५५	२३ ५९ २३	२ २१ ५७	४ २६ ०७
२८	६ ०४ ३९	७ ३२ ११	८ ५७ ०६	१० ३२ ११	१२ २७ ३३	१४ ४२ ०३	१७ ०२ २३	१९ १९ ४२	२१ ३५ ५९	२३ ५५ २७	२ १८ ०१	४ २२ ११

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

	मि. से.	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से	१२।२२	१२।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया		- १०।४८
अंतर		१।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से	११।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया	१०।४८
अंतर	=०।३४

अत: अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८
रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।१९
अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।०५
अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर	११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

द घंटे में से चर मिनट सेकण्ड को घटाए हो तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

यह विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	+० ।११ ।१२
लोकल सूर्योदय	६ ।११ ।१२
लोकल सूर्योदय	६ ।११ ।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+० ।१३ ।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६ ।२४ ।४८
वेलांतर	—० ।१३ ।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६ ।११ ।२७

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	— ० ।११ ।१२
लोकल सूर्यास्त	५ ।४८ ।४८
लोकल सूर्यास्त	५ ।४८ ।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ० ।१३ ।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६ ।०२ ।२४
वेलांतर	—० ।१३ ।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५ ।४९ ।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेंण्ड को ५ से गुणा किया

११ ।१२ × ५=५५ ।६० या ५६ पल

सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अत: यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३० ।००
चर पल	— ० ।५६
दिनमान नागपुर	२९ ।०४

रात्रिमान—

अहोरात्र	६० ।००
दिनमान	— २९ ।०४
रात्रिमान	३० ।५६

उदाहरण २—मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३ ।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८ ।५२, रवि क्रांति २३ ।२६ उत्तर, वेलांतर + १ ।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२ ।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+०० ।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+०० ।३४
अक्षांश १३ ।०५ एवं रवि क्रांति २३ ।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३ ।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	— ० ।२३ ।१२
लोकल सूर्योदय	५ ।३६ ।४८
लोकल सूर्योदय	५ ।३६ ।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+ ० ।०८ ।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५ ।४५ ।४०
वेलांतर	+ ० ।०१ ।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५ ।४६ ।५४

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	+० ।२३ ।१२
लोकल सूर्यास्त	६ ।२३ ।१२
लोकल सूर्यास्त	६ ।२३ ।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ० ।०८ ।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६ ।३२ ।०४
वेलांतर	+ ० ।०१ ।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६ ।३३ ।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३ ।१२×५=११५ ।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

मध्याह्न दिनमान	३० ।००	**रात्रिमान**— अहोरात्र	६० ।००
चर पल	+०१ ।५६	दिनमान	— ३१ ।५६
दिनमान मद्रास	३१ ।५६	रात्रिमान	२८ ।०४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रात: ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टै. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

	घं.	मि.	
(१) २५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२) २५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	"
	६	०९	"
६।९ को ढाई से गुना किया	६	०९	
	३	०४	३०
इष्टकाल घटी फल विपल में	१५	२२	३०

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

	घं.	मि.	
(१) १० सितम्बर को जन्म समय	२०	४५	भा.स्टै.टा.
मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।			
(२) १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	"
शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
	१४	४०	
	७	२०	३०
(३) इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	"
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५	शेष
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इष्टकाल घटी फल विपल में | १५ | २२ | ३०

जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२२	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	२७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४२	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४२	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	३२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	४१	५२	५	१९	३६	५५	१७	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	४७	१	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२५
३९	३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
४१	३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
	२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	५३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
४२	३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
	३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
४३	३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
	४४	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४४	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
४४	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
	५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४५	४	८१	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७१	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०४
	०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४६	४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
	९	१७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४९
४७	४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
	१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४८	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
	२७	५३	२१	४९	१८	३९	२१	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	१६	३९	३०	३२
४९	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७७	८२	८७	९३	९८	१०४	११०	११६	१२३
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	४	९	१४	१९	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६९	७४	७९	८५	९१	९६	१०२	१०८	११५	१२१	१२८
	४६	३२	१९	७	५६	४७	३९	३४	३१	३१	३५	४२	५३	९	२९	५६	२८	४	५४	५०	५४	८	३३	११
५१	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८	९४	१००	१०६	११३	११९	१२६	१३३
	५६	५३	५१	४९	४९	५०	५३	०	७	१८	३३	५२	१६	४४	१७	५७	४४	३७	३९	४७	११	४३	२७	२५
५२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५७	६३	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	१११	११७	१२४	१३१	१३८
	७	१५	२३	३२	४३	५४	१०	२७	४७	७	३७	९	४५	२६	१४	८	६	१९	३६	४	४३	३४	३८	५८
५३	५	१०	१५	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०२	१०८	११५	१२२	१२९	१३७	१४४
	१८	३७	५७	१८	४०	४	३१	५६	३२	८	४८	३२	२२	१७	१९	२८	४५	१०	४६	३२	३०	४१	८	५२
५४	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९३	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३५	१४३	१५१
	३०	१	३३	४	४०	१६	५५	३७	५२	११	४	२	७	१७	३४	०	३२	१६	९	१५	३४	९	०	१०
५५	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२५	१३२	१४०	१४९	१५७
	४३	२६	१०	५६	४३	३१	२४	१८	१८	२०	२८	४१	५९	३६	०	४२	३३	३५	४९	१७	५९	५८	१६	५६
५६	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४८	५४	६०	६७	७३	८०	८६	९३	१००	१०७	११४	१२२	१३०	१३८	१४७	१५६	१६५
	५६	५२	५०	४८	४९	५१	५७	७	१९	३५	०	२८	४	४६	३८	३८	३९	११	४७	३८	४५	११	०	१३
५७	६	१२	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	११७	१२०	१२८	१३६	१४४	१५३	१६३	१७३
	१०	२०	३१	४४	५६	१०	३६	१	२८	१	४०	२५	१८	१९	२६	४९	१०	५	५	२१	५६	५४	१६	७
५८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९४	१०१	१०९	११७	१२५	१३३	१४२	१५१	१६१	१७१	१८१
	२४	४९	१५	४२	१२	४४	१७	५९	४४	३४	३०	२६	४४	४	३४	१६	१०	१९	४५	३२	३६	८	९	४६
५९	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	९०	९४	१०५	११३	१२२	१३०	१३९	१४९	१५८	१६९	१७९	१९१
	४०	२०	१	४४	२९	१८	१०	६	६	१६	३०	५२	२३	४	५६	५६	२०	५६	५९	८	५०	१	४७	१५
६०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	६३	७१	७८	८६	९४	१०२	११०	११९	१२७	१३७	१४०	१५६	१६६	१७१	१८९	२०१
	५६	५२	५०	५०	४६	५७	७	२१	४१	६	४२	२५	१७	२०	३७	५	५४	०	२७	१९	४१	३९	१८	५०
६१	७	१४	३१	२८	३६	४३	५१	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११५	१२४	१३३	१४३	१५३	१६४	१७५	१८७	१९९	२१३
	१३	२७	४२	५९	१९	४३	११	४६	१९	१२	५	१२	२२	५५	३८	३६	५४	३३	३७	७	१९	१०	५४	४५
६२	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९४	१०२	१११	१२१	१३०	१४०	१५०	१६१	१७२	१८४	१९७	२११	२२७
	३२	४	३८	१७	५०	३६	२४	१६	१५	२१	४६	७	५६	५१	३	३२	२४	४०	२६	४७	५२	४९	५३	२७
६३	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६४	७२	८०	८९	९८	१०७	११७	१२६	१३७	१४७	१५८	१७०	१८२	१९२	२०९	२२५	२४३
	५१	४३	३७	३३	३२	३७	४७	२	२६	५९	४२	१९	४६	११	५०	०	२९	२९	४	२१	३२	५१	४०	३७
६४	८	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६६	७५	८४	९३	१०३	११२	१२२	१३३	१४४	१५५	१६७	१७९	१९३	२०७	२२३	२४१	२६३
	१२	२५	४०	५८	२०	४६	११	५९	४८	४६	५५	२१	५७	५८	१८	२	१६	६	३८	४	३८	४३	५८	३७
६५	८	१७	२५	३४	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९८	१०८	११८	१२९	१४०	१५१	१६३	१७६	१९०	२०५	२२१	२४०	२६२	२८९
	३५	११	४९	३०	१५	४	४	१०	२५	५२	३३	२४	४२	१७	१४	४७	५२	४०	२३	१४	३७	११	११	१९
६६	८	१८	२७	३६	४५	५४	६४	७३	८३	९३	१०३	११४	१२४	१३६	१४७	१६०	१७३	१८७	२०२	२१९	२३८	२६०	२८९	३५४
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२९	३३	४	५६	१३	५७	३२	२८	२८	३६	१९	१५	३४	४४	४०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितम्बर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	.० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द.० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

तारीख	जनवरी मि. सै.	फरवरी मि. सै.	मार्च मि. सै.	अप्रैल मि. सै.	मई मि. सै.	जून मि. सै.	जुलाई मि. सै.	अगस्त मि. सै.	सितम्बर मि. सै.	अक्टूबर मि. सै.	नवम्बर मि. सै.	दिसम्बर मि. सै.
	+	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—
१	३ ३४	१३ ३८	१२ ३५	४ ७	२ ५२	२ २५	३ ३३	६ १५	+ ९	१० ७	१६ २१	११ ३
२	३ ५२	१३ ४६	१२ २३	३ ४९	३ ०	२ १६	३ ४५	६ ११	— १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ७	२ ७	३ ५६	६ ७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ०	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ८	६ २	० ४८	११ ५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ३
७	६ ९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ४	२ ४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ०	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० २	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० ११	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ २१	९ २९	० २७	३ ४६	-० ३	५ ३७	४ ५२	४ १४	१३ ५०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ १२	३ ४६	+० ९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	— ३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० ०१	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ८	५ १८	१४ ३०	१५ ४	४ ०
१८	१० २१	१४ ६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ १	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ १	८ ३	० ४५	३ ४१	१ १	६ ६	३ ४२	६ १	१४ ५३	१४ ३	३ २
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ २४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ २
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६ ५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ २
२४	१२ ४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ७	१५ ४९	१३ ४	—०२
२६	१२ ३२	१३ ७	५ ४७	२ ८	३ ११	२ ३२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ २	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ८	१६ ७	१२ ७	१ २८
२९	१३ ९		५ २	२ ३६	२ ५०	३ ९	६ २२	१ ४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—	+

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय बेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार बेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब बेलान्तर संस्कार करते हैं। बेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और बेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह बेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में बेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में बेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में बेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण— दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टै. टा. घं. ६ मि. ४१ हैं। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अतः यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांशः चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी — यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन																					क्रांति दक्षिण हो तो धन — उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

२२ ३७ ३६ ३४ ३२ ३० २९ २७ २५ २३ २२ २० १८ १६ १४ १२ ११ ९ ६ ५ ३ १ १ १ ३ ६ ८ ११ १३ १६ १८
२३ ३९ ३८ ३६ ३४ ३२ ३० २८ २७ २५ २३ २१ १९ १७ १५ १३ १२ ९ ७ ५ ३ १ १ १ ४ ६ ९ ११ १४ १६ १९
२४ ४२ ४० ३८ ३६ ३४ ३२ ३० २९ २७ २५ २३ २१ १९ १७ १४ १२ १० ८ ६ ४ १ १ १ ४ ६ ९ ११ १४ १७ २०
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	२६।४८	८२।१४	—१।४	+२०।००	इटावा	यू.पी.	२६।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२	किस्तबाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५।४४
अक्कलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	—३।५२	इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।३६	+६६।४०	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७।२८
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	—१।५२	इडुंकी	केरल	९।५१	७७।१४	—२१।४	०।०	कोच्चि	केरल	१०।०	७६।१५	—२५।०	—३।५६
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	इटानगर	आं. प्रदेश	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२	कोलगंगा	बिहार	२५।१६	८७।१६	+१९।४	+४०।८
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६	ईगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६	कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४।०	+४६।०	+६७।४
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—९।२४	इटारसी	म.प्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२।८	केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७।४	—२१।३६	—०।४०
अहमदाबाद	गुजरात	२३।२	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८	इलाहाबाद	यू.पी.	२५।२८	८१।५२	—२।३४	+१८।३२	कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६
अलीगढ़	यू.पी.	२७।५४	७८।५	—१७।४०	+३।२४	उन्नाव	उ. प्र.	२६।३३	८०।३०	—८।०	+१३।४	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३।८	—१२।५
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९।५	७४।४४	—३१।४	—१०।०	उतरोला	उ. प्र.	२७।१९	८२।२८	—०।८	+२०।५६	कुशलगढ़	राजस्थान	२३।८	७४।२७	—३२।१२	—११।८
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६।६	—२५।३६	—४।३२	ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७२।७	—२९।३२	—८।२८	कूचबिहार	राजस्थान	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६	उज्जैन	म. प्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७।४	—६।०	कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+०।२०
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४	उदय मण्डलम	तमिलनाडु	११।१७	७६।४४	—२३।४	—२।०	खम्भम	आं. प्र.	१७।१५	८०।११	—९।१६	+११।४८
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६	उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४।८	खण्डवा	म.प्र.	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३।३६
अनूपशहर	यू.पी.	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+४।३६	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८।८	७६।५	—२५।४०	—४।३६	खेडब्रह्मा	गुजरात	२४।३	७३।४	—३७।३६	—१६।४०
अल्मोड़ा	यू.पी.	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+९।४४	एचिलपुर	महाराष्ट्र	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१।१६	गयाजी	बिहार	२४।४८	८५।१	+१०।४	+३१।८
अमेठी	यू.पी.	२६।८	८१।४८	—२।४८	+१८।१६	एटा कासगंज	उ. प्र.	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५।४८	ग्वालियर	म.प्र.	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+३।४४
असिनसोल	बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४	कच्छ भुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६	गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३।४	—२।०
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७।८	—१६।४	कन्नौज	उ. प्र.	२७।२	७९।५८	—१०।८	+१०।५६	गाजीपुर	उ. प्र.	२५।२६	८३।३५	+४।२०	+२५।२४
अकबरपुर	यू.पी.	२६।२६	८२।३३	+०।१२	+२१।१६	कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२	गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५।४	—२४।०	कलकत्ता	प. बंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४०	गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६	कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	—७।२८	गोंडा	उ. प्र.	२७।१०	८१।५८	—२।१२	+१८।५२
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+१।३२	करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	गोरखपुर	उ. प्र.	२६।४६	८३।२६	—३।३२	+२४।३६
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१।०	+६२।४	कन्याकुमारी	तमिलनाडु	८।४	७७।३६	—१९।३६	+१।२८	गोआ	गोआ	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४।८	कल्याद	हिमाचल	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+७।४४	गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+३७।०	+५८।४
आगरा	यू.पी.	२७।११	७८।२	—१७।५२	+३।१२	करीमनगर	आं. प्र.	१८।२८	७९।६	—१३।३६	+७।२८	गुरदासपुर	पंजाब	३२।३	७५।२७	—२८।१२	—७।८
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९।४	—१८।०	कानपुर	उ. प्र.	२६।२७	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	गुना	म. प्र.	२४।४०	७७।३०	—२०।०	—१।४
आजमगढ़	यू.पी.	२६।६	८३।१२	+२।४८	+२३।५२	काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११।८	+३२।१२	घाटमशर	उ. प्र.	२६।८	८०।११	—९।१६	+११।४८
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+८।४८	+२९।५२	कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	३२।९	७६।१८	—२४।४८	—३।४४	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
औरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+७।३२	+२८।३६	काशी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	—२।०	+२३।४	चन्दौसी	उ. प्र.	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+६।१२
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	—७।४०	कांचिपुरम	तमिलनाडु	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+८।१२
ओंगोलु	आंध्र प्र.	१५।३१	८०।६	—९।३६	+११।२८	कार्गिल	जम्मू-का.	३०।३०	७६।१३	—२५।८	—४।४	चिलास	जम्मू	३५।३६	७४।७	—३३।३२	—१२।२८
इन्दौर	म.प्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	—५।२८	किसनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४०	चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	—५।४८
चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	—६।२४	+१४।४०
चित्तौड़गढ	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।८
छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+९।८	+३०।१२
छतरपुर	म.प्र.	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+९।२८
छिबरा मऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२।४	+९।०
छवराटोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	—१।३२
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४
जबलपुर	म. प्र.	२३।१०	७९।५८	—१०।८	+१०।५६
जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	—५।४०
जलपाईगुड़ी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६।०
जम्मू	जम्मू का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	—९।२०
जसवन्तनगर	जसवंतत	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+६।४४
जनकपुर	म. प्र.	२३।४२	८१।५१	—२।३६	—१८।२८
जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०।५	—४९।४०	—२८।३६
जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९।४	—१८।०
जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७।८
जोधपुर	राजरात	२६।१९	७३।४	—३७।४४	—१६।४०
जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+०।५२	+२१।५६
जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	—३।२४
जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५।८
जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	—६।३६
जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२
झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+५।२०
झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६।१९.	—२५।२४	—४।२०
झुंझुनू	राजस्थान	२८।७	७५।२५	—२८।२०	—७।१६
टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६
टेरू	जम्मू	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८।८
टनकपुर	उ. प्र.	२९।१९	८०।१०	—९।२०	+११।४४
टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६
टेहरी	गढ़वाल	३०।२३	७८।३०	—१६।०	+५।४
टूंडला जं.	उ. प्र.	२७।१३	७८।१३	—१७।८	+३।५६
डायमण्ड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+६।४८	+२७।५२
डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८
डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४३	—३५।८	—१४।८

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
डोंग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+०।२४
डेराबाबा	पंजाब	३२।२	७५।४	—२९।४४	—८।४०
ढाका	बंग्लादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४
तलागंग	तलांगंगा	३२।५६	७२।२८	—४०।८	—१९।४
तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४।०	+४५।४
तेजु	अ. प्रदेश	२७।५४	९६।१४	+५४।५६	+७६।०
तंजाबूर	तमिल.	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+८।२८
तिरूवन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+०।२४
तुर -मेघालय	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१।०	+५२।४
धानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	—१।१२
दतिया	म. प्र.	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+४।५२
दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४
दार्जलिंग	उ. प्र.	२७।३	८८।१७	+२३।८	+४४।१२
हिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४
दिण्डुक्कल	तमिलनाडु	१०।२३	७८।५	—१७।४०	+३।२४
दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१।४	—०।०
द्वारका	गुजरात	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—३३।८
देहरादून	उ. प्र.	३०।१९	७८।४	—१७।४४	+३।२०
देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२
देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+९।०	+३०।४
धर्मशाला	हिमाचल	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	—३।२४
धर्मपुरी	तमिलनाडु	१२।८	७८।११	—१७।१६	+३।४८
धारवाड़	कर्नाटक	१५।२८	७५।२	—२९।५२	—८।४८
धार	म. प्र.	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	—८।८
धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+२।३६
धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३।०	—२१।०	—२३।४
धांग्रंधा	सौराष्ट्र	२२.५९	७१।३०	—४४।०	—२२।५६
नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	—८।८
नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	—९।५२
नड़ियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८
नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४
नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	—४।१६
नागपुर	महाराष्ट्र	२१।९	७९।६	—१३।३६	+७।२८
नासिक	महाराष्ट्र	२१।०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८
नागदा	राजस्थान	२७।५२	७१।५४	—४२।२४	—२१।२०

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
नागकोविंल	तमिलनाडू	८।७	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
नीमच	राजस्थान	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
नैनीताल	उ. प्र.	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+८।५२
नेपालगंज	नेपालगंज	२८।३	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
नीलगिरी	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७।८	+३८।१२
पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६
पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	—६।८
पटियाला	पंजाब	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	—३।१६
परलकोट	म. प्र.	१९।४५	८०।४६	—६।५६	+१४।८
पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६
पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९।८
पाण्डिचेरी	तमिलनाडू	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६
पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२।४	—१।०
प्रयागराज	उ. प्र.	२५।२५	८१।५३	—२।२८	+१८।३६
पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८
पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	४०।४४	+६१।४८
पुष्करजी	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४
पेशाबर	प. पाकि.	३४।१	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२
पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२
फतेहपुर	उ. प्र.	२७।६	७७।४०	—१९।२०	+१।४४
फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१।०	—९।५६
फर्रुखाबाद	उ. प्र.	२७।३	७९।३७	—११।३२	+९।३२
फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५।२	—२९।५२	—८।४८
फुलेरा	राजस्थान	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	—७।५२
फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२
फैजाबाद	उ. प्र.	२६।४७	८२।८	—१।२८	+१९।३६
फीरोजबाद	उ. प्र.	२७।९	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
फूलपुर	उ.प्र.	२५।३२	८२।७	—१।३२	+१९।३२
फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४।३	—३३।४८	—१२।४४
फतेहगढ़	उ. प्र.	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+९।२४
बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+५।५६	+२७।०
बद्रीनाथ	उ. प्र.	३०।४४	७९।३०	—१२।०	+९।४
वरंगल	आं. प्र.	१८।४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६।८
बलिया	उ. प्र.	२४।४४	८४।०९	+६।३६	+२७।४०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६	भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२	रोपड़	(पंजा.)	३०।५७	७६।३०	—२४।०	—२।५६
बरेली	उ.प्र.	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+८।४०	भूसावल	महाराष्ट्र	२१।१२	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	लखनऊ	(उ. प्र.)	२६।५१	८०।५९	—६।१४	+१५।०
बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।३४	७६।५२	—२२।३२	—१।२८	भूटान	भूटान	२७।३०	९०।०	+३०।०	+५१।४	ललितपुर	(उ. प्र.)	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
बर्द्धमान	पं. बंगाल	२३।२५	८७।५४	+२१।३६	+४२।४०	भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२	लुधियाना	पंजाब	३०।३५	७५।५३	—२६।२८	—५।२४
बहराइच	उ. प्र.	२७।३४	८१।३७	—३।३२	+१७।३२	मथुरा	उ. प्र.	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+१।४८	शाहजहांमपुर	उ. प्र.	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+१०।५२
बस्ती	उ.प्र.	२६।४८	८२।४६	+१।४	+२२।८	मद्रास	तमिलनाडू	१३।५	८०।१७	—८।५२	+१२।१२	शिलांग	(मेघा.)	२५।३४	९१।४५	+३७।३६	+५८।४०
ब्यावर	राजस्थान	२६।७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०	मणीपुर	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	—४५।५२	—६६।५६	शिवपुरी	(म. प्र.)	२५।३०	७८।४	—१३।४४	+३।२०
वाराणसी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	+२।०	+२३।४	मण्डी	हि. प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२।८	—१।४	राजापुर	(म. प्र.)	२३।२४	७६।१४	—२५।४	—४।०
बासवाड़ा	म. प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+४।४८	मल्लपुरम	केरल	११।४	७६।४	—२५।४४	—४।४०	शेरकिला	(काश्मी.)	३६।७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४
बाराबंकी	उ. प्र.	२६।५६	८१।१०	—५।२०	+१५।४४	मालेगांवना	मालेगांव	२०।३१	७४।३०	—३२।०	—१०।५६	श्रीनगर	(काश्म.)	३४।६	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
बालू घाट	प. दिजाज	२५।१४	८८।४७	+२५।८	+४६।१२	मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+६।२४	शिमला	(हिमा.)	३१।६	७७।१०	—२१।२०	—०।१६
बाँदा	उ. प्र.	२५।२८	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	मुंगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६।०	+३७।४	संतालपु	(गु.)	२३।४७	७०।२८	—४८।८	—२७।४
बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	—३।२०	मुजफ्फरपुर	बिहार	२६।७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२	सातारा	(महा.)	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०
बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	—६।१६	फुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५।८	सागर	(म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५।०	+६।४
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४	मेघालय	शिलंग	२५।५७	८२।०	+३८।०	+५९।४	सरदारशहर	(राज.)	२८।२७	७४।३०	—३२।०	—१०।५६
बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+१।२४	मैसूर	कर्नाटक	१२।२९	७६।२०	—२६।२०	—२।१६	सवाईमाधोपुर	(राज.)	२५।५९	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
बैतूल	म. प्र.	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+२।४८	मेरठ	उ. प्र.	२९।१	७७।४५	—१९।०	+२।४	सहारनपुर	(उ. प्र.)	२९।५९	७७।२३	—२०।२८	+०।३६
बेलगांव	कर्नाटक	१५।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२	मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+०।२८	+२१।३२	सोमनाथ	(गुज.)	२१।१	७०।२६	—४८।१६	—२७।२२
बुलन्दशहर	उ. प्र.	२८।२४	७७।५२	—१८।३	+२।३२	मेडतासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४।३	—३३।४८	—१२।४४	सोलापुर	(महा.)	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	—५।४४
बिलासपुर	हिमाचल	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	—२।३६	यानामा	आं. प्रदेश	१६।४६	८२।१३	—१।८	+१९।५६	सोलन	(हिमा.)	३०।५५	७७।१	—२१।२४	—०।२०
बिलासपुर	म. प्र.	२२।५	८२।१०	—१।२०	+१९।४४	यासिन	केरल	३६।२१	७३।१९	—३६।४८	—१२।४४	सूरत	(गुज.)	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बिजनौर	उ. प्र.	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+३।४८	यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८।८	—१७।२८	+३।३६	सिकन्दराबाद	आ. प्र.	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+५।१६
बिहार शरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+१२।८	+३३।१२	यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७।८	—१७।२८	+ ३।३६	सिरोही	(राज.)	२४।५६	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बीकानेर	राजस्थान	२८।१	७३।१९	—२६।४४	—१५।४०	रतलाम	म. प्र.	२३।१९	७५।३	—२९।४८	—८।४४	सीकर	(राज.)	२७।५१	७५।१४	—२९।४	—८।०
बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	—६।८	रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५९	७३।१९	—३६।४४	—१५।४०	सीतापुर	(उ. प्र.)	२७।३६	८०।४०	—७।२०	+१३।४४
बादर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+२।१२	राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।२६	हरिद्वार	(उ. प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७।८	+३।५६
बीरमगढ़	गुजरात	२३।०	७२।२	—४१।५२	—२०।४८	राजचूर	(कर्ना.)	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+०।२८	हरदोई	(उ. प्र.)	२७।२३	८०।१०	—९।२०	+११।४४
बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४०	राजमपेट	(आ. प्र.)	१४।१२	७९।३४	—११।४४	+९।२०	हथुवा	हथुवा	२६।१२	८४।५	+६।२०	+२७।४४
भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०।०	+१।४	रामपुर	(यू.पी.)	२८।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२	होशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९।०	+२।४
भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+९।४४	रामेश्वर	(तमिल.)	९।१७	७९।३४	—११।३४	+९।२०	हजारीबाद	२४।०	८५।२३	+११।३२	—३२।२७	—३२।३६
भरुच	गुजरात	२१।४१	७३।०	—३८।०	—१६।५६	रायबरेली	(उ. प्र.)	२६।१४	८१।१३	—५।८	+१५।५६	हाजीपुर	(उ.प्र.)	२५।३५	८३।११	+२।४४	—२३।४८
भटिन्डा	पंजाब	३०।११	७४।५७	—३०।१२	—९।८	राजमंड्रि	(आ. प्र.)	१७।५	८१।४८	—२।४८	+१८।१६	होशियारपुर	(पंजा.)	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	—५।१६
भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+०।१६	+२१।२०	रायपुर	(म. प्र.)	२१।१५	८१।३८	—३।२८	+१७।३६	हौशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४३	—१९।८	+१।५६
भोपाल	म. प्र.	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+०।३६	राजगढ़	(म. प्र.)	२४।०	७६।४४	—२३।४	—२।०	हैदराबाद	(आन्ध्र)	१७।२७	७८।३०	—१६।०	+५।४
भीलवाड़ा	राजस्थान	२४।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६	राजगढ़	(राज.)	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	—३।२०	हिसार	हरियाणा	२९।१४	७५।४४	—२७।४	—६।०
भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६।८	—२५।२८	—४।२४	राजनन्द गांव	म.प्र.	२१।१५	८१।५	—५।४०	+१५।१५	हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८
भावनगर	गुजरात	२१।४४	४२।१०	—४२।२०	—२०।१६	रोहतक	(हरियम)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४	हिंगाटा	(उड़ी.)	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	−२०।५६	+१२।०	+६।३०	+६।३०।८	−१।३
कानबेर	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९।८पू.	−३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।४७।३६	" ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।०द.	१४६।२७पू.	−१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।२२	" ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९।०	" ९।०	" ३।३०	+४।२०।४	" ०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।४०उ.	१२७।० पू.	−३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१९।४	" ०।३३
प्योगयांग	उ. कोरिया	३९।०उ.	१२५।३०पू.	−३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।२३।४	" ०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।२८उ.	१२१।३२पू.	−५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	" ०।३०
फिजीदीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।४७।४	" १।८
पेईचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	−१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	" ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	−२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	" ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	−८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।१२।२४	" ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	−३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।४६।१२	" ०।१७
बेंगकाक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	−१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	" ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६।८पू.	−५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।१५।३६	" ०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	−५।४०	" ६।३०	" १।०	+१।१५।२४	" ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।८ पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	" ०।१९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+११।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	" ०।८
काडो	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	−०।०	" ५।३०	− ०।०	+०।२१।१२	" ०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	−२१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।०	" ०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+६।४८	" ४।३०	− १।००	−०।३२।८	+०।५
करांची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	−३२।०	" ५।०	" ०।३०	−०।४०।५६	" ०।६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	−४।१२	" ३।३०	" २।०	−१।४३।८	" ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१ पू.	+०।४	" ३।०	" २।३०	−२।८।५२	" ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	−२।०	" ३।०	" २।३०	−२।१०।५६	" ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	−०।०	" ३।०	" २।३०	−२।८।५६	" ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+५।१२	" ३।०	" २।३०	−२।३।४४	" ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	−२९।४०	" ३।०	" २।३०	−२।३८।३६	" ०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द.	३६।४७पू.	−३३।४	" २।३०	" ३।०	−२।४२।०	" ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	" २।०	" ३।३०	−२।४३।४४	" ०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	−२।५।८	" ०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	−२।८।८	" ०।२८
काहिरा	मिश्र	३०।१३उ.	३१।१३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	−३।४।४	" ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	" २।०	" ३।३०	−२।५७।०	" ०।३०
ट्रांसवाल्य	दक्षि. अफ्रीका	२५।०द.	२९।०पू.	+४।०	" २।०	" ३।३०	−३।१२।५६	" ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	" २।०	" ३।३०	−३।२३।४८	" ०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	−२६।४०	" २।०	" ३।३०	−३।३५।३६	" ०।३६
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	+ १।०	− ४।३०	−३।४६।२८	+०।३८
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+१६।२०	" १।०	" ४।३०	−३।५२।३६	" ०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	−६।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।२०	" ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।५५द.	१३।१५पू.	−७।०	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।५६	" ०।४३
रोम	इटली	४१।५५उ.	१२।२९पू.	−१०।४	" १।०	" ४।३०	" ४।१९।०	" ०।४८
यान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	−३१।३६	+ १।०	" ४।३०	" ४।४०।३२	" ०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।४२उ.	६।९पू.	−३५।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।४४।२०	" ०।४९
ब्रूसेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	−४२।३६	+ १।०	− ४।३०	" ४।५१।३२	" ०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	−५०।४०	+ १।०	" ४।३०	" ४।५९।३६	" ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	−०।०	+ ०।०	" ५।३०	" ५।८।५६	" ०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	−०।२०	− ०।०	" ५।३०	" ५।९।१६	" ०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	−७५।०	+ १।०	" ४।३०	" ५।२३।५६	" ०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२ प.	−८१।२८	+ १।०	" ४।३०	" ५।३०।२४	" ०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	−३६।४०	− ०।०	" ५।३०	" ५।४५।३६	" १।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१।०	" ५।०	" १०।३०	" ९।२७।५६	" १।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०प.	+४।०	" ५।०	" १०।३०	" १०।४।५६	" १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	−२।४४	" ५।०	" १०।३०	" १०।११।४०	" १।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०प.	−८।०	" ५।०	" १०।०	" १०।२६।५६	" १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।२७प.	−३७।८	" ६।०	" ११।३०	" ११।४६।४	" १।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस मसय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच(वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्राय धूप घडी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी बच्चे का जन्म टाईम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवे टाईम को देशी (धूप घडी) टाईम में बदलने की विधि हम ऊपर लिख चुके हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चालन कोष्ठक

मिनट	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं.	६ घं.	७ घं.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं.	१३ घं.	१४ घं.	१५ घं.	१६ घं.	१७ घं.	१८ घं.	१९ घं.	२० घं.	२१ घं.	२२ घं.	२३ घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	जुला.३
७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९
१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५
१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२
२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८
३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	अग. ४
फर. ६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०
१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९	१६
१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७	६	२	२२
२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२९
मार्च २		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	सितं. ४
८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०
१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५१		१३	२८
अप्रै. २	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	अक्टू. ६
८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१४		५०		१५		४९		१६	११
१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४५		१६		४४		१७	१७
२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३
२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३७		१८		३६		१९		३५		२१	२९
मई १		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	नवं. ३
७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९
१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५
१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०
२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६
३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२		३१		२४		२९		२६		२८		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	दिसं. २
जून ६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२४		३४		२२		३६	७
१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३
१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९
२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		२५		३८		२७		३६		२९		३४		३१		३२		३३		३०		३५		२८		३७		२६		३९		२४		४१	२४
३०		४६		२१		४५		२३		४३		२५		४१		२६		३९		२८		३७		३०		३५		३२		३३		३४		३२		३६		३०		३८		२८		३९		२६		४१	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 103

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८		९		१०		११		१२		१३		१४		१५		१६		१७		१८		१९		दक्षिण अक्षांश
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
मा. ता.	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	मा. ता.
जुला. ६	५ ४८	६ २२	५ ४६	६ २३	५ ४४	६ २५	५ ४२	६ २७	५ ४१	६ २९	५ ३९	६ ३०	५ ३७	६ ३२	५ ३५	६ ३४	५ ३३	६ ३६	५ ३१	६ ३८	५ ३०	६ ४०	५ २८	६ ४२	जन. ४
१२	४९	२२	४८	२४	४६	२६	४४	२७	४२	२९	४१	३०	३९	३२	३७	३४	३५	३६	३३	३८	३२	३९	३०	४१	१०
१८	५०	२२	४९	२३	४७	२५	४५	२७	४४	२९	४२	३०	४०	३२	३९	३३	३७	३५	३५	३७	३४	३९	३२	४०	१५
२४	५१	२२	५०	२३	४८	२५	४७	२६	४५	२८	४४	२९	४२	३१	४०	३२	३९	३४	३७	३५	३६	३७	३४	३९	२१
३०	५२	२१	५१	२२	४९	२३	४८	२५	४६	२६	४५	२७	४४	२९	४२	३१	४१	३२	३९	३३	३८	३५	३६	३६	२७
अग. ५	५३	१९	५२	२०	५०	२२	४९	२३	४८	२४	४७	२५	४५	२७	४४	२८	४२	३०	४१	३१	४०	३२	३८	३४	फर. १
११	५३	१७	५२	१८	५१	२०	५०	२१	४८	२२	४७	२३	४६	२४	४५	२५	४४	२७	४२	२८	४१	२९	४०	३०	७
१७	५३	१५	५२	१६	५१	१७	५०	१८	४९	१९	४८	२०	४७	२१	४६	२२	४५	२३	४४	२४	४३	२५	४२	२६	११
२३	५३	१२	५२	१३	५१	१४	५०	१५	४९	१६	४९	१७	४८	१८	४७	१८	४६	१९	४५	२०	४४	२१	४३	२२	१८
२९	५२	१०	५२	१०	५१	११	५०	१२	४९	१२	४९	१३	४८	१४	४७	१४	४७	१५	४६	१६	४५	१७	४४	१७	२४
सितं. ४	५२	६	५२	६	५१	७	५०	८	४९	८	४९	९	४८	१०	४८	१०	४७	११	४७	११	४६	१२	४६	१२	मार्च २
१०	५१	३	५१	३	५०	४	५०	४	४९	५	४९	५	४९	५	४८	६	४८	६	४७	६	४७	७	४७	७	८
१६	५०	०	५०	०	५०	०	५०	०	४९	०	४९	०	४९	१	४९	१	४८	१	४८	१	४८	२	४८	२	१४
२२	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५७	४९	५ ५७	२०
२८	४९	५३	४९	५३	४९	५३	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	५०	५२	५०	५२	५०	५१	५०	५१	२६
अक्टू. ३	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४९	४९	४९	४९	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५१	४७	५१	४७	३०
९	४८	४७	४८	४६	४८	४६	४९	४६	४९	४५	५०	४४	५०	४४	५१	४४	५१	४३	५२	४३	५२	४२	५२	४२	अप्रै. ५
१५	४७	४४	४८	४३	४९	४३	४९	४३	५०	४२	५१	४१	५१	४१	५२	४०	५२	३९	५३	३९	५३	३८	५४	३७	१२
२१	४७	४२	४८	४१	४९	४०	५०	४०	५०	३९	५१	३८	५२	३७	५३	३६	५४	३६	५४	३५	५५	३४	५६	३३	१८
२७	४८	४०	४९	३९	५०	३८	५१	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२	५६	३१	५७	३१	५८	३०	२४
नवं. २	४९	३९	५०	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२	५६	३१	५७	३०	५८	२९	६ ०	२८	६ १	२६	३०
८	५०	३८	५१	३६	५२	३५	५४	३४	५५	३३	५६	११	५७	३०	५८	२९	६ ०	२८	६ ०	२७	२	२५	४	२४	मई ६
१४	५१	३७	५३	३६	५४	३५	५६	३३	५७	३२	५९	३०	६ ०	२८	६ १	२८	२	२६	४	२५	५	२४	७	२२	१२
२०	५४	३८	५५	३६	५६	३५	५८	३३	५९	३२	६ १	३०	२	२९	४	२७	५	२६	७	२४	९	२३	१०	२१	१९
२६	५६	३९	५८	३७	५९	३६	६ १	३४	६ २	३२	४	३०	५	२९	७	२८	९	२६	१०	२४	१२	२३	१४	२१	२५
दिसं. २	५९	४०	६ १	३८	६ २	३७	४	३५	५	३४	७	३२	९	३०	१०	२८	१२	२७	१४	२५	१६	२३	१७	२१	३१
८	६ २	४२	४	४०	५	३९	७	३७	९	३५	११	३३	१२	३२	१४	३०	१६	२८	१७	२६	१९	२५	२१	२३	जून ७
१४	५	४५	७	४३	८	४१	१०	३९	१२	३८	१४	३६	१५	३४	१७	३२	१९	३०	२१	२९	२३	२७	२५	२५	१३
२०	८	४७	१०	४५	११	४४	१३	४२	१५	४०	१७	३८	१८	३७	२०	३५	२२	३३	२४	३१	२६	२९	२८	२७	१९
२६	११	५०	१३	४८	१४	४७	१६	४५	१८	४३	२०	४१	२१	४०	२३	३८	२५	३६	२७	३४	२९	३२	३१	३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०				अक्षांश २१				अक्षांश २२				अक्षांश २३				अक्षांश २४				अक्षांश २५				अक्षांश २६				अक्षांश २७			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जन. १	६	३५	५	३२	६	३७	५	३०	६	३९	५	२८	६	४१	५	२६	६	४३	५	२४	६	४५	५	२२	६	४७	५	२०	६	४९	५	१८
७		३७		३६		३९		३४		४१		३२		४३		३०		४५		२८		४७		२६		४९		२४		५१		२२
१३		३८		४०		४०		३८		४१		३६		४३		३४		४५		३३		४७		३१		४९		२९		५१		२७
१९		३८		४४		४०		४२		४१		४१		४३		३९		४५		३७		४७		३५		४८		३३		५०		३२
२५		३७		४८		३९		४६		४०		४५		४२		४३		४४		४१		४५		४०		४७		३८		४९		३६
३१		३६		५१		३७		५०		३९		४९		४०		४७		४२		४६		४३		४४		४५		४३		४६		४१
फर. ६		३४		५५		३५		५४		३६		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४८		४२		४७		४३		४६
१२		३१		५८		३२		५७		३३		५६		३४		५५		३६		५३		३७		५२		३८		५१		३९		५०
१८		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९		३०		५८		३१		५७		३२		५६		३३		५५		३४		५४
२४		२४		३		२४		३		२५	६	२		२६	६	१		२७	६	०		२८	६	०		२८		५९		२९		५८
मार्च २		१९		५		२०		५		२०		४		२१		४		२२		३		२२		३		२३	६	२		२३	६	२
८		१५		७		१५		७		१५		७		१६		६		१६		६		१७		६		१७		५		१७		५
१४		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		११		८		११		८		११		८
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
२६	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४
अप्रै. २		५३		१५		५३		१५		५२		१५		५२		१६		५१		१६		५१		१७		५१		१७		५०		१८
८		४८		१६		४७		१७		४७		१७		४६		१८		४६		१९		४५		१९		४४		२०		४४		२१
१४		४३		१८		४२		१९		४२		१९		४१		२०		४०		२१		३९		२२		३८		२३		३७		२४
२०		३८		२०		३८		२१		३७		२२		३६		२३		३५		२४		३४		२५		३३		२६		३१		२७
२६		३४		२२		३३		२३		३२		२४		३१		२५		३०		२६		२८		२८		२७		२९		२६		३०
मई १		३१		२३		३०		२५		२९		२६		२७		२७		२६		२९		२५		३०		२३		३१		२२		३३
७		२८		२६		२६		२७		२५		२९		२३		३०		२२		३२		२०		३३		१९		३५		१७		३६
१३		२५		२८		२३		३०		२२		३१		२०		३३		१९		३४		१७		३६		१५		३८		१३		४०
१९		२३		३०		२१		३२		१९		३४		१८		३६		१६		३७		१४		३९		१२		४१		१०		४३
२५		२१		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		४०		१२		४२		१०		४४		८		४६
३१		२०		३५		१८		३७		१६		३९		१४		४१		१२		४३		१०		४५		८		४७		६		४९
जून ६		२०		३८		१८		४०		१६		४२		१४		४४		१२		४६		१०		४८		७		५०		५		५२
१२		२०		४०		१८		४२		१६		४४		१४		४६		१२		४८		१०		५०		७		५२		५		५४
१८		२१		४१		१९		४३		१७		४५		१५		४७		१२		५०		१०		५२		८		५४		६		५६
२४		२२		४३		२०		४५		१८		४७		१६		४९		१४		५१		१२		५३		९		५५		७		५८
३०		२४		४३		२२		४५		२०		४७		१८		५०		१६		५२		१३		५४		११		५६		९		५८

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २८				अक्षांश २९				अक्षांश ३०				अक्षांश ३१				अक्षांश ३२				अक्षांश ३३				अक्षांश ३४				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	५२	५	१६	६	५४	५	१४	६	५६	५	११	६	५८	५	९	७	१	५	७	७	३	५	४	७	६	५	२	जुला. ३
७		५३		२०		५५		१८		५७		१६		५९		१४		२		११		४		९		६		७	९
१३		५३		२५		५५		२३		५७		२१		५९		१९		१		११		४		१४		६		१२	१५
१९		५२		३०		५४		२८		५६		२६		५८		२४		०		२२		२		२०		४		१८	२२
२५		५०		३५		५२		३३		५४		३१		५६		२९	६	५८		२७		०		२५		२		२३	२८
३१		४८		३९		५०		३८		५१		३६		५३		३५		५५		३३	६	५६		३१	६	५८		२९	अग.४
फर. ६		४४		४४		४६		४३		४७		४१		४९		४०		५०		३८		५२		३७		५३		३५	१०
१२		४०		४९		४२		४८		४३		४६		४४		४५		४५		४४		४७		४२		४८		४१	१६
१८		३५		५३		३६		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४१		४८		४२		४७	२२
२४		३०		५७		३१		५६		३२		५५		३२		५५		३३		५४		३४		५३		३५		५२	२९
मार्च २		२४	६	१		२५	६	०		२५	६	०		२६		५९		२७		५८		२७		५८		२८		५७	सितं. ४
८		१८		५		१८		४		१९		४		१९	६	३		१९	६	३		२०	६	२		२०	६	२	१०
१४		११		८		११		८		१२		८		१२		७		१२		७		१२		७		१३		७	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		१२	२२
२६	५	५८		१५	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१६	५	५६		१६	५	५६		१६	२८
अप्रै. २		५०		१८		४९		१९		४९		१९		४८		२०		४८		२०		४७		२१		४७		२१	अक्टू.६
८		४३		२१		४२		२२		४२		२३		४१		२४		४०		२४		३९		२५		३९		२६	११
१४		३७		२५		३६		२५		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	१७
२०		३०		२८		२९		२९		२८		३०		२७		३१		२६		३३		२५		३४		२३		३५	२३
२६		२५		३१		२३		३३		२२		३४		२१		३५		१९		३७		१८		३८		१७		४०	२९
मई १		२०		३४		१९		३६		१७		३७		१६		३९		१४		४०		१३		४२		११		४३	नवं. ३
७		१६		३८		१४		३९		१२		४१		११		४३		९		४५		७		४६		५		४८	९
१३		१२		४१		१०		४३		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	१५
१९		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	४	५८		५५	४	५६		५७	२०
२५		६		४८		४		५०		२		५२	४	५९		५५	४	५७		५७		५५		५९		५३	७	२	२६
३१		४		५१		२		५४		०		५६		५७		५८		५५	७	०		५३	७	३		५०		५	दिसं. २
जून ६		३		५४		१		५७	४	५९		५९		५६	७	१		५४		४		५१		६		४९		९	७
१२		३		५७		१		५९		५८	७	१		५६		४		५३		६		५१		९		४८		१२	१३
१८		३		५९		१	७	१		५९		३		५६		६		५४		८		५१		११		४८		१४	१९
२४		५	७	०		२		२	५	०		५		५७		७		५५		१०		५२		१२		५०		१५	२४
३०		७		०		४		३		२		५		५९		८		५७		१०		५४		१३		५२		१५	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 105

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २० उदय	अक्षांश २० अस्त	अक्षांश २१ उदय	अक्षांश २१ अस्त	अक्षांश २२ उदय	अक्षांश २२ अस्त	अक्षांश २३ उदय	अक्षांश २३ अस्त	अक्षांश २४ उदय	अक्षांश २४ अस्त	अक्षांश २५ उदय	अक्षांश २५ अस्त	अक्षांश २६ उदय	अक्षांश २६ अस्त	अक्षांश २७ उदय	अक्षांश २७ अस्त	अक्षांश २८ उदय	अक्षांश २८ अस्त	अक्षांश २९ उदय	अक्षांश २९ अस्त	अक्षांश ३० उदय	अक्षांश ३० अस्त	अक्षांश ३१ उदय	अक्षांश ३१ अस्त	अक्षांश ३२ उदय	अक्षांश ३२ अस्त	अक्षांश ३३ उदय	अक्षांश ३३ अस्त	अक्षांश ३४ उदय	अक्षांश ३४ अस्त	दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	मा. ता.
जुला.६	५ २६	६ ४४	५ २४	६ ४६	५ २२	६ ४८	५ २०	६ ५०	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १३	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ ०	५ ७	७ ३	५ ४	७ ५	५ २	७ ७	५ ०	७ १०	४ ५७	७ १२	४ ५४	७ १५	जन. ४
१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	५७	१२	६ ५९	१०	१	७	४	५	६	३	८	५ ०	११	५८	१३	१०
१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	५५	१५	५७	१३	६ ५९	१०	२	८	४	६	६	४	८	५ १	११	१५
२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	५३	१८	५५	१६	५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	८	५	५	७	२१
३०	३१	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१८	५५	१६	६ ५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	२७
अग. ५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३९	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	४५	२५	४७	२३	४९	२१	५०	१९	५२	१८	५४	१६	६ ५६	१४	६ ५७	फर. १
११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	४१	२८	४२	२६	४४	२५	४५	२३	४७	२२	४८	२०	५०	१८	५२	७
१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	३६	३१	३७	३०	३८	२८	३९	२७	४१	२६	४२	२४	४४	२३	४५	१३
२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	३०	३४	३१	३३	३२	३२	३३	३१	३४	२९	३५	२८	३७	२७	२८	१८
२९	४४	१८	४३	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	२४
सित. ४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१७	४०	१८	३९	१९	३८	१९	३८	२०	३७	२१	३६	२१	३५	२२	मार्च २
१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	११	४३	११	४२	११	४२	१२	४१	१२	४१	१३	४०	१३	४०	१४	८
१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	४	४५	४	४५	४	४५	५	४५	५	४४	५	४४	५	४४	६	१४
२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	२०
२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	२६
अक्टू.३	५१	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	४४	५४	४४	५४	४४	५४	४३	५५	४३	५५	४३	५५	४२	५६	४२	३०
९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	३८	५७	३७	५७	३७	५८	३६	५८	३६	५९	३५	६ ०	३५	६ ०	३४	अप्रै.५
१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	३२	६ ०	३१	६ १	३०	६ २	३०	६ २	२९	६ ३	२८	४	२७	५	२६	१२
२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	२६	४	२५	५	२४	६	२३	७	२२	८	२१	९	२०	१०	१९	१८
२७	५९	२९	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२१	८	२०	९	१९	१०	१८	११	१६	१२	१५	१४	१४	१५	१३	२४
नवं. २	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	१७	१२	१५	१३	१४	१४	१२	१६	११	१७	१०	१९	८	२०	७	३०
८	५	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	१३	१६	११	१८	१०	१९	८	२१	७	२२	५	२४	३	२६	२	मई ६
१४	८	२१	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	१०	२१	८	२२	६	२४	५	२६	३	२८	१	२९	४ ५९	३१	४ ५७	१२
२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	८	२५	६	२७	४	२९	२	३१	०	३३	४ ५८	३५	५६	३७	५४	१९
२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	६	३०	४	३२	२	३४	०	३६	४ ५८	३८	५६	४०	५४	४३	५२	२५
दिस.२	१९	२०	२१	१८	२३	१७	२५	१४	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	६	३५	४	३७	२	३९	०	४१	५८	४३	५५	४६	५३	४८	५१	३१
८	२३	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	७	३९	५	४१	३	४३	०	४६	५८	४८	५६	५०	५३	५३	५१	जून ७
१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	८	४३	६	४५	४	४८	२	५०	५९	५२	५७	५५	५५	५०	५२	१३
२०	३०	२५	३२	२३	३४	२१	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४२	१३	४४	११	४७	९	४९	६	५१	४	५३	५ २	५६	५९	५८	५७	०	५४	१९
२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	१४	४९	१५	५२	१०	५४	७	५६	५	५९	५ २	७ १	५ ०	७ ४	५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के न ीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) **सूर्योदय**—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८
१५ अक्टूबर का सूर्योदय	६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९)

में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)	६	००	००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६	००	००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	०	२२	३२
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६	२४	३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४=७ मिनट का।

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६	१०	००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	०	२६	४०
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६	३८	४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) **इष्टकाल**—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) **सूर्य स्पष्ट**—पंचाग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) **लग्न सारिणी**—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रात: ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३।१५ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

	घं.	मि.	सै.
२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला			
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५	२८	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३।२७ + १६।०८= २९।३५

उपरोक्त २९।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११।५५ मध्याह के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चोथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११।३७ से १३।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९।३७ में से २९।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९।३५ तक (२९।३५—२९।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९।०५ लग्न आई ५।३।४९।०५ कन्या के ३ अंश ४९ कला ०५ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के

गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९।३७ में से २९।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९।३५ तक (२९।३५ — २९।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९।०५ लग्न आई ५।३।४९।०५ कन्या के ३ अंश ४९ कला ०५ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २४	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १८ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	११ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५४	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १२	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५४	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १२	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५४	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४४ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ ० ५२ ५०	७ २४ ५९ ५९	८ १५ ४० ३५
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ५ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२५	९ १२ ३२ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४०	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, गया, मुजफ्फरपुर, इलाहाबाद, [illegible] आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२४	२	३९	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	[illegible]	६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८		११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२५	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होशयारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१२	२२
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

इन्द्रप्रस्थ नगर लग्न सारिणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२२	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	१९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(१) मेष	क्षत्रिय	अग्नि	चतुष्पाद
(२) वृषभ	वैश्य	भूमि	चतुष्पाद
(३) मिथुन	शूद्र	वायु	मानव
(४) कर्क	ब्राह्मण	वारि	जलचर
(५) सिंह	क्षत्रिय	अग्नि	वनचर
(६) कन्या	वैश्य	भूमि	मानव

(१) मेष

नक्षत्र	अश्विनी-१				भरणी-२				कृतिका-३
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ
वर्ग	सिंह	::	::	मृग	::	::	::	::	गरुड़
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि
	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(२) वृषभ

नक्षत्र	कृतिका-३			रोहिणी-४				मृगशीर्ष-५	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	इ	ऊ	अे	ओ	वा	वी	वु	वे	वो
वर्ग	::	::	::	::	मृग	::	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	राक्षस	पूर्व	अंत्य	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अंत्य	सर्प	देव
पूर्ण राशि	१	१	१	१	१	१	१	१	२
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(३) मिथुन

नक्षत्र	मृगशीर्ष-५		आर्द्रा-६				पुनर्वसु-७		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा
वर्ग	मार्जार	::	::	::	::	सिंह	मार्जार	::	मेष
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा
	पूर्व	मध्य	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मार्जार	देव	मध्य
पूर्ण राशि	२	२	२	२	२	२	२	२	३
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(४) कर्क

नक्षत्र	पुनर्वसु-७	पुष्य-८				आश्लेषा-९			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो
वर्ग	::	::	::	::	श्वान	::	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	आद्य	मेष	देव	मध्य	मध्य	मार्जार	राक्षस	मध्य	अंत्य
पूर्ण राशि	३	३	३	३	३	३	३	३	४
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(५) सिंह

नक्षत्र	मघा-१०				पू.फा.-११				उ.फा.-१२
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
वर्ग	उंदर	::	::	::	उंदर	श्वान	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि
	उंदर	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	मनुष्य	मध्य	मध्य	गौ
पूर्ण राशि	४	४	४	४	४	४	४	४	५
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(६) कन्या

नक्षत्र	उ.फा.-१२			हस्त-१३				चित्रा-१४	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	::	उंदर	::	::	मेष	श्वान	::	उंदर	::
अवकहड़ा चक्र	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	मनुष्य	मध्य	आद्य	महिषी	देव	मध्य	आद्य	व्याघ्र	राक्षस
पूर्ण राशि	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	उत्तर	उत्तर	वसंत	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	शरद

योग														
	विष्कुंभ	प्रीति	आयुष्मान	सौभाग्य	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा	धृति	शूल	गंड	वृद्धि	ध्रुव	व्याघात	हर्षण

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(७) तुला	शूद्र	वायु	मानव
(८) वृश्चिक	ब्राह्मण	वारि	कीट
(९) धनु	क्षत्रिय	अग्नि	मानव/चत
(१०) मकर	वैश्य	भूमि	चत/जल
(११) कुंभ	शूद्र	वायु	मानव
(१२) मीन	ब्राह्मण	वारि	जलचर

(७) तुला

नक्षत्र	चित्रा-१४		स्वाति-१५				विशाखा-१६		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	रा	री	रु	रे	रा	ता	ती	तू	ते
वर्ग	मृग	::	::	::	::	सर्प	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा
	मध्य	मध्य	महिषी	देव	मध्य	अंत्य	व्याघ्र	राक्षस	मध्य
पूर्ण राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(८) वृश्चिक

नक्षत्र	विशाखा-१६	अनुराधा-१७				ज्येष्ठा-१८			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	तो	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु
वर्ग	::	::	::	::	::	::	मृग	::	::
अवकहड़ा चक्र	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	अंत्य	मृग	देव	मध्य	मध्य	मृग	राक्षस	अंत्य	आद्य
पूर्ण राशि	७	७	७	७	७	७	७	७	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(९) धनु

नक्षत्र	मूल-१९				पू.षा.-२०				उ.षा.-२१
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	ये	यो	भा	भी	भु	धा	फा	ढा	भे
वर्ग	::	::	उंदर	::	::	सर्प	उंदर	श्वान	उंदर
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि
	श्वान	राक्षस	अंत्य	आद्य	वानर	मनुष्य	अंत्य	मध्य	नकुल
पूर्ण राशि	८	८	८	८	८	८	८	८	९
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(१०) मकर

नक्षत्र	उ.षा.-२१			श्रवण-२२				धनिष्ठा-२३	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
वर्ग	::	सिंह	::	मार्जार	::	::	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	मनुष्य	अंत्य	अंत्य	वानर	देव	अंत्य	अंत्य	सिंह	राक्षस
पूर्ण राशि	९	९	९	९	९	९	९	९	१०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(११) कुंभ

नक्षत्र	धनिष्ठा-२३		शत.-२४				पू.भा.-२५		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
वर्ग	::	::	::	मेष	::	::	::	::	सर्प
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा
	अंत्य	मध्य	अश्व	राक्षस	अंत्य	आद्य	सिंह	मनुष्य	अंत्य
पूर्ण राशि	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(१२) मीन

नक्षत्र	पू.भा.-२५	उ.भा.-२६				रेवती-२७			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	दी	दू	ज्ञा	झा	था	दे	दो	चा	ची
वर्ग	::	::	मेष	सिंह	सर्प	::	::	सिंह	::
अवकहड़ा चक्र	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	आद्य	गौ	मनुष्य	अंत्य	मध्य	गज	देव	पूर्व	अंत्य
पूर्ण राशि	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	दक्षिण	दक्षिण	शरद	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	वसंत

योग [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	५	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दुष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभूति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट् वर्ग सारिणी चक्र

मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा.	चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
०	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
तु.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	११	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
वृ.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
ध.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
म.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
कुं.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
मी.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	मी.
कं. द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	

न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
कं. द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही हैं कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भौंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपसूतिका ज्ञान—प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान—बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान—सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग—मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भुजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियें, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण इस प्रकार होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट—कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। वैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष—माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह—माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चींज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिह्न, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।
लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण इस प्रकार होते हैं।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

...हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिह्न, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला,

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में जिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, वदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होंठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले वसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्रायः सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा वृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरिष्ट योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे— चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष— चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष— तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल— बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल— पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि.
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियाँ

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि

करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्मामासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश नाशः	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभः	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	वाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयावः	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ आश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्य:
पुत्रादि	पितृ नाश	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	बली	आत्म हानि	भ्रम:	तपस्वी	धन हानि	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानि:	मातृ हानि:	पितृ हानि:	अल्पायु:

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभाग:
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुल नाश	कुल हानि:	धन हानि:	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली— अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल— अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिध योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल बियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलावल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वत: स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसो, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती हीं हीं हुं हुं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठ: ठ: चामुण्डे चण्डिके ठ: ठ: स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐहीं फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ तकिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं २ हन २ दुष्टाना हां हूं फट स्वाहा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोध (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हड़फूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोथ, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियां को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोशृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निंद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निंद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), घृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नैवेद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कडुवा सब प्रकार के स्वादों ये युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिदृव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़यों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ॐ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल),

और बाहुमूल कांख को भी।
(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

होता है।
(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धुम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हों तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों [illegible] दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बाल[illegible] वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में औ[illegible] अथवा अष्टम स्थान में हो तो बाल[illegible]

(८) यदि सप्तम स्थान में श[illegible] युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो [illegible] दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भा[illegible] और अष्टम भाव में शनि हो तो बाल[illegible]

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ [illegible] से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की ए[illegible] अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आ[illegible] में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बाल[illegible] के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और [illegible] घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें में मृत्यु होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार की हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर	चर	चर
चर	स्थिर	द्विस्वभाव
स्थिर	द्विस्वभाव	स्थिर
द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न— इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश

शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी तीसरा का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त। आयु यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्प आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का और एक प्रकार से २ का भाग देना। उदाहरण—जैसे लग्न सिंह बुदशम में स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीघा मंगल हो, चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो भाग्यवान, है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष मंगल पिता की करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु अ

अष्टमक्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं मा के साथ पाप **मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि परस्पर षष्टाष्टमेश्यो दशन्ति रञ्च न शोभनम्। मारके मारकात** थ पाप ग्रह **व्यय द्वितीयेश वद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध** कष्ट **मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।**

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	६	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	११	१३	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१९	२४	१	७	१४	२०	२३	३	५	१३	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	३६	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घड़ी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३३	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२	२८	३३	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न—मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वछन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न—जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न—जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्टस, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न—जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न—जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न—जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न—जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न—जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न—बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्याक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न—जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न—जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न—जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को स्थापित करें।

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र—वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर क्रमशः अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है।

दशा—गत वर्षों में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़ कर उसमें २ घटायें तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—

त्रिपताका चक्र

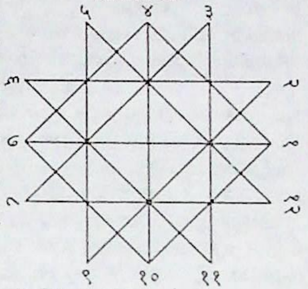

मुद्दा दशा

सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन

त्रिराशिपति—वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान—वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा चतुर्थ-दशम भाव को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कलत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शुद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	......	......
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	......	......
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैर्ऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैर्ऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुड़ी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	.....	.....
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक	सम	तिर्यक	अधो	अधो	अधो

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 133
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	गायत्री वि.	गारुडी	मारण तंत्र	ज्ञान	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८	दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक	सम	तिर्यक	अधो	अधो	अधो

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्ववूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २९, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १,-४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ **वर्ष** उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६ ३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून १, १०, १९, २८** जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १,

४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३,

५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४,२६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्टू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्टू. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दि. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रातःकाल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से गणित शीघ्रता से व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२\times९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

	राशि	अंश	कला
१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

	राशि	अंश	कला
२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६०।० में गत नक्षत्र के घटी-पल

एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की ... व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वर्क्ष	५३ ०	५३ ६	५३ ९	५३ १३	५३ १६	५३ २०	५३ २३	५३ २७	५३ ३०	५३ ३४	५३ ३८	५३ ४१	५३ ४५	५३ ४८	५३ ५	५३ ५६	५३ ५९	५४ ३	५४ ७	५४ १०
गति	१५ ५	१५ ४	१५ ३	१५ २	१५ १	१५ ०	१४ ५९	१४ ५८	१४ ५७	१४ ५६	१४ ५५	१४ ५४	१४ ५३	१४ ५२	१४ ५१	१४ ५०	१४ ४९	१४ ४८	१४ ४७	१४ ४६
सर्वर्क्ष	५४ १४	५४ १८	५४ २१	५४ २५	५४ २९	५४ ३२	५४ ३७	५४ ४०	५४ ४४	५४ ४८	५४ ५१	५४ ५५	५५ ५९	५५ ३	५५ ६	५५ ११	५५ १४	५५ १७	५५ २१	५५ २५
गति	१४ ४५	१४ ४४	१४ ४३	१४ ४२	१४ ४१	१४ ४०	१४ ३९	१४ ३८	१४ ३७	१४ ३६	१४ ३५	१४ ३४	१४ ३३	१४ ३२	१४ ३१	१४ ३०	१४ २९	१४ २८	१४ २७	१४ २६
सर्वर्क्ष	५५ २९	५५ ३३	५५ ३६	५५ ४०	५५ ४४	५५ ४८	५५ १२	५६ ५६	५६ ०	५६ ४	५६ ८	५६ १२	५६ १६	५६ २०	५६ २४	५६ २८	५६ ३२	५६ ३६	५६ ४०	५६ ४०
गति	१४ २५	१४ २४	१४ २३	१४ २२	१४ २१	१४ २०	१४ १९	१४ १८	१४ १७	१४ १६	१४ १५	१४ १४	१४ १३	१४ १२	१४ ११	१४ १०	१४ ९	१४ ८	१४ ७	१४ ६
सर्वर्क्ष	५६ ४८	५६ ५२	५६ ५६	५७ ०	५७ ४	५७ ८	५७ १२	५७ १६	५७ २०	५७ २४	५७ २८	५७ ३२	५७ ३६	५७ ४१	५७ ४५	५७ ५०	५७ ५४	५७ ५८	५८ २	५८ ६
गति	१४ ५	१४ ४	१४ ३	१४ २	१४ १	१४ ०	१३ ५९	१३ ५८	१३ ५७	१३ ५६	१३ ५५	१३ ५४	१३ ५३	१३ ५२	१३ ५१	१३ ५०	१३ ४९	१३ ४८	१३ ४७	१३ ४६
सर्वर्क्ष	५८ ११	५८ १५	५८ १९	५८ २३	५८ २८	५८ ३२	५८ ३६	५८ ४०	५८ ४५	५८ ४९	५८ ५४	५८ ५८	५९ ०	५९ ७	५९ ११	५९ १६	५९ २०	५९ २४	५९ २९	५९ ३३
गति	१३ ४५	१३ ४४	१३ ४३	१३ ४२	१३ ४१	१३ ४०	१३ ३९	१३ ३८	१३ ३७	१३ ३६	१३ ३५	१३ ३४	१३ ३३	१३ ३२	१३ ३१	१३ ३०	१३ २९	१३ २८	१३ २७	१३ २६
सर्वर्क्ष	५९ ३८	५९ ४२	५९ ४७	५९ ५१	५९ ५५	५९ ०	६० ४	६० ९	६० १३	६० १८	६० २२	६० २७	६० ३१	६० ३६	६० ४१	६० ४६	६० ५०	६० ५५	६० ५९	६१ ४
गति	१३ २५	१३ २४	१३ २३	१३ २२	१३ २१	१३ २०	१३ १९	१३ १८	१३ १७	१३ १६	१३ १५	१३ १४	१३ १३	१३ १२	१३ ११	१३ १०	१३ ९	१३ ८	१३ ७	१३ ६
सर्वर्क्ष	६१ ८	६१ १३	६१ १७	६१ २२	६१ २७	६१ ३२	६१ ३७	६१ ४१	६१ ४६	६१ ५१	६१ ५६	६२ १	६२ ६	६२ १०	६२ १५	६२ २०	६२ २५	६२ ३०	६२ ३५	६२ ३९
गति	१३ ५	१३ ४	१३ ३	१३ २	१३ १	१३ ०	१२ ५९	१२ ५८	१२ ५७	१२ ५६	१२ ५५	१२ ५४	१२ ५३	१२ ५२	१२ ५१	१२ ५०	१२ ४९	१२ ४८	१२ ४७	१२ ४६
सर्वर्क्ष	६२ ४४	६२ ४९	६२ ५४	६२ ५९	६३ ४	६३ ९	६३ १४	६३ १९	६३ २४	६३ २९	६३ ३४	६३ ३९	६३ ४४	६३ ४९	६३ ५४	६३ ०	६३ ५	६३ १	६४ १५	६४ २०
गति	१२ ४५	१२ ४४	१२ ४३	१२ ४२	१२ ४१	१२ ४०	१२ ३९	१२ ३८	१२ ३७	१२ ३६	१२ ३५	१२ ३४	१२ ३३	१२ ३२	१२ ३१	१२ ३०	१२ २९	१२ २८	१२ २७	१२ २६
सर्वर्क्ष	६४ २६	६४ ३१	६४ ३६	६४ ४१	६४ ४६	६४ ५२	६४ ५७	६५ ३	६५ ८	६५ १३	६५ १८	६५ २४	६५ २९	६५ ३४	६५ ४०	६५ ४५	६५ ५२	६५ ५६	६५ १	६६ ७
गति	१२ २५	१२ २४	१२ २३	१२ २२	१२ २१	१२ २०	१२ १९	१२ १८	१२ १७	१२ १६	१२ १५	१२ १४	१२ १३	१२ १२	१२ ११	१२ १०	१२ ९	१२ ८	१२ ७	१२ ६
सर्वर्क्ष	६६ १२	६६ १८	६६ २३	६६ २९	६६ ३४	६६ ४०	६६ ४६	६६ ५२	६६ ५९	६७ ५	६७ ११	६७ १८	६७ २३	६७ ३०	६७ ३७	६७ ४३	६७ ५०	६७ ५७	६८ ३	+ +
गति	१२ ५	१२ ४	१२ ३	१२ २	१२ १	१२ ०	११ ५९	११ ५८	११ ५७	११ ५६	११ ५५	११ ५४	११ ५३	११ ५२	११ ५१	११ ५०	११ ४९	११ ४८	११ ४७	+ +

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६०।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि-चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

अश्विनि	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले
०	०	१	१	२	२	३	३	४
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मघा	**पू.फा.**	**उ.फा.**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाति**	**विशाखा**	**अनुराधा**	**ज्येष्ठा**
४	४	५	५	६	६	७	७	८
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मूल	**पू.षा.**	**उ.षा.**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शतभिषा**	**पू.भा.**	**उ.भा.**	**रेवती**
८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण-यथा भभोग ६५।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२।०९ को और भभात् १९।०३ को गुणा किया (१२।०९)×(१९।०३)=२३१°।२७'।२७" या ३° ।५१'।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल	=	३।५१।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान	=	७।०३।२०।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ	=	७।०७।११।२७

चन्द्र गति १२।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	[illegible]	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२२		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२२		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के अंश	कला	मेष, सिंह, धनु महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	वृष, कन्या, मकर महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	मिथुन, तुला, कुम्भ महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	कर्क, वृश्चिक, मीन महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—

चन्द्रमा के अंश	कला	मेष, सिंह, धनु महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	वृष, कन्या, मकर महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	मिथुन, तुला, कुम्भ महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	कर्क, वृश्चिक, मीन महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष मास	दिन	शुक्र २० वर्ष मास	दिन	सूर्य ६ वर्ष मास	दिन	चन्द्रमा १० वर्ष मास	दिन	मंगल ७ वर्ष मास	दिन	राहु १८ वर्ष मास	दिन	गुरु १६ वर्ष मास	दिन	शनि १९ वर्ष मास	दिन	बुध १७ वर्ष मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	६
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

ग्रह	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	२८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	२२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	[illegible]	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२९	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु (बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा	बृ
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१०	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मास	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सु	च	म	रा	बृ
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	म	रा	बृ	श
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	११	२८	२०	२६	२५	९	३
घ.	१६	३२	३४	२७	७	३२	२१	१२	२५

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	चं	म	रा	बृ	श	बु
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	२७	३०	४७	२५	१७	४२	२२	२०	३२

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	म	रा
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घटी	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	म	रा	बृ	श
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	चं	म	रा	बृ	श	बु	के
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	म	रा	बृ	श
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	चं	म	रा	बृ	श	बु
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अत: प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यत: किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव या राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषडाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अत: केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अत: केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतै वाऽपि यद्यदभावेश संयुतै। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दु:ख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दु:ख मिलता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि— समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''** बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्य मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि— यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर **''ॐ नमः शिवाय''** आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि— सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः'** की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि— बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

वृहस्पतिवार के व्रत की विधि— यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि— यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि— यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। **राहु की शान्ति के लिए** भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु— केतु के बीज मंत्र **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)— १ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध— अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

शान्ति के लिए 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः' मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

… चावल, कंगनी।

अष्टगंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानांतर	भयं	श्रीः	मानभंग	दैत्य	विजयः	मार्ग:गमन	पीड़ाः	सुक् नाश	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	जानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मलाभ	सोख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौमः	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुखः	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शभु भीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनिः	भ्रातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्म हानि	विजयः	सुलाभं	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभः	शोकः
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्मः १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मंत्री	दुःशील	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्मगः	बली	अशुजिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्म हानि	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दुःखार्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्ता	शोकार्ता	रोगाढ्या	मातृहीना।	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि— समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि— यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर "**ॐ नमः शिवाय**" आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि— सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए '**ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**' की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि— बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र '**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**' का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

वृहस्पतिवार के व्रत की विधि— यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए '**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः**' मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि— यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए '**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**' की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि— यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और '**ॐ शं शनैश्चराय नमः**' मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें।

राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु— केतु के बीज मंत्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)— १ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध— अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मान
धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की
निवृत्ति होती है।

का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु
सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)—१ काले माश (उड़द), २. मूंग,
गेहूं, चन, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध— अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन,
लौंग और गोरोचन।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानांतर	भयं	श्रीः	मानभंग	दैत्य	विजयः	मार्ग:गमन	पीड़ाः	सुकृ नाश	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौमः	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुखः	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शभु भीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्म हानि	विजयः	सुलाभं	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभः	शोकः
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्मः १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मंत्री	दुःशील	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्मगः	बली	अशुजिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्म हानि	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	च.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.म.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु.१५°	धनु१५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	ष४°से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु१३°	तुला१०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., श्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये. रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, भ. मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३½	½	५	२½	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति, कला, विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३".४३	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५ शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५

टिप्पणी—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

शनि वर्जित	बुध वर्जित					बुध वर्जित	

टिप्पणी—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत

ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००

१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. धृत

पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००

१. वशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख

आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००

१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन

उ. दाघचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००

१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण

मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००

१. प्रस्त्रल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कण्हेर
९. वृषभ

द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००

१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लाहपात्र

वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवेतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोहू
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र

प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००

१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अंभक

नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश पठानसगोत्र कष्णवर्ण जप १८०००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहाः	गोचराद्येर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं.	जपनीय मंत्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड़्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूरं	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७				राहु दशा वर्ष १८			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्				आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा	२	८	१२
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८	बृ	२	४	२४
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६	श	२	१०	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	र	०	१०	२४
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६	चं	१	६	०
शु	०	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०	मं	१	०	१८

गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९				बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि . तन्मध्येऽन्तरम्				. पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बृ	२	१	१८	श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
श	२	६	१२	बु	२	८	९	के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
बु	२	३	६	के	१	१	९	शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
के	०	११	६	शु	३	२	०	र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
शु	२	८	०	र	०	११	१२	चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
र	०	९	१८	चं	१	७	०	मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
चं	१	४	०	मं	१	१	९	रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
मं	०	११	६	रा	२	१०	६	बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२	श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रुभयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रूग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यञ्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल	योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	१	४	३	१	१	१	प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारभृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिर्वेशाकरधातुहेम प्रबालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्यं विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्मार्कसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को सिखाना, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण), आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र शुभ हैं। ३. बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अतः गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्त्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त, मूल ३ उ., पु., अश्विन	श्र.रो.मृ. पुष्य, अनुराधा	अश्विनी उ.भा., कृत्ति., अश्ले	रोहिणी अनु., हस्त कृत्ति., मृग.	रेव.,अनु., अश्वि.,पुन. पुष्य	रेव. अनु., अश्वि., पुन., श्रव.	श्रवण रोहिणी स्वाति
दुष्ट तिथि	१, ३, ७	२-११	३-९-१२	७-९-११	—	—	११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अतः कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विविध मुहूर्त्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तानोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अत: इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन— गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोन्नयन— यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है "शिर की मांग" लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि—**"प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा"** तथा **"पुंसवनवत्"** कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त्त में इसे करें।

आश्लायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने को मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार— शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। ***मन्त्र*—ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भूवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

स्तन पान मुहूर्त्त— रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त— उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म— मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलत: दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार— घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार— भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन— देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में "प्राणो वै अन्नम" अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध— जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त्र उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते हैं वे पशुता के सूचक माने गये हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय के बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मू., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मृ., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त्त—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त्त—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, सूतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (ऽ) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता—सूर्य, मंगल, वृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	कृत्ति.	अनु	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये	पुन.	शत.	ज्ये	
शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि	उ.षा.	धनि	शत.	विशा.	धनि	
पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा	पू.भा	पु.	पू.भा	आ	वि	उ.फा	म	
चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा	स्वा.	हस्त	पू.षा	भर.	अनु	पू.फा	पू.फा	
मूल	हस्त	रेव.	पू.भा	भर.	रेव.	पू.फा	उ.भा	उ.षा	भर.	स्वा	

३. युति—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

7-10-5-10-5-7-5-5-5-5-5-7

४. वेध— पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अश्वि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र— विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल— विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह— विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्लक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य— जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि— जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार— लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भठिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)— रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना— आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्रायः लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष— दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु— जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु— जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु— जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार— जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

पूज्य गुरु—जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।

[illegible] वें हो।

परिहार—जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।

श्रेष्ठ रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।

पुज्य रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।१२।७वें हो।

नेष्ट रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र—जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र—जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न—हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ठ और अष्टम में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त—विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त—विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सम्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ—कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त्त—व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण, देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाहे मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चाहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**—वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य**—राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।

३. **तारा**—वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक्-पृथक् लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि**—राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री**—राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण**—राशि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट**—वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी**—अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम्, अष्टम्, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगी। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर ... पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान

सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव ... न्यूनता आता है। इसलिए मंगलाक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता

मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न ... को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

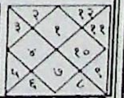

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्कौ चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी पाप ग्रह ... पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान

सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना ... करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता

... मंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न ... को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

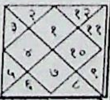

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वं द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०.४.१	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १
	कृ. १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १.३.४.०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३
वृष	कृ. ३	१८॥ -४	२० १.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.१.३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १.४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३
	रो. ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	२२ ३१
	मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४
	आ. ४	१९ ३	२७ ०	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४
कर्क	पुन. १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥
	पु. ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०
	अश्ले.४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२
	पू.फा.४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४
	उ.फा.१	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-
कन्या	उ.फा.३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १
	ह.४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७

कन्या ↓	वर →	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
	नक्षत्र चरण	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४
मेष	अ. ४	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३.६
	भ. ४	२० १५-	१८ २.५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १.३.६	१३॥ १.३	२९॥	२१॥ १	१७॥ -१६	१७॥ ३.६	१९॥ -१६
	कृ. १	१६॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५॥ १.६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३.६	१९॥ -६	२५॥ -६
वृष	कृ. ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १.५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३.६	१४॥ ३.६	२०॥ ३	२४॥	३०॥
	रो. ४	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-	१९ १६	१५॥ ३.६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १
	मृ. २	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥
मिथुन	मृ. २	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६
	आ. ४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२
	पुन. ३	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६
कर्क	पुन. १	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५
	पु. ४	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५
	अश्ले.४	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५
सिंह	म. ४	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३
	पू.फा.४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१
	उ.फा.१	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३
कन्या	उ.फा.३	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३
	ह.४	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३
	चि. २	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५

कन्या ↓	वर →	धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	१३॥ ३.५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३.४	२४॥ +४	२६॥ +४
	भ. ४	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -१	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३.४	२६॥ +४
	कृ. १	२४॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३॥ १३	११॥ २.३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १.४	१९॥ १.४	११॥ ३.४
वृष	कृ. ३	२० ६	१३॥ १.२.६	७॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३
	रो. ४	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ. ४	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
	पुन. ३	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन. १	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु. ४	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले.४	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा.४	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१० १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.फा.१	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.फा.३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह.४	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि. २	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तता नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। चिन्हों का अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) वैर योनी में (२) लिखें हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तथा नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। चिन्हों का अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) और योनी में (२) लिखे हैं।

भाग-२

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

↓ कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४
	स्वा.४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७
	अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०
धन	मू.४	१२ ३५	२० ३५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७
	पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१३५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३
	उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १
मकर	उ.षा.३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५
	श्र.४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	११ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६
	श.४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६
	पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६
मीन	पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१४॥ +१
	उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥

↓ कन्या	वर →	तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
तुला	चि.२	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६
	स्वा.४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	वि.१	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	अनु.४	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धन	मू.४	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
	पू.षा.४	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	उ.षा.१	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२१॥	३१	३१	२३ ३
मकर	उ.षा.३	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	२७ १४+	१७ १४+	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र.४	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध.२	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ +४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२
	श.४	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४
	पू.भा.३	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	पू.भा.१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	१९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उ.भा.४	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	रे.४	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखें है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ताराबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन (वध)	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.

अतिमैत्र: ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य.

रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेनां चाहिये।

दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ।
सन्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

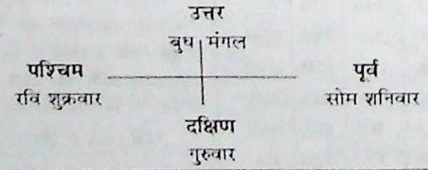

दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास—शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

योगिनी वास

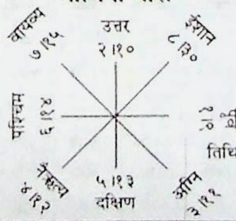

कालराहु चक्रम्

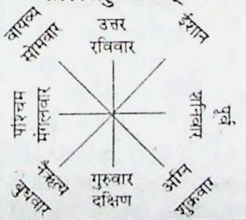

दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त्त के दिन के कुछ समय पश्चात यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार—यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य-चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ताराबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन (वध)	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा | अनु | ज्येष्ठा ... चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा.
अतिमैत्र | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य
रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु.

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेनां चाहिये।

दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

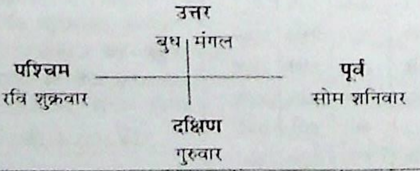

दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्यां काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास— शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

योगिनी वास

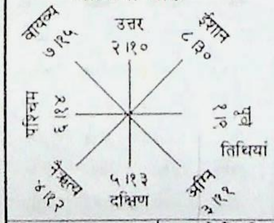

कालराहु चक्रम्

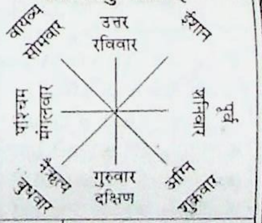

दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार— यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य-चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	घृत	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	ने.	ई.	द.	वा.	पृ.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादी
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघ५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चषुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रर्यपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर योग बनता है।

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये, मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

विडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	अग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥
दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नेऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें षट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ घट्याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमं ऋषव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम् १४श्चैव चतुर्विंशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे पृष्ठपाद			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुऔ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाक	स्थिर	श्री	नाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरिसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	अग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पचिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित	स्वादु	क्षय	स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति:	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त

वाणिज्य कर्म — अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त — अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना — आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना — ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त — अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाशे	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम् — अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध बृह शुक्र वारेषु २. ३, ५, ७, १०, ११, १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह. शुक्र. वारेषु २. ३. ५. ६. ७. ८. १०. ११. १३. १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २. ३. ५. ७. १०. ११. १३. १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १. ३. ५. ७. १०. ११. १२. १३. तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २. ३. ५. ६. ७. १०. ११. १२. १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्यलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २. ३. ५. ६. ७. १०. ११. १२. १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्र मति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गोऽर्धपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरे हणदेवाननामदितर्वजपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद्द शांततर्पणम्। दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालर्विभावगः पूर्वाद्धेदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्षणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्प्रतिविज्ञातस्तछशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्म के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभंत्र.। गयायासर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयोः॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च बृहस्पतौ।

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना--स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त—चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त—तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना—उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त—विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त—अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त:

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

अथ अजा दन का मुहूर्त
भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा ...
वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।
त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ...
चतुष्कयोः॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्धं सिंहस्थे च बृहस्पतौ। ... अधिमासे जन्मादिन अस्त
श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि ... कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन. हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु रवि	श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. म. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, धनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु. भु. च. गु.	अश्विन, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण वेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु. शु	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत, रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र. गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु. प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू. चं. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआं पूजा	शुभ	चं. बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू. म. गु. शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	सू. मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषोधि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त्त	२,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३, १५	सू. च. बु.गु.शु.	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआं व ट्यूबवेल	शुभ	बु. गु. शु. चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु. गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु.गु.श.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. बु. गु. शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. मं. गु. शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू. चं. बु.गु.शु.	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र. बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियमः—किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी बार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा—राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा—कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

मंगल की होरा—वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा—साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा—धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा—नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा—गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

कर्म-योग

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गौविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ठ पर गौविन्द का निवास है अतः प्रातः काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट, ० से श्मशान में मृत्यु।

सर्व कार्येषु सप्तशलाका चक्रम्

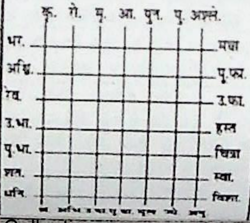

विवाहे पंचशलाका चक्रम

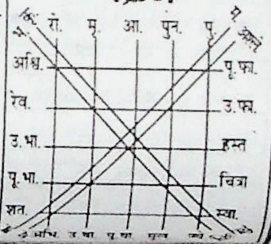

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

गोविन्द का निवास है अतः प्रातः काल में इन का दर्शन ... इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

... श्रेष्ठ । ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ । ४ से सभा में सामान्य । ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ । ६ से क्रीड़ा में श्रेष्ठ, ० से श्मशान में मृत्यु ।

गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)

शुभाशुभ भूमि विचार—जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल—नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार—लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार—चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय—ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या **विषकन्या** कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२—जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आाकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी—यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग—यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग—यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी—मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्वल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग—यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

...का सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके ... अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं ... व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती ... और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

डॉक्टर होने का योग—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्टका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी—यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग—यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग—यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी—मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग—यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

डॉक्टर होने का योग—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- ☞ यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- ☞ यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- ☞ यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- ☞ यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- ☞ यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- ☞ यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- ☞ यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- ☞ अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-

- ☞ यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- ☞ शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- ☞ चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- ☞ हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- ☞ जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- ☞ बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- ☞ शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- ☞ जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- ☞ भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- ☞ यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- ☞ यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति— वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति— वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति— सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति— अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मुड़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंगप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति— ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौंहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर स्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, बैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दु:ख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं और अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दु:ख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है—

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृषिट न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकदमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा— प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मिश्र होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।

पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।

२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दुष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।

३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।

२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा	योग	ध्रुवा
अश्विनी	१७	विष्कुम्भ	१३
भरणी	५	प्रीति	१२
कृत्तिका	३२	आयुष्मान	४७
रोहिणी	१४	सौभाग्य	५९
मृगशिर	४	शोभन	३६
आर्द्रा	१३	अतिगंड	४७
पुनर्वसु	२८	सुकर्मा	१८
पुष्य	३६	धृति	४४
अश्लेषा	३६	शूल	१३
मघा	१५	गंड	२५
पूर्वाफाल्गुनी	३	वृद्धि	१७
उत्तराफाल्गुनी	३१	ध्रुव	२२
हस्त	१८	व्याघात	२५
चित्रा	२५	हर्षण	२५
स्वाति	१४	वज्र	१४
विशाखा	२४	सिद्धि	२२
अनुराधा	२९	व्यतीपात	१३
ज्येष्ठा	३७	वरीयान	३९
मूल	१८	परिधि	१५
पूर्वाषाढ़	७३	शिव	१३
उत्तराषाढ़	३०	सिद्धि	१९
श्रवण	२५	साध्य	१२
धनिष्ठा	२३	शुभ	२५
शतभिषा	२४	शुक्ल	२२
पूर्वाभाद्रपद	९	ब्रह्महू	१३
उत्तराभाद्रपद	४१	ऐन्द्र	२७
रेवती	२८	वैधृति	२६

वस्तु	ध्रुवा
धान्य	७७
कनक	१००
ज्वार	१३३
मूंग	४१
चणा	३५
झोना	७५
तोरी	७७
तेल	३९
घृत	९९
खाण्ड	९९
गुड़	४७
शक्कर	१०१
कपास	१२९
रुई	४४
कांस्य	३७
वस्त्र	१०९
स्वर्ण	९६
हल्दी	७३
चंदन	१८७
चांदी	८१
मिर्च	६८
पित्तल	९९
जौ	५०७
कस्तू.	१३४

वार	ध्रुवा
रविवार	२१
सोमवार	१५
मंगलवार	१२
बुधवार	१२
गुरुवार	१३
शुक्रवार	१४
शनिवार	००

राशि	ध्रुवा
मेष	३
वृष	२२
मिथुन	२२
कर्क	२५
सिंह	१९
कन्या	१७
तुला	२०
वृश्चिक	१३
धन	१६
मकर	१९
कुम्भ	२३
मीन	१४

तिथि	ध्रुवा
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिष, बेल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, पटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जमींकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले, रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं-जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो
अनाज भरना	धन लाभ हो
आग देखना	धन प्राप्ति हो
आग उठाना	कष्ट मिले
अनाज बेचना	हानि हो
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आम खाना	लाभ मिले
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो
हंसना	कठिनाई आवे
रोना	अच्छा समाचार मिले
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले
बाल कटाना	व्यापार में हानि
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति
गर्भवती का आलिंगन	कष्ट, हानि
सफेद मांस देखना	लाभ मिले
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो
सफेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो
लाल वस्त्र पहनना	शुभ , प्रशंसा मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले
बर्फ गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो

स्वप्न	फल
सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
शराब फैंकना	मन को शान्ति मिले
शराब पीना	कष्ट मिले
कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगडे, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
जल पीना	सौभाग्य सूचक
अपने को नंगा देखना	सम्पति की हानि
अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखाना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
सांपों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
मिठाई खाना	विपत्ती आये
तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
बिच्छू काटे	बीमारी हो
अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
बर्रे (भिड, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
मरा बैल देखना	सूखा पड़े
सुरमा लगाना	रोग हो
सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
बादल देखना	उन्नति हो
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	खर्चा बढ़े
भैंस देखना	मुसीबत आये
हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
भेड़िया देखना	राजभय हो
अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
मल (टट्टी) खाना	धन मिले
मल लगाना	व्यय बढ़े
कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो

स्वप्न	फल
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो
पकवान खाना	प्रसन्नता हो
पान खाना	स्त्री संग हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले
सूखा वन देखना	चिन्ता हो
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले
ग्रहण देखना	आफत आये
तेल पीना	रोग हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तिल खाना	बदनामी हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो
सुअर देखना	आयु कम हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी
कुएं में गिरना	परेशानी हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो
सफेद सांप काटे	लाभ हो
काला सांप काटे	हानि हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे
पीला सांप काटे	रोग हो
बरात देखना	रोगी हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले
विष खाना	चिन्ता, शोक हो
सोना पाना	हानि हो
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले
चीता देखना	असफलता मिले
विद्यालय से भागना	सफलता मिले
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों
बिल्ली देखना	हानि, भय

स्वप्न	फल
चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव
रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले
जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले
वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले
जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो
नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले
गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले
कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले
मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले
लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो
वीर्य पान करना	धन मिले
मूत्र पान करना	धन मिले
रक्त पान करना	धन मिले
शरीर से रक्त निकलना	धन मिले
अपना सिर काटना	धन मिले
गुदा से जल पीना	धन मिले
घर जलता देखना	धन मिले
इन्द्र धनुष देखना	धन मिले
शिव मंदिर देखना	धन मिले
धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले
अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले
मोती, मूंगा, कौड़ी देखना	धन प्राप्ति हो
चावल खाना	धन प्राप्ति हो
मूंग खाना	धन प्राप्ति हो
सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो
इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले
गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े
कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो
देवी, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो
सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले
झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले
फल खाना व देखना	सम्मान मिले
बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले
मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले
हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले
अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले
गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो
भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो

स्वप्न	फल
सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
सूअर पर बैठी स्त्री पकड़ें	मृत्यु हो
सिंह, मगरमच्छ पकड़ें	कारागार मिले
गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
दांतों का गिरना	धन हानि हो
नाक-कान कटना	धन हानि हो
जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
कैंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
बकरी देखना	धन लाभ हो
ओले गिरते देखना	दु:ख, कष्ट मिले
टोपी फटना	मानहानि हो
टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
नर्क में जाना	दु:ख क्लेश हो
सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले	मल लागना				सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
बर्फ गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो	कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो	बिल्ली देखना	हानि, भय	भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो
						शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का होंठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बांह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत्र	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेश	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायीं पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनी कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	बायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चाहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण अरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का ईलाज भी होता है जैसे:— १. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- बिकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खेंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1 : 4 : 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए। पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्त्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होनें पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ ॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ ॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्ञ पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेपुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाम्यन्तरे न दोषः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच

दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

अस्तगत गुरौ शुक्रे तथैव चाधिमासे च। गंगायास्थिनक्षेपं न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रमल ज्योतिष से जानें मूल नक्षत्र क्या है समाधान कब हो

लेखक -डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया'

रमल (अरबी ज्योतिष) बताएगा कि 'मूल नक्षत्र' क्या है। उसमें जन्म का क्या फल होता है। यह सभी व्यक्तियों के लिए एक जिज्ञासा का विषय है। समाज का हर व्यक्ति इसी अनिष्ठता से बचने का हर संभव उपाय (समाधान) जानना चाहता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में ये सारी स्थिति बिना कुण्डली के यानी कि प्रश्नकर्ता द्वारा पासा जिसे अरबी भाषा में 'कुरा' कहते हैं। डलवाकर की जाती है। ये स्थिति प्रश्नकर्ता जब रमलाचार्य के सम्मुख होता है। तब ही होती है। यदि प्रश्नकर्ता सम्मुख नहीं हो तो 'प्रश्न-फार्म' के माध्यम से भी प्रश्नकर्ता का जवाब मय समाधान के दिया जा सकता है। ये प्रक्रिया रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र द्वारा नवीन शोधकर प्राप्त की गयी है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र में २७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार चरण माने गये हैं। इनमें से ज्येष्ठा, मूल, आश्लेषा, मघा और रेवती ये 'मूल नक्षत्र' कहलाते हैं तथा पाँच नक्षत्र धनिष्टा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ये 'पंचक नक्षत्र' कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में किसी प्रकार का भारतीय शास्त्र के मुताबिक समाज में कोई भी किसी प्रकार का शुभ कार्य करना पूर्णतः वर्जित माना गया है। मूल नक्षत्र के प्रथम तीन ज्येष्ठा, रेवती, अश्लेषा बुध ग्रह से तथा शेष तीन नक्षत्र मघा, मूल तथा अश्विनी केतु ग्रह के अधिष्ठित होते हैं। इन छह नक्षत्रों में से रेवती नक्षत्र पंचकों का आखिरी नक्षत्र होता है।

नाम नक्षत्र	नाम नक्षत्र	नाम नक्षत्र
ज्येष्ठा	मूल	मघा
अश्लेषा	रेवती	अश्विनी

जब किसी नवजात शिशु का जन्म इन मूल नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र में हो तो उसकी शान्ति होना आवश्यक है। इनके लिए विधि-विधान से ज्योतिष शास्त्र के मार्ग दर्शन के अन्तर्गत मूल नक्षत्र में ही करायी जाती है। क्योंकि रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इन नक्षत्रों में जन्मा शिशु माता-पिता साथ ही परिवार पर शारीरिक-मानसिक-आर्थिक व अन्य प्रकार के कार्य व समय के मुताबिक भारी यानि कि परेशानी मय होता है। यही कारण है कि माता-पिता को कम से कम मूल शान्ति के समय पूजा स्थल पर एक साथ बैठना अति आवश्यक है।

मूल शान्ति के लिए नवजात शिशु का वही नक्षत्र जो २७वें दिन बाद आता है। मूल शान्ति के दिन कार्य में लिया जाता है। जिसमें उसका जन्म हुआ हो वह उसका जन्म नक्षत्र कहलाता है। वैसे तो नवें दिन बाद भी मूल नक्षत्र आता है। जो एक जोड़े के रूप में आता है। जैसा कि रेवती नक्षत्र के अगले दिन अश्विनी नक्षत्र आता है। यह दोनों ही मूल नक्षत्र है। अतः जब कभी २७ दिन के मूल हो तो किसी अच्छे विद्वान् कर्मकाण्डी द्वारा यह कार्य सम्पादित किया जाना चाहिए। वैसे मूल के शान्ति २७ दिन के उपरान्त ही करना अति श्रेष्ठ रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार माना गया है। पुत्ररत्न प्राप्ति होने पर अधिकांशतः कुआं (कूप) पूजन एवं मूल नक्षत्र की शान्ति का कार्य २७ दिन के उपरान्त भी एक साथ किया जा सकता है। इस प्रकार से प्राचीन ग्रन्थों में स्पष्ट व विवेचना पूर्ण से उल्लेख है।

मूल नक्षत्र में जन्मे नवजात शिशु की बड़ी आयु होने पर क्रोध की स्थिति अधिक होती है तथा वे क्रोध में उल्टा-सीधा, अच्छा-बुरा सब कुछ जानते या नहीं जानते बोल देते हैं व करते हैं। ऐसी स्थिति में बस यही कहा जाता है कि इस शिशु के मूल चढ़ रहे हैं। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कि बुध ग्रह एवं केतु ग्रह द्वारा यह मूल नक्षत्र के अधिष्ठिता ग्रह होते हैं। अतः इस ग्रह से सम्बन्धित समस्त गुण यानि की क्रोध का बोल वाला, झूठ बोलना, तनाव, आपसी फूट, गलत आचरण करना अथवा करवाना तथा गलत आचरण वाले व्यक्ति के पास उठना-बैठना यह सारी स्थिति स्वतः ही जन्म जात उत्पन्न हो जाती है और अन्तिम चरण तक कायम रहती है। बुध ग्रह जीभ द्वारा बोली जाने वाली वाणी से सम्बन्धित है तथा केतु ग्रह की भी यही स्थिति है। जो मंगल ग्रह का होता है। क्रूर वाणी तथा वीरता युक्त वाणी का उपयोग करता है। जो उक्त समस्त बातों से ताल्लुकात रखता है तथा इस मूल नक्षत्र की वजह से ये सारी स्थिति जीवन भर रहती है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक बारीकी से प्रस्तार यानी कि जायचा को अध्ययन करने पर मालूम होता है कि मूल नक्षत्र के जन्मे जातक या तो सबसे बड़े और अच्छे पद पर अथवा बड़ी ख्याति वाली स्थिति पर पदासीन होते हैं अथवा सबसे छोटी स्थिति यानी कि निम्न स्तर के होते हैं। ये मध्यम श्रेणी के कदापि नहीं होते हैं एवं अन्य जानकारी भी बराबर प्राप्त होती है। साथ ही मूल नक्षत्र का प्रभाव परिवार जनों व बहिन-भाईयों पर बराबर पड़ता है। इसके अतिरिक्त दैनिक क्रियाकल्पों पर भी समयानुसार दिखाई देता है। जो मात्र हानि ही पैदा करता है।

रमल ज्योतिष बताएगा नग मूंगा कब कैसे पहनें

लेखक -डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया'

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक रत्न मूंगा मंगल ग्रह का अधिष्ठता रत्न है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में मंगल ग्रह की दो शकलें (आकृति) होती हैं। प्रथम हुमरा और द्वितीय नकी पर दोनों शकलें अलग-अलग राशियों व नक्षत्रों से सम्बन्धित हैं। हुमरा शकल वृश्चिक राशि व नक्षत्र अश्विनी, भरणी और उत्तराफाल्गुनी से है। नकी शकल मेष राशि व नक्षत्र अनुराधा, ज्येष्ठा से है। जबकि हुमरा शकल अशुभ साबित है और नकी शकल अशुभ मुनकलिब है। यह मंगल ग्रह एक ही होने के बावजूद भी रमल ज्योतिष शास्त्र के प्रस्तार यानी जायचे में प्रत्येक कार्य व बात का फलादेश अलग-अलग समय के मुताबिक देती है, कि कौन सा कार्य कब किस समय होगा। जिसमें जातक को बारीकी से अभीष्ठ वांछित लाभ समय के मुताबिक प्राप्त होता रहता है। जिस जातक को मंगल ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) बराबर चल रही हो, उस जातक को नग मूंगा की अंगूठी धारण करनी चाहिए। रत्न धारण तब करना चाहिए जब प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के सम्मुख प्रश्न करे कि वर्तमान में किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) चल रही है और कब तक बराबर कायम रहेगी। इस प्रश्न को पासे डालकर जिसे अरबी भाषा में "कुरा" कहते हैं। पासे को एक विशेष शुद्ध पवित्र स्थान पर जलवाए जाते हैं। उन पासों के मुताबिक प्रस्तार यानी कि जायचा बनाया जाता है। यदि प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के सम्मुख ना हो तो एक नवीन शोध विषय के अनुसार "प्रश्न-फार्म" द्वारा भी यह कार्य किया जा सकता है। इन दोनों में गणितीय स्थिति भिन्न होती है। मगर फलादेश और समाधान एक ही आता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता का नाम, माता-पिता का नाम अथवा किसी प्रकार की जानकारी की आवश्यकता नहीं होती है। यहाँ तक कि जन्म कुण्डली की आवश्यकता कदापि कभी नहीं होती है।

मूंगा रत्न दो प्रकार के रंगों में पाया जाता है। एक सिन्दूरी रंग का और दूसरा लाल रंग का, लाल रंग का मूंगा सबसे श्रेष्ट और अच्छा कार्य करने वाला लाभार्थ माना जाता है। मूंगा रत्न का जन्म समुद्र में होता है। यह स्वयं लाल रंग का कीड़ानुमा होता है। साथ ही लकड़ी नुमा एक लाल रंग की लकड़ी सी बनती है। वैज्ञानिक इसे आइसिस नौबेल्ज नाम का लेसदार कीड़ा के नाम से जानते हैं। इसके तत्व कैल्शियम कार्बोनेट होते हैं। इस रत्न को रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक नियमानुसार विधि-विधान द्वारा धारण करने से चर्म रोग, रक्त विकार, रक्त चाप, दोनों प्रकार के पुराने जुकाम व अन्य रक्त से सम्बन्धित बीमारियों में बराबर लाभ प्रदान करता है। यह रत्न स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के वास्ते और शारीरिक कमजोरी में धारण किया जाता है। रमल ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक प्रस्तार के प्रथम व सप्तम घर में यदि मंगल ग्रह की अशुभ व क्रूर शकलें हों और दृष्टि व बलवान भी नजर-ए-तसरीक की हो, साथ ही अन्य घरों को बराबर नजर रखे हुए हो तो उसे यह अवश्य ही धारण करना चाहिए।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक जिनको मांगलिक दोष की स्थिति हो, जो विवाह में विशेष बिलम्ब कारक होती है, साथ ही विवाह में अमंगलता प्रदान करती है। उस जातक को अवश्य ही बराबर धारण करना चाहिए। ताकि शुभ-विवाह के शीघ्र होने में लाभ प्रदान करे साथ ही मांगलिक दोष को समाप्त करता है। जिससे दाम्पत्य जीवन में स्नेह (प्रेम) व पारिवारिक स्नेह साथ ही साथ सन्तान पक्ष भी मजबूती की ओर कायम होती है और तलाक की स्थिति पूर्व से बाद तक नहीं होती है। मंगल ग्रह क्रूर-कातिल, मानसिक, शारीरिक, आर्थिक परेशानी करने वाला ग्रह है। इस रत्न को किसी साहसिक कार्य व किसी विषय पर विजय प्राप्त करने के बावत और मनोबल व प्रतिष्ठा बढ़ने के वास्ते भी धारण किया जाता है। जातक को धारण तब ही करना चाहिए जब रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक उस दृष्टि में अशुभ व विपरीत स्थिति में हो।

रत्न मूंगा कितने वजन का होना चाहिए। यह जानकारी जातक द्वारा प्रश्न करने पर ही प्राप्त होता है। इस रत्न को मंगलवार के दिन अनामिका अंगुली में सोना (स्वर्ण) या तांबा धातु में जड़वाकर रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के विधान द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा कराकर शुभ मुहूर्त में धारण करने का विधान है।

रत्न मूंगा धारण करने से पूर्व यह ध्यान रहना चाहिए कि रत्न एक ही रंग का हो, किसी प्रकार का दाग-धब्बा आदि ना हो, व खण्डित भी नहीं होना चाहिए। रत्न सच्चा व अच्छी श्रेणी का होगा तब ही वांछित लाभ प्राप्त होगा अन्यथा नहीं। जातक को मंगल ग्रह से लाभ नग मूंगा के अतिरिक्त रमल सिद्धयंत्र द्वारा भी हो सक[illegible] विधि-विधान द्वारा यह कार्य किया जाना चाहिए। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व अन्य ज्योतिष श[illegible] बिना जानकारी किए उक्त कोई भी कार्य को धारण करना वर्जित माना है।

रमल अरबी ज्योतिष शोध संस्थान ३, महल खास, किला, भरतपुर (राज.) फोन-०५६४४-२२३२१६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होनें पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमन्न पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाम्यन्तरे न दोषः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो मा... का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच | दिन, बिना समाप्त होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन की पातक होता है। | अस्तगत गुरौ शुक्रे तथैव चाधिमासके। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रमल ज्योतिष से जानें मूल नक्षत्र क्या है समाधान कब हो

लेखक -डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया'

रमल (अरबी ज्योतिष) बताएगा कि 'मूल नक्षत्र' क्या है। उसमें जन्म का क्या फल होता है। यह सभी व्यक्तियों के लिए एक जिज्ञासा का विषय है। समाज का हर व्यक्ति इसी अनिष्ठता से बचने का हर संभव उपाय (समाधान) जानना चाहता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में ये सारी स्थिति बिना कुण्डली के यानी कि प्रश्नकर्ता द्वारा पासा जिसे अरबी भाषा में 'कुरा' कहते हैं। डलवाकर की जाती है। ये स्थिति प्रश्नकर्ता जब रमलाचार्य के सम्मुख होता है। तब ही होती है। यदि प्रश्नकर्ता सम्मुख नहीं हो तो 'प्रश्न-फार्म' के माध्यम से भी प्रश्नकर्ता का जवाब मय समाधान के दिया जा सकता है। ये प्रक्रिया रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र द्वारा नवीन शोधकर प्राप्त की गयी है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र में २७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार चरण माने गये हैं। इनमें से ज्येष्ठा, मूल, आश्लेषा, मघा और रेवती ये 'मूल नक्षत्र' कहलाते हैं तथा पाँच नक्षत्र धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ये 'पंचक नक्षत्र' कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में किसी प्रकार का भारतीय शास्त्र के मुताबिक समाज में कोई भी किसी प्रकार का शुभ कार्य करना पूर्णतः वर्जित माना गया है। मूल नक्षत्र के प्रथम तीन ज्येष्ठा, रेवती, अश्लेषा बुध ग्रह से तथा शेष तीन नक्षत्र मघा, मूल तथा अश्विनी केतु ग्रह के अधिष्ठित होते हैं। इन छह नक्षत्रों में से रेवती नक्षत्र पंचकों का आखिरी नक्षत्र होता है।

नाम नक्षत्र	नाम नक्षत्र	नाम नक्षत्र
ज्येष्ठा	मूल	मघा
अश्लेषा	रेवती	अश्विनी

जब किसी नवजात शिशु का जन्म इन मूल नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र में हो तो उसकी शान्ति होना आवश्यक है। इनके लिए विधि-विधान से ज्योतिष शास्त्र के मार्ग दर्शन के अन्तर्गत मूल नक्षत्र में ही करायी जाती है। क्योंकि रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इन नक्षत्रों में जन्मा शिशु माता-पिता साथ ही परिवार पर शारीरिक-मानसिक-आर्थिक व अन्य प्रकार के कार्य व समय के मुताबिक भारी यानि कि परेशानी मय होता है। यही कारण है कि माता-पिता को कम से कम मूल शान्ति के समय पूजा स्थल पर एक साथ बैठना अति आवश्यक है।

मूल शान्ति के लिए नवजात शिशु का वही नक्षत्र जो २७वें दिन बाद आता है। मूल शान्ति के दिन कार्य में लिया जाता है। जिसमें उसका जन्म हुआ हो वह उसका जन्म नक्षत्र कहलाता है। वैसे तो नवें दिन बाद भी मूल नक्षत्र आता है। जो एक जोड़े के रूप में आता है। जैसा कि रेवती नक्षत्र के अगले दिन अश्विनी नक्षत्र आता है। यह दोनों ही मूल नक्षत्र है। अतः जब कभी २७ दिन के मूल हों तो किसी अच्छे विद्वान् कर्मकाण्डी द्वारा यह कार्य सम्पादित किया जाना चाहिए। वैसे मूल के शान्ति २७ दिन के उपरान्त ही करना अति श्रेष्ठ रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार माना गया है। पुत्ररत्न प्राप्ति होने पर अधिकांशतः कुआं (कूप) पूजन एवं मूल नक्षत्र की शान्ति का कार्य २७ दिन के उपरान्त भी एक साथ किया जा सकता है। इस प्रकार से प्राचीन ग्रन्थों में स्पष्ट व विवेचना पूर्ण से उल्लेख है।

मूल नक्षत्र में जन्मे नवजात शिशु की बड़ी आयु होने पर क्रोध की स्थिति अधिक होती है तथा वे क्रोध में उल्टा-सीधा, अच्छा-बुरा सब कुछ जानते या नहीं जानते बोल देते हैं व करते हैं। ऐसी स्थिति में बस यही कहा जाता है कि इस शिशु के मूल चढ़ रहे हैं। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कि बुध ग्रह एवं केतु ग्रह द्वारा यह मूल नक्षत्र के अधिष्ठिता ग्रह होते हैं। अतः इस ग्रह से सम्बन्धित समस्त गुण यानि की क्रोध का बोल वाला, झूठ बोलना, तनाव, आपसी फूट, गलत आचरण करना अथवा करवाना तथा गलत आचरण वाले व्यक्ति के पास उठना-बैठना यह सारी स्थिति स्वतः ही जन्म जात उत्पन्न हो जाती है और अन्तिम चरण तक कायम रहती है। बुध ग्रह जीभ द्वारा बोली जाने वाली वाणी से सम्बन्धित है तथा केतु ग्रह की भी यही स्थिति है। जो मंगल ग्रह का होता है। क्रूर वाणी तथा चोरता युक्त वाणी का उपयोग करता है। जो उक्त समस्त बातों से ताल्लुकात रखता है तथा इस मूल नक्षत्र की वजह से ये सारी स्थिति जीवन भर रहती है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक बारीकी से प्रस्तार यानी कि जायचा को अध्ययन करने पर मालूम होता है कि मूल नक्षत्र के जन्मे जातक या तो सबसे बड़े और अच्छे पद पर अथवा बड़ी ख्याति वाली स्थिति पर पदासीन होते हैं अथवा सबसे छोटी स्थिति यानी कि निम्न स्तर के होते हैं। ये मध्यम श्रेणी के कदापि नहीं होते हैं एवं अन्य जानकारी भी बराबर प्राप्त होती है। साथ ही मूल नक्षत्र का प्रभाव परिवार जनों व बहिन-भाईयों पर बराबर पड़ता है। इसके अतिरिक्त दैनिक क्रियाकल्पों पर भी समयानुसार दिखाई देता है। जो मात्र हानि ही पैदा करता है।

रमल ज्योतिष बताएगा नग मूँगा कब कैसे पहनें

लेखक -डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया'

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक रत्न मूंगा मंगल ग्रह का अधिष्ठता रत्न है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में मंगल ग्रह की दो शकलें (आकृति) होती हैं। प्रथम हुमरा और द्वितीय नकी पर दोनों शकलें अलग-अलग राशियों व नक्षत्रों से सम्बन्धित हैं। हुमरा शकल वृश्चिक राशि व नक्षत्र अश्विनी, भरणी और उत्तराफाल्गुनी से है। नकी शकल मेष राशि व नक्षत्र अनुराधा, ज्येष्ठा से है। जबकि हुमरा शकल अशुभ साबित है और नकी शकल अशुभ मुनकलिब है। यह मंगल ग्रह एक ही होने के बावजूद भी रमल ज्योतिष शास्त्र के प्रस्तार यानी जायचे में प्रत्येक कार्य व बात का फलादेश अलग-अलग समय के मुताबिक देती है, कि कौन सा कार्य कब किस समय होगा। जिसमें जातक को बारीकी से अभीष्ठ वांछित लाभ समय के मुताबिक प्राप्त होता रहता है। जिस जातक को मंगल ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) बराबर चल रही हो, उस जातक को नग मूंगा की अंगूठी धारण करनी चाहिए। रत्न धारण तब करना चाहिए जब प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के सम्मुख प्रश्न करे कि वर्तमान में किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) चल रही है और कब तक बराबर कायम रहेगी। इस प्रश्न को पासे डालकर जिसे अरबी भाषा में "कुरा" कहते हैं। पासे को एक विशेष शुद्ध पवित्र स्थान पर जलवाए जाते हैं। उन पासों के मुताबिक प्रस्तार यानी कि जायचा बनाया जाता है। यदि प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के सम्मुख ना हो तो एक नवीन शोध विषय के अनुसार "प्रश्न-फार्म" द्वारा भी यह कार्य किया जा सकता है। इन दोनों में गणितीय स्थिति भिन्न होती है। मगर फलादेश और समाधान एक ही आता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता का नाम, माता-पिता का नाम अथवा किसी प्रकार की जानकारी की आवश्यकता नहीं होती है। यहाँ तक कि जन्म कुण्डली की आवश्यकता कदापि कभी नहीं होती है।

मूंगा रत्न दो प्रकार के रंगों में पाया जाता है। एक सिन्दूरी रंग का और दूसरा लाल रंग का, लाल रंग का मूंगा सबसे श्रेष्ठ और अच्छा कार्य करने वाला लाभार्थ माना जाता है। मूंगा रत्न का जन्म समुद्र में होता है। यह स्वयं लाल रंग का कीड़ानुमा होता है। साथ ही लकड़ी नुमा एक लाल रंग की लकड़ी सी बनती है। वैज्ञानिक इसे आइसिस नौबेल्ज नाम का लेसदार कीड़ा के नाम से जानते हैं। इसके तत्त्व कैल्शियम कार्बोनेट होते हैं। इस रत्न को रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक नियमानुसार विधि-विधान द्वारा धारण करने से चर्म रोग, रक्त विकार, रक्त चाप, दोनों प्रकार के पुराने जुकाम व अन्य रक्त से सम्बन्धित बीमारियों में बराबर लाभ प्रदान करता है। यह रत्न स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के वास्ते और शारीरिक कमजोरी में धारण किया जाता है। रमल ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक प्रस्तार के प्रथम व सप्तम घर में यदि मंगल ग्रह की अशुभ व क्रूर शकलें हों और दृष्टि व बलवान भी नजर-ए-तसरीक की हो, साथ ही अन्य घरों को बराबर नजर रखे हुए हो तो उसे यह अवश्य ही धारण करना चाहिए।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक जिनको मांगलिक दोष की स्थिति हो, जो विवाह में विशेष बिलम्ब कारक होती है, साथ ही विवाह में अमंगलता प्रदान करती है। उस जातक को अवश्य ही बराबर धारण करना चाहिए। ताकि शुभ-विवाह के शीघ्र होने में लाभ प्रदान करे साथ ही मांगलिक दोष को समाप्त करता है। जिससे दाम्पत्य जीवन में स्नेह (प्रेम) व पारिवारिक स्नेह साथ ही साथ सन्तान पक्ष भी मजबूती की ओर कायम होती है और तलाक की स्थिति पूर्व से बाद तक नहीं होती है। मंगल ग्रह क्रूर-कातिल, मानसिक, शारीरिक, आर्थिक परेशानी करने वाला ग्रह है। इस रत्न को किसी साहसिक कार्य व किसी विषय पर विजय प्राप्त करने के बावत् और मनोबल व प्रतिष्ठा बढ़ने के वास्ते भी धारण किया जाता है। जातक को धारण तब ही करना चाहिए जब रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक उस दृष्टि में अशुभ व विपरीत स्थिति में हो।

रत्न मूंगा कितने वजन का होना चाहिए। यह जानकारी जातक द्वारा प्रश्न करने पर ही प्राप्त होता है। इस रत्न को मंगलवार के दिन अनामिका अंगुली में सोना (स्वर्ण) या तांबा धातु में जड़वाकर रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के विधान द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा कराकर शुभ मुहूर्त में धारण करने का विधान है।

रत्न मूंगा धारण करने से पूर्व यह ध्यान रहना चाहिए कि रत्न एक ही रंग का हो, किसी प्रकार का दाग-धब्बा आदि ना हो, व खण्डित भी नहीं होना चाहिए। रत्न सच्चा व अच्छी श्रेणी का होगा तब ही वांछित लाभ प्राप्त होगा अन्यथा नहीं। जातक को मंगल ग्रह से लाभ नग मूंगा के अतिरिक्त रमल सिद्धयंत्र द्वारा भी हो सक... विधि-विधान द्वारा यह कार्य किया जाना चाहिए। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व अन्य ज्योतिष श... बिना जानकारी किए उक्त कोई भी कार्य को धारण करना वर्जित माना है।

रमल अरबी ज्योतिष शोध संस्थान ३, महल खास, किला, भरतपुर (राज.) फोन-०५६४४-२२३२१६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्त्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्त्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छटे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमन्न पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्पास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाम्यन्तरे न दोषः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो मा[illegible] का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच | दिन, बिना समाप्ति होने से १ दिन का पातक लगता है। जमाई [illegible] के मरने से १ दिन की पातक होता है। | अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमासके। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः॥

रमल ज्योतिष से जानें मूल नक्षत्र क्या है समाधान कब हो

लेखक -डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया'

रमल (अरबी ज्योतिष) बताएगा कि 'मूल नक्षत्र' क्या है। उसमें जन्म का क्या फल होता है। यह सभी व्यक्तियों के लिए एक जिज्ञासा का विषय है। समाज का हर व्यक्ति इसी अनिष्ठता से बचने का हर संभव उपाय (समाधान) जानना चाहता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में ये सारी स्थिति बिना कुण्डली के यानी कि प्रश्नकर्ता द्वारा पासा जिसे अरबी भाषा में 'कुरा' कहते हैं। डलवाकर की जाती है। ये स्थिति प्रश्नकर्ता जब रमलाचार्य के सम्मुख होता है। तब ही होती है। यदि प्रश्नकर्ता सम्मुख नहीं हो तो 'प्रश्न-फार्म' के माध्यम से भी प्रश्नकर्ता का जवाब मय समाधान के दिया जा सकता है। ये प्रक्रिया रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र द्वारा नवीन शोधकर प्राप्त की गयी है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र में २७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार चरण माने गये हैं। इनमें से ज्येष्ठा, मूल, आश्लेषा, मघा और रेवती ये 'मूल नक्षत्र' कहलाते हैं तथा पाँच नक्षत्र धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ये 'पंचक नक्षत्र' कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में किसी प्रकार का भारतीय शास्त्र के मुताबिक समाज में कोई भी किसी प्रकार का शुभ कार्य करना पूर्णत: वर्जित माना गया है। मूल नक्षत्र के प्रथम तीन ज्येष्ठा, रेवती, अश्लेषा बुध ग्रह से तथा शेष तीन नक्षत्र मघा, मूल तथा अश्विनी केतु ग्रह के अधिष्ठित होते हैं। इन छह नक्षत्रों में से रेवती नक्षत्र पंचकों का आखिरी नक्षत्र होता है।

नाम नक्षत्र	नाम नक्षत्र	नाम नक्षत्र
ज्येष्ठा	मूल	मघा
अश्लेषा	रेवती	अश्विनी

जब किसी नवजात शिशु का जन्म इन मूल नक्षत्रों में से किसी भी नक्षत्र में हो तो उसकी शान्ति होना आवश्यक है। इनके लिए विधि-विधान से ज्योतिष शास्त्र के मार्ग दर्शन के अन्तर्गत मूल नक्षत्र में ही करायी जाती है। क्योंकि रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इन नक्षत्रों में जन्मा शिशु माता-पिता साथ ही परिवार पर शारीरिक-मानसिक-आर्थिक व अन्य प्रकार के कार्य व समय के मुताबिक भारी यानि कि परेशानी मय होता है। यही कारण है कि माता-पिता को कम से कम मूल शान्ति के समय पूजा स्थल पर एक साथ बैठना अति आवश्यक है।

मूल शान्ति के लिए नवजात शिशु का वही नक्षत्र जो २७वें दिन बाद आता है। मूल शान्ति के दिन कार्य में लिया जाता है। जिसमें उसका जन्म हुआ हो वह उसका जन्म नक्षत्र कहलाता है। वैसे तो नवें दिन बाद भी मूल नक्षत्र आता है। जो एक जोड़े के रूप में आता है। जैसा कि रेवती नक्षत्र के अगले दिन अश्विनी नक्षत्र आता है। यह दोनों ही मूल नक्षत्र हैं। अत: जब कभी २७ दिन के मूल हों तो किसी अच्छे विद्वान् कर्मकाण्डी द्वारा यह कार्य सम्पादित किया जाना चाहिए। वैसे मूल के शान्ति २७ दिन के उपरान्त ही करना अति श्रेष्ठ रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार माना गया है। पुत्ररत्न प्राप्ति होने पर अधिकांशत: कुआं (कूप) पूजन एवं मूल नक्षत्र की शान्ति का कार्य २७ दिन के उपरान्त भी एक साथ किया जा सकता है। इस प्रकार से प्राचीन ग्रन्थों में स्पष्ट व विवेचना पूर्ण से उल्लेख है।

मूल नक्षत्र में जन्मे नवजात शिशु की बड़ी आयु होने पर क्रोध की स्थिति अधिक होती है तथा वे क्रोध में उल्टा-सीधा, अच्छा-बुरा सब कुछ जानते या नहीं जानते बोल देते हैं व करते हैं। ऐसी स्थिति में बस यही कहा जाता है कि इस शिशु के मूल चढ़ रहे हैं। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कि बुध ग्रह एवं केतु ग्रह द्वारा यह मूल नक्षत्र के अधिष्ठित ग्रह होते हैं। अत: इस ग्रह से सम्बन्धित समस्त गुण यानि की क्रोध का बोल वाला, झूठ बोलना, तनाव, आपसी फूट, गलत आचरण करना अथवा करवाना तथा गलत आचरण वाले व्यक्ति के पास उठना-बैठना यह सारी स्थिति स्वत: ही जन्म जात उत्पन्न हो जाती है और अन्तिम चरण तक कायम रहती है। बुध ग्रह जीभ द्वारा बोली जाने वाली वाणी से सम्बन्धित है तथा केतु ग्रह की भी यही स्थिति है। जो मंगल ग्रह का होता है। क्रूर वाणी तथा वीरता युक्त वाणी का उपयोग करता है। जो उक्त समस्त बातों से ताल्लुकात रखता है तथा इस मूल नक्षत्र की वजह से ये सारी स्थिति जीवन भर रहती है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक बारीकी से प्रस्तार यानी कि जायचा को अध्ययन करने पर मालूम होता है कि मूल नक्षत्र के जन्में जातक या तो सबसे बड़े और अच्छे पद पर अथवा बड़ी ख्याति वाली स्थिति पर पदासीन होते हैं अथवा सबसे छोटी स्थिति यानी कि निम्न स्तर के होते हैं। ये मध्यम श्रेणी के कदापि नहीं होते हैं एवं अन्य जानकारी भी बराबर प्राप्त होती है। साथ ही मूल नक्षत्र का प्रभाव परिवार जनों व बहिन-भाईयों पर बराबर पड़ता है। इसके अतिरिक्त दैनिक क्रियाकल्पों पर भी समयानुसार दिखाई देता है। जो मात्र हानि ही पैदा करता है।

रमल ज्योतिष बताएगा नग मूँगा कब कैसे पहनें

लेखक -डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया'

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक रत्न मूंगा मंगल ग्रह का अधिष्ठता रत्न है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में मंगल ग्रह की दो शकलें (आकृति) होती हैं। प्रथम हुमरा और द्वितीय नकी पर दोनों शकलें अलग-अलग राशियों व नक्षत्रों से सम्बन्धित हैं। हुमरा शकल वृश्चिक राशि व नक्षत्र अश्विनी, भरणी और उत्तराफाल्गुनी से है। नकी शकल मेष राशि व नक्षत्र अनुराधा, ज्येष्ठा से है। जबकि हुमरा शकल अशुभ साबित है और नकी शकल अशुभ मुनकलिब है। यह मंगल ग्रह एक ही होने के बावजूद भी रमल ज्योतिष शास्त्र के प्रस्तार यानी जायचे में प्रत्येक कार्य व बात का फलादेश अलग-अलग समय के मुताबिक देती है, कि कौन सा कार्य कब किस समय होगा। जिसमें जातक को बारीकी से अभीष्ठ वांछित लाभ समय के मुताबिक प्राप्त होता रहता है। जिस जातक को मंगल ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) बराबर चल रही हो, उस जातक को नग मूंगा की अंगूठी धारण करनी चाहिए। रत्न धारण तब करना चाहिए जब प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के सम्मुख प्रश्न करे कि वर्तमान में किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) चल रही है और कब तक बराबर कायम रहेगी। इस प्रश्न को पासे डालकर जिसे अरबी भाषा में "कुरा" कहते हैं। पासे को एक विशेष शुद्ध पवित्र स्थान पर जलवाए जाते हैं। उन पासों के मुताबिक प्रस्तार यानी कि जायचा बनाया जाता है। यदि प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के सम्मुख ना हो तो एक नवीन शोध विषय के अनुसार "प्रश्न-फार्म" द्वारा भी यह कार्य किया जा सकता है। इन दोनों में गणितीय स्थिति भिन्न होती है। मगर फलादेश और समाधान एक ही आता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता का नाम, माता-पिता का नाम अथवा किसी प्रकार की जानकारी की आवश्यकता नहीं होती है। यहाँ तक कि जन्म कुण्डली की आवश्यकता कदापि कभी नहीं होती है।

मूंगा रत्न दो प्रकार के रंगों में पाया जाता है। एक सिन्दूरी रंग का और दूसरा लाल रंग का, लाल रंग का मूंगा सबसे श्रेष्ठ और अच्छा कार्य करने वाला लाभार्थ माना जाता है। मूंगा रत्न का जन्म समुद्र में होता है। यह स्वयं लाल रंग का कीड़ानुमा होता है। साथ ही लकड़ी नुमा एक लाल रंग की लकड़ी सी बनती है। वैज्ञानिक इसे आइसिस नौबेल्ज नाम का लेसदार कीड़ा के नाम से जानते हैं। इसके तत्व कैल्शियम कार्बोनेट होते हैं। इस रत्न को रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक नियमानुसार विधि-विधान द्वारा धारण करने से चर्म रोग, रक्त विकार, रक्त चाप, दोनों प्रकार के पुराने जुकाम व अन्य रक्त से सम्बन्धित बीमारियों में बराबर लाभ प्रदान करता है। यह रत्न स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के वास्ते और शारीरिक कमजोरी में धारण किया जाता है। रमल ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक प्रस्तार के प्रथम व सप्तम घर में यदि मंगल ग्रह की अशुभ व क्रूर शकलें हों और दृष्टि व बलवान भी नजर-ए-तसरीक की हो, साथ ही अन्य घरों को बराबर नजर रखे हुए हो तो उसे यह अवश्य ही धारण करना चाहिए।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक जिनको मांगलिक दोष की स्थिति हो, जो विवाह में विशेष विलम्ब कारक होती है, साथ ही विवाह में अमंगलता प्रदान करती है। उस जातक को अवश्य ही बराबर धारण करना चाहिए। ताकि शुभ-विवाह के शीघ्र होने में लाभ प्रदान करे साथ ही मांगलिक दोष को समाप्त करता है। जिससे दाम्पत्य जीवन में स्नेह (प्रेम) व पारिवारिक स्नेह साथ ही साथ सन्तान पक्ष भी मजबूती की ओर कायम होती है और तलाक की स्थिति पूर्व से बाद तक नहीं होती है। मंगल ग्रह क्रूर-कातिल, मानसिक, शारीरिक, आर्थिक परेशानी करने वाला ग्रह है। इस रत्न को किसी साहसिक कार्य व किसी विषय पर विजय प्राप्त करने के बावत् और मनोबल व प्रतिष्ठा बढ़ने के वास्ते भी धारण किया जाता है। जातक को धारण तब ही करना चाहिए जब रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक उस दृष्टि में अशुभ व विपरीत स्थिति में हो।

रत्न मूंगा कितने वजन का होना चाहिए। यह जानकारी जातक द्वारा प्रश्न करने पर ही प्राप्त होता है। इस रत्न को मंगलवार के दिन अनामिका अंगुली में सोना (स्वर्ण) या तांबा धातु में जड़वाकर रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के विधान द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा कराकर शुभ मुहूर्त में धारण करने का विधान है।

रत्न मूंगा धारण करने से पूर्व यह ध्यान रहना चाहिए कि रत्न एक ही रंग का हो, किसी प्रकार का दाग-धब्बा आदि ना हो, व खण्डित भी नहीं होना चाहिए। रत्न सच्चा व अच्छी श्रेणी का होगा तब ही वांछित लाभ प्राप्त होगा अन्यथा नहीं। जातक को मंगल ग्रह से लाभ नग मूंगा के अतिरिक्त रमल सिद्धयंत्र द्वारा भी हो सकता है। मगर एक विधि-विधान द्वारा यह कार्य किया जाना चाहिए। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र व अन्य ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक बिना जानकारी किए उक्त कोई भी कार्य को धारण करना वर्जित माना है।

रमल अरबी ज्योतिष शोध संस्थान ३, महल खास, किला, भरतपुर (राज.) फोन-०५६४४-२२३२१६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तु के कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्स

महर्षि डॉ भारत भूषण भारद्वाज, पी.एच.डी (ज्योतिष), एम.डी. (ए.एम.) माँ आद्या शक्ति ज्योतिष संस्थान (रजि.)
आर.जेड-३६, कैलाशपुरी विस्तार नसीरपुर द्वारका के पास), नई दिल्ली-४५ दूरभाष: ००१५५४७८७८८, ०९८११५५५६५३

ईशान कोण (उत्तर-पूर्व)

१. यदि ईशान कोण में दरार, गड्ढा या गंदा पानी होगा तो उस स्थान के मालिक की संतान विकलांग होगी।

२. ईशान कोण में पखाना होगा तो उस उद्योग के मालिकों में कलह रहेगी। मजदूरों कर्मचारियों में झगड़ा रहेगा। स्वामी दुश्चरित्र होगा।

३. ईशान कोण में रसोई होने से निरन्तर गृह कलह होती है। धन का निरन्तर क्षय होता है।

४. किसी भी व्यवसाय, स्थल, फैक्टरी, मकान, दुकान का ढिलान पूर्व की ओर होना चाहिए। नहीं तो घर से बीमारी नहीं जाती। प्रायः गृह स्वामिनी बीमार रहती है।

५. ईशान कोण में मच्छरदानी, छड़ियां, बेकार का सामान, झाड़ू, कबाड़ रखने से दरिद्रता आती है।

६. किसी भी फैक्टरी, स्टील उद्योग, होटल, कमर्शियल कॉम्पलेक्स की ईशान कोण की दीवारें अन्य दीवारों से ऊँची नहीं होनी चाहिए।

७. ईशान कोण में कुआं व अन्डर ग्राउन्ड पानी की टंकी उत्तम फल देती है।

८. ईशान कोण में पूजा स्थान श्रेष्ठतम फल प्रदान करता है।

९. ईशान के कमरे को स्टोर रूम कभी नहीं बनाना चाहिए।

जल स्थान

१०. ईशान में जल का स्थान उत्तम फल देता है।

११. उत्तर पूर्व व पश्चिम में भी जल स्थान हो सकता है।

१२. आग्नेय (पश्चिम-पूर्व) कोण में जल स्थान हो तो पुत्र नाश होता है। शत्रुओं का भय रहता है।

१३. यदि दक्षिण दिशा में जल हो तो पत्नी का नाश होता है।

१४. वायव्य (उत्तर-पश्चिम) में जल हो तो शत्रु हमेशा पीड़ा पहुँचाते हैं।

१५. यदि घर के मध्य में जल हो तो संग्रहीत धन का नाश होता है।

रसोई

१६. रसोई आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) में श्रेष्ठतम फल देती है।

१७. गृह स्वामिनी को खाना बनाते हुए पूर्व की ओर मुंह करना चाहिए।

१८. रसोई में आग व पानी के स्थानों को साथ-साथ मत रखें।

१९. यदि रसोई घर में दरवाजा रोटी बनाते या खाना बनाते हुए पीछे की ओर है तो पूर्व की ओर दर्पण लगा दें।

२०. रसोई घर में भूल कर भी पूजा स्थान न बनायें नहीं तो निरन्तर हानि, धन नाश, बीमारी के लिये तैयार रहें। मेरे एक मित्र हरिद्वार में पी.डब्ल्यू डी. में कार्यरत हैं। कड़ी मेहनत करके पर भी घर का गुजारा मुश्किल से चलता था। पत्नी भी अध्यापक पद पर थीं मैंने सारा घर देखा कोई दोष नहीं था। परन्तु रसोई से पूजा घर हटवाते ही उसके घर में लहर-पहर हो गई। इसी प्रकार दिल्ली हरी नगर में एक मित्र के यहां रसोई घर से पूजा स्थान हटवाते ही उस मित्र के प्रापर्टी के कारोबार में उन्नति हुई।

२१. डायनिंग टेबल यदि गोल या अंडाकार होगी, तो झगड़े होंगे। लोग बिना भोजन किए उठ जायेंगे।

खुला स्थान

२२. उत्तर व पूर्व में खुला स्थान हो तो यश वृद्धि होती है। सुख-समृद्धि बढ़ती है।

२३. दक्षिण व पश्चिम में खुला स्थान हो तो पुरुष प्रभावित व्यापार में घाटा होता है। भागीदार धोखा देता है।

जुड़वां मकान

२४. जब बंटवारा होता है तो जुड़वां मकान के बीचो-बीच दीवार आती है। एक मालिक पनप जाता है। दूसरा उजड़ जाता है।

२५. दो मकानों के बीचो बीच रास्ता एक ही है तो दोनों मालिकों के लिये संताप जनक होता है।

मुख्य द्वार

२६. पूर्व मुखी मकान सुखदायी होता है। यह धन वृद्धि, वंश वृद्धि करवाता है। जन्मे पुत्र आज्ञाकारी होते हैं। कहते हैं कि नीलकंठ पक्षी इस मकान में आकर बैठता है।

२७. पश्चिम मुखी मकान मजदूर, फैक्टरी, व्यवसाय वाले व्यक्तियों हेतु लाभकारी होता है। जमीन, लोहा, पेट्रोलियम पदार्थों का व्यवसाय इनके लिये सुखदायी होता है।

२८. उत्तर-मुखी मकान में रहने वाली स्त्रियां बहुत खुश रहती हैं। उनके पास धन जमा होता है। गृह स्वामी की तीर्थ यात्राएं होती रहती हैं।

२९. दक्षिण मुखी मकान वास्तु के अनुसार बनाने पर ही सुखद होता है। अन्यथा घर की औरतें बीमार रहती हैं। घर में आग की घटनाएं दुर्घटनाएं होती ही रहती हैं। मुख्य द्वार के गेट के नीचे चांदी की तार लगवाएं।

३०. ईशान मुखी मकान में रहने वाला व्यक्ति अध्यात्म एवं ईश्वर के प्रति श्रद्धा वाला होता है। विश्व के कई प्रसिद्ध धार्मिक व आध्यात्मिक व्यक्ति ईशान मुखी मकान में ही पनपे हैं।

३१. वायव्य मुखी (उत्तर-पश्चिम) मकान में व्यक्ति भिखारी से करोड़पति बनता है।

३२. आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) मुखी मकान में चंचलता रहती है। मशीनें व बिजली के उपकरण हमेशा खराब होते रहते हैं।

३३. नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) मुखी मकान अत्यंत श्रेष्ठतम फल प्रदान करता है।

सोने की स्थिति

३४. उत्तर की ओर सिर करके सोने से अनिद्रा, मानसिक तनाव, अपच, कुण्ठा आती है।

३५. दक्षिण की ओर सिर करके सोने से परमनिद्रा की स्थिति आती है। क्योंकि यह स्थिति दो ध्रुवों के बीच आकर्षण उत्पन्न करती है।

३६. पूर्व व पश्चिम की ओर सिर करके सोने से तनाव मुक्त व दीर्घायु हेतु निद्रा आती है।

प्रवेश द्वार

३७. घर के प्रवेश द्वार पर लक्ष्मी कुबेर गणेश की प्रतिमाएं बैठी हुई अवस्था की लगाई जा सकती हैं।

३८. यदि प्रवेश द्वार पर गणेश जी की प्रतिमा लगाएं तो प्रवेश द्वार के दोनों ओर सटी हुई एक ही साईज की दो गणेश प्रतिमाएं लगानी चाहिए। क्योंकि गणपति के आगे रिद्धि-सिद्धि व पीछे दरिद्रता (अंधकार) होता है।

मृत व्यक्तियों की पूजा

३९. मृत व्यक्तियों की तस्वीरें पूजा घर में भूलकर भी न लगाएं। क्योंकि ईश्वर अमर है। इसलिए हम सब उसके अमरत्व की पूजा करते हैं। ईश्वर हमें मिलें व हमारी मांगे पूरी करें यह हमारी हर एक की अभिलाषा होती है। लेकिन मृत व्यक्ति हमें कभी नहीं मिल सकता। ईश्वर की ओर से हमें दैवी स्पंदन प्राप्त होते हैं। मृत व्यक्तियों की ओर से हमें दूषित व गलत स्पंदन प्राप्त होता है। यदि हम मृत व्यक्तियों से सम्पर्क करते हैं। पूजा के माध्यम से तो वे हमें अपनी ओर बुलाते हैं। हम झगड़ा करके, आत्म हत्या करके, एक्सीडेंट से मृत्यु प्राप्त करके उनके पास पहुँच जायेंगे। वे इस लोक में वापिस नहीं आयेंगे।

४०. मृत व्यक्तियों की पूजा के लिये श्रेष्ठतम समय श्राद्ध पक्ष है जब हमें आशीर्वाद व दैवी स्पंदन उनकी ओर से मिलता है।

४१. मृत व्यक्तियों के नाम अमावस्या को हम दान पुण्य कर सकते हैं। उसका अच्छा फल प्राप्त होगा।

गृह साज-सज्जा

४२. आजकल गणपति का चलन बहुत हो गया है। घर में गणपति बैठे हुए इस प्रकार रखें कि उनकी पीठ हमारे घर की ओर न हो।

४३. नटराज की मूर्ति घर में तांडव करवा देगी। नटराज जी स्कूल, नृत्यशाला, मन्दिर, धर्मशाला में श्रेष्ट हैं।

४४. घर में साज-सज्जा हेतु कबूतर, बाज, सांप, सियार, उल्लू, गिद्ध, सूअर, शेर के चित्र नहीं लगाने चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

हरिद्वार में पी.डब्ल्यू डी. में कार्यरत हैं। कड़ी मेहनत करके घर भी घर का गुजारा मुश्किल से चलता था। पत्नी भी अध्यापिका पद पर थी मैंने सारा घर देखा कोई दोष नहीं था। परन्तु रसोई से पूजा घर

करोड़पति बनता है।

३३. आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) मुखी मकान में चलती रहती है। मशीनें व बिजली के उपकरण हमेशा खराब होते रहते हैं।

... मन्दिर, धर्मशाला में श्रेष्ठ हैं।

४४. घर में साज-सज्जा हेतु कबूतर, बाज, सांप, सियार, उल्लू, गिद्ध, सूअर, शेर के चित्र नहीं लगाने चाहिए।

...र्ड' के विषय में !

डॉ. पं. लक्ष्मी शंकर शुक्ल 'लक्ष्मेष'

...इप १०१/बी., रेलवे बंगला, भुसावल (महा.)-४२५२०१ फोन-०२५८२-२२६१९३

आज पूरे विश्व में भविष्य जानने के लिये 'टैरो कार्ड' का भी महत्वपूर्ण योगदान है। इसके जानकार इसे अंक ज्योतिष एवं ज्योतिष प्रतीक शास्त्र के समान ही गूढ़ विज्ञान मानते हैं। जो जीवन के भूत, वर्तमान एवं भविष्य के विभिन्न रहस्यों से पर्दा उठाता है। जिस प्रकार ज्योतिष में ग्रहों का ज्ञान, उनका उद्‌गम, स्थिति, अंश, चाल, प्रतीक चिन्हों के विषय में सटीक जानकारी मिलती है। उसी प्रकार 'टैरो कार्ड' में भी भविष्य कथन में इसकी उपयोगिता है। अतः इसके विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। केवल 'टैरो कार्ड' की गड्डी खरीद लेना ही पर्याप्त नहीं।

'टैरो कार्ड' विद्या ज्योतिष की अन्य वैकल्पिक भविष्य बताने वाली विधियों ताश के पत्ते, रमल, अंक ज्योतिष, स्वप्न फल, कर्ण पिशाचिनी, चीनी एवं मुस्लिम प्रतीकों द्वारा, पशु-पक्षियों द्वारा श्रीराम एवं श्री हनुमान शलाका आदि में से एक प्रमुख विद्या है। यह एक प्राचीन विद्या है। इसका उद्‌भव १५वीं शताब्दी में इटली में हुआ था। समय-समय पर इसमें बदलाव आते गये। चीनी, मिश्री और यूनानी विद्वानों का इसमें मुख्य योगदान रहा। इसका आधार चार तत्व भूमि, जल, वायु, अग्नि को माना जाता है। 'टैरो कार्ड' की गड्डी में ७८ कार्ड होते हैं। इन कार्डों को 'अर्कनम' और पूरी गड्डी को 'डेक' कहते हैं। यह लैटीन भाषा के शब्द हैं।

कुल ७८ कार्ड दो भागों में होते हैं। प्रथम मुख्य २२ कार्ड और दूसरे ५६ सहायक कार्ड। इन्हें प्रधान और उप प्रधान कार्ड भी कहते हैं। ५६ सहायक कार्डों को चार तत्वों के आधार में १४-१४ के वर्गों में बाँटा गया। मुख्य २२ कार्डों पर एक संख्या अंकित होती है, इसे अर्कोना संख्या कहते हैं। यह शून्य (०) से इक्कीस (२१) तक होता है। संख्या सहित इनके नाम हैं। (०) मूर्ख जोकर, (१) जादूगर (मैजेशियन), (२) मुख्य पुजारिन-(हाई प्रिस्टेस) (३) साम्राज्ञी (इम्प्रेस) (४) सम्राट (एम्परर))५) मुख्य पुजारी (हाई प्रिस्ट), (६) प्रेमी (लवर्स), (७) घोड़ा, गाड़ी, रथ (चैरियट) (८) न्याय (जस्टिस) (९) ऋषि (हर्मिट) (१०) भाग्य चक्र- (व्हील आफ फार्चून), (११) शक्ति (स्ट्रेन्थ), (१२) लटका हुआ आदमी- (हैनगड मैन), (१३) मृत्यु (डेथ), (१४) आत्म निमंत्रण (टेम्परेन्स) कुछ टैरो कार्ड डेकोया गड्डियों में इस चौदह संख्या के कार्ड को कला (आर्ट) भी कहा गया है, (१५) शैतान (डेविल), (१६) गिरती मीनार (फालिंग टावर), (१७) तारा (स्टार), (१८) चन्द्रमा (मून), (१९) सूर्य (सन), (२०) निर्णय (जजमेन्ट), (२१) संसार (वर्ल्ड)। इन शीर्षकों से मानवीय विशेषताओं का बोध होता है।

राशि कार्ड—नक्षत्रों के आधार पर वर्णित राशियों में इन्हीं में से बारह शीर्षक हैं। जैसे मेष राशि (४) सम्राट (एम्परर), वृष राशि (५) हाई प्रिस्टे) मुख्य पुजारी, मिथुन (६) प्रेमी (लवर्स), कर्क (७) रथ (चैरियट), सिंह (११) शक्ति (स्ट्रेन्थ), कन्या (९) ऋषि (हरमिट), तुला (८) न्याय (जस्टिस), वृश्चिक (१३) मृत्यु (डेथ), धनु (१४) कला (आर्ट), मकर (१५) शैतान (दडेविल), कुम्भ (१७) सितारा (स्टार), मीन (१८) चन्द्रमा (मून)। यह सभी शीर्षक राशियों की विशेषताओं एवं प्रकृति अनुसार ही दिये गये हैं।

दूसरी प्रकार के सहायक ५६ कार्ड चौदह-चौदह के चार भागों में हैं। इन्हें चार समूहों (स्विट्स) की संज्ञा दी गई है। प्रथम-तलवार समूह-(द स्विट आफ सोर्डस), द्वितीय-प्याला समूह (द स्विट आफ कपस), तृतीय-सिक्का समूह (द स्विट आफ को आइन्स), चतुर्थ-छड़ी समूह-(द स्विट आप वान्डस)। इन समूहों के प्रथम दस कार्ड पिंप कार्ड होते हैं। इन सभी पर एक से दस तक की सख्यायें अंकित होती हैं। बाकी के चार कार्डों पर राजा (किंग) रानी (क्वीन) दरबारी (नाइट) सेवक (पेज) के नाम चित्रों सहित होते हैं। यूं चित्र संख्या के अनुसार समूह कार्डों पर भी होते हैं। यह कार्ड जातक के जीवन के विभिन्न-विभिन्न क्षेत्रों में घटित होने वाली गतिविधियों एवं स्थितियों से सम्बन्धित होते हैं और उन्हें ही सूचित करते हैं। इस समय इन कार्डों से व्याख्या करने की तीन विचार धारायें है जो कि तीन भिन्न टैरो कार्डों पर आधारित हैं प्रथम-जेन टैरो कार्ड, द्वितीय-आई चिंग टैरो कार्ड और तृतीय नक्षत्र टैरो कार्ड पद्धति।

आज विश्व में 'टैरो कार्ड' डेको लगभग तीन दर्जन प्रकार हैं। क्योंकि जिस देश एवं क्षेत्र में इनका प्रचार प्रसार हुआ ... विक... इंग्लिश, चायनीज, रशियन, अफ्रीकी और इन्डियन कार्ड आदि। भारतीय कार्डों में रामायण, महाभारत दो अतिरिक्त कार्ड भी जोड़े गये। अन्य कुछ 'टैरो कार्ड' डेक हैं लार्ड आफ द रिंग, कास्मिक, क्लासिक ड्रेगन, एंजिल, मेरी डे, मून गोर्डन, सिरोफिस, गोल्डन, रेनेसा, अक्वाटिक, कॉलमेन स्मिथ, लव क्राफ्टस, विलियम ब्लैक आदि। यह सभी बाजार में उपलब्ध हैं। केवल हिन्दी जानने वालों के लिये हिन्दी भाषा में रूपान्तरित एवं भारतीय परिवेश के चित्रों वाले 'इन्डियन कार्ड' भी आ चुके हैं। केवल पद्धति के अध्ययन की आवश्यकता है।

'टैरो कार्ड' डेक या पैक चाहे कैसा भी हो पर मूल विषय वस्तु समान ही है। केवल प्रश्नकर्ता अर्थात् जातक के प्रश्नों का उत्तर देने में 'टैरो कार्ड' विशेषज्ञों की अपनी-अपनी प्रक्रिया होती है। वे एक, तीन, पाँच या ग्यारह कार्डों का चयन जातक से करवाते हैं। प्रश्नकर्ता को चाहिये कि पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ शुद्ध मन एवं शरीर (स्नान आदि करके) 'टैरो कार्ड' विशेषज्ञों के पास अपनी समस्या लेकर जाये तभी सही एवं सटीक उत्तर मिलेगा। क्योंकि यह एक अध्यात्म से जुड़ी ध्यानोन्मुखी विद्या है। इसका उपयोग न केवल परामर्श, उपचार एवं भविष्य कथन के लिये किया जाता है वरन् व्यक्तित्व के विकास और जातक को अपने आपको पहचानने के लिये भी किया जाता है।

सर्वप्रथम 'टैरो कार्ड' विशेषज्ञ 'टैरो कार्ड' गड्डी को जातक के सम्मुख भली भाँति फेंटकर एक तरतीब से एक साफ कपड़े पर फैला है। तदुपरान्त जातक विशेषज्ञ के निर्देशानुसार मन ही मन या बोलकर अपनी शान्त मन स्थिति से १, ३, ५ या ११ कार्डों को एक एक करके खोलता है क्योंकि सभी कार्ड बन्द साइड से होते हैं। जिस समय जातक कार्ड उठाता है उस समय विशेष में ग्रहों की आकाश में स्थिति जातक एवं उसके प्रश्न को प्रभावित करती है। प्रत्येक कार्ड की अपनी एक विशेषता होती है। जिसे 'टैरो कार्ड' विशेषज्ञ अपनी योग्यतानुसार बताता है। प्रस्तुत लेख में ७८ कार्डों की व्याख्या करना असंभव है। अब उन कार्डों की विशेषतानुसार चयनित कार्डों को देखकर ही विशेषज्ञ जातक की समस्या का समाधान करता है। अधिकांशतः तीन कार्डों का चयन एक प्रश्न के लिये एक बार किया जाता है। प्रथम कार्ड-जातक के गुण-दोष। दूसरा कार्ड-प्रश्न के उत्तर में आने वाली चुनौतियाँ या अवसर। तीसरा कार्ड-मूल प्रश्न का उत्तर हाँ या ना में। कार्ड का उल्टा सीधा होना भी अपना अर्थ रखता है। अतः उल्टा चयनित कार्ड सीधा न करें। विस्तृत जानकारी के लिये उचित डाक टिकट सति सम्पर्क करें।

... जल की धारा चढ़ाने से भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त होते हैं

हथेलियों में अंकित चिन्हों द्वारा शुभा-शुभ विचार

आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री

विद्वान, धनी, चारू शरीरधारी, सौभाग्यशाली व सुखेन जीव्यात्। स्युः श्रृखलकां यदि ताः श्रभी सः द्रव्यारसिर्रत्यन्त परिश्रमात् स्यात्।। यह आवश्यक नहीं है कि हर मनुष्य के हथेलियों में या तो साधारण होते हैं या अशुभ चिन्ह से युक्त। यही कारण है कि मानव समाज में सुख-सम्पन्नता और शांतिपूर्ण जीवन-यापन का सौभाग्य कुछ गिने-चुने मनुष्यों को ही मिल पाता है। अन्यथा एक न एक अभाव और सन्त्रास सभी को पीड़ित किए रहता है। कोई संतान से पीड़ित है, तो कोई अपने बहुसंख्य बच्चों का पालन-पोषण नहीं कर पा रहे हैं। कोई स्वास्थ्य से, तो कोई शत्रु से परेशान हैं। कोई भोजन, वस्त्र, आवास से वंचित है तो कोई वैभवशाली होकर भी रोगग्रस्त स्थिति में जीवन-मृत्यु के बीच जूझ रहा है। विद्वान की दरिद्रता, मूर्ख की सम्पन्नता, सात्विक व्यक्ति को अभाव-यातना और अपराधी को मौज-मस्ती की सुलभता-यह परस्पर विरोभाभाषी स्थितियां हैं। परन्तु इनके नियंत्रण करके मनोनुकूल परिवर्तन कर सकना मानव शक्ति से परे है। इन सारी व्यवस्थाओं के नियंत्रण ईश्वर अथवा प्राकृतिक से संचालित होती है।

जिन हथेलियों में मणिबन्ध रेखा सुन्दर, सुशील, दोष रहित होकर भाग्य रेखा भी दोष रहित हो तो मनुष्य अपने कुल में कुलिन, माता-पिता का कुल दीपक, विद्वान, धनी, सुन्दर शरीरवाला, सौभाग्यशाली होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करनेवाला और ऐसे जातक परिश्रमी, नौकरी व्यापार से प्रचूर धन प्राप्त करते हैं। छिन्ना यदि स्युः ए नरो दरिद्रः भवन्ति सधोग्यलसाधिपथ्य। तस्या त्रिकोणेडिस्तः जनः परस्यु धनं प्रतिष्ठां लभते च मानम्।। सम्पन्नता का अभाव ही विपन्नता है। यह निर्धनता अर्थात् दरिद्रता का दूसरा रूप है। कुछ लोगों को जीवन भर भोजन, वस्त्र के लिए भटकते ही बीतता है और वो लाख प्रयत्न करके भी पेट के लिए रोटी और

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तु के कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्स

महर्षि डॉ भारत भूषण भारद्वाज, पी.एच.डी (ज्योतिष), एम.डी. (ए.एम.) माँ आद्या शक्ति ज्योतिष संस्थान (रजि.)
आर.जेड-३६, कैलाशपुरी विस्तार नसीरपुर द्वारका के पास), नई दिल्ली-४५ दूरभाष: ००१५५४७८७८८, ०९८११५५५६५३

ईशान कोण (उत्तर-पूर्व)

१. यदि ईशान कोण में दरार, गड्ढा या गंदा पानी होगा तो उस स्थान के मालिक की संतान विकलांग होगी।

२. ईशान कोण में पखाना होगा तो उस उद्योग के मालिकों में कलह रहेगी। मजदूरों कर्मचारियों में झगड़ा रहेगा। स्वामी दुश्चरित्र होगा।

३. ईशान कोण में रसोई होने से निरन्तर गृह कलह होती है। धन का निरन्तर क्षय होता है।

४. किसी भी व्यवसाय, स्थल, फैक्टरी, मकान, दुकान का ढिलान पूर्व की ओर होना चाहिए। नहीं तो घर से बीमारी नहीं जाती। प्राय: गृह स्वामिनी बीमार रहती है।

५. ईशान कोण में मच्छरदानी, छड़ियां, बेकार का सामान, झाड़ू, कबाड़ रखने से दरिद्रता आती है।

६. किसी भी फैक्टरी, स्टील उद्योग, होटल, कमर्शियल कॉम्पलेक्स की ईशान कोण की दीवारें अन्य दीवारों से ऊँची नहीं होनी चाहिए।

७. ईशान कोण में कुआं व अन्डर ग्राउन्ड पानी की टंकी उत्तम फल देती है।

८. ईशान कोण में पूजा स्थान श्रेष्ठतम फल प्रदान करता है।

९. ईशान के कमरे को स्टोर रूम कभी नहीं बनाना चाहिए।

जल स्थान

१०. ईशान में जल का स्थान उत्तम फल देता है।

११. उत्तर पूर्व व पश्चिम में भी जल स्थान हो सकता है।

१२. आग्नेय (पश्चिम-पूर्व) कोण में जल स्थान हो तो पुत्र नाश होता है। शत्रुओं का भय रहता है।

१३. यदि दक्षिण दिशा में जल हो तो पत्नी का नाश होता है।

१४. वायव्य (उत्तर-पश्चिम) में जल हो तो शत्रु हमेशा पीड़ा पहुँचाते हैं।

१५. यदि घर के मध्य में जल हो तो संग्रहीत धन का नाश होता है।

रसोई

१६. रसोई आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) में श्रेष्ठतम फल देती है।

१७. गृह स्वामिनी को खाना बनाते हुए पूर्व की ओर मुंह करना चाहिए।

१८. रसोई में आग व पानी के स्थानों को साथ-साथ मत रखें।

१९. यदि रसोई घर में दरवाजा रोटी बनाते या खाना बनाते हुए पीछे की ओर है तो पूर्व की ओर दर्पण लगा दें।

२०. रसोई घर में भूल कर भी पूजा स्थान न बनायें नहीं तो निरन्तर हानि, धन नाश, बीमारी के लिये तैयार रहें। मेरे एक मित्र हरिद्वार में पी.डब्ल्यू डी. में कार्यरत हैं। कड़ी मेहनत करके पर भी घर का गुजारा मुश्किल से चलता था। पत्नी भी अध्यापक पद पर थीं मैंने सारा घर देखा कोई दोष नहीं था। परन्तु रसोई से पूजा घर हटवाते ही उसके घर में लहर-पहर हो गई। इसी प्रकार दिल्ली हरी नगर में एक मित्र के यहां रसोई घर से पूजा स्थान हटवाते ही उस मित्र के प्रापर्टी के कारोबार में उन्नति हुई।

२१. डायनिंग टेबल यदि गोल या अंडाकार होगी, तो झगड़े होंगे। लोग बिना भोजन किए उठ जायेंगे।

खुला स्थान

२२. उत्तर व पूर्व में खुला स्थान हो तो यश वृद्धि होती है। सुख-समृद्धि बढ़ती है।

२३. दक्षिण व पश्चिम में खुला स्थान हो तो पुरुष प्रभावित व्यापार में घाटा होता है। भागीदार धोखा देता है।

जुड़वां मकान

२४. जब बंटवारा होता है तो जुड़वां मकान के बीचो-बीच दीवार आती है। एक मालिक पनप जाता है। दूसरा उजड़ जाता है।

२५. दो मकानों के बीचो बीच रास्ता एक ही है तो दोनों मालिकों के लिये संताप जनक होता है।

मुख्य द्वार

२६. पूर्व मुखी मकान सुखदायी होता है। यह धन वृद्धि, वंश वृद्धि करवाता है। जन्मे पुत्र आज्ञाकारी होते हैं। कहते हैं कि नीलकंठ पक्षी इस मकान में आकर बैठता है।

२७. पश्चिम मुखी मकान मजदूर, फैक्टरी, व्यवसाय वाले व्यक्तियों हेतु लाभकारी होता है। जमीन, लोहा, पेट्रोलियम पदार्थों का व्यवसाय इनके लिये सुखदायी होता है।

२८. उत्तर-मुखी मकान में रहने वाली स्त्रियां बहुत खुश रहती हैं। उनके पास धन जमा होता है। गृह स्वामी की तीर्थ यात्राएं होती रहती हैं।

२९. दक्षिण मुखी मकान वास्तु के अनुसार बनाने पर ही सुखद होता है। अन्यथा घर की औरतें बीमार रहती हैं। घर में आग की घटनाएं दुर्घटनाएं होती ही रहती हैं। मुख्य द्वार के गेट के नीचे चांदी की तार लगवाएं।

३०. ईशान मुखी मकान में रहने वाला व्यक्ति अध्यात्म एवं ईश्वर के प्रति श्रद्धा वाला होता है। विश्व के कई प्रसिद्ध धार्मिक व आध्यात्मिक व्यक्ति ईशान मुखी मकान में ही पनपे हैं।

३१. वायव्य मुखी (उत्तर-पश्चिम) मकान में व्यक्ति भिखारी से करोड़पति बनता है।

३२. आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) मुखी मकान में चंचलता रहती है। मशीनें व बिजली के उपकरण हमेशा खराब होते रहते हैं।

३३. नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) मुखी मकान अत्यंत श्रेष्ठतम फल प्रदान करता है।

सोने की स्थिति

३४. उत्तर की ओर सिर करके सोने से अनिद्रा, मानसिक तनाव, अपच, कुण्ठा आती है।

३५. दक्षिण की ओर सिर करके सोने से परमनिद्रा की स्थिति आती है। क्योंकि यह स्थिति दो ध्रुवों के बीच आकर्षण उत्पन्न करती है।

३६. पूर्व व पश्चिम की ओर सिर करके सोने से तनाव मुक्त व दीर्घायु हेतु निद्रा आती है।

प्रवेश द्वार

३७. घर के प्रवेश द्वार पर लक्ष्मी कुबेर गणेश की प्रतिमाएं बैठी हुई अवस्था की लगाई जा सकती हैं।

३८. यदि प्रवेश द्वार पर गणेश जी की प्रतिमा लगाएं तो प्रवेश द्वार के दोनों ओर सटी हुई एक ही साईज की दो गणेश प्रतिमाएं लगानी चाहिए। क्योंकि गणपति के आगे रिद्धि-सिद्धि व पीछे दरिद्रता (अंधकार) होता है।

मृत व्यक्तियों की पूजा

३९. मृत व्यक्तियों की तस्वीरें पूजा घर में भूलकर भी न लगाएं। क्योंकि ईश्वर अमर है। इसलिए हम सब उसके अमरत्व की पूजा करते हैं। ईश्वर हमें मिलें व हमारी मांगे पूरी करें यह हमारी हर एक की अभिलाषा होती है। लेकिन मृत व्यक्ति हमें कभी नहीं मिल सकता। ईश्वर की ओर से हमें दैवी स्पंदन प्राप्त होते हैं। मृत व्यक्तियों की ओर से हमें दूषित व गलत स्पंदन प्राप्त होता है। यदि हम मृत व्यक्तियों से सम्पर्क करते हैं। पूजा के माध्यम से तो वे हमें अपनी ओर बुलाते हैं। हम झगड़ा करके, आत्म हत्या करके, एक्सीडेंट से मृत्यु प्राप्त करके उनके पास पहुँच जायेंगे। वे इस लोक में वापिस नहीं आयेंगे।

४०. मृत व्यक्तियों की पूजा के लिये श्रेष्ठतम समय श्राद्ध पक्ष है जब हमें आशीर्वाद व दैवी स्पंदन उनकी ओर से मिलता है।

४१. मृत व्यक्तियों के नाम अमावस्या को हम दान पुण्य कर सकते हैं। उसका अच्छा फल प्राप्त होगा।

गृह साज-सज्जा

४२. आजकल गणपति का चलन बहुत हो गया है। घर में गणपति बैठे हुए इस प्रकार रखें कि उनकी पीठ हमारे घर की ओर न हो।

४३. नटराज की मूर्ति घर में तांडव करवा देगी। नटराज जी स्कूल, नृत्यशाला, मन्दिर, धर्मशाला में श्रेष्ट हैं।

४४. घर में साज-सज्जा हेतु कबूतर, बाज, सांप, सियार, उल्लू, गिद्ध, सूअर, शेर के चित्र नहीं लगाने चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

घर का गुजारा मुश्किल से चलता था। पत्नी भी अध्या... करोड़पति बनता है। ... नत्यशाला, मन्दिर, धर्मशाला में श्रेष्ठ हैं।
मैंने सारा घर देखा कोई दोष नहीं था। परन्तु रसोई से पूजा घर | मशीनें व बिजली के उपकरण हमेशा खराब होते रहते हैं। | ४४. घर में साज-सज्जा हेतु कबूतर, बाज, सांप, सियार, उल्लू, गिद्ध, सूअर, शेर के चित्र नहीं लगाने चाहिए।

'टैरो कार्ड' के विषय में !

डॉ. पं. लक्ष्मी शंकर शुक्ल 'लक्ष्मेष'
टाईप १०१/बी., रेलवे बंगला, भुसावल (महा.)-४२५२०१ फोन-०२५८२-२२६१९३

आज पूरे विश्व में भविष्य जानने के लिये 'टैरो कार्ड' का भी महत्वपूर्ण योगदान है। इसके जानकार इसे अंक ज्योतिष एवं ज्योतिष प्रतीक शास्त्र के समान ही गूढ़ विज्ञान मानते हैं। जो जीवन के भूत, वर्तमान एवं भविष्य के विभिन्न रहस्यों से पर्दा उठाता है। जिस प्रकार ज्योतिष में ग्रहों का ज्ञान, उनका उद्गम, स्थिति, अंश, चाल, प्रतीक चिन्हों के विषय में सटीक जानकारी मिलती है। उसी प्रकार 'टैरो कार्ड' में भी भविष्य कथन में इसकी उपयोगिता है। अतः इसके विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। केवल 'टैरो कार्ड' की गड्डी खरीद लेना ही पर्याप्त नहीं।

'टैरो कार्ड' विद्या ज्योतिष की अन्य वैकल्पिक भविष्य बताने वाली विधियों ताश के पत्ते, रमल, अंक ज्योतिष, स्वप्न फल, कर्ण पिशाचिनी, चीनी एवं मुस्लिम प्रतीकों द्वारा, पशु-पक्षियों द्वारा श्रीराम एवं श्री हनुमान शलाका आदि में से एक प्रमुख विद्या है। यह एक प्राचीन विद्या है। इसका उद्भव १५वीं शताब्दी में इटली में हुआ था। समय-समय पर इसमें बदलाव आते गये। चीनी, मिश्री और यूनानी विद्वानों का इसमें मुख्य योगदान रहा। इसका आधार चार तत्व भूमि, जल, वायु, अग्नि को माना जाता है। 'टैरो कार्ड' की गड्डी में ७८ कार्ड होते हैं। इन कार्डों को 'अर्केनम' और पूरी गड्डी को 'डेक' कहते हैं। यह लैटीन भाषा के शब्द हैं।

कुल ७८ कार्ड दो भागों में होते हैं। प्रथम मुख्य २२ कार्ड और दूसरे ५६ सहायक कार्ड। इन्हें प्रधान और उप प्रधान कार्ड भी कहते हैं। ५६ सहायक कार्डों को चार तत्वों के आधार में १४-१४ के वर्गों में बाँटा गया। मुख्य २२ कार्डों पर एक संख्या अंकित होती है, इसे अर्काना संख्या कहते हैं। यह शून्य (०) से इक्कीस (२१) तक होता है। संख्या सहित इनके नाम हैं। (०) मूर्ख जोकर, (१) जादूगर (मैजेशियन), (२) मुख्य पुजारिन-(हाई प्रिस्टेस) (३) साम्राज्ञी (इम्प्रेस) (४) सम्राट (एम्परर))५) मुख्य पुजारी (हाई प्रिस्ट), (६) प्रेमी (लवर्स), (७) घोड़ा, गाड़ी, रथ (चैरियट) (८) न्याय (जस्टिस) (९) ऋषि (हर्मिट) (१०) भाग्य चक्र- (व्हील आफ फार्चून), (११) शक्ति (स्ट्रेन्थ), (१२) लटका हुआ आदमी- (हैंगाड मैन), (१३) मृत्यु (डेथ), (१४) आत्म निमंत्रण (टेम्परेन्स) कुछ टैरो कार्ड डेकोंया गड्डियों में इस चौदह संख्या के कार्ड को कला (आर्ट) भी कहा गया है, (१५) शैतान (डेविल), (१६) गिरती मीनार (फालिंग टावर), (१७) तारा (स्टार), (१८) चन्द्रमा (मून), (१९) सूर्य (सन), (२०) निर्णय (जजमेन्ट), (२१) संसार (वर्ल्ड)। इन शीर्षकों से मानवीय विशेषताओं का बोध होता है।

राशि कार्ड—नक्षत्रों के आधार पर वर्णित राशियों में इन्हीं में से बारह शीर्षक हैं। जैसे मेष राशि (४) सम्राट (एम्परर), वृष राशि (५) हाई प्रिस्टे) मुख्य पुजारी, मिथुन (६) प्रेमी (लवर्स), कर्क (७) रथ (चैरियट), सिंह (११) शक्ति (स्ट्रेन्थ), कन्या (९) ऋषि (हर्रमिट), तुला (८) न्याय (जस्टिस), वृश्चिक (१३) मृत्यु (डेथ), धनु (१४) कला (आर्ट), मकर (१५) शैतान (दडेविल), कुम्भ (१७) सितारा (स्टार), मीन (१८) चन्द्रमा (मून)। यह सभी शीर्षक राशियों की विशेषताओं एवं प्रकृति अनुसार ही दिये गये हैं।

दूसरी प्रकार के सहायक ५६ कार्ड चौदह-चौदह के चार भागों में हैं। इन्हें चार समूहों (स्विट्स) की संज्ञा दी गई है। प्रथम-तलवार समूह (द स्विट आफ सोर्डस), द्वितीय-प्याला समूह (द स्विट आफ कपस), तृतीय-सिक्का समूह (द स्विट आफ को आइन्स), चतुर्थ-छड़ी समूह-(द स्विट आप वान्डस)। इन समूहों के प्रथम दस कार्ड पिंप कार्ड होते हैं। इन सभी पर एक से दस तक की सख्यायें अंकित होती हैं। बाकी के चार कार्डों पर राजा (किंग) रानी (क्वीन) दरबारी (नाइट) सेवक (पेज) के नाम चित्रों सहित होते हैं। यूं चित्र संख्या के अनुसार समूह कार्डों पर भी होते हैं। यह कार्ड जातक के जीवन के विभिन्न-विभिन्न क्षेत्रों में घटित होने वाली गतिविधियों एवं स्थितियों से सम्बन्धित होते हैं और उन्हें ही सूचित करते हैं। इस समय इन कार्डों से व्याख्या करने की तीन विचार धारायें है जो कि तीन भिन्न टैरो कार्डों पर आधारित हैं प्रथम-जेन टैरो कार्ड, द्वितीय-आई चिंग टैरो कार्ड और तृतीय नक्षत्र टैरो कार्ड पद्धति।

आज विश्व में 'टैरो कार्ड' डेकों लगभग तीन दर्जन प्रकार हैं। क्योंकि जिस देश एवं क्षेत्र में इनका प्रचार प्रसार हुआ उसी [illegible] विकास एवं स्वरूप निर्मित हुआ जैसे ओल्ड इंगलिश, चायनीज, रसियन, अफ्रीकी और इन्डियन कार्ड आदि। भारतीय कार्डों में रामायण, महाभारत दो अतिरिक्त कार्ड भी जोड़े गये। अन्य कुछ 'टैरो कार्ड' डेक हैं लार्ड आफ द रिंग, कास्मिक, क्लासिक ड्रेगन, एंजिल, मेरी डे, मून गोर्डन, सिरोफिस, गोल्डन, रेनेसा, अक्वाटिक, कॉलमेन स्मिथ, लव क्राफ्टस, विलियम ब्लैक आदि। यह सभी बाजार में उपलब्ध हैं। केवल हिन्दी जानने वालों के लिये हिन्दी भाषा में रूपान्तरित एवं भारतीय परिवेश के चित्रों वाले 'इन्डियन कार्ड' भी आ चुके हैं। केवल पद्धति के अध्ययन की आवश्यकता है।

'टैरो कार्ड' डेक या पैक चाहे कैसा भी हो पर मूल विषय वस्तु समान ही है। केवल प्रश्नकर्ता अर्थात् जातक के प्रश्नों का उत्तर देने में 'टैरो कार्ड' विशेषज्ञों की अपनी-अपनी प्रक्रिया होती है। वे एक, तीन, पाँच या ग्यारह कार्डों का चयन जातक से करवाते हैं। प्रश्नकर्ता को चाहिये कि पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ शुद्ध मन एवं शरीर (स्नान आदि करके) 'टैरो कार्ड' विशेषज्ञों के पास अपनी समस्या लेकर जाये तभी सही एवं सटीक उत्तर मिलेगा। क्योंकि यह एक अध्यात्म से जुड़ी ध्यानोन्मुखी विद्या है। इसका उपयोग न केवल परामर्श, उपचार एवं भविष्य कथन के लिये किया जाता है वरन् व्यक्तित्व के विकास और जातक को अपने आपको पहचानने के लिये भी किया जाता है।

सर्वप्रथम 'टैरो कार्ड' विशेषज्ञ 'टैरो कार्ड' गड्डी को जातक के सम्मुख भली भाँति फेंटकर एक तरतीब से एक साफ कपड़े पर फैला है। तदुपरान्त जातक विशेषज्ञ के निर्देशानुसार मन ही मन या बोलकर अपनी शान्त मन स्थिति से १, ३, ५ या ११ कार्डों को एक एक करके खोलता है क्योंकि सभी कार्ड बन्द साइड से होते हैं। जिस समय जातक कार्ड उठाता है उस समय विशेष में ग्रहों की आकाश में स्थिति जातक एवं उसके प्रश्न को प्रभावित करती है। प्रत्येक कार्ड की अपनी एक विशेषता होती है। जिसे 'टैरो कार्ड' विशेषज्ञ अपनी योग्यतानुसार बताता है। प्रस्तुत लेख में ७८ कार्डों की व्याख्या करना असंभव है। अब उन कार्डों की विशेषतानुसार चयनित कार्डों को देखकर ही विशेषज्ञ जातक की समस्या का समाधान करता है। अधिकांशतः तीन कार्डों का चयन एक प्रश्न के लिये एक बार किया जाता है। फ्रथम कार्ड-जातक के गुण-दोष। दूसरा कार्ड-प्रश्न के उत्तर में आने वाली चुनौतियाँ या अवसर। तीसरा कार्ड-मूल प्रश्न का उत्तर हाँ या ना में। कार्ड का उल्टा सीधा होना भी अपना अर्थ रखता है। अतः उल्टा चयनित कार्ड सीधा न करें। विस्तृत जानकारी के लिये उचित डाक टिकट सहित सम्पर्क करें।

हथेलियों में अंकित चिन्हों द्वारा शुभा-शुभ विचार

आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री

विद्वान, धनी, चारू शरीरधारी, सौभाग्यशाली व सुखेन जीव्यात्। स्युः श्रृखलकां यदि ताः श्रभी सः द्रव्यारभिरित्यन्त परिश्रमात् स्यात्।। यह आवश्यक नहीं है कि हर मनुष्य के हथेलियों में या तो साधारण होते हैं या अशुभ चिन्ह से युक्त। यही कारण है कि मानव समाज में सुख-सम्पन्नता और शांतिपूर्ण जीवन-यापन का सौभाग्य कुछ गिने-चुने मनुष्यों को ही मिल पाता है। अन्यथा एक न एक अभाव और सन्त्रास सभी को पीड़ित किए रहता है। कोई संतान से पीड़ित है, तो कोई अपने बहुसंख्य बच्चों का पालन-पोषण नहीं कर पा रहे हैं। कोई स्वास्थ्य से, तो कोई शत्रु से परेशान हैं। कोई भोजन, वस्त्र, आवास से वंचित है तो कोई वैभवशाली होकर भी रोगग्रस्त स्थिति में जीवन-मृत्यु के बीच जूझ रहा है। विद्वान को दरिद्रता, मूर्ख को सम्पन्नता, सात्विक व्यक्ति को अभाव-यातना और अपराधी को मौज-मस्ती की सुलभता-यह परस्पर विरोभाषी स्थितियां हैं। परन्तु इनके नियंत्रण करके मनोनुकूल परिवर्तन कर सकना मानव शक्ति से परे है। इन सारी व्यवस्थाओं के नियंत्रण ईश्वर अथवा प्राकृतिक से संचालित होती है।

जिन हथेलियों में मणिबन्ध रेखा सुन्दर, सुशील, दोष रहित होकर भाग्य रेखा भी दोष रहित हो तो मनुष्य अपने कुल में कुलिन, माता-पिता का कुल दीपक, विद्वान, धनी, सुन्दर शरीरवाला, सौभाग्यशाली होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करनेवाला और ऐसे जातक परिश्रमी, नौकरी व्यापार से प्रचुर धन प्राप्त करते हैं। छिन्ना यदि स्युः ए नरो दरिद्रः भवन्ति सधोग्यलसाधिपष्य। तस्या त्रिकोणेडिस्तः जनः परस्यु धनं प्रतिष्ठां लभते च मानम्॥ सम्पन्नता का अभाव ही विपन्नता है। यह निर्धनता अर्थात् दरिद्रता का दूसरा रूप है। कुछ लोगों को जीवन भर भोजन, वस्त्र के लिए भटकते ही बीतता है और वो लाख प्रयत्न करके भी पेट के लिए रोटी और

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

तन पर कपड़ा नहीं जुटा पाते हैं। उसका मूल कारण उस व्यक्ति का दुर्भाग्य ही होता है। यदि भाग्य रेखा, मणिबंध से ही छिन्न-भिन्न हो तो मनुष्य दरिद्र, आलसी और निरुद्योगी होता है। यदि मणिबंध सिधी से भाग्य रेखा टेढ़ी-मेढ़ी, टुटा-फुटा अवस्था में हो तथा त्रिकोण हो तो मनुष्य दूसरे को धन हरण करके भी सुखी नहीं रह पाता है। इनके जीवन में सुख-शांति दिवा-स्वप्न होता है। शुक्रस्थानादित्यं रेखाऽतिलहवी छिन्वा भाग्यां पैतड्कभ्र गच्छेत्। भौमस्थानं स्वीयहस्तेन मर्त्यः सधः सत्यं नाशमेद् द्रव्यराशिम्॥ हथेलियों में अंकित चिन्हों द्वारा विघ्नतासूचक कुछ चिन्हों का उल्लेख कर रहा हूं। जिस हथेली में रेखाओं के अधिकता हो, टुट-फुट और अलगाव अधिक हो, अंगुठे के नीचे शुक्र के क्षेत्र में कहीं भंवर या शंख की आकृति हो, सूर्य रेखा का अभाव अथवा उसका छिन्न-भिन्न होना, दोनों हाथों के दशों अंगुलियों के सभी छोरों पर आड़ी दशा में छोटी-छोटी रेखायें, भाग्य रेखा का अभाव अथवा छिन्न-भिन्न होना, सूर्य और गुरु पर्वत दोषकृत होना, शुक्र स्थान से छोटी-छोटी रेखा उठकर भाग्य रेखा और पितृ रेखा को काटती हुई मंगल स्थान तक जाए, तो मनुष्य स्वतः अपने हाथों से ही द्रव्य राशी को विनष्ट कर देता है। जिनके हथेलियों में चार चक्र हो तो वह मनुष्य निश्चित ही दरिद्र होता है। आठ चक्र वाला मनुष्य भी सदैव विपन्नतायुक्त रहता है। जिसके हथेली के अंगुली में दो सीप हो तो वह भी निश्चित ही दरिद्र होता है। म्लाना छिन्ना भिन्ना रुपा यदा सा मन्दप्रज्ञो दुर्बलोऽसौ विवादी। भयैर्यक्तों दुभगो दुःख जीवी यस्मिन्माने जायते सा च भग्ना॥ हथेलियों में कोई भी रेख मलीन, छिन्न-भिन्न हो तो मनुष्य मंद बुद्धि, दुर्बल, विवादी, अहंकारी, भाग्यहीन होकर सदैव दुख से जीवन व्यतीत करता है। यदि गुरु पर्वत अविकसीत हो तथा मध्यमा अंगुली में चार से अधिक लकीर हो तो मनुष्य अपने पैतृक सम्पत्ति तथा स्वयं द्वारा अजीत संपत्ति को भी नष्ट कर देते हैं। ऐसे स्त्री, पुरुष कामुक, व्यभिचारी, मास-मदीरा के सेवन करने वाले हो हैं। उपरोक्त सभी चिन्ह दरीद्रता और विपन्नता सूचक माना जाता है। तत्रदौ पुसां पाणौ आयुष्य, मत्स्य, त्रिकोण, पुण्य, हल, शंख, चक्रोहर्वपण पक्ष केतु काननादि प्रशस्तरेखाः यद्यन्यरेखया छिन्ना स्यूरवा तत्पार्श्वे खण्डा भग्नरेखोदिता स्यातर्हाकारुणिका शुचिद्वन्द्वराटकत्वश्रीण वृतिस्वत्रृणरुणा रुजार्तिम हिलासुत मानहानिताधनिष्ट फलप्रदाः भवन्ति। मनुष्य के हथेली में यदि आयुष्य, मत्स्य, त्रिकोण, पुण्य, हल, शंखचक्र, ऊर्ध्व, पण, कमल, केतु और कानन आदि शुभ रेखायें दूसरी रेखा से कटी हो अथवा उनके पास ही खण्डित, भग्न कोई दूसरी रेखा उदित हो तो ऐसे स्त्री-पुरुष निर्दयता, झगड़ालू, दरिद्र, नष्ट जीविका, ऋण और रोग आदि के द्वारा सदैव पीड़ित होता है। तथा धन-पुत्र-मान का नाश करने वाला होता है। किसी स्त्री-पुरुष के हथेली में स्वास्थ्य रेखा हो और उसपर त्रिभुज बना हो तो कुयोग कहते हैं। इस योग के कारण ऐसे जातक दुर्बल शरीर, आलसी, स्वास्थ्य के प्रति उदासीन, कुंठाग्रस्त, स्वार्थ भावना से सदैव अस्थिर और लोभी रहने वाला दरिद्र, इधर-उधर भटकने वाला होता है। यह चिन्ह व्यक्ति के एकांकी, निस्संग, अपेक्षित, अभावग्रस्त और अस्त-व्यस्त जीवन का सूचना देता है।

विद्वान, धनी, चारूशरीरधारी, सौभाग्यशाल च सुखेन जीव्यतात् स्यूः श्रृखलांगा यदि ताः श्रमी सः द्रव्याप्तिरव्यन्त परिश्रमात् स्यात्॥ हथेली में अंकित राजलक्ष्मी चिन्ह होने का अर्थ यह है कि उस मनुष्य को अपने उद्योग, व्यापार, नौकरी, कार्य और कौशल से लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। और वह सामान्य नागरीकों के मध्य राजा की भांति सुखी-सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है। रूप-रेखा और व्यक्तित्व से विशेष रूप से आकर्षक दिखने वाला, राजलक्ष्मी योग से संयुक्त व्यक्ति भाग्यशाली माना जाता है। ऐसे जातक को पत्नी, परिवार, संतान, भूमि, भवन, वाहन और सेवक सभी भौतिक सुविधाएं उसे विरासत में प्राप्त होता है। हथेली में गुरु पर्वत, सूर्य पर्वत और चन्द्रपर्वत विसीत हो, साथ ही भाग्य रेखा मजबूत हो तो व्यक्ति अपने सत्य प्रयत्न से लाखों, करोड़ों का स्वामी होता है। भाग्य रेखा, सूर्य रेखा शुभ स्थिति में हो और जीवन तथा मानस रेखा सुन्दर, निर्दोष, शाखाहीन हो तो मनुष्य बहुधंधी होता है। साथ ही, ऐसे जातक विरासत में प्रचूर मात्रा में भूमि-भवन, वाहन तथा स्वर्ण-चांदी, हीरा, जवाहरात आदि भी प्राप्त होते हैं। गुरुपर्वत पूर्ण विकसीत हो तथा सूर्य रेखा निर्दोष हो तो मनुष्य के जीवन में कई बार राजयोग उपस्थित होते हैं। ऐसे जातक कई महत्वपूर्ण पदों पर सुशोभीत होते हैं। उच्चेहावान् दीर्घजीवी मनुष्यः लब्धाऽनेकां सन्प्रतिष्ठां हि धन्यः उत्थायाऽस्मात् काऽपि रेखा हि शुद्धा शुक्रस्थानं प्रवजेत् चेतदाऽसौ॥ भाग्य ही मनुष्य के जीवन का नियामक होता है। सबका भाग्य एक जैसा नहीं होता। यही कारण होता है कि समान स्थिति में रहकर समान श्रम करनक पर भी व्यक्ति की उपलब्धि एक-दूसरे से भिन्न होती है। वस्तुतः यह उनके भाग्य का प्रभाव होता है। भाग्य साधारण भी होता है। असाधारण रुप में शुभ और अशुभ भी होता है। हथेली में सूर्य रेखा स्पष्ट, सुन्दर और आभायुक्त हो, उसके नीचे त्रिभुज हो अथवा कमल का चिन्ह हो, गुरु पर्वत पर एक सीधी रेखा हो या गुणक चिन्ह हो, दोनों हथेलियों में गुरु पर्वत स्पष्ट हो और सूर्य रेखा भी निर्दोष रुप से दृष्टिगत हो, भाग्य रेखा चन्द्रपर्वत से निकलकर शनि पर्वत की ओर जाए, भाग्य रेखा मणीबंध से प्रारंभ होकर शनि पर्वत तक जाए तो भाग्यशाली, सौभाग्यशाली, महान सौभाग्यशाली यह सभी शब्द शुभ और लाभकारी भाग्य के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

अनिष्ट शनि के उपाय

डॉ. नीरज पाण्डेय, ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्री.
लेखकज्योतिष भवन, एल.आई.जी. ६५१, सेक्टर-१०, सिकन्दरा, आगरा-७

ज्योतिष जिज्ञासुओ यदि शनि ग्रह जन्म कुण्डली में नीच, पापी, अनिष्टकारक हो तो अपनी दशा अथवा अन्तर्दशा में हिला देता है। पापी अथवा अनिष्टकारी शनि के कुप्रभावों को शान्त करने के लिये शास्त्रों में अनेक उपायों का वर्णन मिलता है। इन उपायों को विधिवत और समयानुसार करने से शनि के कुप्रभाव को कम व शान्त किया जा सकता है। जन्म कुण्डलियों का अवलोकन कर यह ज्ञात किया जा सकता है कि शनि अनिष्टकारी है अथवा निर्बल है। शनि की अनिष्ट स्थिति अलग-अलग होती है। किसी कुण्डली में शनि कम पापी होता है तो किसी में अधिक पापी व क्रूर होता है। शनि का शुभ भावों का स्वामी होकर नीच होना उस भाव सम्बन्धित हानि देगा, जिसका शनि स्वामी है। ऐसा शनि जातक को असफलता, अभाव आदि प्रदान करता है। अतः उपायों द्वारा शनि के कुप्रभावों को शान्त किया जा सकता है। यदि शनि निर्बल हो तो उसे बल प्रदान कर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ अनिष्ट अथवा पापी अथवा निर्बल शनि के लिये शास्त्रोक्त उपायों को दिया जा रहा है।

१. शनिवार को व्रत रखें तथा प्रतिदिन सरसों अथवा तिल तेल का दीपक जला कर सिद्ध और प्राण-प्रतिष्ठित 'शनि यंत्र' के समक्ष शनि चालीसा का पाठ कर निम्नलिखित शनि स्तुति पढ़ें। *शनि स्तुति—*

सूर्य पुत्र नमस्तेऽस्तु सर्व भक्षाय वै नमः। देवासुर मनुष्याश्च पशु पक्षि सरीसृपाः॥
त्वचा विलोकिताः सर्वे देन्यमांशु व्रजन्तिते। ब्रह्मा शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः॥
राज्य भ्रष्टा पतन्त्येते त्वचा दृष्टयाऽव लोकिताः। देशाश्च नगर ग्रामा द्वीपाश्चैव तथा द्रुमाः॥
त्वचा विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः। प्रसादं कुरु हे सौरे वर दो भव भास्करे॥

२. प्रतिदिन दीपक जलाकर कुशा अथवा ऊन/ कम्बल के आसन पर बैठकर या खड़े होकर पाँच बार 'बजरंग बाण' पढ़ें ५१ दिन तक। ३. बुजुर्गों/वृद्धों का सम्मान करें, क्योंकि शनि वृद्ध ग्रह है। ४. प्रतिदिन तेल का दीपक जलाकर भैरों चालीसा पाँच बार पढ़ें। ५१ दिन तक। ५. शनिवार के दिन शनि मन्दिर में काले तिल मिलाकर तेल का दीपक जलायें। ११ शनिवार तक। ६. शनिवार के दिन सूर्य अस्त के समय गेहूँ और उड़द की दाल के आटे का पराठा काले तिल मिलाकर सरसों के तेल में बनायें और काले कुत्ते अथवा भैंस को खिलायें। ऐसा ११ शनिवार करें। ७. सरसों के तेल व तिली के तेल का काजल बनाकर प्रतिदिन सोने से पहले आँखों में लगायें। ८. तिली के तेल में कपूर मिलाकर सोने से पूर्व शरीर पर मालिश करें। ९. यदि शनि की महादशा अथवा अन्तर्दशा चल रही हो तो बुरे कार्यों से दूर रहें। नशा आदि न करें। १०. जरूरतमंद लोगों को शनिवार के दिन काले कपड़े का छाता दान करें। ऐसा पाँच शनिवार करें। ११. चमड़े के जूते अथवा चप्पल शनिवार के दिन गरीबों को दान करें। १२. नहाने से पूर्व अपने पुराने चमड़े के जूते, चप्पल किसी पेड़ के नीचे उतार कर चले आयें। किन्तु फिर पीछे मुड़कर न देखें। १३. किसी योग्य ज्योतिषी से परामर्श लेकर नीलम अथवा नीली धारण करें। १४. शुभ समय में सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठित शनि मुद्रिका धारण करें। १५. सुबह खाने के बाद अन्त में थोड़ी रोटी थाली में छोड़ दें। उस (रोटी) को कौओं को टुकड़े-टुकड़े कर खिलायें। ऐसा २१ दिन अथवा ५१ दिन करें। १६. शनिवार को स्नान से पहले २५ ग्राम सरसों का तेल, २५ ग्राम तिल का तेल, २५ ग्राम, काले तिल, २५ ग्राम काले उड़द की दाल, २५ ग्राम गुड़ थाली में रखकर पीपल के पेड़ की ग्यारह परिक्रमा लगाकर पेड़ पर सभी सामग्री चढ़ा दें। १७. आटा, बूरा, समान मात्रा में मिलाकर तिल के तेल में भून लें। प्रतिदिन नहाने से पूर्व चींटियों को डालें। ऐसा ४१ या ५१ दिन करें। १८. ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः प्रतिदिन तेल का दीपक सिद्ध 'शनि यंत्र' के आगे जलाकर पाँच माला जप करें। ऐसा ५१ दिन तक जपें। उपरोक्त उपायों में से जो आप को सरल व ठीक लगे। कर सकते हैं। अवश्य ही शनि का कुप्रभाव शान्त होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मोती-यह चन्द्रग्रह का अनुकूल रत्न है। यह समुद्र के सीप

राज्य भ्रष्टा पतन्त्येते त्वचा दृष्टयाऽव लोकिताः। देशाश्च नगर ग्रामा द्वीपाश्चैव तथा द्रुमाः॥
त्वचा विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः। प्रसीद कुरु हे [illegible]॥

... जपें। उपरोक्त उपायों में से जो आप को सरल व ठीक लगे। कर सकते हैं। अवश्य ही शनि का कुप्रभाव शान्त होगा।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव एवं धारणीय विधि

लेखक -आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री

'वर्ण' और 'रूप' प्राकृतिक देन है। संसार की प्रत्येक वस्तु, जड़-चेतन और कण-कण, इस प्राकृतिक देन से संपन्न है। जिस प्रकार रूप तथा आकृति सर्वव्यापी है उसी प्रकार इनके (रंग-रूप) आकर्षण, मोह, लालसा, अनंराग की प्रवृति भी समस्त जीव-जगत में पायी जाती है। इनमें से एक अमूल्य उपहार रत्न है। संसार के समस्त भू-भागों में रत्नों के प्रति आकर्षण अतिप्राचीन काल से ही चला आ रहा है। ये प्राकतिक के गर्भ से प्राप्त होने वाले रत्न संसार के देदीप्यमान प्राकृतिक पुष्प है। जिसमें किसी प्रकार की सुगन्ध नहीं होते हुए भी ऐ चिर काल तक सुवासित है। मनमोहक और चित्तयोवन है तथा बरवस ज्वलत आशा के कारण मनमोहक भी होता है। यह रत्न केवल आभूषणों की ही शोभा नहीं बढ़ाते बल्कि ग्रहों की मापक तथा अशुभता दूर करने के लिए इनमें असीम क्षमता है। प्रकृति से मानव को यही पराजय उसे अंततः प्राकृतिक वस्तुओं के प्रति लुब्ध करती है। जो कुछ वह प्रयत्नपूर्वक नहीं बना पाता, प्रकृति उसे सहज ही प्रस्तुत कर देती है। हां यह बात अलग है कि सभी वस्तुएं सुलभ नहीं होती और ये वस्तुएं जिन्हें मानव ने अति सुन्दर, गुणयुक्त और मूल्यवान घोषित कर रखा है-अवश्य ही दुर्लभ, अबोध, फलदायी रहती है। जिसे मूल्यवान पत्थर जिन्हें सामान्य जनों ने जवाहरात या रत्न के नाम से संग्रहणीय किया गया है।

प्रस्तुत आलेख में हमारा उद्देश्य रत्न ही है। अतः आगे चलकर हम रत्नों के संबंध में कुछ तथ्य प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं।

माणिक्य-नवरत्न वर्ग के अंतर्गत आनेवाले रत्नों में प्रथम सथान माणिक्य का है। यह सूर्य ग्रह का अनुकूल रत्न है। यह विश्व के समस्त रत्नों में सर्वाधिक सुन्दर, मूल्यवान, प्रभावशाली, अबोध, दुर्लभ रत्न है। यह गुलाबी रंग का चिकना, चमकदार, पारदर्शी रत्न है। यह हल्का लाल, गुलाबी अथवा अनारफल दाने के सामान होता है। इसमे बरबस ही लाल रंग की किरणें प्रस्फुटित होती रहती है। यह दुर्लभ रत्न भारत के किसी भी भू-भाग में प्राप्त नहीं होता। इस रत्न के अभाव में आमजन माणिक्य स्टार धारण करते हैं। सर्वश्रेष्ठ माणिक्य बर्मा और श्रीलंका में प्राप्त होते हैं। हम मुख्य रत्न माणिक्य संबंधी कुछ तथ्य प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे यह बात स्पष्ट हो जायगी कि ज्योतिष के अनुसार माणिक्य का लग्नगत प्रभाव कैसा होता है? अर्थात् यदि कोई व्यक्ति माणिक्य धारण करता है तो लग्न भेद से उसपर क्या प्रभाव पड़ेगा? मेष लग्न वाले स्त्री-पुरुष का जन्म पत्रिका में सूर्य कहां, किस भाव में हैं और आसपास के ग्रहों की स्थिति कैसी है? यह जान लेने से माणिक्य धारण करने का प्रभाव निश्चित हो जाएगा। प्रायः देखा गया है कि इस लग्न वाले जातकों की जन्म पत्रिका में सूर्य की स्थिति शुभकारक माना जाता है। अतः यह रत्न धारण करने से विद्या-बुद्धि का विकास, प्रतियोगिता में सफलता, संतान सुख, अध्यात्म में अनुराग एवं सुख-शांति-समृद्धि प्राप्त होती है। **वृष लग्न**-इस लग्न मे सूर्य चौथे भाव का स्वामी होता है। इस दृष्टि से सूर्य इस लग्न में शुभ प्रभाव क्षीण हो सकता है। वैसी स्थिति में मेरे समझ से यह रत्न इस लग्न के जातक को धारण नहीं करना चाहिए। **मिथुन**-इस लग्न में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी होता है। अतः इस लग्न के जातक को यह रत्न धारण करना शुभकारक नहीं होता। ऐसी स्थिति में इस रत्न को धारण करने से चोट-चपेट, मानसिक अशांति, धन-हानि आदि की आशंका रहती है। **कर्क**-इस लग्न वाले जातकों के लिए यह रत्न बहुत लाभकारी होता है। इसे धारण करने से धनाभाव, नेत्र कष्ट दूर होकर सुख-शांति एवं शिक्षा-परीक्षा में सफलता प्राप्त होती है। **सिंह**-सूर्य लग्नेश है। अतः इस लग्न के लिए यह रत्न अत्यंत शुभ फलदायक होता है। यदि इस लग्न वाले यह रत्न धारण करें तो उन्हें आजीवन अनुकूल परिस्थितियों में रहने का गौरव प्राप्त होता है। **कन्या**-इसमें सूर्य द्वादश का स्वामी होता है। इस लग्न के जातक को यह रत्न कभी धारण नहीं करना चाहिए। अन्यथा लाभ की जगह हानि की आशंका बनी रहती है। क्योंकि इस लग्न में सूर्य स्थिति प्रतिकूल होती है। **तुला**-इस लग्न में सूर्य एकादश भाव का स्वामी होता है। फिर भी सूर्य और शुक्र आपस में वैरभाव रखते हैं। अतः यह रत्न मेरे समझ से धारण नहीं करना चाहिए। **वृश्चिक**-इस लग्न में सूर्य दशम का स्वामी होता है। इस लग्न में सूर्य लग्नेश का मित्र होता है। अतः राज्यकृपा, मान-सम्मान, नौकरी, व्यापार में लाभ प्राप्ति के लिए यह रत्न लाभकारी है। **धनु**-इस लग्न में सूर्य नवम भाव का स्वामी होता है। और यहां भी वह लग्नेश का मित्र होता है। अतः इस लग्न के जातक यह रत्न धारण करे तो भाग्योन्नति तथा माता-पिता के सुख, उच्च पद की प्राप्ति होती है। मानसिक संयम शांति के लिए यह रत्न विशेष लाभकारी माना जाता है। **मकर**-इस लग्न की कुण्डली में कुछ ऐसी विरोधी स्थिति में होती है कि सूर्य ग्रह का लाभ जातक को नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में यह रत्न धारण करने से कोई लाभ प्राप्त नहीं होता। **कुंभ**-मकर लग्न की भांति इस लग्न में भी सूर्य के प्रतिकूल होते हैं। ऐसी स्थिति में यह रत्न धारण करना हनिप्रद हो सकता है। **मीन**-इस लग्न में माणिक्य धारण करना लाभदायक नहीं होगा। क्योंकि इस लग्न में सूर्य षष्ट भाव का स्वामी होता है। इस लग्न में एक अपवाद हो सकता है। क्योंकि सूर्य लग्नेश बृहस्पति का मित्र है। अतः यह षष्ठ का स्वामी होकर षष्ट भाव में ही स्थित हो तो केवल सूर्य दशा में यह रत्न धारण किया जा सकता है।

माणिक्य के साथ हीरा, नीलम और गोमेद धारण करना निषेध है। यह रत्न कम से कम तीन रती का हो। इसे सोना में जड़वाकर अनामिका अंगुली में रविवार को धारणीय है।

मोती-यह चन्द्रग्रह का अनुकूल रत्न है। यह समुद्र के सीप नामक जलीय जन्तु के गर्भ से प्राप्त होता है। यह सफेद सूची कंकड़ गोल अपारदर्शी रत्न है। यह रत्न प्रायः मनमोहक होता है। यह रत्न शरीर की व्याधियों से मुक्ति पाने के लिए, मोक्ष प्राप्ति के लिए तथा मानसिक रोग, पाचन तंत्र की गड़बड़ी एवं धर्म, अर्थ और दाम्पत्य जीवन सुखी बनाने के लिए यह रत्न परम लाभकारी माना गया है। यदि जन्म पत्रिका में सूर्य तथा चन्द्रमा एक साथ युक्ति करे या सूर्य से एक राशि आगे पीछे चन्द्रमा होता है ऐसे स्थिति में यह रत्न धारण करना लाभकारी हो सकता है। दूसरे भाव का स्वामी अगर चन्द्र हो और इस जन्म पत्रिका में कहीं पर चन्द्र विचरण कर रहा हो तो भी यह रत्न धारण किया जा सकता है। यदि चन्द्रमा अपनी राशि के छठे, आठवे या बारहवे भाव में हो तो मेरे समझ से मोती नहीं धारण करना चाहिए। इसे धारण करने से विभिन्न प्रकार के मानसिक रोग होने की आशंका रहती है। चन्द्रमा पंचमेश होकर बारहवे भाव में हो तो भी यह रत्न धारण नहीं करना चाहि॥ अथवा पुत्र सुख में बाधा तथा पैतृक संपत्ति की हानि तथा मदिरापान करने की आदत पड़ जाती है। यदि चन्द्रमा पर राहु या केतु या मंगल की दृष्टि हो तो यह रत्न धारण किया जा सकता है। यदि चन्द्रमा के साथ राहु या केतु युति कर रहा हो तो गोमेद के साथ या लहसुनिया रत्न के साथ मोती धारण किया जा सकता है। परन्तु ध्यान रखें कि षष्ठ और अष्टम व द्वितीया भाव में यह योग न बन रहा हो, अन्यथा लाभ की जगह हानि की आशंका होता है।

मेष लग्न, कर्क लग्न, तुला लग्न, वृश्चिक लग्न, मीन लग्न के जातक यह रत्न धारण करे तो संतान सुख, विद्या, बुद्धि का लाभ तथा यश, मान, सुख समृद्धि एवं मानसिक सुख प्राप्त होता है। वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु, मकर, कुंभ लग्न वाले जातक यह रत्न कभी धारण न करें। यह कम से कम चार रती का हो। इसे सोना या चांदी में जड़वाकर सोमवार को धारणीय है।

मूंगा-यह मंगल ग्रह रत्न है। यह भी समुद्र की गर्भ से ही प्राप्त होता है। कोरल नामक जलीय जन्तु के अस्थि कंकाल है। यह लाल रंग का चिकना ठोस रत्न है। यह कभी-कभी सफेद रंग में भी प्राप्त होता है। यह औसत से अधिक भारी होता है। जो लोग नान प्रकार की मनोव्याधि से ग्रस्त हो बार-बार चोट-चपेट, दुर्घटना, विवाह संपादन में बाधा, दाम्पत्य सुख का अभाव के स्थिति में यह रत्न लाभकारी माना गयर है। जन्म-पत्रिका में मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें भाव में विराजमान हो तो यह रत्न धारण अवश्य करना चाहिए। दाम्पत्य सुख में बाधा या जीवन साथी के रोगाग्रस्त स्थिति दिख पड़े तो यह रत्न अवश्य धारण करें। मेष लग्न, कर्क लग्न, सिंह लग्न, वृश्चिक लग्न, धनु लग्न, मीन लग्न के जातक यह रत्न धारण करे तो भूमि-भवन का लाभ प्रशासनिक सेवा में पद वृद्धि, दाम्पत्य सुख, वंश वैभव की प्राप्ति तथा आरोग्य सुख प्राप्त होता है। शेष लग्न वाले जातक यह रत्न नहीं धारण करें तो अच्छा है। यह कम से कम छः रती का हो। इसे चांदी या सोना में जड़वाकर मंगलवार को धारणीय है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पन्ना-यह बुध ग्रह का रत्न है। नीम की पत्ती से मिलते-जुलते विशुद्ध हरे रंग का चिकना, चमकदार, पारदर्शी रत्न है। भारत में यह रत्न प्राप्त होता है। वैसे विश्व के अनेक राष्ट्रों में भी यह रत्न प्राप्त होता है। स्वच्छ और हरी आशा प्रसारित करने वाला निर्दोश पन्ना सुन्दर, प्रभावी और मूल्यवान पत्थर होती है। इसमें मादक भाव उत्पन्न करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। हरे मखमली, अनुपम, मनमोहक, रंग से पन्ना बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करता है। यह जन्म-पत्रिका में एक, चार, सात, नव, दश और एकादश भाव में विराजमान हो तो यह रत्न धारण किया जा सकता है। दूसरा, छठा, आठवां और बारहवा भाव में हो तो इसे धारण करने से लीवर, सुरायसीस, प्लीहा, गैस बनना, अफरा तथा धन-हानि कार्य, पेशा में गलत मूल्यांकन से हानि होने की आशंका रहती है। मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ लग्न वाले जातक यह रत्न धारण करे तो आर्थिक लाभ, नौकरी व्यापार में उन्नति तथा मानसिक सुख प्राप्त होता है। शेष लग्न वाले जातक यह रत्न कदापि न धारण करें। अन्यथा लाभ की जगह हानि की आशंका होती है। यह कम से कम पांच रती का हो। इसे चांदी या सोने में जड़वाकर कनिष्ठा अंगुली में बुधवार को धारणीय है।

पुखराज-यह बृहस्पति ग्रह का रत्न है। सामान्यत: यह पीले रंग का होता है। किन्तु अपवाद स्वरूप सफेद, गुलाबी रंग में भी कभी-कभी प्राप्त होता है। यह चिकना, चमकदार, वजनदार, हल्का पीला, गहरा पीला और जर्द रंग में भी प्राप्त होता है। इसकी गणना अतिमूल्यवान, दुर्लभ, सुन्दर और प्रभावशाली रत्नों में होती है। दाम्पत्य जीवन में बाधा, विवाह योग्य वर-कन्या के लिए, पारिवारिक दात्पत्य सुख, शीघ्र विवाह संपादन, धर्म, अध्यात्म में रूचि तथा नौकरी व्यापार में धन प्राप्ति के लिए यह रत्न परम लाभकारी माना जाता है। यह जन्म पत्रिका में एक, चार, सात, नव, दश भाव में विराजमान है। तथा धनु, मीन, कर्क, सिंह राशि हो तो यह रत्न धारण किया जा सकता है। मेष लग्न, कर्क लग्न, सिंह लग्न, वृश्चिक लग्न, धनु लग्न, मीन लग्न के जातक यह रत्न धारण कर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण कर सकते हैं। शेष लग्न वाले यह रत्न धारण न करें। जन्म पत्रिका में बृहस्पति अस्त हो तो अवश्य ही यह रत्न धारण करें। यह कम से कम पांच रती का हो। इसे सोना में जड़वाकर गुरुवार को धारणीय है। अच्छा होगा कि गुरुवार को जब पुष्य नक्षत्र पड़े तो यह रत्न धारण करना परम लाभकारी होता है। उच्च पदाधिकारी, मठाधीश, न्यायाधीश लोगों के लिए यह रत्न बहुत लाभकारी माना जाता है।

हीरा-यह शुक्र ग्रह का रत्न है। यह रत्नराज है। सर्वाधिक मूल्यवान, कठोर, दीर्घजीवी, प्रभासंपन्न, अद्‌भूत गुणों से युक्त और रत्नों के राजा माना गया है। वैसे यह जन-सामान्य की पहुंच से बाहर है। धनी वर्ग ही इसे खरीद सकते हैं। अपनी चमक शोभा के लिए यह रत्न विश्व विख्यात है। यह चिकना, चमकदार, पारदर्शी रत्न है। इस रत्न से सदैव नवरंग किरणें प्रस्फुटित होती रहती है। यह प्रकाश को शोषित कर स्वयं चमकता है। इस हीरे के विषय में यह विश्वास प्रचलित है कि सौभाग्य, शांति और समृद्धि देने में यह रत्न बहुत प्रभावशाली है। वैवाहिक जीवन बाधाएं, विसंगतिय और अन्य विरोधी व्याघातों का समन करके पुरुष सुखी दाम्पत्य जीवन देने में यह रत्न सर्वाधिक प्रभावशाली माना जाता है। दाम्पत्य सुख की प्राप्ति के लिए इससे बढ़कर कोई रत्न नहीं है। यह रत्न कोई भी स्त्री-पुरुष धारण कर सकता है। ग्रह की स्थिति में शुक्र जन्म पत्रिका में दूसरा, तीसरा, छठवा, सातवा और आठवा छोड़कर कहीं भी हो तो यह रत्न धारण किया जा सकता है। शुक्र एक मारक ग्रह है। इसका प्रतिकूलता घातक हो सकता है। अत: सोच विचार कर निर्णय लेना चाहिए। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुंभ लग्न हो तो यह रत्न धारण किया जा सकता है। जन्म राशि वृष, तुला, मिथुन, कन्या हो तो भी यह रत्न धारणीय है। शेष लग्न वाले जातक यह रत्न कदापि न धारण करें। यह कम से कम डेढ़ रती का हो। इसे सोना में जड़वाकर तर्जनी अंगुली में शुक्रवार को धारणीय है।

नीलम-यह शनि ग्रह का रत्न है। यह नीले रंग का पारदर्शी और मूल्यवान रत्न है। यह चिकना, चमकदार, पारदर्शी और नीलवर्णीय प्रकाश पुंज का उत्सर्जक होता है। प्रभाव की दृष्टि से यह रत्न सबसे कम समय में अपना चमत्कार दिखा देता है। घातक और मारक भी होता है। अत: इस रत्न का चुनाव काफी सोच-विचारकर करना चाहिए। जन्म पत्रिका में शनि नीच राशि का कहीं भी हो तो यह रत्न धारण न करें। सम्पूर्ण ग्रह स्थितियों पर विचार करके ही इस रत्न का चयन करना चाहिए। अन्यथा लाभ की जगह हानि की आशंका बनी रहती है। जन्म राशि मकर, कुंभ, तुला, वृष, मिथुन हो तो यह रत्न धारणीय है। जन्म लग्न वृष, तुला, मकर, कुंभ हो तो यह रत्न धारणीय है। शेष लग्न वाले जातक यह रत्न धारण न करें। यह कम से कम पांच रती का हो। दसे चांदी में जड़वाकर शनिवार को संध्या के समय धारणीय है।

गोमेद-यह राहु ग्रह का रत्न है। सामान्यत: यह रत्न गोमेद नाम से प्रचलित है। इसका रंग गहरा कथाई साथ ही मधु कमे रंग का चिकना, चमकदार, पारदर्शी रत्न है। यह भारत के सभी भू-भागों में प्राप्त होता है। यह प्रभावशाली रत्न है। धारक को धारण करने से पूर्व अपनी जन्म पत्रिका में स्थित ग्रहों का किसी जानकार ज्योतिषी से विचार करा लेना चाहिए। यह सब बातें समझ करके तदनुसार ही यह रत्न धारण करना चाहिए। अन्यथा विपरीत स्थिति में अनुकूल रत्न भी प्रतिकूल फल देकर कष्टप्रद हो जाते हैं। इधर कुछ दिनों से इस रत्न का प्रचार-प्रसार बहुत बढ़ गया है। चूंकि सभी का जीवन समस्याग्रस्त है और इसे समस्या निवारक माना गया है। अत: सस्ता, शुलभ देखकर लोग इसे धारण कर लेते हैं। परन्तु वांछित लाभ उन्हीं को प्राप्त होता है जिनका ग्रह स्थिति इस रत्न के प्रभाव से मेल खाती है। जिस जातक को बवासीर, भगन्दर, पेट में गैस का शिकायत हो उसे यह रत्न धारण करना चाहिए। यह कम से कम सात रती का हो। इसे चांदी में जड़वाकर शनिवार को मध्यमा अंगुली में धारणीय है।

लहसूनिया-यह केतु ग्रह का रत्न है। विड़लाक्ष (लहसूनिया) से भिन्न-भिन्न रंगों का प्रदर्शन अलंकार में बाद को तीकपूर्ण होता है। रत्न में जो चमक होती है। वह बिल्ली आंखों की चमक के समान होती है। इसमें रेशम के समान धुति तथा हरा रंग होता है। केबीकोन काट से काटे जाने पर प्रकाश एक रेखा या पट्टी में केन्द्रीत होता दिखाई पड़ता है। धुमाने पर प्रकाश की रेखा जो एक सूत्र के समान लगती है। यह हरे, पीले और भूरे रंग में प्राप्त होता है। यह भारत, बर्मा, लंका आदि राष्ट्रों में प्राप्त होता है। जो जातक बार-बार जेल यात्रा करते हैं। कानूनी विवाद में फंसते हैं। बार-बार धन हानि होती है। किसी मुकदमें में सजा होने की आशंका हो तो यह रत्न धारण करने से इस वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है। यह कम से कम पांच रती का हो। इसे चांदी या सोना में जड़वाकर कनिष्ठा अंगुली में या मध्यमा में शनिवार को धारणीय है।

नवरत्न-(लॉकिट या नवग्रह माला)-कुछ स्त्री-पुरुष ग्रहीय प्रभाव से लाभ उठाने के लिए नवरत्नों की अंगुठी, लॉकेट अथवा नवग्रह माला धारण करते हैं। ऐसे स्थिति में रत्न जड़ाते समस उनके क्रम पर ध्यान देना चाहिए। क्रम विरुद्ध रत्न हानिकारक हो जाते हैं। नवरत्नों को अपने धारणीय आभूषण, जॉकिट, अंगुठी या माला में क्रम से जड़ाना चाहिए। प्रथम पन्ना, दूसरा हीरा, तीसरा मोती, चौथा पुखराज, पाचवां माणिक्य, छठवा मूंगा, सातवां लहसूनियां, आठवां नीलम, नवा गोमेद जड़वाना चाहिए। प्रथम पंक्ति में बुध-शुक्र-चंद्रमा, द्वितीय पंक्ति में बृहस्पति-सूर्य-मंगल और तृतीय पंक्ति में केतु-शनि-राहु ग्रहों की उपस्थिति मानकर उनसे संबंधित रत्न जोड़े जाते हैं। यह भी ध्यान देने की बात है-नवरत्न जड़ीत आभूषण तभी लाभकारी होता है, जब उसमें नियमानुसार उचित भार के रत्न लगाएं गये हों। ग्रहों की जप, प्राण-प्रतिष्ठा आदि सविधिपूर्वक किया गया हो। जिस व्यक्ति को अपने जन्म राशि का ज्ञान न हो, ग्रहों की स्थिति ऐसा हो कि उपयुक्त रत्नों का चयन करने में कठिनाई हो तो यह रत्न धारण कराया जा सकता है। यह लॉकेट, चांदी, सोना आदि में बनाया जाता है। यदि कुण्डली में शुभ ग्रह उच्च, स्वराशि या शुभ भाव स्थित हो तो नवरत्न धारण करने और अधिक शुभफल दायक बन जाते हैं। यह नवरत्न कोई स्त्री-पुरुष धारण कर सकते हैं। इसे धारण करने से शारीरिक, मानसिक, आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। शिक्षा-परीक्षा में सफलता, नौकरी-व्यापार में लाभ तथा विवाह संपादन में बाधा हो तो इसे धारण करके तत्काल सफलता मिलती है। ऐसे भी नवरत्न धारण करने से सुख-संपदा, सौभाग्य, धन, यश, मान, प्रतिष्ठा, संतान सुख, पारिवारिक सुख, दाम्पत्य जीवन में मधुरता तथा प्रतियोगिता में शीघ्र सफलता एवं कठिन से कठिन रोगों का प्रतिकार होता है। मूल्य की दृष्टि से नवरत्न लॉकिट, अंगुठी या नवग्रह माला पांच सौ रुपये से लेकर सात-आठ हजार रुपये मूल्य का प्राप्त हो जाता है। यह ध्यान रखें कि कोई भी रत्न लॉकिट कोई विशेष प्रतिष्टान से ही खरीदें, जो प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हो अन्यथा असली के नाम पर नकली सामग्री धारण कर लाभ की जगह हानि ही प्राप्त होती है।

लेखक -आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री,
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सराँव (नटवार)
जिला-रोहतास (बिहार)-८०२२१८.
फोन-०६१८५-२४६४८०,२४६३१७.
मो. ०९४३१४८६२१६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

भाव बन सकते हैं। सोना Gold २९-१०-२००५ को करीब ७००० (सात

और समृद्धि देने में यह रत्न बहुत प्रभावशाली है। वैवाहिक जीवन आधार... रत्न में जो चमक होती है। वह बिल्ली आंखों की चमक के समान होती... फोन-०६१८५-२४६४८०, २८६३९७.
विसंगतिय और अन्य विरोधी व्याघातों का समन करके पुरुष सुखा... है। इसमें रेशम के समान धुति तथा हरा रंग होता है। कथ्थाकान कोट से... मो. ०९४३१४८६२१६

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लेख पोरसा वालो के पृष्ठ १२ का शेष

सरसों-अरण्ड-सोयाबीन तैल तेजी-मंदी

परिलेखककर्ता-मनीष कुमार जैन पोरसा वाले C/o प्रेमचन्द्र जैन पोरसा वाले,
लाईट मशीनरी ठाठीपुर, ग्वालियर (म.प्र.) ४७४०११ फोन-०७५१ पी.पी.५०४०३८९ व ५५३२०६२

(१) ५ दिसम्बर ०५ से १५ दिसम्बर ०५ तक फली तैल ५५ की मंदी तो २३-१२-०५ तक सरसों, बिनौला तेजी तो ३१ दिसम्बर ०५ तक तैलों में मंदी तो १ से १४ जनवरी अरण्ड, अलसी में अस्थायी तेजी तो २९ जनवरी तक तैलों में भयंकर मंदी आने की संभावना है। व्यापार में कभी भी जिम्मेदारी नहीं होगी। दान-धर्म-पुण्य करते रहें।

(२) ३ फरवरी ०६ से १४ फरवरी तक तैलों में एकदम तेजी तो १६ फरवरी तक मंदी अथवा ये मंदी ५ मार्च २००६ तक चल सकती है। ७ मार्च ०६ से ९ अप्रैल ०६ तक अरण्ड, तिल ७५ तेज। मसूर, सरसों १६१ तेज। बिनौला तैल में भारी तेजी आ सकती है। १५ अप्रैल से ३ मई तक तैलों में भारी मंदी तो ३ मई से १५ मई तक तेजी तो २७ मई तक मंदी आ सकती है। अथवा ५ से १७ मई के बीच तैलों में भारी मंदी आ सकती है।

(३) ५ या ११ जून ०६ से २३ जून तक तैल, सरसों, अरण्ड में अच्छी तेजी आ सकती है। २५ जून से ३ जुलाई तक मंदी। ०३ से १५ जुला ०६ तक अच्छी तेजी। १५ जुलाई से ३ अगस्त तक भारी मंदी चल सकती है।

(४) ३ अगस्त ०६ से १९ अगस्त तक तैलों में घटबढ़ से तेजी। १९ से २५ अगस्त तक मंदी। २५ अगस्त से ११ सितम्बर के बीच तैलों में अच्छी तेजी तो २४ सितम्बर तक मंदी आ सकती है।

(५) १-१०-०६ से १८-१०-०६ तक तैलों में मंदी तो २१-१०-०६ से ५ दिसम्बर ०६ तक घटबढ़ से तैलों में अच्छी तेजी आ सकती है। ५ दिसम्बर से ११ दिसम्बर तक मंदी तो २९ दिसम्बर तक तेजी आ सकती है।

(६) ३ जनवरी २००७ से ७ फरवरी तक तैल में भारी मंदी, तो २१ फरवरी तक तेजी आ सकती है। २१-२-२००७ से ११ मार्च २००७ तक मंदी। ११ मार्च २००७ से १५ अप्रैल २००७ तक सरसों, बिनौला, अरण्ड, चना, मसूर, जीरा, धनिया में भारी तेजी आ सकती है।

व्यापार के घटबढ़ में पांच का आंकड़ा बड़ा मतलब रखता है। सन् १९४५ में भयंकर मंदी, सन् १९५५-१९६५-१९७५-१९८५-१९९५-२००५ में भयंकर मंदी के रहे। व्यापार सरसों, रुई, गुवार में सन् १९७५, सन २००५ भयंकर मंदी के रहे। वैसे सन् २००५ में सब व्यापार ठप्प से हो गए। सन् २००६-२००७ में कुछ व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी चलने से व्यापार सौदों में कुछ रौनक लौटने की उम्मीद है। जिससे व्यापारियों को व्यापार सावधानी से करने पर लाभ मिल सकता है। लहसुन नीचे में ५-७ रूपये प्रति किलो, २ साल में ४५-७५ बिक सकता है। उड़द जो पिछले वर्षो५ में १५१६ था वो आगे कभी ३१००-३५०७ बिककर फिर १५-१२ रह सकता है। व्यापार में कोई गारण्टी नहीं। ग्राफीकल सदस्य बनकर ताजी सलाह मंगावें। सन् २००६-२००७ में पानी वर्षा जोरदार होने की आशा है।

चांदी-सोना तेजी-मंदी

(१) २१-११-२००५ से २१-२-२००६ तक के बीच कभी चांदी में ७७७ तेज तो सोना ३९९ की तेजी आवे तो बाद में जोरदार मंदी आवेगी। १६ अप्रैल २००६ से २५ मई तक चांदी में कोई लाइन तो २७ जून २००६ तक चांदी में भयंकर मंदी तो बाद में तेजी आवेगी। ७-७-२००६ से १-११-२००६ तक चांदी में घटबढ़ से अच्छी तेजी, बीच-बीच में ७-१५ की जोरदार मंदी के झटके लगते रहने की संभावना है।

(२) ५ दिसम्बर ०६ से २१ जनवरी ०७ तक चांदी, सोना में भारी मंदी आ सकती है। २१ मई २००६ Lo2 या High होने का Period है।

नोट:-यदि बाजार घटकर Lowest बना है तो आगे २५ दिन तेजी का व्यापार करें। चांदी जो अक्टूबर २००५ में ११५५१ के आसपास भाव चल रहे हैं वो २९ मई २००६ या २७ जून तक चांदी ७५७९ या ७००० के स्तर छू सकती है। और चांदी ७ दिसम्बर २००६ के मध्य पुनः १०९९९-९२७७ के भाव टच कर सकते हैं। ३० मार्च २००७ तक चांदी घटकर ६५७५ के नीचे भाव बन सकते हैं। सोना Gold २९-१०-२००५ को करीब ७००० (सात हजार रूपये प्रति दस ग्राम) वो २७ मई २००६ तक घटकर ६६०५ के भाव रह सकते हैं। व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। सोना २१ अगस्त २००६ तक ६५०० से ७३७७ के ऊंचे भाव बन सकते हैं। १८ जनवरी २००७ तक सोना Gold में भारी तेजी, पुनः ६९०० रूपये प्रति १० ग्राम के भाव हो सकते हैं।

खास नोट:-मीन-कन्या-कर्क राशि वालों का समय ठीक नहीं है। अथवा जिनका जन्म मार्च-सितम्बर के महीने में अथवा जिनकी आयु सवा ३६ वर्ष, साढ़े ४६ वर्ष, पौने ५६ वर्ष चल रही हो, वो सन् २००६-०७ में जोखिम पूर्ण व्यापार न करें। सावधानी से व्यापार करें। जिनकी राशि तुला अथवा उम्र साढ़े ४७ से ४८ वर्ष, ३६ वर्ष, ५८-५९ वर्ष की आयु वालों को व्यापार में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। सन् २००६ में गुवार, जीरा व लालमिर्च में खतरनाक घटाबढ़ी चलने की उम्मीद है।

व्यापार दिग्दर्शिका वैज्ञानिक अनुसंधान पर

१८ महीने की तेजी-मंदी गाईड लाइनें

परिलेखकर्ता:-श्रीमती चम्पादेवी जैन C/o श्री प्रेमचन्द्र जैन पोरसा वाले

पुस्तक मूल्य २०१ रुपये डाक खर्च सहित

इस तेजी-मंदी पुस्तक में सरसों, अरहर, चना, रुई, सोना-चांदी, गुड़-चीनी, कालीमिर्च, हल्दी, शेयर्स आदि की लम्बे समय के मोटे चांस दिए गए हैं। कुछ वस्तुओं के ऊंचे-नीचे भावों के अनुमानित भाव भी पुस्तक में छापे जावेंगे। सन २००६ से अप्रैल २००७ तक विशेष घटाबढ़ी का वर्ष है। पुस्तक की V.P.P. नहीं होगी। मनीआर्डर कूपन पर आप अपना पता स्पष्ट लिखें। मनीआर्डर ही भेजें।

☎ **श्रीमती चम्पादेवी जैन C/o श्री पी.सी.जैन पोरसा वाले**, ग्रोवर हॉस्पीटल के पीछे, इंदौर बैंक के पीछे, बारादरी चौराहा, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४००६ फोन नं. ०७५१-पी.पी.५०४०३८९, २३४०७२२ से पता बदलने पर वहां ज्ञात कर लें। २३३४६७५, ०९८२७२५००४५ पी.पी. पोरसा वाले जैन

तेजी-मन्दी भविष्यवाणी (चमत्कार)

ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य पं. शंकरलाल गौड 'शंभूकवि' (दूरा)

संवत् २०६३ वि. चैत्र शुक्ल पक्ष-सुदी २ से एक सप्ताह के अन्दर कमलगट्टा, गुगल, लाख, धान, सिंघाड़ा, मोती, पुखराज, जूट, पाट, बारदाने, फल, फूल, नमक, काली मिर्च, चौपाये, मूंग, मसूर, उड़द, चावल, लहसुन, प्याज, लाख, चपड़ा, सब्जी, रुई में अच्छी तेजी होती है। इस मास से दो मास में पश्चिमी राष्ट्रों ईराक, ईरान में युद्ध की संभावना है। अग्निकाण्ड प्राकृतिक प्रकोप के प्रायः योग बनते हैं। सुदी १० से १५ दिन में चांदी, शेयर, सोना, ताम्बा, पीतल, रांगा में अच्छी तेजी। धान्य गेहूँ, चना में कुछ सस्तापन भी आ सकता है। सुदी पक्ष में बादल चाल खण्ड वृष्टि के योग हैं।

वैशाख मास-बदी में ३ से ९ तक चाँदी, सोना में मंदी होकर एकदम तेज हो जाती है। बदी ५ से १ मास में रुई, ईख, तिल, सर्वधातुयें अकस्मात तेज हो सकती हैं। उसी दिन से १० दिन में सर्वधान्य, सर्व रस, सोना, चांदी, लोहा, पारा, रांगा, शीसा, ताम्बा, गुड़, घी, खटाई, मिर्च, नमक, ऊन, काला तिल, तीसी, रेण्डी, मेथी, लाल रंग, लाल चन्दन, इलायची, लौंग, सुपारी, नारियल, कपूर, हींग, हिंगुल पर घोर तेजी हो। बदी ७ से १० दिन में मेघ गर्जन, अतिवृष्टि, केरल, गोआ, पाण्डीचेरी में हो जाया करती है। दूध की कमी दिखलाई देती है। उपज श्रेष्ठ, चावल, उड़द, तिल, घी पर तेजी हो। बदी ८ से १५ दिन में रुई में तेजी धान्य मंदा, सुभिक्ष का संचार हो। सुदी २ से १० दिन के भीतर चावल, जौ, चना, मोंठ, मसूर, तीसी पर घोर तेजी होती है। सुदी ५ से चांदी, तृण, काष्ठ, भूसा में भी तेजी हो। सुदी १० से पन्द्रह दिन में चांदी अवश्य ही तेजी पर जावे। सुदी १५ से २० दिन में गेहूँ तेज, रोगवृद्धि, वृष्टि भी होती है।

ज्येष्ठ मास-बदी २ से १५ दिन में श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन, कपूर, सोना, चांदी, लोहा, रांगा, पारा, शीशा, जौ, चावल, गेहूँ, मूंग, मोंठ, राई, सरसों तेज हो। बदी ५ से १० दिन में सर्व धान्य पर महंगापन, चांदी तेज होकर मंदी, भैंसों पशुओं को पीड़ा होती है। उसी दिन से २० दिन में तिल, यव, उड़द, अलसी, चना, सोंठ, सर्वरस, गुड़, नमक, धातु, ऊन में मंदापन होता है। बदी ५ से १ मास में चांदी १० रुपये मंदी होकर १२ रुपया तेज हो। स्वर्ण, धान्य, अफीम, कपड़ा तेज, पीड़ा, महर्घता बढ़ेगी। बदी १० से १० दिन में धान्य तेज होता है। समीपवर्ती देशों में शत्रुता, रोग की वृद्धि होती है। अमावस्या से १५ दिन में चांदी, अफीम, रक्त पदार्थ, नारियल मंदा, चना, तूवर, मोंठ, धान्य में घटाबढ़ी हो सकती है। सुदी १ से १० दिन में चावल आदि धान्य, तीसी, सरसों, तेल, दाख, गुड़, खाण्ड, सुपारी, रुई, सूत, सन, बारदाना में तेजी हो। सुदी ४ से १० दिन में चांदी, अफीम में घटाबढ़ी हो सकती है। सुदी १३ से २० दिन में पश्चिमी देशों में कलह युद्ध की पूर्ण संभावना बनी रह सकती है। सुदी १० से १ मास में मूंग, सब्जी, लहसुन, चावल धान्य, गुड़, ईख तेज हो। सुदी १४ से १५ दिन में सोना, चांदी, पारा, रांगा, शीशा, लोहा, पीतल, चावल, सिंघाड़ा, कवलगट्टा, नारियल, फल, सूखे मेवे, रुई, सूत, रेशम, कपड़ा, मसूर, कपूर, चन्दन सुगन्धित वस्तु, चना तेज होता है। अतः संग्रह करने वाले लाभ उठा सकते हैं। यह एक चांस है।

आषाढ़ मास-बदी १ से १० दिन में कपास, तिल, सूत, चावल, गुड़, खाण्ड पर साधारण तेजी। राई, तूवर, सन, पाट, बारदाने आदि मंद होंगे। बदी २ से १५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिन तक चांदी, सोना, रुई में घटाबढ़ी चलकर तेजी हो सकती है। राजस्थान, मध्य प्रदेश में कहीं-कहीं अच्छी वर्षा भी होती है। बदी ६ से १५ दिन में चांदी, सोना, रुई में घटाबढ़ी हो। गेहूँ, जौ, शक्कर सर्व धातुएं तेज हों। बदी ७ से १ मास में कपास, घी, कन्दमूल, फल, तिल सभी धान्य तेज होते हैं। ८ दिन में वायु की तीव्रता तथा खण्डवृष्टि हो। तिल, गेहूँ, उड़द, मूंग, मसूर, अरहर में मंदापन हो। बदी ९ से १५ दिन में दाख, सुपारी, खाद्य पदार्थों पर मंदापन होता है। पश्चिमी राष्ट्रों में प्रकृति प्रकोप से जन धन का विनाश होता है। बदी ११ से वायु वृष्टि के योग पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पूर्वी राजस्थान में बनते हैं। अमावस्या से १ दिन में घी, गुड़, खाण्ड, खल, चावल, रत्न, काष्ठ, धान्य, गेहूँ, सुरमा, कपूर, चन्दन, सुगन्धित वस्तु इत्र, केवड़ा, लाल वस्तु, कपास, रुई, हल्दी, सोंठ, लोहा, चांदी में भीषण तेजी होती है। सुदी २ से ८ दिन में कपास, सूत में मंदापन हो। सुदी ८ से १० दिन में वायु वृष्टि की अधिकता बनी रह सकती है। सुदी ६ से १५ दिन में भांग अफीम पर तेजी होती है। चांदी, सोना, रुई के भाव घट-बढ़ सकते हैं। सुदी १० से ८ दिन में राजनैतिक परिवर्तन हो सकता है। सुदी ९ से १५ जिन में मूंग, मोंठ, चावल, मसूर, नमक, सब्जी, लाख, चपड़ा, नील, तिल, रेण्डी, मजीठ, माजू फल, केशर, फूल, कपूर, चन्दन, देवदारु, लौंग, नारियल तेज हों। व्यापारियों को स्वर्ण अवसर अच्छा लाभ उठा सकते हैं।

श्रावण मास-बदी ४ से १० दिन में तेल, उड़द, अरहर तेज हो। मूसलाधार वर्षा से बाढ़ की संभावना बनी रह सकती है। बदी ९ से १० दिन में रुई में विशेष मंदापन हो। बदी ११ से १५ दिन में प्रजा में सुख की लहर दौड़े। चांदी में अच्छी तेजी होती है। बदी १० से १५ दिन में चांदी, लोहा, मशीनरी सामान, विद्युत सामग्री, गेहूँ, तीसी, सरसों, लाल मिर्च में तेजी होती है। अनावृष्टि भारत के पश्चिमी भाग में भूकम्प की संभावना है। बदी १० से १५ दिन में तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, ज्वार, बाजरा, गुग्गल, सुपारी, सोंठ, हींग, हल्दी, लाख सन, पाट, वारदाना तेज हों। बदी १४ से ४० दिन में अमचूर, खटाई, नींबू, देवदारु, सूत, कपड़ा, लोहा, मशीनरी समान तेज हो। युद्ध की संभावना है। गोदावरी तट के निवासियों को प्राकृतिक प्रकोप से जन धन हानि का सामना करना पड़े। सुदी ५ से १० दिन में सोना, चांदी, रुई, चावल में मंदापन आवेगा। घी के भावों में घटबढ़ हो सकती है। सुदी ५ से २० दिन में रुई धान्य तेज हो। वृष्टि थम सकती है। सुदी ६ से १० दिन में लाख, चपड़ा, कपूर, गुड़, पारा, हींग, हिंगुल पर मंदापन आवे। सुदी ११ से अन्त में मंदापन। सुदी ११ से १५ दिन में गेहूँ, चना, चांदी, तीसी, तिल, तेल, गुड़, नील में तेजी हो। सुदी १३ से १५ दिन में चांदी घटाबढ़ी के साथ तेजी हो। रुई, सोना में भी तेजी होगी। मासान्त में रुई, कपास में घटाबढ़ी हो सकती है। अत: व्यापारी सावधानी रखें।

भाद्रपद मास-बदी १ से १० दिन में तूवर, चावल, मोंठ, चना, कराई में मंदापन होता है। बिच्छुओं से भय प्राप्त होगा। वर्षा का अभाव भी रहता है। बदी ८ से १२ दिन में रस, चांदी, सोना, रुई, शेयर, ईख, गुड़, खाण्ड तेज हो। धान्य में मंदापन होता है। बदी ९ से २० दिन में गेहूँ, रक्त पदार्थ तेज हों। यहां कुछ वृष्टि तथा वायु संचार का योग बन रहा है। बदी १० से ४० दिन में अमचूर, खटाई, देवदारु, सूत, कपड़ा तेज हो। बदी ३० से १६ दिन में सुवर्ण, लाल रंग, धान्य तेज होते हैं। पूर्वी राजस्थान में वृष्टि की कमी होती है। चौपाये अधिक मरते हैं। उसी दिन चांदी, रुई, सोना घटकर मंदा होता है। सुदी ५ से २० दिन में रुई मंदी, बंगला देश, पाक, पंजाब में विद्रोह होता है। सुदी ९ से १५ दिन में सोना, चांदी, गहने, बर्तन, कपड़ा, चावल, गेहूँ, सरसों, तिल, ज्वार, बाजरा, घी में अच्छी तेजी होती है। सुदी १० से १८ दिन सोना, चांदी, शेयर तेज हों। रुई घट बढ़कर तेज होती है। सुदी १४ से १० दिन में चाँदी पर अवश्य ही तेजी आती है। रुई भी तेज होती है। सोना, ताम्बा में साधारण तेजी, अत: व्यापारी अधिक रकम नहीं फंसावें। सावधानी बरतें।

आश्विन मास-बदी १ से महाराष्ट्र, बंगाल में कहीं-कहीं वर्षा भी हो सकती है। बदी १० से १५ दिन में सोना, चांदी, लोहा, तेल, घी, सरसों, रेवड़ी, सुपारी, मूंज, बांस, नील, अफीम, रेशम, कपास में तेजी हो। चौपाओं पर तेजी हो। बदी ११ से १ मास में मजीठ, नारियल, तिल, तेल, घी, कपास, रुई पर तेजी होगी। अमावस्या से लम्बी लाइन के लिये चांदी, सोना, शेयर तेज होते हैं। सुदी २ से चांदी, धातु भाव मंदा हो। सुदी ६ से ७ दिन में चांदी, सोना में साधारण तेजी होती है। सुदी ४ से १४ दिन में गेहूं, ज्वार, बाजरा, गुड़, खांड, पाट, वारदाने, हल्दी पर तेजी होती है। रुई में घट बढ़कर तेजी हो जाया करती है। सुदी ६ से ७ दिन में उड़द, मूंग, मोंठ, पर तेजी होती है। सुदी ४ से १४ दिन में गेहूँ, ज्वार, बाजरा, गुड़, खांड, पाट, बारदाना, हल्दी, हरड़, हींग, क्षार, कथीर, कत्था तेज हो। सुदी १० से ५ दिन में गुजरात, बम्बई, महाराष्ट्र में वर्षा। सुदी १४ से १० दिन में गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, धातु, जौ पर तेजी आती है। धान्य में मंदापन। इसके बाद तेजी का रुख आकस्मिक बनता है। लाभ उठायें।

कार्तिक मास-बदी २ से शीत वायु संचार होगा। साधारण वृष्टि, धान्य तेज। बदी ५ से १० दिन में गणिका, द्विज, शिल्पियों को पीड़ा हो सकती है। बदी ६ से १५ दिन में धान्य, गेहूँ, चना, कपास, अरहर, सूत, केशर, लाख, चपड़ा तेज होता है। बदी ६ से दक्षिण भारत में वर्षा धान्य कम हो। बदी १० से १ मास में सुवर्ण, धान्य तेज हो। प्राकृतिक प्रकोप भी संभव है। युद्ध की भी पूर्व पश्चिम में आशंका है। सुदी ३ से ४ दिन में सर्वधान्य तेज, प्रजा सुखी, धातुओं की वस्तु तेज, सुदी ५ से १० दिन में सोना, चांदी, पारा, रांगा, शीशा, लोहा, गुड़, खाण्ड, तेल, हींग, हल्दी, लाख, गुग्गल, कपूर, रुई, सन, पाट, वारदाने में घोर तेजी होती है। सुदी ९ से १४ दिन में चांदी, रुई, कपास में मंदापन। सोना घट-बढ़ में चल सकता है। कपास, धान, कपड़ा, रेशम में मंदापन, सुदी १० से बाजार मंदा चल सकता है। सुदी १५ से १० दिन में चांदी मंदी। सुदी १५ से ११ दिन में खाण्ड, चावल, मटर में मंदापन होगा। संग्रह करने वाले लाभ उठा सकते हैं। अचूक चांस है।

मार्गशीर्ष-बदी ४ से १० दिन में चांदी, चावल, मटर पर तेजी। मूषक, कीटों की वृद्धि होती है। बदी ४ से १५ दिन में चांदी, चावल, गुड़, खट्टे पदार्थ, सूत, अफीम, भांग पर अच्छी तेजी होती है। पूर्व दक्षिण दिशा में उपद्रव होता है। बदी ५ से २ मास में वृष्टि में कमी। बदी ११ से ईख, चावल, घी, रसकस तेज हो। सोना, चांदी, सरसों, तेल, घी, हींग में मंदापन होता है। बदी १३ से १ मास में ऊनी वस्त्र, चांदी, ताम्बा, द्रव्य, अफीम, कन्द पर भीषण तेजी होती है। धान्य में कुछ मंदापन हो। बदी १३ से एक ही दिन में चांदी, सोना मंदा हो। गेहूँ, चना तेज हो। सुदी ५ से १५ दिन में सर्व धान्य तेज। मास में नेत्र रोग, दुर्भिक्ष भय, रुई, अफीम मंदा हो। सुदी १० से ११ दिन में तिल, तेल, वस्त्र, सुपारी, कपास, सूत, सरसों, रुई, चांदी, तीसी तेज। सुदी १५ से १० दिन में सोना, चांदी, धान्य, चावल, सरसों, वस्त्र तेज, अफीम तेज होती है।

पौष मास-बदी ४ से १४ दिन में चांदी, सोना, रुई, घट बढ़कर तेज होती है। बदी १२ से १० दिन में तृण, घास, भूसा, चौपाओं पर घोर तेजी होती है। अमावस से १ मास में तिल, तेल, कपास, अनाज, रुई में पुन: तेजी आती है। उसी दिन से १० दिन में धान्य, रुई, कपास, ऊन में घोर तेजी होती है। राजस्थान, मालवा में उपद्रव हो सकता है। सुदी ६ से सर्व अन्न, रस तेज हों। सोना, चांदी, रुई में अच्छी तेजी होती है। राजस्थान में कहीं-कहीं खण्डवृष्टि भी हो सकती है। सुदी ६ से १० दिन में पाक की ओर से हरकतें हो सकती हैं। सुदी ८ से १५ दिन में चांदी, तृण, काष्ठ, पशुओं में तेजी हो। सुदी २ से १५ दिन में तिल, तैल, गुड़, गुग्गल, हल्दी, चपड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चांदी, अफीम तेज हो। व्यापारी इस मास में अच्छा लाभ उठा सकते हैं। यह एक अचूक चांस है। भूल न करें।

माघ मास-बदी ६ से १ मास में गेहूँ, चना, मटर, अरहर पर अच्छी तेजी होती है। तेल, गुड़, मादक द्रव्यों में मंदापन होता है। कहीं-कहीं खण्डवृष्टि भी होती है। बदी २ से १५ दिन में पशु, पक्षी, बालकों को पीड़ा हो सकती है। धान्य में कुछ मंदापन, बदी ९ से १५ दिन में उड़द, मूंग, चावल, रेशम, गुड़, कपास, पीपरामूल, लाख, चपड़ा, मूंज, बांस, सरसों तेज। बदी १० से २० दिन में वृष्टि की पूर्ण संभावना है। बदी ११ से १ मास में घी, तेल, धान्य, रुई, लाल वस्त्र तेज हो। गुड़ की प्रचुर मात्रा में खपत होगी। वायु की तीव्रता बनी रहे। सुदी ५ से १४ दिन में गेहूँ, जौ, चावल, चांदी, सर्वधातु, तीसी तेज। सुदी १३ से चांदी तेज होगी। रुई घटा बढ़ी के साथ तेज हो। धान्य, घी में कुछ मंदापन होगा। सुदी १५ से १ मास में तेल, सरसों, हींग, लाल मिर्च, रुई, चांदी में तेजी हो। दक्षिण दिशा में युद्ध की संभावना है। अकाल की स्थिति स्वत: ही बन सकती है।

फाल्गुन मास-बदी ३ से १४ दिन में धान्य, अन्न पर घोर तेजी हो। कराई, भूसा, मूंगा, मोती पर तेजी। बदी ५ से २० दिन में रुई तेज हो फिर मंदापन। धान्य मंदा। बदी ६ से १० दिन में मूंग, मसूर, चना, नील, अरहर तेज। बदी ९ से १ मास में धान्य में मंदा। नमक, तेल, रुई में तेजी। अफीम, भांग पर मंदापन। बदी १३ से अफीम पर जोरदार तेजी हो सकती है। सुदी ५ से १५ दिन में चांदी, सरसों, सन, कपड़ा, पाट, वारदाने, नील, जायफल, हींग, दाख, सोंठ तेज हो। सुदी ६ से १० दिन में कृषकों को पीड़ा, प्राकृतिक प्रकोप संभव हो। धान्य में घोर तेजी होती है। विश्व में आतंकवाद का भय व्याप्त रहे। आतंकवाद सफाए की योजना बन सकती है। जिसमें पूरे विश्व के देश पूर्ण सहयोग देने की सोचें।

चैत्र कृष्ण पक्ष-बदी १ से ११ दिन में रुई, कपास, तीसी, मेथी, लौंग, काली मिर्च, तेजपात पर तेजी होती है। अफीम, भांग, गांजा पर मंदापन होता है। बदी ५ से १० दिन में सोना, चांदी, गेहूँ, चना, उड़द, घी, रुई, रेशम, गुग्गल, पीपरामूल तेज हो। बदी ९ से १० दिन में किसी देश के छत्रभंग की पूर्ण संभावना है। रुई, सूत, कपड़ा, तिल, घी, गेहूँ, राई, रेण्डी, जौ, चावल, मसूर, सोंठ, चिरोंजी तेज हो, बदी १० से १ मास में धान्य, नमक, तिल, तेल, किराना, रसकस पर तेजी होगी। अत: व्यापारी अच्छा लाभ उठायें। भारतवर्ष के प्रसिद्ध विद्वान पं. शंकरलाल गौड़ 'शंभु कवि' से चमत्कारी सत्य पर आधारित हस्त लिखित तेजी मंदी रिपोर्ट मंगायें।

फीस निम्न प्रकार है। हाजिर वार्षिक ४०००/-,षट्मासिक २०००/-, त्रैमासिक १०००/-,मासिक ५००/-,डाक व्यय १००/- पृथक भेजें। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड भेजें। वायदा वार्षिक २०००/-,षट् मासिक १०००/-, त्रैमासिक ५००/-,मासिक २५१/-,डाक व्यय १००/-पृथक। पता-पं. शंकरलाल गौड़, 'शंभू कवि' संस्थापक-अध्यक्ष-श्री शंकर साहित्य सदन, दुरा, फतेहपुर सीकरी, (आगरा) उ.प्र. पिन-२८३११०. फोन-०५६१३ २८६७४२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

नक्षत्र की है। बाजार साधारण मंदी से प्रारंभ होकर तेजी पर बंद होगा।

में रुई मंदी, बंगला देश, पाक, पंजाब में विद्रोह होता है। सुदी ९ से १५ दिन में सोना, चांदी, गहने, बर्तन, कपड़ा, चावल, गेहूं, सरसों, तिल, ... | है। बदी १२ से १० दिन में तृण, घास, भूसा, चौपाओं पर घोर तेजी होती है। | गौड़, 'शंभू कवि' संस्थापक-अध्यक्ष-श्री शंकर साहित्य सदन, दुरी, फतहपुर ... प्र. पिन-२८३११०, फोन-०५६१३ २८६७८२

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

तेल व्यापार सन् २००६ ई.

लेखक-प्रवीन कुमार जैन, ज्योतिष भवन, सी-३६७, कैलाश विहार योजना सं.१, कल्याणपुर, कानपुर-२०८०१७

तेल व्यापार में सरसों, रैपसीड आयल, तिल, अलसी, अरण्डी, सोयाबीन, मूंगफली, तारया, महुआ, नारियल तेल, राईस ब्रान अर्थात् चावल की भूसी के तेल, बिनौले के तेल का व्यापार मुख्य रूप से हुआ करता है। तिलहनों का अधिष्ठाता ग्रह मंगल होने के कारण बाजार पर मंगल तथा इसकी वृश्चिक राशि का सर्वाधिक तीव्र प्रभाव होता है। ग्रह गोचर तथा वर्ष की लग्न कुण्डली के अनुसार वर्ष २००६ का प्रारंभ बाजार की तेजी से होगा। पूरे वर्ष में वित्तीय प्रबन्ध नीतियों, उदारीकरण, विदेशी निवेश के कारण बाजार में तेजी का वातावरण रहेगा। वर्ष २००६ के प्रथम दिन तथा प्रथम अंग्रेजी मास की प्रथम तारीख १ जनवरी २००६ का शुभारंभ भारतीय पौष मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से हुआ है। उत्तर भारतीय पंचांग परम्परा के अनुसार कृष्ण पक्ष में पंचमी की वृद्धि तथा शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा का हानि हुई है। मास में ५ शुक्र तथा ५ शनिवार हैं। अत: बाजार का रुख एक तरफा रहने की संभावना अधिक है। यद्यपि मास में पांच शनिवारों के प्रभाव से तेलों के भावों का रुख तेजी की ओर रहेगा। १ जनवरी २००६ रविवारी उ.षा. नक्षत्र का मकर राशि में है। सरसों में तेजी आयेगी। ता. १ से ११ जनवरी तक मूंगफली तेल में तेजी रहेगी। २ जनवरी को वर्ष २००६ का प्रथम दिन का बाजार तेजी के साथ खुलेगा। ता. ४ बुध पूर्व में अस्त होंगे। अलसी में तेजी होगी। गुरु का विशाखा में गोचर प्रजा के लिए सुखकारी होगा। १० नवरी उ.षा. नक्षत्र का सूर्य बाजार में अभूतपूर्व तेजी देगा। ता. १२ शुक्र पश्चिम में अस्त होकर घी में प्रथम तेजी तथा बाद में मंदी देगा। १३ जनवरी शुक्र धनु राशि में वक्री से तिल-तेल-घी-सरसों के बाजार में तेजी दर्ज होगी। ता. १४ में पौष मास की मकर संक्रांति ४५ मु. शनिवारी बैठी हुई है। तेल, तिल, सरसों, लाही, अलसी, अरण्डी, मूंगफली में मास के आखिर में तेजी आकर मंदी होगी। मकर संक्रांति के समय कर्क का चन्द्रमा अलसी, अरण्डी, सरसों में तेजी करेगा तथा सरसों, तिल, तेल में आगे चलकर लाभ देगा।

१५ जनवरी २००६ रविवार से माघ मास का प्रारंभ हो रहा है। मास में पांच रविवार तथा सोमवार हैं। कृष्ण पक्ष में सप्तमी तिथि की वृद्धि होकर द्वादशी की हानि हुई है। शुक्ल पक्ष में चतुर्थी का क्षय तथा चतुर्दशी की वृद्धि हुई है। अमावस्या रविवार की तथा पूर्णिमा सोमवार की है। चन्द्रदर्शन सोमवार का ३० मुहूर्ति मकर राशि श्रवण नक्षत्र का है। तेल बाजार तथा तेलों में मंदा करेगा। कुंभ संक्रांति माघ शुक्ल चतुर्दशी रविवारी १५ मुहूर्ति बैठी हुई है। रविवारी संक्रांति तेल, घी, तिल संग्रह करने वालों के लिये लाभदायक सिद्ध होगी। मास में बुध तथा मंगल का राशि परिवर्तन हुआ है।

ता. १७ बुध उ.षा. में आकर बाजार में मंदे का वातावरण बनायेगा। ता. १८ शुक्र का पूर्व दिशा में चतुर्थी तिथि में उदय सुखकारी होगा। ता. १९ मकर का बुध घी के भावों में गिरावट देगा। २१ जनवरी सोयाबीन, तिल में तेजी आयेगी। ता. २३ श्रवण नक्षत्र का सूर्य सरसों में तेजी देगा। ता. २५ बुध श्रवण में घी में मंदी कारक है। ता. २८ मंगल कृतिका में आकर तिल तेल, सरसों, अलसी में तेजी देगा। ३० जनवरी में सोमवार श्रवण नक्षत्र का है। बाजार में आई मंदी चन्द्रमा के कुंभ राशि में प्रवेश के साथ तिल, तेल, सरसों, अलसी में तेजी बनायेगी। मिले जुले प्रभाव से बाजार में साधारण तेजी रहेगी। व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि होगी। व्यापार का प्रमाण अधिक होगा। ता. ३१ बुध धनिष्ठा में गोचर करेगा।

फरवरी मास-फाल्गुन मास का प्रारंभ मंगलवार से हो रहा है। मास में ५ मंगलवार हैं। देश में बिमारियों का प्रकोप होगा। अग्निकांडों में वृद्धि होगी। पूर्णिमा मंगल तथा अमावस्या सोमवारी है। मास में बुध-सूर्य-शुक्र का राशि परिवर्तन हुआ है। चन्द्र दर्शन शतभिषा का है। सूर्य की मीन संक्रांति ३० मुहूर्ति बैठी हुई मंगलवार की है। घी, तेल में तेजी आयेगी। माघ मास में खप्पर योग बना है। युद्ध, विग्रह अथवा झगड़ों की स्थिति के कारण लड़ाई-झगड़ों का वातावरण बनेगा।

२ फरवरी में बाजार में तेजी रहेगी। ता. ४ शुक्र धनु राशि में मार्गी होकर घी में मंदी कारक होंगे। ता. ३ शनि पुष्य नक्षत्र में वक्री होंगे। ता. ५ बुध का कुंभ राशि में प्रवेश घी, तेल, अलसी, सरसों में घटाबढ़ी करेगा। मंगल का वृष में प्रवेश सरसों, तिल, तेल, तोरया, अलसी में तेजी देगा। ता. ६ सूर्य का धनिष्ठा में प्रवेश अलसी, तिलहनों में तेजी देगा। ८ फरवरी में तेजी का रुख बना रहेगा। ता. ९ फरवरी-शतभिषा का बुध बाजार में तेजी कारक है। ता. ११ कुंभ संक्रांति रविवारी १५ मुहूर्ति बैठी हुई है। तेल तथा तिलहनों, तिल, सरसों, लाही, अलसी में तेजी आकर मंदी होगी। घी, तेल, मूंगफली, अरण्डी में तेजी रहेगी। ता. १२ बुध का पश्चिम में उदय घी, तेल, अरण्डी, सरसों, अलसी में घटाबढ़ी करेगा। ता. १६ बुध पूर्वा भा. में तेजी आयेगी। व्यापारिक टर्न ओवर में कमी रहेगी। ता. १९ शुक्र उषा में अलसी, सरसों, अरण्डी में घटबढ़ के बाद तेजी आयेगी। ता. २३ फरवरी बाजार में मिले-जुले रुख के मध्य तेजी रहेगी। ता. २४ बुध मीन राशि में बिनौले में तेजी होगी। ता. २५ शुक्र मकर राशि में-घी में तेजी रहेगी। मंगल रोहिणी में-तेल एवं सरसों में तेजी रहेगी। ता. २८ फरवरी में बाजार में सुधार होकर तेजी का रुख रहेगा।

मार्च-ता. १५ मार्च बुधवार से चैत्र मास का प्रारंभ होगा। मास में पांच बुध तथा गुरुवार हैं। शुक्र-मंगल तथा बुध का राशि परिवर्तन हुआ है। कृष्ण पक्ष में १ तिथि की वृद्धि ११ की हानि हुई है। सूर्य की मेष संक्रांति गुरुवारी बैठी हुई ३० मुहूर्ति है। चन्द्रदर्शन रेवती नक्षत्र ३० मार्च गुरुवार का है। सरसों में प्रारंभिक मंदी के बाद तेजी रहेगी। घी, अलसी तथा अन्य तेलों में तेजी आयेगी। ता. १ मंगलवारी मीन राशि धनिष्ठा नक्षत्र की है। बाजार साधारण मंदी से प्रारंभ होकर तेजी पर बंद होगा। ता. २ बुध मीन राशि में वक्री-बिनौले में तेजी आयेगी। घी में घटाबढ़ी होगी। ता. ४ बुध पश्चिम में अस्त-सरसों, अलसी, तेल तिल, अरण्डी, बिनौले में तेजी। ता. ५ गुरु वक्री-घी में मंदी करेगा। ता. ८ मार्च वक्री बुध का कुंभ में प्रवेश-घी, तेल में घटबढ़ से मंदा। अलसी, सरसों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ता. ९ शुक्र श्रवण में-कोकोनट, तेल, अलसी, अरण्डी में तेजी। ता. १४ सूर्य मीन राशि में-तेल, तिल, नारियल में तेजी होकर मंदा आयेगा। ता. १५ मार्च बाजार में गिरावट रहेगी। ता. १७ सूर्य उभा में-घी, सरसों, तिल तेल आदि में तेजी। २१ मार्च में बढ़ती तेजी पर अंकुश रहेगा। बाजार में चमक आयेगी। २२ मार्च में गिरावट आयेगी। ता. २७ बुध मार्गी कुंभ में-सरसों, तिल तेल में मंदे का रुख बनेगा। ता. २९ सूर्य ग्रहण-बुधवारी सूर्य ग्रहण मूंगफली, अरण्डी, सरसों, तिल, अलसी में तेज करेगा। ता. ३० मार्च में चन्द्रदर्शन गुरुवार रेवती नक्षत्र मीन राशि का है। तेल, तिल, सरसों में कुछ तेजी रहेगी। परन्तु रेवती नक्षत्र के मंदी कारक होने से अत: बाजार में घटबढ़ का माहौल रहेगा। ३१ मार्च रेवती का सूर्य तथा वक्री बुध बाजार में तेजी बनायेगा। तेलों, सरसों, सोयाबीन में तेजी आयेगी।

अप्रैल मास-१४ अप्रैल शुक्रवार से वैशाख मास का प्रारंभ होगा। कृष्ण पक्ष में चतुर्दशी का क्षय होकर शुक्ल पक्ष में एकादशी की वृद्धि हुई है। यह योग शुभ फलदायक है। मास के पांच शुक्रवार शुभ फलदायक हैं। अप्रैल मास का बाजार तेजी से प्रारंभ होगा। ता. ३ मंगल मिथुन में-अलसी, सरसों, गोला, तिल, तेल में तेजी बनेगी। ता. ४ शुक्र शतभिषा में-सरसों, अलसी, अरण्डी में तेजी आयेगी। ता. ५ शनि मार्गी-सरसों, अलसी, तिल, तेल में १०-१५ दिनों तक मंदी का योग है। ता. १० अप्रैल-भावों में वृद्धि होगी। शुक्र-शनि तथा राहु का अंशात्मक साम्य तेजी में सहायक होगा। ता. ११ बुध मीन राशि में-बिनौला तेज, घी में घटाबढ़ी रहेगी। ता. १४ सूर्य का मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश, बुध उ.भा. में तथा मंगल आर्द्रा में आयेंगे-तिल, सरसों, अरण्डी, अलसी तेल में तेजी रहेगी। सरसों तेल में आगे चलकर लाभ होगा। ता. १९ शुक्र पू.भा. में-२० अप्रैल में साधारण मंदी रहेगी। ता. २४ बुध रेवती में-घी, तिल, सरसों, अरण्डी, अलसी तेल में मंदी रहेगी। ता. २५ अप्रैल में बाजार तेजी के साथ खुलेगा परन्तु बाजार की तेजी में परिवर्तन के साथ ही घटाबढ़ी देखने में आयेगी। ता. २७ सूर्य भरणी में-घी, तिल, सरसों, अरण्डी, अलसी तेल में तेजी। ता. २९ शुक्र मीन राशि में-बिनौला, तिल तेल, सरसों, अरण्डी, अलसी में मंदी परन्तु इस दिन वृष राशि कृतिका नक्षत्र शनिवार का चन्द्रदर्शन-घी, तिल, सरसों, अरण्डी, अलसी तेल में तेजी करेगा। अत: समग्र रूप से बाजार में मिलाजुला प्रभाव आयेगा।

मई मास-१४ मई रविवार से ज्येष्ठ मास का आरंभ हुआ है। मास के पांच रविवार अशुभ तथा नेष्ट फलकारक हैं। भय का वातावरण सृजित करने वाले हैं। कृष्ण पक्ष में षष्ठी तिथि की हानि हुई है। ता. १४ मई में शुक्र का पूर्व दिशा में उदय हुआ है। वृष संक्रांति बैठी हुई १५ मुहूर्ति है। चन्द्रदर्शन ता. २८ मई रोहिणी नक्षत्र का है। ता. १ मई का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रारंभ तेजी से होगा। तेलों, तिलहनों में तेजी आयेगी। ता. २ बुध मेष अश्विन में - घी, अलसी में तेजी। तिल, तेल, सरसों में मंदी बनेगी। ता. ५ वक्री गुरु स्वाती में - बाजार मंदी से शुरू होगा। चलती लाईन में परिवर्तन आयेगा। तेलों में गिरावट आयेगी। ता. ६ बैशाख शुक्ला नवमी में पूर्व दिशा में अस्त बुध तेलों में मंदी करेगा। ता. ७ मंगल पुन. में - तिल, तेल, सरसों में तेजी आयेगी। ता. ९ बुध भरणी में - ता. १० मई तेल, तिलहनों के भावों में सामान्य वृद्धि होते हुए भी बाजार में मंदी का रुख रहेगा। गुरु-मंगल का अंशात्मक साम्य बाजार में भावों में वृद्धि करेगा। ता. ११ सूर्य कृतिका में - राई, सरसों में तेजी आयेगी। ता. १२ शुक्र रेवती में - भावों में गिरावट होगी। ता. १४ मई सूर्य की वृष संक्रांति रविवारी बैठी हुई १५ मुहूर्ति है। गोला, अलसी, तेल तिल, सरसों, अरण्डी में तेजी रहेगी। ता. १७ बुध वृष में - तेल तिल में तेजी आयेगी। ता. १९ मई में बाजार में तेजी का वातावरण बनेगा। तेल, तिलहनों में तेजी रहेगी। ता. २१ बुध रोहिणी में - तेल, सरसों, राई में तेजी के बाद मंदी आयेगी। ता. २४ शुक्र अश्विन नक्षत्र मेष राशि में - तेल, तिल, अलसी, सरसों में घटाबढ़ी के बाद अलसी, सरसों में मंदा होगा। ता. २५ सूर्य रोहिणी में - तेल, अलसी, सरसों, राई में तेजी। ता. २६ मई का बाजार तेजी का रहेगा। ता. २७ बुध मृग. में, मंगल कर्क राशि में - तेल, तिल, अलसी, सरसों, बिनौला में घटाबढ़ी के बाद मंदा आयेगा। कर्क का मंगल अरण्डी तेल, अलसी, सरसों में तेजी की धारणा बनायेगा। ता. २८ में रोहिणी नक्षत्र मिथुन राशि का रविवारी चन्द्रदर्शन सरसों में तेजी करेगा। ता. २९ बुध पश्चिम में उदय-घी, तेल, अरण्डी, सरसों, अलसी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आयेगी। सरसों में भारी तेजी बन सकती है। ता. ३० मई पुष्य नक्षत्र का मंगल बाजार के भावों में मिलाजुला रुख से घटाबढ़ी होगी।

जून मास-ता. १२ सोमवार से आषाढ़ मास का प्रारंभ हुआ है। मास में पांच सोमवार तथा मंगलवार हैं। सूर्य की मिथुन संक्रांति १५ जून की ३० मुहूर्ति बैठी हुई है। शुक्र का उदय पूर्व दिशा में हुआ है। चन्द्र दर्शन ता. २७ जून में पुनर्वसु नक्षत्र का है। शुक्ल पक्ष में सप्तमी तिथि की वृद्धि तथा कृष्ण पक्ष में नवमी का क्षय हुआ है।

जून मास में ग्रहों की स्थिति के अनुसार बाजार में सामान्य रुख बना रहेगा। मास में आयल कम्पनीज के कामकाज तथा तेल, तिलहनों के व्यापार तथा भावों में वृद्धि होगी। परन्तु सामान्य ट्रेन्ड मंदी का ही रहेगा। ता. ४ शुक्र भरणी में-तेल, तिल, सरसों में घटाबढ़ी होगी। ता. ६ जून-टर्न ओवर में वृद्धि के बावजूद मिले जुले रुख के साथ गिरावट दर्ज होगी। ता. ८ सूर्य मृग. में-कोकोनट में तेजी आयेगी। ता. ९ जून भावों में साधारण मंदी रहेगी। ता. १५ सूर्य मिथुन में-तिल, तेल, सरसों में तेजी का जोर होने से भावों में वृद्धि होकर बाजार में सुधार होगा। ता. १६ शुक्र कृतिका में-सरसों, तिल तेल में मंदा होगा। ता. १८ शुक्र वृष में तथा ता. १९ में बुध का प्रवेश कर्क राशि में होगा। बाजार की गतिविधियों में न्यूनता रहेगी। टर्नओवर कम होगा। तेल, तिलहनों के भावों में वृद्धि होगी। ता. २२ सूर्य आर्द्रा में-तिल तेल, सरसों, अरण्डी में तेजी देगा। ता. २७ रोहिणी का शुक्र तथा पुष्य नक्षत्र कर्क राशि का मंगलवारी चन्द्र दर्शन बाजार में घटाबढ़ी करेगा। ता. २६ जून में भावों में चमक बनी रहेगी। ता. २९ जून बाजार में तेजी का वातावरण बनेगा।

जुलाई मास-ता. ११ जुलाई मंगलवार से श्रावण मास का प्रारंभ हुआ है। मास में पांच मंगल तथा पांच बुधवार हैं। कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा का क्षय हुआ है। कर्क संक्रांति ४५ मुहूर्ति बैठी हुई हैं। चन्द्र दर्शन ता. २६ जुलाई बुधवारी आश्लेषा नक्षत्र का है।

ता. २ बुध वक्री-सरसों, अलसी, तेल तिल, अरण्डी में तेजी देगा। ता. ४ गुरु मार्गी तथा शनि आश्लेषा में होंगे। अत: ता. ५ जुलाई में मंदी का रूख रहेगा। बाजार की गतिविधियों में आकर विशेष रूप से गिरावट आयेगी। ता. ६ सूर्य पुन. में-अलसी, बिनौले में तेजी होगी। ता. १२ मंगल मघा नक्षत्र सिंह राशि में-तिल तेल, सरसों, मूंगफली, अलसी में तेजी से बाजार में तेजी आयेगी। ता. १४ शुक्र मिथुन में-सरसों, मूंगफली, अरण्डी, तिल तेल में मंदा आयेगा। ता. १६ जुलाई सूर्य की कर्क संक्रांति ४५ मुहूर्ति बैठी हुई रविवारी है। तिल तेल, नारियल, सरसों, अलसी में मंदी आयेगी।

ता. १९ शुक्र का आर्द्रा में प्रवेश बाजार में गिरावट देगा। ता. २० सूर्य पुष्य में-तिल तेल, नारियल में तेजी देगा। ता. २५ मिथुन में बुध वक्री-तिल तेल, अरण्डी, सरसों, अलसी में तेजी देगा। कर्क में अस्त शनि-घी, तिलहनों में तेजी बनायेगा। ता. २६ का आश्लेषा नक्षत्र सिंह राशि का बुधवारी चन्द्र दर्शन घी में तेजी करेगा। तेल बाजार में गिरावट आयेगी। ता. २७ पूर्व दिशा में उदित बुध-तिल तेल, अरण्डी, सरसों, अलसी में तेजी देगा।

अगस्त मास-ता. १० अगस्त शुक्रवार से भाद्रपद मास का प्रारंभ हुआ है। मास में पांच गुरुवार हैं। सिंह संक्राति बुधवारी सूती ४५ मुहूर्ति है। चन्द्र दर्शन शुक्रवारी पू.फा. नक्षत्र का है। कृष्ण पक्ष में तृतीया का क्षय हुआ है। शुक्ल पक्ष में तृतीया की वृद्धि होकर चतुर्दशी का क्षय हुआ है। शुक्र पूर्व दिशा में उदित हुए हैं।

ता. १ अगस्त में बाजार तेजी से प्रारंभ होगा। घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। ता. ३ सूर्य आश्लेषा तथा मंगल पू.फा. में-सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल तेल, अरण्डी, बिनौले में तेजी आयेगी। ता. ५ बुध कर्क में-सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल तेल में तेजी होगी। ता. ७ शुक्र कर्क में-घी, तेल, तिल, गोला, नारियल में तेजी बनेगी। ता. ८ अगस्त सामान्य रूप से भावों में वृद्धि का दिन है। ता. ९ अगस्त शुक्ल की बुधवारी पूर्णिमा तथा पुष्य का बुध तेल तिल, सरसों, अलसी, अरण्डी में तेजी देगा। ता. १६ सूर्य सिंह राशि मघा नक्षत्र में-सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल तेल, अरण्डी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ता. १८ अगस्त बाजार की तेजी में वृद्धि होगी।

ता. १९ अगस्त २००५ के दिन श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की शुक्रवारी पूर्णिमा से बाजार में तेजी के पश्चात् सामान्य रुख रहेगा। पूर्व दिशा का बुधास्त अलसी में तेजी देगा। ता. २१ आश्लेषा का शुक्र बाजार में तेजी का वातावरण बनायेगा। ता. २४ बुध सिंह राशि मघा नक्षत्र में-सरसों में मंदा होगा। ता. २५ में शनि का उदय सरसों, मूंगफली, अलसी, अरण्डी, बिनौला, तिल तेल में मंदी करेगा। सिंह राशि पू.फा. का शुक्रवारी चन्द्र दर्शन सरसों, तिल तेल में घटाबढ़ी करेगा। ता. २८ अगस्त बाजार का रुख सामान्य रहेगा। भावों में मिलाजुला रुख रहेगा। व्यापारिक गतिविधियों में न्यूनता रहेगी। ता. ३० सूर्य पू.फा. में-घी, अरण्डी, सरसों, अलसी, तिल तेल में तेजी के बाद गिरावट रहेगी। ता. ३१ अगस्त बाजार में सुधार होकर तेजी का रुख बनेगा।

सितम्बर मास- ता. ८ सितम्बर शुक्रवार से आश्विन मास का आरंभ हुआ है। मास में पांच शुक्र तथा पांच शनि हैं। कृष्ण पक्ष में तृतीया घटी है तथा एकादशी की वृद्धि हुई है। चन्द्र दर्शन चित्रा नक्षत्र का रविवारी है। कन्या संक्रांति बैठी हुई ४५ मुहूर्ति शनिवारी है।

ता. २ शुक्र सिंह राशि मघा नक्षत्र में-सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल तेल में तेजी बनेगी। ता. ४ सितम्बर में बाजार का रुख तेजी की ओर रहेगा। ता. ७ का चन्द्र ग्रहण है। इस दिन बुध का प्रवेश उ.फा. में होगा। बाजार में सामान्य रूप से गिरावट का रुख रहेगा। मूंगफली, अरण्डी, सरसों, अलसी में मंदी बनेगी। ता. १२ शुक्र पू.फा. में-बाजार गिरावट से खुलेगा। तथा गिरावट का रुख दिन भर बना रहेगा। ता. १३ सूर्य उ.फा. में, मंगल हस्त में-घी, सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल, तेल में तेजी बनेगी।

ता. १६ सूर्य की कन्या संक्रांति बैठी हुई ४५ मुहूर्ति शनिवारी है। बुध पश्चिम में उदय हुए हैं। बिनौले में तेजी आयेगी। अरण्डी, सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल तेल में घटाबढ़ी रहेगी। ता. १८ सितम्बर में बाजार में मंदी की धारणा बनी रहेगी। ता. २२ शुक्र उ.फा. में तथा ता. २३ बुध चित्रा में-तिल एवं तेलों के भावों में वृद्धि होगी। ता. २४ चन्द्र दर्शन रविवारी चित्रा नक्षत्र तुला का है। सरसों में तेजी कारक है। ता. २७ सूर्य हस्त में, बुध तुला में-सरसों में तेजी आयेगी। अरण्डी, मूंगफली, अलसी, तिल, तेल में मंदा बनेगा। ता. २८ सितम्बर के बाजार में मंदी रहेगी। घटाबढ़ी होने के बाद गिरावट जारी रहेगी।

अक्टूबर मास-ता. ७ अक्टूबर शनिवार से कार्तिक मास का आरंभ हुआ है। चन्द्र दर्शन मंगलवारी विशाखा नक्षत्र का है। तुला संक्रांति बैठी हुई ३० मुहूर्ति मंगलवारी है। मास में कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा का क्षय होकर चतुर्दशी की वृद्धि हुई है। शुक्ल पक्ष में द्वादशी का क्षय हुआ है। मास में पांच शनिवार तथा रविवार हैं।

ता. २ बुध स्वाती में-गांधी जयन्ती पर बाजार बंद रहेंगे। ता. ३ शुक्र हस्त में तथा ता. ४ मंगल चित्रा में-मंदी का दौर जारी रहेगा। ता. ६ शुक्र पूर्व में अस्त-घी, सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल तेल में मंदा बनेगा। ता. १० सूर्य चित्रा में-घी, सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल, तेल, बिनौला में तेजी बनेगी। ता. ११ अक्टूबर का बाजार मंदी को हवा देगा। ता. १४ शुक्र चित्रा में, मंगल तुला में-बिनौला मूंगफली में तेजी बनेगी। ता. १७ अक्टूबर सूर्य की तुला संक्रांति-बाजार में उत्साह नहीं होगा। व्यापार का स्तर सामान्य रहेगा। वास्तव में ता. १८ अक्टूबर तक मंदी का योग है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

न्यूनता रहेगी। टर्नओवर कम होगा। तेल, तिलहनों के भावों में वृद्धि ... दिशा का ... तेजी देगा। ता. २१ आश्लेषा का शुक्र बाजार ... व्यापार का स्तर सामान्य रहेगा। वास्तव में ता. १८ अक्टूबर तक मंदी का
होगी। ता. २२ सूर्य आर्द्रा में-तिल तेल, सरसों, अरण्डी में तेजी देगा। ता. में तेजी का वातावरण बनायेगा। ता. २८ बुध सिंह राशि मघा नक्षत्र में- योग है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सरसों, नारियल, अलसी, तिल, तेल में मंदी के बाद तेजी का रुख बनेगा। ता. २० अक्टूबर बाजार में मंदी का दौर बना रहेगा। ता. २१- महालक्ष्मी पूजन के कारण बाजार बंद रहेंगे। ता. २३ बुध-वृश्चिक में- चन्द्र दर्शन २४ अक्टूबर मंगलवारी विशाखा वृश्चिक का है। तेल, तिल, सरसों, सोयाबीन, राईस ब्रान आयल में तेजी बनेगी। सूर्य-शुक्र-मंगल स्वाती में-घी, सरसों, राई, मूंगफली, अलसी, तिल, तेल में तेजी बनेगी। ता. २७ बुध वक्री गुरु वृश्चिक में-घी, सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल, तेल, नारियल में तेजी बनेगी। ता. ३० घी, सरसों, मूंगफली, अलसी, तिल, तेल में तेजी रहेगी।

नवम्बर मास-६ नवम्बर सोमवार से मार्गशीर्ष मास का प्रारंभ हुआ है। शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा की हानि हुई है। वृश्चिक संक्रांति गुरुवारी बैठी हुई ३० मुहूर्ति है। शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा का क्षय हुआ है। मास में पांच सोमवार हैं।

ता. २ बुध पश्चिम दिशा में अस्त-बाजार में तेजी का रुख रहेगा। तेल, तिलहनों में तेजी आयेगी। ता. ६ नवम्बर सूर्य का प्रवेश विशाखा नक्षत्र में-भावों में सामान्य तेजी रहेगी। व्यापारिक गतिविधियों में न्यूनता होगी। ता. १० में वक्री बुध स्वाती तथा अस्त गुरु बाजार में मंदा करेंगे। तेल, तिलहनों में गिरावट का दौर प्रभावी रहेगा। ता. १३ मंगल विशाखा में-तेल, तिलहनों में घटाबढ़ी के बाद मंदी का दौर रहेगा। ता. १४ नवम्बर में बाजार का रुख मिला जुला होगा। ता. १५ शुक्र अनुराधा में-बुध का उदय पूर्व दिशा में-अलसी, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों में तेजी।

ता. १६ नवम्बर सूर्य की वृश्चिक संक्रांति गुरुवारी बैठी ३० मुहूर्ति है। ता. १८ बुध मार्गी बिनौला, अरण्डी में तेजी। ता. २१ गुरु उदय-अलसी, अरण्डी, मूंगफली, तोरया, बिनौला, तेल, तिल, सरसों में तेजी। ता. २२ नवम्बर का ज्येष्ठा नक्षत्र धनु राशि का बुधवारी चन्द्र दर्शन सरसों में घटाबढ़ी, घी में तेजी कारक है। सरसों में घटाबढ़ी होगी। ता. २३ नवम्बर में व्यापारिक गतिविधियों में कमी नजर आयेगी। गिरावट जारी रहेगी। ता. २५ शुक्र ज्येष्ठा में-सरसों, घी, तेल में मंदा होगा। ता. २८ शुक्र पश्चिम में उदित-नारियल, तेल, तिल, अलसी, सरसों में सामान्य तेजी होगी। समग्र रूप से बाजार में मिला जुला प्रभाव अधिक होगा। ता. ३० नवम्बर में मास का अंत मंदी के दौर से होगा।

दिसम्बर मास-ता. ५ दिसम्बर मंगलवार से पौष मास का आरंभ हुआ है। पूर्णिमा तथा अमावस्या बुधवारी है। मास में पांच मंगल तथा पांच बुध हैं। कृष्ण पक्ष में सप्तमी की वृद्धि हुई है। शुक्ल पक्ष में नवमी का क्षय हुआ है। मास की धनु संक्रांति शुक्रवारी १५ मुहूर्ति बैठी हुई है।

ता. १ दिसम्बर बाजार में तेजी की धारणा को बल मिलेगा। परन्तु बाजार में मंदी जारी रहेगी। टर्न ओवर सामान्य रहेगा। ता. २ सूर्य ज्येष्ठा में सरसों, अलसी, तिल, तेल, अरण्डी में तेजी आयेगी। ता. ४ बुध वृश्चिक में-घी, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी, मूंगफली में मंदा रहेगा। ता. ६ बुध अनुराधा में, शुक्र मूल नक्षत्र धनु राशि में-घी में तेजी। वक्री शनि-सरसों, तिल, तेल, अरण्डी में तेजी देगा। बाजार में टर्न ओवर बढ़ेगा। ता. १५ की धनु संक्रांति शुक्रवारी १५ मुहूर्ति बैठी हुई है। सरसों, अरण्डी, मूंगफली, अलसी में घटाबढ़ी के पश्चात् मंदी आयेगी। सरसों, अलसी, तिल, तेल, अरण्डी, बिनौला में तेजी बनेगी।

ता. १६ शुक्र पू.षा. में-सरसों, अलसी, तिल, तेल, अरण्डी में मंदा आकर बाजार में मंदी जारी रहेगी। मंगल उदय होकर सरसों, अलसी, तिल, तेल, अरण्डी में साधारण तेजी देगा। ता. २२ चन्द्र दर्शन पू.षा. नक्षत्र मकर राशि का शुक्रवारी है। घी, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी, मूंगफली, मंदे होंगे। ता. २३ बुध मूल नक्षत्र धनु राशि में-सरसों, तिल, तेल, अरण्डी में तेजी आयेगी। ता. २७ शुक्र उ.षा. में-सरसों, अलसी, तिल, तेल, अरण्डी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आयेगी। ता. ३० शुक्र मकर में-सरसों, तिल, तेल, अरण्डी, बिनौला, तोरया, मूंगफली में तेजी आयेगी। वर्ष का समापन ३१ दिसम्बर में रविवार के साथ होगा। मंडिया बंद होने से इस दिन कारोबार नहीं होगा।

वर्ष २००६ में तेल बाजार का संभावित रुख उस मास एवं दिवस में ग्रह गोचर को ध्यान में रखकर किया गया है। जिस पर स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त राजनैतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। बाजार में काम करने वाले व्यक्तियों पर उसकी ग्रह दशा, महादशा, अन्तर्दशा का प्रभाव पड़ता है। कुण्डली के राजयोग प्रभावी होकर किसी व्यक्ति को बाजार से लाभ दे सकते हैं तो दारिद्रय योग प्रभावी होकर हानि भी पहुंचा सकते हैं। अतः बाजार में कार्य करते समय किसी योग्य ज्योतिषी से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त कर लेना उचित होगा। ग्रह गोचर के आधार पर किया गया वर्ष २००६ का आकलन बिना किसी पूर्वाग्रह के प्रस्तुत किया है। तथा इस संदर्भ में इस आधार पर किये गये व्यापार के लिये लेखक, संपादक एवं मुद्रक किसी भी रूप में लाभ अथवा हानि के लिये जिम्मेदार नहीं होंगे। प्रस्तुति का उद्देश्य भारतीय ज्योतिष की समृद्ध परम्परा को पुनर्जीवित कर सुस्थापित करना है। लेखक से सम्पर्क सायं ७ बजे के बाद ०५१२-२५७५००४ अथवा ०९३३६३४२४८५ पर किया जा सकता है। शुभं अस्तु।

तेजी मंदी ज्ञान की प्राचीन पद्धति

श्याम सुन्दर अरोड़ा
पाटन पोल, हिरण बाजार, कोटा-३२४००६
फोन-०७४४-२३८२२६८ मोबाइल-९४१४३२५९४१

जब से मनुष्य सभ्यता का विकास हुआ है तब से ही व्यापार, वस्तुओं की विनिमय समाज का आवश्यक अंग बन गया। समाज में एक ऐसा वर्ग तैयार हुआ जो वस्तुओं का आपूर्ति करता था, ऐसा कार्य व्यापार कहलाया तथा व्यापार करने वाला वर्ग व्यापारी कहलाया। व्यापारी वर्ग अपने हित के लिए वस्तुओं की तेजी मंदी पर पूर्ण ध्यान रखने लगा कि किस किस वस्तु से ज्यादा से ज्यादा लाभ मिले। प्राचीन भारत में भी तेजी मंदी को देखने की कई पद्धतियां थीं। इन पद्धतियों में ग्रहों की गति, ग्रहों की स्थिति तथा ध्रुवांक पद्धति प्रमुख थी। ध्रुवांक पद्धति के माध्यम से साधारण व्यक्ति भी इस ज्ञान को प्राप्त कर लाभ उठा सकता था। प्राचीन ध्रुवांक पद्धति इस प्रकार थी। व्यापार की वस्तुओं को प्रायः तीन भागों में बांटा गया था।

अ - धातु वर्ग

१.	स्वर्ण	१००
२.	चांदी	९०
३.	पीतल	६८
४.	लोहा	६३
५.	कांसा	१३६
६.	तांबा	१९

ब - जिन्स वर्ग

१.	गेहूं	२३
२.	जौ	६६
३.	चावल	३६
४.	चना	६५
५.	ज्वार	१०९
६.	उड़द	८९
७.	सरसों	९७
८.	मूंग	६०
९.	हल्दी	११६
१०.	अरहर	८१
११.	शक्कर	१११
१२.	गुड़	४९

स - अन्य वर्ग

१.	कपड़ा	१०९
२.	कपास	१३६
३.	रुई	८६
४.	घोड़ा	७९
५.	भैंस	१०१
६.	गाय	८६
७.	बैल	९६
८.	बकरी	६९

तिथि ध्रुवांक

१.	प्रतिपदा	२१
२.	द्वितीया	२३
३.	तृतीया	२५
४.	चतुर्थी	२७
५.	पंचमी	२९
६.	षष्ठी	२८
७.	सप्तमी	२६
८.	अष्टमी	२४
९.	नवमी	२२
१०.	दशमी	२०
११.	एकादशी	१८
१२.	द्वादशी	१५
१३.	त्रयोदशी,	१४
१४.	चतुर्दशी	१२
१५.	पूर्णिमा	१९
१६.	अमावस्या	१०

योग ध्रुवांक

१.	विष्कुंभ	१९
२.	प्रीति	२३
३.	आयुष्मान	५४
४.	सौभाग्य	१४
५.	शोभन	४२
६.	अतिगण्ड	५३
७.	सुकर्मा	१९
८.	धृति	५०
९.	व्यतिपात	४५
१०.	वरीयान	२१
११.	परिघ	१९
१२.	शिव	२५
१३.	सिद्धि	३१
१४.	साध्य	५४
१५.	शुभ	९४
१६.	शुक्ल	१८
१७.	ऐन्द्र	३३
१८.	वैधृति	२९

शूल, गंड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वेर, सिद्धि तथा षष्ठ के ३० ध्रुवांक माने

वार ध्रुवांक

१.	सोमवार	५६
२.	मंगलवार	६३
३.	बुधवार	७८
४.	गुरुवार	७१
५.	शुक्रवार	३०
६.	शनिवार	२०
७.	रविवार	४६

संक्रांति ध्रुवांक

१.	मेष	४०
२.	वृष	८७
३.	मिथुन	६९
४.	कर्क	१०८
५.	सिंह	१२८
६.	कन्या	१०५
७.	तुला	१४३
८.	वृश्चिक	१८७
९.	धनु	१४७
१०.	मकर	२२
११.	कुम्भ	१९०
१२.	मीन	१८०

नक्षत्र ध्रुवांक

१.	अश्विनी	१०
२.	भरणी	१०
३.	कृतिका	९६
४.	रोहिणी	५६
५.	मृगशिरा	२०
६.	आर्द्रा	८६
७.	पुनर्वसु	२१
८.	पुष्य	६४
९.	अश्लेषा	१३५
१०.	मघा	१५०
११.	पू.फा.	२२०
१२.	उ.फा.	७२
१३.	हस्त	३३४
१४.	चित्रा	२१
१५.	स्वाती	२१०
१६.	विशाखा	३२०
१७.	अनुराधा	४९३
१८.	ज्येष्ठा	५५९
१९.	मूल	५५२
२०.	पूर्वाषाढ़ा	१४२
२१.	उत्तराषाढ़ा	४२०
२२.	श्रवण	५५०
२३.	धनिष्ठा	७३६
२४.	शतभिषा	५७६
२५.	पूर्वा भाद्रपद	२७५
१६.	उत्तरा भाद्रपद	१२६
२७.	रेवती	२५६

विधि जिस वस्तु की तेजी-मंदी जाननी हो तो उस दिन के ध्रुवांक लेवें। उदाहरण के तौर पर स्वर्ण की तेजी किसी दिन देखनी हो तो स्वर्ण के ध्रुवांक, उस दिन की तिथि, वार, सूर्य संक्रांति, नक्षत्र व योग के ध्रुवांक लेकर ३ से भाग देवें। ० शेष पर तेजी, १ शेष पर मंदी, २ शेष पर स्थिरता अर्थात न तेजी न मंदी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सामूहिक व्यापार भविष्य संवत् २०६३ वि.

लेखक - विश्वबन्धु शर्मा सुपुत्र श्री ओंकार प्रसाद ''दैवज्ञ''

M.Com., LLB, वास्तु विशेषज्ञ, व्यापार सलाहकार विशेषज्ञ, 21/22, ब्रह्मनान, पो.-हापुड़-245101 (उ.प्र.) फोन:- ०१२२-२३१२२३८, मोबाइल- ०९८३७२७९८२३ ९३१९२६२६८३, ०९४१२५७३८९५

संवत् २०६३ वि. में राजा गुरुदेव बने हैं। मंत्रीपद पर भी गुरुदेव ही आसीन हैं। सस्येश सूर्यदेव हैं। धान्येश शुक्रदेव हैं। रसेश भौमदेव हैं। नीरसेश सूर्यदेव हैं। फलेश बुधदेव हैं। धनेश शनिदेव रहेंगे तथा दुर्गेश बुधदेव हैं। विकार नाम सम्वत् है। इस वर्ष में गुरुदेव ही राजा हैं और मंत्री भी गुरुदेव के आसीन होने से प्रजा के लिए उत्तम वर्ष रहेगा। शासन द्वारा प्रजा के हित में महत्वपूर्ण निर्णय लिये जाएंगे। साथ ही मेघेश भी होने से वर्षा की प्रचुरता होगी। कुल दस अधिकारियों में से तीन पर गुरुदेव आसीन होंगे। जो कि शुभ हैं। लेकिन रोहिणी निवास पर्वत पर तथा समय निवास कुम्हार के घर होने से वर्षा का अभाव भी संभव होगा। गेहूं, जौ का स्टॉक फसल पर लाभ देगा। गुड़, खाण्ड का स्टॉक भी लाभकारी होगा। सस्येश रविदेव हैं जो कि गुरुदेव के मित्र हैं। फसलें उत्तम होंगी। धान्येश शुक्र होने से धान्यों का संचय लाभकारी होगा। फलेश बुध फलों का हानि कारक है। धान्यों का निर्यात पड़ोसी देशों को होने से गेहूं, जौ, चावल का महंगा होना संभव होगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष-चैत्र माह के शुक्ल पक्ष से यह वर्ष ता. ३० मार्च सन् २००६ से प्रारंभ हो रहा है। माह में तीन गुरुवार हैं। वर्ष के प्रारंभिक दिन गुरुवार होने से राज गुरु हैं। इस पक्ष में पीले रंग की वस्तुएं नरमी पर जाएंगी। इस वर्ष में गुरुदेव तुला राशि पर भ्रमणशील रहेंगे। सफेद रंग की वस्तुओं, पीले व चित्र-विचित्र वस्तुओं के भावों में मंदी कारक होंगे। पक्ष के प्रारंभ में बदी तीज शनिवार को चतुर्थी तिथि का क्षय होगा। यह क्षय मंदी को बल देगा लेकिन बाद ता. ७ अप्रेल को तिथि वृद्धि भयंकर तेजी कारक है। चैत्र बदी दोज को रेवती नक्षत्र में सूर्यदेव का संचरण होगा जो सरसों, तिल, तेल, सोयाबीन, अलसी, मूंगफली के भावों में तेजी कारक होगा। तिलहनों में तेजी का रुख पन्द्रह दिवसीय बनेगा। ता. ३ अप्रेल को मिथुन में मंगल का प्रवेश जोरदार चाल अवश्य देगा। यहां पर मटर, कालीमिर्च, काजू, हरे उड़द, मूंग, धनियां, सौंफ के भावों में तेजी की चाल चलने की धारणा है लेकिन जिन वस्तुओं में ता. ३ से ४ अप्रेल भाव मंदे रहें उनमें मंदी की ही चाल चलेगी। वायदा बाजारों में ता. १ अप्रेल से सोयाबीन तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी आदि में जोरदार तेजी की चाल निकलेगी। और ता. ३ अप्रैल को दोपहर बाद से उड़द, मूंग, धनीयां, पीपरमेन्ट, कालीमिर्च के वायदा मार्केटों में खास चाल चलेगी। गुरु-मंगल का नवपंचम योग लाल मिर्च, मसूर, केसर, लाल वस्त्र, छुआरा, सिन्दूर आदि में नरमी का रुख करेगा। धान्यों के भावों में समता का रुख रहेगा। ता. ११ अप्रैल सन् २००६ को बुधदेव के मीन राशि में प्रवेश के असर से जोरदार व तूफानी चाल ता. १२ अप्रैल से प्रारंभ होगी और पन्द्रह दिनों में रुई, कपास, सूत, अलसी, लौंग, मेंथी के भावों में तेजी होगी।

वैशाख-इस माह में पांच शुक्रवार व पांच ही शनिवार हैं। मास के प्रारंभ में मेष संक्रांति प्रथम दिन ही लग रही है। यह संक्रांति प्रात:काल ता. १४ अप्रैल को लगने से तेजी की सूचक है। लेकिन गुरु से समसप्तम योग व शनि से चतुष्टक योग के प्रभाव से मंदी व तेजी कारक क्रमश: बनती है। माह में लोहा, फौलाद, मशीनरी, सोना, गेहूं, जौ, मसूर, तांबा, क्रूड आयल, लालमिर्च व लाल रंग की सर्व वस्तुओं में तेजी का ट्रेन्ड देखने में आयेगा। जिन वस्तुओं में प्रथम दो दिन मार्केट मंदा रहे उनमें मंदी का ही रुख जानना। आगे ता. २६ अप्रैल को चतुर्दशी तिथि का क्षय होना विशेष मंदी कारक होगा। जो वस्तुएं तेज में चली आ रही हों उनमें मंदी का रुख बनेगा। वायदा वस्तुएं क्रूड आयल, पीपरमेन्ट, सोना-चांदी, ग्वार, सोयाबीन व तेल वायदा के साथ सरसों व शेयर बाजारों में विशेष पलट देखने में आयेगी। वायदा वस्तुओं के भावों में तूफानी चाल चलेगी। यहां पर दोतरफा गली लगानी लाभप्रद होंगी। मीन राशि पर शुक्रदेव का संचरण होने से रुई, कपास के भावों में तेजी का रुख बनेगा। धान, गेहूं, जौ के भावों में मंदी का रुख बनेगा। माह में विशेष चाल पीपरमेन्ट, क्रूड आयल, चांदी, ग्वार, रिलायंस शेयर, निफ्टी सेंसेक्स में बनेगी। धारणा जोरदार तेजी की है। अत: अगर ता. २८ को जिन वस्तुओं में मंदी चल रही होगी। उनमें जोरदार व तूफानी तेजी की चाल बनेगी। खरीदकर लाभ कमाया जा सकता है। माह में सूर्यदेव ता. १४ अप्रैल से १७ अप्रैल तक वर्गोत्तमकारी होने से लाल रंग की वस्तुऐं विशेष चाल पकड़ेंगी। सोयाबीन, तेल, राजमा तथा क्रूड आयल विशेष चाल पकड़ेंगे। शुक्ला नवमी की रात्रि में बुधास्त का प्रभाव गुड़, रुई, सोना, चांदी, गेहूं, चना, मटर, कपास के भावों में जोरदार तेजी करेगा। लेकिन जिस वस्तु में ८ मई को ता. ६ के बने, नीचे भाव टूटेंगे उसमें मंदी का ट्रेंड ही जानना। बुधदेव १ मई से ५ मई तक वर्गोत्तम में रहेंगे। हरे रंग के पदार्थ विशेष रूप से जोरदार तेजी या मंदी पकड़ेंगे। गेहूं, रुई के अलावा सिल्कीय कपड़े, टेक्सटाईल, शक्कर, तांबा में भी उक्त तथ्य विचारणीय हैं।

ज्येष्ठ मास-माह में पांच रविवार होने से तेजी की सूचना मिलती है। माह में प्रथम दिन ही वृष संक्रांति रात्रि में लगेगी जो विशेष तेजी की द्योतक है। धान्यों के भावों में विशेष तेजी होगी। सरसों, तेल, घी, तिल, कोदों व फसल की वस्तुओं का स्टॉक करना लाभप्रद होगा। गेहूं, चना, मसूर, मजीठ, चीनी, गुड़, शक्कर व किराना की वस्तु, जीरा, धनियां लौंग, कालीमिर्च, मसालों के भावों में तेजी होगी। शेयर मार्केटों में मंदी का रुख रहेगा। इलायची, काजू, कपूर, धातु पदार्थ सोना, चांदी, तांबा, बिनौला के भावों में तेजी का विशेष विचार है। साथ ही वायदा मार्केटों में नीचे स्तर पर खरीदारी करना लाभ देगा। गेहूं, चना, चीनी, गुड़, सोना, चांदी के वायदा मार्केटों में विशेष तेजी की संभावना है। कर्के भौम ता. २७ मई को परिभ्रमणशील होंगे। गन्ना, गुड़, खांड, धान, चावल, रुई, कपास, सूत, टेक्सटाईल वस्त्रों के भावों में ४० से ४८ दिन में विशेष तेजीकारक होंगे। नमक, फिटकरी, अम्लीय पदार्थ, क्षार पदार्थ, सज्जी के भावों के साथ पानी से उत्पन्न वस्तुओं के भावों में मंदी का रुख रहने की धारणा है। ता. २९ मई को बुधोदय होगा जो चालू वायदा मार्केटों के रुख में जोरदार तेजी करेगा। और जिन वस्तुओं में जोरदार तेजी आ लेगी उनमें जोरदार मंदी का भी ट्रेंड बनेगा। ता. ३१ मई की प्रात: मिथुने बुध का प्रभाव जोरदार नरमी का होगा। जीरा, जायफल, सौंफ, अजवायन, रुई, कपास, ग्वार, मक्का के भावों में घट-बढ़ के साथ मंदी का रुख बनेगा। सुदी पक्ष में चन्द्रदर्शन प्रतिपदा के होने से दो दिन भाव तेज रहें, उनमें तेजी ही बनेगी। जो १४ दिन की कम से कम होगी। माह में ता. १५ मई को प्रात: चांदी, गुड़, सरसों, सोयाबीन में तेजी लगाना, ता. २४ मई को चांदी, गुड़, रुई, सूत, लाल रंग की वस्तुओं के वायदा मार्केटों में दोतरफा गली लगानी लाभप्रद होंगी। ता. २९ मई की शाम को गुड़, रुई, चांदी, गेहूं, चना के भावों में दोतरफा गली लगानी चाहिए। गेहूं, चना, जौ, मटर का स्टॉक लाभप्रद होगा।

आषाढ़-माह में पांच सोमवार मंदी कारक व पांच मंगलवार तेजी कारक हैं। ता. १५ जून को मिथुन संक्रांति ९ घटी १८ पल पर परिभ्रमणशील होने से तूफानी तेजी की चाल देगी। रुई, कपास, चन्दन, कन्द-मूल-फल, ग्वार, ज्वार, मक्का में तेजी का रुख बनेगा। घी, शेयर, कागज, सौंफ, जीरा, धनियां, जायफल, अजवायन में तेजी जोरदार होगी। तेल, जौ, पीले रंग की वस्तुएं तेज होंगी। धान्यों में मंदी होगी। आषाढ़ बदी सप्तमी की रात्रि में, वृष राशि में शुक्रदेव के प्रवेश करने से सफेद रंग की वस्तुओं में मंदी होगी। रुई, कपास, सूत, जूट, पाट, बारदाना, सन, हैशियन, पीपरमेन्ट के वायदा मार्केट में घटबढ़ के साथ मंदी होगी। यह मंदी जोरदार बन सकती है। **नोट**-अगर १५ जून से दो दिन में मार्केट विपरीत चले तब विपरीत ही चाल एक माह तक चलती रहेगी। माह के सुदी पक्ष में त्रयोदशी रविवार की रात्रि में बुधास्त से हाजिर व वायदा मार्केटों में तूफानी तेजी कारक चांदी, सोना, गुड़, चना, गेहूं, रुई, जूट आदि के मार्केटों में करेगा। यहां पर वायदा बाजारों में तेजी अवश्य लगानी चाहिए। मेंथा मार्केट में तूफानी तेजी एक सप्ताह की चलेगी। अगर यहां पर ता. १० जुलाई को ८ के बने नीचे भाव से जिस वस्तु में भाव टूटे उसी में भयानक मंदी की चाल समझना।

श्रावण-मास में पांच बुधवारों का होना घटबढ़ की प्रधानता करते हैं। चूंकि प्रतिपदा तिथि का क्षय मंगलवार को ही हो चुका है। अत: तेजी का पुट लगेगा। बदी दोज सिंहे भौम का प्रभाव सोना, तांबा, लाल रंग के द्रव्य, गुड़, खाण्ड, सौंठ, अदरक, केसर, आलू बुखारा, लालमिर्च के भावों में जोरदार तेजी होगी। वायदा वस्तुओं में ता. १२ से चालू चाल १४ जुलाई तक तूफानी होगी। ता. १६ जुलाई को कर्क संक्रांति के प्रभाव से चालू चाल ता. २७ जुलाई तक सम्पन्न होगी। क्रूड

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

में मार्केट टूट जायें तब मंदी का ट्रेंड बनाकर ता. २९ सितम्बर तक

अलसी, मूंगफली, सुपारी तेज हों तब तेजी २८ दिन की बनेगी। विपरीत

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

आयल, शेयर्स, मद्य, घी, कांच का सामान में नरमी का रुख रहेगा। वायदा में ग्वार, चना, उड़द, अरहर, गुड़, सरसों, सोया तेल के भावों में अचानक तेजी आरंभ होकर पांच ही दिन में समाप्त होगी। अगर ता. १७ जुलाई को ता. १५ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा तो मंदी का ही ट्रेंड बनेगा। श्रावण बदी दसमी को शनिदेव का अस्त होना रुई, कपास, गेहूं, चना, जौ, मटर के भावों में श्रेष्ठ तेजी का योग बनायेगा। सुदी में बुधोदय पूर्व दिशा में होना (द्वितीया को) चलती तेजी में ब्रेक लगायेगा। चन्द्रदर्शन बुधवारी प्रतिपदा को होना जोरदार मंदी कारक होगा। शुक्रदेव का कर्क राशि में संचार विशेष रूप से धान्यादि के वायदा व हाजिर बाजारों में विशेष तेजी करेगा। माह में ता. १२ जुलाई की प्रातः व शाम ता. २० जुलाई की शाम को तथा ता. २७ जुलाई की दोपहर १२ बजे लगभग दोतरफा तेजी-मंदी लगानी लाभप्रद होगी।

भाद्रपद-माह में पांच गुरुवारों का फल व्यापारिक वस्तुओं के भावों में मंदी की सूचक हैं। माह के बदी पक्ष में प्रतिपदा को पुष्य नक्षत्र में शुक्रदेव की एन्ट्री गुड़, कपूर, पारा, हींग, लाख के भावों में दो सप्ताह की मंदी करेंगे। बदी अष्टमी बुधवार को रात्रि में सिंह संक्रांति के प्रभाव से जोरदार चाल सोना, गुड़, चना, अदरक, सौंठ, केसर, व लाल रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी होगी। धान्यों के भावों में मंदी होगी। इस माह में एक विशेष योग यह है कि बदी एकादशी को बुधास्त के प्रभाव से तेजी की तूफानी चाल गुड़, चीनी, चावल, सोना, चांदी, तांबा, रुई, कपास, सूत, जूट, पाट, बारदाना, मेंथा आदि के भावों में चलेगी। विशेष **नोट** है कि जिस वस्तु में बदी एकादशी से २ दिन में भाव मंदी में रहें उनमें मंदी ही सुदी त्रयोदशी तक लम्बी लाईन में परिवर्तित हो जायेगी। सुदी दोज शुक्रवार को शनिदेव का उदय लोहा, कोयला, उड़द, कालीमिर्च, लौंग, चाय, नीलम, नील, तेल, सोयाबीन व काले रंग के पदार्थों के भावों में मंदी कारक होंगे। तथापि जिस वस्तु में अगामी तीन दिन तेजी के रह जायें तब उन वस्तुओं में तेजी ही जारी रहेगी। सुदी में दोज को चन्द्रदर्शन मंदी को बल देगा। इस माह में सुदी दोज, सुदी चतुर्थी व सुदी त्रयोदशी को मंदी लगानी लाभप्रद होंगी।

आश्विन-माह में पांच शुक्रवार व पांच ही शनिवारों का प्रभाव मंदी कारक है और यदाकदा तेजी की स्थिति भी बनेगी। यद्यपि प्रथम पक्ष में बदी पंचमी तिथि का क्षय होना जोरदार मंदी की द्योतक है। लेकिन बाद भाव तेजी पकड़ सकते हैं। बदी दोज को शाम कन्या राशि पर बुध के प्रवेश से हरे रंग की वस्तुओं में मंदी कारक होगा। शनि-बुध का द्विर्द्वादश योग मंदी और राहू से सम सप्तम योग तेजी कारक भी है। **नोट**-अगर ता. ११ सितम्बर को ता. ९ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा तब उसी वस्तु में मंदी ता. १२ तक चलेगी। बाद ता. १३ सितम्बर को १२ के बने नीचे भाव से टूटने की स्थिति में बेचकर चलें और ता. २२ तक लाभ उठा लेवें। आगे ता. १७ सितम्बर की रात्रि में सूर्यदेव के कन्या राशि में प्रवेश से गेहूं, जौ, चना, मटर, ग्वार, मूंग, चावल, कत्था, धनियां, पन्ना, मेंहदी, पिस्ता के भावों में तेजी चलने की धारणा है। यह तेजी कम से कम पन्द्रह दिन की होगी। **विशेष**-अगर ता. ९ सितम्बर से १७ सितम्बर के बीच बने लोएस्ट भाव से ता. १८ सितम्बर को या बाद में मार्केट टूट जायें तब मंदी का ट्रेंड बनाकर ता. २९ सितम्बर तक व्यापार करना चाहिए। सुदी पक्ष में दोज का चन्द्रदर्शन जोरदार तेजी सूचक है। माह में विशेष रूप से ता. १२ सितम्बर को तेजी लगाना।

कार्तिक-माह में पांच रविवारों की स्थिति व्यापारिक वस्तुओं में उठापटक के साथ तेजी की रहने की धारणा है। बदी अष्टमी शनिवार को शाम को तुला राशि पर मंगल का प्रवेश होगा। यह प्रवेश हल्दी, मूंग, धनियां, पीपरमेन्ट (मेंथा), चना दाल के भावों में विशेष तेजी कारक होगा। हल्दी का स्टॉक भी नीचे भाव मिलने पर करना लाभ देगा। सरसों, सोयाबीन, अलसी, अरण्डी, मूंगफली के भावों में मंदी विशेष संभव है। बदी एकादशी मंगलवारी तुला संक्रांति का असर भी विशेष तेजी कारक होगा। रेशमी वस्त्र, रेशम, रुई, कपास, सूत, अरहर, चावल, साबूदाना, गोला, पोस्तादाना के भावों में तेजी होगी। सुदी प्रतिपदा को वृश्चिक राशि में बुधदेव का प्रवेश रात्रि में होगा। यह प्रवेश बुध के अधिकार की वस्तुओं और अन्य वस्तुओं में भी प्रातः तेजी का रुख रहने की धारणा है। बुध- शनि का वृश्चिक और कर्क राशि में नव पंचम योग भी तेजी को बल देने वाला है। ता. २४ अक्टूबर को स्वाती नक्षत्र पर सूर्यदेव का प्रवेश होना चौदह दिन के अंतर्गत् सभी धातु पदार्थ, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गुड़, शक्कर, चीनी, तेल, सोयाबीन, सरसों, हींग, कपूर, गुग्गल, हल्दी, रुई, सन, जूट में तेजी का रुख बनेगा। क्रूड आयल में ता. २५ से तेजी ३ दिन की चलेगी। लेकिन अगर ता. २५ को मंदी रहेगी तो मंदी ही जानना। गुरुदेव के कार्तिक सुदी पंचमी को वृश्चिक राशि में प्रवेश से लालमिर्च, छुहारा, नमक, नागकेसर, नील, बादाम गिरी, मुनक्का, गुड़, खाण्ड, शक्कर, औषधीय पदार्थ, मसूर दाल आदि के भावों में विशेष मंदी का दौर चलेगा। सुदी एकादशी गुरुवार को रात्रि में बुधास्त का होना रुई, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गेहूं, चना के भावों में तेजी कारक होगा। यह तेजी एक पखवाड़े की होगी। यहां पर जिस वस्तु में सुदी एकादशी से दो दिन में मंदी रहे, उसी में मंदी का ट्रेंड पन्द्रह दिन रहने की धारणा है।

मार्गशीर्ष-महीना पांच सोमवारों से युक्त होने से व्यापारिक वस्तुएं मंदी की ओर अग्रसर होंगी। प्रथम दिन विशाखा में सूर्य का प्रभाव कत्था, नारियल, सोयाबीन, सरसों, मूंगफली, अलसी, अरण्ड, घी, जूट, पाट, बारदाना के भावों में मंदी कारक होगा। बदी पंचमी को गुरुदेव का अस्त होना जोरदार मंदी का रुख बनायेगा। रुई, कपास, सूत के भावों में विशेष मंदी का रुख रहेगा जो कि कम से कम तीन सप्ताह तक चलेगा। आगे वृश्चिके शुक्र का प्रभाव दृष्टिगोचर होगा जो ता. १२ नवम्बर बदी सप्तमी रविवार की शाम को प्रविष्ट से जोरदार नरमी सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, कपास, खल, बिनौला, चना, गेहूं, ग्वार, उड़द के भावों में चलेगी। अरहर के भावों में भी धीरे-धीरे टूट दीख पड़ेगी। और ता. १५ नवम्बर को बुधोदय के बाद विशेष रूप से मंदी का दौर आरंभ होगा। बदी एकादशी को वृश्चिक राशि में सूर्य के संचरण के प्रभाव से सोया तेल, सरसों आदि तिलहनों के भावों में मंदी का रुख बनेगा। धान्यों में विशेष मंदी होगी। अगर बदी एकादशी से २ दिन में गुड़, शक्कर, खाण्ड, केमीकल पदार्थ, लोहा, चर्म, लाख, ऊन, अलसी, मूंगफली, सुपारी तेज हों तब तेजी २८ दिन की बनेगी। विपरीत में विपरीत चाल जानना। सुदी सप्तमी को वृश्चिक राशि में मंगलदेव का संचरण विशेष रूप से लाल रंग की वस्तुओं, गुड़, मद्य, खाण्ड, केशर, छुहारा, लालमिर्च, कुमकुम, जीरा, धनियां में तेजी होगी। अगर ता. २७ नवम्बर को ता. २६ के या २५ के बने नीचे भाव से किसी उपरोक्त वस्तु में भाव टूटें तब मंदी ही चलेगी। वायदा वस्तुओं में ता. १० नवम्बर व १५ नवम्बर को मंदी लगानी लाभ देगी। ता. २७ नवम्बर १२ बजकर ३७ मिनट पर दोतरफा गली लगानी चाहिए।

पौष-माह में पांच भौमवार व पांच ही बुधवार तेजी सूचक हैं। बदी दोज बुधवार को धनु में शुक्र तथा शनि वक्री हो रहे हैं। यह स्थिति दोनों ही जगहों पर विपरीत फलदायक हैं। यहां पर धनुष्याम् शुक्र रुई की फसल को नष्ट करने वाला होगा। अतः मंदी के बाद तेजी का ट्रेंड रुई, सूत, कपास में बनेगा। सभी प्रकार के धान्य तेज होंगे। गेहूं, घी, शाल, तेल के भाव एक माह बाद भड़केंगे। शनि वक्री-वायदा वस्तुओं में विशेष रूप से ग्वार, सोयाबीन, तेल, लोहा, स्टील, मशीनरी शेयर, उड़द, मालकंगुनी के भावों में जोरदार चाल देगा। यहां पर ता. ५ व ६ के बने हाइऐस्ट भाव से मार्केट बढ़ जाएं तब तेजी की धारणा बनाकर ता. १५ दिसम्बर तक व्यापार करें। ता. १६ दिसम्बर की रात्रि व १७ की प्रातः से पूर्व धनु संक्रांति के प्रभाव से जोरदार चाल शेयर, आलू, हल्दी, पीले वस्त्र, बादाम, मुनक्का, किशमिश के भावों में एक माह में ही विशेष तेजी होगी। वायदा वस्तुओं में एक खास एटमबम चांस है कि बदी नवमी गुरुवार के शाम को रुई, बिनौला, कपास, गुड़, चीनी, ग्वार, चना, चांदी, सोना के मार्केटों में मंदी लगानी लाभ देगी। अगर ता. १८ दिसम्बर को मार्केट तेज रहे तब अगले दिन की तेजी लगा देनी चाहिए। सुदी दोज को चन्द्रदर्शन का होना मंदी का द्योतक है। सुदी दशमी को प्रातः पूर्वाषाढ़ में सूर्यदेव के प्रवेश से १२ दिन में गुड़, खाण्ड, हल्दी में अच्छी मंदी करेंगे। माह में ता. ६ दिसम्बर की शाम को दोतरफा गली लगाना। ता. ८ दिसम्बर से चांदी, सोना में विशेष रूप से चाल पलटने की धारणा है। ता. १४ की शाम व ८ को २ बजकर ४८ मिनट पर दोतरफा गली लगानी लाभप्रद होंगी।

माघ-माह में पांच गुरुवार व पांच ही शुक्रवार हैं। दोनों ग्रह यद्यपि मंदी के द्योतक हैं। तथापि परस्पर विरोध की प्रवृति के कारण मंदी में तेजी के चांस भी संभव होंगे। माह के प्रारंभ में बदी पंचमी को धनु राशि में मंगलदेव का संचरण होगा। यह संचरण सोना, हल्दी, पीत वस्त्र, बादाम, केसर, अरहर, दाल, मूंग, दाल चना व पीले रंग के पदार्थों के भावों में तेजी का उछाला लायेगा। मंगल की शनि से नवपंचम स्थिति का होना काली वस्तुओं के भावों में विशेष मंदी का बिगुल बजायेगा। बदी अष्टमी की रात्रि में मकरे बुध का प्रभाव समता कारक होगा। मकर संक्रांति शाम को लगेगी। जो सोना, चांदी, तांबा, कोयला, शेयर्स मार्केट, लोहा व लोहे के शेयर, जस्ता, टीन, रांग, सरसों, दालचीनी, लौंग, कालीमिर्च, पीपर, काला नमक, मुनका, किशमिश में एक माह के अंतर्गत तेजी का उछाला आने का चांस है। यहां पर विशेष धारणा है कि जिन वस्तुओं के भावों में ता. १० से १५ जनवरी के बीच बने लोएस्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाव से ता. १६ को या बाद में मार्केट टूटे तक मंदी का चांस ही ता. २ फरवरी तक चलेगा। विपरीत भाव क्रॉस होने पर तेजी ही जानना। सुदी पक्ष में दोज तिथि का क्षय तेजी कारक है। सुदी पंचमी भौमवार ता. २३ जनवरी को प्रातःकाल शुक्रदेव के कुंभ राशि पर प्रवेश के प्रभाव से लोहा, शेयर्स, कालीमिर्च, जीरा, लौंग, पीपर, दाख, दालचीनी, चांदी, रुई, सूत, कपास, खल, बिनौला, ग्वार, ज्वार, चना के भावों में मंदी जोरदार होगी। ता. २६ को बुधोदय होने के बाद जो वस्तुएं मंदी चल रही होंगी उनमें मंदी का झटका लगकर जोरदार पलट होगी। विशेष रूप से वायदा मार्केटों में ता.२७ जनवरी को ता. २६ के बने नीचे भाव से मार्केट के टूटने पर और बन्द होने पर मंदी एक सप्ताह लगभग की बनेगी। किन्तु ऊंचे बने भाव से बढ़ने पर तेजी ही चलेगी। माह में ता. १५ जनवरी, ता. २० जनवरी की प्रातः व ता. २६ की शाम को दोतरफा गली लगानी चाहिए। ता. ११ से १८ जनवरी सूर्य वर्गोत्तम सोयाबीन, सरसों, अरण्डी, मेंथा में तेजी देगा।

फाल्गुन-माह में पांच शनिवार व्यापारिक वस्तुओं में तेजी कारक समय औसत रहेगा। व्यपारिक दृष्टि से ता. ६ फरवरी मंगलवार को बदी चौथ के दिन धनिष्ठा में सूर्य २३ घटी पर प्रवेश करेंगे। मूंग, मोठ, मसूर, उड़द, नील, नीलम, नीला थोथा के भावों में मंदी होकर तेजी का रुख आगामी चौदह दिन कायम रहेगा। ता. १२ फरवरी की रात्रि में ५८ घटी पर कुंभ संक्रांति प्रवेश जोरदार मंदी का द्योतक है। लेकिन राहु की स्थिति होने से तेजी का प्रभाव भी पड़ सकता है। मंगल शनि का षडाष्टक योग व सूर्य-शनि का भी षडाष्टक योग से काली व लाल रंग की वस्तुऐं तेज होंगी। विद्युत उपकरण, कोयला, तेल, अलसी, काष्ठ, लोहा, फूल, नीलम, अरण्डी, तेल, सरसों, तिल्ली, मूंगफली, कस्तूरी, अमचूर, चिलगोजे की तेजी मार्केट में देखने में आयेगी। गुड़ व लाल वस्तुओं की बहुतायत होने से मंदी होगी। सुदी चतुर्दशी को बुधास्त के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, स्टील, रुई, बिनौला, खल-बिनौला, गेहूं, जौ, चना, मटर, मूंग, मोठ के भावों में तेजी होगी। सरसों, अलसी, अरण्डी में नरमी की चाल पन्द्रह दिन की निकलेगी। ग्वार, उड़द, अरहर, चना, निफ्टी, सोना, चांदी के वायदा मार्केटों में सुदी पूर्णिमा को रुख देखकर दस दिन तक व्यापार करें। ता. १९ फरवरी को चन्द्रदर्शन पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के अधिकार की वस्तुओं में मंदी करेगा। सोना, चांदी, चना, उड़द, घी, रुई, रेशम, पीपलामूल तीन दिन में मंदी में रहेंगे। सुदी पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण से कालीमिर्च, लोहा, अयस्क, ऊन, जूट, पाट, बारदाना, खल-बिनौला के भावों में तेजी कारक होगा। शेयर मार्केटों में कल का रुख देखकर व्यापार करें। माह में ता. १२ फरवरी, ता. १६ फरवरी, ता. २३ फरवरी को तेजी-मंदी लगानी लाभप्रद होंगी।

चैत्र बदी-चैत्र माह में पांच रविवार व पांच ही सोमवार हैं। इस माह में तेजी की औसत वृद्धि दर्ज होगी। ता. ४ मार्च से ६ मार्च विशेष मंदी होकर ता. ७ मार्च से ९ मार्च विशेष तेजी की चाल चलेगी। बाद ता. १० मार्च से पुचः मार्केट १४ मार्च तक मंदी की ओर चलेंगे। १५ मार्च से १९ तक घटबढ़ के साथ तेजी की चाल सभी वायदा मार्केटों में चलने की धारणा है। बदी प्रतिपदा रविवार को रात्रि में पूर्वा भाद्रपदा में सूर्य तिलहन, सरसों, तिल, तेल, घी, अरण्डी, अलसी में नरमी कारक एक सप्ताह रहेगा। बदी पंचमी को ३० घटी २६ पल पर बुध मार्गी होने से जोरदार घटबढ़ होगी, तेजी-मंदी फलेंगी। बदी दशमी को मीन संक्रांति के प्रभाव से बहुधा वस्तु तेजी में चलेंगी। मछली, सीप, मोती, मोम, सुगन्धित पदार्थ, हीरा, औषधि व औषधीय पदार्थ व रेशम व कढ़ाई की वस्तुओं के भावों के साथ जल से उत्पन्न पदार्थों के भावों में विशेष तेजी होगी। यहां पर वायदा वस्तुओं के भावों में भारी उछाला संभव है। वायदा में सोना, चांदी, तांबा, ग्वार, अरहर, पीपरमेन्ट, क्रूड आयल, खल-बिनौला के भावों में भारी उटापटक अवश्य होगी। ता. ४ मार्च की प्रातः, ता.९ मार्च ३ बजे, ता. १५ मार्च को दोतरफा गली लगाना लाभप्रद होगा।

अनमोल चांस मंगाईये

अनमोल चांस वह चांस है जो आपको ग्रह चाल के आधार के साथ-साथ ग्राफिकल चांस भी मिलते हैं। ऊंचे-नीचे आनुपातिक क्रासिंग भाव देना ही चांस की विशेषता है। हाजिर या वायदा वस्तु के चांस, सोना, चांदी, शेयर्स, मेंथा, गुड़, सरसों, सोयाबीन, तेल, कॉपर, आलू, अरण्डी, हल्दी, जूट, क्रूड आयल, ग्वार, अरहर, चना, स्टील, लालमिर्च, खल-बिनौला, किराना वस्तुओं तथा खुष्क मेवाओं के चांस देते हैं। हाजिर चांस एक वस्तु एक वर्ष ७५१/-रुपये हैं। छः माह ४५१/-रुपये तथा तीन माह की २५१/-रुपये हैं। वायदा एक वस्तु एक माह की फीस ३०१/-रुपये, सम्पूर्ण वर्ष की ३०००/-रुपये है। फोन पर प्रतिदिन बताने की, वायदा वस्तु (एक) की फीस ११०१/-रुपये हैं।

"**शांडिल्य व्यापार भविष्य**" पूर्ण एक वर्ष संवत् २०६३ जिसमें दैनिक व लम्बी लाइनों के चांस दिये गये हैं-मूल्य १५०/-रुपये है। भेजकर मंगा सकते हैं।

भाग्य, स्वास्थ्य और आपकी हस्त रेखा

चेतन खत्री, वसंत बहार स्टोर्स, बस स्टेशन के पास भुज-कच्छ (गुजरात) फोन-०२८३२-२५५७८८

स्वास्थ्य ही जीवन है, स्वास्थ्य ही धन है, स्वास्थ्य ही वरदान है। व्यक्ति के पास समस्त सुख और ऐश्वर्य हैं पर अगर वह रोगी है तो उसके लिये यह सब व्यर्थ है। शरीर में जो कुछ खर्च होता है। वह नींद-आराम और भोजन से पुनः प्राप्त होता है। फिर भी अपूर्णता कहीं ना कहीं रह जाती है, जिसके कारण रोग घर कर जाते हैं। आजकल यह हालत है कि जितना भोजन हम करते हैं इसमें एक तिहाई हमारे शरीर का पोषण करता है और दो तिहाई डॉक्टरों, वैद्यो का पोषण करता है।

संसार का प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि यह खूब धन कमायें, नौकरी, व्यापार और न जाने वह जीवन में क्या क्या करता है। लेकिन संसार में भाग्य से अधिक और वक्त से पहले कुछ नहीं मिलता। रेखायें बदलती रहती हैं और यह बदलाव व्यक्ति के खुद अपने नेगेटिव या पोजिटिव विचारों से होता है।

स्वास्थ्य रेखा-इस रेखा का दोहरा होना, कब्ज और आंतों की खराबी का संकेत है। हृदय रेखा और मस्तक रेखा के बीच संकरी घाटी का रूप ले तो समझना चाहिये कि दमा दम से ही निकलेगा। कई व्यक्तियों के हाथ में स्वास्थ्य रेखा का अभाव दिखाई देता है यह शुभ चिन्ह है। वह व्यक्ति स्वस्थ एवं आकर्षक जिन्दगी जीने वाले होते हैं। लहरेदार स्वास्थ्य रेखा व्यक्ति के पेट सम्बन्धी बीमारियों को स्पष्ट करती हैं, मस्तिष्क रेखा में अगर द्विप हो मस्तक संबंधी रोग का संकेत है। स्वास्थ्य रेखा गहरी होने से पाचन क्रिया और लीवर ठीक रहता है। आयुष्य रेखा, मस्तक रेखा और हृदय रेखा तीनों की लंबाई आपस में बराबर है तो किसी भयंकर बीमारी के आने का कोई अंदेशा नहीं, स्वास्थ्य रेखा बुध से आकर गोलाई लेते हुए चंद्रमा के पर्वत तक जाये तो वह व्यक्ति चिंता में डूबा रहता है।

भाग्य रेखा-जिस जातक के हाथ में भाग्य रेखा ना हो और गुरु पर्वत पर स्पष्ट एक रेखा खड़ी हो तो यह रेखा भाग्य रेखा जैसा ही फल देती है। इसे महत्त्वाकांक्षा रेखा के नाम से जाना जाता है और यह रेखा व्यक्ति को वर्ष ३६ के बाद श्रेष्ठ फल देती है। भाग्य रेखा अगर शनि की उंगली पर चढ़ती हो तो वह जातक अधिक प्रोग्रेस के बाद जीवन में एक बार निष्फलता का सामना करता है। भाग्य रेखा पतली और गहराई वाली होनी चाहिये। अन्यथा मोटी, भाग्य रेखा शुभ फल देने में असमर्थ रहती है। स्त्री जातक की भाग्य रेखा चंद्र के पर्वत से निकलती हो तो शादी के बाद ससुराल पक्ष का भाग्योदय होता है। जीवन रेखा से निकलने वाली भाग्यरेखा वाले जातक का भाग्योदय स्व प्रयत्नों से होता है, ऐसे जातक को किसी और स्वजन का सहयोग प्राप्त नहीं होता है। हथेली में जहां भाग्य रेखा डबल होती है वह गोल्डन पीरियड होता है। अगर भाग्य रेखा के साथ दो अन्य रेखा सहयोगी रेखा के रूप में हों तो ऐसे जातक के कमाने के स्त्रोत एक से अनेक होते हैं। मणिबंध से निकलकर भाग्य रेखा अगर मस्तक रेखा तक आकर रुक जायें तो ऐसे जातक को वर्ष २३ में परिवार की जिम्मेदारियां आ पड़ती हैं। पुरुष जातक की भाग्य रेखा चंद्र पर्वत से निकलती हो तो ऐसे जातक सर्विस करते हैं। या फिर अपने बिजनेस में सहयोगी पार्टनर से व्यापार करते हैं। मणिबंध से निकलती भाग्य रेखा में मत्स का चिन्ह हो तो यह शुभ चिन्ह है। यह जातक सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करता है और उसका भाग्योदय जल-स्थल या प्रवाही चीजों के व्यापार से होता है। जंजीरनुमां भाग्य रेखा या भाग्य रेखा में यव होना शुभफल नहीं देता। जिस वर्ष पीरियड में यह अशुभ चिन्ह हो तो जातक को ओवर रिस्क वाले काम नहीं करने चाहिये। भाग्य रेखा का हल्का झुकाव बुध पर्वत की तरफ हो तो ऐसे जातक चालाकी और चतुराई से भाग्योदय करते हैं। अगर यह झुकाव गुरु पर्वत की तरफ हों तो सामाजिक कामों के साथ-साथ प्रगति और उन्नति होती है।

यदि भाग्य रेखा सीधी है और चंद्र पर्वत से कोई रेखा निकलकर इसमें मिले तो इसका अर्थ यह है कि किसी अन्य व्यक्ति के सहयोग से भविष्य बनेगा। यदि भाग्य रेखा को हृदय रेखा की कोई शाखा रोकती हों तो ऐसे जातक की प्रगति सफलता को कोई प्रेम संबंध के कारण रुकती है। शुक्र पर्वत से कोई रेखा निकलकर अगर भाग्य रेखा से मिले तो ऐसे जातक प्रेम भावना में ज्यादा खिंचाव रखते हैं। लहरेदार भाग्य रेखा वाले जातक जीवन में कई बार मार्ग बदलते रहते हैं। भाग्य रेखा जीवन रेखा के अंदर से निकलती है तो यह भौतिक सुख का चिन्ह है। भाग्य रेखा, मस्तक रेखा और स्वास्थ्य रेखा से अगर त्रिभुज बनता है तो यह गूढ़ रहस्य जानने वाला जातक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

व्यक्ति चिंता में डूबा रहता है। ... से मिल तो ऐसे जातक प्रेम भावना में ज्यादा ...
भाग्य रेखा-जिस जातक के हाथ में भाग्य रेखा ना ... निकलती है तो यह भौतिक सुख का चिन्ह है। भाग्य रेखा,
रेखा भाग्य रेखा जैसा ही फल देती है। इसे महत्वाकांक्षा रेखा के नाम से जाना जाता है और यह रेखा व्यक्ति ... मस्तक रेखा और स्वास्थ्य रेखा से अगर त्रिभुज बनता है तो यह गूढ़ रहस्य जानने वाला जातक होता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००६ ई. में शेयर मार्केट की तेजी-मंदी

लेखक-प्रवीन कुमार जैन ज्योतिष भवन, सी-३६७, कैलाश विहार योजना सं.१ कल्याणपुर, कानपुर-२०८०१७ फोन नं. ०५१२-२५७५००४ मो. ९३३६३४२४८५

शेयर बाजार का सैंसेक्स तीस स्क्रिप्स रिलायंस, इन्फोसिस टेक्नोलोजी, आई.सी.आई.सी.आई बैंक, आई.टी.सी., एच.डी.एफ.सी, ओ.एन.जी.सी., हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, स्टेट बैंक आफ इंडिया, भारती टेलीकॉम, टिस्को, एल एण्ड टी, सत्यम् कम्प्यूटर, रैनबैक्सी लैब, टी.सी.एस, एन.टी.पी.सी, टाटा मोटर्स, विप्रो, बजाज ऑटो, हिण्डाल्को ग्रासिम इण्डस्ट्री, बी.एच.ई.एल, ए.सी.सी, रिलायंस एनर्जी, गुजरात अम्बुजा सीमेन्ट, हीरो होण्डा, सिप्ला, टाटा पावर, डा. रेड्डी, मारुती उद्योग जैसे स्क्रिप्स पर आधारित है। सैंसेक्स बाजार की प्रवृति का सूचक है तथापि यदि बाजार का सैंसेक्स बढ़ रहा हो तो यह आवश्यक नहीं है कि उस दिन सभी शेयरों के भावों में वृद्धि हो रही है। सैंसेक्स बाजार की प्रवृति का द्योतक है। ७५ प्रतिशत शेयरों के भाव गिरने के बावजूद सैंसेक्स ऊंचा रह सकता है तथा रहा है। जून तथा जुलाई २००५ में प्राय: ऐसे अवसर आये हैं। अत: बाजार से जिसे सैकेण्डरी मार्केट कहते हैं, कोई शेयर खरीदने से पहले उसका विश्लेषण आवश्यक है।

शेयर बाजार आकस्मिक लाभ का बाजार है। ज्योतिष विज्ञान के अनुसार इसकी राशि वृष तथा लग्न राशि २० अंश वृश्चिक मानी गई है। बाजार पर शनि, मंगल, गुरु, यूरेनस, नेपच्यून के गोचर के अतिरिक्त बुध-शुक्र के उदयास्त तथा इनकी सूर्य से अंशात्मक युति का प्रभाव पड़ता है। ग्रहों की युति में सूर्य-गुरु, मंगल-सूर्य, मंगल-शुक्र, गुरु-सूर्य, गुरु-बुध तथा राहु-गुरु महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त राजनैतिक वातावरण, सरकार की नीतियां, विदेशी इन्वेस्टमेन्ट जैसे अन्य तत्वों का आकलन विश्लेषण भी आवश्यक होता है। ज्योतिषीय भाषा में इसे देश काल परिस्थिति कहा जाता है।

जनवरी मास- १ जनवरी २००६ का शुभारंभ पौष मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से हुआ है। कृष्ण पक्ष में पंचमी की वृद्धि तथा शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा की हानि हुई है। मास में ५ शुक्र तथा ५ शनिवार हैं। अत: बाजार का रुख एक तरफा रहने की संभावना अधिक है। १५ जनवरी २००६ रविवार से माघ मास का प्रारंभ हो रहा है। मास में पांच रविवार तथा सोमवार हैं। कृष्ण पक्ष में सप्तमी तिथि की वृद्धि होकर द्वादशी की हानि हुई है। शुक्ल पक्ष में चतुर्थी का क्षय, चतुर्दशी की वृद्धि हुई है। अमावस्या रविवार की तथा पूर्णिमा सोमवार की है। चन्द्र दर्शन सोमवार का ३० मुहूर्ति है। कुंभ संक्रांति माघ शुक्ल चतुर्दशी रविवारी १५ मुहूर्ति बैठी हुई है। मास में बुध तथा मंगल का राशि परिवर्तन हुआ है।

ग्रह गोचर तथा वर्ष की लग्न कुण्डली के अनुसार वर्ष २००६ का प्रारंभ बाजार की तेजी से होगा। पूरे वर्ष में वित्तीय प्रबन्ध नीतियों, उदारीकरण, विदेशी निवेश के कारण बाजार में तेजी का वातावरण रहेगा। २ जनवरी को वर्ष २००६ का प्रथम दिन का बाजार तेजी के साथ खुलेगा। सिल्क मिक्स, टेक्सटाईल मिल्स (अरविन्द, महावीर स्पिनिंग), शुगर इण्डस्ट्रीज (मवाना, बिनानी, धामपुर), आई.टी.सी., जी.टी.सी. के शेयरों में तेजी रहेगी। बैंकिंग शेयर आई.सी.आई.सी.आई, पी.एन.बी., एच.डी.एफ.सी., ओरियन्टल बैंक, नैस्ले काफी, टाटा टी, आयरन एण्ड स्टील के शेयरों में गिरावट आयेगी। १० जनवरी उ.षा. नक्षत्र का सूर्य बाजार में अभूतपूर्व तेजी देगा। मशीन, रियल एस्टेट, चाय, काफी के शेयरों के अतिरिक्त अन्य सभी शेयरों में तेजी रहेगी। १३ जनवरी बाजार में सभी प्रकार के शेयरों में तेजी दर्ज होगी। सीमेन्ट, गुजरात अम्बुजा, ए.सी.सी. एवं बैंकों के शेयरों में सुधार होगा। २० जनवरी बाजार में तेजी का रुख रहेगा। जी टेली फिल्मस, सीमेन्ट, रबर, जे.के. टायर्स, सिएट एवं अपोलो टायर्स के शेयरों में तेजी तथा अन्य शेयरों में रुख सामान्य होगा। ३० जनवरी में साधारण तेजी रहेगी। व्यापार में वृद्धि होगी। बिजनेस वाल्यूम हाई रहेगा। ए.सी.सी., गुजरात अम्बुजा सीमेन्ट, एल.जी. इलेक्ट्रोनिक्स, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, एन.टी.पी.सी., आई.टी., सत्यम भारती टेलिकॉम, जी टेली फिल्मस, बाला जी टेलीविजन के शेयरों में तेजी आयेगी।

फरवरी मास-फाल्गुन मास का प्रारंभ मंगलवार से हो रहा है। मास में ५ मंगलवार हैं। देश में बीमारियों का प्रकोप होगा। पूर्णिमा मंगल तथा अमावस्या सोमवारी है। मास में बुध-सूर्य-शुक्र का राशि परिवर्तन हुआ है। चन्द्र दर्शन शतभिषा का है। सूर्य की मीन संक्रांति ३० मुहूर्ति बैठी हुई मंगलवार की है। माघ मास में खप्पर योग बना है। युद्ध, विग्रह अथवा झगड़ों की स्थिति के कारण लड़ाई-झगड़ों का वातावरण बनेगा।

२ फरवरी में बाजार में तेजी रहेगी। शुगर, जूट, टेक्सटाईल्स, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, एन.टी.पी.सी. के शेयरों में तेजी आयेगी। बैंकों के शेयरों में घटबढ़ होगी। पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रिवरीज के शेयर्स तेजी के साथ खुलकर घाटा दर्ज करेंगे। टाटा टी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील के शेयरों में गिरावट दर्ज होगी। ८ फरवरी चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील, सीमेन्ट, स्टील्स, रबर एवं टायर्स के शेयरों में तेजी आयेगी। आई.टी., जी टेली फिल्मस, बाला जी टेलीविजन के शेयरों में तेजी का रुख बना रहेगा। अन्य शेयरों में मंदी के रुख के साथ सामान्य व्यापार होगा। ९ फरवरी शतभिषा का बुध बाजार तेजी कारक है। हिंडाल्को एवं बैंक्स के शेयरों में घटाबढ़ी रहेगी। डिस्टलरीज (यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान) के शेयरों में गिरावट आयेगी। चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील, सीमेन्ट में तेजी का रुख बरकरार रहेगा। १६ फरवरी चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील, सीमेन्ट, शुगर, जूट, टेक्सटाईल, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, एन.टी.पी.सी. के शेयरों में तेजी आयेगी। शुगर, जूट, टेक्सटाईल के शेयरों में गिरावट रहेगी। टर्न ओवर में कमी रहेगी। २३ फरवरी बाजार में मिला जुला रुख रहेगा। पेट्रोलियम, होटल्स, आयल इन्डस्ट्रीज, डिस्टलरीज (यू.बी., मोहन मीकिन्स, रेडिको, खेतान), लेदर, फुटवियर एण्ड टेनरीज के शेयरों में तेजी रहेगी। शुगर, जूट, टेक्सटाईल, सिल्क इण्डस्ट्रीज के शेयरों में मंदी रहेगी। २८ फरवरी में बाजार में सुधार होकर तेजी का रुख रहेगा। चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील, सीमेन्ट, शुगर, जूट, टेक्सटाईल, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, शुगर, जूट, टैक्सटाईल, सिल्क इण्डस्ट्रीज के शेयरों में तेजी रहेगी। नेवीगेशन, आॅटोमोबाईल्स, जी टेलीविजन, बाला जी टेली फिल्मस, एड लैब्स के शेयरों में गिरावट रहेगी।

मार्च मास-१५ मार्च बुधवार से चैत्र मास का प्रारंभ होगा। मास में पांच बुधवार तथा गुरुवार हैं। यह शेयरों के भावों में तेजी कारक है। शुक्र-मंगल तथा बुध का राशि परिवर्तन हुआ है। कृष्ण पक्ष में १ तिथि की वृद्धि ११ की हानि हुई है। सूर्य की मेष संक्रांति गुरुवारी बैठी हुई ३० मुहूर्ति है। चन्द्र दर्शन रेवती नक्षत्र ३० मार्च का है। सूर्य ग्रहण २९ मार्च का है।

१ मार्च में बाजार साधारण मंदी से प्रारंभ होकर तेजी पर बंद होगा। यू.बी. डिस्टलरीज, मोहन मीकीन्स, ए.सी.सी., गुजरात अम्बुजा, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, इलेक्ट्रोनिक गुड्स, एन.टी.पी.सी., आई.टी., टाटा टी, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील, सीमेन्ट, सिएट, अपोलो, जे.के. टायर्स तथा रबर शेयरों में तेजी आयेगी। एड लैब्स, जी टेली फिल्मस, बाला जी टेलीविजन के शेयरों में साधारण परिवर्तन होगा। ८ मार्च पेट्रोलियम, होटल्स, डिस्टलरीज के शेयरों में गिरावट आयेगी। चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील, सीमेन्ट, शुगर, जूट, टेक्सटाईल, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, सिल्क इन्डस्ट्रीज, टेनरी एण्ड फुटवियर के शेयरों में तेजी बनी रहेगी। बजाज आॅटो, मारुती उद्योग, हीरो होण्डा तथा अन्य आॅटोमोबाईल शेयरों में गिरावट आयेगी। १५ मार्च में गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज के विषय में कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय होगा। आॅटोमोबाईल सैक्टर के शेयरों में गिरावट का दौर बना रहेगा। कंज्यूमर इलेक्ट्रोनिक्स गुड्स की कंपनियों, बी.पी.एल., वीडियोकॉन आदि के शेयरों में गिरावट रहेगी। लेदर, टेनरी एवं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फुटवियर के शेयर्स में तेजी बनी रहेगी। २१ मार्च में बढ़ती तेजी पर कुछ अंकुश रहेगा। इलेक्ट्रोनिक्स गुड्स, जी टेली फिल्मस, पब्लिक ट्रान्सपोर्ट, ऑटोमोबाईल इन्डस्ट्री, एवीयेशन के शेयरों में गिरावट आयेगी। डिस्टलरीज के शेयरों में चमक आयेगी। २२ मार्च में चाय, काफी, रियल एस्टेट, आयरन एण्ड स्टील, इलेक्ट्रानिक गुड्स, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, रीबोक, लेदर एवं टैनरी के शेयर्स में तेजी आयेगी। टैक्सटाईल, शुगर प्रोसेस्ड फूड में गिरावट आयेगी। ३० मार्च डाबर, यू.बी. डिस्टलरीज, मोहन मीकीन्स, कोल फील्ड एवं माईनिंग, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, इलेक्ट्रानिक्स गुड्स, टैनरी एण्ड फुटवियर के शेयरों में तेजी रहेगी। बजाज ऑटो, मारुती उद्योग, हीरो होण्डा तथा अन्य ऑटोमोबाईल शेयरों में गिरावट आयेगी। ३१ मार्च में पुन: शेयरों के भावों में वृद्धि होगी। डिस्टलरीज, हिण्डालको के शेयरों में गिरावट रहेगी।

अप्रैल मास-१४ अप्रैल शुक्रवार वैशाख मास का प्रारंभ होगा। कृष्ण पक्ष में चतुर्दशी का क्षय होकर शुक्ल पक्ष में एकादशी की वृद्धि हुई है। यह योग शुभ फलदायक है। मास में पांच शुक्र शुभ फलदायक हैं।

७ अप्रैल का बाजार तेजी से प्रारंभ होगा। टेक्सटाईल, शुगर, कॉटन मिल्स तथा जूट के शेयरों में गिरावट आयेगी। १० अप्रैल शेयरों के भावों में वृद्धि होगी। शुक्र-शनि तथा राहु का अंशात्मक साम्य तेजी में सहायक होगा। १७ अप्रैल ब्रीवर्ज, सीमेन्ट, स्टील्स, लेदर, फार्मास्युटिकल, ओ.एन.जी.सी. के शेयरों में वृद्धि तो चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, बाला जी टेली फिल्मस, ऑटोमोबाईल, हिण्डाल्को, सोफ्ट ड्रिंक्स कम्पनियों के शेयरों में गिरावट होगी। २० अप्रैल शेयरों के भावों में साधारण मंदी रहेगी। शुगर, टेक्सटाईल, ब्रीवरेज, सीमेन्ट, स्टील, बिजली के सामान के शेयरों में वृद्धि होगी। लेदर, फार्मास्युटिकल, ओ.एन.जी.सी. के शेयरों में वृद्धि तो चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, बाला जी टेली फिल्मस, ऑटोमोबाईल, हिण्डाल्को, सोफ्ट ड्रिंक्स कम्पनियों के शेयरों में गिरावट आयेगी। २५ अप्रैल में बाजार तेजी के साथ खुलेगा। परन्तु बाजार की तेजी में परिवर्तन के साथ ही शेयरों में घटाबढ़ी देखने में आयेगी। ऑटोमोबाईल, नेवीगेशन, हिण्डाल्को के बाजार का रुख पूर्ववत रहेगा।

मई मास-१४ मई रविवार से ज्येष्ठ मास का आरंभ हुआ है। मास में पांच रविवार अशुभ तथा नेष्ट फलकारक हैं। भय का वातावरण सृजित करने वाले हैं। कृष्ण पक्ष में षष्ठी तिथि की हानि हुई है। १४ मई में शुक्र का पूर्व दिशा में उदय हुआ है। वृष संक्रांति बैठी हुई १५ मुहूर्ति है। चन्द्र दर्शन २८ मई रोहिणी नक्षत्र का है।

१ मई का प्रारंभ शुगर, जूट, कॉटन, टेक्सटाईल, पैकेज्ड फूड्स के शेयरों में तेजी से होगा। मराल ओवरसीज, नाहर स्पिनिंग, सेंचुरी टेक्सटाईल्स, लेदर, टैनरीज एण्ड फुट वियर के शेयरों में तेजी आयेगी। ५ मई का बाजार मंदी से शुरू होगा। अधिकांश शेयरों के भावों तथा चलती लाईन में परिवर्तन आयेगा। हैवी मशीनरी, चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील, सीमेन्ट के शेयरों में गिरावट आयेगी। १० मई शेयरों के भावों में सामान्य वृद्धि होते हुए भी बाजार में मंदी का रुख रहेगा। गुरु-मंगल का अंशात्मक साम्य शेयरों के भावों में वृद्धि करेगा। बैंकिंग सैक्टर के शेयरों में गिरावट दर्ज होगी। स्टील, लेदर, टैनरीज के शेयरों में वृद्धि होगी। १२ मई शेयरों के भावों में गिरावट होगी। टैक्सटाईल, शुगर, सिल्क मिल्स, बैंक्स के शेयरों में गिरावट अधिक होगी। १९ मई में अधिकांश शेयरों के मूल्यों में, गवर्नमेन्ट सिक्योरिटीज, विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि होगी। हैवी मशीनरी, चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एण्ड स्टील, सीमेन्ट, शुगर, जूट, कॉटन, टेक्सटाईल, पैकेज्ड फूड्स के शेयरों में तेजी रहेगी। २६ मई बाजार तेजी का रहेगा। हैवी मशीनरी, चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एण्ड स्टील, लेदर, टैनरीज, सीमेन्ट के शेयर में लाभ कमा ले जायेंगे। ३० मई पुष्य नक्षत्र का मंगल शेयरों के भावों में मिलाजुला रुख रखेगा। बैंक्स के शेयरों में गिरावट जारी रहेगी। फार्मास्युटिकल कम्पनीज, आई.ओ.सी., ओ.एन.जी.सी. के शेयरों में वृद्धि होगी।

जून मास-१२ जून सोमवार से आषाढ़ मास का प्रारंभ हुआ है। मास में पांच सोमवार तथा पांच मंगलवार हैं। सूर्य की मिथुन संक्रांति १५ जून को ३० मुहूर्ति बैठी हुई है। शुक्र का उदय पूर्व दिशा में हुआ है। चन्द्र दर्शन २७ जून में पुनर्वसु नक्षत्र का है। शुक्ल पक्ष में सप्तमी तिथि की वृद्धि तथा कृष्ण पक्ष में नवमी का क्षय हुआ है।

जून मास में ग्रहों की स्थिति के अनुसार बाजार में सामान्य रुख बना रहेगा। मास में सीमेन्ट, फार्मास्युटिकल तथा आयल कम्पनीज, रिफायनरीज-आई.ओ.सी., ओ.एन.जी.सी. के शेयरों में वृद्धि होगी। अन्य सभी शेयरों में मिलाजुला रुख रहेगा। ट्रेन्ड मंदी का होगा। ६ जून-टर्न ओवर में वृद्धि के बावजूद अधिकांश शेयरों में मिले जुले रुख के साथ गिरावट दर्ज होगी। ९ जून शेयरों के भावों में साधारण मंदी रहेगी। १५ जून शेयरों में सुधार होगा। बिजली, चाय, काफी, सीमेन्ट तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर के शेयरों में वृद्धि होगी। १९ जून बुध कर्क राशि में प्रवेश करेंगे। शेयर बाजार की गतिविधियों में न्यूनता रहेगी। टर्न ओवर कम होगा। हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट, आयरन एण्ड स्टील, सीमेन्ट, कॉपर, लैड, कॉटन टेक्सटाईल्स, जूट मिल्स के शेयरों के भावों में वृद्धि होगी। २६ जून में कॉटन टेक्सटाईल्स, सिल्क, जूट, शुगर कम्पनीज, कंज्यूमर इलेक्ट्रोनिक्स के शेयरों में चमक बनी रहेगी। अन्य शेयरों में मिलाजुला रुख रहेगा। २९ जून बाजार में तेजी का वातावरण बनेगा। बैंक्स के शेयरों के अतिरिक्त अन्य सभी शेयरों में वृद्धि की स्थिति बनेगी।

जुलाई मास-११ जुलाई मंगलवार से श्रावण मास का प्रारंभ हुआ है। मास में पांच मंगल तथा पांच बुधवार हैं। कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा का क्षय हुआ है। कर्क संक्रांति ४५ मुहूर्ति बैठी हुई है। चन्द्र दर्शन २६ जुलाई बुधवारी आश्लेषा नक्षत्र का है।

५ जुलाई शेयरों में मंदी का रुख रहेगा। बाजार की गतिविधियों में कमी आयेगी। विदेशी मुद्रा भंडार में कमी होगी। इलेक्ट्रोनिक गुड्स, चाय, कॉफी, हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट के शेयरों में वृद्धि तथा अन्य सभी शेयरों में गिरावट रहेगी। बैंक, फिल्मस, सीमेन्ट के शेयरों में गिरावट विशेष रूप से आयेगी। १२ जुलाई में कंज्यूमर इलेक्ट्रोनिक्स, बी.पी.एल., वीडियोकॉन, सिल्क कॉटन टैक्सटाईल, शुगर कम्पनीज, आई.टी.सी. के शेयरों में वृद्धि होगी। अन्य शेयरों में गिरावट का दौर आयेगा। १९ जुलाई शुक्र का आर्द्रा में प्रवेश पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रीवरीज के शेयरों में गिरावट देगा। सिल्क कॉटन टेक्सटाईल, शुगर के शेयरों में तेजी होगी। बाजार में टर्न ओवर बढ़ेगा। २६ जुलाई में सिल्क, कॉटन, टैक्सटाईल, शुगर कम्पनीज, आई.टी.सी., लेदर इन्डस्ट्रीज, चाय, कॉफी, सीमेन्ट, हैवी मशीनरीज, आयरन एण्ड स्टील कम्पनीज तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर के शेयरों में गिरावट आयेगी। विदेशी इन्वेस्टमेन्ट में वृद्धि से बाजार में सुधार होगा।

अगस्त मास-१० अगस्त शुक्रवार से भाद्रपद मास का प्रारंभ हुआ है। मास में पांच गुरुवार हैं। सिंह संक्रांति बुधवारी सूती ४५ मुहूर्ति है। चन्द्र दर्शन शुक्रवारी पू.फा. नक्षत्र का है। कृष्ण पक्ष में तृतीया का क्षय हुआ है। शुक्ल पक्ष में तृतीया की वृद्धि होकर चतुर्दशी का क्षय हुआ है। शुक्र पूर्व दिशा में उदित हुए हैं।

१ अगस्त में बाजार तेजी से प्रारंभ होगा। बाजार में एफ.आई.आईजीज का इन्वेस्टमेन्ट बढ़ेगा। सिल्क कॉटन, टेक्सटाईल, शुगर कम्पनीज, टायर्स के शेयर्स में घटा बढ़ी के बाद तेजी रहेगी। वूलेन इन्डस्ट्रीज (रेमण्ड्स, दिग्जाम, ओ.सी.एम.), के शेयरों में लाभ होगा। ८ अगस्त सामान्य रूप से शेयर्स के भावों में वृद्धि का दिन है। परन्तु इस दिन ऑटोमोबाईल्स, जी टेलीविजन, बालाजी फिल्मस, मुक्ता आर्ट्स, हिण्डाल्को, साफ्ट ड्रिंक्स के शेयरों में गिरावट दर्ज होगी। अन्य सभी शेयरों के भावों में वृद्धि के संकेत हैं। १८ अगस्त शेयरों के भावों में वृद्धि होगी। १९ अगस्त २००५ के दिन श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की शुक्रवारी पूर्णिमा से शेयर बाजार में तेजी के पश्चात् सामान्य रुख रहेगा। २१ अगस्त बाजार में तेजी का वातावरण बनेगा। बाजार में टर्न ओवर में वृद्धि होगी। पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रीवरीज, सिल्क, जूट स्पिनिंग, कॉटन टेक्सटाईल, शुगर मिल्स, फिल्मस, एड लैब्स के शेयरों में वृद्धि होगी। इन्श्योरेन्स कम्पनीज, बैंक्स, क्लोथ मिल्स के शेयरों में गिरावट आयेगी। २८ अगस्त शेयर बाजार का रुख सामान्य रहेगा। भावों में मिलाजुला रुख रहेगा। सैंसेक्स में मामूली परिवर्तन होगा। विदेशी मुद्रा भंडार में कमी होगी। पेट्रोलियम, होटल्स ब्रीवरीज, चाय, कॉफी, हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट, आयरन एण्ड स्टील,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फूड्स के शेयरों में तेजी से होगा। मराल ओवरसीज, नाहर स्पिनिंग, सैंचुरी टेक्सटाईल, लेदर, टैनरीज एण्ड फुट वियर के शेयरों में तेजी | जुलाई मास-१ जुलाई मंगलवार से श्रावण मास का प्रारंभ हुआ है। मास में पांच मंगल तथा पांच बुधवार हैं। कृष्ण पक्ष में | विदेशी मुद्रा भंडार में कमी होगी। पेट्रोलियम, होटल्स ब्रीवरीज, चाय, कॉफी, हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट, आयरन एण्ड स्टील,

आँटोमोबाईल्स, जी टेलीविजन, एड लैब्स के शेयरों में गिरावट रहेगी। सीमेन्ट, सिल्क, कॉटन, अरविन्द मिल्स, जूट के शेयरों में तेजी आयेगी। व्यापारिक गतिविधियों में न्यूनता रहेगी। ३० अगस्त बैंकिंग, शुगर, सिल्क, जूट, स्पिनिंग, कॉटन, टेक्सटाईल, तम्बाकू, आई.टी.सी., गॉडफ्रे, फिलिप्स, इन्श्योरेन्स कम्पनीज के शेयरों में गिरावट रहेगी। लेदर एण्ड टेनरी, स्टील्स के शेयरों में तेजी रहेगी। ३१ अगस्त बाजार में सुधार होकर तेजी का रुख बनेगा। पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रीवरीज के शेयरों में तेजी रहेगी।

सितम्बर मास-८ सितम्बर शुक्रवार से आश्विन मास का आरंभ हुआ है। मास में पांच शुक्र तथा पांच शनि हैं। कृष्ण पक्ष में तृतीया घटी है तथा एकादशी की वृद्धि हुई है। चन्द्र दर्शन चित्रा नक्षत्र का रविवारी है। कन्या संक्रांति बैठी हुई ४५ मुहूर्ति शनिवारी है।

४ सितम्बर में बाजार का रुख तेजी की ओर रहेगा। पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रीवरीज, सीमेन्ट, वूलेन इन्डस्ट्री, लेदर इन्डस्ट्री तथा इलेक्ट्रानिक्स कम्पनीज के शेयरों में वृद्धि होगी। बैंकिंग, आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, एड लैब्स, जी टेलीफिल्म, हिण्डाल्को के शेयरों में गिरावट रहेगी। ७ सितम्बर चन्द्र ग्रहण है इस दिन बुध का प्रवेश उ.फा. में होगा। सैंसेक्स में गिरावट आयेगी। सामान्य रूप से सभी शेयरों में गिरावट का रुख रहेगा। १२ सितम्बर का बाजार शेयरों में गिरावट से खुलेगा तथा कंज्यूमर इलेक्ट्रीकल्स की कम्पनियों के अतिरिक्त सभी शेयरों में गिरावट का रुख दिन भर बना रहेगा। १८ सितम्बर में बाजार में मंदी की धारणा बनी रहेगी। होटल्स, पेट्रोलियम एवं रिफाईनरीज, ब्रीवरीज कम्पनियों के शेयरों में तेजी तथा अन्य सभी शेयरों में गिरावट रहेगी। २३ सितम्बर आई.ओ.सी., ओ.एन.जी.सी., रिलायंस एनर्जी, मोहन मीकीन्स, आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, हिण्डाल्को के शेयरों में गिरावट आयेगी। टैनरी एण्ड फुट वियर के शेयरों में वृद्धि होगी। २८ सितम्बर बाजार में मंदी रहेगी। सभी शेयरों में घटाबढ़ी बनेगी। आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, हिण्डाल्को के शेयरों में गिरावट जारी रहेगी। आई.टी. तथा इलेक्ट्रोनिक्स कम्पनीज, टैनरी एण्ड फुटवियर के शेयरों में वृद्धि होगी।

अक्टूबर मास-७ अक्टूबर शनिवार से कार्तिक मास का आरंभ हुआ है। चन्द्र दर्शन मंगलवारी विशाखा नक्षत्र का है। तुला संक्रांति बैठी हुई ३० मुहूर्ति मंगलवारी है। मास में कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा का क्षय होकर चतुर्दशी की वृद्धि हुई है। शुक्ल पक्ष में द्वादशी का क्षय हुआ है। मास में पांच शनिवार तथा रविवार हैं।

५ अक्टूबर शेयरों में मंदी का दौर जारी रहेगा। विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आयेगी। ११ अक्टूबर बाजार में मंदी को हवा देगा। पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रीवरीज, इलेक्ट्रानिक्स कम्पनीज, वीडियोकॉन, एल.जी. के शेयरों में सुधार होगा। अन्य शेयरों में मंदी बनेगी। १७ अक्टूबर सूर्य की तुला संक्रांति-बाजार में उत्साह नहीं होगा। व्यापार का स्तर सामान्य रहेगा। शेयरों में मंदी बनी रहेगी। २० अक्टूबर बाजार मंदी के दौर से नहीं उबर पायेगा। बैंक्स, आई.टी.सी., जूट, इन्श्योरेन्स, टैक्सटाईल्स, शुगर कम्पनीज, पैकेज्ड फूड्स के शेयरों में सर्वाधिक गिरावट आयेगी। २७ अक्टू. में बुध वक्री हो रहे हैं तथा गुरु का प्रवेश वृश्चिक राशि में हो रहा है। पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रीवरीज, टेक्सटाईल्स, पैकेज्ड फूड्स के भावों में सामान्य तेजी होगी। बैंक्स, आई.टी.सी., इन्श्योरेन्स, जूट के भावों में मंदी का रुख होगा। शुगर इन्डस्ट्रीज के शेयर्स में सर्वाधिक घटाबढ़ी बनेगी।

नवम्बर मास-६ नवम्बर सोमवार से मार्गशीर्ष मास का प्रारंभ हुआ है। शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा की हानि हुई है। वृश्चिक संक्रांति गुरुवारी बैठी हुई ३० मुहूर्ति है। शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा का क्षय हुआ है। मास में पांच सोमवार हैं।

६ नवम्बर सूर्य का प्रवेश विशाखा नक्षत्र में-शेयरों के भावों में सामान्य तेजी होगी। व्यापारिक गतिविधियों में न्यूनता होगी। बैंक्स, आई.टी.सी., जूट, इन्श्योरेन्स, कॉटन टैक्सटाईल, शुगर के शेयरों में वृद्धि का दौर चालू रहेगा। बैंक्स, आई.टी.सी., जूट, इन्श्योरेन्स, कॉटन टैक्सटाईल, टेनरीज के शेयरों में सुधार होगा। अन्य शेयरों में गिरावट का दौर रहेगा। १० नवम्बर का बाजार मंदा है। हैवी मशीनरी, आँटोमोबाईल्स, बजाज ऑटो, हीरो होण्डा, मारुती उद्योग, चाय, कॉफी, रियल एस्टेट, आयरन एवं स्टील, टिस्को, भूषण स्टील, सीमेन्ट के शेयरों में गिरावट का दौर प्रभावी रहेगा। जे.के. टायर, अपोलो टायर्स, बैंकिंग शेयर्स, आई.टी.सी., जूट, इन्श्योरेन्स, कॉटन टैक्सटाईल, मोदी रेवलोन के शेयरों में तेजी रहेगी। १४ नवम्बर में बाजार का रुख मिला जुला होगा। बैंक्स, आई.टी.सी., जूट, इन्श्योरेन्स, कॉटन टैक्सटाईल, शुगर कम्पनीज के शेयरों में वृद्धि का दौर बना रहेगा। आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, एवीयेशन, अल्यूमीनीयम कम्पनीज तथा फिल्म उद्योग से जुड़ी कम्पनीज के शेयरों में गिरावट आयेगी। १६ नवम्बर सूर्य की संक्रांति शेयरों के भावों में सामान्य तेजी होगी। आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, एवीयेशन, अल्यूमीनीयम कम्पनीज तथा फिल्म उद्योग के शेयरों में गिरावट जारी रहेगी। बैंक्स, आई.टी.सी., जूट, इन्श्योरेन्स, कॉटन टैक्सटाईल्स, शुगर कम्पनीज के शेयरों में वृद्धि का दौर चालू रहेगा। समग्र रूप से बाजार में मिला जुला प्रभाव अधिक होगा। २३ नवम्बर में व्यापारिक गतिविधियों में कमी नजर आयेगी। आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, एवीयेशन, अल्यूमीनीयम कम्पनीज तथा फिल्म उद्योग के शेयरों में गिरावट जारी रहेगी। चाय, कॉफी, हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट के शेयरों में गिरावट आयेगी। बैंक्स, आई.टी.सी., जूट, इन्श्योरेन्स, कॉटन टैक्सटाईल्स, शुगर कम्पनीज के शेयरों में वृद्धि का दौर चालू रहेगा। पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रीवरीज के शेयरों में वृद्धि होगी। ३० नवम्बर में मास का अंत मंदी के दौर से होगा। सर्वाधिक मंदी आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, एवीयेशन, अल्यूमीनीयम तथा फिल्म उद्योग के शेयरों में होगी। चाय, कॉफी, हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट, कॉटन टैक्सटाईल, शुगर के शेयरों में तेजी आयेगी।

दिसम्बर मास-५ दिसम्बर मंगलवार से पौष मास का आरंभ हुआ है। पूर्णिमा तथा अमावस्या बुधवारी है। मास में पांच मंगल तथा पांच बुध हैं। कृष्ण पक्ष में सप्तमी की वृद्धि हुई है। शुक्ल पक्ष में नवमी का क्षय हुआ है। मास की धनु संक्रांति शुक्रवारी १५ मुहर्ति बैठी हुई है।

१ दिसम्बर बाजार में तेजी की धारणा को बल मिलेगा। परन्तु बाजार का टर्न ओवर सामान्य रहेगा। चाय, कॉफी, हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट, पेट्रोलियम एवं रिफायनरीज, होटल्स, ब्रीवरीज के शेयरों में तेजी आयेगी। आँटोमोबाईल्स, नवीगेशन, एवीयेशन, अल्युमीनीयम कम्पनीज तथा फिल्म उद्योग के शेयरों में मंदी जारी रहेगी। ६ दिसम्बर बुध अनुराधा नक्षत्र में तथा शुक्र मूल नक्षत्र में होंगे। बाजार का टर्न ओवर बढ़ेगा। शेयरों के भावों में सामान्यतया मंदी होगी। आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, एवीयेशन, अल्यूमीनीयम कम्पनीज तथा फिल्म उद्योग के शेयरों में मंदी जारी रहेगी। चाय, कॉफी, हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट के शेयरों में तेजी आयेगी। १६ दिसम्बर के बाजार में आँटोमोबाईल्स, नेवीगेशन, एवीयेशन, अल्यूमीनीयम कम्पनीज तथा फिल्म उद्योग के शेयरों में मंदी जारी रहेगी। चाय, कॉफी, हैवी मशीनरी, रियल एस्टेट के शेयरों में तेजी आयेगी। बैंक्स, आई.टी.सी., जूट, इन्श्योरेन्स, कॉटन टैक्सटाईल, शुगर के शेयरों में वृद्धि होगी। २६ दिसम्बर शेयरों के भावों में सामान्य तेजी होगी।

वर्ष २००६ में शेयर बाजार का संभावित रुख उस मास एवं दिवस में ग्रह गोचर को ध्यान में रखकर किया गया है। जिस पर स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त कम्पनियों के कामकाज का प्रभाव पड़ता है। बाजार में काम करने वाले व्यक्तियों पर उसकी ग्रह दशा, महादशा एवं अन्तर्दशा का प्रभाव पड़ता है। कुण्डली के राजयोग प्रभावी होकर किसी व्यक्ति को शेयर बाजार से लाभ दे सकते हैं तो दारिद्र्य योग प्रभावी होकर हानि भी पहुंचा सकते हैं। अतः उस बाजार में कार्य करते समय किसी योग्य ज्योतिषी से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त कर लेना उचित होगा। ग्रह गोचर के आधार पर किया गया वर्ष २००६ का आकलन बिना किसी पूर्वाग्रह के प्रस्तुत किया है। तथा इस संदर्भ में इस आधार पर किये गये व्यापार के लिये लेखक सम्पादक एवं मुद्रक किसी भी रूप में लाभ या हानि के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। प्रस्तुति का उद्देश्य भारतीय ज्योतिष की समृद्ध परम्परा को पुनर्जीवित कर सुस्थापित करना है। लेखक से सम्पर्क सायं ७ बजे के बाद ०५१२ २५७५००४ अथवा ०९३३६३४२४८५ पर किया जा सकता है। **शुभं अस्तु।**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य सन् 2006 ई.

लेखक -श्री रामावतार गुप्त "व्यापार भूषण" राव उमराव सिंह मार्किट, आर्य समाज रोड, नई सब्जी मण्डी, जिला-रेवाड़ी-123401 (हरियाणा)

वर्षा योग सन् 2006 ई.

वर्षा होने के कुछ नियम-

मंडल बदले कोई ग्रह या उदय अस्त हो।
रवि उत्तर-दखिनायन मावस पूनम क्षय हो।
अतिचारी हो क्रूर ग्रह साधारण बरसाय।
सौम्यग्रह वक्री चले सावन उत्तर वाय।
पछवा चले मास दस, वर्षा होय सुहाय।
गुरु उदय शुक्रास्त हो, मंगल वर्षे मेह।
अथवा सूर्य देव आर्द्रा पर जब आये।
यही नियम है साधारण वर्षा तक आये।

अर्थात् कोई भी ग्रह राशि बदले या अस्त-उदय हो, सूर्यदेव उत्तरायण अथवा दक्षिणायन हो, मावस या पूनम का क्षय हो। कोई भी क्रूर ग्रह अतिचारी गति से अधिक चले या सौम्य ग्रह वक्री चले, मंगल अपनी राशि बदले या सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश करे तब प्राय: वर्षा हो जाती है। यह प्राय: नियम है। प्राय: अन्य ग्रहों की पोजिशन दखल अंदाजी से वर्षा होना जरूरी नहीं है। भारत में जब पूर्वी पवन चलती है, सावन में उत्तर की वायु चले तथा शेष महीने में पश्चिम की वायु चले तो वह वर्षाकारक होती है।

आधा प्रहर आषाढ़ में वर्षे एक प्रहर हो ज्येष्ठ।
वैशाखे दो प्रहर, चैत्र में सिर्फ एक दिन वर्षा नेष्ट।
फागुन में दो दिन वर्षे, अरु माघ महीने में दिन तीन।
है अकाल सूचक यह वर्षा, संवत हो वर्षा से हीन।

तात्पर्य यह है कि यदि आषाढ़ में केवल चार घड़ी, ज्येष्ठ में एक प्रहर, वैशाख में दो प्रहर, चैत्र में एक दिन (आठ प्रहर) वर्षा हो तो नेष्ट (खराब) फल होता है। फागुन में दो दिन, माघ में तीन दिन हो तो यह वर्षा अकाल होने की सूचना देती है।

जल राशि के चन्द्र से नवें सातवें धान। शनि हो अथवा भूमि सुत, वर्षा होय महान। ता. २४ जनवरी दोपहर से २६ जनवरी सायंकाल तक, ता. २० फरवरी २०।४८ बजे से, २२ फरवरी २७।१५ बजे तक जोरदार वर्षा। ता. २० एवं २१ मार्च दो दिन महान वर्षा, ता. १६ अप्रेल से १८ अप्रेल दोपहर तक, ता. १३ मई १५।१३ बजे से १५ मई २१।४६ बजे तक, ता. १० एवं ११ जून दो दिन महान वर्षा। ता. ७ से ९ जुलाई दोपहर तक महान वर्षा, ता. ३ अगस्त सायं से ५ अगस्त तक, ता. ३१ अगस्त तथा ता. १ सितम्बर तक, ता. २७ सितम्बर से २९ सितंबर सायं तक, ता. २४ अक्टूबर दोपहर से २६ अक्टूबर तक, इस दौरान उत्तरी-पश्चिमी मध्य हिन्दुस्तान में कहीं पर अच्छी वर्षा होने के योग हैं।

"आगे मंगल पीछे भान, वर्षा होवे ओस समान" के अनुसार १७ अगस्त से २९ अगस्त तक वर्षा बन्द रहेगी। इस दौरान कहीं-कहीं मामूली तौर पर वर्षा हो सकती है। अन्यथा वर्षा की कमी तो रहेगी। संवत् का राजा गुरु होने से आसोज मास में वर्षा अधिक होती है। परन्तु सुदी ४ से बुध का उदय वर्षा में रुकावट पैदा कर सकता है। ता. १८ जून को कर्क राशि में मंगल-शनि की युति होगी। करीब १०-१५ दिन पूर्व से दो सप्ताह बाद तक कभी भी जोरदार वर्षा लायेगा। प्रमुख नदियों में बाढ़ की स्थिति पैदा होगी।

ता. १ अप्रेल से ११ अप्रेल तक बुध-शुक्र योग पर गुरु की दृष्टि से घनघोर वर्षा हो सकती है। परन्तु यहां गुरु वक्री चल रहा है। अत: विपरीत फल भी हो सकता है। एवं ता. १७ जुलाई से ५ अगस्त तक उपरोक्त योग से जोरदार वर्षा संभव है। यहां १७ जुलाई से २९ जुलाई तक बुध वक्री रहने से विपरीत फल भी संभव है। बाद में ५ अगस्त तक जोरदार वर्षा होनी चाहिए।

वर्षा ऋतु में भोम शनि आय बसै इक गेह। वर्षा हो दो मास तक, फिर ना वर्षे मेह॥ ता. २५ मई से ११ जुलाई तक जल राशि (कर्क) में दोनों के योग से भारतवर्ष में प्राय: जगहों पर भारी वर्षा होगी। यहां २५।५ से १३।६ तक गुरु, शुक्र अपोजिशन योग वर्षा में रुकावट भी पैदा कर सकता है।

एक राशि पर आ बसै, गुरु शुक्र और सूर। वर्षा कारक योग यह ज्योतिष में मशहूर॥ यह योग १७ नवम्बर से २७ नवम्बर तक है। अत: इस दौरान अच्छी वर्षा संभव है।

"एक जगह गुरु शुक्र हो, बने युद्ध आसार। अनावृष्टि अतिवृष्टि से दु:ख पावै संसार॥" ता. १३ नवम्बर से १६ नवम्बर तक उपरोक्त योग है। इस दौरान अच्छी वर्षा होगी। अथवा युद्ध, उग्रवाद संबंधी चर्चा चलेगी। स्थूल रूप से इस दौरान इस योग पर कोई क्रूर ग्रह की दृष्टि न होने से इस दौरान अच्छी वर्षा होने की संभावना ज्यादा है।

"अतिचारी गुरुदेव हो, शनि जो वक्री चाल। तब वर्षा होवे नहीं, खेती हो पामाल॥" ता. ७ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक योग है। वर्षा बंद, फसलों को नुकसान तथा बाजारों में तेजी चलेगी। परन्तु ७।१२ से १५।१२ तक जल राशि में चार ग्रहों का योग वर्षा कारक भी है।

"बुध के आगे सूर्य हो, पीछे मंगल जान। सुख सुभिक्ष संसार में सुन्दर वर्षा मान॥" यह योग ता. १३ से १६ नवंबर तक है। इस दौरान उत्तम वर्षा तथा सुभिक्ष होने से सुख-शांति रहे। इस दौरान गुरु-शुक्र का योग भी अच्छी वर्षा में सहायक है।

"सम सप्तम गुरु शुक्र होय अथवा भृगु सुत सूर। अथवा सूरज गुरु रहे, समझो वर्षा दूर॥" गुरु शुक्र का अपोजिशन योग २५ मई से १८ जून तक वर्षा में रुकावट पैदा करेगा। इसी दौरान कर्क में मंगल शनि का योग महा वर्षाकारक भी है। अत: खण्ड वृष्टि इस दौरान हो सकती है। तथा सूर्य गुरु का अपोजिशन योग १३ अप्रेल से १४ मई तक वर्षा बन्द रखेगा।

चैत्र सुदी पंचमी में १२।१४ बजे उपरांत रोहिणी योग सुदी ७ को १२।५० बजे उपरांत आर्द्रा योग सुदी ९ को १६।२९ बजे उपरांत पुष्य नक्षत्र का योग होने से आगे वर्षा का गर्भ पुष्ट होता है। यदि इन दिनों जिन क्षेत्रों में वर्षा बिल्कुल नहीं होगी, वहां पर वर्षा काल में उत्तम वर्षा होगी। एवं वर्षा हो जाए तो उन क्षेत्रों में वर्षा नहीं होगी। सूखा पड़ेगा। परीक्षित है। अपने-अपने क्षेत्रों में शकुन देखकर वर्षा काल का अनुमान लगा सकते हैं।

"मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र। ज्योतिष का सिद्धांत है, वर्षा हो सर्वत्र॥" के अनुसार फागुन कृष्ण पक्ष में (१६ फरवरी), चैत्र शुक्ल पक्ष में पूनम को (१३ अप्रेल), बैशाख गुरुवारी मावस में (२७ अप्रेल), श्रावण कृष्ण पक्ष में (१३ जुलाई), मंगशिर कृष्ण पक्ष में (९ नवम्बर) को उपरोक्त योग है। संबंधित पक्ष में या मास में अच्छी वर्षा संभव है।

"चार पांच ग्रहों का बने एक राशि पर योग। वर्षा अथवा युद्ध से दुख पावैं सब लोग॥" ता. ८ अगस्त से १६ अगस्त तक (कर्क) राशि में अच्छी वर्षा, ता. १७ सितं. से ११ अक्टू. तक (कन्या), शनि की दृष्टि से खण्ड वर्षा, ता. १९ अक्टू. से २७ अक्टू. तक (तुला) दक्षिणी-पश्चिमी क्षेत्रों में महावर्षा, ता. १ नवं. से १२ जन. तक (तुला) अच्छी वर्षा एवं २८ नवंबर से ६ दिसम्बर तक (वृश्चिक) भारी वर्षा संभव है।

"सावन में वर्षे नहीं, चित्रा स्वाती विशाख। नदी किनारे घर करो, पानी के अभिलाष॥" ता. ३१ जुला. सायं से ३ अगस्त तक उपरोक्त नक्षत्र है। इस दौरान जिन क्षेत्रों, इलाकों, गावों, शहर आदि में उपरोक्त नक्षत्रों में जहां पर वर्षा नहीं होगी, वहां पर आगे वर्षा नहीं होगी। वर्षा होने से आगे वर्षा की आशा रहेगी।

"चित्रा स्वाती विशाखा ना वर्षे भादव मास। वर्षा काल समाप्त हो रखो ना आगे आस॥" ता. २८ से ३० अगस्त तक उपरोक्त नक्षत्र है। उपयुक्त क्षेत्रों में जहां वर्षा नहीं होगी, वहां पर आगे वर्षा नहीं होगी। वर्षा काल समाप्त हुआ समझना चाहिए।

"रवि के आगे वृहस्पति तब अग्नि का जोर। गुरु के आगे सूर्य तो वर्षा हो चहुं ओर॥" ता. १७ से २७ अक्टू. तक इस दौरान अग्निकाण्डों की अधिकता से जनता में हाहाकार। पूर्वी उत्तरी मध्य भारत में वर्षा बन्द रहेगी। एवं २ नवं. से १५ दिसं. तक गुरु के आगे सूर्य चल रहा है। अत: उपरलिखित क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है।

"जब-जब ही बुध वृहस्पति मिल बैठे इक गेह। तब-तब ही संसार में बरसे नाहीं मेह॥" ता. २८ सितम्बर से १४ अक्टूबर तक उपरोक्त योग से वर्षा बन्द रहेगी।

"दुतिया तृतीया जेठ सुदी आवे आर्द्रा रिक्ष। वर्षे तो कर्षे नमी, दर्से दुख दुर्भिक्ष" ता. २९ मई को स्टै.टा. ७।१० बजे से २४ घंटे के अन्दर जिन क्षेत्रों, इलाकों, गांव, शाहरों आदि में वर्षा होगी। वहां पर आगे वर्षाकाल में वर्षा की बेहद कमी रहेगी। अत: आज वर्षा का होना अशुभ है।

"पुरुष नखत चन्दा चले, नारी नखत पर सूर। वर्षा कारक योग यह ज्योतिष में मशहूर॥" स्त्री-पुरुष योग:- ता. २२ से २५ जून तक, ता. १० जुलाई से २२ जुलाई तक, ता. ६ से १८ अगस्त तक, ता. २ से १४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.
ता. २३ अगस्त या ७ सितम्बर को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, चांदी,
पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाए। सभी वस्तु मंदी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर तक, ता. ३० सितं. से १२ अक्टू. तक, ता. २७ अक्टू. से ६ नवं. तक उपरोक्त योग है। इस दौरान प्रायः सभी जगहों पर अच्छी वर्षा हो सकती है।

''कातिक तेरस को रहें पांच ग्रह दूक ठोर। उमड़-उमड़ नदियां बहें, वर्षा हो घनघोर॥'' कातिक बदी १३ को पांच ग्रहों के योग से आगे घनघोर वर्षा होने की संभावना है।

स्त्री-स्त्री योगः-ता. २६ जून से ५ जुलाई तक, ता. २३ जुलाई से २ अगस्त तक, ता. १९ अगस्त से २९ अगस्त तक, ता. १५ सितं. से २५ सितं. तक, ता. १३ अक्टू. से २३ अक्टू. तक उपरोक्त योग है। इस दौरान वायु अधिक चलेगी। आकाश में बादल छाएँगे। अल्प बूंदा-बांदी या खण्ड वर्षा होगी।

स्त्री-नपुंसक योगः-ता. ६ से ९ जुलाई, ता. ३ से ५ अगस्त, ता. ३० अगस्त से १ सितंबर तक, ता. २६ सितं. से २९ सितं. तक, ता. २४ अक्टू. से २६ अक्टू. तक उपरोक्त योग है। इस दौरान गर्मी-धूप की तीव्रता, अवर्षण रहेगा।

''अनुराधा सुदी सप्तमी आवे भादव मास। इस दिन वर्षे नहीं आगे छोड़ो आस॥'' ता. ३१ अगस्त को सुबह ७।१४ उपरांत आज जिन क्षेत्रों में वर्षा नहीं होगी, वहां पर वर्षा काल समाप्त हुआ समझ लेना चाहिए। वर्षा होने पर उन क्षेत्रों में कार्तिक सुदी एकादशी तक वर्षा होने की आशा रहेगी।

-: अमावस्या एवं पूर्णमासी से तेजी-मंदी विचार :-

किसी भी पूर्णमासी (पूनम) अथवा अमावस्या को ग्रहण हो या भूकम्प हो, अतिवृष्टि हो, या ओले बहुत गिरें या काले पीले रंग की घोर तूफान आवे या धूमकेतु (पुच्छलतारा) दिखे या बिजली भयंकर गर्जना करके कई स्थानों पर गिरे या सूर्य-चन्द्रमा पर कुण्डल (घेरा) दिखाई दे या आकाश पर टिड्डी दल दिखाई दें आदि को ''उत्पात'' कहते है। इसका विचार पूनम अथवा मावस को ही किया जाता है।

ता. २९ जनवरी को यदि कोई उत्पात हो तो उर्द, मूंग, चना, जौ, गेहूं, लोहा, तांबा का शीघ्र स्टॉक करके एक मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. २७ फरवरी या १४ मार्च को यदि काई उत्पात हो तो गेहूं, जौ, चना, मक्की, बाजरा, गुंवार, मटर, अरहर, लोहा, लोहे से बनी वस्तुएं, तांबा आदि का शीघ्र संग्रह करके एक मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ।

ता. २९ मार्च या १३ अप्रेल को यदि कोई उत्पात हो तो खनिज पदार्थ, हीरा, पुखराज, पन्ना, नीलम, मुदसिन, सोना, चांदी, समस्त धातुएं, कोयला आदि का स्टॉक करके छठे मास बेचने से अच्छा लाभ होगा।

ता. २७ अप्रेल या १३ मई को यदि कोई उत्पात हो तो गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, गल्ला आदि का शीघ्र स्टॉक करके यहां से चौथे मास में बेचने से अच्छा लाभ हो।

ता. २७ मई या ११ जून को यदि उत्पात हो तो कन्द-मूल पदार्थ, आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, मूंगफली, अदरख आदि का शीघ्र स्टॉक करके यहां से चौथे मास में बेचने से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है।

ता. २५ जून या १० जुलाई को यदि कोई उत्पात हो तो हर प्रकार के रस पदार्थ, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी, तेलों, नमक आदि का स्टॉक करके यहां से छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा।

ता. २४/२५ जुलाई या ९ अगस्त को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा आदि धातुएं, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी का अतिशीघ्र स्टॉक करके एक मास बाद बेचने से उत्तम लाभ होगा।

ता. २३ अगस्त या ७ सितम्बर को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, नीलम, हीरा, चांदी, लाख, चपड़ा आदि का स्टॉक करके यहां से पांचवे मास में बेचने से अच्छा लाभ।

ता. २२ सितम्बर या ६/७ अक्टूबर को यदि कोई उत्पात हो तो समस्त पशु, हाथी, घोड़ा, ऊंट, खच्चर, गधा, गाय, भैंस आदि को खरीद कर यहां से छठे मास में बेचने से उत्तम लाभ हो।

ता. २१/२२ अक्टूबर या ५ नवंबर को यदि कोई उत्पात हो तो जुवार, बाजरा, मक्का, केसर, कस्तूरी, हल्दी, पीले रंग की वस्तुएं, घी, उड़द, मूंग, सर्व प्रकार के रत्न आदि का स्टॉक करके छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा।

ता. २० नवंबर या ४ दिसंबर को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, चांदी, लोहा, पीतल, पत्थर का कोयला, जस्ता, शीशा आदि तुरन्त खरीदकर एक महीने के अन्दर कभी भी तेजी आने पर बेचने से अच्छा लाभ होगा।

ता. २० दिसम्बर या ३ जनवरी २००७ को यदि कोई उत्पात हो तो मोती, मूंगा, हीरा, जवाहरात, रत्न आदि केसर, कस्तूरी, सुगन्धित पदार्थों का स्टॉक करके यहां से छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा।

-: स्टॉक के अवसर (पीरियड) सन् २००६ ई. :-

१. **पड़वा पाचैं चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे, तेजी हो जब छीन॥** के अनुसार पोष सुदी एकम् (१ जनवरी) का क्षय पक्ष में तेजी कारक। माघ सुदी पक्ष १४ की वृद्धि (१२ फरवरी) मंदी कारक। भादव सुदी १४ का क्षय (७ सितं.) आगे तेजी कारक।

२. **पोष सुदी एकादशी को कृतिका नक्षत्र। लाल वस्तुओं में रहे, खूब लाभ सर्वत्र॥** के अनुसार संभवतः (आषाढ़ मास) में लाल वस्तुओं के व्यापार में अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। तथा प्रथम अच्छी वर्षा होने तक अन्न के व्यापार से लाभ होगा। सोना होली तक तेज रहने की संभावना है।

३. **उदयास्त सप्ताह में अगर शुक्र हो जाए। भ्रान्त अशांत प्रजा रहे, दुख नितांत अधिकाए॥** ता. १० जनवरी को अस्त होकर १५ जनवरी को उदय होगा। सर्वप्रमुख वस्तुओं में जोरदार चाल निकलेगी। मास में उपद्रव, रक्तपात, किसी राज्य का मंत्रीमंडल भंग, प्रजा अशांत एवं दुखी रहे।

४. **कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाए। सभी वस्तुएँ तेज हों, सस्तापन हट जाए॥** के अनुसार पोष मास संवत् २०६२ में बदी ६ की वृद्धि एवं सुदी एकम् का क्षय एवं कातिक बदी १४ की वृद्धि एवं सुदी १२ का क्षय एवं पोष बदी ५ की वृद्धि एवं सुदी ५ का क्षय से उपरोक्त मासों में प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में जनरल लाईन तेज रहेगी।

५. **जो शशि उगै सोम शनि एक अचम्बो जिय जोय। छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जु महंगों होय॥** ता. ३० जनवरी, ता. २९ अप्रेल, ता. २४ सितंबर को उपरोक्त वारों में चन्द्रदर्शन हुआ है। इन तारीखों से एक मास के अंतर्गत किसी राज्य का मंत्रीमंडल भंग अथवा परिवर्तन होगा। तथा अनाजों में तेजी आयेगी।

६. **कृष्ण पक्ष में तिथि घटे, किन्तु सुदी बढ़ जाए। होय सुभिक्ष, सुकाल, सुख महंगाई हट जाए॥** के अनुसार बैशाख बदी १४ का क्षय तथा सुदी एकादशी की वृद्धि। आषाढ़ कृष्ण २ का क्षय एवं सुदी ६ की वृद्धि। भादव कृष्ण ४ का क्षय एवं सुदी ३ की वृद्धि होगी। उपरोक्त मासों में अनाजादि अन्य वस्तुओं में जनरल लाईन मंदी रहेगी।

७. **जेहि पखवारे तिथि बढ़ै, वाही में घट जाए। सभी वस्तु मंदी रहे, महंगाई हट जाए॥** माघ कृष्ण पक्ष संवत् २०६२, चैत्र कृष्ण पक्ष संवत् २०६२, भादव शुक्ल पक्ष के अनुसार उपरोक्त पक्षों में प्रथम तेजी आकर बाद में बाजार में मंदी आ जायेगी।

८. **किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाए। ग्राहक मांगे मूंग घी बिक्रेता नट जाए॥** माघ शुक्ल ४ का क्षय, चैत्र सुदी ४ का क्षय से इन पक्षों में घी, मूंग आदि दलहन पदार्थों में जनरल लाईन तेज रहेगी। तथा भादव सुदी ३ की वृद्धि से पक्ष में जनरल लाईन मंदी रहेगी।

९. **ज्येष्ठा आर्द्रा शतभिषा स्वाती सुलेखा माहिं। जो सूर्य संक्रमण हो, महंगा अन्न बिकाहिं॥** ता. १२ फरवरी कुंभ संक्रांति, ता. १४ मई वृष संक्रांति, ता. १५ दिसम्बर धनु संक्रांति, उपरोक्त नक्षत्रों में प्रवेश से संक्रांति प्रभाव काल में अन्न तेज रहेगा।

१०. **बदी बाढ़ै सुदी घटे, क्रूर वार संक्रांति। छत्र भंग अरु अवर्षण पीड़ित प्रजा निता न्त॥** के अनुसार पोष मास संवत् २०६२, कातिक मास २०६३ को उपरोक्त योग है। उपरोक्त मास की संक्रांति काल व्यापारिक वस्तुओं में तेजी, वर्षा की कमी तथा प्रजा में पीड़ा तथा एक मास के अंदर किसी राज्य का मंत्रीमंडल भंग अथवा परिवर्तन हो।

११. **शतभिषा तीनों पूर्वा तथा रोहिणी हस्त। किसी मास की एकम् को हो तो महंगा धान समस्त॥** फागुन शुक्ल पक्ष २०६२, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, भाद्रपद शुक्ल पक्ष, आश्विन मास में दोनों पक्षों में, पौष कृष्ण पक्ष में उपरोक्त योग है। संबंधित पक्षों में अनाजों में जनरल लाईन तेज रहे।

१२. **जेठ बदी एकम् पड़े रवि मंगल बुधवार। संक्रामक रोगों का रहे गर्म बाजार॥** के अनुसार ज्येष्ठ मास में संक्रामक रोग हैजा, मलेरिया, बुखार आदि रोगों से जनता को कष्ट होगा। पांच रविवार होने से मास में विषेष गर्मी पड़ सकती है।

१३. **षष्ठी आषाढ़े बदी जो शनिवारी आव। गेहूं संग्रह कीजिए, कातिक उत्तम भाव॥** यह योग १७ जून को आया है। मौका देखकर मंदी में गेहूं अनाज का स्टॉक कातिक में उत्तम लाभ देगा।

१४. **साढ़ बदी चौदश दिना होय रोहिणी योग। कर्फ्यू अरु कंट्रोल से दुख पावैं सब लोग॥** के अनुसार मास में साम्प्रदायिक दंगे, हड़ताल, कर्फ्यू आदि से जनता परेशान रहेगी।

१५. **सावन पहले पाख में कोई तिथि घट जाए। काहू-काहू देश में लरिका बेचे जाए॥** के अनुसार मास में किसी प्रांत में बच्चों के बेचे जाने की घटनाएं घटित होंगी। अखवार, टी.वी साक्षी होंगे।

१६. **शनि बुध सूरज साथ जब इक राशि इक सेज। जो गेहूं चावल चना जुवार बाजरा तेज॥** ता. १६-७-०६ से उपरोक्त योग है। उपरोक्त वस्तुएं तेज होंगी।

१७. **बुध शुक्र दोनों बसे, चन्दा के घर जाए। तो दारुण दुर्भिक्ष हो महंगा अन्न बिकाए॥** ता. ५ अगस्त से उपरोक्त योग अनाजों में अच्छी तेजी लायेगा।

१८. **सूरज बुध पीछे रहे, आगे मंगल भेज, प्रजा कष्ट पाती रहे, गल्ला गेहूं तेज।** ता. २४ अगस्त से यह योग आया है। अनाज, गल्ला माल तेज होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य सन् 2006 ई.

लेखक -श्री रामावतार गुप्त ''व्यापार भूषण'' राव उमराव सिंह मार्किट, आर्य समाज रोड, नई सब्जी मण्डी, जिला-रेवाड़ी-123401 (हरियाणा)

वर्षा योग सन् 2006 ई.

वर्षा होने के कुछ नियम-

मंडल बदले कोई ग्रह या उदय अस्त हो।
रवि उत्तर-दखिनायन मावस पूनम क्षय हो।
अतिचारी हो क्रूर ग्रह साधारण बरसाय।
सौम्यग्रह वक्री चले सावन उत्तर वाय।
पछवा चले मास दस, वर्षा होय सुहाय।
गुरु उदय शुक्रास्त हो, मंगल वर्षे मेह।
अथवा सूर्य देव आर्द्रा पर जब आये।
यही नियम है साधारण वर्षा तक आये।

अर्थात् कोई भी ग्रह राशि बदले या अस्त-उदय हो, सूर्यदेव उत्तरायण अथवा दक्षिणायन हो, मावस या पूनम का क्षय हो। कोई भी क्रूर ग्रह अतिचारी गति से अधिक चले या सौम्य ग्रह वक्री चले, मंगल अपनी राशि बदले या सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश करे तब प्राय: वर्षा हो जाती है। यह प्राय: नियम है। प्राय: अन्य ग्रहों की पोजिशन दखल अंदाजी से वर्षा होना जरूरी नहीं है। भारत में जब पूर्वा पवन चलती है, सावन में उत्तर की वायु चले तथा शेष महीने में पश्चिम को वायु चले तो वह वर्षाकारक होती है।

आधा प्रहर आषाढ़ में वर्षे एक प्रहर हो ज्येष्ठ।
वैशाखे दो प्रहर, चैत्र में सिर्फ एक दिन वर्षा नेष्ट।
फागुन में दो दिन वर्षे, अरु माघ महीने में दिन तीन।
है अकाल सूचक यह वर्षा, संवत हो वर्षा से हीन।

तात्पर्य यह है कि यदि आषाढ़ में केवल चार घड़ी, ज्येष्ठ में एक प्रहर, वैशाख में दो प्रहर, चैत्र में एक दिन (आठ प्रहर) वर्षा हो तो नेष्ट (खराब) फल होता है। फागुन में दो दिन, माघ में तीन दिन हो तो यह वर्षा अकाल होने की सूचना देती है।

जल राशि के चन्द्र से नवें सातवें धान। शनि हो अथवा भूमि सुत, वर्षा होय महान। ता. २४ जनवरी दोपहर से २६ जनवरी सायंकाल तक, ता. २० फरवरी २०।८ बजे से, २२ फरवरी २७।१५ बजे तक जोरदार वर्षा। ता. २० एवं २१ मार्च दो दिन महान वर्षा, ता. १६ अप्रेल से १८ अप्रेल दोपहर तक, ता. १३ मई १५।१३ बजे से १५ मई २१।४६ बजे तक, ता. १० एवं ११ जून दो दिन महान वर्षा। ता. ७ से ९ जुलाई दोपहर तक महान वर्षा, ता. ३ अगस्त सायं से ५ अगस्त तक, ता. ३१ अगस्त तथा ता. १ सितम्बर तक, ता. २७ सितम्बर से २९ सितंबर सायं तक, ता. २४ अक्टूबर दोपहर से २६ अक्टूबर तक, इस दौरान उत्तरी-पश्चिमी मध्य हिन्दुस्तान में कहीं पर अच्छी वर्षा होने के योग हैं।

''आगे मंगल पीछे भान, वर्षा होवे ओस समान'' के अनुसार १७ अगस्त से २९ अगस्त तक वर्षा बन्द रहेगी। इस दौरान कहीं-कहीं मामूली तौर पर वर्षा हो सकती है। अन्यथा वर्षा की कमी तो रहेगी। संवत् का राजा गुरु होने से आसोज मास में वर्षा अधिक होती है। परन्तु सुदी ४ से बुध का उदय वर्षा में रुकावट पैदा कर सकता है। ता. १८ जून को कर्क राशि में मंगल-शनि की युति होगी। करीब १०-१५ दिन पूर्व से दो सप्ताह बाद तक कभी भी जोरदार वर्षा लायेगा। प्रमुख नदियों में बाढ़ की स्थिति पैदा होगी।

ता. १ अप्रेल से ११ अप्रेल तक बुध-शुक्र योग पर गुरु की दृष्टि से घनघोर वर्षा हो सकती है। परन्तु यहां गुरु वक्री चल रहा है। अत: विपरीत फल भी हो सकता है। एवं ता. १७ जुलाई से ५ अगस्त तक उपरोक्त योग से जोरदार वर्षा संभव है। यहां १७ जुलाई से २९ जुलाई तक बुध वक्री रहने से विपरीत फल भी संभव है। बाद में ५ अगस्त तक जोरदार वर्षा होनी चाहिए।

वर्षा ऋतु में भोम शनि आय बसै इक गेह। वर्षा हो दो मास तक, फिर ना वर्षे मेह॥ ता. २५ मई से ११ जुलाई तक जल राशि (कर्क) में दोनों के योग से भारतवर्ष में प्राय: जगहों पर भारी वर्षा होगी। यहां २५।५ से १३।६ तक गुरु, शुक्र अपोजिशन योग वर्षा में रुकावट भी पैदा कर सकता है।

एक राशि पर आ बसै, गुरु शुक्र और सूर। वर्षा कारक योग यह ज्योतिष में मशहूर॥ यह योग १७ नवम्बर से २७ नवम्बर तक है। अत: इस दौरान अच्छी वर्षा संभव है।

''एक जगह गुरु शुक्र हो, बने युद्ध आसार। अनावृष्टि अतिवृष्टि से दु:ख पावै संसार॥'' ता. १३ नवम्बर से १६ नवम्बर तक उपरोक्त योग है। इस दौरान अच्छी वर्षा होगी। अथवा युद्ध, उग्रवाद संबंधी चर्चा चलेगी। स्थूल रूप से इस दौरान इस योग पर कोई क्रूर ग्रह की दृष्टि न होने से इस दौरान अच्छी वर्षा होने की संभावना ज्यादा है।

''अतिचारी गुरुदेव हो, शनि जो वक्री चाल। तब वर्षा होवे नहीं, खेती हो पामाल॥'' ता. ७ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक योग है। वर्षा बंद, फसलों को नुकसान तथा बाजारों में तेजी चलेगी। परन्तु ७।१२ से १५।१२ तक जल राशि में चार ग्रहों का योग वर्षा कारक भी है।

''बुध के आगे सूर्य हो, पीछे मंगल जान। सुख सुभिक्ष संसार में सुन्दर वर्षा मान॥'' यह योग ता. १३ से १६ नवंबर तक है। इस दौरान उत्तम वर्षा तथा सुभिक्ष होने से सुख-शांति रहे। इस दौरान गुरु-शुक्र का योग भी अच्छी वर्षा में सहायक है।

''सम सप्तम गुरु शुक्र होय अथवा भृगु सूत सूर। अथवा सूरज गुरु रहे, समझो वर्षा दूर॥'' गुरु शुक्र का अपोजिशन योग २५ मई से १८ जून तक वर्षा में रुकावट पैदा करेगा। इसी दौरान कर्क में मंगल शनि का योग महा वर्षाकारक भी है। अत: खण्ड वृष्टि इस दौरान हो सकती है। तथा सूर्य गुरु का अपोजिशन योग १३ अप्रेल से १४ मई तक वर्षा बन्द रखेगा।

चैत्र सुदी पंचमी में १२।१४ बजे उपरांत रोहिणी योग सुदी ७ को १२।५० बजे उपरांत आर्द्रा योग सुदी ९ को १६।२९ बजे उपरांत पुष्य नक्षत्र का योग होने से आगे वर्षा का गर्भ पुष्ट होता है। यदि इन दिनों जिन क्षेत्रों में वर्षा बिल्कुल नहीं होगी, वहां पर वर्षा काल में उत्तम वर्षा होगी। एवं वर्षा हो जाए तो उन क्षेत्रों में वर्षा नहीं होगी। सूखा पड़ेगा। परीक्षित है। अपने-अपने क्षेत्रों में शकुन देखकर वर्षा काल का अनुमान लगा सकते हैं।

''मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र। ज्योतिष का सिद्धांत है, वर्षा हो सर्वत्र॥'' के अनुसार फागुन कृष्ण पक्ष में (१६ फरवरी), चैत्र शुक्ल पक्ष में पूनम को (१३ अप्रेल), बैशाख गुरुवारी मावस में (२७ अप्रेल), श्रावण कृष्ण पक्ष में (१३ जुलाई), मंगशिर कृष्ण पक्ष में (९ नवम्बर) को उपरोक्त योग है। संबंधित पक्ष में या मास में अच्छी वर्षा संभव है।

''चार पांच ग्रहों का बने एक राशि पर योग। वर्षा अथवा युद्ध से दुख पावैं सब लोग॥'' ता. ८ अगस्त से १६ अगस्त तक (कर्क) राशि में अच्छी वर्षा, ता. १७ सितं. से ११ अक्टू. तक (कन्या), शनि की दृष्टि से खण्ड वर्षा, ता. १९ अक्टू. से २७ अक्टू. तक (तुला) दक्षिणी-पश्चिमी क्षेत्रों में महावर्षा, ता. १ नवं. से १२ जन. तक (तुला) अच्छी वर्षा एवं २८ नवंबर से ६ दिसम्बर तक (वृश्चिक) भारी वर्षा संभव है।

''सावन में वर्षे नहीं, चित्रा स्वाती विशाख। नदी किनारे घर करो, पानी के अभिलाष॥'' ता. ३१ जुला. सायं से ३ अगस्त तक उपरोक्त नक्षत्र है। इस दौरान जिन क्षेत्रों, इलाकों, गावों, शहर आदि में उपरोक्त नक्षत्रों में जहां पर वर्षा नहीं होगी, वहां पर आगे वर्षा नहीं होगी। वर्षा होने से आगे वर्षा की आशा रहेगी।

''चित्रा स्वाती विशाखा ना वर्षे भादव मास। वर्षा काल समाप्त हो रखो ना आगे आस॥'' ता. २८ से ३० अगस्त तक उपरोक्त नक्षत्र है। उपयुक्त क्षेत्रों में जहां वर्षा नहीं होगी, वहां पर आगे वर्षा नहीं होगी। वर्षा काल समाप्त हुआ समझना चाहिए।

''रवि के आगे बृहस्पति तब अग्नि का जोर। गुरु के आगे सूर्य तो वर्षा हो चहुं ओर॥'' ता. १७ से २७ अक्टू. तक इस दौरान अग्निकाण्डों की अधिकता से जनता में हाहाकार। पूर्वी उत्तरी मध्य भारत में वर्षा बन्द रहेगी। एवं २ नवं. से १५ दिसं. तक गुरु के आगे सूर्य चल रहा है। अत: उपरलिखित क्षेत्रों में वर्षा हो सकती है।

''जब-जब ही बुध बृहस्पति मिल बैठे इक गेह। तब-तब ही संसार में बरसे नाहीं मेह॥'' ता. २८ सितम्बर से १४ अक्टूबर तक उपरोक्त योग से वर्षा बन्द रहेगी।

''दुतिया तृतीया जेठ सुदी आवे आर्द्रा रिक्ष। वर्षे तो करषे नमी, दर्से दुख दुर्भिक्ष'' ता. २९ मई को स्टै.टा. ७।१० बजे से २४ घंटे के अन्दर जिन क्षेत्रों, इलाकों, गांव, शाहरों आदि में वर्षा होगी। वहां पर आगे वर्षाकाल में वर्षा की बेहद कमी रहेगी। अत: आज वर्षा का होना अशुभ है।

''पुरुष नखत चन्दा चले, नारी नखत पर सूर। वर्षा कारक योग यह ज्योतिष में मशहूर॥'' स्त्री-पुरुष योग:- ता. २२ से २५ जून तक, ता. १० जुलाई से २२ जुलाई तक, ता. ६ से १८ अगस्त तक, ता. २ से १४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

तौर पर वर्षा हो सकती है। अन्यथा वर्षा की कमी तो रहेगी। ... ता. १० जुलाई से २२ जुलाई तक, ता. ६ से १८ अगस्त तक, ता. २ से १४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर तक, ता. ३० सितं. से १२ अक्टू. तक, ता. २७ अक्टू. से ६ नवं. तक उपरोक्त योग है। इस दौरान प्रायः सभी जगहों पर अच्छी वर्षा हो सकती है।

''कातिक तेरस को रहें पांच ग्रह दूक ठोर। उमड़-उमड़ नदियां बहें, वर्षा हो घनघोर॥'' कातिक बदी १३ को पांच ग्रहों के योग से आगे घनघोर वर्षा होने की संभावना है।

स्त्री-स्त्री योगः- ता. २६ जून से ५ जुलाई तक, ता. २३ जुलाई से २ अगस्त तक, ता. १९ अगस्त से २९ अगस्त तक, ता. १५ सितं. से २५ सितं. तक, ता. १३ अक्टू. से २३ अक्टू. तक उपरोक्त योग है। इस दौरान वायु अधिक चलेगी। आकाश में बादल छाएँगे। अल्प बूंदा-बांदी या खण्ड वर्षा होगी।

स्त्री-नपुंसक योगः- ता. ६ से ९ जुलाई, ता. ३ से ५ अगस्त, ता. ३० अगस्त से १ सितंबर तक, ता. २६ सितं. से २९ सितं. तक, ता. २४ अक्टू. से २६ अक्टू. तक उपरोक्त योग है। इस दौरान गर्मी-धूप की तीव्रता, अवर्षण रहेगा।

''अनुराधा सुदी सप्तमी आवे भादव मास। इस दिन वर्षे नहीं आगे छोड़ो आस॥'' ता. ३१ अगस्त को सुबह ७।१४ उपरांत आज जिन क्षेत्रों में वर्षा नहीं होगी, वहां पर वर्षा काल समाप्त हुआ समझ लेना चाहिए। वर्षा होने पर उन क्षेत्रों में कार्तिक सुदी एकादशी तक वर्षा होने की आशा रहेगी।

-: अमावस्या एवं पूर्णमासी से तेजी-मंदी विचार :-

किसी भी पूर्णमासी (पूनम) अथवा अमावस्या को ग्रहण हो या भूकम्प हो, अतिवृष्टि हो, या ओले बहुत गिरें या काले पीले रंग की घोर तूफान आवे या धूमकेतु (पुच्छलतारा) दिखे या बिजली भयंकर गर्जना करके कई स्थानों पर गिरे या सूर्य-चन्द्रमा पर कुण्डल (घेरा) दिखाई दे या आकाश पर टिड्डी दल दिखाई दें आदि को ''उत्पात'' कहते है। इसका विचार पूनम अथवा मावस को ही किया जाता है।

ता. २९ जनवरी को यदि कोई उत्पात हो तो उर्द, मूंग, चना, जौ, गेहूं, लोहा, तांबा का शीघ्र स्टॉक करके एक मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. २७ फरवरी या १४ मार्च को यदि कोई उत्पात हो तो गेहूं, जौ, चना, मक्की, बाजरा, गुंवार, मटर, अरहर, लोहा, लोहे से बनी वस्तुएं, तांबा आदि का शीघ्र संग्रह करके एक मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ।

ता. २९ मार्च या १३ अप्रेल को यदि कोई उत्पात हो तो खनिज पदार्थ, हीरा, पुखराज, पन्ना, नीलम, मुदसिन, सोना, चांदी, समस्त धातुएं, कोयला आदि का स्टॉक करके छठे मास बेचने से अच्छा लाभ होगा।

ता. २७ अप्रेल या १३ मई को यदि कोई उत्पात हो तो गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, गल्ला आदि का शीघ्र स्टॉक करके यहां से चौथे मास में बेचने से अच्छा लाभ हो।

ता. २७ मई या ११ जून को यदि उत्पात हो तो कन्द-मूल पदार्थ, आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, मूंगफली, अदरख आदि का शीघ्र स्टॉक करके यहां से चौथे मास में बेचने से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है।

ता. २५ जून या १० जुलाई को यदि कोई उत्पात हो तो हर प्रकार के रस पदार्थ, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी, तेलों, नमक आदि का स्टॉक करके यहां से छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा।

ता. २४/२५ जुलाई या ९ अगस्त को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा आदि धातुएं, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी का अतिशीघ्र स्टॉक करके एक मास बाद बेचने से उत्तम लाभ होगा।

ता. २३ अगस्त या ७ सितम्बर को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, नीलम, हीरा, चांदी, लाख, चपड़ा आदि का स्टॉक करके यहां से पांचवे मास में बेचने से अच्छा लाभ।

ता. २२ सितम्बर या ६/७ अक्टूबर को यदि कोई उत्पात हो तो समस्त पशु, हाथी, घोड़ा, ऊंट, खच्चर, गधा, गाय, भैंस आदि को खरीद कर यहां से छठे मास में बेचने से उत्तम लाभ हो।

ता. २१/२२ अक्टूबर या ५ नवंबर को यदि कोई उत्पात हो तो जुवार, बाजरा, मक्का, केसर, कस्तूरी, हल्दी, पीले रंग की वस्तुएं, घी, उड़द, मूंग, सर्व प्रकार के रत्न आदि का स्टॉक करके छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा।

ता. २० नवंबर या ४ दिसंबर को यदि कोई उत्पात हो तो सोना, चांदी, लोहा, पीतल, पत्थर का कोयला, जस्ता, शीशा आदि तुरन्त खरीदकर एक महीने के अन्दर कभी भी तेजी आने पर बेचने से अच्छा लाभ होगा।

ता. २० दिसम्बर या ३ जनवरी २००७ को यदि कोई उत्पात हो तो मोती, मूंगा, हीरा, जवाहरात, रत्न आदि केसर, कस्तूरी, सुगन्धित पदार्थों का स्टॉक करके यहां से छठे मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा।

-: स्टॉक के अवसर (पीरियड) सन् २००६ ई. :-

१. **पड़वा पाचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे, तेजी हो जब छीन॥** के अनुसार पोष सुदी एकम् (१ जनवरी) का क्षय पक्ष में तेजी कारक। माघ सुदी पक्ष १४ की वृद्धि (१२ फरवरी) मंदी कारक। भादव सुदी १४ का क्षय (७ सितं.) आगे तेजी कारक।

२. **पोष सुदी एकादशी को कृतिका नक्षत्र। लाल वस्तुओं में रहे, खूब लाभ सर्वत्र॥** के अनुसार संभवतः (आषाढ़ मास) में लाल वस्तुओं के व्यापार में अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। तथा प्रथम अच्छी वर्षा होने तक अन्न के व्यापार से लाभ होगा। सोना होली तक तेज रहने की संभावना है।

३. **उदयास्त समाह में अगर शुक्र हो जाए। भ्रान्त अशांत प्रजा रहे, दुख नितांत अधिकाए॥** ता. १० जनवरी को अस्त होकर १५ जनवरी को उदय होगा। सर्वप्रमुख वस्तुओं में जोरदार चाल निकलेगी। मास में उपद्रव, रक्तपात, किसी राज्य का मंत्रीमंडल भंग, प्रजा अशांत एवं दुखी रहे।

४. **कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाए। सभी वस्तुऐं तेज हों, सस्तापन हट जाए॥** के अनुसार पोष मास संवत् २०६२ में बदी ६ की वृद्धि एवं सुदी एकम् का क्षय एवं कातिक बदी १४ की वृद्धि एवं सुदी १२ का क्षय एवं पोष बदी ५ की वृद्धि एवं सुदी ५ का क्षय से उपरोक्त मासों में प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में जनरल लाईन तेज रहेगी।

५. **जो शशि उगै सोम शनि एक अचम्बो जिय जोय। छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जु महंगों होय॥** ता. ३० जनवरी, ता. २९ अप्रेल, ता. २४ सितंबर को उपरोक्त वारों में चन्द्रदर्शन हुआ है। इन तारीखों से एक मास के अंतर्गत किसी राज्य का मंत्रीमंडल भंग अथवा परिवर्तन होगा। तथा अनाजों में तेजी आयेगी।

६. **कृष्ण पक्ष में तिथि घटे, किन्तु सुदी बढ़ जाए। होय सुभिक्ष, सुकाल, सुख महंगाई हट जाए॥** के अनुसार बैशाख बदी १४ का क्षय तथा सुदी एकादशी की वृद्धि। आषाढ़ कृष्ण २ का क्षय एवं सुदी ६ की वृद्धि। भादव कृष्ण ४ का क्षय एवं सुदी ३ की वृद्धि होगी। उपरोक्त मासों में अनाजादि अन्य वस्तुओं में जनरल लाईन मंदी रहेगी।

७. **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाए। सभी वस्तु मंदी रहे, महंगाई हट जाए॥** माघ कृष्ण पक्ष संवत् २०६२, चैत्र कृष्ण पक्ष संवत् २०६२, भादव शुक्ल पक्ष के अनुसार उपरोक्त पक्षों में प्रथम तेजी आकर बाद में बाजार में मंदी आ जायेगी।

८. **किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाए। ग्राहक मांगे मूंग घी बिक्रेता नट जाए॥** माघ शुक्ल ४ का क्षय, चैत्र सुदी ४ का क्षय से इन पक्षों में घी, मूंग आदि दलहन पदार्थों में जनरल लाईन तेज रहेगी। तथा भादव सुदी ३ की वृद्धि से पक्ष में जनरल लाईन मंदी रहेगी।

९. **ज्येष्ठा आर्द्रा शतभिषा स्वाती सुलेखा माहिं। जो सूर्य संक्रमण हो, महंगा अन्न बिकाहिं॥** ता. १२ फरवरी कुंभ संक्रांति, ता. १४ मई वृष संक्रांति, ता. १५ दिसम्बर धनु संक्रांति, उपरोक्त नक्षत्रों में प्रवेश से संक्रांति प्रभाव काल में अन्न तेज रहेगा।

१०. **बदी बाढ़े सुदी घटे, क्रूर वार संक्रांति। छत्र भंग अरु अवर्षण पीड़ित प्रजा निता न्त॥** के अनुसार पोष मास संवत् २०६२, कातिक मास २०६३ को उपरोक्त योग है। उपरोक्त मास की संक्रांति काल व्यापारिक वस्तुओं में तेजी, वर्षा की कमी तथा प्रजा में पीड़ा तथा एक मास के अंदर किसी राज्य का मंत्रीमंडल भंग अथवा परिवर्तन हो।

११. **शतभिषा तीनों पूर्वा तथा रोहिणी हस्त। किसी मास की एकम् को हो तो महंगा धान समस्त॥** फागुन शुक्ल पक्ष २०६२, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, भाद्रपद शुक्ल पक्ष, आश्विन मास में दोनों पक्षों में, पौष कृष्ण पक्ष में उपरोक्त योग है। संबंधित पक्षों में अनाजों में जनरल लाईन तेज रहे।

१२. **जेठ बदी एकम् पड़े रवि मंगल बुधवार। संक्रामक रोगों का रहे गर्म बाजार॥** के अनुसार ज्येष्ठ मास में संक्रामक रोग हैजा, मलेरिया, बुखार आदि रोगों से जनता को कष्ट होगा। पांच रविवार होने से मास में विषेश गर्मी पड़ सकती है।

१३. **षष्ठी आषाढ़े बदी जो शनिवारी आव। गेहूं संग्रह कीजिए, कातिक उत्तम भाव॥** यह योग १७ जून को आया है। मौका देखकर मंदी में गेहूं अनाज का स्टॉक कातिक में उत्तम लाभ देगा।

१४. **साढ़ बदी चौदश दिना होय रोहिणी योग। कर्फ्यू अरु कंट्रोल से दुख पावें सब लोग॥** के अनुसार मास में साम्प्रदायिक दंगे, हड़ताल, कर्फ्यू आदि से जनता परेशान रहेगी।

१५. **सावन पहले पाख में कोई तिथि घट जाए। काहू-काहू देश में लरिका बेचे जाए॥** के अनुसार मास में किसी प्रांत में बच्चों के बेचे जाने की घटनाएं घटित होंगी। अखबार, टी.वी साक्षी होंगे।

१६. **शनि बुध सूरज साथ जब इक राशि इक सेज। जो गेहूं चावल चना जुवार बाजरा तेज॥** ता. १६-७-०६ से उपरोक्त योग है। उपरोक्त वस्तुएं तेज होंगी।

१७. **बुध शुक्र दोनों बसे, चन्दा के घर जाए। तो दारुण दुर्भिक्ष हो महंगा अन्न बिकाए॥** ता. ५ अगस्त से उपरोक्त योग अनाजों में अच्छी तेजी लायेगा।

१८. **सूरज बुध पीछे रहे, आगे मंगल भेज, प्रजा कष्ट पाती रहे, गल्ला गेहूं तेज।** ता. २४ अगस्त से यह योग आया है। अनाज, गल्ला माल तेज होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

१९. भृगु के आगे बुध चले, बुध के आगे सूर। यह लक्षण दुर्भिक्ष का, [illegible] सितम्बर से आया है। प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में आगे तेजी चलेगी।

२०. रवि शशि भोम बुध गुरु शुक्र का एक राशि आवास। अति वर्षा नेऋत्य में, होय अन्न का नाश॥ ता. २२ अक्टूबर से यह योग आया है। आगे दक्षिण पश्चिम की दिशा में घोर वर्षा से फसलों को नुकसान होगा। तथा अनाजों में तेजी चलेगी।

२१. मूल शनेश्चर स्वाती बुध युत हो मघा मयंक। सर्व धान्य संग्रह करो, होवे लाभ निशंक॥ के अनुसार १३ से १५ नवंबर तक उपरोक्त योग है। इस दौरान अनाज का स्टॉक करना लाभदायक रहेगा।

२२. इक नक्षत्र पर बैठते सूरज भृगु गुरु तीन। आग लगे आंधी चले, करे फसल को छीन॥ यह योग ७ से ११ नवं. तथा १९ से २५ नवं. तक है। इस दौरान अग्निकांड होंगे। आंधी-तूफान आयेंगे तथा फसलें नष्ट होंगी।

२३. क्रूर ग्रह वक्री चले शुक्र ग्रह हो अतिचार। युद्ध तथा दुर्भिक्ष से दुखी रहे संसार॥ यह योग ७ से ३१ दिसंबर तक है। इस दौरान उपद्रव, दंगे, युद्ध तथा दुर्भिक्ष के कारण संसार दुखी रहेगा। तथा व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी चलेगी।

२४. पड़वा आठैं पूर्णिमा जो बुधवारी आय। सभी वस्तु व्यापार की महंगे भाव बिकाय॥ श्रावण शुक्ल पक्ष में उपरोक्त से बाजारों में तेजी चलेगी।

२५. सूर्य देव भृगु नाथ का, एक राशि पर साथ। पकड़ा देती है फसल, महंगाई को हाथ॥ ता. १० से १६ सितम्बर एवं १७ से २३ दिसम्बर तक उपरोक्त योग है। बाजारों में तेजी चलेगी।

आवश्यक सूचना

नोट-संक्रांति लगने से एक दिन पहले किसी वस्तु का भाव संक्रांति के दिन से मंदा रहे तो आगे तेजी का रुख एक मास तक साधारण तौर पर रहता है। विपरीत से मंदी का रुख समझना। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्योरा सिलसिले वार पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक '**भविष्य फल प्रकाश सन् २००६ ई.**' का मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्वपूर्ण योग हैं। अत: व्यापार में उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मंगाकर पढ़ें, प्रकाशित हो चुकी है। ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मंदी के बारे में विश्लेषण एवं पूर्वानुमान से संबंधित यह पुस्तक गत् ६० सालों से लगातार प्रकाशित की जा रही है। यह पुस्तक वर्ष भर की दैनिक तेजी-मंदी, मासिक विश्लेषण, माल, स्टॉक करने के उचित मौके, माल खरीदने बेचने की महत्वपूर्ण तारीखें (प्रत्येक मास की) अनाज, दलहन, किराना बाजार, तिलहन बाजार, सरसों, सोना, चांदी आदि सर्व धातुएं, शेयर्स, गुड़, खाण्ड, घी, रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसन, हल्दी, रुई, पाट, बारदाना आदि वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर की लाईनें) महत्वपूर्ण कट लाईनें लेख, चांस आदि इस एक ही पुस्तक में अलग-अलग चेप्टर देकर प्रकाशित की गई हैं। मूल्य १५०/-प्रति कापी तथा २५/-डाक व्यय अलग, कुल १७५/-होगा। रुपये मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा ही भिजवाएं। समय से पूर्व मंगा लें। ताकि उचित अवसर पर स्टॉक आदि कर सकें। वी.पी.से नहीं भेजी जाएगी। मनीआर्डर स्पीड-पोस्ट से भिजवाऐं। ताकि समय पर मिल सके।

हमारी दूसरी पुस्तक '**भविष्य भारती**' अर्घकाण्ड संबंधी अद्भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी के रूप में है। इस पुस्तक में ज्योतिष के योग (फार्मूले) आदि दिये गये हैं। उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ६०/-, डाक व्यय १५/- अलग। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए ५०/- का मनीआर्डर अग्रिम भेजने पर १०/- की वी.पी. से पुस्तक भेजी जाऐगी। यानि १५/-की बचत होगी। अपना पता साफ-साफ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। पत्र, मनीआर्डर केवल हमारे नये पते पर ही भेजें। स्पेशल चांसों के लिए संपर्क करें। एक वस्तु की एक वर्ष की फीस १८००/- होगी। स्पेशल चांस सभी प्रमुख वस्तुओं के बनाये जाते हैं। इन्टरनेट वायदा व्यापार की दैनिक लाईनें टाईम सहित दी जाती हैं। त्रैमासिक फीस १५००/-मात्र है। वार्षिक ५१००/-मात्र है। अधिक जानकारी के लिए टेलीफोन नं. ०१२७४-२२३९४७ पर संपर्क करें। त्रैमासिक या अर्द्धवार्षिक स्पेशल चांस नहीं भेजे जाऐंगे। स्पेशल चांसों में सिर्फ महत्वपूर्ण तेजी-मंदी की लाईन ही दी जाऐगी। सम्पर्क करें-**पता-रामावतार गुप्ता 'व्यापार भूषण'** राव उमराव सिंह मार्केट आर्य समाज रोड,पोस्ट-रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा) फोन-०१२७४-२२३९४७, मो. ०९४१६११०९९६

राष्ट्रीय-अन्तराष्ट्रीय शेयर बाजार तेजी-मंदी समीक्षा 2006

लेखक -आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री,
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरांव (नटवार) जिला-रोहतास (बिहार)-८०२२१८,
फोन-०६१८५-२४६४८०,२४६३१७, मो. ०९४३१४८६२१६

शेयर काराकबार में लाभ उठाने के लिए सर्व प्रथम घाटे से बचना सीखें। फिर अपनी प्रवृति पर नियंत्रण लगाने की क्षमता उत्पन्न करें। साथ ही तत्काल निर्णय क्षमता विकसित करें। इसके बाद छोटे स्तर से १००-२०० शेयरों का कारोबार शुरु करने वाले निवेशक भी थोड़े समय में आसानी से लाखों या करोड़ों रुपयों का लाभ उठाने में सफल हो सकता है। यह तो एक अटल सत्य ही है कि ऐसा तभी संभव होगा। जब उसका भाग्य भी अनुकूल चल रहा हो तथा उसका साथ देने का सदैव तैयार होगा। भाग्य कब अनुकूल होगा? और कब किस सेक्टर की कंपनी से अप्रत्याशित लाभ का भागी बना देगा। यह जान पाना भी मुश्किल नहीं है। हर स्त्री-पुरुष के हस्त रेखा या जन्म पत्रिका में शेयर बाजार से लाभ या हानि होने का स्पष्ट संकेत होता है। आवश्यकता इस बात की है कि सही व सकारात्मक समय की पहचान करके ही शेयर बाजार में कारोबार किया जाए तो सफल व्यापार की कुंजी होगी।

सटोरिया प्रवृति शेयर बाजार की रंगों में कूट-कूट कर भरी होती है। और इसके चलते इसमें समान उतार-चढाव आए तो आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन सबसे अधिक हैरत उन विश्लेषकों पर होती है। जो चढ़ते शेयर बाजार को देखकर रोजाना गुलाबी तस्वीर पेश करते हैं। और बाजार में उल्टी करवट लेने पर उनके द्वारा नकारात्मक बातों की घुटी पिलाने का सिलसिला शुरु हो जाता है। कुछ दिन पहले तक अर्थ-विश्लेषक आश्वस्त कर रहे थे कि शेयर बाजार सकारात्मक दिशा में ही चलेगा। और खतरे की कोई संभावना नहीं है। जब गत् दिनों में मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज का संवेदी सूचकांक लगभग २८० अंक गिर गया तो उनके द्वारा नकारात्मक बातों को गिनना शुरु हो गया। इस वर्ष साफ्टवेयर, टेक्सटाईल्स, बैंकों म्यूचुअल फंड, स्पिनिंग, पावर, भारी इंजीनियरिंग, सीमेन्ट, ऑटोमोबाइल, ब्लू चिप कंपनियों के निरंतर बढ़ रही संभवनाओं के चलते उपरोक्त कंपनी का भविष्य सुरक्षित दिखाई देता है। देश का घरेलू वातावरण छिट-पुट घटना चक्रों को छोड़कर आतंकवादी गतिविधियों से भी युक्त है। अत: ऐसा कोई कारण नहीं कि भारतीय शेयर बाजारों की विदेशी पूंजी की कमी सामना करना पड़े। आगामी २००८ तक निश्चित तौर पर मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक १०००० अंकों के स्तर पर ग्राफ पहुंचने वाला है। वर्ष २००६ में ७७००-९००० अंकों के स्तर पर पहुंचने का प्रयास करेगा। यह भी निश्चित है कि शेयर बाजार की चाल एक दिशा में नहीं चलता। यह कहना मुश्किल है कि भविष्य में शेयर बाजार की दिशा क्या होगी? लेकिन यह स्पष्ट है कि भारत में अगली मार्च तक भारी उतार-चढ़ाव आने की संभावना है। ऐसे तो भारतीय शेयर बाजार पिछले कुछ माह से बढ़ता ही जा रहा है। क्योंकि देश की आर्थिक अर्थ व्यवस्था तेजी से प्रगति कर रही है। औद्योगिक उत्पादन ने रफ्तार पकड़ ली है। और राष्ट्रीय विकास की दर ६-७ प्रतिशत ज्यादा रहने की अनुमान है। कुल मिलाकर इस वर्ष शेयर बाजार के सूचकांक में ६५ प्रतिशत ग्राफ ऊपर उठेगा। जबकि ३५ प्रतिशत बाजार बिकवाली के कारण गिरावट में रहेगा।

जनवरी-यह मास रविवार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, मकर राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. ७ को बुध पूर्व में अस्त होगा। ता. १० को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। ता. १३ को शुक्र धनु में प्रवेश करेगा। ता. १४ को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा। ता. १५ को शुक्र पूर्व में उदय होगा। ता. १९ को बुध मकर में प्रवेश करेगा। फलत: मास के प्रारंभ तेजी में होना चाहिए। ता. २ से ६ तक बाजार में व्यापक उतार-चढ़ाव होगा। कर्क राशि का शनि तथा मीन का राहु चलने से बाजार में लोगों के अंदर विश्वास की कमी अनुभव होगा। मंदी में चल रहे बाजार में प्रतिक्रिया स्वरूप तेजी का वातावरण या इसको यह समझकर की बाजार में हल्का सा सुधार होता रहेगा। ता. ९ से १२ तक बाजार में अचानक बिकवाली का जोर बढ़ना शुरु होकर बाजार फिर मंदी की ओर आ जाएगा। मेरे समझ से साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, मीडिया क्षेत्र की कंपनियों में विशेष दबाव बनने की संभावना है। ता. १३ से कुछ नियमों के अनुसार अब आप सौदा करें, तो ता. १३ से २० तक बाजार तेज रहने से आप लाभ में रहेंगे। इस समय में आप ऑटो, सीमेन्ट, इस्पात, पेट्रोरसायन, पावर ग्रीड आदि कंपनियों के शेयरों में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

१२३४०१ (हरियाणा) फोन-०१२७४-२२३९४७, मो. ०९४१६११०९९६

लाभ में रहेंगे। इस समय में आप ऑटो, सीमेन्ट, इस्पात, पेट्रोरसायन, पावर ग्रिड आदि कंपनियों के शेयरों में

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

कारोबार करें तो इन सेक्टरों का बाजार बारी-बारी से तेजी में रहना चाहिए। आप थोड़े दिन के लिए निवेश नहीं करिए, बल्कि लम्बे समय के लिए निवेश करिए। जो लोग धैर्य तथा अपने उपर नियंत्रण रखकर काम करेंगे वही लाभ ले सकेंगे। सौदे को भविष्य का आंकलन करते हुए कम से कम ता. ३१ तक के लिए करें। कुल मिलाकर ता. १३ से ३१ तक उतार-चढ़ाव पूर्ण तेजी में बाजार रहेगा।

फरवरी-यह मास बुधवार, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। इस मास में ता. ३ को शुक्र मार्गी, ता. ५ को मंगल वृषभ में, इसी तारीख को बुध भी कुंभ में, ता. ७ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. १२ को सूर्य कुंभ में, ता. २४ को बुध मीन में , इसी तारीख को शुक्र मकर में प्रवेश करने से इस मास में अर्थ-व्यवस्था अनियंत्रित रहेगा। फिर भी थोड़ा उतार-चढ़ावपूर्ण बाजार तेजी में रहना चाहिए। इस मास का प्रारंभ तेजी में होना चाहिए। मास के शुरूआत में ऑटो, भारी इंजीनियरिंग, सीमेन्ट, पेट्रोरसायन कंपनियों के शेयरों में संस्थागत निवेशकों के समर्थन से ता. ३ तक बाजार तेजी में रहना चाहिए। ता. ६ से १० तक साफ्टवेयर, फार्मा, बैंक, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों में विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार तेजी में रहना चाहिए। ता. १३ से १७ तक भी नई-पुरानी अर्थ-व्यवस्थाओं के शेयरों में खरीदारी होने से बाजार तेजी में रहना चाहिए। अत: यदि निवेश करना हो तो अल्प समय के लिए इनमें निवेश कर सकते हैं। और भाव दबने के साथ ही इसमे से मुनाफा वसूल करके निकल जाना बुद्धिमानी होगा। ता. २० से २७ तक बाजार अज्ञात कारणों से प्रतिक्रिया में आ सकता है। मेरे समझ से हर सेक्टर के ब्लू-चिप कंपनियों के शेयरों में व्यापक उतार-चढ़ाव होने से जोरदार झटका लग सकता है। विश्व के अधिकांश बाजारों में भी अच्छी गिरावट दर्ज हो सकती है। ता. २८ को बजट को लेकर भी बाजार दिशाहस्र स्थिति में आ सकता है। अत: सावधानी अपेक्षित है। आप चाहे तो इस माह के अंत में फार्मा, बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया क्षेत्र की ब्लूचिप कंपनियों में निवेश अल्प समय के लिए कर सकते हैं। जो लाभकारी साबित हो सकता है।

मार्च-यह मास बुधवार, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. २ को बुध वक्री होगा, ता. ४ को गुरु वक्री होगा. ता. ९ को बुध कुंभ में, ता. १४ को सूर्य मीन में, ता. २५ को बुध मार्गी होगा। ता. ३१ को शुक्र कुंभ में प्रवेश करने से इस माह मेरे समझ से बाजार में फिर उछाल आने का संकेत है। यह ध्यान रखें सुधार के दौरान न घबराए। घबराहट में आपके शयरों का नुकसान हो सकता है। बाजार तेज दिखने पर सौदा काटने के लिए तैयार रहें। निवेश पर अधिक ट्रेडिंग न करें। ज्यादा अनुकरण न करें। आपके मत पर शासन करने के लिए आपको लाजच को अनुमति न दें। लाभ कमाने के मापदंडों का पालन करें। शेयर बाजार पर धन बनाने के लिए लाभ कमाना अधिक महत्वपूर्ण बात है। दिसम्बर २००५ एवं मार्च २००६ सेंसेक्स में प्रतिबिम्बित है। वर्तमान सुधार बाजार की सशक्त वृद्धि के लिए काफी अधिक आवश्यक है। वास्तव में यह उचित समय है, जब आप चुनिंदा शेयरों को उठा सकते हैं। दोस्ताना बजट पेश करने हेतु सरकार के लिए अच्छा अवसर है। यह मास का प्रारंभ तेजी से होगा। यह तेजी का सिलसिला ता. १ से १७ तक जारी रहना चाहिए। मेरे समझ से इस माह फार्मा, बैंक, इस्पात, ऑटो और साफ्टवेयर कंपनियों के शेयरों में विदेशी निवेशक के समर्थन से बाजार पूर्णत: तेजी में रहना चाहिए। वर्तमान आर्थिक परिदृश्य काफी अच्छा है। डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली वर्तमान यूपीए सरकार अधिक आवश्यक आर्थिक सुधार जारी करने की संभावना है। ता. २० से २४ तक बाजार अचानक उतार-चढ़ाव तथा अनिश्चितता का क्रम बना रहेगा। विश्व के समस्त राष्ट्रों में भी शेयरों में गिरावट देखने को मिल सकता है। अत: सावधानी अपेक्षित है। ता. २७ से ३१ तक भी बाजार में उतार-चढ़ाव पूर्ण रूझान तेजी में रहेगा। बैंक, साफ्टवेयर, सीमेन्ट सेक्टरों में तेजी की अवधारणा रहेगी।

अप्रेल-यह मास रविवार, भरणी नक्षत्र, वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। इस मास में ता. ३ को मंगल मिथुन में, ता. ५ को शनि मार्गी होगा। ता.११ को बुध मीन में, ता. १३ को सूर्य मेष में, ता. २५ को शुक्र मीन में प्रवेश करने से बाजार में अफरा-तफरी के माहौल बनाएगा। बाजार चौतरफा रूख लिए रहेगा तथा ऊपर नीचे के भावों में काफी अंतर रहेगा। ता. ३ से ७ तक ऑटो पावर, भारी इंजीनियरिंग, सीमेन्ट आदि कंपनियों के शेयरों में भारी बिकवाली से बाजार मंदी में रहना चाहिए। ता. १० से १४ तक संस्थागत निवेशकों के समर्थन से साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी, फार्मा, बैंक के शेयरों में कारोबार होने से साधारण तेजी की अवधारणा रहेगी। ता. १७ से २१ तक वित्तीय संस्थाओं की खरीदारी हो सकती है। जिससे बाजार में हल्की तेजी का रूख बनना प्रारंभ हो जाए। यदि इस जगह आप बाजार में तेजी देखे तो बिना हिचक खरीद कर चलना चाहिए। एक बार फिर नई अर्थव्यवस्था के शेयर, दूरसंचार, फार्मा, साफ्टवेयर तथा टेक्सटाइल्स उद्योगों के शेयर चलना प्रारंभ कर देंगे। साथ ही कम समय में अच्छी भाव बन लेंगे। ता. २४ से २८ तक बाजार में तेजी का रूख में और सुधार आएगा। वर्ष २००६ एकीकरण और सकारात्मक वृद्धि का वर्ष रहेगा। मेरे द्वारा की गई भविष्यवाणी में निर्देशित अनुसार बाजार उछाल प्राप्त करने की संभावना है। इसके लिए कुछ समय लगेगा। मार्च माह में बाजार ३०० से ४०० अंकों की वृद्धि प्राप्त करने की आशा है। जबकि इस माह २०० से २५० अंकों की वृद्धि प्राप्त करने की आशा है। लाभ कमाने के लिए अच्छा अवसर रहेगा।

मई-यह मास सोमवार, मृगशिरा नक्षत्र, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. २ को बुध मेष में, ता. ६ को बुध पूरब में अस्त, ता. १४ को सूर्य वृष में, ता. १७ को बुध वृष में, ता. २४ को शुक्र मेष में, ता. २७ को मंगल कर्क में, ता. २९ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. ३१ को बुध मिथुन में प्रवेश करने से गिरावट के पश्चात् अब सुधार की आशा है। पिछले माह शेयर बाजारों में अत्याधिक उठा-पटक का संकेतपूर्ण वातावरण ही बना रहा। जैसा कि इस कॉलम में लिखा भी गया था कि शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव का सिलसिला जारी रहेगा। प्रथम सप्ताह में विदेशी वित्तीय संस्थानों के खरीदारी गतिविधियां चलेगी। साथ ही प्रथम सप्ताह में घरेलू वित्तीय संस्थानों व म्यूचुअल फंड्स द्वारा भी किसी विशेष खरीदारी की कुछ संभावना है। मिड़ कैप तथा नगद प्रणाली वाले शेयरों में स्पष्ट रूप से बिकवाली दबाव आने की आशंका है। ता. ६ को बुध पूरब में अस्त होने से ता. ८ से १२ तक बाजार में बिकवाली दबाव बनने की आशंका है। चालू सप्ताह में अब एक बार शेयर बाजारों में बिकवाली दबाव आने की आशंका प्रतीत हो रही है। जिसके चलते साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्राद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों के साथ ही ब्लू चिप कंपनियों के शेयर मूल्य एकबारगी नीचे का रूख दिखा सकते हैं। सप्ताह के प्रारंभ से ही मीड़ कैप क्षेत्र की कंपनियों में भी भारी बिकवाली आने की आशंका है। ता. १५ से १९ तक ऑटो, सीमेन्ट, स्टील, पावर, विद्युत कंपनी में कुछ कारोबार होने की संभावना है। अत: इनमें खरीदारी करना उचित प्रतीत हो रहा है। ता.२२ से २६ तक ऑटो क्षेत्र की कंपनियों में महीन्द्रा एण्ड महीन्द्रा, टा[illegible] तथा सेल आदि कंपनियों में कुछ कारोबार होने की संभावना है। जबकि साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, मीडिया तथा मिडकैप क्षेत्र की कंपनियों में बिकवाली का दबाव बना रहेगा। मासान्त तक अचानक साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, मीडिया तथा ऑटो सेक्टर में विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार तेजी में रहना चाहिए।

जून-यह मास गुरुवार, पुष्य नक्षत्र, कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. १५ को सूर्य मिथुन में, ता. १८ को शुक्र वृष में, ता. २० को बुध कर्क में, ता. २१ को मंगल अश्लेषा में, ता. २२ को सूर्य आर्द्रा में, ता. २४ को बुध पुष्य में, ता. २७ कों शुक्र रोहिणी में विचरण करने से भारतीय शेयर बाजार में अनिश्चितता के दौर के बावजूद भी शेयर बाजार में बढ़त जारी रहेगी। देश के २२ मान्यता प्राप्त शेयर बाजार में से १३ शेयर बाजारों में पिछले वित्त वर्ष में कोई कारोबार नहीं हुआ। दिल्ली, जयपुर, मध्य प्रदेश, लुधियाणा, वड़ोदरा, सौराष्ट, मगध, इन्टर कनेक्टेड स्टॉक एक्सचेंज, गुवाहाटी, भुवनेश्वर, कोचीन, कोयम्बटूर और बैंगलोर स्टॉक एक्सचेंज में २००४-५ में कोई कारोबार नहीं हुआ। फिर भी भारतीय शेयर बाजार में विदेशी संस्थानों की समर्थन प्राप्त होता रहेगा। कुल मिलाकर इस माह का प्रारंभ तेजी से होगा। यदि इस समय सही सौदा हुआ तो पैसा आने में देर नहीं लगेगी। जैसा कि पिछले माह में लिखा हुआ है। उन्हीं शेयरों पर ध्यान दीजिए। विशेष तौर पर ब्लूचिप, फार्मा, बैंक एवम साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया क्षेत्र की कंपनियों में तेजी आने की अनुमान है। इन्हीं सेक्टरों में काम करना इस समय ठीक रहेगा। मौसम की अनुकूलता भी इस समय तेजी में सहायक होगी। बाजार तेजी के माहौल में रहेगा। विदेशी वित्तीय संस्थाओं का सहयोग भी तेजी में सहायक होगा। विदेशी रुपये भी भारतीय उद्योग में आशा से अधिक निवेश हो सकता है। मेरे समझ से ता. १ से १६ तक बाजार विशेष तेजी में रहना चाहिए। ता. १९ से २३ तक शेयरा बाजारों में किसी विशेष गिरावट की आशंका न्यूनतम ही प्रतीत होती है। हालांकि जैसा कि हम सभी जानते है कि शेयर बाजार अनिश्चितता का दूसरा नाम है। साथ ही यहां पर कभी भी, किसी भी प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। ता.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१९. भृगु के आगे बुध चले, बुध के आगे सूर। यह लक्षण दुर्भिक्ष का, तेजी हो भरपूर॥ यह योग ता. १ सितम्बर से आया है। प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में आगे तेजी चलेगी।

२०. रवि शशि भोम बुध गुरु शुक्र का एक राशि आवास। अति वर्षा नेऋत्य में, होय अन्न का नाश॥ ता. २२ अक्टूबर से यह योग आया है। आगे दक्षिण पश्चिम की दिशा में घोर वर्षा से फसलों को नुकसान होगा। तथा अनाजों में तेजी चलेगी।

२१. मूल शनेश्चर स्वाती बुध युत हो मघा मयंक। सर्व धान्य संग्रह करो, होवे लाभ निशंक॥ के अनुसार १३ से १५ नवंबर तक उपरोक्त योग है। इस दौरान अनाज का स्टॉक करना लाभदायक रहेगा।

२२. इक नक्षत्र पर बैठते सूरज भृगु गुरु तीन। आग लगे आंधी चले, करे फसल को छीन॥ यह योग ७ से ११ नवं. तथा १९ से २५ नवं. तक है। इस दौरान अग्निकांड होंगे। आंधी-तूफान आयेंगे तथा फसलें नष्ट होंगी।

२३. क्रूर ग्रह वक्री चले शुक्र ग्रह हो अतिचार। युद्ध तथा दुर्भिक्ष से दुखी रहे संसार॥ यह योग ७ से ३१ दिसंबर तक है। इस दौरान उपद्रव, दंगे, युद्ध तथा दुर्भिक्ष के कारण संसार दुखी रहेगा। तथा व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी चलेगी।

२४. पड़वा आठें पूर्णिमा जो बुधवारी आय। सभी वस्तु व्यापार की महंगे भाव बिकाय॥ श्रावण शुक्ल पक्ष में उपरोक्त से बाजारों में तेजी चलेगी।

२५. सूर्य देव भृगु नाथ का, एक राशि पर साथ। पकड़ा देती है फसल, महंगाई को हाथ॥ ता. १० से १६ सितम्बर एवं १७ से २३ दिसम्बर तक उपरोक्त योग है। बाजारों में तेजी चलेगी।

आवश्यक सूचना

नोट-संक्रांति लगने से एक दिन पहले किसी वस्तु का भाव संक्रांति के दिन से मंदा रहे तो आगे तेजी का रुख एक मास तक साधारण तौर पर रहता है। विपरीत से मंदी का रुख समझना। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्योरा सिलसिले वार पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक '**भविष्य फल प्रकाश सन् २००६ ई.**' का मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्वपूर्ण योग हैं। अत: व्यापार में उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मंगाकर पढ़ें, प्रकाशित हो चुकी है। ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मंदी के बारे में विश्लेषण एवं पूर्वानुमान से संबंधित यह पुस्तक गत् ६० सालों से लगातार प्रकाशित की जा रही है। यह पुस्तक वर्ष भर की दैनिक तेजी-मंदी, मासिक विश्लेषण, माल, स्टॉक करने के उचित मौके, माल खरीदने बेचने की महत्वपूर्ण तारीखें (प्रत्येक मास की) अनाज, दलहन, किराना बाजार, तिलहन बाजार, सरसों, सोना, चांदी आदि सर्व धातुएं, शेयर्स, गुड़, खाण्ड, घी, रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसन, हल्दी, रुई, पाट, बारदाना आदि वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर की लाईनें) महत्वपूर्ण कट लाईनें लेख, चांस आदि इस एक ही पुस्तक में अलग-अलग चेप्टर देकर प्रकाशित की गई हैं। मूल्य १५०/-प्रति कापी तथा २५/-डाक व्यय अलग, कुल १७५/-होगा। रुपये मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा ही भिजवाएं। समय से पूर्व मंगा लें। ताकि उचित अवसर पर स्टॉक आदि कर सकें। वी.पी.से नहीं भेजी जाएगी। मनीआर्डर स्पीड-पोस्ट से भिजवाएं। ताकि समय पर मिल सके।

हमारी दूसरी पुस्तक '**भविष्य भारती**' अर्घकाण्ड संबंधी अद्भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी के रूप में है। इस पुस्तक में ज्योतिष के योग (फार्मूले) आदि दिये गये हैं। उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ६०/-, डाक व्यय १५/- अलग। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए ५०/- का मनीआर्डर अग्रिम भेजने पर १०/- की वी.पी. से पुस्तक भेजी जाएगी। यानि १५/-की बचत होगी। अपना पता साफ-साफ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। पत्र, मनीआर्डर केवल हमारे नये पते पर ही भेजें। स्पेशल चांसों के लिए संपर्क करें। एक वस्तु की एक वर्ष की फीस १८००/- होगी। स्पेशल चांस सभी प्रमुख वस्तुओं के बनाये जाते हैं। इन्टरनेट वायदा व्यापार की दैनिक लाईनें टाईम सहित दी जाती हैं। त्रैमासिक फीस १५००/-मात्र है। वार्षिक ५१००/- मात्र है। अधिक जानकारी के लिए टेलीफोन नं. ०१२७४-२२३९४७ पर संपर्क करें। त्रैमासिक या अर्द्धवार्षिक स्पेशल चांस नहीं भेजे जाऐंगे। स्पेशल चांसों में सिर्फ महत्वपूर्ण तेजी-मंदी की लाईन ही दी जाएगी। सम्पर्क करें-पता-रामावतार गुप्ता '**व्यापार भूषण**' राव उमराव सिंह मार्केट आर्य समाज रोड,पोस्ट-रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा) फोन-०१२७४-२२३९४७, मो. ०९४१६११०९९६

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय शेयर बाजार तेजी-मंदी समीक्षा 2006

लेखक -आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री,
ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सराँव (नटवार) जिला-रोहतास (बिहार)-८०२२१८,
फोन-०६१८५-२४६४८०,२४६३१७, मो. ०९४३१४८६२१६

शेयर कारोबार में लाभ उठाने के लिए सर्व प्रथम घाटे से बचना सीखें। फिर अपनी प्रवृति पर नियंत्रण लगाने की क्षमता उत्पन्न करें। साथ ही तत्काल निर्णय क्षमता विकसित करें। इसके बाद छोटे स्तर से १००-२०० शेयरों का कारोबार शुरु करने वाले निवेशक भी थोड़े समय में आसानी से लाखों या करोड़ों रुपयों का लाभ उठाने में सफल हो सकता है। यह तो एक अटल सत्य ही है कि ऐसा तभी संभव होगा। जब उसका भाग्य भी अनुकूल चल रहा हो तथा उसका साथ देने का सदैव तैयार होगा। भाग्य कब अनुकूल होगा? और कब किस सेक्टर की कंपनी से अप्रत्याशित लाभ का भागी बना देगा। यह जान पाना भी मुश्किल नहीं है। हर स्त्री-पुरुष के हस्त रेखा या जन्म पत्रिका में शेयर बाजार से लाभ या हानि होने का स्पष्ट संकेत होता है। आवश्यकता इस बात की है कि सही व सकारात्मक समय की पहचान करके ही शेयर बाजार में कारोबार किया जाए तो सफल व्यापार की कुंजी होगी।

सटोरिया प्रवृति शेयर बाजार की रंगों में कूट-कूट कर भरी होती है। और इसके चलते इसमें समान उतार-चढाव आए तो आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन सबसे अधिक हैरत उन विश्लेषकों पर होती है। जो चढ़ते शेयर बाजार को देखकर रोजाना गुलाबी तस्वीर पेश करते हैं। और बाजार में उल्टी करवट लेने पर उनके द्वारा नकारात्मक बातों की घुटी पिलाने का सिलसिला शुरु हो जाता है। कुछ दिन पहले तक अर्थ-विश्लेषक आश्वस्त कर रहे थे कि शेयर बाजार सकारात्मक दिशा में ही चलेगा। और खतरे की कोई संभावना नहीं है। जब गत् दिनों में मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज का संवेदी सूचकांक लगभग २८० अंक गिर गया तो उनके द्वारा नकारात्मक बातों को गिनना शुरु हो गया। इस वर्ष साफ्टवेयर, टेक्सटाईल्स, बैंकों म्यूचुअल फंड, स्पिनिंग, पावर, भारी इंजीनियरिंग, सीमेन्ट, ऑटोमोबाइल, ब्लू चिप कंपनियों के निरंतर बढ़ रही संभवनाओं के चलते उपरोक्त कंपनी का भविष्य सुरक्षित दिखाई देता है। देश का घरेलू वातावरण छिट-पुट घटना चक्रों को छोड़कर आतंकवादी गतिविधियों से भी युक्त है। अत: ऐसा कोई कारण नहीं कि भारतीय शेयर बाजारों की विदेशी पूंजी की कमी सामना करना पड़े। आगामी २००८ तक निश्चित तौर पर मुम्बई स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक १०००० अंकों के स्तर पर ग्राफ पहुंचने वाला है। वर्ष २००६ में ७७००-९००० अंकों के स्तर पर पहुंचने का प्रयास करेगा। यह भी निश्चित है कि शेयर बाजार की चाल एक दिशा में नहीं चलता। यह कहना मुश्किल है कि भविष्य में शेयर बाजार की दिशा क्या होगी? लेकिन यह स्पष्ट है कि भारत में अगली मार्च तक भारी उतार-चढ़ाव आने की संभावना है। ऐसे तो भारतीय शेयर बाजार पिछले कुछ माह से बढ़ता ही जा रहा है। क्योंकि देश की आर्थिक अर्थ व्यवस्था तेजी से प्रगति कर रही है। औद्योगिक उत्पादन ने रफ्तार पकड़ ली है। और राष्ट्रीय विकास की दर ६-७ प्रतिशत ज्यादा रहने की अनुमान है। कुल मिलाकर इस वर्ष शेयर बाजार के सूचकांक में ६५ प्रतिशत ग्राफ ऊपर उठेगा। जबकि ३५ प्रतिशत बाजार बिकवाली के कारण गिरावट में रहेगा।

जनवरी-यह मास रविवार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, मकर राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. ७ को बुध पूर्व में अस्त होगा। ता. १० को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। ता. १३ को शुक्र धनु में प्रवेश करेगा। ता. १४ को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा। ता. १५ को शुक्र पूर्व में उदय होगा। ता. १९ को बुध मकर में प्रवेश करेगा। फलत: मास के प्रारंभ तेजी में होना चाहिए। ता. २ से ६ तक बाजार में व्यापक उतार-चढ़ाव होगा। कर्क राशि का शनि तथा मीन का राहु चलने से बाजार में लोगों के अंदर विश्वास की कमी अनुभव होगा। मंदी में चल रहे बाजार में प्रतिक्रिया स्वरूप तेजी का वातावरण या इसको यह समझकर की बाजार में हल्का सा सुधार होता रहेगा। ता. ९ से १२ तक बाजार में अचानक बिकवाली का जोर बढ़ना शुरु होकर बाजार फिर मंदी की ओर आ जाएगा। मेरे समझ से साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, मीडिया क्षेत्र की कंपनियों में विशेष दबाव बनने की संभावना है। ता. १३ से कुछ नियमों के अनुसार अब आप सौदा करें, तो ता. १३ से २० तक बाजार तेज रहने से आप लाभ में रहेंगे। इस समय में आप ऑटो, सीमेन्ट, इस्पात, पेट्रोरसायन, पावर ग्रीड आदि कंपनियों के शेयरों में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कारोबार करें तो इन सेक्टरों का बाजार बारी-बारी से तेजी में रहना चाहिए। आप थोड़े दिन के लिए निवेश नहीं करिए, बल्कि लम्बे समय के लिए निवेश करिए। जो लोग धैर्य तथा अपने उपर नियंत्रण रखकर काम करेंगे वही लाभ ले सकेंगे। सौदे को भविष्य का आंकलन करते हुए कम से कम ता. ३१ तक के लिए करें। कुल मिलाकर ता. १३ से ३१ तक उतार-चढ़ाव पूर्ण तेजी में बाजार रहेगा।

फरवरी-यह मास बुधवार, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। इस मास में ता. ३ को शुक्र मार्गी, ता. ५ को मंगल वृषभ में, इसी तारीख को बुध भी कुंभ में, ता. ७ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. १२ को सूर्य कुंभ में, ता. २४ को बुध मीन में , इसी तारीख को शुक्र मकर में प्रवेश करने से इस मास में अर्थ-व्यवस्था अनियंत्रित रहेगा। फिर भी थोड़ा उतार-चढ़ावपूर्ण बाजार तेजी में रहना चाहिए। इस मास का प्रारंभ तेजी में होना चाहिए। मास के शुरूआत में ऑटो, भारी इंजीनियरिंग, सीमेन्ट, पेट्रोरसायन कंपनियों के शेयरों में संस्थागत निवेशकों के समर्थन से ता. ३ तक बाजार तेजी में रहना चाहिए। ता. ६ से १० तक साफ्टवेयर, फार्मा, बैंक, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों में विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार तेजी में रहना चाहिए। ता. १३ से १७ तक भी नई-पुरानी अर्थ-व्यवस्थाओं के शेयरों में खरीदारी होने से बाजार तेजी में रहना चाहिए। अत: यदि निवेश करना हो तो अल्प समय के लिए इनमें निवेश कर सकते हैं। और भाव दबने के साथ ही इसमें से मुनाफा वसूल करके निकल जाना बुद्धिमानी होगा। ता. २० से २७ तक बाजार अज्ञात कारणों से प्रतिक्रिया में आ सकता है। मेरे समझ से हर सेक्टर के ब्लू-चिप कंपनियों के शेयरों में व्यापक उतार-चढ़ाव होने से जोरदार झटका लग सकता है। विश्व के अधिकांश बाजारों में भी अच्छी गिरावट दर्ज हो सकती है। ता. २८ को बजट को लेकर भी बाजार दिशाहस्र स्थिति में आ सकता है। अत: सावधानी अपेक्षित है। आप चाहे तो इस माह के अंत में फार्मा, बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया क्षेत्र की ब्लूचिप कंपनियों में निवेश अल्प समय के लिए कर सकते हैं। जो लाभकारी साबित हो सकता है।

मार्च-यह मास बुधवार, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. २ को बुध वक्री होगा, ता. ४ को गुरु वक्री होगा, ता. ९ को बुध कुंभ में, ता. १४ को सूर्य मीन में, ता. २५ को बुध मार्गी होगा। ता. ३१ को शुक्र कुंभ में प्रवेश करने से इस माह मेरे समझ से बाजार में फिर उछाल आने का संकेत है। यह ध्यान रखें सुधार के दौरान न घबराए। घबराहट में आपके शयरों का नुकसान हो सकता है। बाजार तेज दिखने पर सौदा काटने के लिए तैयार रहें। निवेश पर अधिक ट्रेडिंग न करें। ज्यादा अनुकरण न करें। आपके मत पर शासन करने के लिए आपको लाजच को अनुमति न दें। लाभ कमाने के मापदंडों का पालन करें। शेयर बाजार पर धन बनाने के लिए लाभ कमाना अधिक महत्वपूर्ण बात है। दिसम्बर २००५ एवं मार्च २००६ सेंसेक्स में प्रतिबिम्बित है। वर्तमान सुधार बाजार की सशक्त वृद्धि के लिए काफी अधिक आवश्यक है। वास्तव में यह उचित समय है, जब आप चुनिंदा शेयरों को उठा सकते हैं। दोस्ताना बजट पेश करने हेतु सरकार के लिए अच्छा अवसर है। यह मास का प्रारंभ तेजी से होगा। यह तेजी का सिलसिला ता. १ से १७ तक जारी रहना चाहिए। मेरे समझ से इस माह फार्मा, बैंक, इस्पात, ऑटो और साफ्टवेयर कंपनियों के शेयरों में विदेशी निवेशक के समर्थन से बाजार पूर्णत: तेजी में रहना चाहिए। वर्तमान आर्थिक परिदृश्य काफी अच्छा है। डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली वर्तमान यूपीए सरकार अधिक आवश्यक आर्थिक सुधार जारी करने की संभावना है। ता. २० से २४ तक बाजार अचानक उतार-चढ़ाव तथा अनिश्चितता का क्रम बना रहेगा। विश्व के समस्त राष्ट्रों में भी शेयरों में गिरावट देखने को मिल सकता है। अत: सावधानी अपेक्षित है। ता. २७ से ३१ तक भी बाजार में उतार-चढ़ाव पूर्ण रूझान तेजी में रहेगा। बैंक, साफ्टवेयर, सीमेन्ट सेक्टरों में तेजी की अवधारणा रहेगी।

अप्रेल-यह मास रविवार, भरणी नक्षत्र, वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। इस मास में ता. ३ को मंगल मिथुन में, ता. ५ को शनि मार्गी होगा। ता.११ को बुध मीन में, ता. १३ को सूर्य मेष में, ता. २५ को शुक्र मीन में प्रवेश करने से बाजार में अफरा-तफरी के माहौल बनाएगा। बाजार चौतरफा रूख लिए रहेगा तथा ऊपर नीचे के भावों में काफी अंतर रहेगा। ता. ३ से ७ तक ऑटो पावर, भारी इंजीनियरिंग, सीमेन्ट आदि कंपनियों के शेयरों में भारी बिकवाली से बाजार मंदी में रहना चाहिए। ता. १० से १४ तक संस्थागत निवेशकों के समर्थन से साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी, फार्मा, बैंक के शेयरों में कारोबार होने से साधारण तेजी की अवधारणा रहेगी। ता. १७ से २१ तक वित्तीय संस्थाओं की खरीदारी हो सकती है। जिससे बाजार में हल्की तेजी का रूख बनना प्रारंभ हो जाए। यदि इस जगह आप बाजार में तेजी देखे तो बिना हिचक खरीद कर चलना चाहिए। एक बार फिर नई अर्थव्यवस्था के शेयर, दूरसंचार, फार्मा, साफ्टवेयर तथा टेक्सटाइल्स उद्योगों के शेयर चलना प्रारंभ कर देंगे। साथ ही कम समय में अच्छी भाव बन लेंगे। ता. २४ से २८ तक बाजार में तेजी का रूख में और सुधार आएगा। वर्ष २००६ एकीकरण और सकारात्मक वृद्धि का वर्ष रहेगा। मेरे द्वारा की गई भविष्यवाणी में निर्देशित अनुसार बाजार उछाल प्राप्त करने की संभावना है। इसके लिए कुछ समय लगेगा। मार्च माह में बाजार ३०० से ४०० अंकों की वृद्धि प्राप्त करने की आशा है। जबकि इस माह २०० से २५० अंकों की वृद्धि प्राप्त करने की आशा है। लाभ कमाने के लिए अच्छा अवसर रहेगा।

मई-यह मास सोमवार, मृगशिरा नक्षत्र, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. २ को बुध मेष में, ता. ६ को बुध पूरब में अस्त, ता. १४ को सूर्य वृष में, ता. १७ को बुध वृष में, ता. २४ को शुक्र मेष में, ता. २७ को मंगल कर्क में, ता. २९ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. ३१ को बुध मिथुन में प्रवेश करने से गिरावट के पश्चात् अब सुधार की आशा है। पिछले माह शेयर बाजारों में अत्याधिक उठा-पटक का संकेतपूर्ण वातावरण ही बना रहा। जैसा कि इस कॉलम में लिखा भी गया था कि शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव का सिलसिला जारी रहेगा। प्रथम सप्ताह में विदेशी वित्तीय संस्थानों के खरीदारी गतिविधियां चलेगी। साथ ही प्रथम सप्ताह में घरेलू वित्तीय संस्थानों व म्यूचुअल फंड्स द्वारा भी किसी विशेष खरीदारी की कुछ संभावना है। मिड़ कैप तथा नगद प्रणाली वाले शेयरों में स्पष्ट रूप से बिकवाली दबाव आने की आशंका है। ता. ६ को बुध पूरब में अस्त होने से ता. ८ से १२ तक बाजार में बिकवाली दबाव बनने की आशंका है। चालू सप्ताह में अब एक बार शेयर बाजारों में बिकवाली दबाव आने की आशंका प्रतीत हो रही है। जिसके चलते साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्राद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों के साथ ही ब्लू चिप कंपनियों के शेयर मूल्य एकबारगी नीचे का रूख दिखा सकते हैं। सप्ताह के प्रारंभ से ही मीड कैप क्षेत्र की कंपनियों में भी भारी बिकवाली आने की आशंका है। ता. १५ से १९ तक ऑटो, सीमेन्ट, स्टील, पावर, विद्युत कंपनी में कुछ कारोबार होने की संभावना है। अत: इनमें खरीदारी करना उचित प्रतीत हो रहा है। ता.२२ से २६ तक ऑटो क्षेत्र की कंपनियों में महीन्द्रा एण्ड महीन्द्रा, टा... तथा सेल आदि कंपनियों में कुछ कारोबार होने की संभावना है। जबकि साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, मीडिया तथा मिडकैप क्षेत्र की कंपनियों में बिकवाली का दबाव बना रहेगा। मासान्त तक अचानक साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, मीडिया तथा ऑटो सेक्टर में विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार तेजी में रहना चाहिए।

जून-यह मास गुरुवार, पुष्य नक्षत्र, कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. १५ को सूर्य मिथुन में, ता. १८ को शुक्र वृष में, ता. २० को बुध कर्क में, ता. २१ को मंगल अश्लेषा में, ता. २२ को सूर्य आर्द्रा में, ता. २४ को बुध पुष्य में, ता. २७ को शुक्र रोहिणी में विचरण करने से भारतीय शेयर बाजार में अनिश्चितता के दौर के बावजूद भी शेयर बाजार में बढ़त जारी रहेगी। देश के २२ मान्यता प्राप्त शेयर बाजार में से १३ शेयर बाजारों में पिछले वित्त वर्ष में कोई कारोबार नहीं हुआ। दिल्ली, जयपुर, मध्य प्रदेश, लुधियाणा, बड़ोदरा, सौराष्ट्र, मगध, इन्टर कनेक्टेड स्टॉक एक्सचेंज, गुवाहाटी, भुवनेश्वर, कोचीन, कोयम्बटूर और बैंगलोर स्टॉक एक्सचेंज में २००४-५ में कोई कारोबार नहीं हुआ। फिर भी भारतीय शेयर बाजार में विदेशी संस्थानों की समर्थन प्राप्त होता रहेगा। कुल मिलाकर इस माह का प्रारंभ तेजी से होगा। यदि इस समय सही सौदा हुआ तो पैसा आने में देर नहीं लगेगी। जैसा कि पिछले माह में लिखा हुआ है। उन्हीं शेयरों पर ध्यान दीजिए। विशेष तौर पर ब्लूचिप, फार्मा, बैंक एवम साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया क्षेत्र की कंपनियों में तेजी आने की अनुमान है। इन्हीं सेक्टरों में काम करना इस समय ठीक रहेगा। मौसम की अनुकूलता भी इस समय तेजी में सहायक होगी। बाजार तेजी के माहौल में रहेगा। विदेशी वित्तीय संस्थाओं का सहयोग भी तेजी में सहायक होगा। विदेशी रुपये भी भारतीय उद्योग में आशा से अधिक निवेश हो सकता है। मेरे समझ से ता. १ से १६ तक बाजार विशेष तेजी में रहना चाहिए। ता. १९ से २३ तक शेयरा बाजारों में किसी विशेष गिरावट की आशंका न्यूनतम ही प्रतीत होती है। हालाकि जैसा कि हम सभी जानते है कि शेयर बाजार अनिश्चितता का दूसरा नाम है। साथ ही यहां पर कभी भी, किसी भी प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। ता.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

२६ से मासान्त तक सूचकांक अच्छा उछलेगा। और भिन्न-भिन्न सेक्टरों में खरदारी से शेयर मूल्यों में तेजी दर्ज होगी। सावधानी की आवश्यकता है। यदि सब न घटित हुआ तो बाजार कभी भी किसी भी समय मंदी में आ सकता है। फिर भी मंदी की संभावना न्यूनतम है।

जुलाई-यह मास शनिवार, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र, सिंह राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. २ को बुध वक्री होगा। ता. ४ को गुरु मार्गी होगा। ता. ९ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. १२ को मंगल सिंह में, ता. १४ को शुक्र मिथुन में, ता. १६ को सूर्य कर्क में, ता. २६ को शनि पूरब में अस्त होगा। इसी तारीख को बुध मिथुन में, ता. २७ को बुध पूरब में उदय होगा। ता. ३० को बुध मार्गी होगा। फलतः ३ से ७ तक साफ्टवेयर, बैंक, फार्मा, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों में विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार तेजी में रहना चाहिए। मिड्कैप क्षेत्र की कंपनियों में भी भारी तेजी की संभावना है। ता. १० से ११ तक कोई गलत अफवा के कारण साफ्टवेयर, मीडिया, बैंक कंपनियों के शेयरों में भारी बिकवाली दबाव आने की आशंका है प्रतीत हो रही है। जिसके चलते उपरोक्त सेक्टरों में एकबारगी बाजार नीचे आएगा। अतः सावधानी अपेक्षित है। ता. १२ से १९ तक भारी गिरावट के पश्चात् अब निचले स्तर पर पुनः एक बार खरदारी रूझान बन सकता है। तथा निवेशकों द्वारा अपने वर्तमान सौदे का औसत सुधारने हेतु भी खरीदारी किए जाने की संभावना प्रबल है। ता. २१ से ३१ तक टेक्सटाईल्स, बैंकिंग, टेलीकॉम, साफ्टवेयर, फार्मा, ब्लूचिप कंपनी के शेयरों में वित्तीय संस्थाओं में समर्थन से बाजार तेजी में रहेगा। परन्तु ऑटो, भारी इंजीनियरिंग, सीमेन्ट कंपनियों के शेयरों में बिकवाली दबाव बनने की आशंका है।

अगस्त-यह मास मंगलवार, चित्रा नक्षत्र, तुला राशि में प्रारंभ होगा। ता. ५ को बुध कर्क में, ता. ७ को शुक्र कर्क में, ता. १६ को सूर्य सिंह में, ता. १९ को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. २४ को बुध सिंह में, ता. २५ को शनि उदय होगा। ता.२९ को मंगल कन्या में, ता. ३१ को मंगल अस्त होगा। फलतः चालू सप्ताह में अब एक बार फिर शेयर बाजार में बिकवाली दबाव आने की संभावना है। जिसके चलते सभी क्षेत्रों की कंपनियों के शेयर मूल्य एकबारगी नीचे का रुख दिखा सकते हैं। सप्ताह के प्रारंभ से ही मिड्कैप क्षेत्र की कंपनियों में भारी बिकवाली आने की आशंका दिख रही है। अतः इसमें एकबारगी मुनाफा भुना लेना निवेशकों के लिए उचित प्रतिक्रिया अन्यथा फिर एक बार ऊंचे मूल्यों पर फंसे रह जाना मजबूरी बन सकता है। ता. १ से २३ तक शेयर बाजार दिशाहीन रहेगा। ता. २४ से ३१ तक बाजार में नई लाईन बनेगी। जिससे मंदी पर ब्रेक लगेगा। साथ ही यही से भारी इंजीनियरिंग, ऑटो, सीमेन्ट, पावर, विद्युत आदि कंपनियों के शेयरों में लिवाली के जोर से बाजार तेजी में रहेगा। फ्यूचर कारोबारियों के यह सप्ताह अनुकूल है।

सितम्बर-यह मास शुक्रवार, अनुराधा नक्षत्र, वृश्चिक राशि में प्रारंभ हो रहा है। इस मास में ता. १ को शुक्र सिंह में, ता. ९ को बुध कन्या में, ता. १६ को बुध पश्चिम में उदय होगा। इसी तारीख को सूर्य कन्या में, ता. २५ को शुक्र कन्या में, ता. २७ को बुध तुला में भ्रमणशील रहेगा। फलतः इस मास का प्रारंभ तेजी से ही होगा। लेकिन दूसरे हफ्ते के बाद तेजी में और वृद्धि होगी। हालाँकि बाजार अभी भी तेजी में ही रहेगा। अधिकांश शेयरों के भाव अबतक ऊंचाई के स्तर को देख चुके रहेंगे। अतः खरीदारी सोच-समझकर करें। ता. १८ से २९ तक साफ्टवेयर, फार्मा, बैंक, म्यूचुअल फंड, टेक्सटाइल्स, सुगर कंपनियों के शेयरों में संस्थागत निवेश तथा विदेशी संस्थाओं के सक्रियता से बाजार विशेष तेजी में रहना चाहिए। शेयर सूचकांक के ग्राफ में काफी तेजी दर्ज होना चाहिए। भारतीय शेयर बाजार राजनीतिक घटना चक्र से विशेष प्रभावित होता है। अचानक इसके चक्र में फंसकर अधिक ऊरपर नहीं जा सके तो आप इसे दुर्भाग्य समझें। ऐसे तो क्या होगा? यह आनेवाला समय ही बतायेगा। ऐसे इस माह सभी सेक्टरों में बारी-बारी से तेजी इस माह देखने को मिलेगा। अतः आप अपना पैसा भिन्न-भिन्न सेक्टरों में बाँट कर लगावे तो लाभ में रहेंगे।

अक्टूबर-इस माह का प्रारंभ रविवार, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, मकर राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. ६ को शुक्र पूरब में अस्त होगा। ता. ११ को राहु कुंभ में, इसी तारीख को केतु सिंह में, ता. १४ को मंगल तुला में, ता. १७ को सूर्य तुला में, ता. १९ को शुक्र तुला में, ता. २३ को बुध वृश्चिक में, ता. २७ को बुध वक्री होगा। इसी तारीख को गुरु वृश्चिक में, ता. ३० को शनि सिंह में प्रवेश करने से इस मास का प्रारंभ तेजी में होगा। ता. ६ से बाजार में ऊपर-नीचे के भावों में बहुत अधिक अंतर दिख पड़ेगा और ता. ६ से १० तक बाजार में बिकवाली दबाव बनने की आशंका है। ता. ११ से २० तक बाजार की चमक लौटना प्रारंभ हो जाएगा। इस समयों में बारी-बारी से सभी सेक्टरों में लिवाली के जोर रहने से बाजार तेजी में रहेगा। हो सकता है कि किसी नये क्षेत्र के शेयर में तेजी का रूख बने या कभी कोई सेक्टर तेज हो तो कभी कोई। ता. २३ से ३१ मे फार्मा, उपभोक्ता सामान बनाने वाली कंपनियों, साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया एवं भारी इंजीनियरिंग, पावर, ऑटो, सीमेन्ट कंपनियों के शेयरों में विशेष तेजी की अवधारणा बननी चाहिए।

नवम्बर-इस मास का प्रारंभ बुधवार, शतभिषा नक्षत्र, कुंभ राशि में हो रहा है। ता.१ को बुध तुला में, ता. २ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. १० को गुरु अस्त होगा। ता. १२ को शुक्र वृश्चिक में, ता. १५ को बुध पूरब में उदय होगा। ता. १६ को सूर्य वृश्चिक में, ता. १८ को बुध मार्गी होगा। ता. २७ को मंगल वृश्चिक में, ता. २८ को शुक्र उदय होगा। फलतः इस मास का प्रारंभ मंदी से होगा। बाजार में बिकवाली दबाव बनने की आशंका है। ता. १ से १४ तक साफ्टवेयर, फार्मा, बैंक, म्यूचुअल फंड, सीमेन्ट, ऑटो सेक्टरों में अचानक बिकवाली दबाव से बाजार आंधी की आम की तरह गिस सकता है। अतः सावधानी अपेक्षित है। ता. १५ से २४ तक विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार का रूख बदलेगा। और सभी सेक्टरों के ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों में लिवाली से बाजार तेजी में आ जाएगा। बाजार में जब भी तेजी का माहौल बनेगा, किसी न किसी कारण से बाजार टुटता भी रहेगा। यह जरूर है कि जो बाजार रूख समझ जाएंगे, वह जल्दी-जल्दी सौदा काटकर मुनाफा भुना लेंगे। और अच्छा लाभ कमा सकते हैं। सुधार की प्रक्रिया जारी रहने पर साफ्टवेयर, सुगर, टेलीकॉम, सीमेन्ट, फार्मा, स्टील, पावर तथा ऑटोमोबाइल कंपनियों सहित मिड्कैप क्षेत्र की कंपनियों में भी तेजी की अवधारणा बन सकती है। ता. २७ से ३० तक ऑटोमोबाइल, सीमेन्ट, बैंक, म्यूचुअल फण्ड्स कंपनियों के शेयरों में लिवाली के जोर होने से बाजार तेजी में रहना चाहिए। कुल मिलाकर वर्तमान सौदे का औसत सुधार हेतु भी खरीदारी किए जाने की संभवना प्रबल है।

दिसम्बर-यह मास शुक्रवार, रेवती नक्षत्र, मेष राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. ४ को बुध वृश्चिक में, इसी तारीख को गुरु उदय होगा। ता. ६ को शुक्र धनु में, इसी तारीख को शनि वक्रह होगा। ता. १४ को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. १५ को सूर्य धनु में, ता. १७ को मंगल उदय होगा। ता. २३ को बुध धनु में, ता. ३० को शुक्र मकर में विचरण करेगा। फलतः इस मास की प्रारंभ तेजी से होगा। ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, धातु, सीमेन्ट, बैंक, कंपनियों के शेयरों में लिवाली का जोर रहने से बाजार तेज में रहेगा। यह तेजी का सिलसिला ता. १ से १५ तक जारी रहना चाहिए। अमेरिका और एशियाई शेयर बाजारों में भी तेजी की अवधारणा बनी रहेगी। बी.एस.ई. और एन.एस.ई को उठाने में मदद मिलेगा। संबेदी सूचकांक आधारित कंपनियों के शेयरों में हीरो हाण्डा, इनफोरिसिस टेक्नालॉजी, सत्यम, विप्रो, सनफार्मा, सिफला, रैनबैक्सी, टाटा मोटर, टाटा पावर, टिस्को आदि कंपनियों में विशेष कारोबार की अनुमान है। ता. १८ से २९ तक सुधार की प्रक्रिया जारी रहने पर साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया, बैंकों, सीमेन्ट, स्टील सहित मिडकैप क्षेत्र की कंपनियों में तेजी की अवधारणा बन सकती है।

उपरोक्त आलेख पूर्णतः गणितीय आधार पर लिखा गया है। होना न होना ईश्वर के अधीन है। निवेशक गण स्टॉक एक्सचेंज, शेयर ब्रोकर इसे भली प्रकार पढ़-समझकर अपनी सूझ-बुझ पर आधारित काम करें। इसमें लाभ-हानि की लेखक, प्रकाशक की जिम्मेवारी नहीं है। शेयर बाजार तो अपने आप में समुद्र है। इसमें गोता लगाना आसान नहीं है। फिर भी काफी शोध करने के बाद तथा शेयर बाजार की गतिविधियों को काफी अवलोकन करने के बाद हम विज्ञ पाठकों के विशेष जानकारी के लिए दैनिक तेजी-मंदी विस्तृत स्पेशल एवं सर्वोत्कृष्ट रिपोर्ट तैयार करते हैं। जिसमें उल्लेख होता है-कब सौदा किस सेक्टर में करें, कब काटे? इसकी विस्तृत उल्लेख रहता है। जिसका सेवा शूल्क तीन माह का २५००, छः माह का ३०५०, एक वर्ष का ५०५० निर्धारित है। जबकि सर्वोत्कृष्ट रिपोर्ट वार्षिक शूल्क ७५०० निर्धारित है। आप सेवा शूल्क आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, पटना (बिहार) के किसी भी बैंक का ड्राफ्ट रजिस्ट्री द्वारा भेजकर रिपोर्ट रजिस्ट्री पत्र द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। दैनिक जानकारी एवं विशेष जानकारी वार्षिक सदस्यों को मोबाईल-०९४३१४८६२१६ पर किसी भी समय जानकारी दी जाती है। शेष ईश्वर के अधीन है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

... व्यापार समीक्षा

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् 2006 में व्यापार भविष्य एवं वायदा व्यापार समीक्षा

लेखक -आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरॉव (नटवार) जिला-रोहतास (बिहार)-८०२२१८, फोन-०६१८५-२४६४८०,२४६३१७, मो. ०९४३१४८६२१६

व्यापार भविष्य विज्ञान भी ज्योतिष शास्त्र का एक अंग है। इसके द्वारा व्यापार संबंधी हानि-लाभ सभी बातों की जानकारी प्राप्त किया जा सकता है। कब, किस समय, किस वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए? जिससे लाभ हो सके। ऐसे तो प्रत्येक व्यावसायिक वर्ग की यह महत्वकांक्षा रहती है कि बाजार की कब, क्या स्थिति रहेगी और अमुक-अमुक समय पर हमें क्या करना चाहिए? इसके लिए वह हर एक संभव प्रयत्न करता रहता है। किन्तु इसकी सही-सही पूरी जानकारी केवल ज्योतिष विद्या के द्वारा तेजी-मंदी आदि का संकेत मिल सकती है। कारण भी देश-काल तथा वस्तु मात्र का ग्रह एवं राशि-नक्षत्र से तथा ग्रहों कि उदय-अस्त, मार्गी-वक्री आदि योगायोग से बहुत गहरा ताल-मेल है। यह ग्रह स्थितियां यथासमय तेजी या मंदी के समर्थन में अवश्य ही सहायक होता है। यह प्रभाव चाहे शेयर बाजार हो या वायदा बाजार। इससे भी ग्रह स्थितियों से गहरा ताल-मेल है।

वायदा एक ऐसा कारोबार है जिसका आधार मानस शास्त्र पर है। मनुष्य अपने लाभ से ही सटोरिया है। परन्तु प्रत्येक मनुष्य में केवल यही अंतर होता है कि किसी में इसकी रुचि ना के बराबर होती है तो किसी में ज्यादा। हर मनुष्य सदैव आनेवाला व्यय पर भरोसा करता है। और आनेवाले दिनों का ही कल्पना करता है। वह कदाचित् यह नहीं सोचता कि दुनिया आज रात ही खत्म हो जाएगा और कल सवेरा नहीं होगा। इस बात में कोई संदेह नहीं कि जीवन में सफलता केवल भाग्य पर निर्भर नहीं बल्कि प्रयत्न करनक से भी सफलता प्राप्त की जा सकती है। व्यापार में सफलता के लिए साहस, पुरुषार्थ, धर्म, प्रयत्न और बाजार की धारणा को समझने-बूझने की बुद्धि जरूर होनी चाहिए। कोलकाता, मुंबई, दिल्ली, जयपुर और कुछ अन्य शहरों में सोना-चांदी का, मुंबई में तेल तथा तेलहन का और दिल्ली तथा हापुड़ में जिन्सों का वायदे का सौदा होता है। जोधपुर, कोलकाता, असम आदि में जूट, पाट, पटसन, ग्वार, ग्वार सीड का वायदे व्यापार कभी होता है। जबकि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में तेल, तेलवाना, तेलहन का वायदा व्यापार का कारोबार होता है। सराफा, तेल, तिल, गम ग्वार, कपास, पाट, पटसन, किराना बाजार आदि जिन्सों का कोई भी व्यक्ति डिलेवरी लिये या दिये बिना सौदा ले और बेच सकता है। किन्तु एक ही शर्त होता है कि वह यह नीति करने से पहले सौदे का भुगतान कर दिया जाए। यदि कोई व्यक्ति मिति करने से पहले जो कुछ भी लेन्-बेच करें तो पहले बेच के भाव के अनुसार लाभ-हानि का हकदार होता है। जिस वस्तु का वायदा व्यापार करें इस वस्तु का उत्पादन, खपत, सर्टाक, आयात-निर्यात तथा वैदेशिक मांग एवं जहां पर उस वस्तु का उत्पादन अधिक है तथा ऋतु संबंधी एवं राजनीतिक घटना चक्र आदि की जानकारी जरूर रखना चाहिए। समय-समय पर योग्य विशेषज्ञों की सलाह लेते रहना चाहिए।

जनवरी-ता. १ को सूर्य पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में तथा धनु राशि में प्रवेश करने से दो सप्ताह बाद अचानक बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड, गुगुल, तिल, तेल, चांदी, सन में तेजी की अवधारणा बनती है। ता. ४ को सूर्य धनुराशि में प्रवेश करने से तथा ता. ७ को भी धनु में प्रवेश करने से कपास, सूत, पाट, तेल, सोना, चांदी आदि तेज होंगे। जबकि अनाजों के भावों में मंदी की अवधारणा रहेगी। ता. ८ को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। फलत: सोना, चांदी, गुड़, सूत, वस्त्र, घी, तेल, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली आदि में मंदी की अवधारणा बनती है। रुई, में कुछ तेजी आ सकती है। इसका प्रभाव कम से कम ४ दिन तक रहना चाहिए। ता. १३ को शुक्र धनु राशि में प्रवेश करने से कपास, रुई, सूत, वस्त्र, गेहूं, जौ, चना, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं का भाव तेज होता है। ता. १४ को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करने से उड़द, कालीमिर्च, गवार, मूंग, चावल, गेहूं, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, वनस्पति घी, सरसों, सोयाबीन, चना, पाट आदि के भाव तेज होते हैं। इसका प्रभाव बाजार में कम से कम ४ दिन तक रहना चाहिए। ता. १८ को शुक्र उदय पूरब में होने से सरसों, मूंगफली, बिनौला, सोयाबीन, रुई, गुड़, सूत, वनस्पति घी, डिबा बंद तेल, सोना, चांदी में पहले मंदी फिर तेजी की अवधारणा बनती है। इसमें व्यापक उतार-चढ़ाव होने से वायदा व्यापार में सोना, चांदी, तेलहन में थोड़ा भी भूल होने पर व्यापक नुकसान हो सकता है। ता. १९ को बुध मकर में प्रवेश करने से रुई, चांदी, सोना में तेजी और सब प्रकार के अनाजों के भावों में विशेषतौर पर मूंग, चना, मटर, अरहर, उड़द में बाजार कुछ मंदी का रूख लेकर चलेगा। परन्तु मंदी में किया गया सौदा अप्ल समय में लाभकारी हो सकता है। वायदा व्यापार के लिए आप चाहे तो ता. १३ से २० तक के लिए सर्राफा बाजार, तेलहन, गुड़ के वायदा व्यापार में धन निवेश कर सकते हैं, जो लाभकारी हो सकता है। दलहन एवं किराना बाजार में रिस्क न लें। जबकि तेलहन तथा वनस्पति घी के वायदा में धन निवेश किया जा सकता है। ता. २० को मंगल मेष राशि में प्रवेश करने से गमगवार, ग्वार सीड, कालीमिर्च, गेहूं, सरसों सीड, अरण्डी सीड, बिनौला, सोना, चांदी आदि में तेजी की अवधारणा बनी रहने की संभावना है। जबकि हल्दी, जीरा, अजवाईन, सौंफ, किराना बाजार में मंदी की अवधारणा बन सकती है। किशमिश, छुहारा, राजमा के भावों में तेजी की अवधारणा बनी रहेगी। जिसका प्रभाव कम से कम एक सप्ताह तक रहना चाहिए। ता. २८ को मंगल कृतिका में, ता. ३० को सूर्य श्रवण में प्रवेश करने से गेहूं, चना, मूंग, अरहर, सभी प्रकार के अनाज, रुई, कपास, सूत, चन्दन, कपूर, चीनी, तेल, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं में तेजी की अवधारणा मासान्त तक जारी रहना चाहिए। यह ध्यान रखें कि गमगवार, गवार सीड, बिनौला, कालीमिर्च, सभी दलहन, वायदा में तेजी अल्पकाल के लिए होगा। अत: सोच विचार कर सौदा करें। एक बार गलत सौदा हो जाने पर इससे निकलना बड़ा मुश्किल हो सकता है।

फरवरी-ता. १ को बुध धनिष्ठा में प्रवेश करने से तथा ता. २ को श्रवण नक्षत्र में सूर्य प्रवेश करने से सोना, चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना, सूत, सन, गुड़, खाण्ड का भाव तेज होता है। परन्तु उतार-चढ़ाव बना रहता है। यह सिलसिला ता. ४ तक चलना चाहिए। ता. ५ को मंगल वृष राशि में तथा इसी तारीख को बुध कुंभ में प्रवेश करने से रुई, कपास, सूत, दलहन, केसर, सोना, चांदी में व्यापक उतार-चढ़ाव होता है। गुड़, खाण्ड, सभी डिबा बंद तेल, चावल में मंदी की अवधारणा बनेगी। यदि मंदी देखें तो तेल, वनस्पति घी, सोना, चांदी के वायदा व्यापार में तेजी के लिए सौदा किया जा सकता है। जो अल्प समय में लाभकारी हो सकता है। ता. ६ को सूर्य धनिष्ठा में प्रवेश करने से सोना, चांदी आदि सब धातुएं, अलसी में तेजी। रुई, चीनी में साधारण तेजी की अवधारणा बनेगी। यह तेजी की अवधारणा ता. ११ तक चलना चाहिए। ता. १२ को सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश करने से वनस्पति घी, सभी डिबा बंद तेल, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, राई में तेजी। रुई, पाट, अलसी, अरण्ड, गेहूं आदि अनाज, गुड़, खाण्ड में मंदी की अवधारणा बनती है। ता. १३ को बुध शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश करने से सोना, चांदी में मंदी का अवधारणा बनाता है। जबकि दलहन एवं कुछ अनाजों के भाव में तेजी का अवधारणा बनाता है। ता. १४ को बुध पश्चिम में उदय होगा। फलत: (कर्के सुखं सिंहपदे चतुष्पान्निमेच कन्या बहुधा न सौख्यम्। भूकंपयुद्धादि तुलेदिते ज्ञे तथाऽष्टमे राजभयं सुभिक्षम॥) रुई, में भयंकर तेजी, चांदी में मंदी। पाट, हैशियन में तेजी की अवधारणा बनती है। ता. १५ को शतभिषा में बुध प्रवेश करेगा जिससे सोना, चांदी में मंदी एवं दलहन, अनाजों में कुछ तेजी का रूख रहेगा। यह सिलसिला ता. १८ तक चलना चाहिए। मेरे समझ से सोना, चांदी, वायदा व्यापार में मंदी का सौदा ता. १२ से २० तक के लिए किया जा सकता है। तेलहन, वनस्पति घी के लिए सौदा साधारण तेजी के लिए किया जा सकता है। पाट, हैशियन के लिए भी सौदा किया जा सकता है। जो साधारण मुनाफा दे सकता है। रुई में भी सौदा किया जा सकता है। ता. १९ को मंगल कृतिका में तथा इसी तारीख को शुक्र उत्तराढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करने से गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी, सूत में तेजी। रुई में उतार-चढ़ाव। उत्तराढ़ा में शुक्र होने से गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, अरण्ड में मंदी का संचार होता है। यह

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सिलसिला ता. २३ तक चलना चाहिए। ता. २४ को बुध मीन में प्रवेश करने से रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदी। सोना, चांदी में उतार-चढ़ाव परन्तु रूझान मंदी का रहेगा। बिनौला में विशेष तेजी की अवधारणा बन सकती है। ता. २५ को मंगल रोहिणी नक्षत्र में तथा शुक्र उत्तराढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करने से रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग में तेजी की अवधारणा बनती है। जबकि उत्तराढ़ा में शुक्र के प्रवेश होने से गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, अरण्ड में मंदी का संचार होता है। जबकि अनाज, दलहन, रुई में उतार-चढ़ाव पूर्ण तेजी की अवधारणा बनती है। ता. २६ को सूर्य शतभिषा नक्षत्र कुंभ राशि में प्रवेश करने से दो सप्ताह बाद सोना, चांदी, सूत, सन, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, किशमिश, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं, गुड़ के भाव तेज होते हैं। कुल मिलाकर इस मास सोना, चांदी, चीनी, कपूर, चावल के भाव मंदा रहेगा। जबकि गुड़, किशमिश, छुहारा के भाव उतार-चढ़ाव पूर्ण रहेगा। तेलहन, दलहन के भावों में खामोशी छाया रहेगा। आप चाहे तो बाजार का रूख देखते हुए सोना, चांदी, गमगवार, बिनौला, चीनी, गुड़ का वायदा व्यापार कम समय के लिये मंदी का सौदा का सकते हैं।

मार्च-ता.१ को शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश करने से दो सप्ताह बाद सूत, सन, वस्त्र, सभी डिबा बंद तेल, किशमिश, छुहारा, हल्दी, गुड़ के भाव को तेज करजा है। ता. ३ को बुध वक्री होने से ३ सप्ताह बाद वनस्पति घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी आती है। ता. ४ को मंगल रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करने से रुई, कपास, सूत, गुड़, खाण्ड, रेशम, लालमिर्च, सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, राजमा, तेल, तिल के भाव तेज होते हैं। ता. ६ को शुक्र उत्तराढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करने से गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी का भाव मंदा रहे। परन्तु अनाज के भाव तेज होता है। ता. ९ को बुध कुंभ राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी आदि धातुओं का भाव सम रहेगा। रुई में उतार-चढ़ाव होगा। गुड़, खाण्ड, घी, तेल का भाव मंदा रहेगा। अनाजों में उतार-चढ़ाव पूर्ण मंदी रहेगा। इसका प्रभाव ५ दिन तक रहेगा। ता. १४ को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करने से तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, रुई, सोना में तेजी तथा प्रत्येक अनाजों में पहले कुछ तेजी, बाद में मंदी की ओर झुकाव होता है। जबकि चांदी में मंदी की अवधारणा रहती है। ता. १६ को मंगल रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करने से लालमिर्च, ग्वारसीड, कपास, बिनौला, रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, सरसों, डिबा बंद तेल, तिल, कालीमिर्च, उड़द के भाव तेज होता है। ता. २१ को बुध शतभिषा में प्रवेश करने से सोना, चांदी आदि धातुओं का भाव सम। रुई में पहले तेजी बाद में मंदी। गुड़, खाण्ड, घी, तेल के भावों में नरमी। अनाजों के भावों में खामोशी छाया रहेगा। इसी तारीख को शुक्र श्रवण नक्षत्र में, मकर राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, उड़द, मूंग, मोठ का भाव मंदा होता है। कपास, बिनौला, सभी तेल का भाव तेज होता है। परन्तु मेरे समझ से तेलहन, दलहन, सराफा बाजार में रिक्स लेकर काम करना हानिप्रद हो सकता है। प्रायः सभी बाजारों में खामोशी पूर्ण वातावरण रहेगा। अभी वायदा व्यापार में रिक्स लेकर काम न करें। बाजार दिशाहीन चलेगा। सोना, चांदी, गमगवार, दलहन, तेलहन, बाजार में मंदी ६० प्रतिशत तथा ३० प्रतिशत तेजी में बाजार चलेगा। कुल मिलाकर मासान्त तक बाजार की स्थिति मंदी की अवधारणा में चलेगा। फलतः स्टॉक करने वाले व्यापारी गुड़, मेवा, चीनी, चावल, किराना बाजार, सोना, चांदी स्टॉक कर सकते हैं। वनस्पति घी का भी स्टॉक किया जा सकता है। वायदा व्यापार के लिए समय अनुकूल नहीं है। सटोरियों का लिवाली न के बराबर होने से बाजार मंदी में बनी रहेगी। अतः सावधानी अपेक्षित है।

अप्रेल-ता. ३ को मंगल मिथुन में प्रवेश करने से गुड़, खाण्ड, अलसी तेज। रुई में भी तेजी रहेगी। चांदी में घटा-बढ़ी होगी। गमगवार में उतार-चढ़ाव पूर्ण तेजी तथा ता. ४ को बुध पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश करने से सोना, चांदी, लोहा, तांबा आदि धातुएं तथा चावल के भाव मंदा होते हैं। ता. ६ को शनि मार्गी होने से एक सप्ताह में रुई मंदा होकर फिर तेज होता है। दो मास के बाद तिल, तेल, सरसों, सभी डिबा बंद तेल, कालीमिर्च, उड़द में भयंकर तेजी आती है। ता. ६ से १० तक गमगवार, ग्वारसीड, उड़द, कालीमिर्च के भावों में व्यापक उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। परन्तु तेजी में रहना चाहिए। ता. १२ को बुध मीन राशि में प्रवेश करेगा। फलतः दो सप्ताह में रुई, कपास, बिनौला में अच्छी तेजी की अवधारणा बनती है। सोना, चांदी में पहले तेजी आए, बाद में भारी गिरावट आने की संभावना रहती है। गुड़, खाण्ड, गेहूं में भी मंदी की अवधारणा रहती है। ता. १३ को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी, अलसी, तिल, तेल, अनाज, लोहा, तांबा, सूत, कपड़ा, सुपारी, नारियल, लौंग, इलायची, हींग, अरण्ड का भाव तेज होता है। मेरे समझ से ता. २ से १२ तक सोना, चांदी, अन्य धातुओं को वायदा व्यापार में मंदी की सौदा किया जा सकता है। अल्प समय में लाभकारी हो सकता है। सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, तेल का सौदा भी मंदी के लिए किया जा सकता है। दलहन का भाव भी मंदी में रहेगा। वनस्पति घी के लिये तेजी का सौदा किया जा सकता है। कम से कम २५ अप्रेल तक के लिए। ता. १५ को मंगल आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा जिससे गुड़, खाण्ड, अलसी, रुई, नमक, तिल, तेल का भाव तेज हो। सरसों पर अच्छी तेजी। चांदी में व्यापक मंदी की अवधारणा बनती है। ता. २० को मंगल पुनः आर्द्रा में प्रवेश करने से गमगवार, ग्वारसीड, बिनौला, किशमिश, छुहारा, काजू आदि में तेजी। सोना, चांदी में उतार-चढ़ाव पूर्णतेजी तथा ता. २४ को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी में तेजी। डिबा बंद तेल, वनस्पति घी, किशमिश, राजमा में उतार-चढ़ाव पूर्ण तेजी। ता. २७ को सूर्य भरणी नक्षत्र में प्रवेश करने से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, चावल, चना, मोठ, अलसी, राई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, वनस्पति घी का भाव अचानक तेजी में आ सकता है। ता. २८ को शुक्र मीन में प्रवेश करनक सक रुई, चांदी, चीनी, कपूर, शंख में अच्छी तेजी आए। गुड़, खाण्ड, चावल में मंदी की अवधारणा रहेगी। कुल मिलाकर आप चाहें तो ता. २२ के बाद सोना, चांदी, वनस्पति घी, दलहन में अरहर, मसूर, चना के वायदा व्यापार में तेजी का सौदा मासान्त तक के लिए किया जा सकता है। तेल में सरसों, सोयाबीन, बिनौला आदि में भी तेजी का सौदा किया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में खाद्य तेलों, सर्राफा बाजार में नरमी के रूख होने के बावजूद भी सटोरियों लिवाली बढ़ने से वायदे में तेजी का रूख बन सकता है। फिर भी बाजार का रूख देखते हुए कारोबार करना सफल व्यापार की कुंजी होगी।

मई-ता. २ को बुध मेष में प्रवेश करने से (यदा सौम्यः स्थितो मेषे महर्घ च चतुष्पदाम्। सुवर्ण समतां याति नात्र कार्या विचारणा॥) अर्थात सोना, चांदी, मोती, मूंगा, हीरा, जवाहरात, गेहूं, चने का भाव तेज हो। गुड़, खाण्ड, तेल, तिल, उड़द, कालीमिर्च, सरसों, वनस्पति घी, रुई, कपास, बिनौला में कुछ मंदी के रूख बनता है। दुधारू पशुओं के मूल्य में बेतहाशा वृद्धि होती है। चावल, चीनी के भाव तेज होते हैं। बाजार में इसकी अवधारणा ता. ५ तक रहना चाहिए। ता. ६ को बुध पूरब में अस्त होगा। फलतः तीन सप्ताह बाद अनाज, घी में मंदी आती है। रुई, कपास में उतार-चढ़ाव पूर्ण तेजी। सोना, बिनौला में उतार-चढ़ाव होकर अंत में तेज होता है। ता. ७ को मंगल पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश करने से चांदी, रुई, कपास, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, मूंगफली एवं वनस्पति घी का भाव तेज होते हैं। ता. ११ को सूर्य कृतिका नक्षत्र में प्रवेश करने से सोना, चांदी, रुई, कपास, बिनौला, अलसी, गेहूं, चना, चावल, सरसों, मूंग, मोठ का भाव तेज होते है। इसका प्रभाव कम से कम तीन दिन तक रहना चाहिए। ता. १४ को सूर्य वृष राशि में प्रवेश करने से चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, बिनौला, सूत, बादाम, सुपारी, नारीयल, तिल, उड़द, कालीमिर्च, डिबा बंद तेल, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन आदि तेल तेज होंगे। वनस्पति घी में भी तेजी की अवधारणा रहेगी। जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल में कुछ मंदी का रूख रहेगा। इसका प्रभाव कम से कम तीन दिन तक रहना चाहिए। ता. १७ को बुध वृष में प्रवेश करने से प्रत्येक वस्तुओं के भाव में उलट फेर होगा, जो तेज है वह मंदा होगा, जो मंदा चल रहा है वह तेज होगा। मेरे समझ से ता. १ से १५ तक आप सोना, चांदी, चीनी, सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, तेल, रुई, कपास, बिनौला, कालीमिर्च, उड़द, मेवा में किशमिश, वनस्पति घी आदि में वायदा सौदा कर सकते हैं। जो आपके लिये लाभकारी हो सकता है। वैसे वायदा व्यापार के लिये अभी समय अनुकूल चल रहा है। गुड़, खाण्ड, दलहन के व्यापार में खास वृद्धि होने का संभावना नहीं बन रहा है। किराना बाजार में बाजार का रूख कुछ गरम रहेगा। परन्तु बाजार में दबाव बना रहेगा। ता. १७ से २३ तक बाजार में कोई गलत अफवाह बाजार में गिरावट का करण बनेगा। अतः सावधानी अपेक्षित है। गमगवार, ग्वारसीड, बिनौला में अभी खामोशी रहेगा। ता. २४ को शुक्र मेष राशि में प्रवेश करने से गेहूं, चना, जौ, चावल का भाव तेज रहेगा। रुई, चांदी, बिनौला, कपास में अच्छी तेजी चले। तिल, तेल, सभी डिबा बंद तेल का भावों में नरमी चलेगा। इसका प्रभाव ता. २६ तक चलना चाहिए। ता. २७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

... में उदय होने होगा। फलतः ३ सप्ताह बाद अनाज, घी, वनस्पति
को मंगल कर्क में प्रवेश करने से गुड़, खांड, रुई, गेहूं, चना आदि सभी ... घी आदि में तेजी। रुई में मंदी के बाद तेजी। सोना में घटा-बढ़ी होकर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

को मंगल कर्क में प्रवेश करने से गुड़, खांड, रुई, गेहूं, चना आदि सभी तरह के अनाज तेज होंगे। ता. ३० को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई में शीघ्र तेजी आती है। चांदी में मंदी। सोना में तेजी। पाट, हैशियन में भयंकर तेजी आती है। ता. ३१ को बुध मिथुन में प्रवेश करने से सोना, चांदी, रुई में मंदी। सरसों में घटा-बढ़ी का योग बनता है। मेरे समझ से सर्राफा बाजार में वायदा व्यापार तथा समस्त तेलहन, गवारसीड, बिनौला में अभी रिक्स न लें। चाहे तो चना, मूंग, वनस्पति घी, सरसों तेल, चीनी में सौदा का सकते हैं।

जून-ता. १ को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करने से गेहूं, जौ, चना, गुड़, खांड, वनस्पति घी, ग्वार, बाजरा, सरसों, तिल, तेल, अरण्ड, अलसी,घी, सूत, सन, कत्था तेज। चांदी में कुछ मंदी। राई में विशेष तेजी की अवधारणा बनती है। इसका प्रभाव कम से कम दो दिन तक रहना चाहिए। ता. ३ को बुध आर्द्रा में प्रवेश करने से गेहूं, जौ, चना, तिल, तेल, उड़द, कालीमिर्च, मूंग, मोठ का भाव मंदा होता रहेगा। वर्षा खूब बरसे। एक माह बाद प्रत्येक वस्तुओं में तेजी आ जायेगी। ता. ४ को शुक्र भरणी में प्रवेश करने से चांदी, सोना में नरमी। मूंग, मोठ, ग्वार में घटा-बढ़ी। रुई, कपास, बिनौला में भयंकर तेजी आए। सरसों, तिल, तेल, डिब्बा बंद सभी तेल के भाव में मंदी का रूख बनेगा। वनस्पति घी, चीनी के भाव में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। इसका प्रभाव कम से कम तीन दिन तक रहेगा। ता. ८ को राहु उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में तथा केतु उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश करने से लालमिर्च, धनियां, हल्दी, सोठ, किराने के भाव तेज हो। गमग्वार, ग्वारसीड, बिनौला, कालीमिर्च, उड़द में भयंकर तेजी की अवधारणा बनती है। आप चाहे तो ता. ५ से १२ तक के लिये जीरा, कालीमिर्च, हल्दी, सोयाबीन तेल, तिल, सरसों, तेल, गमग्वार, ग्वारसीड, पाट, हैशियन, सन आदि में वायदा व्यापार के लिये सौदा कर सकते है। इन समयों में सटोरियों लिवाली से अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी बाजार के भाव तेजी में रहना चाहिए। सटोरियों के अनुसार भी एशियाई देशों में उड़द, ग्वार, तेलहन, बिनौला, किराना बाजारों में मजबूती रहने की अनुमान है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इनके मांग बढ़ने से इनके भाव तेज होना स्वाभाविक है। ता. १५ को सूर्य मिथुन में प्रवेश करने से कन्द, मूल, फल, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घृत, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अन्न, कालीमिर्च, ग्वार, ग्वारसीड, बिनौला, डिब्बा बंद तेल में भयंकर तेजी तथा सोना, चांदी में भी उतार-चढ़ावपूर्ण तेजी का रूख होता है। इसका प्रभाव ता. १७ तक रहना चाहिए। ता. १८ को शुक्र वृष में प्रवेश करने से रुई, कपास में अच्छी मंदी। सोना, चांदी में पहले घटा-बढ़ी होकर अंत में तेजी होती है। अनाज के भाव में मंदी का रूख बनता है। ता. २० को बुध कर्क में प्रवेश करने से चांदी में व्यापक उतार-चढ़ाव। सोना, कपास, मूंगफली, सरसों में पहले तेजी आकर भाव स्थिर रहे। अनाज भाव सम। गुड़, खाण्ड, शक्कर का भाव उतार-चढ़ाव के मध्य तेजी में रहेगा। ता. २२ को सूर्य आर्द्रा में प्रवेश करेन से रुई, सूत, सन, कपास, अलसी, सरसों, अरण्ड, गुड़, खाण्ड, खल, चावल, गेहूं, जौ, चना, चांदी में तेजी की अवधारणा बनती है। ता. २६ को मंगल श्लेषा में प्रवेश करने से रुई, चांदी में मंदी का योग बनता है। अनाजों में तेजी की अवधारणा बनती है। इसका प्रभाव ता. २६ तक रहना चाहिए। ता. २७ को शुक्र रोहिणी में प्रवेश करने से किशमिश, नारीयल, सुपारी आदि के भाव मंदा होते हैं। अफीम का भाव तेज हो। सोना, चांदी आदि धातुओं में भी मंदी की अवधारणा बनती है। मेरे समझ से ता. २० के बाद से मासांत तक के लिए सोना, चांदी, चीनी, सरसों सीड, अरण्डी सीड, सोयाबीन तेल एवं सीड, कालीमिर्च आदि जिन्सों का वायदा मंदी का सौदा किया जा सकता है। जिसमें २० टका से ५० टका तक बाजार गिरावट में आ सकता है।

जुलाई-ता. २ को सूर्य आर्द्रा में रहने से रुई, सूत, कपास, फल, अलसी, अरण्ड, गेहूं, चावल, चना, जौ, चांदी में भयंकर तेजी हो तो सोना में भावों में व्यापक उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। इसका प्रभाव ता. ३ तक रहना चाहिए। ता. ४ को बुध वक्री होगा। फलतः ३ सप्ताह में घृत, वनस्पति घी, गुड़, खांड, शक्कर में तेजी। गेहूं, चना आदि अनाजों में मंदी की अवधारणा बनेग॥ ता. ६ को गुरु मार्गी होने से ३ दिन में रुई मंदी होकर फिर तेज होती है, चांदी ७ दिन में। चावल, अलसी, सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, गुड़ तेज होते हैं। इसका प्रभाव ता. ९ तक रहना चाहिए। ता. १० को बुध पश्चिम में अस्त होने से रुई, कपास, में २० से २५ रुपये की शीघ्र मंदी होती है। चांदी में भयंकर तेजी। पाट, हैशियन और ग्वारसीड, दलहन में भयंकर मंदी का संचार होता है। स्टॉक करने वाले व्यापारी चाहे तो स्टॉक कर सकते हैं। जो अल्प समय में लाभकारी साबित होगा। इसका प्रभाव ता. ११ तक रहेगा। ता. १३ को मंगल सिंह राशि में प्रवेश करने से सोना, चांदी, रुई, सूत, अलसी, लालमिर्च, ग्वारसीड, बिनौला में विशेष तेजी बनेगी। आप ध्यान रखें कि ता. ९ से १५ तक के लिए सोना, लालमिर्च, गेहूं, मसूर दाल, रुई, सूत, चांदी, अलसी आदि जिन्सों में वायदा व्यापार तेजी के लिये कर सकते हैं। जबकि ता. ४ से ११ तक के लिए पाट, हैशियन, राई, सन, कपास का मंदी का सौदा करके लाभ उठा सकते हैं। ता. १४ को शुक्र मिथुन में प्रवेश करने से रुई, कपास, सूत, कपड़े में काफी मंदी हो। तिल, तेल, सरसों में घटा-बढ़ी के साथ प्राकृतिक उत्पात भी संभव है। ता. १६ सूर्य कर्क में प्रवेश करने से रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चांदी, सोना आदि तेज हो। गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल में मंदी का संचार हो। इनका प्रभाव ता. १८ तक रहना चाहिए। ता. १९ को शनि पूरब में अस्त होने से वस्त्र, रुई, सोने में मंदी। अनाज में तेजी होती है। ध्यान रखें, शनि बाजार को व्यापक उलट-फेर करता है। ता. २० को बुध मिथुन में प्रवेश करने से सोना, चांदी, रुई मंदा हो। सरसों में घटा-बढ़ी का योग बनता है। इसका प्रभाव ता. २५ तक रहना चाहिए। ता. २६ को बुध पूरब में उदय होने होगा। फलतः ३ सप्ताह बाद अनात, घी, वनस्पति घी आदि में तेजी। रुई में मंदी के बाद तेजी। सोना में घटा-बढ़ी होकर मंदी। ता. २८ को बुध मार्गी होने से रुई, कपास में पहले मंदी बाद में तेजी। चांदी में घटा-बढ़ी होकर तेजी हो। गमग्वार में तेजी। आठ दिन में गेहूं, जौ, चना, अरहर, मूंग में तेजी हो। जबकि तेल, अलसी, अरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली में मंदी का संचार होगा। सोना में तेजी की कुछ अवधारणा बनेगी जो मासान्त तक प्रभाव में बाजार चलता रहेगा। ता. १९ से २७ तक आप चाहे तो सोना, चांदी, चीनी, डिब्बा बंद तेल, उड़द, जीरा, कालीमिर्च आदि जिन्सों का तेजी का सौदा कर सकते है मासान्त तक के लिए। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में सर्राफा बाजार प्रभावित होने का अनुमान है।

अगस्त-ता. ३ को सूर्य श्लेषा में प्रवेश करने से दो सप्ताह में सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, अरण्ड, अलसी, कालीमिर्च, मजीठ का भाव तेज होते हैं। ता. ५ को बुध कर्क में प्रवेश करने से चांदी में २० से २५ रुपये की तेजी-मंदी चलेगी। सोना, कपास, मूंगफली, सरसों पर पहले तेजी आकर भाव उतार-चढ़ाव होंगे। ता. ७ को शुक्र कर्क में प्रवेश करने से चांदी में मंदी। सोना, तांबा, अनाज का भाव तेज हो। रुई में व्यापक उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। हवा ज्यादा तेज चलेंगे। इसका प्रभाव दो सप्ताह तक बना रहना चाहिए। ता. १६ सूर्य सिंह में प्रवेश करने से चांदी, सोना, रुई, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, अरण्ड, सरसों तथा रक्त वर्ण की वस्तुएं तेज होंगे। यह ध्यान रखें ता. १३ के बाद आप चाहे तो अरण्डी सीड, चना, सोना, गमग्वार, ग्वारसीड, गुड़, कपास, बिनौला, सरसों, चांदी, सोयासीड, सोया तेल, उड़द, तुअर आदि जिन्सों में वायदा बाजार में तेजी का सौदा आप ता. १७ तक के लिये कर सकते हैं। जो आपके लिए लाभकारी हो सकता है। ता. १८ को बुध पूरब में अस्त होने से एक माह में अनाज, घृत आदि मंदे। रुई में घटा-बढ़ी के बाद तेजी। सोने में व्यापक उतार-चढ़ाव तेजी की अवधारणा बनती है। ता. २४ को बुध सिंह में प्रवेश करने से चांदी, रुई, सूत वस्त्र तेज होते हैं। चावल के भाव में खामोशी। गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदी का रूख बनता है। जिसका प्रभाव ता. २५ तक रहेगा। ता. २६ को शसनि पश्चिम में उदय होने से एक सप्ताह में रुई, अलसी, सरसों, अरण्ड, बिनौला, गमग्वार, मूंगफली में मंदी का वातावरण बनता है। कालीमिर्च, उड़द, तिल, लहसून, चावल, गुड़, खाण्ड में विशेष तेजी का संचार होता है। इसका प्रभाव कम से कम तीन दिन तक रहना चाहिए। ता. २९ को मंगल कन्या में प्रवेश करने से सोना, चांदी, रुई, खांड, सरसों, अलसी, सभी तेल, तिल, गेहूं, रेशम के भाव तेज होते हैं। ता. ३१ को मंगल अस्त होने से रुई में मंदी। गेहूं, अलसी, खस में तेजी। जौ, चना, गुड़ में भी तेजी की अवधारणा बनतीहै। मेरे समझ से ता. ३४ से ३१ तक के लिये सोना, चांदी, सरसों, बिनौला, गेहूं, गुड़, खाण्ड, किशमिश, चना, उड़द, कालीमिर्च, बासमती चावल, अरण्डी सीड, सोया सीड, जीरा, कपास, खली के तेजी का वायदा कारोबार किया जा सकता है। जो साधारण

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

से भारी मुनाफा दे सकता है।

सितम्बर-ता. १ को शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करने से चांदी में २० से ३० रुपये की मंदी। गेहूं, जौ, चना का भाव तेज होंगे। सोना, तांबा, मजीठ, लालमिर्च, लालचंदन, मसूर दाल, दाख आदि तेज होते हैं। रुई में उतार-चढ़ावपूर्ण तेजी। ता. ३ को सूर्य पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश करने से सोना बहुत तेज हो। रुई, सूत, चावल, गेहूं, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, ज्वार, घी तेज होते है। इसका प्रभाव कम से कम १ सप्ताह तक रहना चाहिए। ता..९ को बुध कन्या में प्रवेश करने से खाण्ड और सोने में ६ मास तक तेजी रहे। हल्दी, चना तेज। चांदी, रुई में मंदी हो। गेहूं, जौ तेज हो। आप ध्यान रखें कि ता. १ से १५ तक के बीच आप वायदा व्यापार में सोना, हल्दी, गुड़, चना, गेहूं, लालमिर्च तेजी का सौदा करके लाभ उठा सकते हैं। ता. १८ को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई में ३० से ४० रुपये की शीघ्र तेजी हो। चांदी मंदी। पाट, हैशियन में भयंकर तेजी आती है। ता. २३ को बुध चित्रा में प्रवेश करने से रुई, चांदी में घटा-बढ़ी होकर तेज। सभी दलहन में भी तेजी हो। ता. २५ को शुक्र कन्या में प्रवेश करने से सभी तरह के अनाज, चावल, गुड़, खाण्ड का भाव तेज हो। चांदी में घटा-बढ़ी, रुई में मंदी होने का अनुमान है। ता..२७ को बुध तुला में प्रवेश करने से गुड़, खाण्ड, सोना, रुई तेज हो। चांदी, अलसी, सरसों, बिनौला, मूंगफली का भाव मंदा रहे। कुल मिलाकर आप ता. २५ से ३० तक सोना, गुड़, खाण्ड में तेजी का सौदा कर सकते हैं। जबकि ता. २६ से ३० तक चांदी, अलसी, सरसों, बिनौला, मूंगफली आदि जिन्सों कर वायदा व्यापार में मासांत तक के लिये मंदी का सौदा कर सकते हैं।

अक्टूबर-ता.३ को सूर्य हस्त नक्षत्र में प्रवेश करेगा तथा ता. १२ को बुध स्वाती में प्रवेश करने से रुई, चांदी में घटा-बढ़ी होने की अनुमान है। सूर्य हस्त में प्रवेश करने से गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, सन, कपास, हल्दी, हींग, धनियां, रुई का भाव तेज होते हैं। इसका प्रभाव ता. ५ तक चलना चाहिए। बाजार में ता. १२ तक सभी जिन्सों में व्यापक उतार-चढ़ाव होगा। हो सकता है के सरकार की गलत दिशा-निर्देश से बाजार आंधी की आम की तरह गिरता नजर आवे। अथवा, वस्तुओं की अनुकूल उपलब्धता से बाजार भयंकर तेजी में आ जाये। अतः बाजार का रुख देखते हुए कारोबार करें। आप चाहें तो ता. १० से २० तक के लिए सभी डिब्बा बंद तेल, गमग्वार, ग्वारसीड, सोना, कालीमिर्च, तेल, बिनौला, तेल-तिलहन, तेल सरसों, चना, कपास, वनस्पति घी आदि जिन्सों का तेजी का सौदा वायदा व्यापार के किया जा सकता है। सटोरियों के लिवाली से उपरोक्त जिन्सों के बाजार अवश्य तेजी में रहना चाहिए। ता. १२ को राहु-केतु-कुंभ और सिंह राशि में स्थान परिवर्तन करने से ग्वारसीड, गमग्वार, कालीमिर्च, उड़द, जीरा, हल्दी, सोना, सभी डिब्बा बंद तेलों, मूंग, अरहर, चना, सीमेन्ट, लोहे के भावों में तेजी जारी रहने से बाजार तेजी में रहेगा। ता. १४ को मंगल तुला में प्रवेश करने से रुई, कपास, सूत, मूंगफली, गेहूं के भावों में अच्छी तेजी आए। चांदी में नरमी बनी रहेगी। गुड़, खाण्ड, अनाज तेज रहते हैं। ता. १७ को सूर्य तुला में प्रवेश करने से रुई, चांदी में मंदी। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा में तेजी बनी रहती है। ता १९ को शुक्र तुला में प्रवेश करने से रुई, चांदी में उतार-चढ़ावपूर्ण मंदी आती है। सोना में तेजी। गुड़, खांड में कुछ तेजी का वातावरण बनता है। इसका प्रभाव तीन दिन तक रहता है। ता. २३ को बुध वृश्चिक में प्रवेश करने से वनस्पति घी, तेल, रुई, चांदी तेज। सोने के भाव सम बना रहता है। ता. २८ को बुध वक्री होने से तीन सप्ताह में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी और गेहूं, चना कुछ मंदा रहता है। इस माह ता. १७ से ३० तक आप चांदी का वायदा व्यापार मंदी का कर सकते हैं। जबकि गुड़, खाण्ड, लोहे, सीमेन्ट, अरण्डी सीड, सोना, ग्वारगम, ग्वारसीड, कपास, खली, सरसों, सोयासीड का वायदा व्यापार तेजी के लिये रिक्स लेकर कर सकते हैं।

नवम्बर-ता. २ को बुध तुला में प्रवेश करने से रुई, गुड़, खाण्ड, सोना में तेजी। चांदी, अलसी, सरसों, अरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मंदी आती है। ता. ३ को बुध पश्चिम में अस्त होने से रुई, कपास में ३० से ४० रुपये की शीघ्र मंदी आती है। चांदी, तेज। पाट, हैशियन और बिनौला में भयंकर मंदी आती है। ता. ७ को गुरु अस्त होने से रुई में तेजी। कपास में भी तेजी। सोना, चांदी, अनाज में मंदी की अवधारणा बनती है। ता. १२ को शुक्र वृश्चिक में प्रवेश करने से रुई, चांदी, अफीम में पहले मंदी होकर पीछे तेजी होगी। गुड़ में घटा-बढ़ी तथा गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में तेजी होगी। अलसी भी तेज होगा। वायदा व्यापार के लिए यह समय अनुकूल नहीं नजर आ रहा है। फिर भी ता. ३ से १३ तक के लिए वायदा व्यापार तेजी के लिए उड़द, ग्वार, सभी डिब्बा बंद तेल का सौदा किया जा सकता है। ता. १४ को बुध पूरब में उदय होने से ३१ दिन में अनाज, घी आदि तेज होते है। रुई में मंदी के बाद तेजी। सोना में घटा-बढ़ी के बाद मंदी। सभी दलहनों में मंदी का संचार होता है। ता. १६ को सूर्य वृश्चिक में प्रवेश करने से रुई, तांबा, चांदी, सोना, ऊनी वस्त्र तेज होते हैं। लालमिर्च, घी तेज होते हैं। ता. १७ को बुध मार्गी होने से रुई में पहले मंदी, बाद में तेजी। चांदी में घटा-बढ़ी होकर तेजी हो। तृण, काष्ठादि में एक दिन के अंदर तेजी हो। आठ दिन में गेहूं, जौ, चना, अनाज में तेजी हो। रेशम, तेल, अलसी, अरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि में मंदी आती है। परन्तु सोना तेज होता है। ता. २७ को मंगल वृश्चिक में प्रवेश करने से गुड़, रुई, सोना, चांदी आदि धातुओं के भाव तेज रहेंगे। आप चाहें तो ता. २२ के बाद वायदा व्यापार के लिए बिनौला, मूंगफली, गुड़, डिब्बा बंद तेल, वनस्पति घी आदि जिन्सों के वायदा व्यापार में मंदी का सौदा मासांत तक के लिए किया जा सकता है। ऐसे इस माह बाजार का रूख जल्दी-जल्दी पलट मारेगा। बाजार के रूख के अनुसार काम करें।

दिसम्बर-ता. २ को सूर्य बुध ज्येष्ठा में प्रवेश करने से दो सप्ताह में वस्त्र, सोना, चांदी, चावल, गेहूं, चना, अलसी, सरसों, अरण्ड, हींग, गुगुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी हो। रुई में व्यापक उतार-चढ़ाव हो। ता. ४ को बुध वृश्चिक में प्रवेश करने से वनस्पति घी, सभी डिब्बा बंद तेल, सरसों, रुई, चांदी तेज। सोने का भाव सम। अफीम में मंदी आती है। ता. ५ को गुरु पूरब में उदय होगा। फलतः सोना, चांदी, दलहन, चावल, गेहूं आदि में तेजी होती है। ता. ६ को शुक्र धनु में प्रवेश करेगा। जिससे रुई, कपास, सूत, वस्त्र, गेहूं, जौ, चना, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं के भाव तेज हो। इसी तारीख को शनि वक्री होने से एक सप्ताह में रुई तेज होकर फिर मंदा हो जाता है। दो मास में तिल, तेल, सरसों, कालीमिर्च, हींग तेज होते हैं। ता. १२ को बुध पूरब में अस्त होने से ३० दिन में घी, सभी अनाम मंदे हो हैं। रुई में उतार-चढ़ावपूर्ण तेजी। सोने में भी उतार-चढ़ावपूर्ण तेजी हो। ता. १५ को सूर्य धनु में प्रवेश करने से रुई, कपास, सूत, तेल, सोना, चांदी आदि तेज होंगे। जबकि अनाजों में मंदी का संचार होगा। ता. १६ को मंगल उदय होगा। जिससे रुई में तेजी। गेहूं और अलसी में साधारण मंदी। जौ, चना, गुड़ में भी मंदी होती है। इसका प्रभाव ता. २२ तक रहेगा। ता. २३ को बुध धनु में प्रवेश करने से चांदी, सोना, रुई, कपास, सूत का भाव आठ दिन में तेज हो। आप चाहें तो ता. १८ से ३१ तक के लिए वायदा व्यापार तेजी के लिए सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत, डिब्बा बंद तेल, सोयाबीन, सरसों, ग्वारसीड, बिनौला आदि में सौदा कर सकते हैं। इसका प्रभाव २३ से २९ तक के बीच बुध का प्रभाव चलेगा। ता. ३० को शुक्र मकर में प्रवेश करने से गुड़, खाण्ड, घ्यी, सभी तरह के अनाज का भाव तेज हों। रुई, चांदी में घटा-बढ़ी चलते हुए तेजी हो।

व्यापार आप अपने रिक्स पर काम करें। इसमें लाभ-हानि की कोई जिम्मेवारी लेखक, प्रकाशक पर नहीं है। आप चाहे तो गमग्वार, ग्वारसीड, सभी तेलहन, वनस्पति घी, चीनी, गुड़, सोना, चांदी, बिनौला, रुई, कपास, जूट, पाट आदि का स्पेशल दैनिक रिपोर्ट विस्तार से प्राप्त कर सकते हैं। वायदा व्यापार के तेजी-मंदी समीक्षा भी आप प्राप्त कर सकते हैं। जिसका सेवा शुल्क इस प्रकार है-सोना, चांदी का स्पेशल रिपोर्ट का वार्षिक शुल्क ५००० रुपये, सभी दलहन का वार्षिक शुल्क ३६०० रुपये, सभी तेलहन एवं डिब्बा बंद तेलों का स्पेशल रिपोर्ट वार्षिक ३६०० रुपये, वनस्पति घी का वार्षिक शुल्क २४०० रुपये, गमग्वार-ग्वारसीड का वार्षिक शुल्क ४००० रुपये, बिनौला का वार्षिक शुल्क ३६०० रुपये, रुई-कपास का वार्षिक शुल्क ४०० रुपये, कालीमिर्च-गुड़-खाण्ड- चीनी आदि प्रत्येक वस्तुओं के वार्षिक शुल्क २००० रुपये निर्धारित है। सभी जिन्सों का तथा सोना, चांदी सहित सभी वायदा व्यापार के सामग्री का एक साथ लेने पर विशेष रियायत पर मात्र ७५०० रुपये में प्राप्त किया जा सकता है। सेवा शुल्क आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, पटना (बिहार) के किसी भी बैंक का ड्राफ्ट भेजकर स्पेशल चांस का रिपोर्ट प्राप्त किया जा सकता है। विशेष जानकारी के लिए दैनिक तेजी-मंदी समीक्षा 09431986216 पर अपने वार्षिक मेम्बर को २४ घंटा जानकारी देने की सम्पूर्ण सुविधा है। शेष ईश्वर के अधिन है।

लेखक -आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ व्यापार-विमर्श सम्वत् २०६३ वि.

वि. सं. २०६३ की ग्रह स्थिति के आधार पर व्यापारिक उतार-चढ़ाव के विचार

उत्तराधिकारी-आयुर्वेद मार्त्तण्ड ज्योतिष रत्न पं. जैनी जीयालाल शिखरचन्द चौधरी राज वैद्य
लेखक एवं संपादक- चौ. पं. महेन्द्र कुमार जैन, सह संपादक-पं. गजेन्द्र जैन, उत्तराधिकारी-आयुर्वेद मार्त्तण्ड ज्योतिष रत्न पं. जैनी जीयालाल शिखरचन्द चौधरी राज वैद्य
ज्योतिष रत्न कार्यालय:- पो. फर्रूखनगर-१२२५०६, गुड़गांव फोन नं.-कार्या.-निवास: ०१२४-२३७५२१८, २३७५३७७ ०१२४- E-mail: jyotish_ratan@yahoo.com

मेरे पूज्य बाबा जी (स्व. पं. जैनी जीयालाल चौधरी जी) ने १३० वर्ष पूर्व असली पंचांग के नाम से एक पंचांग प्रकाशित किया था। तभी से व्यापारिक तेजी-मंदी पर मेरे बाबा जी एवं मेरे पिता श्री अपने विचार लिखते रहे हैं। समय-समय पर इस विषय पर अनेकों पुस्तकें व्यापार विज्ञान, योगरत्नाकर, रुई तेजी मन्दी सट्टा, वार्षिक व्यापार भविष्य फल लिखकर आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कीं। अब मैं पं. महेन्द्र कुमार जैन एवं मेरा ज्येष्ठ पुत्र पं. गजेन्द्र जैन अपने पूर्वजों के बताये मार्ग का अनुशरण करते हुए प्रत्येक पक्षों महीनों में आने वाले प्रबल ग्रह योग, तिथिवार नक्षत्र संयोग, संक्रांति बैठना, चन्द्रदर्शन, ग्रह दृष्टि आदि को ध्यान में रखकर जो तेजी-मन्दी के विचार लिखते हैं वह वायदा एवं हाजिर का व्यापार करने वाले व्यापारियों के लिये वरदान रूप में सही होते हैं।

इस विचार लेख में कई बार एक ही स्थान पर एक वस्तु की तेजी के साथ-साथ मन्दी भी लिखी हो तो घबराना नहीं, ऐसे समय पर व्यापार का रुख देखकर व्यापार करें। क्योंकि एक दिन में एक ग्रह तेजी कारक वहीं अन्य ग्रह मन्दी कारक हों तो बाज़ार में तेजी की जगह मन्दी या मन्दी की जगह तेजी लिखे के विपरीत हो जाता है और जो हमने यह विचार लिखे हैं वह एक दिन पहले या बाद में भी घट सकती है। कारण ग्रह का परिवर्तन

अथ चैत्र शुक्ल पक्ष फल विचार -

पक्ष गुरु से शुरू होगा। तिथि क्षय-वृद्धि हुई है। चन्द्रदर्शन ३० मु., सं. मेष ३० मु. बैठी धापी दोनों गुरुवार की हैं। सूर्य शुक्र मंगल बुध ने राशि परिवर्तन किया, शनि मार्गी हुआ है। चतुर्थी का क्षय मूंग, घी में तेजी बनाएगा। बुधवारी अष्टमी वर्षा की कमी कर रही है। बुध शुक्र की युति वर्षा कारक है, वर्षा होगी पर नेष्ट है, आगे वर्षा कम होगी। शनि मार्गी बहुत सी जरूरी खाद्य सामग्री में तेजी करेगा।

चैत्र शुक्ल- शु. १ गुरु-चन्द्रदर्शन -तिल, तेल, सरसों, कपड़ा, अलसी, घी, तेज, रुई, सूत, खाण्ड, सोना, चांदी, अन्न घटबढ़ से मन्दा। **शु. २ शुक्र**-रेवती सूर्य, कुंभ शुक्र- चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, ज्वार, सफेद वस्तु व रस पदार्थ मन्दे, मोती, फूल-फल, नमक आदि तेज। वर्षा इस पक्ष में जरूर होगी पर पूरे साल वर्षा की खींच बनी रहेगी। **शु.३ शनि**-चतुर्थी क्षय-मूंग, घी आदि तेज। **शु.६ सोम-मिथुन मंगल**- अलसी, तांबा, पीतल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, गेहूं, जौ, श्रीफल, मिर्च आदि में मन्दा, चांदी में घट बढ़ होगी। **शु.८ बुध**-शनि मार्गी- हींग, मिर्च, तेल, तिल, सरसों में तेजी, रुई पदार्थ ६-७ दिन मन्दे रह कर तेज हों। **शु.८ गुरु**-शते शुक्र-घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सरसों, सोना, चांदी तेज। **शु.१३ मंगल**- मीने बुध-रुई, सूत, बिनौला तेज, गेहूं, चना, गुड़, शक्कर मन्दे। सोना, चांदी तेज होकर मंदे। **शु.१५ गुरु**- संक्रांति मेष-सभी अन्न मन्दा, रुई, सोना, चांदी, गुड़, श्रीफल, सुपारी, सरसों आदि तेज होंगे।

-विशेष योग-

किसी मास तीज या सुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग घी विक्रेता नट जाय॥
वक्री चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाय।
चालू रुख व्यापार का एक दम पलटा खाय॥
सूर संक्रामण समय सम सप्तम राकेश।
छः मास तक अन्न में तेजी रहे विशेष॥

अथ वैशाख मास फल विचार-

मास में ५ शुक्र ५ शनि, कृष्ण पक्ष ति. क्षय शुक्ल पक्ष में वृद्धि, चन्द्रदर्शन ४५ मु. शनि का, अमावस गुरु की, पूर्णिमा शनि की, शुक्र बुध ने राशि परिवर्तन किया है। बुधास्त पूर्व व अगस्त्य ऋषि अस्त हुआ है। ५ शुक्र शुभ प्रजा को सुख, सुभिक्ष करे, ५ शनि कहीं अग्निकाण्ड हो, अन्न तेज करे। अगस्त्य ऋषि का अस्त दुर्भिक्ष करे। अमावस को अश्विनी नक्षत्र प्रजा को सुख, स्वास्थ्य व सुभिक्ष करे। अक्षय ३ को रोहिणी अन्न की पैदावार उत्तम करे। **शु.५ मंगलवार**- देश में उपद्रव झगड़े करे। पुनर्वसु का मंगल भैसों, पशु में बिमारी, घास-चारा तेज। चतुर्दशी शुक्र शुभ पूर्णिमा शनिवारी दुर्भिक्ष करें।

कृष्ण पक्ष- कृ.१ शुक्र-उ.भा. बुध-चांदी में घटबढ़, प्रजा में आपसी द्वेष बढ़े। **कृ.२ शनि**- आर्द्रा मंगल-रुई, सूत, कपास, अलसी, अरण्डी, सरसों तेल, तिल, गुड़, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि तेज। चांदी, नमक में मन्दा रहेगा। **कृ. ६ बुध**- पू.भा. शुक्र-रुई, सूत, कपास तेज, सभी अन्न मन्दा, प्रजा को कष्ट, कहीं-कहीं वर्षा हो। **कृ. १० रवि**-रेवती बुध-सभी सुगन्धित द्रव्य, चन्दन, कपूर, कस्तूरी, मिर्च, लौंग, गेहूं तेज। सरसों, अरण्डी, चांदी में मन्दा। **कृ. १२ मंगल**-ऋषि अगस्त्य अस्त-रात्रि में अस्त शुभ नहीं, कई अनहोनी घटनाओं का स्वतः ही जन्म होगा। **कृ.१३ बुध**-चतुर्दशी क्षय-उत्तम सभी खाद्य अन्न में मन्दा रहे। **कृ. ३० गुरु**-भरणी-सूर्य- चावल, जौ, चना, मोठ, अरहर, अलसी, गुड़, घी, अफीम, मूंग, सोना, चांदी, पीतल आदि धातु तेज, रुई पदार्थ मन्दे, हैजा आदि बीमारियों से प्रजा को कष्ट होगा।

शुक्ल पक्ष-शु.१ शुक्र-मीने शुक्र-सभी तिलहन व मीठा रस पदार्थ मन्दा, रुई, चांदी में तेजी। **शु.२ शनि-चन्द्रदर्शन**-अलसी, सरसों, लोहा, धातु, सूत, कपड़ा, चांदी, सोना, रुई, कपास, उड़द, तिल, मोठ में तेजी। **शु.३ रवि**-आज रोहिणी होना उत्तम सभी अन्न की पैदावार उत्तम होगी। **शु.४ सोम**-उ.भा. शुक्र-सभी अन्न, रुई, सूत, कपास, चावल, गुड़, खाण्ड, नमक, सोना, चांदी में मंदा, मूल पदार्थ आलू, प्याज, लहसुन आदि में तेजी। **शु.५ मंगल**- अश्विनी मेषे बुध-पशु, अन्न गेहूं, मटर, अरहर, घी, दूध तेज, गुड़, शक्कर सरसों, गोला, खाण्ड, चांदी आदि में मन्दा, देश में कहीं उग्रवाद, सत्ता परिवर्तन, राज विग्रह, यान वाहन दुर्घटना होगी। **शु.८ शुक्र**-वक्री स्वाती ४ गुरु सभी अन्न रुई पदार्थों में अच्छी मन्दी, पैदावार उत्तम रहे। **शु.९ शनि**-बुधास्त पूर्व- रुई, चांदी में घटबढ़, गेहूं, अलसी तेज, धान्य पदार्थ मन्दे, कहीं वर्षा हो। **शु.१० रवि**- पुन. मंगल-तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, कपास, चांदी, नमक, घास, चारा तेज, भैंसादि पशु बीमार रहें। **शु.११ मंगल**-भरणी बुध-सभी अन्न में घटबढ़ हो, देश में कहीं झगड़े विग्रह हों। **शु.१३ गुरु**-कृतिका सूर्य- जौ, चावल, मोठ, मूंग, राई, सरसों, सोना, चांदी तेज, तांत्रिक अग्निहोत्री, कुम्हार, ज्योतिषी, नाईयों को कष्ट उठाना पड़े। **शु.१४ शुक्र**-रेवती शुक्र-रुई, सूत, कपास, जवाहरात, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा, धान्य की पैदावार उत्तम। **शु.१५ शनि**-आज विशाखा नक्षत्र है। देश में दुर्भिक्ष पड़े, खाद्य पदार्थ तेज हों।

अथ ज्येष्ठ मास फल विचार-

मास में ५ रवि, कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय, मावस शनि की, पूर्णिमा, चन्द्रदर्शन ३० मु., सं. वृष ४५ मु. बैठी धापी सभी रवि की, सूर्य बुध मंगल शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास में ५ रवि, बदी पड़वा रवि को, वृष संक्रांति तीनों ही नेष्ट, शुभ नहीं, तेज आंधी, तूफान से जन हानि, सत्ता संघर्ष, राज विग्रह व देश में बीमारी फैले प्रजा को कष्ट हो। शनि की अमावस को कृतिका दुर्भिक्षकारी पैदावार कम, द्वादशी को रेवती प्रजा को कष्ट बीमारी देगा। सुदी-२-३ को वर्षा हो तो दुर्भिक्ष पड़े, शनि मंगल की युति धन-धान्य नाशक, सत्ता संघर्ष, अग्नि से भारी हानि करे। रोहिणी सूर्य साहूकारों योगीयों को कष्ट देगा।

कृष्ण पक्ष-कृ.१ रवि, सं.वृष-रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी में घट बढ़ करे, अन्न की पैदावार उत्तम, आंधी-तूफान आवे प्रजा बीमार रहे। **कृ.२ सोम**-कृति. बुध-प्रजा में भय बने, कहीं झगड़े हों, अग्निकांड हों, रुई मंदी होकर तेज, तिल, तेल, सरसों, कपास, मटर, गेहूँ आदि तेज हो। **कृ. ४ बुध**-वृषे बुध- वर्षा कम, पैदावार कम, कहीं झगड़े-कहीं विग्रह, चांदी मन्दी, रुई, सूत तेज अन्न में घटबढ़ हो। **कृ.९ रवि**-रोहिणी बुध-तेल सरसों, गुड़, शक्कर, सोना, चांदी, चावल तेज होकर मन्दा ऊनी वस्त्र मन्दे। **कृ.१२ बुध**- कर्के मंगल, अश्विनी मेष शुक्र-सभी प्रकार का अन्न सरसों, तांबा, पीतल जस्ता, मिर्च, सुपारी, अरण्डी, घी, तेल पदार्थ तेज, रुई पदार्थ, अलसी, सरसों मन्दा, पशुओं में बीमारी फैले व तेजी बने। **कृ.१३ गुरु**-रोहिणी सूर्य- चावल आदि सभी धान्य अलसी, सरसों, राई, तिल, तेल, दाख, छुवारा, गुड़, खाण्ड, सुपारी आदि में तेजी चांदी में मन्दा, सेठ साहूकार, कृषक,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योगी, पशु जलचरों को कष्ट होगा। **कृ.३० शनि**-मृग. बुध, सरसों, अलसी, बिनौला, तिलहन गेहूं आदि अन्न मन्दा, रुई पदार्थ तेज, आगे वर्षा की कमी रहेगी।

शुक्ल पक्ष- शु.१ रवि-चन्द्रदर्शन-अन्न, चांदी, सोना, सरसों रुई, अन्न तेज, तेज आंधियां चलेंगी। **शु.२ सोम**-२ या ३ को वर्षा हो तो आगे दुर्भिक्ष पड़ेगा। **शु.३ मंगल**-पुष्य मंगल-रुई, चांदी, सोना, सरसों, सण आदि में घट बढ़ चले। आपसी द्वेष बढ़े, उपद्रवों से प्रजा परेशान होगी। **शु.४ बुध**-मिथुने बुध, बुधोदय पश्चिम-रुई, सूत, कपास, सरसों १५ दिन मन्दे रहकर तेज, घी, तेल, अरण्डी, अलसी तेज, तेज हवा के साथ वर्षा होगी। **शु.६ शुक्र**-पैदावार उत्तम खाद्य पदार्थ मन्दे रहेंगे। **शु.७ शनि**-आर्द्रा बुध. पुष्य ४ शनि-रुई, सूत, कपड़ा, जूट, चांदी में मन्दा अन्न तेज होकर मन्दा, पैदावार उत्तम। देश के नेताओं में आपसी संघर्ष बढ़े। राज विग्रह-पश्चिम में प्रजा को विशेष कष्ट होगा। **शु.८ रवि**-भरणी शुक्र-तिल, तेल, सरसों, गेहूं आदि अन्न में घट बढ़ से मन्दा, चांदी में मन्दा, मन्दे में खरीदो आगे विशेष लाभ मिलेगा। **शु.१२ गुरु**-मृग.सूर्य-जलोत्पन्न पदार्थ, नारियल, रुई, सूत, रेशम, कपड़ा, कपूर, चन्दन, चना, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि तेज, पशुओं में रोग फैले। **शु. १५ रवि**-पूर्णिमा-शुभ प्रजा को सुभिक्ष, खाद्यान्न में मन्दा रहेगा।

विशेष योग-

क्रूर वार तेजी करै मावस पूनम दोय।
ज्येष्ठ बदी प्रतिपदा को संग हुआ रविवार।
संक्रामक रोगों का रहे गर्म बाजार।
मावास जेठ सूर चन्द भेले रोहिणी वास।
अकाल विग्रह व्यथा पीड़ित प्रजा विनाश।
आग लगे आंधी चले शनि मंगल का मेल।
वर्षा युद्ध धान्य नाश राज युद्ध कर झेल।

अथ आषाढ़ मास फल विचार-

मास में ५ सोम ५ मंगल हैं। सं. मिथुन ३० मु. बैठी धापी गुरु की, मावस रवि की, चन्द्रदर्शन ३० मु. व पूर्णिमा मंगल की है। कृ. पक्ष में तिथि हानि, शुक्ल पक्ष में तिथि की वृद्धि हुई है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री गुरु मार्गी बुधास्त पश्चिम में हुआ है। मास में ५ सोम उत्तम, ५ मंगल देश में दंगल मचाएंगे तथा रक्त की बीमारी फैलेगी। **कृ. ६ शनिवार**-गेहूं आदि में विशेष मन्दा, मन्दे में स्टॉक करें। कृ.१४ को रोहिणी देश में राज विग्रह, सत्ता संघर्ष, प्रजा में शोक होगा। मावस शुभ है। शु.५ को शुक्र, देश में तूफान आदि से जन हानि करे। **शु.१४ को सोम**-चारा घास आदि में तेजी करे। पूनम तेजीकारी है। कृ.१३ १४ को सूर्य शुक्र के मध्य चन्द्र आने से विशेष मन्दी अनाजों में होगी जो कि आगे विशेष लाभ देगी।

कृष्ण पक्ष-कृ.१ सोम-पुन बुध-रुई, सूत, कपास, सण, चांदी मन्दी। **कृ.४ गुरु**-सं. मिथुन-गर्मी का जोर रहे। रुई, सूत, कपास, रेशम, गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, चावल, पाट, बारदाना, जूट, सरसों, लोहा, तिल, तेल, कन्दमूल, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में तेजी। **कृ.५ शुक्र**-कृतिका शुक्र-हींग, जीरा, सुपारी, सूत, कपड़ा, चावल, अन्न, सरसों, तेल, तिल, कपड़ा आदि में मंदा, वर्षा हो। **कृ.६ शनि**-तिथि वार के संयोग से इस बार गेहूं में विशेष मन्दी आकर कार्तिक में नफा मिलेगा। **कृ.७ रवि**-वृष शुक्र-अन्न गेहूं, जौं, चना, मटर आदि तेज, रुई, चांदी, शेयरों में मन्दा, देश में कहीं झगड़े हों, कहीं वर्षा होगी। **कृ.१० मंगल**-कर्के बुध- रुई, सूत, कपड़ा, अन्न गेहूं, जौ, चना, मटर आदि में मन्दा, सरसों, मूंगफली, तेल, तिल गुड़, रस पदार्थ, दूध, दही तेज, चांदी में घटबढ़ होगी। **कृ.११ बुध**-ऽश्लेषा मंगल-रुई, चांदी मन्दी, गेहूं, जौ आदि सभी खाद्यान्न तेज, फसलों को हानि होगी। **कृ.१२ गुरु**-आर्द्रा सूर्य-घी, गुड़, चीनी, चावल, चन्दन, नमक, कपास, रुई, हल्दी, सोंठ, लोहा, चांदी, कपूर, चना, मोती, सरसों, अन्न तेज, सोने में घटबढ़ होगी। **कृ.१४ शनि**-पुष्य बुध-सोना, चांदी, कपड़ा, सूत, मोती, मूंग, धातु, अन्न में मन्दा, रुई, सूत, कपास में मन्दा, प्रजा में भय व चिन्ता बने। **कृ.१२ से १४** के मध्य ग्रहों की विशेष युति से सभी धान्य पदार्थों में मन्दा रहेगा स्टॉक करें। ४ मास पीछे विशेष लाभ मिलेगा।

शुक्ल पक्ष-शु.२ मंगल- चन्द्र दर्शन, रोहिणी शुक्र-सोना, तांबा, जस्त, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, सूत, कपास में मन्दा, सभी धान्य पदार्थ तेज वर्षा कम, देश में झगड़े उपद्रवों से प्रजा परेशान हो। **शु.५ शुक्र**-देश में कहीं भारी आंधी-तूफान या कोई प्राकृतिक विपदा से जन हानि हो। **शु. ८ मंगल**- बुध वक्री, ऽश्लेषा शनि-रुई, उड़द, तिल मन्दे, जापान, वर्मा, भारत, युगोस्लोवाकिया आदि में भूकंप से जन हानि हो। रुई तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तेल, तिल, अरण्डी, शेयर, बिनौला तेज। व्यापार की चाल देख कर व्यापार करें उलट फेर हो सकती है। **शु.१० गुरु**-पुन. सूर्य, गुरु-मार्गी-जौ, गेहूं, चना, धातु, तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा, उड़द, मूंग, मोठ, चावल, नमक, केसर, कपूर लौंग, नारियल, अलसी, गुड़, शक्कर आदि तेज, ३-४ दिन में रुई आदि में मन्दा बने। **शु.१२ शनि**-सभी अन्न, घी में मन्दा, गुड़, शक्कर, खाण्ड तेज, अनचाहे कष्ट से प्रजा में भय बने। **शु.१३ रवि**-बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी तेज होकर मन्दी, शेयर, हैसियन, बारदाना मन्दा। सरेआम चोरियों से प्रजा में भय बने। **शु.१५ मंगल**-सभी खाद्य पदार्थ, साग-सब्जी, फलों में तेजी बनेगी, कहीं व्याधि फैलेगी।

-विशेष योग-

षष्ठी आषाढ़ बदी जो शनिवारी आव।
गेहूं संग्रह कीजिए कार्तिक दूना भाव॥
आषाढ़ बदी चौदस दिन होय रोहिणी योग।
कर्फ्यू अरु कंट्रोल से दुःखी रहें सब लोग॥
चार ग्रहों का बने जब एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुःखी रहें सब लोग॥
क्रूर वार तेजी करै मावस पूनम दोय।

अथ श्रावण मास फल विचार-

मास में ५ बुध हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय, सं. कर्क ४५ मु. बैठी भूखी, मावस मंगल की, चन्द्रदर्शन १५ मु. व पूर्णिमा बुध की है। सूर्य मंगल बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शनि अस्त, बुधोदय पूर्व, बुध मार्गी हुआ है। मास में ५ बुध शुभ हैं। भूखी कर्क सं. कहीं राजविग्रह, सत्ता संघर्ष व अन्न तेज करेगी। मंगलवारी अमावस नेष्ट पर पुष्य नक्षत्र शुभ है। कृ.१० से शु.११ तक बुध शुक्र की युति वर्षा करेगी, कृ.११ को रोहिणी सुभिक्षकारी है। शु. पक्ष की पड़वा, अष्टमी पूनों को बुध होना सभी खाद्यान्न में अच्छी तेजी करेगा। रक्षा बंधन को श्रावण सुभिक्ष का रवि पैदावार को बढ़ाएगा।

कृष्ण पक्ष-कृ.१ बुध-मघा सिंह मंगल-सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु, लाल पदार्थ, लाल मिर्च, अलसी, सरसों, गुड़, शक्कर, रुई, मूंगफली आदि तेज, पैदावार कम हो। **कृ. २** का क्षय उत्तम नहीं। **कृ.४ शुक्र**-मिथुन शुक्र-रुई बारदाना, सिंगदाना, कपास, सूत, कपड़ा, सरसों, अरण्डी तेल, तिल में मन्दा, चांदी में घट बढ़ अन्न तेज, मीठा तेज होकर मन्दा रहेगा। **कृ.५ शनि**-वक्री पुनर्वसु बुध-रुई, सूत, कपास, सण, चांदी में मन्दा। **कृ.६ रवि**-सं. कर्क-तेल, तिल, नारियल मन्दा, गुड़, शक्कर, खाण्ड, बाजरा, ज्वार, नमक, चांदी, तेज। राजविग्रह, सत्ता संघर्ष मचे। **कृ.७ सोम**-शनि अस्त-रुई, शेयर, सोना मन्दा सभी अन्न, अरण्डी, तेलादि पदार्थ, रस पदार्थ तेज होंगे। **कृ.९ बुध**-आर्द्रा शुक्र-सभी प्रकार का अन्न मन्दा, कहीं तेज हवा के साथ वर्षा हो। **कृ.१० गुरु**-पुष्य सूर्य, मिथुने बुध-रुई सोना, चांदी, सरसों में मन्दा, तिल, तेल, अरण्डी, गुग्गल, सुपारी, सोंठ, मोम, हींग, हल्दी, शीशा, सोना, चांदी, नारियल आदि तेज। **कृ.११ शुक्र**-रोहिणी नक्षत्र सुभिक्षकारी है पैदावार उत्तम हो। **कृ.३० मंगल**-पुष्य-सुभिक्षकारी, मंगल सभी मीठा व रस पदार्थों में तेजी करे।

शुक्ल पक्ष-शु.१ बुध-चन्द्रदर्शन-वर्षा कम, कहीं देश में झगड़े हों, गुड़, शक्कर, सफेद वस्तु मन्दी, चांदी में घटबढ़, सभी खाद्यान्न व घी में अच्छी तेजी बने। **कृ.४ शनि**-बुधोदय पूर्व, बुध मार्गी-सभी खाद्य पदार्थ गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, सरसों तेल, लाल मिर्च, गुड़ शक्कर, खाण्ड, कपूर, चन्दन, अगर, तगर आदि मन्दे (रुई का व्यापार देखकर करें)। **शु.५ रवि**-पुनर्वसु शुक्र-सोना, चांदी, कपास में मन्दा, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर तेज (प्रजा में अनचाहा भय फैलता है)। **शु. ६ सोम**-ऽश्लेषा २ शनि-रुई, उड़द, तिलहन पदार्थ मन्दे। सर्प व सपेरों को कष्ट, कहीं भूकंप से हानि हो। **शु.९ गुरु**-ऽश्लेषा सूर्य, पू.फा. मंगल-अलसी, तिल, गुड़, शेयर, नील, अफीम, ज्वार, अरण्डी, छुआरा, मिर्च, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, नमक, मूंगफली, घी आदि तेज, प्रजा बीमार रहे, ईशान कोण के प्रदेशों में उपद्रव हो। **शु.११ शनि**-कर्क बुध-रुई, कपड़ा, गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर में मन्दा, चांदी में घटबढ़ चले। सरसों, अरण्डी, मूंगफली, रस पदार्थ तेज। **शु.१३ सोम**-कर्के शुक्र- घी, तेल, गोला, गुड़, सभी रस पदार्थ, सूत, सण, बारदाना, खाद्य पदार्थ में कुछ मन्दा बने। **शु.१४ मंगल**-पुष्य बुध-सोना, चांदी, कपड़ा, सूत, मोती, अन्न में मन्दा, प्रजा में भय चिन्ता बने। **शु.१५ बुध**-श्रवण सुभिक्षकारी तथा खाद्य पदार्थों में मन्दा करेगा।

-विशेष योग-

सावन पहिले पक्ष में कोई तिथि घट जाय।
काऊ काऊ देश में लरिका बेचे माय॥
सावन बदी एकादशी रोहिणी संवत जान।
मृगशिर में दुर्भिक्ष का सब लक्षण अनुमान॥
पड़वा आठै पूर्णिमा जब बुधवारी आए।
सभी वस्तु व्यापार की महिंगे भाव बिकाए॥
कर्क मकर ग्रह भानु युग बैठे एक ही बार।
अकरा करते अन्न का सकल लोक भयकार॥

अथ भाद्रपद मास फल विचार-

मास में ५ गुरु हैं, कृ. में तिथि क्षय, शुक्ल में तिथि वृद्धि होकर घटी है। मावस सं. सिंह ४५ मु. सूती, धापी बुध की, चन्द्रदर्शन ४५ मु. शुक्र का, पूर्णिमा गुरु की है। सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल ने राशि परिवर्तन किया है। बुधास्त पूर्व, शनि उदय, अगस्त्य उदय, मंगल अस्त,

सरसों तांबा, चांदी सभी अन्न तेज, पशुओं में ... सोना, चांदी, ... में मन्दा ... कपास, चांदी ... है। मटर, ग्वार, ज्वार, मक्का, सोना, चांदी, मीठा, रस पदार्थों में अच्छी तेजी बनेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

को सोम-चारा घास आदि में तेजी करे। पूनम तेजीकारी | शनि-सभी अन्न, घी में मन्दा, गुड़, शक्कर, खाण्ड

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पूर्णिमा को, चन्द्रग्रहण है। मास में ५ गुरु शुभ हैं। बुध उदय उत्तम वर्षा के योग बनाए हैं। मावस बुधवार-ऽश्लेषा नक्षत्र देश में दुर्भिक्ष करे, सत्ता संघर्ष, राज विग्रह, पैदावार कम, सभी प्रकार के तेल, घी, पदार्थों में तेजी बनेगी। ग्रहों से सम सप्तम योग अनावृष्टि, प्रजा में भय व देश में बीमारी फैलेगी। शु.४ सोम को चित्रा सुभिक्षकारी है। शु. चतुर्दशी सभी खाद्य पदार्थों में तेजी करेगी। मास का चन्द्र ग्रहण पीली वस्तु विशेषकर सोना, चना आदि में तेजी करेगा।

कृष्ण पक्ष-कृ.८ बुध- मघा सिंह सूर्य-ज्वार, अरण्डी, दाख, छुआरा, मिर्च, तेल, अफीम, चांदी, रुई, सूत, कपास, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, तेल, तिल, लाल वस्तु, सोना, शेयर आदि तेज, अन्न में मन्दा बनेगा। **कृ.९ गुरु-** ऽश्लेषा बुध-गुड़, शक्कर, खाण्ड, तेल, तिल, अलसी, मूंगफली, अरण्डी में तेजी, वर्षा हो पैदावार उत्तम रहे। **कृ.१० शुक्र-** बुधास्त पूर्व-रुई, चांदी घटबढ़ से मन्दी, सोना, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों ,लाल मिर्च तेज होगी। देश में जहाँ तहां चोरियों की वारदातों से प्रजा में भय बनेगा। **कृ.१३ सोम-** ऽश्लेषा शुक्र-वर्षा हो, पैदावार उत्तम रहे, बहुत सी वस्तुओं में अच्छी घटबढ़ होगी। **कृ.३० बुध-** दुर्भिक्ष पड़े, सत्ता संघर्ष हो। प्रजा दुखी रहे, राजविग्रह हो, घी, तेल, सरसों, अरण्डी, अलसी, मूंगफली आदि तेल पदार्थों में अच्छी तेजी चले, पैदावार कम हो।

शुक्ल पक्ष-शु.१ गुरु- उ.फा. मंगल, मघा सिंह बुध-कहीं देश में उत्पात, पशु पीड़ा, वर्षा कम, गुड़, खाण्ड, मूंग, मोठ, बाजरा, मक्का, गेहूं आदि अन्न तेज, ऊन, सरसों मन्दा, १५ दिन में तेजी हो। **शु.२ शुक्र-** चन्द्रदर्शन सभी अन्न घटबढ़ से तेज, तिल, तेल, ऊन, सरसों में मन्दा, सोना तेज होगा। **शु.३ शनि-** ऽश्लेषा ३ शनि-रुई, उड़द, तिलहन पदार्थ मन्दे, कहीं भूकंप से हानि हो। **शु.४ सोम-** शनि उदय-रसादि पदार्थ, घी, तेल, सभी धान्य, रुई, पाट, बारदाना, चीनी, दूध, घी तेज, देश में अधर्म का विकास, शासकों में आपसी संघर्ष, बीमारी फैले। **शु.५ मंगल-** कन्या मंगल-अगस्त्य उदय, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लाख, चपड़ा, केशर, कपूर, चन्दन, रेशम सभी लाल वस्तु, रुई, सूत आदि तेज। **शु.६ बुध-** पू.फा. सूर्य-सोना, चांदी,लोहा, घी, तेल, सरसों, अरण्डी, सुपारी, रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र में तेजी। **शु.७ गुरु-** मंगल अस्त, पू.फा. बुध- रुई घटबढ़ से मन्दी, अन्न, रसकस, सरसों, ज्वार, मक्का आदि तेज, किराना माल मन्दा, देश में युद्ध के वातावरण से प्रजा में भय बने, खाद्य पदार्थ मन्दे रहें। **शु.८ शुक्र-** मघा सिंह शुक्र-रुई मन्दी होकर तेज हो, लाल वस्तु, तिल, तेल, मूंगफली, सरसों, सोना, तांबा, चांदी, सभी अन्न तेज, पशुओं में रोग फैले। तेज हवा चले। **शु.११ सोम-** विशाखा १ गुरु-सोना, चांदी, रुई, कपास, सभी अन्न मन्दा, वर्षा हो, सभी को सुख मिले। **शु.१३ बुध-** चतुर्दशी क्षय-सभी खाद्य पदार्थों में अच्छी तेजी बने। **शु.१५ गुरु-** उ.फा. बुध, चन्द्र ग्रहण-रुई, चांदी घट बढ़कर मन्दी, मसूर, उड़द, मूंग, तेल, चना, सोना, हल्दी में तेजी चलेगी।

-विशेष योग-

पड़वा पांचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मन्दी करें तेजी जब हो छीन॥
क्रूर क्रूर ग्रह परस्पर जब सम सप्तम योग।
अनावृष्टि संसार में हो भय पीड़ा रोग॥
भादों शुक्ल पंचमी स्वाती नखत युत होय।
संवत् नीका सुख भरा मन में डरो न कोय॥
चार पांच ग्रहों का बना इक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुःखी रहें सब लोग॥

आश्विन मास फल

मास में ५ शुक्र ५ शनि हैं। कृ. पक्ष में तिथि घटकर बढ़ी है। सं. कन्या ४५ मु. बैठी धापी शनि की मावस शुक्र की, चन्द्रदर्शन ३० मु. रवि का, पूर्णिमा शनि की है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुधोदय पश्चिम में, मास में ५ शुक्र शुभ, ५ शनि उत्पात, अग्नि भय, अन्न तेज करे। कृ. पक्ष में तिथि की घटबढ़ सभी खाद्य पदार्थों साग, सब्जी में तेजी बनेगी। शु.एकम शनिवारी सभी अनाजों में भारी मन्दी करेगी। मावस से अधिक नक्षत्र भी अन्न में मन्दा करेगा। कन्या संक्रांति सभी तिलहन को तेज करे। सूर्य भृगु की युति चालू फसल में तेजी करे।

कृष्ण पक्ष-कृ.२ शनि- कन्या बुध-सोना, गुड़, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, तांबा, पीतल, धातु तेज, चांदी, गुड़, शक्कर, सरसों में मन्दा। **कृ.५ मंगल-** पू.फा. शुक्र-घी, ग्वार, बाजरा, जौ, मूंग, उड़द आदि में मन्दा। **कृ.६ बुध-** उ.फा. सूर्य, सप्तमी क्षयः-जौ, जुवार, जूट, कपास, हल्दी, हरड़, हींग, क्षार, कत्था, सोना, चांदी, लोहा, सरसों, घी, चावल, उड़द, सुपारी आदि तेज, पशुओं में बीमारी फैले। **कृ.८ गुरु-** हस्ते मंगल-अन्न, गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, नमक तेज, वर्षा की कमी, पैदावार कम होगी। **कृ. ९ शुक्र-** हस्ते बुध-सभी अन्न मंदा, वर्षा हो, पैदावार उत्तम रहे। **कृ.१० शनि-** कन्या संक्रांति-माल किराना, मेवा, लाल वस्तु, नारियल, तेल, तिल, सुपारी, सरसों आदि में तेजी, सोना, चांदी, पीतल, शेयर, अरण्डी, सरसों में मन्दा रहे। **कृ.११ सोम-** बुधोदय पश्चिम -रुई, कपास, चांदी १५ दिन मन्दी, घी, तेल, अरण्डी, सरसों, अन्न तेज। **कृ. ३० शुक्र-** उ.फा. शुक्र-पैदावार उत्तम, सोना, चांदी में घटबढ़, सभी अन्न पदार्थ, रुई आदि तेज रहे।

शुक्ल पक्ष-शु.१ शनि- चित्रा बुध-रुई में घटबढ़ से तेजी, चांदी में घटबढ़, अन्न मन्दा। **शु.२ रवि-** चन्द्रदर्शन-देश में झगड़े-विग्रह हों, पशुओं में बीमारी फैले, अन्न, चांदी, सोना, सरसों तेज, रुई में घटबढ़ हो। **शु.३ सोम-** कन्या शुक्र-वर्षा कम, फसल को नुकसान, रुई, बारदाना, सण आदि मन्दा, चांदी घटबढ़ कर तेज, सभी अन्न, सोना, चावल, मीठा, ऊनी, वस्त्र तेज। **शु.५ बुध-** हस्ते सूर्य, तुला बुध-कपड़ा, गेहूं, सरसों, चना, गुड़, खाण्ड, सूत, कपास, हल्दी, हींग, श्रीफल तेज, चांदी, सरसों, अलसी, मूंगफली, बिनौला, मिर्च मन्दे। देश में झगड़े, क्लेश, संकट, विग्रह आदि हों। **शु.१० सोम-** स्वाती बुध-वर्षा कम, गणमान्य लोगों को कष्ट, रुई, सूत, कपास में मन्दा। **शु.११ मंगल-** हस्ते शुक्र-रुई, चांदी मन्दी, अन्न, गुड़, शक्कर, सोना में घटबढ़, प्रजा को पीड़ा,बीमारी फैले, वर्षा कम हो। **शु. १२ बुध-** चित्रा मंगल-प्रजा बीमार, अन्न गेहूं, जौ, चना, चांदी, सोना, पीतल, तांबा आदि तेज। **शु.१५ शनि-** सभी खाद्य सामग्री, घी, तेल आदि तेज।

-विशेष योग-

क्रूर ग्रहों के अगाड़ी शुभ ग्रह करें निवास।
वर्षा हो विपरीत यदि तो हो वर्षा नाश॥
मावस से अधिक नक्षत्र सस्ता करै अन्न।
मास नखत पूनम नहीं तेज बिकै तब अन्न॥
आश्विन शुक्ल एकम जौ शनिवारी होय।
अन्न का संग्रह कीजिए तेजी अनहोनी होय॥

अथ कार्तिक मास फल विचार

मास में ५ रवि हैं कृष्ण में तिथि घट कर बढ़ी है। शु. पक्ष तिथि हानि, सं. तुला ३० मु. बैठी धापी, चन्ददर्शन ४५ मु. दोनों मंगलवार के, मावस व पूर्णिमा दोनों रवि की हैं। सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु-केतु ने राशी परिवर्तन किया है। शुक्रास्त पूर्व में, बुधास्त पश्चिम में, दीपावली के दिन ६ ग्रह एक राशि पर हैं। मास में ५ रवि उत्तम नहीं, संसार में भय बने। राजविग्रह सत्ता संघर्ष चले, मावस पूनम दोनों तेजी करें, रिक्ता तिथि, दीपावली शनिवार, सं. तुला मंगल की सभी तेजी वाली हैं। पूनम को भी कृतिका नक्षत्र नहीं है। मटर, ग्वार, ज्वार, मक्का, सोना, चांदी, मीठा, रस पदार्थों में अच्छी तेजी बनेगी।

कृष्ण पक्ष-कृ. ४ मंगल- चित्रा सूर्य-गेहूं, चना, कपास, अरहर, सूत, केसर, कपड़ा, चांदी, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, तिल आदि तेज, प्रजा बीमार रहे। **कृ.५ बुध-** शुक्रास्त पूर्व-सोना, पीतल, तांबा, जस्ता, हींग, पारा, केसर तेज, चांदी में अच्छी घटबढ़ चले। रुई, सूत, कपड़ा, घी, तेज, सरसों, अलसी, अरण्डी आदि तेज। मनुष्यों को पीड़ा होगी। **कृ. ६ गुरु-** राहु कुंभे, सिंहे केतु-कांसी, तांबा, पीतल, शेयर, गेहूं आदि अन्न मन्दा होकर तेज, रुई, सूत में मन्दा खरीदो, ७वें मास में विशेष लाभ मिलेगा। **कृ.७ शुक्र-** विशाखा बुध-सभी अन्न, गुड़ आदि में मन्दा, देश में कहीं झगड़े होंगे। **कृ.८ शनि-** तुला मंगल-चित्रा शुक्र- सभी धान्य, अरहर, मटर, ग्वार, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, बिनौला, सूत, कपास, रस पदार्थ, सभी धातु, पीतल, मूंगफली आदि तेज होगी। देश में सत्ता संघर्ष चले, प्रजा में भय बने। **कृ.११ मंगल-** तुला सूर्य-नमक, रस, घी, तेल, कपूर, सोना, तांबा, अलसी, आंवला, गेहूं, सरसों, नारियल, सुपारी तेज, चांदी में मन्दा, पशुओं में रोग बढ़े। **कृ. १३ गुरु-** तुला शुक्र-रुई, चांदी तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, सोना तेज, अन्न में घटबढ़ से मन्दा बने। **कृ.३० रवि-** देश में सत्ता संघर्ष, राजविग्रह कहीं युद्ध के बादल मंड़रायेंगे।

शुक्ल पक्ष-शु.२ मंगल- स्वाती सूर्य, शुक्र, मंगल-वृश्चिक में बुध, चन्द्रदर्शन, सभी धातु, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, कपूर, लाख, हल्दी,रुई, जूट, कपड़ा, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, राई, तांबा, पीतल, गेहूं आदि तेज। बाजरा, ग्वार, तेल, तिल, सरसों, अलसी, सोना, मन्दा, आगे ५ मास में लाभ मिलेगा। **शु.५ शुक्र-** वृश्चिक गुरु-सोना, चांदी, तांबा, कांसी, पीतल, तेल, तिल, सरसों, नमक, गोला, रुई, सूत, कपास, कपड़ा, नारियल, सुपारी आदि तेज, दुर्भिक्ष पड़े, प्रजा बीमार रहे, कहीं उत्पात हो। **शु.६ शनि-** वक्री बुध-गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, बारदाना, गोला तेज, चांदी, सरसों, अलसी, मूंगफली, बिनौला मन्दा। **शु.९ मंगल-** मघा सिंह शनि-अलसी तेल, सरसों, तेल, गुड़, खाण्ड, उड़द, अन्न, लोहा तेज, भय बने, युद्ध का वातावरण बने। सभी प्रकार का अन्न तेज हो। **शु.१० बुध-** वक्री तुला बुध-रुई तेज होकर मंदी-**शु.११ गुरु-** बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी, तेज होकर मन्दी, शेयर, हैसियन बारदाना मन्दे, मन्दे में खरीदो लाभ होगा। जवाहरात, धातु, तांबा, पीतल, जस्ता, तेज होगा। **शु.१४ शनि-** विशाखा शुक्र, अन्न, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

रुई, सूत आदि में मन्दा। वर्षा हो, व्यापारी चिन्ता ग्रस्त रहे। व्यापार में उथल-पुथल हो। **शु.१५ रवि**-सभी प्रकार का खाद्य अन्न, साग, सब्जी, ग्वार, ज्वार, मक्का, मटर आदि में अच्छी तेजी बने। प्रजा बीमार होगी।

-विशेष योग-

अन्न चर्चरा जान सूर्य भृगु कुज मिल जाए।
एक राशि पर होय तेल घृत अवश्य नसाए॥
रिक्ता तिथि दीपावली संग में शनिवार।
तुल संक्रांत भौम की तेजी बने अपार॥
अश्विनी भरणी का बना पूनम संयोग।
तेज ग्वार ज्वार मकई मटर मंहगाई अरू रोग॥
एक राशि गत शुक्र गुरु मंगल सह आदित्य।
होता है संसार में मंहगाई का नृत्य॥
रवि मंगल गुरु शुक्र का होता जभी मिलाप।
सोना रुई तेल तिल तेज हो आप ही आप॥

अथ मार्गशीर्ष मास फल विचार-

मास में ५ सोम हैं शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय, मावस सोम की पूर्णिमा सोम की, सं. वृश्चिक ३० मु. बैठी धापी गुरु की, चन्द्रदर्शन १५ मु. बुध का है। सूर्य शुक्र मंगल बुध ने राशि परिवर्तन किया है। गुरु अस्त, बुधोदय पूर्व, शुक्रोदय पश्चिम, बुध मार्गी हुआ है। मास में ५ सोम उत्तम, गुरु अस्त आंखों की बीमारी देगा। मावस सोम की सुभिक्ष क्षेमकारी है। विशाखा नक्षत्र दुर्भिक्षकारी है। पश्चिम शुक्रोदय शुभ नहीं, प्रजा दुःखी तथा दुर्भिक्ष पड़े। पूर्णिमा का क्षय, इसी दिन कृतिका व रोहिणी नक्षत्र का होना सभी वस्तुओं को तेज करेगा। गुरु, सूर्य, शुक्र की युति वर्षा करे, सोना, रुई, तेल, तिल को तेज करेगी।

कृष्ण पक्ष-कृ.१ सोम-विशाखा सूर्य-चांदी, चावल, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, गेहूं, जौ, सरसों, तिल आदि तेज, दक्षिण के राज्यों में उपद्रव हो। **कृ.५ शुक्र**-वक्री स्वाति बुध, गुरु अस्त-सोना, चांदी, अन्न मन्दा, रुई, शेयर, सरसों, तेज, आंखों की बीमारी फैलने से प्रजा बेहाल रहे। गुड़, शक्कर, रस कस में मन्दा बनें। **कृ. ६ शनि**-ऽनुराधा गुरु-सोना, चांदी, रुई, कपास, अनाज मन्दा, वर्षा हो। **कृ.७ रवि**- वृश्चिक शुक्र-लोक सुखी, पैदावार उत्तम, ज्वार, बाजरा आदि अन्न मन्दा, अलसी, कपास, शेयर में घटबढ़, चांदी विपरीत चले। **कृ. ८ सोम**- रुई, सूत, कपास, कपड़ा, गेहूं, जौ, चना तेज, रस पदार्थों में मन्दा। **कृ.१० बुध**-ऽनुराधा शुक्र-देश में कहीं उपद्रव, बीमारी फैले, भूकंप से नुकसान हो, रुई तेज, गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, क्षार पदार्थ मन्दे। **कृ.११ गुरु**-सं. वृश्चिक, बुधोदय पूर्व रुई २५ दिन तेज, चांदी में घटबढ़ से तेज, सोना मन्दा, गेहूं, जौ, चना, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों, लाल मिर्च, तांबा, पीतल तेज, कभी लाल मिर्च या कोई और लाल वस्तु मन्दी मिले तो स्टॉक करें विशेष लाभ होगा। देश में झगड़े, राजविग्रह, युद्ध का वातावरण बने। **कृ.१३ शनि**-बुध मार्गी-रुई घटबढ़ से तेज, गुड़, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, कपूर, चन्दन, सोना, सुपारी मन्दा, अन्न, घी शक्कर तेज। **कृ.१४ रवि**-ऽनुराधा सूर्य-चांदी, चावल, सूत, अफीम, गेहूं, जौ, चना, अन्न आदि तेज, सोना मन्दा। **कृ.३० सोम**-सभी अन्न तेज रहेंगे।

शुक्ल पक्ष-शु.२ बुध-चन्द्रदर्शन-गुड़, शक्कर, खाण्ड, सफेद वस्तु मन्दी, चांदी में घटबढ़, अन्न, घी तेज होगा। **शु.५ शनि**-ज्येष्ठा शुक्र-सरसों, सोना, चांदी, घी, तेल, चावल मन्दे, कहीं झगड़े बनें। **शु.६ रवि**-विशाखा बुध- सभी अन्न, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सूत, कपास में मन्दा। **शु.७ सोम**-वृश्चिक मंगल-नेताओं में आपसी संघर्ष बढ़े, रुई, सूत, तांबा, पीतल, जस्ता सभी धातु, ग्वार, ज्वार, बाजरा तेज। **शु.९ बुध**-शुक्रोदय पश्चिम-सत्ता संघर्ष तेज हो, राजविग्रह, उपद्रवों से जनता को कष्ट हो। सोना, चांदी, सण, सूत घी आदि में मन्दा चले। **शु.१२ शनि**-ज्येष्ठा सूर्य, ऽनुराधा मंगल-चावल, सरसों, वस्त्र, अफीम, सोना, चांदी सभी अन्न, गुड़, शक्कर, गुग्गल, सभी लाल वस्तु तेज, पशु बीमार हो। **शु.१४ सोम**-वृश्चिक बुध, पूर्णिमा क्षय-रुई पदार्थ खरीदो ५ मास में लाभ मिलेगा। घी, तेल, अन्न, ज्वार, बाजरा, ग्वार, तिल, तेल, सरसों, सोना तेज।

विशेष योग

एक राशि पर साथ हो सूरज गुरु भृगु तीन।
वर्षा होती खूब पर खेती होती छीन॥
रवि मंगल गुरु शुक्र का होता है मिलाप।
सोना रुई तेल तिल तेज हो आप ही आप॥
मार्ग. में बुध उदय अथवा भृगु अस्त।
तृण चारा कमती मिले बेचो पशु समस्त॥
शुक्रोदय पर जब कभी गुरु ग्रह हो अस्त।
क्षेम कुशल वर्षा घनी मन्दा धान्य समस्त॥
मार्ग. मास में सही उदय शुक्र जंजाल।
मुल्क दुःखी सुख है नहीं पड़े अचेत्यो काल॥

अथ पौष मास फल विचार-

मास में ५ मंगल व ५ बुध हैं। कृ. पक्ष में तिथि वृद्धि, शुक्ल पक्ष में तिथि ह्रास हुआ है। मावस पूनों बुध की, सं. धन १५ मु. धापी बैठी, चन्द्रदर्शन ४५ मु. दोनों शुक्र की हैं। सूर्य शुक्र बुध ने राशि परिवर्तन किया है। गुरु उदय शनि वक्री, बुधास्त पूर्व, मंगल उदय हुआ है। मास में ५ मंगल किसी गण मान्य व्यक्ति का अभाव तथा प्रजा में भय उत्पन्न करे। ५ बुध उत्तम, बहुत सी वस्तुओं में मन्दी लावे। कृ.१ को रोहिणी से ७ मास तक सभी पदार्थ तेज रहें। कृ.७ सोम चौपाए भैंस आदि को पीड़ा हो। अमावस को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र सभी अन्न तेज तथा दुर्भिक्ष करै। शु.४ रवि- प्रजा ३ मास बीमार चले। शु.९ क्षय-राजविग्रह, मन्त्री मण्डल में फेरबदल करे। पूनों को आर्द्रा सभी खाद्य सामग्री तेज, शनि वक्री, चौपाए को कष्ट देगा।

कृष्ण पक्ष-कृ.१ मंगल-गुरु उदय-रुई में घटबढ़ से तेज होकर मन्दी, अन्न ७ मास तेज रहे। **कृ.२ बुध**-मूल धन शुक्र, ऽनुराधा बुध, शनि वक्री, रुई मन्दा या तेज होकर मन्दी, सूत, कपड़ा मन्दा, गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, चांदी, शेयर, लोहा, सोना, लोंग, सुपारी, काली मिर्च, कलई, शीशा, घी, गुड़ सभी अन्न तेज होगा। **कृ.७ सोम**-भैसों आदि चौपाए में बीमारी फैले, प्रजा परेशान रहे। **कृ.८ बुध**-बुधास्त पूर्व-रुई, चांदी, घटबढ़ से मन्दी, गेहूं, सोना, अलसी, धातु, तांबा, पीतल आदि तेज। **कृ.१० शुक्र**-सं. धन, ज्येष्ठ बुध-सभी अन्न मन्दा, कपास, तेल, तिल, रुई, सोना, चांदी, सरसों, गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मूंग, ग्वार तेज। पशु बीमार, मालवा में उपद्रव हो। **कृ. १२ रवि**-मंगल उदय, पू.षा. शुक्र-उड़द, मूंग, तेल, तिल, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक सभी अन्न मन्दा, व्यापारियों को पीड़ा, कहीं अग्निकाण्ड चोरियों से प्रजा को कष्ट। **कृ.३० बुध**-देश में दुर्भिक्ष फैले, सभी खाद्यान्न तेज और पैदावार कम होगी।

शुक्ल पक्ष-शु.१ गुरु-ज्येष्ठा मंगल-देश में बीमारी फैले, रुई में घटबढ़ हो। चांदी मन्दी रहे। **शु.२ शुक्र**-चन्द्रदर्शन, प्रजा को सुख, बाजारों में मन्दा, गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, तेल तिल, ऊन मन्दे। सोना तेज रहेगा। **शु.३ शनि**-मूल धनु बुध-बच्चों व पशुओं को पीड़ा, शासक प्रजा में विरोध हो, अन्न, सोना, चांदी में मन्दा हो। **शु.४ रवि**-वार, तिथि संयोग से प्रजा ४ मास बीमार रहे। **शु.७ बुध**-उ.षा. शुक्र- देश में बीमारी फैले, अन्न में घटबढ़ से तेज, अलसी, अरण्डी, गुड़, शक्कर आदि में मन्दा। **शु. ८ गुरु**-पूर्वाषाढ़ा सूर्य- तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गल, हल्दी, कपूर, ऊनी वस्त्र, चांदी, सरसों, चीनी तेज, सरदी जोरदार पड़े। प्रजा बीमार, राज्यों में विग्रह, कहीं मंत्री मण्डल में फेरबदल हो। **शु.११ शनि**-मकर शुक्र-पैदावार कम, खाण्ड, घी सभी अन्न तेज, रुई, चांदी घटबढ़ कर तेज हो। **शु.१३ सोम**-पू.षा. बुध-गेहूं, जौ, चना, मटर, मूंग, बाजरा, ग्वार, सोना, चांदी, मन्दा, गुड़ शक्कर, सरसों, अलसी, बिनौला तेज, प्रजा को कष्ट हो। **शु. १५ बुध**-चौपाए, गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा, मोटर गाड़ी वाहन तेज होंगे।

विशेष योग

पौष मावस के दिन ज्येष्ठा अति दुर्भिक्ष।
मास नखत पूनम नहीं तेजी बिकै अक्ष॥
मघा नक्षत्र चलते हुए शनि वक्री होय।
छत्र भंग पीड़ित प्रजा जल पशु द्रव्य नशाय॥

अथ माघ मास फल विचार-

मास में ५ गुरु ५ शुक्र, कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि, शुक्ल पक्ष तिथि क्षय, मावस पूनों शुक्र की, सं. मकर ४५ मु. भूखी रवि की, चन्द्रदर्शन ३० मु. शनिवार का है। सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि ने राशि परिवर्तन किया है। बुधोदय पश्चिम में है। मास में ५ गुरु ५ शुक्र दोनों शुभ हैं। पश्चिम में प्रजा को कष्ट होगा। बदी २-३ को शुक्र शनि शुभ नहीं, कहीं युद्ध से जन हानि हो। मावस को उ.षा. उत्तम, खाद्यान्न में मन्दा, मकर की भूखी संक्रान्त उत्तम नहीं, धान्य व रस पदार्थ तेज हो, सत्ता संघर्ष हो, मन्त्री मण्डल में फेर बदल हो। मंगल गुरु की युति में सत्ता संघर्ष बढ़ेगा। पूर्णिमा में अश्लेषा दुर्भिक्ष करे। सभी अन्न खाद्य सामग्री तेज, बुधोदय रस कस मन्दा करे।

कृष्ण पक्ष-कृ.४ रवि-श्रवण शुक्र-चांदी, सोना, गोला, खाण्ड, शक्कर, गुड़, उड़द, मूंग मन्दा, कपास, तेल, अलसी, अरण्डी तेज, रुई मन्दी होकर तेज हो। **कृ.५ सोम**-मूल-धन में मंगल-धान्य पदार्थ, सूत, कपड़ा, लकड़ी, घी, चांदी, मूल पदार्थ, बिनौला, सरसों, धातु, अन्न, घी, कपास मन्दे। विद्वानों को कष्ट हो। **कृ.६ मंगल**-उ.षा. बुध-बच्चों को पीड़ा एवं मृत्यु दर में बढ़ोतरी होगी। वर्षा हो पैदावार उत्तम रहे। सभी धान्य पदार्थों में मन्दा रहे। **कृ.७ बुध**-वक्री ऽश्लेषा ४ कर्के शनि- गेहूं, घी, चावल, रुई, सूत, कपास तेज, बीमारी फैले, आपसी विरोध बढ़े, **कृ.८ गुरु**-उ.षा. सूर्य, मकरे बुध-उड़द, मूंग, जूट सूत, गुड़, कपास, चावल, चांदी, सरसों, तेल, घी, चीनी, हल्दी में तेजी। **कृ.९ शनि**-ज्येष्ठा १ गुरु-सभी अन्न में अच्छी घटबढ़ हो, पश्चिम में झगड़े बनें, चांदी मन्दी रहे। **कृ.१० रवि**-घी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों मन्दी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ तेज, नेताओं में आपसी संघर्ष बढ़ेगा। **कृ.१३ बुध**-श्रवण बुध-धनिष्ठा शुक्र-भसीन, मूंग, मोठ, सोना, चांदी, रुई, चावल, उड़द, गुड़, शक्कर, चना, गेहूं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तेज। ओले गिरने से फसल को नुकसान होगा। पशु पक्षियों को कष्ट होगा। कृ.३० शुक्र- पीछे से चली तेजी को ब्रेक लगेगा अर्थात मन्दा बने

शुक्ल पक्ष-शु.१ शनि-चन्द्रदर्शन, तिथि क्षय- कहीं सुख कहीं दुःख कहीं झगड़े, प्रजा बीमार, राजविग्रह, मंत्री मण्डल में फेरबदल हो। अलसी, सरसों, लोहा, धातु, सूत, चांदी, सोना, रुई, सूत तेज। **शु.५ मंगल-**कुंभे शुक्र- चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, ज्वार, बाजरा आदि अन्न, सफेद धातु, रस पदार्थ मन्दे, वर्षा हो, सर्दी पड़े। **शु.६ बुध-**श्रवण सूर्य-उड़द, मूंग, जूट, कपास, चावल, चांदी, सरसों, सोना, चीनी आदि तेज। **शु.७ गुरु-**धनिष्ठा बुध- पशु बीमार, रुई में घटबढ़, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता व अन्न में मन्दा रहे। **शु.८ शुक्र-**पू.षा. मंगल- घास, चारा, घी, तेल, कपूर, चावल, सोना, चांदी, मूंगफली आदि तेज। **शु.९ शनि-**बुधोदय पश्चिम- सभी रस पदार्थ, रुई, सूत, चांदी, कपास मन्दा, १५ दिन पीछे भाव में परिवर्तन होगा। **शु.१० रवि-**शते शुक्र-घी, गुड़, खाण्ड, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी, सोना, चांदी, पशु तेज। **शु.११ सोम-**अलसी, सरसों, घी, तेल, रसकस मन्दा, सोना, चांदी, पीतल, मन्दी होकर तेज। **शु.१३ बुध-**ज्येष्ठा २ गुरु-अन्न में अच्छी घटबढ़ चले, पश्चिम के राज्यों में झगड़े विग्रह हों, चांदी मन्दी रहे। **शु.१५ शुक्र-**शते बुध-प्रजा बीमार रहे, सोना, चांदी, सण, सूत, अन्न, खाद्य सामग्री में तेजी।

विशेष योग

क्रूर क्रूर ग्रह परस्पर जब सम सप्तम योग।
अनावृष्टि संसार में भय पीड़ा अरु रोग।
दुतिया तृतीया माघ बदी शुक्र शनिवार।
पृथ्वी पर युद्ध से वहै रक्त की धार।
बदी बढ़े सुदी घटे तिथि क्रूर वार संक्रांत।
छत्र भंग अरु अवर्षण पीड़ित प्रजा नितान्त॥

अथ फाल्गुन मास फल विचार-

मास में ५ शनि, कृष्ण पक्ष में तिथि हानि, मावस पूनों दोनों शनि की, सं. कुंभ ३० मु. बैठी थापी, चन्द्रदर्शन ३० मु. दोनों सोम की हैं। सूर्य मंगल शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री मार्गी उदयास्त हुआ है। चन्द्र ग्रहण भी होगा। मास में ५ शनि उत्तम नहीं, ईशान दिशा में उत्पात होंगे। महंगाई बढ़ेगी। कृ.६ को चित्रा शुभ है प्रजा सुखी रहे। बुध वक्री मार्गी उदयास्त से अनेकों वस्तुओं में भारी उतार चढ़ाव होंगे। मावस शनिवारी दुर्भिक्षकारी है। सभी खाद्य पदार्थों में तेजी बनेगी। सं. कुंभ धान्य पदार्थ मन्दे करेगी, प्रजा को सुख मिले। शु.५ का क्षय सभी अन्न तेज करे, दुर्भिक्ष पड़े। राज्यों में विग्रह हो, मन्त्री मण्डल में फेरबदल हो। श्रवण में मंगल, पूनों को मघा व चन्द्रग्रहण तीनों नेष्ट फल कारक हैं। दुर्भिक्ष पड़े, खाद्य पदार्थों में अच्छी तेजी बने।

कृष्ण पक्ष-कृ.४ मंगल- धनिष्ठा, सूर्य-मूंग, मसूर, नील, सोना, चांदी आदि धातु, अन्न पदार्थ, रुई, अलसी, तिलहन तेज। **कृ. ६ गुरु-**प्रजा व देश के लिये सुभिक्षकारी, रुई, सूत, कपास तेज, अन्न गेहूं, जौ, चना आदि मन्दे, वर्षा हो। **कृ.१० सोम-**सं. कुंभ-गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ज्वार, मूंग, सरसों, शक्कर, खाण्ड मन्दे, नमक, घी, तेल, मूंगफली, अरण्डी आदि तेज। **कृ.११ मंगल-**उ.षा. मंगल-घी, गुड़ मन्दे, रुई, राई, सरसों, तेल, उड़द, मूंग आदि तेज। **कृ.१२ बुध-**वक्री बुध-रुई तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तेल, तिल, अरण्डी, शेयर, बिनौला तेज। बहुत सी वस्तुओं में घटबढ़ हो। **कृ.१३ गुरु-** बुधास्त पश्चिम- रुई, चांदी, घटबढ़ कर मन्दी, गेहूं, सोना, अलसी तेज, तेज हवा चले, वृक्ष टूटे, बर्फ पड़े, प्रजा को कष्ट हो। **कृ.१४ शुक्र-**मीने शुक्र-बिनौला, कपास, सरसों, अरण्डी, तेल, तिल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सभी अन्न, गेहूं, जौं, चना, मटर आदि में मन्दा, रुई, चांदी में तेजी बनेगी। **कृ.३० शनि-**देश में दुर्भिक्ष पड़े, प्रजा को कष्ट, तेजी मन्दी सम रहे।

शुक्ल पक्ष-शु.१ रवि-मकरे मंगल-सोना, चांदी, रुई, कपास, अलसी, सरसों, तेल, ऊन, घी, रस पदार्थ, तांबा, गुड़, खाण्ड आदि तेज, सभी अन्न मन्दा। **शु.२ सोम-**शते सूर्य-उ.भा. शुक्र-चन्द्रदर्शन-सरसों, चना, जूट, कपड़ा, तेल, नील, हींग, जायफल, दाख, छुआरा, सोंठ, रुई, सूत, कपास, हल्दी, मूल पदार्थ व सफेद वस्तु तेज, चांदी तेज होकर मन्दी रहे, सभी अन्न मन्दा रहेगा। **शु.४ बुध-**पंचमी क्षय सभी खाद्य पदार्थ, साग, सब्जी, घी, तेल तेज होगा। कहीं दुर्भिक्ष, राजविग्रह, मंत्री मण्डल में फेरबदल होगा। **शु.७ शुक्र-**अश्लेषा ३ शनि-रुई, उड़द, तिल पदार्थ मन्दे, कहीं प्रकृति द्वारा जन हानि हो। **शु.८ शनि-** अन्न भाव मन्दा, पश्चिम में झगड़े, चांदी मन्दी रहे। **शु.१० सोम-**वक्री धनिष्ठा बुध-पशु बीमार, रुई में घटबढ़, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता अन्न मन्दा रहे। **शु.१३ गुरु-**बुधोदय पूर्व, रेवति शुक्र-रुई का रुख देखकर व्यापार करें। चांदी में घटबढ़, सोना, सण, जवाहरात, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा। गेहूं, चना, अलसी, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों, लाल मिर्च तेज, आंधी आवे। **शु.१५ शनि-** श्रवण मंगल, चन्द्रग्रहण- तिल, तेल, गेहूं, जौ, चना, धातु, तांबा, पीतल, जस्ता, सोना, चांदी, सभी अन्न, काली मिर्च, काली वस्तु, चना आदि में अच्छी तेजी बनेगी।

-विशेष योग-

षष्ठी फाल्गुन बदी में चित्रा करे सुभिक्ष।
पूनम में मघा होय आगे दुर्भिक्ष॥
मावस से अधिक नखत सस्ता करै अन्न।
मास नखत पूनम नहीं तेज बिकै तब अन्न॥
क्रूर क्रूर ग्रह परस्पर जब सम सप्तम योग।
अनावृष्टि संसार में भय पीड़ा अरु रोग॥
पड़वा पांचे चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मंदी करै तेजी जब हो छीन॥
मंगल मकर में गए गुरु से हुए तीन पान।
सुख सुभिक्ष संसार में गावै मंगल गान॥
श्रवण नखत पर जब कभी हो कोई ग्रह क्रूर।
अन्न भाव महंगा चले गेहूं तेज जरूर॥

अथ चैत्र कृष्ण पक्ष विचार

पक्ष रविवार से आरंभ होता है। पक्ष में तिथि वृद्धि, मावस सोम की व सूर्यग्रहण भी होगा, संक्रांति मीन बुध की ४५ मु. बैठी थापी है। सूर्य शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास में ५ रवि शुभ नहीं, कहीं सत्ता परिवर्तन, कहीं राजविग्रह हो, जल द्रव्य, चना, नमक तेज हो, संक्रांति कुम्भ रस पदार्थ गुड़, खाण्ड, तिलहन में तेजी करे। दीपावली से चैत्र तक सभी मासों में शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय होना उत्तम नहीं, देश व प्रजा पर कष्ट, दुर्भिक्ष व मंहगाई झेलनी पड़ेगी।

कृष्ण पक्ष-कृ.१ सोम-पू.भा. सूर्य-सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, घी, रुई, रेशम, गुग्गल, सूत, सरसों, गुड़, चावल, ज्वार आदि तेज। **कृ.४ गुरु-**बुध मार्गी- रुई घटबढ़ से तेज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, तिल, तेल, कपूर, चन्दन, सरसों अगर आदि में मन्दा, अन्न, सोना, सण, सूत, सोंठ, लाख आदि में तेज। **कृ.८ सोम-** अलसी, सरसों, सूत, कपास, रुई, अन्न, गेहूं, चना, मटर में घटबढ़ चले, प्रजा में बीमारी फैले। **कृ.१० बुध-**अन्न, तेल, तिल, नमक तेज होकर मन्दा। चांदी मन्दी, सोना, गुड़, खाण्ड तेज। **कृ.१४ रवि-**उ.भा. सूर्य- सभी रस पदार्थ, तेल पदार्थ, सोना, चांदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं आदि तेज। **कृ.३० सोम-**शते बुध- सूर्य ग्रहण-चांदी, सण, सूत तेज, कहीं अन्न भी तेज हो, चना, नमक से लाभ हो, देश में कहीं छत्र भंग व सत्ता परिवर्तन होगा।

विशेष योग

कृष्ण पक्ष तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाए।
सभी वस्तु तेज हो सस्ता पन हट जाए॥
चैत्र मास ग्रहण हो छत्र भंग कर देय।
अन्न भाव तेज रहे प्रजा रहे घबराय॥
सभी धान्य महंगे बिकैं मीन राशिगत भानु।
तेजी तिलहन नमक में साधारण अनुमान॥

आवश्यक सूचना

हमारे ज्योतिष रत्न कार्यालय से आप चाँदी, सोना, ताँबा समस्त धातु, रुई, पाट, वारदाना, रेशम, ऊन, सूत, काली मिर्च, तिलहन, दलहन, खल, चना, तुअर, मसूर, मटर, उड़द, मूँग, मोठ, गुवार, ज्वार, चावल, सरसों, बाजरा, मक्का, गेहूँ, किराना जीरा, धनिया, अजवाइन, सौंफ, मेथी, सोंठ, हल्दी, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, शेयर बाजार आदि में से किसी एक वस्तु की हाजिर तथा स्टाक की वार्षिक भेंट ६०००/-, छह मास की ३३००/- तीन मास की १६५०/- और एक मास की ५५१/- है। वायदे रिपोर्ट की फीस जवाबी पत्र द्वारा जानें। वायदे की रिपोर्ट +टाईम (दैनिक टाईम) सहित तैयार की जाती है। **मनीआर्डर भेजते समय सबसे नीचे वाले कूपन पर अपना पूरा पता तथा पिन कोड नम्बर किसी भी भाषा में साफ-साफ बड़े अक्षरों में लिखें।** वी.पी. किसी भी ग्राहक को नहीं भेजी जाती। पत्रोत्तर चाहें तो जवाबी कार्ड ही भेजें। यहां आने वाले पहले पत्र से समय ले लेवें, क्योंकि कभी-२ बाहर भी जाना पड़ता है। वैसे मिलने के लिए शनिवार-रविवार को ८ से १२ बजे तक का समय है।

तेजी-मंदी सट्टा पुस्तक—तेजी-मंदी के चांस निकालने की उत्तम पुस्तक है। मूल्य १४०/- डाक खर्च ३० रु. अलग। **योग रत्नाकर**-यह पुस्तक दोहे के रूप में लिखी है। वर्षा का ज्ञान, तेजी-मंदी का ज्ञान बखूबी समझाया गया है। मूल्य ५१/- डाक खर्च ३०/-अलग। **व्यापार भविष्य फल**—हर एक वस्तु के अलग-२ तेजी-मंदी की स्पेशल लाइन लिखी गई है। इस पुस्तक की सहायता से आप हर व्यापार, वायदा, सट्टा हाजिर कर सकते हैं। स्टाक के लिए अलग से लिखा गया है। मूल्य एक पुस्तक १६०/- डाक खर्च ३०/- अलग।

ज्योतिष रत्न कार्यालय, पो. फर्रुखनगर-१२२५०६, गुड़गांव
फोन-कार्या.-निवा.: ०१२४-२३७५२१८, २३७५३७७
E-mail-jyotish ratan@yahoo.com

नोट—फोन रात को ८ बजे के करीब करें ताकि हम घर पर फोन के समय मिल सकें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् 2006 ई. का व्यापार भविष्य

व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मंदी लाईनों का व्यौरा

जनवरी-यह मास पौष शुक्ला 2 रविवार से प्रारंभ होकर माघ शुक्ला 2 मंगलवार तक रहेगा। ता. 1 चन्द्रदर्शन रविवासरी व 45 मुहूर्त्ती है। अत: ऑवरेज में मंदी गुड़, तेल, सोना, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी रुई में घटाबढ़ी से मंदी। ता. 5 जन. बुध अस्त से बर्फ, कोहरा व प्राकृतिक प्रकोप व 33 दिनों के अन्दर रूई सर्पमुखी चाल से तेजी ले। सोना तेज शेयरों के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 11 एक दस्यां पौष शुक्ला से रक्त वर्ण की वस्तुओं में तेजी व शुक्र अस्त से मेघ गर्जना, उपलवृष्टि फसलों को हानि रुई केभावों में मन्दी चांदी घटाबढ़ी से तेज अनाज के भावों में तेजी। सोना, ताम्बा, पीतल, जस्ता,चना, राजमा, सोयाबीन, दालें सरसों, बिनौला, मेवा के भावों में सुधार ले तेजी बनेगी। ता. 14 जन. कर्क, मकर दो बहिन है से मकर संक्रांति शनि वासरी हो। प्राकृतिक प्रकोप, अकाल स्थिति, हिंसा, दंगा,आन्दोलनों में वृद्धि, घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई के भावों में तेजी मक्का, ज्वार, बाजरा, तेल, मिर्च, चंदन, हल्दी,केसर, चावल, सिंघाड़े के भावों में तेजी। ता. 17 जन. शुक्रोदय ग्रहोयति से यातायात के कार्यो में बाधा भारी वर्षा, हिमपात, ओलावृष्टि से फसलों को हानि सभी प्रकार के अन्न, रसीले पदार्थ में तेजी शेयरों के भाव भी घटाबढ़ी से तेजी बना लेंगे। ता. 24 जनवरी श्रवण के सूर्य 14 दिनों के अन्दर गेहूँ, जौ, चावल, रुई, सूत, सन, सोना, चांदी, गुड़, खांड, अलसी, सुपाड़ी, लौंग, पीपल शेयर के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. 29 जन. रविवारी अमावस्या दुर्भिक्षकारी है। प्रजा में सुख-दुख की समानता, वस्त्र रुई, सोना, सूत, तेज, अन्न के भावों में घटाबढ़ी सोना तेज व चांदी में घटावढ़ी से मन्दा, ता. 30 जन. चंद्रदर्शन सोमवार को है, छत्र भंग के संकेत तेजी को बल सीमावर्ती क्षेत्रों में तनाव व नेताओं में वाद-विवाद, सड़क दुर्घटना व प्राकृतिक प्रकोप से प्रजा को कष्ट शेयर व सर्राफा बाजार में विशेष घटाबढ़ी का योग।

विशेष-एक राशौ गवाहतौ, सोम शुक्र दिनाधिपा॥
जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाय।
सभी वस्तु मंदी बिकै मंहगाई हट जाय॥

फरवरी-यह मास माघ शुक्ला 3 बुधवार से आरंभ होकर फाल्गुन शुक्ला 1 मंगलवार तक रहेगा गोचर ग्रहचाल के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनाव पूर्ण रहेगी, सीमा विवाद, उपद्रव, अकल्पित घटनायें घटेंगी। ता. 1 फरवरी चावल, स्वांक में तेजी। सोना, चांदी में घटाबढ़ी से मंदी रुई में घटाबढ़ी ता. 5 कुंभ के बुध से अलसी, रुई में मन्दी चांदी गिर कर सुधार लें घी, तेल, रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड में तेजी अनाजों के भाव समता को बल देंगे। शुक्र संयोग से विशेष तेजी का भी योग ता. 12 कुंभ संक्रांति तेल, घी, लवण, सरसों, मूंगफली, राई के भावों में तेजी। रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, शेयर तेजी अनाजों के भावों में स्थिरता को बल मक्का, ज्वार, जस्ता, लोहा, मटर, ताम्बा, ऊनी, रेशमी वस्त्रों में मंदी। ता. 17 फर. सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, शेयर्स अनाजों के भावों में मन्दी। ता. 19 शतभिषा के सूर्य 14 दिनों के अन्दर चाँदी, सूत, सन, कपड़ा, तिल, तेल, अरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुआरा, सौंठ व हल्द, गुड़, गेहूँ के भावों में तेजी को बल देंगे। ता. 24 मन के बुध रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में नयी सोना, चांदी में घटाबढ़ी के साथ पहले जितनी तेजी वाद में उतनी ही मन्दी बिनौला के भावों में सुधार से अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, रूस में अन्दरूनी झगड़े सत्ता संघर्ष व किसी बड़े दल में विघटन ता. 27 सोमवती अमावस्या प्रत्येक जिन्स में मन्दी का झटका देगी।

विशेष-माघ सुदी सातें पड़े रवि, शनि चन्द्रवार।
विग्रह भय दुर्भिक्ष से दु:ख पावै संसार॥
जेही पखवारे तिथि बढ़ै वाही में घट जाय।
सभी वस्तु मन्दी रहे मंहगाई हट जाय॥

मार्च-यह मास फाल्गुन शुक्ला 2 बुधवार से आरंभ होकर चैत्र शुक्ला 2 गुरुवार तक रहेगा। गोचर ग्रह चालानुसार किसी देश व प्रदेश में सत्ता परिवर्तन, भूमि कम्पन व प्राकृतिक प्रकोप ता. 3 मार्च बुध वक्री रस कस पदार्थो में घटाबढ़ी से भावों में गिरावट ता. 5 मार्च गुरु वक्री रसीले पदार्थ न सुगन्धित वस्तुओं व घी, तेल, कपास, सरसों के भावों में तेजी मार्गशीष के दस मास दुगना लाभ की प्राप्ति ता. 9 कुंभ के बुध से अलस, रुई में मन्द चाँदी गिर कर तेज हो। घी, तेल, रस, पदार्थ, गुड़, खाण्ड, सोने के भावों में तेजी। ता. 14 पूर्णिमा मंगलवासरी हैं। जो अशुभ फल प्रदायक है। बाजार भावों का रूख नर्म रहेगा। फल, फूल, सब्जी, घी, दूध, तेल, रस पदार्थों में गिर कर सुधार शेयर व सर्राफा बाजर में उतार-चढ़ाव से तेजी पर्वतीय प्रदेशों मेंशीतलहर का प्रकोप ता. 20 मार्च कुंभ के बुध उदय होने से शूद्र जनों को कष्ट नाविक मल्लाह, व्यापारी वर्ग, वेध व घोड़ों को कष्ट प्रदायक, कपास की हानि सोने व चाँदी के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी गेहूँ, जौ, चना, दालवाना के गिरे भाव सुधार लें ता. 22 मार्च मृगशिरा के मंगल तिल, तेल, चाँदी में सुधार व लगभग सभी जिन्सों में मन्दी की ओर झुकाव रहेगा। ता. 29 मार्च अमावस्या बुधवारी व सूर्यग्रहण से अन्न के भावों मं तेजी शेयर, सोना, चांदी में तेजी का योग विशेष रिपोर्ट से लाभ लें।

विशेष-सत अठ नव दस ग्यारसी फागुन सुदी में जोय।
कृतिका करे सुर्भिक्ष, अरु आर्द्रा उपज न कोय॥
पड़वा पाँचें चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मन्दी करे, तेजी हो जब हीन॥

अप्रेल-यह मास चैत्र शुक्ला 3 शनिवार से प्रारंभ होकर वैशाख शुक्ला 3 रविवार तक रहेगा। ता. 1 रेवती के सूर्य 14 दिनों के अन्दर मोती, अलसी, सरसों, अरण्ड, मूंगफली, लहसुन, लाख, सब्जी, रुई, गेहूँ, जौ, चना, चावल के भावों में तेजी किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी का झटका। ता. 3 मिथुन के भौम **''मिथुने च यदा भौम''** से प्रबल मेघों की वृद्धि गेरु, गोखरु, लाख, लाल मिर्च के भावों में तेजी रुई, गुड़, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा के भावों में तेजी। चांदी घटाबढ़ी से मध्यम रहे व कुंभ के शुक्र रुई, चांदी, गुड़, गेहँ, जौ, चना, मूंग, ज्वार, शेयर व अनाजों के भाव घटाबढ़ी से मन्दी का रूझान करेंगे। ता. 6 अप्रैल शनि मार्गी हो रहे है जो 23 दिनों के अन्दर तिल्ली, तेल, मिर्च के भावों में मन्दी का झटका देंगे। ता. 11 अप्रैल ''धने मीने बुधे से मृग हाथी को कष्ट राजनेताओं में वाद-विवाद, राजनीति में उथल-पुथल रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में मन्दी सोना उठ कर गिरे। घी, तिल, तेल, सरसों, गिरकर सुधार लें। गेहूँ, गुड़, उड़द, सोंठ, सुपाड़ी, नारियल, चाँदी, हाथी दाँत से बनी वस्तुयें कपूर नमक में तेज। ता. 13 अप्रैल मेष संक्रांति गुरुवासरी है जो अन्न के भावों में मन्दी का झटका देगी। ता. 19 पू. भाद्र के शुक्र रुई, चाँदी, कपूर पिपरमेन्ट में तेजी। दालवाना में घटाबढ़ी व अनाजों के भावों में मन्दी का झटका देंगे। शेयर बाजार में घटाबढ़ी से अस्थिरता ता. 28 अप्रैल ''मीन राशि गते शुक्रे'' से सुर्मिक्ष पृथ्वी पर हर्ष का सुख राहु योग से चांदी में विशेष तेजी, अनाज, सरसों, तिलहन, अलसी, अरण्ड, गुड व खांड के भावों में गिरावट, रुई में भी तेजी का योग।

विशेष-शतभिषा तीनों पूर्वा तथा रोहणी हस्त।
किसी पक्ष की एकम को होतो मंहगा धान्य समस्त॥
चैत्र उजेरी पड़वा दिना सोम, शुक्र, गुरुवार।
बढ़ै धान्य धन सम्पदा सुखी रहे संसार॥

मई-यह मास वैशाख शुक्ला 4 सोमवार से आरंभ होकर ज्येष्ठा शुक्ला 4 बुधवार तक रहेगा। ता. 1 मई उ. भाद्रे शुक्र: चावल, मोती, चाँदी, कपूर, खांड, रुई, कपास में मन्दी फल, फूल, सब्जियों के भावों में तेजी। ता. 11 कृतिका के सूर्य 15 दिनों के अन्दर घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, अरण्ड, गेहूँ, जौ, चना, मूँग, मोंठ, चावल, राई, सरसों के भावों में तेजी का उछाल। ता. 14 मई वृष के सूर्य चाँदी, सोना, गुड़, खांड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, सुपाड़ी, नारियल, तिल, तेल, सरसों, शेयर्स के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी। ता. 17 वृष के बुध ''सोम पुत्रों वृष स्थित्वा'' से सम्पूर्ण पृथ्वी पर कलह, लड़ाई, दंगे व आन्दोलन से प्रजा को कष्ट व दो सप्ताह के अर्न्तगत रुई गिर कर सुधार लें सभी जिन्सों में विशेष घटाबढ़ी गेहूँ, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, तिल, तेल के भाव सुधार लें तेजी बना लेंगे। ता. 24 कर्क के मंगल से रुई में टका 30 से मन्दी सरसें, अरण्ड, अलसी, तेल के भावों में मन्दी चांदी में घटाबढ़ी गुड़, शक्कर, दूध के भावों में तेजी भैस, गाय व चौपाये पशु भी तेज हो जायेंगे। शनिवासरी अमावस्या से प्रजा को कष्ट, दुर्भिक्ष, ता. 29 पुष्य के

देश नाश दुर्भिक्ष दु:ख अति घोर भ्रष्टाचार॥
भादव शुक्ला सप्तमी बादल गाज ना बीज।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भौम सोने में विशेष तेजी का योग चाँदी व रुई में घटाबढ़ी, शेयर बाजार भी गर्मी पकड़ लेगा। ता. 31 मई ''मिथुने च बुधौ'' से सरसों, तारमीरा में घटाबढ़ी पशु के भाव तेज चाँदी व सोने में घटाबढ़ी, शेयर बाजार गिर कर संभल जायेगा।

विशेष-वृष राशि के रवि करैं सुख सम्पदा सुकाल।
दूध, दही, घी में रहे मंहगाई की चाल॥
दुतिया तृतीया ज्येष्ठ सुधी आवै आर्द्रा रिक्ष।
वर्षे तो कर्षे नमी, दर्षे दुःख दुर्भिक्ष॥

जून-यह मास ज्येष्ठ शुक्ला 6 गुरुवार से प्रारंभ होकर आषाढ़ शुक्ला 6 सोमवार तक रहेगा। शुक्ला पंचमी शुक्र संयोग से भारी आँधी, तूफान, ववंडर से अन्न, जन, धन की हानि वायु व बादलों के संयोग से फलों की हानि। ता. 4 जून भरणी के शुक्र 12 दिनों के अर्न्तगत सोना, चांदी, अफीम, रक्त वर्ष की वस्तु सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल के भावों में मंदी चना, मूंग, मोंठ, ज्वार, तुआर में घटाबढ़ी व रुई के भावों में तेजी को बल मिलेगा। मनुष्यों में ज्वर रोग अधिक फैले लड़ाई, दंगा, उपद्रवों से प्रजा को कष्ट धान्य मंहगे हो। ता. 15 मिथुन संक्रांति गुरुवासरी है। जो अन्न, सूत, सन, रेशम के भावों में तेजी को बल प्रदायक है। ता. 18 वृष के शुक्र रुई, कपास में गिरावट, सोना, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी शेयर्स के भावों में भी तेजी अनाज के भावों में मन्दी का झुकाव रहेगा। ता. 20 कर्के बुधे से रुई में 15 टका मंदी चांदी में घटाबढ़ी से झटका की तेजी रस पदार्थ गुड़, घी, तेल, मूंगफली, सरसों व सोना तेजी ले कर गिर जायेंगे। अनाज के भावों में स्थिरता को बल प्राप्त होगा। ता. 24 पुष्य के बुध सोना, चाँदी, रुई में घटाबढ़ी मोती, मणि, हीरा, जवाहरात, ऊनी वस्त्र व ऊन के भावों में तेजी को बढ़ावा देंगे। अमावस्या रवि वासरी सुर्भिक्षकारक है। राजयुद्ध व प्रजा के कष्टों में वृद्धि। ता. 28 को बुध अस्त हो रहे है जो अन्न के भावों में सुधार को बल देंगे। चाँदी, सोना, धातुओं, अरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, दाख, छुआरा, सुपाड़ी, नारियल, ऊन के भावों में घटाबढ़ी से मंदी अफीम के भावों में तेजी को बल मिलेगा।

विशेष-आषाढ़ वदी चौदस दिना होय रोहिणी योग।
करफ्यू अरू कंट्रोल से दुख पावै सब लोग॥
आषाढ़ षष्ठि दिवसे कृष्णे पक्षे शनिर्पदा।
तदा गोधूमका ग्रह्या द्विगुणा यस्तु कार्तिके॥
आषाढ़ वदी छठ शनि युक्त हैं गेहूँ का
संग्रह करें कार्तिक मास में दूना लाभ लें।

जौलाइ-यह मास आषाढ़ शुक्ला 6 शनिवार से आरंभ होकर श्रावण शुक्ला 6 सोमवार तक रहेगा। मास छठ शनिवासरी अनाजों के भावों में मन्दी का झटका देगी। ता. 4 को गुरु मार्गी व बुध वक्री हो रहे हैं। जो अनाज, रुई, रेशम, वारदाना, पीतल, धातु व बर्तनों में मन्दी का असर रहेगा। शेयर मन्दे होने पर खरीद कर 6 मास पश्चात उत्तम लाभ की प्राप्ति ता. 8 मृगे शुक्र से 12 दिनों के अन्दर गेहूँ, ज्वार, चना में मन्दी गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में सुधार से तेजी। पूर्णिमा भौमवासरी है

वर्षा के खेंच वायु का प्रकोप अधिक रहे। घास, तृण, चारे में न्यूनता रहेगी। ता. 12 यदा सिंह गतो भौम से सोना, चांदी में तेजी शस्त्र, गुड़, शक्कर, गेहूँ, अलसी, रुई, लाल वस्त्र, लाल मिर्च के भावों में तेजी। ता. 14 मिथुने च यदा शुक्रे से रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, वारदाना, तिल, अरण्डी, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मंदी किसी-किसी में विशेष मन्दी का झटका गेहूँ, चना, जौ, चावल के भावों में सुधार ता. 16 कर्क संक्रांति रविवासरी है। जौ, गेहूँ, चना, घी, चावल, दालवाना, रस पदार्थ व शेयरों में तेजी को बल देगी। ता. 20 मिथुन के बुध 15 दिनों के अन्दर सोना, चांदी के भावों में गिरावट, शेयरों में घटाबढ़ी सरसों, वारमीरा में घटबढ़ी पशुओं में तेजी अमावस्या मंगलवासरी है। पुष्य योग से अरिष्ट कारी दुर्भिक्ष कारक है। प्रजा में रोग, शोक की वृद्धि, अति वृष्टि, कलिंग, कौशल देशों में प्रजा को विशेष कष्ट ता. 27 जुलाई को बुध उदय अनावृष्टि कारक, दुर्भिक्ष व सभी जिन्सों में तेजी को बल मिलेगा। अन्न के गिरे भाव भी सुधार लें। तेजी बना लेंगे। ता. 30 जुलाई पुर्न के शुक्र सोना, चाँदी में घटाबढ़ी से मन्दी शेयर बाजार में भी मन्दी, रुई, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में तेजी को बल मिलेगा।

विशेष-सावन बदी एकादशी रोहिणी संवत जान।
मृगसिर से दुखभय का सब लक्षण अनुमान॥
पौष माघ वैशाख या सावन या आषाढ़।
भयकारी बुध का उदय, अस्त होय सुखवाद॥

अगस्त-यह मास श्रावण शुक्ला 6 से आरंभ होकर भाद्रपद शुक्ला 7 गुरु वार तक रहेगा। ता. 3 आश्ले के सूर्य दो सप्ताह के अन्तर्गत सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, अरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. 7 शुक्र का कर्क राशि में प्रवेश दैत्य गुरुयदा कर्के: से सोना, चांदी, रुई, अलसी, मटर, घी, गुड़ में तेजी। गेहूँ, अरहर के भावों में घटाबढ़ी शेयर बाजार में तेजी धातुवाना व किराना के भाव भी सुधार ले तेजी बना लेंगे। ता. पुष्य के शुक्र रुई, सन, सूत, रेशम व ऊन, धान्य के भाव तेज व लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में मन्दी को बल मिलेगा। ता. 16 अगस्त सिंह संक्रांति बुधवारी है। अत: चाँदी, सोना, रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, रक्त वर्ण की वस्तुओं में तेजी व अन्न के भावों में मंदी का योग व 17 को मंगल अस्त हो रहे है। जो चौपाये पशुओं के भावों में तेजी को बल देंगे। ता. 23 अमावस्या बुधवारी व शनि उदय हो रहे है जो हवा के साथ-साथ प्राकृतिक प्रकोप अनाज व रस पदार्थ व रसीले फलों, रुई, पाट, वारदाना के भावों में तेजी को बल प्रदान करेंगे। ता. 24 अगस्त को सिंह राशि में बुध का प्रवेश जो चाँदी, सोना, शेयर, ताम्बा, लोहा, मेडीसन, रुई, ऊनी, वस्त्र, लाल मिर्च अनाजों के भाव में तेजी बनाये रखेंगे। ता. 29 यदा सिंह गतो भौम योग से यदि वर्षा हो तो विशेष तेजी अन्यथा रक्त वर्ण की वस्तुयें अनाज किराना, दालवाना, शेयर घटाबढ़ी से तेजी अधिक जानकारी के लिए विशेष तेजी रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें।

विशेष-भादव अगत चौथ को यदि होवे शनिवार।
देश नाश दुर्भिक्ष दुःख अति घोर भ्रष्टाचार॥
भादव शुक्ला सप्तमी बादल गाज ना बीज।
यह लक्षण दुर्भिक्ष के मंहगी हो सब चीज॥

सितम्बर-यह मास भाद्रपद शुक्ला 8 शुक्रवार से आरंभ होकर आश्विन शुक्ला 8 शनिवार तक रहेगा। मास में पाँच गुरु व शुक्र वस्तुओं में घटाबढ़ी परन्तु मन्दी की प्रधानता रहेगी। जनता को कष्ट, झगड़े, विग्रह का सामना करना पड़े। वर्षा की न्यूनता का दुर्भिक्ष का योग ता. 4 विशाखा के गुरु रुई, चाँदी के भाव में मन्दी सोना, शेयर घटाबढ़ी अन्न के भावों में तेजी। ता. 8 प्रतिपदा पूर्वाभाद्र नक्षत्र युक्त है। अत: अनाजों व जनरल लाईन तेज तिलहन, घी, अलसी, लाल मिर्च, सोना घटाबढ़ी से तेजी। ता. 12 पूर्वाफाल्गुनी के शुक्र दो सप्ताह के अन्तर्गत गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा व उड़द, मूंग, चने के भावों में आंशिक मंदी किसी-किसी में विशेष मन्दी शेयर मंदे। ता. 17 सितंबर कन्या, संक्रांति शनिवासरी है। अत: चना, गेहूँ, चौ, चावल, बिनौला के भावों में तेजी। रुई, चाँदी गिरकर सुधार लें। घी, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी से तेजी। सोना, शेयर, गिरकर सुधार लेंगे। मास में कन्या राशि पर चार ग्रहों का योग किसी बड़ी दुर्घटना का भी संकेत दे रहा है। अत: व्यापारी वर्ग बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. 22 कर्क के शनि रुई, सूत, चांदी के भावों में तेजी दक्षिणी व पश्चिमी प्रदेशों में हिंसा, प्रदर्शन, प्रजा को कष्ट। ता. 25 सितंबर ''कन्या राशि 1 गते शुक्रे'' से सभी प्रकार के अनाज गुड़, खाण्ड, शक्कर रेशमी वस्त्रों में तेजी। चावल व चाँदी में चमक का योग अत: सर्तकता से कार्य करें। प्राकृतिक प्रकोप से फसल व प्रजा के कष्टों में वृद्धि। ता. 27 तुला के बुध रुई, गुड़, अफीम, तम्बाकू, शेयरों के भावों में तेजी। सोना में एक टका की तेजी अलसी, चाँदी, सरसों, अरण्ड, बिनौला, मूंगफली के भावों में मन्दी को बल मिलेगा। पृथ्वी पर कलह व युद्ध जैसा वातावरण प्राकृतिक प्रकोप आँधी, तूफान व भूकम्प वर्षा का प्रकोप।

विशेष-चार पांच ग्रहों का एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुःख पावै सब लोग॥
आश्विने प्रथमायां चेच्छुक्लायां च गतौ शनौ।
तदा धान्यं च विक्रेयं पुरस्तय समर्धता॥
अर्थात् संचित धन्य बेच देने का संकेत आगे सस्ता होगा।

अक्टूबर-यह मास आश्विन शुक्ला 8 रविवार से आरंभ होकर कार्तिक शुक्ला 9 मंगलवार तक रहेगा। मास प्रारंभ प्राकृतिक प्रकोप, हिंसा, प्रदर्शन, रोग, शोक की भरमार राजनीति माहौल में गर्माहट, पद त्याग, भ्रष्टाचार, परिवर्तन से वातावरण दूषित वं शुक्र अस्त वैध व सूत्रधारों के समक्ष परेशानी शेयर बाजार में उथल-पुथल ता. 4 चित्रा के मंगल 12 दिनों के अन्दर गेहूँ, चावल, चना, सोना, ताम्बा, पीतल व शेयर के भावों में तेजी। ता. 8 तिथि क्षय तेजी के भावों में बल देगा। हल्दी, हींग, धनियाँ, गेहूँ, गुड़, खाण्ड में तेजी। सोने, चाँदी, शेयर में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 10 चित्रा के सूर्य मोती आदि रत्न, गुड़, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, सन, रेशम, कपूर लाल वस्त्रों के भावों में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

घटाबढ़ी से सप्ताहान्त तक तेजी बना देंगे। ता. 14 तुलायां भौम से रुई, कपास, सन, सूत, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, अनाजों में तेजी। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी। शेयर भी तेज रहेंगे। ता. 17 अक्टूबर तुला संक्रांति मंगलवासरी है। जो गेहूँ, जौ, चना, कुलायो, नमक, मिर्च, धनियाँ, हल्दी, नारियल, जायफल, सोना, चाँदी, ताम्बा, लोहा, जस्ता, उड़द, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा के भावों में समता को बल मिलेगा। घी, तेल, सुगन्धित द्रव पदार्थ, लाल मिर्च, केसर, लाल चंदन, ऊनी वस्त्र रेशम के भावों में तेजी। पशुओं के भावों में गिरावट। ता. 27 वृश्चिक के गुरु दुर्भिक्ष, अल्प वर्षा व रोग, उपद्रव व प्रजा के संकटों में वृद्धि कारक है। अफीम, अनाज मंदे किराना शेयर तेज रहेंगे। ता. 29 सिंह के शनि कुंभ के राहू, मालवा देशों के लिये अशुभ सम सूत्र मंहगे बर्तन, धातु तेज राजनेताओं में वाद-विवाद, युद्ध भय, सैन्य प्रदर्शन।

विशेष-कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता।
शनि भौम युता व अपि सर्वलोक भयावदा॥
गुरु शुक्र यदेकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत।
अकाले भवेद वृष्टि जगत्यां नाम संशय॥

नवम्बर-यह मास कार्तिक शुक्ला 10 बुधवार से आरंभ होकर मार्गशीष शुक्ला 10 गुरुवार तक रहेगा। ता. 5 पूर्णिमा कृतिका युक्त नहीं है। अतः बाजार तेजी पकड़ेंगे। दो सप्ताह के अंदर रुई के भावों में मन्दी अन्न के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 6 गुरु अस्त रसीले पदार्थ, घी, तेल में तेजी। चावल, गेहूँ, मसूठ, गुड़, खांड, रुई, सूत, अरण्ड के भावों में तेजी। अलसी, सोना, चाँदी घटाबढ़ी से तेजी लेंगे। ता. 12 नवं. वृश्चिक के शुक्र से अनाजों में मन्दी को बल मिलेगा। जनता में विश्वास सन्तोष व स्वास्थ्य की वृद्धि होगी। रुई के व्यापारी सतर्कता से कार्य करें। भरी मन्दी आ सकती है। गुड़ में घटाबढ़ी व चांदी प्रमुख शेयरों में तेजी रहेगी। ता. 16 नवंबर वृश्चिक संक्रांति गुरुवासरी है। अतः गुड़, खांड, शक्कर, लाल मिर्च, गेरु, लाल चंदन के भावों में तेजी। कलई, नारियल, जायफल रुई व तिल, तेल, रसों, सूत में घटाबढ़ी से तेजी मोंठ, ज्वार, बाजरा, मक्का, मसूड़, अरहर, कोयला, पत्थर, गाय, बैल के भावों में मंदी सोना, चाँदी, ताम्बा, जस्ता, अलसी, तिल, तेल, ऊनी व सूती वस्त्र गिरक तेजी लेंगे। ता. 22 चन्द्रदर्शन धान्य के भावों में मन्दी कारक है। चांदी, सोना, रुई, सूत, वस्त्र, सन, बारदाना, जूट, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी घी के भाव तेज रहेंगे। ता. 27 नवंबर वृश्चिक राशिस्थौ जायतेव महीसुतः से गुड़, सोना, आयरन शेयर व सभी धातुओं के भावों में तेजी, चतुग्रही योग से विशेष तेजी भी बन सकती है। ता. 30 नवं. शुक्र अस्त समस्त खाद्य पदार्थों में तेज को बल मिलेगा।

विशेष-मार्गे कृष्ण चतुर्दश्यां स्वाति भृक्ष प्रजायते।
तदा वै श्रावणे मासे वृष्टि नैव भविष्यति॥
मार्गशीर्षे कृष्ण पक्षे तिथि वृद्धिश्च जायते।
तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजा क्रंदाति निव्यशः॥

दिसम्बर-यह मास मार्गशीष शुक्ला 11 से प्रारंभ होकर पौष शुक्ला 12 रविवार तक रहेगा। ता. 2 को गुरु उदय व शुक्र उदय वर्षा मन्दा, शीत का प्रकोप व अन्न के भावों में मन्दी को बल देगा। ता. 6 शनि वक्री गेहूँ, जौ, चना व चाँदी के भावों में मन्दी सोना, लोहा, आयरन, शेयर, मेडीसन, रसायन पदार्थों में तेजी। रुई, सूत, कपास गिरकर सुधार लें। ता. 15 को धनु संक्रांति जौ, गेहूँ, चना, जौ, मटर, मक्का, ज्वार, बाजरा, कपास के भावों में समता को बल मिलेगा। सोना व चाँदी, जूट के भावों में तेजी। गेरु, लाल रंग, लाल मिर्च, लोहा, जस्ता, पीतल, गुड़, तेल, शक्कर, अलसी के भाव घटाबढ़ी लेकर मंदी का मान करेंगे। अरहर, लोबिया, रमास के भावों में मंदी व्यापार वर्ग को निर्देश रक्त वर्ष की वस्तुओं का संग्रह ना कर मन्दी में क्रम व तेजी अविक्रय कर लाभ लें। ता. 17 को ही बुध अस्त व बुधवारी अमावस्या ज्येष्ठा योग से दुर्भिक्षकारी है। भैसों के पीड़ा व मूल्यों के भावों में तेजी। ता 21 ज्येष्ठायां भौम से दो सप्ताह के अन्तर्गत चाँदी के भावों में मन्दी। रुई के भावों में घटाबढ़ी अफीम के भावों में तेजी। ता. 23 मूल के शुक्र, सोना में घटाबढ़ी शेयर बाजार मन्दे रुई तेजी लेकर गिरे। गेहूँ, जौ, चना, मटर, दालवाना के भावों में सुधार। ता. 27 सोना, चाँदी, अनाज, शेयर के भावों में घटाबढ़ी से मंदी अलसी, अरण्ड के भावों में गिरावट, रुई, चाँदी, घटाबढ़ी से तेज। ता. 30 मकर के शुक्र शेयर अफीम, गुड़, खांड, घी, गेहूँ व अन्य अनाजों के भावों में तेजी। रुई, चाँदी घटाबढ़ी तो लेगी। अन्तः परिणाम तेजी का ही रहेगा।

सन् 2006 ई. में ग्रहों का शेयर बाजार पर प्रभाव

जनवरी ता. 1 नववर्ष सभी को मंगलमय हो, मास प्रारंभ शेयर उठ कर गिरें ता. 5 बुध अस्त सभी शेयरों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. 8 तेजी का मान हो। ता. 10 गिरे भाव सुधार लें। ता. 14 संक्रांति शनिवासरी है। अतः रसायन, आयरन, मेडीसन सम्बन्धी शेयरों में चमक अन्य शेयर भी तेजी लेंगे। ता. 17 घटाबढ़ी विशेष सर्तकता से कार्य करें। ता. 20 शेयरों के भावों में मन्दी का झटका। ता. 24 भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. 28 भाव घटाबढ़ी से मन्दी लेंगे। ता. 30 भाव घटाबढ़ी से तेजी लेंगे।

फरवरी-ता. 2 फरवरी शेयर बाजार भी सर्दी मान गर्मी की इच्छा करने लग जावें। ता. 4 फरवरी बाजारों में तेजी का रूख परिवर्तन। ता. 7 तेजी को बल मिले। ता. 11 फरवरी चलती लाईन पलट जायेगी। ता. 15 शेयर बाजार में गर्माहट रहेगी। ता. 18 फरवरी भावों में मन्दी का झटका। ता. 26 फरवरी घटाबढ़ी से भाव सुधार लेंगे। ता. 28 फरवरी बाजारों में यकायक ही तेजी की चाल में सुधार।

मार्च-ता. 3 मार्च भावों में घटाबढ़ी तो होगी। लेकिन बल मन्दी को मिलेगा। ता. 5 गुरु वक्री भावों में सुधार बना देंगे। ता. 16 शेयर सर्पमुखी चाल से तेजी लेंगे। ता. 20 मार्च बुध उदय घटाबढ़ी को बल देगा। ता. 22 मार्च गिरे भावों में सुधार। ता. 24 मार्च बाजार गर्म रहेगा। ता. 27 मार्च बाजारों में रूख परिवर्तन भावों में मन्दी को बल मिलेगा। ता. 29 मार्च अमावस्या व ग्रहण योग तेजी को बल प्रदान करेंगे।

अप्रैल-शेयर बाजार में अच्छी तेजी और अच्छी मन्दी की भावना को बल मिलेगा। मास के प्रारम्भ में बाजार में मन्दी को बल मिलेगा। ता. 5 अप्रैल शेयर बाजार गिर कर सुधार लेगा। ता. 11 गिरे भावों में सुधार मिले। ता. 15 अप्रैल वायदा व्यापार में सुधार हो। ता. 18 अप्रैल भाव घटाबढ़ी से तेजी लें। 21 अप्रैल भावों में मन्दी का झटका। ता. 23 अप्रैल मन्दी की ओर झुकाव। ता. 28 भावों में तेजी। ता. 29 सतर्कता से कार्य करें मन्दी का झटका।

मई-ता. 4 मई भावों में मन्दी का प्रभाव बनें। ता. 11 मई चलती लाईन में परिवर्तन, भावों में सुधार बनें। ता. 15 मई भावों में अच्छी मन्दी का झटका। ता. 18 मई घटाबढ़ी से भाव सुधार लेकर तेजी बना लेंगे। ता. 22 मई बाजारों में भी गर्मी का माहौल रहेगा। ता. 25 मई व भावों में मन्दी का झटका। ता. 28 मई चलती लाईन में सुधार। ता. 30 मई बाजारों में तेजी चलें।

जून-ता. 2 जून भावों में सुधार हो। ता. 5 जून 15 दिनों के अन्दर भाव अच्छी तेजी ले। ता. 10 जून घटाबढ़ी से भावों में तेजी को बल मिले। ता. 15 जून भावों में अच्छी मंदी का झटका। ता. 18 गिरे भाव सुधार ले लेंगे। ता. 22 जून भाव गिरकर तेजी लेंगे। ता. 25 जून भावों में तेजी को बल मिले। ता. 24 जून पुष्ये बुध व अमावस्या तेजी को बल प्रदान करेगी। ता. 28 जून बुध जून बुध अस्त तेजी को बल देंगे। एक सस्ता तेजी तो एक सप्ताह मन्दी का वातावरण बनेगा।

जुलाई-ता. 5 शेयरों में तेजी को बल मिले। ता. 8 जुलाई घटाबढ़ी विशेष हो। ता. 9 जुलाई भाव सुधार लेकर तेजी बना लेंगे। ता. 16 जुलाई भावों में भारी मन्दी का योग। ता. 19 भावों में मन्दी अस्थाई मान है। ता. 20 जुलाई तेजी लेकर भाव गिर जायेंगे। ता. 23 जुलाई भावों में गर्माहट बनें। ता. 28 सर्पमुखी चाल से तेजी। ता. 29 भावों में घटाबढ़ी से तेजी को बल।

अगस्त-ता. 3 अगस्त एक सप्ताह के भावों में घटाबढ़ी तो अवश्य होगी। लेकिन मान मन्दी का ही रहेगा। ता. 10 भावों में मन्दी को बल मिले। ता. 11 भाव सुधार लेंगे। ता. 13 अगस्त सुधार के साथ भाव तेजी बना लेंगे। ता. 17 अगस्त भावों में तेजी का मान हो। ता 24 अस्थिरता से भावों में तेजी को बल। ता. 25 अगस्त भावों में घटाबढ़ी विशेष हो। ता 26 अगस्त चलती लाईन में परिवर्तन घटाबढ़ी से तेजी विशेष रिर्पोट से लाभ लें।

सितम्बर-ता. 1 भाव घटाबढ़ी से तेजी लें। ता. 7 तिथि क्षय तेजी को बल प्रदायक है। ता. 9 कन्या के बुध घटाबढ़ी दें। ता. 12 तेजी को बल मिले। ता. 16 कन्या संक्रांति शनिवासरी है। अतः तेजी को बल देगी। ता. 26 बुध उदय गिरे। भाव सुधार लेकर तेजी बना लेंगे।

अक्टूबर-ता. 1 शुक्र अस्त तेजी को बल मिलेगा। ता. 7 घटाबढ़ी से तेजी। ता. 11 अक्टूबर भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. 15 अक्टूबर भाव उठकर गिर जायेंगे। ता. 17 अक्टूबर तेजी को बल मिलेगा। ता. 20 अक्टूबर भावों में घटाबढ़ी से मन्दी का झटका। ता. 25 अक्टूबर गिरे भावों में सुधार। ता. 29 चलती लाईन में भारी परिवर्तन सतर्कता से कार्य करें।

नवम्बर-ता. 5 नवम्बर तेजी को बल मिलेगा। ता. 9 नवम्बर में गिरावट। ता. 11 नवम्बर भावों में तेजी का झटका। ता. 17 नवम्बर गिरे भावों में सुधार। ता. 20 नवम्बर भाव घटाबढ़ी से तेजी। ता. 29 नवम्बर भावों में मन्दी का झटका। ता. 26 चलती लाईन में परिवर्तन। ता. 29 नवंबर बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। भावों में तेजी को बल मिलेगा।

दिसम्बर-ता. 2 दिसम्बर भाव गिर कर तेजी का मान करेंगे। ता. 6 दिसम्बर भाव सर्पमुखी चाल से सुधार लेंगे। ता. 16 दिसम्बर सुधार के

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साथ तेजी को बल मिले। ता. 17 दिसम्बर घटाबढ़ी विशेष लेकिन मान तेजी का रहेगा। ता. 20 दिसम्बर बाजारों में आलस्य बनें। ता. 25 भाव सुधार लेंगे। ता. 27 भावों में मन्दी का झटका। 30 दिसम्बर भावों में साधारण तेजी का मान।

*हमारे ज्योतिष रत्न कार्यालय से आप चाँदी, सोना, तांबा समस्त धातु, रुई, पाट, रेशम, ऊन, सूत, काली मिर्च, तिलहन, दलहन, खल, चना, तुअर, मसूर, मटर, उड़द, मूंग, मोंठ, गुवार, ज्वार, चावल, सरसों, बाजरा, गेहूँ, किराना, जीरा, धनिया, अजवाइन, सौंफ, मेथी, सोंठ, हल्दी, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, शेयर बाजार आदि में से किसी एक वस्तु की हाजिर तथा स्टाक की वार्षिक भेंट ३४५१/-, छह मास की १८५१/- तीन मास की ९७५/- और एक मास की ३५१/- है। वायदे रिपोर्ट की फीस जवाबी पत्र द्वारा जानें। वायदे की रिपोर्ट+टाईम (दैनिक टाईम) सहित तैयार की जाती है। **मनीआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता तथा पिन कोड नम्बर किसी भी भाषा में साफ-साफ बड़े अक्षरों में लिखें।** वी.पी. किसी भी ग्राहक को नहीं भेजी जाती। पत्रोत्तर चाहें तो जवाबी कार्ड ही भेंजें। यहां आने वाले पहले पत्र से समय ले लेवें, क्योंकि कभी-कभी बाहर भी जाना पड़ता है। वैसे मिलने के लिए शनिवार-रविवार को ८ बजे से १२ बजे तक का समय है। स्पेशल चांस की फीस एक मास की २५१/- रु. व साल भर के स्पेशल चांस की फीस एक वस्तु की १०००/- रु. है। **तेजी-मंदी सट्टा पुस्तक**-तेजी-मंदी के चांस निकालने की उत्तम पुस्तक है। मूल्य १२१/- डाक खर्च २५ रु. अलग। योग तेजी मंदी का ज्ञान। मूल्य ५१/- डाक खर्च २५/- अलग। **व्यापार भविष्य फल**-हर एक वस्तु के अलग-अलग तेजी मंदी की स्पेशल लाइन लिखी गई है। इस पुस्तक की सहायता से आप हर व्यापार, वायदा, सट्टा हाजिर कर सकते है। स्टाक के लिए अलग से लिखा गया है। मूल्य एक पुस्तक १५०/- डाक खर्च २५/- अलग। **सम्पर्क सूत्र- पं. अनिल कुमार व्यास***

भारतीय मानसून एवं आकाशीय लक्षण सन् 2006ई.

जनवरी-इस मास में ता. 7 को बुध पूरब में अस्त होने से तथा ता. 13 को शुक्र धनु में प्रवेश करने से एवं ता. 14 को सूर्य मकर में प्रवेश करने से मासारंभ में उत्तर भारत में ओला वृष्टि से जन-जीवन प्रभावित होगा। भारत के अधिकांश प्रांतों में शीत प्रकोप जारी रहेगा। शीत लहर के प्रकोप से व्यापक जन-जीवन अस्त-व्यस्त दिखाई देगा। शीत प्रकोप अपनी चरम सीमा में जारी रहेगा। मकर की सूर्य संक्रांति वरुण मंडल में पड़ रही है। ता. 19 को बुध भी मकर में प्रवेश करने से ता. 2, 3, 6, 11, 12 को मौसम परिवर्तित दिखेगा। ता. 16, 22, 25, 27, 29, 30, 31 को बादल वृष्टि के कारण शीत प्रकोप और बढ़ जायेगा। जगह-जगह पर ओस पड़ने से यातायात प्रभावित होगा।

फरवरी-ता.03 को शुक्र मार्गी होने से तथा मंगल, बुध, वृष और कुंभ में एक साथ प्रवेश करने से अभी भी प्राकृतिक ताण्डव जारी रहेगा। पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापक हिमपात होगा। मौसम की अनुकूलता से रवि की फसल को लाभ पहुंचेगा। ता. 7 से अनेक प्रांतों में वायु वेग के साथ कहीं-कहीं हल्की से भारी वर्षा हो सकती है। ता.12 को सूर्य कुंभ राशि में प्रवेश करने से पश्चिमोत्तर भारत में शीत लहर का विशेष प्रभाव दिखेगा। कुंभ की संक्रांति वरुण मंडल में पड़ने से ता. 2, 3, 4, 7, 10, 11, 14, 18, 20, 21, 22 को कहीं-कहीं बूंदा-बांदी होगी। ता. 24 को शुक्र मकर राशि में प्रवेश करने से मौसम में धीरे-धीरे परिवर्तन होगा। इस मास के प्रारंभ में भारी वर्षा एवं ओले पड़ने का संकेत है।

मार्च-ता.2 को बुध वक्री होने से तथा गुरु का भी वक्री होने से मौसम में व्यतिक्रम की स्थिति बनेगी। दिन के तापमान का ग्राफ तेजी से ऊपर उठेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात के कारण कभी-कभी मैदानी भू-भागों में हल्की से साधारण वर्षा होने का भी संकेत है। ता. 2, 3, 4, 7, 9, 11, 13 को मौसम का मिजाज बदला-बदला नजर आयेगा। ता. 14 को सूर्यदेव जल राशि मीन में प्रवेश करने से ता. 14, 17, 19, 21, 25 को साधारण से भारी वर्षा, आंधी-तूफान आदि का दौरा हो सकता है। इसका प्रभाव समुद्रतटीय क्षेत्रों में विशेष दिखाई पड़ेगा।

अप्रैल-ता. 3 को मंगल मिथुन में तथा ता. 5 को शनि मार्गी होने से तथा ता. 13 को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेंगे। अतः मासारंभ में ता. 1, 4, 6, 9, 12, 15, 16 को कहीं-कहीं तेज आंधी, बवण्डर तथा छिट-पुट वर्षा का भी योग है। किन्तु परिवर्तित मौसम के साथ दिन में तापमान का ग्राफ तेजी से ऊपर उठेगा। मेष संक्रांति अग्नि मंडल में पड़ जाने से तेज हवायें चलेंगी। ता. 21, 23, 24, 27, 29 को मौसम में परिवर्तन होगा। दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों में सुनामी लहरों अथवा आंधी-तूफान से जन-धन की हानि का भी संकेत है। भारत सहित विश्व के कुछ भू-भागों में प्राकृतिक तांडव हो सकता है।

मई-ता. 2 को बुध मेष में तथा ता. 6 को बुध पूरब में अस्त होने से तेज गरमी एवं उष्णता विशेष बढ़ जायेगी। दिन के तापमान में अप्रत्यासित वृद्धि होगी। ता. 14 को वृष की सूर्य संक्रांति अग्नि मंडल में पड़ रही है। जिसके कारण मौसम में उष्णता दिनों-दिन बढ़ती जायेगी। पूरा उत्तर-पश्चिम भारत ताप लहरों की चपेट में रहेगा। लू, बवण्डर आदि का प्रकोप भारत के कुछ प्रांतों में आंधी-तूफान से परेशानी बढ़ेगी।

जून-ता.15 को सूर्य मिथुन में, ता.18 को शुक्र वृष में तथा ता. 19 को बुध जल राशि कर्क में प्रवेश करने से मौसम में व्यतिक्रम उत्पन्न होगा। ता. 13, 14, 15, 18, 19 को दक्षिण भारत में कहीं-कहीं वर्षा होगी। उत्तर भारत अभी भी लू के चपेट में रहेगा। ता. 19 से दक्षिण भारत में वर्षा का जोर बढ़ेगा। कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, केरल आदि में व्यापक वर्षा होगी। मिथुन संक्रांति वायुमंडल में पड़ रही है। जिसके कारण उत्तर भारत में लू का प्रकोप जारी रहेगा। कुछ प्रांतों में भारी आंधी तूफान से जन-जीवन प्रभावित होगा।

जुलाई-ता. 2 को बुध वक्री होने से तथा गुरु के मार्गी होने से मासारंभ में बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात, राजस्थान में व्यापक वर्षा होगी। ता. 1, 3, 4, 5, 9, 11, 13, 15, 16 को वर्षा का योग है। पर्वतीय क्षेत्रों में भू-स्खलन से जन-जीवन प्रभावित होगा। ता. 16 को सूर्यदेव जल राशि कर्क में तथा ता. 20 को शनि अस्त होने से दुर्भिक्षकारी है। अतः ता. 19, 20, 21, 23, 25, 29 को कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि से जन-जीवन प्रभावित होगा। कहीं-कहीं सूखे से कृषि को हानि का संकेत है।

अगस्त-ता.5 को बुध जल राशि कर्क में प्रवेश करने से अशिकांश भू-भाग पर सामान्य से भारी वर्षा होने का संकेत है। सिंह संक्रांति वरुण मंडल में पड़ रही है, जो शुभ है। इस वर्ष भादों का पानी कृषि के लिए लाभकारी होगा। ता. 1, 3, 5, 6, 8, 9, 10, 12, 13, ,15, 16, 19, 21, 23, 24, 25, 29 को सामान्य से भारी वर्षा होने का संकेत है। इस मास संक्रामक बिमारियों से जन-जीवन प्रभावित होगा।

सितम्बर-ता. 1 शुक्र सिंह में, ता. 9 बुध कन्या में तथा ता. 16 को बुध उदय होने से मासारंभ में वर्षा, आंधी-तूफान, वायु-वेगादि से कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि का दुर्योग बनेगा। मौसम में व्यतिक्रम उत्पन्न होगा। एवं उमस भरी गरमी जारी रहेगी। ता. 3, 6, 9, 12, 13, 15, 16, 17, 18, 19, 21 को वर्षा, तूफान या सुनामी लहर का तांडव का संकेत है। पूर्वी उत्तर प्रदेश, बंगाल, महाराष्ट्र, उड़ीसा में वायु वेगाधिक्य से जन-जीवन प्रभावित होगा।

अक्टूबर-ता. 6 को शुक्र अस्त होने से तथा ता. 11 को राहु, केतु, कुंभ और सिंह में स्थान परिवर्तन से एवं ता. 14 को मंगल तुला में एवं ता. 17 को सूर्य नीच राशि तुला में विचरण से मासारंभ में गुलाबी ठंड रात में पड़ने लगेगी। किन्तु दिन में तापमान बना रहेगा। ता. 1, 2, 3, 6, 9, 11, 14, 17, 19, 23, 27, 30 को विस्तृत क्षेत्र में सामान्य वर्षा हो सकती है। सापेक्षित आर्द्रता में वृद्धि होगी। किन्तु कि तुला संक्रांति वरुण मण्डल में पड़ रही है। इसमें ता. 17 के बाद अचानक मौसम बदल सकता है। जो वर्षा में व्यतिक्रम उत्पन्न कर सकता है। और मौसम साफ नजर आने लगेगा। मास में पश्चिम समुद्रतटीय प्रदेशों में वायु वेग का उपद्रव हो सकता है। भारत के कुछ प्रांतों में प्राकृतिक उपद्रव भी हो सकता है।

नवम्बर-ता. 1 को बुध तुला में, ता. 2 को बुध अस्त होने से तथा ता. 10 को गुरु भी अस्त होने से अचानक कुमाऊं, गढ़वाल मंडल, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल के अन्य क्षेत्रों में प्राकृतिक उपद्रव के साथ ही छिट-पुट वर्षा के साथ हिमपात होने का संकेत है। तराई वाले क्षेत्रों में शीत प्रकोप बढ़ेगा। ता. 10 के बाद पश्मोत्तर भारत में तथा उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में छिटपुट वर्षा से शीत में वृद्धि होगी। उत्तर भारत में मौसम का परिवर्तन दिखाई देगा। ता. 1, 3, 6, 9, 10, 12 तथा 17, 19, 21, 23, 27 को कहीं-कहीं ओलावृष्टि भी संभव है। विश्व के अनेक राष्ट्रों में प्राकृतिक तांडव से व्यापक जन-धन की हानि का संकेत है।

दिसम्बर-ता. 4 को बुध वृश्चिक में, इसी ता. को गुरु उदय होने से श्रीलंका, केरल, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, उड़ीसा के तटीय समुद्री क्षेत्रों में आंधी-तूफान, वर्षा का योग है। उत्तर भारत में शीत का प्रकोप बढ़ेगा। हिमपात, भू-स्खलन, हिम-स्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप हो सकते है। ता. 1, 4, 6, 9, 12, 13, 15 को मौसम परिवर्तित होगा। कहीं-कहीं बादल वृष्टि से शीत में वृद्धि होगी। ता. 25 के बाद मौसम में व्यतिक्रम से कहीं-कहीं शीतकालीन वर्षा भी हो सकती है। बार-बार पहाड़ी क्षेत्रों में भू-स्खलन होगा तथा समुद्रतटीय क्षेत्रों में कभी भी वायुवेग का जोर उठने से व्यापक जन-धन की हानि हो सकती है। विश्व के छोटे-बड़े राष्ट्रों में आंधी, तूफान अथवा अन्य प्राकृतिक उत्पात से व्यापक जन-धन की हानि का संकेत है।

लेखक -आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापारिक तेजी-मंदी योग संवत् २०६३ वि.

लेखक-पं. नारायण शर्मा कौशिक ज्योतिषाचार्य / शास्त्री / आयुर्वेद एवं ज्योतिष महामहोपाध्याय,
C/o वेदांग ज्योति संस्थान- सारड़ा बाजार मेड़ता सिटी, जिला-नागौर (राज.) 341510 फोन॰ 220792 (01590 STD) मो॰ 9414414225

अप्रैल 2006–इस माह में तिलहनों सहित जेवरात–सोना चांदी में मन्दी का योग बनता है। चावल, चीनी, आलू, कपास, प्याज तथा अन्य किराना बाजार में तेजी बनेगी। शेयर बाजार मन्दी के दौर से गुजरेगा। ता. 3 को मंगल मिथुन राशि में प्रवेश करेगा इससे लाल वस्तुओं में अच्छी तेजी का योग। विशेष कर मिर्च लाल बहुत तेजी की ओर जायेगी। शनि कर्क राशि में मार्गी होने के कारण तिल, तेल, घी आदि पदार्थों में मन्दी आयेगी। ता. 11 को बुध मीन राशि में राहु की युक्ति में होने से अलसी, सरसों, मूंगफली, बिनौला आदि में तेजी रहेगी। रूई, चान्दी, जौ व गेहूँ चना आदि में घटाबढ़ी रहेगी। ता. 13 को चैत्र पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र युक्त होना आगामी समय में खाद्यान्न वृद्धि का योग करती है। ता. 15 को मंगल आर्द्रा में प्रवेश होने से रूई, कपास, अलसी, अरण्डी, गुड़, चीनी, खल, मक्का व सभी प्रकार के अनाज तेज रहेंगे। ता. 19 को शुक्र पूभा. में आने से रूई कपास सन, सूतादि में तेजी यथावत रहेगी। लेकिन खाद्यान्न मन्दा रहेगा। ता. 24 को बुध रेवती में होने गुड़ चीनी, तैल, घी, धान्य के भावों में मन्दी का रूख बनेगा। ता. 27 को सूर्य भरणी में आने से सोना, पीतल, ताम्बा लोहा (स्टील) में तेजी का योग बनेगा। ता. 28 को शुक्र मीन में होकर राहु के साथ होगा। रूई तथा चांदी में तेजी कारक योग बनेगा। किराना फिर मन्दा या सामान्य, लेकिन आदि पदार्थों में तेजी रहेगी। **सामान्य तेजी ता.** 3, 5, 7, 9, 11-15, 18-25, 28-30 तक। **सामान्य मन्दी** ता. 1, 2, 4, 6, 8, 10, 16, 17, 26, 27 तक।

मई 2006–इस माह में दवाओं के भाव काफी घटबढ़ दायक रहेंगे। औषधियों की कीमतें आसमान छूयेंगी। गुड़, खल, चीनी तथा खाद्यान्नों में तेजी आयेगी। चना मटर, शुष्क मेवा दलहन तथा प्रमुख शेयर प्रतिभूतियों में तेजी आयेगी। सोना चांदी ताम्बा आदि में घट बढ़ रहेगी। ता. 1 को शुक्र उ.भा. में आने से रूई, कपास, विनोले, चांदी, चावल, चीनी गुड़ आदि मालों में मन्दी का योग बनता है। सब्जी बाजार तेज रहेगा। ता. 2 को बुध मेष में सूर्य के साथ रहेगा तथा दोनों पर शनि -गुरू की संयुक्त दृष्टि के कारण अचानक तेजी मन्दी का योग गड़बड़ा जायेगा। ता. 4 को स्वाती में वक्री गुरू तिलहन में घटा बढ़ी व तेजी दायक रहेगा। ता. 7 को मंगल पुनर्वसु तथा बुध पूर्व में अस्त होने से चीनी, चांदी, शक्कर तिल तेल सोयाबीन, सरसों में तेजी आयेगी। ता. 11 को सूर्य कृतिका में खाद्यान्न में तेजी कारक। ता. 13 को शुक्र रेवती में किराना में मन्दी। ता. 14 को सूर्य वृषभ रविघटीय संक्रांति एकाएक तेजी दायक रहेगी। ता. 17 को बुध सूर्य के साथ होकर झटका दायक तेजी करेगा। ता. 21 को बुध रोहिणी में तेजी का घटक बनेगा। ता. 24 को मन्दी का झटका देकर फिर तेजी करेगा। ता. 25 को सूर्य रोहिणी तेजी दायक सभी वस्तुओं में करेगा। ता. 27 को शनिवारी अमावस्या तेजी दायक तथा ता. 28 को बुध पश्चिमोदय होना किराना में मन्दी व तेजी दोनों योग करेगा। ता. 31 को बुध मिथुन में सोना चांदी के भावों में घटा बढ़ी रहेगी। व्यापार क्षेत्र सामान्यतः तेजी की ओर रहेगा। **सामान्य तेजी ता.** 1-7, 14-18, 23-27, 29-31 तक। **सामान्य मंदी ता.** 8-13, 19-22, 29 तक।

जून 2006–इस माह में शुक्ला पंचमी शुक्र संयोग से प्राकृतिक आपदा आंधी बवण्डर से जन धन हानि का योग। तृण-घास मंहगा रहेगा। वायु बादल गाज से फलों में भी हानि अतः तेजी का योग बनेगा। ता. 4 को भरणी में शुक्र 15 दिनों में सोना-चांदी अफीम, रक्त वर्ण, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल, ग्वार, ज्वार में मन्दी करके उछाला करेगा। चना मूंग मोठ में कई बार घटा बढ़ी होती रहेगी। रोगादि भय ज्वारादि तथा हैजा रोग का प्रभाव भी बढ़ेगा। दंगा उपद्रवों से भी बाजार प्रभावित होगा। प्रजा में उपद्रव बढ़ेगा। ता. 15 को मिथुन संक्रांति गुरूवारी है जो अन्न, सूत, सन, रेशम, के भावों में तेजी को बल देगी। ता. 18 को शुक्र वृष का रूई, कपास में गिरावट दायक रहेगा। सोना चांदी में घटा बढ़ी करेगा। शेयर बाजार तेज रहेगा। खाद्यान्न मन्दे रहेंगे। या झटका रूप में तेज होंगे। ता. 20 को कर्क बुध रूई में मन्दी का योग इसे 2% तक करता है। इस काल में तेजी रहेगी। ता. 24 को सोना-चांदी, रूई कपास, सूत की वस्तुओं में मन्दी आयेगी। ता. 28 को बुध अस्त होने से अन्नादि के भाव तेज होंगे। ग्वार ज्वार चना मूंगफली के भावों में तेजी आयेगी। **सामान्य तेजी** ता. 1-6, 10-15, 21-30 तक। **सामान्य मंदी** ता. 7, 8, 9, 16-20 तक।

जुलाई 2006–इस माह में दलहन व तिलहन दोनों ही प्रकार की वस्तुओं में तेजी मन्दी के अच्छे झटके लगेंगे। कपास, सरसों तारामीरा जीरा के भाव भी श्रेष्ठ तेज रहेंगे। ता.1 दालों, फलों में तेजी। ता. 4 को शनि आश्लेषा में आने से तिल-तेल घृतादि में मन्दी का रूख करेगा। जबकि खाद्यान्न तेजी की ओर रहेंगे। ता. 5 को कर्क राशि का बुध वक्री होकर ताम्बा, लोहा, पीतल, सोना व चांदी में तेजी का योग करेगा। ता. 6 को सूर्य पुनर्वसु में आकर खल-विनौला, मूंगफली, अलसी, बाजरा, मोठ उड़द चीनी गुड़, गेहूँ, चने में तेजी करेगा। इसी दिन तुला राशि में गुरू मार्गी 'होकर' जिससे तिलहनों में कुछ मन्दी आयेगी। ता. 8 को शुक्र मृग में आकर खाद्यान्नों में मन्दी करेगा। ता. 11 को मंगल पूर्णिमा के दिन पुषा नक्षत्र के कारण इस रसदार फलों में कमी होगी। तथा फलादि भाव तेज रहेंगे। ता. 13 को मघा सिंह का मंगल गेहूँ जौ चना, ग्वार, मोंठ, मूंग, तिलों में तेजी करेगा। टमाटर बहुत तेज होंगे। ता. 14 को शुक्र मिथुन में आकर सूर्य के साथ मेल करने से लकड़ी, कोयला, गैस, ईंधन, पैट्रोल, डीजल के भावों में तेजी करेगा। ता. 16 को सूर्य कर्क में खाद्यान्नों में अच्छी तेजी करेगा। ता. 17 से ता. 19 तक तेजी का वातावरण रहेगा। ता. 20 को शनि पश्चिम में अस्त होकर वायदा बाजार तेजी युक्त होगा। ता. 25 को भौमवारी अमावस्या तेजी दायक। खाद्यान्नों में तेजी। ता. 26 को बुध पूर्व में उदय तेजी का झटका देगा। ता. 29 को बुध मार्गी कपड़ा कपास बिनौला में मन्दी कारक होगा। ता. 30 को सभी वस्तुओं के भाव स्थिर रहने को योग बनते है। ता. 31 को शनि आश्लेषा में सभी वस्तुओं में तेजी कारक है **सामान्य तेजी ता.** 1-6, 11-15, 21-24 तक। **सामान्य मन्दी ता.** 7-10, 16-20, 25, 26-31 तक।

अगस्त 2006–इस माह में खाद्यानों के भाव एक तरफा तेजी युक्त रहेंगे। मशीनरी बाजार में मन्दी आयेगी। ईंधन की सामग्री तेज रहेगी। कपड़ा बाजार सामान्य रहेगा। सब्जी बाजार भी तेज रहेगा। ता. 1 मंगल सप्तमी चित्रा नक्षत्र के कारण खाद्यान्न में अच्छी तेजी बनेगी। ता. 3 सूर्य अश्लेषा और मंगल पूफा में आने से गेहूँ, चना, चीनी, तेल बनस्पति, अलसी, सरसों, मूंगफली, एरण्डी, मिर्च, मोंठ, मजीठ, लाल चंदन, खाल, खल, चर्म में तेजी का रूझान रहेगा। ता. 5 को बुध कर्क में सूर्य शनि के साथ मेल करेगा, इस दौरान भ्रमात्मक तेजी मन्दी रहेगी। ता. 7-9 को शुक्र भी कर्क में आकर चतुर्ग्रही योग बनता है। इसमें गेहूँ, चने चीनी, गुड़, शक्कर, घी, सूरजमुखी, एरण्डी, सरसों, सोना-चांदी में तेजी आयेगी। शेयर मर्किट में विशेष तेजी आयेगी। ता. 9 को बुध पुष्य में सोना-चांदी में घटाबढ़ी का संकेत है। ता. 10 को शुक्र मंदी का योग है। दलहन सामग्री के भाव बढ़ेंगे। ता. 12 को चतुर्थी का क्षय होना अशुभ है। ता. 16 को सूर्य सिंह में प्रवेश होने से किराना बाजार तेज होगा। ता. 17 को व 18 को (मध्य में) बुध अश्लेषा में आकर तिलहनों में तेजी दायक होगा। ता. 19 को बुध पूर्व में अस्त होने से खाद्यानों दलहनों में तेजी आयेगी। ता. 21 को शुक्र अश्लेषा से सूत, कपास, विनोला के भावों में मंदी करेगा। ता. 24 बुध सिंह राशि में सूर्य, ता. 25 को शनि कर्क में पुनः उदय होना, बाजार में चमत्कार दिखायेगा। प्रातः तेजी तो सायं मन्दी कारक हो जायेगा। ता. 27 को तृतीया वृद्धि रसदार पदार्थों में मन्दी व तेजी का योग करेगा। **सामान्य तेजी** ता. 1-5, 11-3, 20-24, 27-31 तक। **सामान्य मन्दी** ता. 6-10, 14-19, 25, 26 तक।

सितम्बर 2006–इस माह में पांच गुरु व पांच शुक्र से वस्तुओं में घटा बढ़ी रहेगी, लेकिन मन्दी की प्रधानता रहेगी। वर्षा की न्यूनता व दुर्भिक्ष दायक योग बनता है। ता. 4 को विशाखा में गुरु रूई चांदी के भावों में मन्दी, सोना शेयर में घटाबढ़ी, अन्न के भावों में तेजी कारक योग करेगा। ता. 8 को प्रतिपदा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र युक्त है, अतः अनाजों में जनरल तेजी योग, तिलहन, घी, अलसी, लाल मिर्च, सोना में घटाबढ़ी का योग चलेगा। ता. 12 को पूफा का शुक्र दो सप्ताह के अन्तर्गत गेंहू, जौ ज्वार, बाजारा, उड़द, मूंग, चंवला, मोठ, चने के भावों में आंशिक मन्दी दायक योग करेगा। ता. 16 को शनिवारी संक्रांति होने से चना, गेहूँ, जौ, चावल, बिनौला के भावों में तेजी का योग बनता है। रूई, चांदी गिरकर सुधरेगी। दूध तेज रहेगा। शक्कर, गुड़, घी के भावों में घटाबढ़ी तेजी की ओर रहेगा। कन्या राशि में चार ग्रहों के योग से बड़ी संकट कालीन घटनाओं के घटने का संकेत बनता है। ता. 22 को कर्क का शनि रूई,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

करेगा। ता. 27 को शनिवारी अमावस्या तेजी दायक तथा ता. 28 को बुध ... अच्छी तेजी करेगा। ता. 17 से ता. 19 तक तेजी का वातावरण रहेगा। ... घटनाओं के घटन ...

सूत, चांदी के भावों में तेजी दायक रहेगा। दक्षि[illegible]भाग में प्राकृतिक आपदा कष्ट योग बनेगा। ता. 25 को [illegible] शुक्र सभी वस्तुओं में तेजी का योग करता है। अत: पूर्णत: सा[illegible]नी रखे। प्राकृतिक प्रकोप का विशेष योग बनता है। ईश्वर रक्षा करे। ता. 27 को तुला का बुध रूई गुड़, अफीम, तम्बाकू, शेयर के भावों में तेजी तथा अलसी, सरसों, एरण्ड में भी तेजी। सोना सम रूप में रहेगा। असामयिक घटनाओं से बाजार प्रभावित रहेगा। **सामान्य तेजी ता. 4-7, 12-15, 22-28 तक। सामान्य मंदी ता. 1-3, 8-11, 16-21, 29, 30 तक।**

अक्टूबर 2006–ता. 1-5 तक तेजी का अच्छा योग सभी वस्तुएँ तेज रहेगी। ता. 2 को बुध स्वाती में आने से सर्व प्रकार की [illegible]यापारिक वस्तुओं में तेजी व उछाला रहेगा। ता. 4 को मंगल चित्रा में [illegible]ने से गेहूँ, चने, मैदा, मक्का, चावल, अलसी, दालें, खल, बिनौले, [illegible]ना, पीतल, ताम्बा आदि तेज होंगे। इसी दिन शुक्र-पूर्वास्त होने से सर्व [illegible]र के अनाज जैसे आटा, घी, चावल, मैदा, मक्का एवं सोना, ताम्बा [illegible] पीतल आदि धातुएँ तेज होंगी। आश्विन 15 को शनिवार तथा आश्विन मास में पांच शनिवार होने से आगामी दिनों में सभी वस्तुओं में तेजी रहेंगी। कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा का क्षय हुआ है। जिसमें गर्म-मसाले, उड़द, कालीमिर्च, तिल, तेल, दालें, मूंगफली, किशमिश, बादाम, चने, खल, बिनौले, पशुचारा तेज भाव होंगे। ता. 10 को सूर्य चित्रा में आने से अलसी, सरसों, दाल, सोयाबीन, गेहूँ, चने, मैदा, चावल, गुड़, शक्कर, चीनी, रूई, कपास में तेजी का योग बनता है। ता. 12 को राहु कुंभ में और केतु सिंह में आने से रूई, कपास, ऊन, मेवाजात, दालें, गर्म मसाले, खल विनोले तेजी में रहेंगे। लेकिन शेयर बाजार मन्दा होगा। ता. 14 को चित्रा में मंगल तुला में गुरू और बुध के साथ होने से रूई, कपास, कपड़ा, ज्वार, चने के भावों में घटा बढ़ी होगी। सोना ताम्बा चांदी में भी तेजी। ता. 17 को सूर्य तुला में आकर **चतुर्थग्रही** योग 30 मुहुर्ती संक्रांति के कारण एकाएक अच्छी तेजी बनेगी। तथा ता. 19 को **पंच-ग्रही** योग शुक्र के कारण बनेगा इससे व्यापार क्षेत्र बहुत प्रभावित होगा। ता. 22 को रविवारी अमावस्या तेजी कारक रहेगी। ता. 24 को सूर्य स्वाती में, ता. 27 को गुरू वृश्चिक में जिससे पीले रंग की वस्तुएं तेज होंगी। **तेजी की ता. 1-5, 10-16, 22-29 तक। मन्दी की ता. 6-9, 17, 22, 30, 31 तक।**

नवम्बर 2006–ता. 1 बुध तुला वक्री बुध रूई तेज होकर मन्दी होगी। ता. 2 गुरु - बुधास्त पश्चिम, मई चाँदी तेज होकर मन्दी, शेयर, बारदाना भी मन्दे होंगे। इस वेला में 'स्टॉक' कर्त्ता लाभ प्राप्त कर सकेंगे। जेवरात, धातु, ताम्बा पीतल, जस्ता तेज रहेगा। ता. 4 को शनि विशाखा शुक्र-उन्न, गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर, मई, सूत में मन्दा। वर्षा योग। ता. 5 को रवि सभी प्रकार के खाद्यान्न मात्र सब्जी, गुवार, ज्वार, मक्का, मटर आदि में तेजी अच्छी करेगा। ता. 6 को सोम, विशाखा सूर्य चांदी चावल, गुड़, खांड, सूत, गेहूं, सरसों, तिल तेज। [illegible]. 10 शुक्र स्वाती वक्री बुध गुरु अस्त सोना चांदी अन्न मन्दा योग है। [illegible]ई, शेयर, सरसों, तेज होगी। शक्कर, रस, मोठाईयों में मन्दी का योग है। ता. 11 को शनि अनुराधा मंदा कारक, कहीं वर्षा योग से तेजी भी। ता. 12 रवि वृश्चिक शुक्र सभी चीजों में मन्दा योग। ता. 15 को अनुराधा शुक्र-उपद्रव कारक रहेगा। बीमारी एवं भूकम्प योग करेगा। ता. 16 को बुधोदय सूर्य के कारण सफेद वस्तुएं 25 दिन तेजी में रहेंगी। कपड़ा भी महंगा होगा। सरसों, तरामीरा पापड के भाव मन्दे होने का योग है। ता. 18 को शनि बुध मार्गी रूई में घटबढ़ तेजी। ता. 19 को अनुराधा में सुर्य चांदी, चावल, सूत, अफीम, गेहूँ, जौ, चना, अन्न आदि तेज। सोना में मन्दी। ता. 20 को जोरदार तेजी। ता. 22 को चन्द्रदर्शन सफेद वस्तुओं में मन्दी। ता. 25 को ज्येष्ठा में शुक्र तिलहन बाजार मन्दा रहेगा। ता. 26 को विशाखा में बुध मन्दी का दौर चलेगा। ता. 27 को वृश्चिक में मंगल रूई, सूत, गुवार, मोठ, मूग, चावल, शक्कर तेज। **सामान्य तेजी ता. 3, 4, 5-9 13-20, 23, 24 तक। सामान्य मंदी ता. 1, 2, 10-12, 21, 22, 25, 27-30 तक।**

दिसम्बर 2006– ता. 1 को गुरूवार में मन्दी 2 से 3% तक बनेगी। ता. 2 को ज्येष्ठा में सूर्य, अनुराधा में मंगल के कारण चावल, सरसों, वस्त्र, अफीम, सोना, चाँदी, सभी अन्न, गुड़, शक्कर, गुग्गल, सभी लाल वस्तुएं तेज होंगी। पशुओं में रोगोपद्रव बढ़ेगा। ता. 4 को वृश्चिक में बुध पूर्णिमा क्षय होने से रुई पदार्थ मन्दे तथा झटका से काफी हानि भी स्टौकिस्टों को होगी। ता. 5 को तिलों में एक तरफा भाव चलेगा। ता. 5 को गुरु उदय रुई में घटबढ़। तेजी मन्दी अस्थिर रहेगी। ता. 6 को मूल धनु में शुक्र, अनुराधा बुध, शनि वक्री होकर रुई में मन्दी, तथा तेजी दोनों अस्थिर भाव रहेंगे। सूत कपड़ा मन्दा होगा। गेहूँ, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, चांदी, शेयर, लोहा, सोना, लौंग, सुपारी, कालीमिर्च, कलई, शीशा, गुड़ की वस्तुएँ सभी तेज रहेंगे। यह तेजी सप्ताह तक रहेगी। ता. 13 को बुधास्त पूर्व-रुई, चांदी मन्दी का योग एवं घटबढ़ भी होगा। गेहूँ, सोना, अलसी, धातु, ताम्बा, पीतल आदि में तेजी का योग बनता है। ता. 15 को संक्रांति धनु। ज्योष्ठा में बुध के कारण सभी अन्नों में मन्दी रहेगी। ता. 15 से 16 तक कपास, तेल, तिल, रुई, सोना, चांदी, सरसों, गुवार में तेजी। ता. 17 को मंगलोदय पूषा शुक्र के कारण उडद, मूँग, तेल, तिल, सरसों गुड़, तेजी खाद्यान्न मन्दा। सभी खाद्यान्न अचानक तेज और पैदावार में कमी होने का योग बनता है। ता. 21 को ज्येष्ठा मंगल देश में बीमारी बढ़ेगी। रुई, चांदी, कपड़ा में मन्दी का योग। ता. 22 को चन्द्रदर्शन प्रजा में शांति सुख का योग। बाजार भी मन्दा ही रहेगा। ता. 23 को मूल धनु बुध- सोना चांदी में मन्दी करेगा। ता. 27 को उषा में शुक्र के कारण बीमारी होगी। अन्न के भावों में घटबढ़ रहेगी। ता. 30 को मकरे शुक्र के कारण सभी वस्तुओं के भाव अस्थिर होंगे। **समाकित तेजी ता. 2-7, 11-17, 23-29, 31 तक। समाकित मन्दी ता. 1, 6-10, 18-22, 30 तक।**

जनवरी 2007–ता. 1 को पूषा में बुध-मन्दी कारक योग करेगा। तिलहन बढ़ेगा। चाँदी, सोना के भावों में गड़बड़ी तथा शेयर बाजार प्रभावित होकर तेज रहेगा। ता. 7 शुक्र श्रवण में ता. 8 को मंगल मूल धनु राशि में आने के कारण गेहूँ, चना, जौ, गुवार, मोठ, मूँग, अलसी, गुड़, शक्कर में तेजी योग बनेगा। ता. 9 को बुध उषा में आकर पूरे बाजार में उथल पुथल मचायेगा। ता. 10 को [illegible] स्थित होकर प्राकृतिक आपदा कारक र[illegible] भी व्यापार स्थिति घटबढ़ रहकर चिन्त[illegible] बाजार में विशेष तेजी 10 से 15% तक बनने का योग बनत[illegible] को बुध मकर में चांदी में मन्दी करेगा तथा लोहादि में तेजी दायक रहेगा। सूर्य उषा में होने से जेवरात में तेजी आयेगी। ता. 13 को गुरु ज्योष्ठा में आकार पीली वस्तुओं में तेजी करेगा। औषधि बाजार भी गर्म रहेगा। ता. 14 को सूर्य मकर में तथा चन्द्र तुला राशि में मन्दी का कारक है। घी (घृत) अन्न तृण, धास-तेज, फलादि में भी अच्छी तेजी रहेगी। ता. 17 बुध श्रवण में शुक्र धनिष्ठा में होने की स्थिति में सर्व वस्तुओं में तेजी बनेगी। ता. 19 को अर्ध कुंभ पर्व (प्रयाग) शुक्रवार को होने के कारण भ्रष्टाचार का विशेष बोलबाला एवं व्याभिचार बढ़ेगा। बीमारी गुप्त बढ़ेगी, फलत: औषधियों का भाव फलों का भाव तेज रहेगा। ता. 21 जून को मुसलिम संवत माह मोहरम प्रारम्भ रविवार से हो रहा है, अत: गुर्रा रवि (सूर्य) हुआ, इनके समयानुसार राज भय, बीमारी, अग्नि भय, चोर भय बढ़ेगा। धन धान्य में वृद्धि रसकश पदार्थ गुड़, शक्कर, खाण्ड, गोला, सरसों मन्दा होगा। घी, तैलादि भी अभी स्टॉक करने से मई 2007 में लाभ देगा। माह में तेजी मन्दी सम रहेगी। **समाकित तेजी ता. 4-8, 16-20, 25, 27, 29-31 तक। समाकित मन्दी ता. 1-3, 9-15, 21-24, 28 तक।**

फरवरी 2007–गुरु पुष्य योग ता. 1 को सभी वस्तुओं के भाव सम रहेंगे। ता. 2 को शुक्रवारी पूर्णिमा आश्लेषा युक्त होकर व्यभिचार भ्रष्टाचार का प्रभाव बढ़ेगा। व्यापारिक गति अस्थिर रहेगी। शनिवार को फाल्गुन प्रतिपदा मशीनरी के भावों को मन्दा करेगी। प्लास्टिक मंहगा, लोहा मन्दा होगा। ता. 3 को बाजरा, गेहूँ, ज्वार, मूंग के भाव सम रहेंगे। किराणा कुछ तेज रहेगा। ता. 5 को पाट बारदाना में तेजी, शेष सभी वस्तुएँ यथावत रहेंगी। ता. 6 को सूर्य घनिष्ठा में होने से मूंग, मंसूर, नील, सोना, चांदी आदि धातु तथा अन्नादि पदार्थ, रूई, अलसी, तिलहन तेज रहेंगे। ता. 7 को भाव ता. 6 वाले रहेंगे। ता. 8 को शुक्र पूर्वाभाद्रपद में होने से रुई तेज, अन्न, गेहूँ, जौ, चना आदि मन्दे होंगे। प्रजा को कष्ट तथा अच्छी वर्षा का योग बनता है। ता. 9 से 12 तक भाव सभी वस्तुओं में एक तरफा ही रहेगा। ता. 13 को मंगल उत्तराषाढा में आने के कारण वर्षा साधारण। कहीं अच्छी, कहीं कम होगी। घी, गुड़ मन्दे होंगे। रुई, राई, सरसों, तेल, उड़द, मूँग, दलहन तेज हो। ता. 13 से ता. 17 तक भाव यथावत सभी वस्तुओं में रहेगा। ता. 16 को शुक्र मीन में आकर सुख प्राप्ति का योग करेगा। खुशियां हावी रहेंगी। व्यापार में बिनौले, कपास, सरसों, अरण्डीं, तेल, तिल, गुड़, शक्कर, खाण्ड सभी में मन्दी का योग बनता है। कपड़ा किराणा बाजार भी तेज रहेगा। ता. 18 19 तक भाव ता. 17 वाला ही प्रभावित भाव रहेगा। ता. 19 को सूर्य शतभिषा के कारण चना, जौ, गेहूँ, तेल-तिल में तेजी आयेगी। शुक्र उभा में आने के कारण गेहूँ, जौ, चना आदि में मन्दा योग। शेष पदार्थ तेज रहेगा। ता. 23 से ता. 24 तक भाव एक तरफा चलेगा। ता. 25 से ता. 28 तक सभी वस्तुओं में तेजी। **सामान्य तेजी ता. 4-6, 10 14, 19-28 तक। सामान्य मन्दी ता. 1-3, 7-9, 15-18 तक।**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च 2007—ता. 1 को बुधोदय पूर्व तथा शुक्र रेवती में संचरण करने से शुक्र के कारण रुई, कपास, चन्दन, सूत, सण, जवाहरात, गुड़, शक्कर खाण्ड में मन्दी का योग, बुध के कारण रुई 25 दिन तक तेजी में तथा घटाबढ़ी का योग बनेगा। चांदी मन्दी होकर तेज होगी। सोना मन्दा, गेहूँ, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों, लाल-मिर्च में तीव्र तेजी। ता. 8 को बुध मार्गी होने से रुई में घटाबढ़ी होकर तेजी करेगा। लकड़ी में भी विशेष तेजी करेगा। गुड़, खांड़, सरसों, तेल-तिल, कपूर, चन्दन, अगर आदि सण में तेजी रहेगी। ता. 8 से ता. 11 तक सही भाव बने रहेंगे। ता. 12 को शुक्र अश्विनी में सरसों, अलसी सूत, कपास, अन्न गेहूँ, चना, मटर में मन्दा करेगा। ता. 19 को बुध शतभिषा में आने से वर्षा कम छोटे लोगों में बीमारी, सोना, चांदी, सण, सूत में तेजी, खाद्यान्न भी तेज होंगे। ता. 19 से ता. 22 तक बाजार भाव तेजी की ओर रहेगा। प्रतिपदा का क्षय तथा सोमवती अमावस्या एवं ग्रहण खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण में काफी अशोभनीय घटनाएं घटेंगी। प्राकृतिक आपदा भूकंप व तूफानादि योग है। शानकर्ता में भी पद्च्युत या देहावसान का योग बनेगा। सावधान! ता. 20 को चन्द्रदर्शन 30 मुहुर्त्ती तेजी का कारण रहेगा। ता. 23 को शुक्र भरणी में आने से झगड़े होंगे। विग्रह होगा। वर्षा की कमी अन्न भाव तेजी में होंगे। तथा सरसों, तेल, तिल, गेहूँ, जौ, चना में घटा-बढ़ी तेजी मन्दी सम रहेंगी। ता. 26 को पूर्वायां में बुध के कारण विवाद योग तथा सूत-रुई में मन्दी तेजी। ता. 27-30 तक सभी लाइनों में अच्छी तेजी बनेगी। चूना, कली, सीमेन्ट के भाव आकाश छूने की उक्ति चरितार्थ करेगी। ता. 31 को रवि रेवती में आकर मोती रत्न, फल, फूल नमक सुगन्धित पदार्थ, अरहर, उड़द चावल, लहसून, प्याज, रुई सब्जी सरसों में तेजी कारक होगा। **सामान्य तेजी ता.** 5-7, 13-17, 23-31 तक। **सामान्य मंदी ता.** 1-4, 8-12, 16-22 तक।

विशेषमार्ग दर्शन-बोध

गुरु ग्रह विचार—वर्ष प्रारंभ में गुरू तुला राशि में संचरण करने से सोना चाँदी, ताम्बा, शीशा, गाटदाना, कपासिया में तेजी, वर्षा अच्छी होगी। गुरू के प्रभाव से ही रूई, नारियल, मजी॰, सुपारी के भाव तेज होगें। सरसो, लोहा, लाख, अलसी, घी, तेल, मन्दा। अगहन व पौष माह में खरीदा हुआ अनाज की तेजी चैत्र मास में मिलेगी। ज्वारिय बीमारियों से पमनुष्य दुःखी रहेगें। कही कही पर धान्य के भाव बहुत तेज होने का योग भी बनता है। 27-10-2006 से शुक्रवार को गुरु ग्रह वृश्चिक राशि में प्रवेश करने से काफी परिवर्तन कारक योग बनेगें।

"वृश्चिक च गुरूर्याती" जिससे अन्न संकट अनेक प्रकार के योग उपद्रव भरमार रहेगी। 2 जुलाई 2006 से 3 दिस॰ 2006 तक तथा 6-11-06 से गुरू आन्त ता: 3-12-06 को गुरोदय जिससे व्यापारिक वस्तुओं में विशेष तेजी का योग बनेगा। पीले रंग की वस्तुओ में अचानक तेजी से व्यापारियों का एकाएक स्टाकिट्स अच्छा लाभ मिलेगा।

शुक्रग्रह विचार—शुक्र वर्षारंभ पर वृष भ राशि में रहेगा। 28-4-06 को मीन में 24 मंदी को मेष में 18 जून को वृषक में। जुलाई को मिथुन 7 अगस्त 06 को कर्को। 30 सित॰ 06 से सिंह में। 25-10-06 से कन्या राशि में 19-तुला में तथा 6-12-06 को मीन राशि में प्रवेश फलतः सफेल वस्तुओं के भाव तेज होगे। चांदी में विशेष तेजी रहेती।

शनिविचार—वर्षारम्भ में शनि देव कर्क राशि में स्थित है। 6 अप्रैल 2006 को शनि मार्गी 18 जुलाई को शनि अन्त। 22 अगस्त को शनि उदय व 7 दिस॰ को शनि वक्री—इनके प्रभाव से लोहा स्टील, भूमि भवन तथा प्रसाजनिक युद्ध बंत्राक तथा पंत्राव में रत्नपात, कही पर छत्र भंग योग। कपास में तेजी होगी। ज्येष्ठ में भारी उत्पात होगा। अश्विसा धीन उड़द तिल तैल में मंदी होगा। रूई एकाएक मन्दी होकर तेजी करेगा। युद्धाडि का विशेष प्रभाव होगा। शनि ग्रह भाजपा को विशेष हानि करेगा। राहु व केतु गणनाफल—यह दोनों छायाग्रह है। दोनो उल्टी गति में चला करते है। वर्षारम्भ में कन्या में केतु व मीन में राहू संचरण करेगा। 11-10-2006 को साय राहु कुंभ तथा केतु सिंह राशि में संचरण करेगों। कन्या का केतु विशेष तेजी तथा सिंह का केतु किराना भाव तेज करेगे। राहु मीन दुर्मिक्ष का योग तथा अभादि के भावों में तेजी करेगा। सोना-चांदी मन्डा भी करेगा। कुंभ का राहु प्रत्येक वस्तु में अचानक तेजी का योग करेगा। मंगल की युक्ति होने पर अग्नि काण्ड भी होगा।

चाँदी में तेजी मंदी के चांस

ता. 30-03-06 से 3-4-06 तक मदी का योग। ता. 4-4-06 से उछाला। ता. 15-4-06 को भी तेजी है। ता. 3-4-06 को विशेष अचानक गिरावट। संदेहात्मन भाव। यह स्थिति ता. 11-4-06 तक बनी रहेगी। ता. 12-04-06 से भावों में तेजी का अच्छा योग जो ता. 13-04-06 तक रहेगी। ता. 14-04-06 को मन्दी का रूख रहेगा। ता. 15-04-06 में भावों में घटाबढ़ मिलेगी। जो ता.27-04-06 तक चलेगी। ता. 28-04-06 से तेजी का योग बनता है। जो कि ता. 20-05-06 तक चलेगा। ता. 21-5-06 से 27-05-06 तक मन्दा होगा। जो आगे ता. 10 जून 06 तक चलेगे। ता. 11-6-06 को तेजी का याग बनेगा। ता. 11-6-06 को जो तेजी रहेगी वही ता. 25-6-06 तक प्रभावित घटा-बढ़ी में चलेगी। ता. 26-6-06 से 11-7-06 तक मन्दी का योग बनेगा। ता. 12-7-06 से 26-7-06 तक तेजी का योग बनता है। ता. 27-7-06 से 31-7-06 तक पुनः मन्दी का योग बनेगा। ता. 1-8-06 से 19-8-06 तक चाँदी के भाव तेज रहेगा। बीच में एका-एक गिरावट भी होगी। ता. 20-08-06 से 3-9-06 तक चाँदी के भाव सम (स्थिर) रहेगा। ता. 4-9-06 से 19-9-06 तक चाँदी प्रातः तेज सायं मन्दा ऐसा योग चलेगा। ता. 20-9-06 से 3-10-06 तक तेजी का रूख। ता. 09-10-06 से 17-10-06 तक घटा बाढ़त के साथ वायस भाव चलेगे। ता. 18-10-06 से 2-11-06 तक तेजी का भाव होगा। ता. 3-11-06 से 15-11-06 तक मन्दी का योग घट-बढ़ चलेगा। ता. 16-11-06 से 30-11-06 तक सामान्य स्थिर भाव रहेगें। ता. 6-12-06 से 15-12-06 तक तेजी अच्छी देगी। ता. 16-12-06 से 31-12-06 तक मन्दा का योग बनता है फिर भी व्यापारी विवेक से कार्य करें। ता. 1-4 जनवरी 2007 को मन्दी। ता. 5-1-07 से 11-1-07 तक एकाएक तेजी आयेगी। ता. 12-1-07 से 18-1-07 जनवरी तक विशेष घटाबढ़ी तेजी का रूख। ता. 12-1-07 से 29-1-07 तक तेजी का योग बनकर मन्दी का झटका लगेगा। ता. 30-1-07 से 1-2-07 तक मन्दी रहेगी। ता. 2-2-07 से 5-2-07 तक एक तरफा रूख चलेगा। ता. 6-2-07 से 11-2-07 तक मन्दी का योग है। ता. 12-2-07 से 16-2-07 तक तेजी का योग बनेगा। ता. 17-2-07 से 20-2-07 तक भी तेजी मन्दी रूख (बराबर) रहेगी। ता. 21 से 23 फरवरी 07 तक तेजी बनेगी। ता. 24-2-07 से 28-2-07 तक मन्दी का योग ता: 1 से 14 मार्च 07 तक तेजी का योग कम यानि मन्दा होगा। ता. 15 से 22 तक तेजी का योग। ता. 23 से 28 तक मन्दा तथा ता. 29 से 31 मार्च 2007 तक तेजी अच्छी अच्छी स्तर की बढेगी।

सोना में तेजी मन्दी चांस

30 मार्च 06 से 13 अप्रैल 06 तक तेज रहेगा। 14 अप्रैल से 14 मई तक सोना में घटा-बढ़ी का योग है। पहले तेजी फिर मन्दी का योग बनता हे। 15 मई से 4 जून तक तेजी होकर अन्त में सम स्थिर भाव रहेगें। माह के अन्त में विशेष गिरावट (मन्दी) के योग है। 5 जून से 14 जून तक भाव स्थिर रहेगें। 15 जून से 16 जुलाई तक पहले आठ दिन मन्दी फिर तेजी का योग है। 17 जूलाइ से 2 अगस्त 2006 तक विशेष गिरावट के योग बनते है। 3 अगस्त 16 अगस्त तक झटकादार भाव अस्थिर रहेगे। मौका का लाभ व्यापारी स्टॉक के अनुसार कर सकते है। 17 अगस्त से 15 सितम्बर 2006 तक तेजी का अच्छा योग बनता है। 16 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक घटा-बढ़ी में मन्दी का दौर चलेगा। 18 अक्टूबर से 16 नवम्बर 06 तक अच्छी तेजी का योग बनता है। 17 नवम्बर से 15 दिसम्बर 06 तक पहले तेज फिर मन्दी का का योग बनता है। ता: 16 दिम्बर 06 से 31 दिसम्बर 06 तक तेजी का योग बनता है। दि॰ 1-1-07 से 14-1-07 तक घटा-बढ़ी तेजी का रूख रहेगा। 15-1-07 से 13-2-07 तक कुछ विशेष तेजी बनेगी। बीच में दो दिन अच्छी तेजी भी बनती है। 14 फरवरी से 14 मार्च 07 तक मन्दा तेजी बराबर रहेगा। 15 मार्च से 31 मार्च 07 तक तीन दिन तेजी फिर मंदी रहेगा।

तिलहन तेजी मन्दी

अप्रैल 2006— ता. 1-4-06 से 5-4-06 तक तेजी का योग 3% से 8%तक बढ़ोत्तरी ता. 5-4-06 से 11-4-06 तक मन्दा योग 2% से 5% तक बनेगा। ता.12-4-06 से 20-4-06 तक एक तरफा भाव मन्दी का तेजी होगा। ता.21-4-06 से 23-4-06 तक अच्छी तेजी एकाएक बनेगी। ता. 24-4-06 से 30-4-06 तक सम भाव उत्तार चढ़ाव सम रहेगे।

मई 2006— ता. 1-5-06 से 10-5-06 तक घटा-बढ़ी लेकिन तेजी विशेष रहेगी। ता. 11-5-06 से 17-5-06 तक मन्दी का रूख बनेगा 2% से 3% तक ता. 18-5-06 से 24-5-06 तक एक तरफा भाव तेजी का बनेगा। ता. 25-5-06 से 31-5-06 तक जोरदार तेजी बनेगी। लाभ प्राप्त करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection